बोरीस पोलेवोई

असली इन्सान

बोरीस पोलेवोई

असली इनसान

दूसरा संस्करण

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक: राजीव सक्सेना
चित्रकार: न० न० जूकोव

Б. ПОЛЕВОЙ
Повесть о настоящем человеке
На языке хинди

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

प्रगति प्रकाशन,
२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

अनुक्रमणिका

तो मैं भी
असली इनसान की कहानी लिखता ...

अलेक्सेई मरेस्येव,
सोवियत संघ के वीर

बोरीस पोलेवोई से मेरा परिचय १९४३ की गर्मियों में हुआ। उन दिनों कूर्स्क प्रदेश में घमासान लड़ाई चल रही थी और हमारी रेजीमेन्ट उसमें ख़ूब जोर-शोर से हिस्सा ले रही थी। हम हवाबाज़ हर दिन कई कई बार दुश्मन से मोर्चा लेने के लिए उड़ानें भरते थे। तो एक शाम को ऐसी ही एक उड़ान के बाद मैं नीचे आया। हवाई जहाज़ से बाहर आते ही मुझे हवाबाज़ों के दल में एक अपरिचित व्यक्ति दिखाई दिया और हवाबाजों ने मेरी ओर संकेत किया। "फिर कोई संवाददाता आ गया," मैंने कुछ परेशान होते हुए सोचा और भोजनालय की ओर बढ़ चला।

अपरिचित आन की आन में मेरे बराबर आ पहुंचा और अपना परिचय देते हुए बोला, "'प्राव्दा' का सैनिक संवाददाता बोरीस पोलेवोई।" पोलेवोई... मुझे याद तो आया कि "प्राव्दा" में मैंने यह नाम देखा है, मगर ईमान की बात कहूं कि यह महाशय कैसा लिखते हैं और किस विषय पर लिखते हैं, यह मैं नहीं जानता था। पर ख़ैर, पहली ही नज़र में ये चुस्त, फुर्तीले, सीधे-सरल और हंसमुख व्यक्ति मेरे दिल में उतर गये। मैं इन्हें खोह में अपने साथ ले गया और हम बहुत देर तक बैठे बातें करते रहे। पोलेवोई ने कई नोटबुकें काली कर डालीं, मगर फिर भी उनके सवालों की झड़ी लगी रही। जब हम विदा हुए तो पौ फट चुकी थी।

सुबह फिर दुश्मन से लोहा लेना था। यही सिलसिला चलता रहा। कहना चाहिए कि हर दिन की ऐसी लड़ाई-भिड़ाई की ज़िन्दगी में मुझे "प्राव्दा" के संवाददाता की याद नहीं रही। वैसे यह सही है कि मैं पहले की भांति "प्राव्दा" के पृष्ठों पर इस नाम को देखता था। जिन लोगों के बारे में उन्होंने लिखा था, वे भी मुझे बहुत पसन्द आये थे। मगर ये मुलाक़ातें तो सिर्फ़ समाचारपत्र के पृष्ठों पर ही होती थीं।

मुझे महीना तो ठीक-ठीक याद नहीं पर यह बात १९४७ की है। एक दिन मैंने अपना रेडियो चालू किया तो उद्घोषक को यह कहते सुना : "बोरीस पोलेवोई की रचना 'असली इनसान' का अगला अंश हम कल सुबह नौ बजे प्रसारित करेंगे।" काले बालों वाले इस पत्रकार की सूरत, जिसने खोह में मेरे साथ रात बितायी थी, फ़ौरन मेरी आंखों के सामने घूम गयी। अगले दिन मैंने सुबह के नौ बजे रेडियो चालू किया। मैं सुन रहा था मगर मुझे अपने कानों पर यक़ीन नहीं हो रहा था। पोलेवोई ने मेरी ही दास्तान लिख डाली थी।

इसी शाम को मैं पोलेवोई के घर बैठा था। उन्होंने मुझे बताया कि युद्ध के दिनों में मेरी बड़ी खोज की, मगर बेसूद। बाद में उन्होंने युद्ध-सम्बन्धी ढेरों सामग्री छान मारी और जल्दी-जल्दी घसीटी हुई नोटबुकों की सहायता से हमारी पहली मुलाक़ात के ब्योरे को निश्चित रूप दिया।

तो इसी शाम से लेखक बोरीस पोलेवोई के साथ मेरी मैत्री का श्रीगणेश हुआ। अफ़सोस की बात है कि हम बहुत कम ही मिल पाते हैं, सो भी सभा-सम्मेलनों में और कभी-कभार घर पर। मगर इन मुलाक़ातों की हमेशा ही याद बनी रहती है, क्योंकि पोलेवोई तो विचारों और अनुभव-निरीक्षणों के अपार भण्डार हैं। बस, डुबकियां ही लगाते जाइये इस ज्ञान-सागर में।

हां, सिर्फ़ एक बार ऐसा हुआ कि हम कई दिनों तक साथ रहे। यह तब की बात है, जब भूतपूर्व अमरीकी सैनिकों के नियन्त्रण पर हम अमरीका गये। पोलेवोई का यह अमरीका का दूसरा चक्कर था। पोलेवोई की पहली अमरीकी यात्रा के समय ही वहां के एक प्रसिद्ध पत्रकार ने हवाई जहाज़ों के निजी अनुभव के आधार पर यह दावा किया था कि अलेक्सेई मेरेस्येव का सारा क़िस्सा लेखक के दिमाग़ की उपज है इस समय पोलेवोई ने "जीते-जागते प्रमाण" के रूप में मुझे पेश किया। मगर लगता है कि उस अमरीकी पत्रकार को फिर भी विश्वास नहीं हुआ।

पोलेवोई को अब सातवां दशक चल रहा है। चालीस से अधिक साल हो गये उन्हें सोवियत साहित्य की सेवा करते हुए। चार बड़े उपन्यास और कहानियों तथा शब्द-चित्रों की उन्नीस पुस्तकें अपने पाठकों को भेंट कर चुके हैं। चैन से बैठने का तो उन्हें सपने में भी ख़याल नहीं आता। कारण

कि उन्होंने ऐसा पेशा चुना है, जिसमें चैन है ही नहीं—पत्रकार का पेशा। मैंने कुछ ग़लत नहीं कहा है—वे लेखक हैं, मगर पत्रकार की तरह संजीव। हमेशा दौड़-धूप करते, खोजते-ढूंढ़ते हुए और हमेशा लिखने को तैयार।

दुःख की बात है कि मैं साहित्यकार नहीं हूं। अगर मैं शब्दों के मोती पिरोना जानता, तो अवश्य ही "असली इनसान की कहानी" लिखता। वह कहानी होती महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीर सैनिक और "जोशीले संवाददाता", श्रेष्ठ सोवियत लेखक और पत्रकार तथा बहुत ही बढ़िया दोस्त बोरीस पोलेवोई के बारे में।

प्रथम खण्ड

१

तारे अभी भी उज्ज्वल और शीतल आभा के साथ झिलमिला रहे थे, लेकिन पूरब में आसमान उषा की हल्की-सी लालिमा से आलोकित होने लगा था। धीरे-धीरे वृक्ष भी मनहूसियत से उबरने लगे। यकायक ताज़ी हवा का तेज़ झोंका वृक्षों का शीश छूता हुआ उड़ गया। क्षण भर में सारा वन-प्रदेश अनुप्राणित हो उठा और तीव्र प्रतिध्वनियों से गूंज उठा। सदियों बूढ़े चीड़ वृक्षों ने एक दूसरे को कानाफूसी के स्वर में बुलाया और उनकी उद्वेलित भुजाओं से क्षार-क्षार शुष्क बर्फ़ हल्की-सी सर्राहट के साथ झरने लगी।

जैसी तेज़ी से हवा उठी थी, वैसे ही वह शान्त हो गयी। वृक्ष पुनः जड़ मौन में डूब गये। और तभी भोर की अगवानी करनेवाले सारे वन्य स्वर फूट पड़े: निकट ही वन-प्रान्तर में भेड़ियों की भूखी गुर्राहट, लोमड़ियों की चौकन्नी चीत्कार और कभी-कभी जागे कठफोड़वे की अनिश्चित ठक-ठक, जो जंगल की ख़ामोशी में ऐसी संगीतपूर्ण प्रतीत होती थी मानो वह किसी पेड़ के तने को नहीं, वायोलिन के खोल को ठोंक-बजा रहा हो।

चीड़ की बोझिल चोटियों पर से हवा का एक झोंका फिर शोर मचाता हुआ गुज़र गया। उज्ज्वलतर आकाश में अंतिम तारे भी धीरे-धीरे बुझने लगे; आसमान स्वयं संकुचित हो गया और अधिक घना मालूम होने लगा। रात की मनहूसियत के रहे-सहे निशान झाड़कर जंगल अपनी ताज़ी शानशौकत से खिल उठा। सनोबर के घुंघराले शीश और देवदार की नुकीली चोटियों पर गुलाबी आभा देखकर यह बताया जा सकता था कि सूर्य उदय हो गया है और आज का दिन निर्मल रहेगा, कड़ाके की सर्दी होगी और पाला गिरेगा।

अब तक काफ़ी प्रकाश फैल चुका था। रात के शिकार को हज़म करने के लिये भेड़िये घने जंगलों में घुस गये थे और वह लोमड़ी भी बर्फ़ पर

सतर्क चार के टेढ़े-मेढ़े चिह्न छोड़कर जा चुकी थी। पुरातन वन अनवरत ध्वनियों से गूंज उठा। इस वन में हल्की-सी लहरियों के समान बराबर उठते-गिरते स्वरों के शोकाकुल और उद्विग्न वातावरण में केवल चिड़ियों की चहचहाहट और कठफोड़वे की ठक-ठक, डाल-डाल फुदकती फिरती हुई पीली फुदकियों की आनन्दपूर्ण किलक और नीलकण्ठों की ख़ुश्क और भूखी टर्र-टर्र से कुछ नये स्वर उभर उठते थे।

एक नीलकण्ठ ने, जो एक वृक्ष की डाल पर बैठा अपनी काली, नुकीली चोंच तेज़ कर रहा था, यकायक सिर तान लिया, उसने कुछ सुना और पंख मारने के लिये तैयार हो गया। डालें चर्राने लगीं, मानों किसी ख़तरे की आगाही कर रही हों। नीचे झाड़ी में कोई भारी-भरकम ताक़तवार जीव चल रहा था। झुरमुट चरमराने लगे; नये चीड़ वृक्षों के शीश हिलने-डुलने लगे; बर्फ़ की चरमर सुन पड़ने लगी। नीलकण्ठ चीख़ उठा और तीर जैसी पूंछ सीधी कर झपट्टा मारता उड़ गया।

बर्फ़ से ढंके देवदारों को चीरकर एक लंबा, भूरा हिरन निकला जिस पर शाखादार भारी सींग थे। भयभीत आंखों से उसने विस्तृत वन-प्रान्तर पर पैनी दृष्टि डाली। उसके गुलाबी, मख़मली नथुने, गरम-गरम, भाप-भरी सांस का गुबार छोड़कर सिकुड़ गये।

सनोबर के वृक्षों के बीच वह बूढ़ा हिरन मूर्त्ति की तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा रहा। सिर्फ़ पीठ की चमड़ी कांप रही थी। सतर्कता के साथ कान खड़े करके वह एक-एक स्वर सुन रहा था और उसकी श्रवणशक्ति इतनी सूक्ष्म थी कि किसी चीड़ की लकड़ी में छेद करते हुए गुबरैले की आहट भी उसे मिल रही थी। लेकिन इन सतर्क कानों को भी जंगल में चिड़ियों की चूं-चूं चें-चें, कठफोड़वे की ठक-ठक और सनोबर की चोटी के पत्तों की खड़-खड़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं सुनायी दे रहा था।

कानों ने हिरन को तसल्ली दी, मगर उसकी नाक ख़तरे की चेतावनी दे रही थी। पिघलती हुई बर्फ़ की ताज़ी-ताज़ी गंध के साथ कुछ ऐसी तीखी, दमघोंटू और ज़हरीली दुर्गन्धें मिली हुई थीं, जो इस घने जंगल के लिए बिल्कुल विदेशी थीं। उस पशु की उदास काली आंखें दमकती हुई बर्फ़ की पपड़ी पर पड़ी हुई काली आकृतियों पर जा टिकीं। एक पग भी आगे बढ़ाये बिना उसने अपनी हर मांस-पेशी को ताना और छलांग मारकर

झाड़ियों में ग़ायब हो जाने के लिए तैयार हो गया; लेकिन बर्फ़ पर पड़ी आकृतियां बिल्कुल निर्जीव थीं—एक-दूसरे से चिपकी हुईं, एक-दूसरे पर टिकी हुईं। आकृतियां कई तरह की थीं, मगर उनमें से एक भी न हिली-डुली और न उस पवित्र शान्ति को भंग किया। पास में ही, बर्फ़ के ढेर में से अजीब दानवी शक्लें दिखायी दे रही थीं; इन्हीं शक्लों से वे तीखी और दमघोंटू दुर्गन्धें आ रही थीं।

हैरान हिरन मैदान के किनारे भयभीत आंखें फाड़े खड़ा रह गया; वह यह नहीं समझ पा रहा था कि इस निर्जीव और हानिरहित मानवीय ढेर को हो क्या गया है।

ऊपर से कोई आवाज़ सुनकर वह चौंक पड़ा। उसकी पीठ की चमड़ी फिर कांपने लगी और पिछले पैरों की मांसपेशियां फिर तन गयीं।

मगर यह स्वर भी हानिरहित सिद्ध हुआ। यह स्वर ऐसा था, मानों नवपल्लवित बर्च में भौंरे मंद-मंद गुंजार कर रहे हों। इस गुंजार के साथ जब-तब एक ऐसा छोटा, तीखा स्वर गूंज उठता था, जैसे दलदल में सांझ के समय मेंढक टर्रा उठते हैं।

भौंरे भी दिखाई पड़ने लगे—वे नीले-नीले, पाला खाये आसमान में सुनहरे पंख चमकाते हुए नाच रहे थे। बार-बार ऊंचाई पर से पक्षी की टर्राहट सुनायी पड़ जाती। एक भौंरा पंख फैलाये हुए, ज़मीन की ओर गिरने लगा; बाक़ी भौंरे सुनहले आसमान में नाचते रहे। हिरन ने अपनी मांसपेशियां ढीली कर लीं, उसने मैदान में क़दम बढ़ाया और कुरकुरी बर्फ़ चाटने लगा; मगर फिर भी वह सतर्क दृष्टि से आसमान पर नजर डाल लेता था। यकायक एक और भौंरा अपने झुण्ड से विलग हुआ और घनी पूंछ जैसी लकीर पीछे छोड़कर उसने मैदान में सीधा ग़ोता लगाया। उसने इतनी तेज़ी से विराट रूप धारण किया कि इसके पहले कि हिरन को छलांग मारकर जंगल में भाग जाने का समय मिलता, एक भारी-भरकम, शीतकालीन बवंडर से भी भयानक चीज़ वृक्षों के शीश से आ टकरायी और ऐसे धमाके के साथ ज़मीन पर आ रही कि उससे सारा जंगल गूंज उठा। यह गूंज किसी कराह की तरह लगी और उसकी प्रतिध्वनि पेड़ों को पार करती हुई उस हिरन तक भी पहुंच गयी जो घने वन की गहराइयों को चीरता भागा चला जा रहा था।

यह गूंज देवदारों की गहराइयों में डूब गयी। हवाई जहाज़ के आघात से वृक्षों की चोटियों से बर्फ़ का चूरा दमकता-दमकता हवा पर तैरता उतराने लगा। एक बार फिर ज़बर्दस्त और गहरी ख़ामोशी का साम्राज्य छा गया। इस ख़ामोशी के बीच किसी आदमी का कराहना और किन्हीं अजनबी आवाज़ों से घबराकर जंगल से मैदान की तरफ़ भागकर आये हुए एक भालू द्वारा अपने पंजों से बर्फ़ दबाने की ध्वनियां साफ़ सुनायी दे रही थीं।

भालू विशालाकार, वृद्ध और झबरीला था। उसके अस्त-व्यस्त बाल छाती की अग़ल-बग़ल भूरे लौंदों और कूल्हे पर गुच्छों के रूप में सिमट आये थे। शरदारम्भ से ही इस क्षेत्र में घमासान युद्ध छिड़ा हुआ था और वह इस घने वन में घुस आया था, जहां पहले सिर्फ़ वन दारोगा और शिकारी ही आये करते थे और उनका यहां आना भी कम होता था। शरद में युद्ध निकट आ जाने के कारण इस भालू को अपनी मांद छोड़ने के लिए एक ऐसे समय में विवश होना पड़ा जब कि वह जाड़े भर सोने की तैयारी कर रहा था और अब भूख और क्रोध का मारा जंगल में भटकता फिर रहा था—उसे तनिक भी चैन न मिलता था।

भालू उसी स्थान पर, मैदान के किनारे आकर रुक गया जहां कुछ देर पहले हिरन खड़ा था। उसने हिरन द्वारा बनाये गये ताज़े रास्ते को सूंघा, मांसपेशियों को मरोड़ा और सुनने लगा। हिरन चला गया था, लेकिन जहां वह खड़ा था, वहां भालू ने कुछ ऐसे स्वर सुने जो स्पष्ट ही किसी जीवित और शायद निर्बल जीव के थे। भालू के रूखे-से रोएं खड़े हो गये। उसने थूथनी फैला दी। और तभी उसे मैदान के किनारे पर करुण कराह महसूस हुई जो मुश्किल से ही सुनायी देती थी।

धीरे-धीरे सावधानी से अपने नर्म पंजों के बल चलते हुए, जिनके भार से सख़्त, सूखी बर्फ़ चटक उठी थी, वह भालू उस निस्पंद मानव-आकृति की ओर बढ़ा जो बर्फ़ में आधी दबी पड़ी थी।

२

हवाबाज़ अलेक्सेई मेरेस्येव दोहरी "कैंची" में फंस गया था। आकाश-युद्ध में किसी व्यक्ति के लिए इससे बुरी कोई बात नहीं होती। उसका सारा गोला-बारूद ख़त्म हो गया था और जब चार जर्मन हवाई जहाज़ों

ने उसे घेरा, तब वह लगभग निहत्था था, उन्होंने उसे भाग निकलने या रास्ता बदलने का कोई मौक़ा दिये बग़ैर, अपने अड्डे की तरफ़ चलने के लिए मजबूर करना चाहा।

घटना यों थी। लेफ़्टीनेंट मेरेस्येव की कमान में लड़ाकू हवाई जहाज़ों का एक दस्ता "इल-२" नाम के हवाई जहाज़ों के रक्षक के रूप में गया जिन्हें शत्रु के हवाई अड्डे पर आक्रमण करना था। यह साहसी कार्रवाई सफल हुई। यह लड़ाकू-बममार हवाई जहाज़ जिन्हें थल-सैनिक "उड़न-टैंक" कहते हैं, चीड़ की चोटियों का लगभग सफ़ाया करते हुए सीधे हवाई अड्डे पर जा धमके, जहां बहुत संख्या में 'जंकर्स' नाम के परिवहन वायुयानों की पांतें लगी थीं। यकायक भूरे-नीले चीड़ वन की चोटियों में से निकलकर गोता मारते हुए उन्होंने भारी-भरकम परिवहन वायुयानों के ऊपर सरपट दौड़ लगायी और अपनी मशीनगनों और तोपों से गोली-गोलों की झड़ी लगा दी और दीप्त गोलियों से पाट दिया। मेरेस्येव, जो अपने चार हवाई जहाज़ों के साथ आक्रमणस्थल की चौकसी कर रहा था, उस ऊंचाई से साफ़ देख रहा था कि हवाई अड्डे पर लोगों की छायाएं इधर-उधर भाग रही थीं, समतल बनायी गयी बर्फ़ पर बोझिल गति से परिवहन वायुयान रेंग रहे थे, लड़ाकू-बममार हमला करने के लिये बारबार लौट पड़ते थे और गोली-गोलों की बौछार के बीच 'जंकर्सों' के हवाबाज़ अपने वायुयानों को खिसकाने और हवा में उड़ा ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे।

इसी समय अलेक्सेई ने घातक भूल कर डाली। आक्रमणस्थल की चौकसी सख़्ती से करने के बजाय वह, हवाबाज़ों के शब्दों में, "आसान शिकार के लोभ में" फंस गया। उसने अपने हवाई जहाज़ को ग़ोता खिलाया और इस परिवहन जहाज़ पर, जो अभी ज़मीन से थोड़ा ही उठ पाया था, उसने अपने हवाई जहाज़ को पत्थर की तरह पटक दिया और उस के बहुरंगी, चौकोर और लहरियेदार अलुमीनम के ढांचे में मशीनगन की गोलियों से लम्बे-चौड़े छेद कर डाले। उसे इतना आत्मविश्वास था कि उसने शत्रु के जहाज़ को ज़मीन पर लुढ़कते देखने का कष्ट न किया। हवाई अड्डे के दूसरे छोर पर एक और 'जंकर्स' हवा में उठा। अलेक्सेई उसके पीछे झपटा। उसने हमला किया, मगर सफल न हुआ। धीरे-धीरे

ऊपर उठते हुए शत्रु के जहाज़ पर उसने जितनी बार गोलियों की धारें छोड़ीं उतनी ही बार वे उसके ऊपर से निकल गयीं। मेरेस्येव ने यकायक जहाज घुमाया और फिर हमला किया, वह फिर असफल हुआ तो अपने शिकार पर वह पुनः झपटा और इस बार बग़ल के सारे हथियार से उसने शत्रु के वायुयान के चौड़े, सिगार जैसे ढांचे पर उन्मत्त होकर इतने गोले बरसाये कि वह जहाज़ जंगल में जाकर गिर पड़ा। उस जहाज को गिराने के बाद, और जिस जगह वन-प्रदेश के हरे-भरे समुद्र में धुएं का काला स्तम्भ उठ खड़ा हुआ था, उसके दो चक्कर लगाकर उसने पुनः अपना हवाई जहाज़ शत्रु के हवाई अड्डे की ओर मोड़ दिया।

किन्तु वह वहां न पहुंच सका। उसने अपने दस्ते के तीन लड़ाकू जहाज शत्रु के नौ 'मेसरस्मीट' लड़ाकू हवाई जहाजों से जूझते देखे—स्पष्ट था कि इन हवाई जहाज़ों को जर्मन हवाई अड्डे के कमांडर ने लड़ाकू-बममार के हमले का जवाब देने के लिए बुला लिया था। जर्मन ठीक एक के मुक़ाबले तीन थे, मगर फिर भी हवाबाज़ साहसपूर्वक उनपर टूट पड़े और उनको लड़ाकू-बममार की ओर से हटाने का प्रयत्न करने लगे। इस संग्राम में वे शत्रु को उस स्थान से दूर और दूर ले गये—जैसे काली पहाड़ी मुर्ग़ी घायल होने का नाटक करके शिकारियों को अपना पीछा करने के लिए लुभाती है ताकि उसके बच्चे बच जायें।

अलेक्सेई सहज शिकार के प्रलोभन में स्वयं फंस गया, इस बात से वह इतना शर्मिन्दा हो उठा था कि उसे शिरस्त्राण के नीचे अपने कपोल जलते हुए अनुभव हो रहे थे। उसने एक निशाना चुना और दांत भींचकर भिड़ गया। निशाना जो उसने चुना था, एक "मेसर" था, जो अपने अन्य साथियों से बिछुड़ गया था और, स्पष्ट ही, वह स्वयं भी कोई शिकार खोज रहा था। उसका वायुयान जितना भी तेज़ उड़ सकता था, उतने पूरे वेग से अलेक्सेई शत्रु के बाजू झपट पड़ा। उसने इस कला के हर नियम के अनुसार जर्मन हवाई जहाज़ पर हमला किया था। जब मशीनगन का घोड़ा दबाया, तब उसे आंखों के सामने धुंध के बीच शत्रु के वायुयान का धूसर ढांचा साफ़ दिखायी दे रहा था, मगर शत्रु फिर भी अक्षत बच निकला। अलेक्सेई का निशाना चूकना न चाहिए था। निशाना नज़दीक ही था और साफ़ दिखायी भी दे रहा था। "गोला-बारूद!" अलेक्सेई

समझ गया और उसकी रीढ़ की हड्डी में ऊपर से नीचे तक एक कंपकंपी दौड़ गयी। मशीनगन की परीक्षा करने के लिए उसने फिर घोड़ा दबाया, लेकिन उसे वह सिहरन न महसूस हुई, जो हर हवाबाज़ को मशीनगन दाग़ने के साथ सारे शरीर में ऊपर से नीचे तक अनुभव होती है। कारतूस का ज़ख़ीरा ख़ाली हो चुका था; उनका पीछा करते हुए उसके सारे कारतूस चुक गये थे।

लेकिन शत्रु को इसका पता न था। अलेक्सेई ने जूझ पड़ने का निश्चय किया ताकि दोनों पक्षों के संख्यात्मक अनुपात में सुधार किया जा सके। लेकिन उसकी धारणा ग़लत थी। जिस लड़ाकू विमान पर उसने असफल हमला किया था, उसका चालक एक अनुभवी और सूक्ष्म-बुद्धि का हवाबाज़ था। जर्मन समझ गया कि उसके विरोधी की गोला-बारूद ख़त्म हो गयी है; और उसने अपने साथियों को नया हुक्म दे दिया। चार "मेसर" वायुयान शेष से अलग निकल आये और उन्होंने अलेक्सेई को घेर लिया – इनमें से एक-एक अग़ल-बग़ल और एक-एक ऊपर-नीचे हो लिये। उन्होंने अन्वेषक गोलियां छोड़कर अलेक्सेई को मार्ग निर्देश देना शुरू किया – साफ़, नीले आसमान में ये गोलियां स्पष्ट दिखायी देती थीं – और इस तरह उन्होंने अलेक्सेई के विमान को दोहरी "कैंची" में फंसा लिया।

इस घटना के कई दिन पहले अलेक्सेई ने सुना था कि पश्चिम से प्रसिद्ध जर्मन 'रिख़्तगोफ़ेन' विमान डिवीजन इस स्ताराया रूसा क्षेत्र में आ पहुंची है। फ़ासिस्ट साम्राज्य के सर्वोत्तम चालक इस डिवीजन में थे और स्वयं गोयरिंग इसका संरक्षक था। अलेक्सेई अब समझ गया कि वह इन्हीं आकाशी भेड़ियों के चंगुल में फंस गया है और साफ़ था कि वे उसे अपने हवाई अड्डे तक उड़ा ले जाना, उतारना और बंदी बनाना चाहते थे। इस तरह की घटनाएं हो चुकी थीं। अलेक्सेई ने स्वयं देखा था कि उसके अंतरंग, सोवियत संघ के वीर अन्द्रेई देगत्यरेन्को की कमान के एक लड़ाकू विमानों का एक दस्ता किस प्रकार एक जर्मन टोही विमान को अपने हवाई अड्डे पर ले आया था और कैसे उसने उसे उतरने के लिए मजबूर किया था।

उस जर्मन क़ैदी का लम्बा, राख जैसा धूसर चेहरा और उसके लड़खड़ाते क़दम अलेक्सेई की आंखों के सामने झूल गये। "क्या मैं क़ैदी बनूंगा? हरगिज़ नहीं! यह चाल न चल पायेगी!" उसने संकल्प किया।

उसने बहुत कोशिश की, मगर भाग न सका। जर्मन जिस दिशा में चलने के लिए हुक्म दे रहे थे, उससे जहां वह ज़रा भी विचलित होने की कोशिश करता, वे उसका रास्ता मशीनगनों से गोलियां बरसाकर बन्द कर देते। और एक बार फिर उस जर्मन का विकृत चेहरा, कांपते जबड़े अलेक्सेई की आंखों के सामने साकार हो गये। उसके चेहरे पर हीनता और पाशविक भय के चिह्न स्पष्ट दीख रहे थे।

मेरेस्येव ने सख़्ती से दांत भींचे, अपने इंजिन की गति पूरी तरह छोड़ दी और खड़ी स्थिति बनाकर उस जर्मन हवाई जहाज के नीचे गोता लगाने का प्रयत्न किया जो उसे ज़मीन की तरफ़ दबोच रहा था। शत्रु के विमान के नीचे से निकलने में वह सफल हो गया, मगर उस जर्मन ने ऐन मौक़े पर मशीनगनों का घोड़ा दबा दिया। अलेक्सेई के इंजिन की गति भंग हो गयी और जब-तब उसकी धड़कन बंद होने लगी। पूरा विमान इस तरह कांप रहा था, मानों उसे काल-ज्वर चढ़ आया हो।

"मैं निशाना बन चुका हूं!" अलेक्सेई एक सफ़ेद घने बादल में विलीन होने में सफल हो गया था और इस तरह अपना पीछा करनेवालों को गुमराह कर चुका था। मगर अब आगे क्या किया जाय? क्षत-विक्षत विमान की कंपकंपी वह अपने सारे शरीर में महसूस कर रहा था, मानों वह उसके विमान की मौत की आख़िरी तड़प नहीं, ख़ुद अपने शरीर का बुख़ार था जो उसे यों कंपा रहा था।

इंजिन किस जगह क्षति-ग्रस्त हुआ है? विमान कितनी देर और आसमान में ठहर सकेगा? क्या पेट्रोल की टंकी फट न जायेगी? अलेक्सेई इन प्रश्नों पर उतना नहीं रहा था, जितना उनको महसूस कर रहा था। यह अहसास कर कि वह ऐसे डायनामाइट पर बैठा हुआ है जिसका फ़्यूज़ जलाया जा चुका है, उसने अपना वायुयान मोड़ा और अपनी फ़ौजों की तरफ़ भाग चला, ताकि अगर काम तमाम हो ही जाये तो कम से कम उसका अंतिम संस्कार उसके अपने लोगों के हाथों हो।

चरमोत्कर्ष भी अकस्मात ही आ गया। इंजिन बंद हो गया। विमान इस तरह ज़मीन की तरफ़ गिरने लगा मानों किसी पहाड़ से लुढ़क रहा हो। नीचे अनन्त समुद्र की धूसर-हरित लहरों की तरह जंगल लहरा था। "जो भी हो, अब मुझे बंदी न बनाया जा सकेगा," यही विचार था जो उस

हवाबाज़ के दिमाग़ में उस समय कौंध गया जब विमान के पंखों के नीचे, निकट के वृक्ष, एक समतल सड़क की तरह एकाकार होकर सरकते नज़र आ रहे थे। और जब वह हो और सघन वन किसी जंगली जानवर की तरह उसकी तरफ़ झपट पड़ा तो उसने अन्तर्प्रेरित होकर मेगनेट बंद कर दिया। चकनाचूर करनेवाला धमाका सुनायी दिया और एक क्षण में ही सारी चीज़ें इस तरह ग़ायब हो गयीं मानों वह और उसका विमान किसी घने गहरे पानी के तल में डूब गया हो।

गिरते समय वायुयान चीड़ के शिखरों से टकराया। इससे गिरने का ज़ोर कम हो गया था। कई वृक्ष तोड़ता हुआ वह विमान गिरकर चकनाचूर हो गया, लेकिन इसके एक क्षण पहले ही अलेक्सेई अपनी गद्दी से बाहर फिंक चुका था और एक सदियों पुराने मोटी-मोटी डालोंवाले देवदार पर गिरकर, उसकी शाखाओं पर फिसलता-टपकता वह उस बर्फ़ के ढेर पर गिर पड़ा था, जो हवा के बहाव से उस पेड़ की जड़ों के पास जमा हो गया था। इससे प्राण बच गये।

वह कब से वहां अचेत और निस्पंद पड़ा था, अलेक्सेई यह याद न कर सका। धुंधली मानव-छायाएं, इमारतों की रूपरेखाएं और अद्भुत मशीनें उसके सामने नाचने लगीं और जिस तेज़ी से वे उसकी आंखों के सामने आ-जा रही थीं, उससे उसके सारे शरीर में एक मनहूस-सा, टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाला दर्द हो रहा था। तभी उस बवंडर में से कोई भारी-भरकम, गरम-गरम आकृति उभर आयी और उसके चेहरे पर उष्ण और दुर्गंधपूर्ण सांस छोड़ने लगी। लुढ़ककर वह इस वस्तु से दूर होने का प्रयत्न करने लगा, मगर उसका शरीर बर्फ़ में फंस-सा गया था। किसी अज्ञात भय से प्रेरित होकर उसने पुनः आकस्मिक प्रयत्न किया और फ़ौरन ही अपने फेफड़ों में बर्फ़ीली हवा का प्रवेश और कपोलों पर शीतल बर्फ़ का स्पर्श अनुभव किया और एक दर्द महसूस किया जो अब सारे शरीर में नहीं, सिर्फ़ पैरों में हो रहा था।

"मैं जीवित हूं!" यह विचार उसके दिमाग़ में कौंध गया। उसने उठने का प्रयत्न किया, मगर उसे किसी के पैरों के नीचे बर्फ़ चकनाचूर होने और पास ही किसी की खर्राहट भरे कर्कश श्वास-निश्वास के स्वर सुनायी दिये। "जर्मन!" उसने सोचा और आंखें खोलने, उछलकर खड़े

हो जाने और आत्म-रक्षा करने की इच्छा दबा ली। "बंदी! आखिरकार बंदी हो ही गया! मैं अब क्या करूंगा?"

उसे याद पड़ा कि एक दिन पहले हरफ़नमौला मिस्त्री यूरा ने पिस्तौल रखने की जेब का फ़ीता-सा देना चाहा था क्योंकि वह फट गया था, मगर उसने नहीं सिया। इसी लिए इस आखिरी उड़ान पर जाते समय उसे अपनी पिस्तौल पतलून की जांघवाली जेब में रखनी पड़ी थी। उसे निकालने के लिए उसे करवट बदलनी होगी, लेकिन ऐसा किया तो दुश्मन देख ही लेगा; वह औंधा पड़ा हुआ था। उस पिस्तौल की नोक जांघ में लगती महसूस हुई; मगर वह निस्पंद पड़ा रहा। शायद दुश्मन उसे मरा समझ ले और चला जाये।

जर्मन उसके निकट चहलक़दमी करने लगा, एक अजब तरीक़े से उसने सांस भरी और बर्फ़ कुचलता हुआ फिर उसके नजदीक आकर झुका। अलेक्सेई ने फिर उसके मुंह से बदबूदार सांस आती महसूस की। अब वह समझ गया कि पास में एक ही जर्मन है और इससे उसे निकल भागने का मौक़ा मिल गया है: यदि वह देखभाल ले, यकायक उठ खड़ा हो और इसके पहले कि वह अपनी बंदूक़ निकाल पाये, उसकी गर्दन पर सवार हो जाये और हाथापाई करने लगे तो... लेकिन यह सब सावधानी से और बड़ी बारीकी से करना होगा।

शरीर की स्थिति तनिक भी बदले बिना अलेक्सेई ने धीरे, बहुत धीरे से आंखें खोलीं और अधमुंदी पलकों से उसे कोई जर्मन नहीं, कोई भूरा-खुरदुरा गुच्छा दिखायी दिया। उसने आंखें तनिक और खोलीं और फिर एकदम बंद कर लीं: उसके सामने एक बड़ा-भारी, रूखा-सूखा-सा भालू कूल्हों के बल बैठा था।

३

वह भालू इस तरह खामोशी के साथ, जैसे कि सिर्फ़ जंगली जानवर ही खामोश रह सकता है, इस निस्पंद मानव शरीर के पास बैठे जो सूर्य की किरणों से चमकती बर्फ़ की नीलिमा में मुश्किल से दिखाई दे रहा था।

उसने गंदे नथुने धीरे-धीरे उठे। उसके आधे खुले जबड़ों के अंदर से

पुराने, पीले, मगर अभी भी तीखे दांत दिखाई दे रहे थे और उनसे लार की पतली-सी डोर हवा में झूल रही थी।

युद्ध ने उसकी शीतकालीन निद्रा छीन ली थी और अब वह भूखा और क्रुद्ध था। लेकिन भालू मुर्दा मांस नहीं खाते। निस्पंद शरीर को सूंघकर, जिसमें से पेट्रोल की तीखी गंध आ रही थी, भालू अलस गति से उस मैदान में टहलने लगा जहां इस तरह के अनेक मानव शव भुरभुरी बर्फ़ में जमे पड़े थे; लेकिन एक कराह और किंचित खड़खड़ाहट उसे फिर अलेक्सेई के पास खींच लायी।

इसलिए अब वह अलेक्सेई के क़रीब फिर आ बैठा था। शव के मांस से घृणा के ख़िलाफ़ भूख की तड़प संघर्ष कर चली थी। भूख हावी होने लगी। उस जानवर ने सांस भरी, उठ बैठा, अपने पंजों से शरीर को पलट दिया और हवाबाज़ की वर्दी को अपने नखों से फाड़ दिया। मगर कपड़ा बरक़रार रहा। भालू धीमे से गुर्रा उठा। उस क्षण आंखें खोलने, एक तरफ़ लुढ़क पड़ने, चिल्ला उठने और अपनी छाती पर चढ़े हुए भारी पशु-शरीर को धकेल देने की इच्छा को दबा लेने में अलेक्सेई को बड़ा प्रयत्न करना पड़ा। उसका रोम-रोम उसे उन्मत्त और क्रुद्ध रूप में आत्म-रक्षा करने के लिए प्रेरित कर रहा था, मगर उसने अपने को मजबूर किया कि धीरे-धीरे, अगोचर रूप में, अपना हाथ जेब में डाले, पिस्तौल की वक्र मुठिया टटोले और इस सावधानी से घोड़ा चढ़ाये कि ज़रा भी आवाज़ न हो और चुपके से उस हथियार को बाहर निकाल ले।

वह पशु और भी क्रुद्ध होकर उसके वस्त्र फाड़ने लगा। मज़बूत कपड़ा चरमरा उठा, मगर फिर भी जमा रहा। भालू पागल होकर गरज उठा, उसे अपने दांतों से चीथने लगा और रोएंदार चमड़े तथा रूई को चीरकर उसने शरीर में दांत गड़ा दिये। इच्छाशक्ति का अंतिम बल संजोकर अलेक्सेई किसी भांति अपनी कराह दबा सका और जिस क्षण भालू ने उसे बर्फ़ के ढेर में से बाहर निकाला, उसने अपनी पिस्तौल उठायी और घोड़ा दबा दिया।

तीखी और गूंजती हुई कड़क के साथ गोली दग़ गयी।

नीलकण्ठ ने पंख फड़फड़ाये और तेज़ी से उड़ गया। प्रकम्पित डालों से सूखी बर्फ़ झर पड़ी। भालू ने धीरे-धीरे अपने शिकार को छोड़ दिया।

भालू पर नज़र गड़ाये हुए अलेक्सेई फिर बर्फ़ में लुढ़क गया। भालू कुछ देर तक कूल्हों के बल बैठा रहा; उसकी काली, कीचड़ भरी आंखों में किंकर्त्तव्यविमूढ़ता का भाव उमड़ आया। बर्फ़ पर उसके मुंह से मटमैले लाल ख़ून की मोटी धार बह निकली। उसने कर्कश और भयावनी गुर्राहट की, ज़ोर लगाकर अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अलेक्सेई के दोबारा गोली चलाने से पहले ही बर्फ़ पर ढेर हो गया। नीली बर्फ़ पर धीरे-धीरे गुलाबी रंग चढ़ गया और ज्यों-ज्यों वह पिघलने लगी, भालू के सिर के पास एक हल्की-सी भाप उठने लगी। जानवर मर गया था।

अलेक्सेई जिस तनाव में फंस गया था, वह यकायक ढीला पड़ गया। उसे फिर अपने पैरों में तीखा और जलन-भरा दर्द महसूस होने लगा। बर्फ़ पर पुनः गिरने के बाद वह अचेत हो गया।

उसे जब होश आया तब सूरज आसमान में काफ़ी चढ़ आया था। देवदार की घनी चोटियों को चीरकर उसकी किरणें बर्फ़ की सुनहरी आभा से दमक रही थीं। छाया में बर्फ़ अब नीली नहीं रह गयी थी — गहरी नीली हो गयी थी।

"मैं भालू के बारे में क्या सपना देख रखा था?" अलेक्सेई के दिमाग़ में सबसे पहला विचार यही उठा।

नीली बर्फ़ पर, नज़दीक ही, भालू की भूरी, ऊबड़-खाबड़ गंदी लोथ पड़ी थी। सारा वन स्वरों से गूंज रहा था। कठफोड़वा पेड़ की छाल बराबर बजा रहा था, पीली छातीवाली चंचल फुदकियां इस शाख़ से उस शाख़ तक उछलते हुए आनन्दपूर्वक चहचहा रही थीं।

"मैं ज़िन्दा हूं, ज़िन्दा हूं, ज़िन्दा हूं!" अलेक्सेई ने अपने मन में बार-बार दोहराया। और उसका सारा शरीर, रोम-रोम जीवित होने की ऐसी शक्तिशाली, अद्भुत मदभरी संवेदना से स्फूर्त्त हो गया, जो कभी भी घातक ख़तरे से बच निकलने के बाद हर व्यक्ति पर हावी हो जाती है।

इस स्फूर्तिप्रद संवेदना से प्रेरित होकर वह उठ खड़ा हुआ, मगर तत्क्षण कराहकर उस भालू के शव पर लुढ़क गया। पैरों में तीखा दर्द महसूस हुआ। उसे अपने मस्तिष्क में चक्की के पुराने, खुरदरे पाटों की मनहूस गड़गड़ाहट महसूस होने लगी जो मानो उसके माथे में कंपकंपी पैदा कर रहे हों। उसकी आंखें यों दर्द कर रही थीं जैसे कोई व्यक्ति अपनी अंगू-

लियों से पलकें दबा रहा हो। कभी तो उसे चारों ओर की वस्तुएं स्पष्ट रूप में सूरज की शीतल और पीत किरणों से नहायी हुई दिखाई देतीं; तो दूसरे ही क्षण हर चीज़ धूमिल, चकाचौंध परदे के पीछे ग़ायब होती नज़र आती।

"बुरा हुआ। गिरने पर ज़रूर मुझे आघात पहुंचा होगा। और मेरे पैरों में भी कुछ गड़बड़ है," अलेक्सेई ने सोचा।

कुहनी के बल उठते हुए उसने आश्चर्यपूर्वक विस्तृत मैदान की ओर देखा जो जंगल की सीमा से आगे खुला नज़र आ रहा था। उसके पार क्षितिज पर दूर के जंगल का छोर अर्धवृत्ताकार दिखाई दे रहा था।

स्पष्ट था कि शरद में या शायद शीतकाल के आरम्भ में इस जंगल की सीमा पर रक्षा-पांत थी, जहां लाल सेना का कोई दस्ता, शायद अधिक दिनों तक नहीं, मगर कमर कसकर, मृत्यु-पर्यन्त डटा रहा था। बर्फ़ीले तूफ़ानों ने बर्फ़ की रूई की तहें जमाकर ज़मीन के घावों को भर दिया था, लेकिन इन तहों के नीचे भी आंखों को खंदकें, तोपचियों के ध्वस्त स्थलों के ढेर और जंगल के किनारे पर तोपों से उड़े या कटे-फटे पेड़ों की जड़ों तक छोटे-बड़े गोलों के गढ़े अपार संख्या में बिखरे नज़र आ रहे थे। इस जर्जर मैदान में जहां-तहां कई टैंक पड़े थे, जो मछलियों की तरह के अनेक रंगों से रंगे थे। वे बर्फ़ में जमे खड़े थे और लगभग वे सभी विचित्र दानवों के शवों की भांति लगते थे--ख़ासकर आख़िरी छोर पर पड़ा हुआ वह टैंक, जो किसी हथगोले या सुरंग के विस्फोट से इस तरह उलट गया था कि उसकी तोप मुंह से जीभ की भांति ज़मीन पर लटकी पड़ी थी। और सारे मैदान में छिछली खाइयों के कगारों पर टैंकों के पास और जंगल की सीमा पर जर्मन सिपाहियों की लाशों के बीच लाल सेना के सिपाहियों के शव भी बिखरे पड़े थे। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि कई स्थानों पर वे एक-दूसरे पर ढेर बने पड़े थे; और वे उन्हीं मुद्राओं और स्थितियों में जमे पड़े थे जिनमें शीतकाल के आरम्भ में, कुछ महीने पहले मौत ने उन्हें युद्ध में गले लगाया था।

ये सभी चीजें अलेक्सेई से कह रही थीं कि यहां जमकर भयानक युद्ध हुआ था; यहीं उसके साथी सब कुछ भूलकर लड़ते रहे थे--उन्हें सिर्फ़ यह याद रहा था कि उन्हें शत्रु को रोकना है, उसे यहां के आगे नहीं बढ़ने

देना है। जंगल के किनारे, थोड़ी ही दूर पर, एक चीड़ वृक्ष के नीचे—जिसका सिर किसी गोले से उड़ गया था और जिसके क्षत-विक्षत ऊंचे तने से अब पीली-पीली पारदर्शी गोंद बह रही थी—कुछ हिटलरी सिपाहियों के शव पड़े थे जिनकी खोपड़ियां चकनाचूर थीं और चेहरे विकृत थे। उनके बीच में, किसी शत्रु के शव पर एक भीमाकार, गोल चेहरे और बड़े मस्तकवाला एक रूसी नौजवान आड़े पड़ा था—उसके शरीर पर ओवरकोट न था, सिर्फ़ वर्दी थी; पेटी न थी और कालर फटा हुआ था; और उसके बग़ल में एक बंदूक़ पड़ी हुई थी जिसकी संगीन टूट गयी थी और ख़ून से रंगा कुंदा टुकड़े-टुकड़े हो गया था।

जंगल में जानेवाली सड़क पर, थोड़ा और आगे, बालू में ढंके एक छोटे देवदार वृक्ष के तले गोले के कारण बने गढ़े में एक सांवले उज़्बेक सिपाही का शव पड़ा था, जिसका लंबा-सा चेहरा ऐसा मालूम होता था मानो पुराने हाथी-दांत से बनाया गया हो। उसके पीछे, देवदार वृक्ष की शाखाओं के नीचे, अनफटे हथगोलों का ढेर था; और वह उज़्बेक स्वयं भी अपने उठाये हुए निर्जीव हाथ में एक हथगोला संभाले था, मानों फेंकने से पहले वह आसमान पर नज़र डाल रहा हो और उसी मुद्रा में जड़ बनकर रह गया हो।

और उससे भी आगे, जंगल की राह पर, बहुरंगी टैंकों के पास, बड़े गोलों के गढ़ों के किनारे, कुछ पुराने वृक्षों के ठूंठ के पास, हर जगह शव पड़े हुए थे, जो रूई भरे कोट और पतलूनें और मटमैली हरी वर्दियां पहने थे तथा उनके कानों पर सर्दी से बचने के लिए कनटोप लगे थे; बर्फ़ के ढेर में से मुड़े हुए घुटने, उठी हुई ठुड्डियां और मोम जैसे चेहरे झांक रहे थे, जिन्हें लोमड़ियां कुतर चुकी थीं और नीलकण्ठ तथा कौए चोंच मार चुके थे।

अनेक कौए मैदान के ऊपर धीरे-धीरे चक्कर काट रहे थे और इससे यकायक अलेक्सेई को "ईगोर का युद्ध" शीर्षक शोकजनक किन्तु गौरवशाली चित्र का स्मरण हो आया। महान रूसी चित्रकार वस्नेत्सोव के चित्र की अनुकृति इसकी स्कूली इतिहास-पुस्तक में दी गयी थी।

"इन्हीं की तरह शायद मैं भी यहां पड़ा हुआ होता," उसने सोचा और एक बार फिर जीवित होने की संवेदना उसके रोम-रोम में पुलक उठी।

उसने अपने को हिलाया-डुलाया। अभी भी उसके दिमाग़ में चक्की के खुरदरे पाट धीरे-धीरे चल रहे थे, पैर जल रहे थे और उनमें पहले से भी बुरी तरह दर्द हो रहा था; फिर भी वह उस भालू के शव पर बैठ गया जो सूखी बर्फ़ के चूरे से ढंककर ठंडा और रूपहला हो गया था; वह सोचने लगा कि अब क्या किया जाय, कहां जाया जाय और अपनी सेनाओं की अगली पांतों तक कैसे पहुंचा जाय।

हवाई जहाज़ से गिरते समय उसका नक़शेवाला डिब्बा खो गया था; फिर भी नक़शे के बिना ही उसके सामने उस दिशा का चित्र साकार हो उठा था, जिधर से वह उड़कर आया था। जिस जर्मन हवाई अड्डे पर लड़ाकू-बममारों ने हमला किया था, वह अगली पांत के पश्चिम की ओर ६० किलोमीटर दूरी पर स्थित था। जर्मन लड़ाकू हवाई जहाजों को आकाशयुद्ध में उलझाकर अलेक्सेई के हवाबाज़ उन्हें उनके हवाई अड्डे से २० किलोमीटर पूर्व की ओर ले आये थे; और दोहरी 'कैंची' से निकल भाग आने पर वह स्वयं थोड़ा और पूर्व की ओर आ गया होगा। इस तरह वह अपनी अगली पांत से कोई ३५ किलोमीटर दूर, अगली जर्मन डिवीजनों के बहुत पीछे, उन घने जंगलों के क्षेत्र में आ गिरा होगा जिसे काला जंगल कहते हैं और जिसके ऊपर से अनेक बार आस-पास के जर्मन अड्डे पर हमला करने के लिए बममारों और लड़ाकू-बममारों के साथ उसने उड़ानें की थीं। आसमान से उसे यह जंगल सदैव ही हरा-भरा अनन्त सागर-सा दिखाई दिया था। अच्छे मौसम में यह वन चीड़ के वृक्षों को लहराती चोटियों के कारण उमड़ पड़ता था; लेकिन बुरे मौसम में झीने, धूसर कुहरे से आच्छादित वन सपाट और मनहूस गंदले पानी जैसा लगता था जिसकी सतह पर छोटी-छोटी लहरियां भर लुढ़क रही हों।

इस बात के, कि वह इतने विशाल वन के बीच गिरा था, अच्छे और बुरे दोनों पहलू थे। अच्छा पहलू यह था कि इस अछूते वन में किसी जर्मन से सामना होने की सम्भावना कम थी, क्योंकि वे अक्सर सड़कों और बसी हुई जगहों के इर्द-गिर्द ही रहा करते थे। बुरा पहलू यह था कि उसकी राह, यद्यपि लम्बी न थी, मगर बहुत कठिन थी; उसे घनी झाड़ियां पार करनी होंगी और आश्रय पाने, रोटी का एक टुकड़ा भर पाने या गर्म पेय का एक प्याला भी पाने के लिए किसी मनुष्य

की सहायता मिलने की कोई सम्भावना न थी। उसके पैर ... क्या वे मंज़िल तक ले जायेंगे? क्या वह चल सकेगा? ..

भालू की लोथ पर से वह हौले-हौले उठा। एक बार फिर उसे वही सख़्त दर्द महसूस हुआ जो पैरों से शुरू हुआ और फिर नीचे से ऊपर उठता सारे शरीर में व्याप गया। उसके होठों से पीड़ा की चीख़ निकल पड़ी और वह फिर बैठ गया। उसने रोएंदार चमड़े के बूट उतारने की कोशिश की, मगर वे तनिक भी न हिले; हर खींच-तान पर वह कराह उठता। दांत भींचकर और कसकर, आंखें बंद कर उसने दोनों हाथों से एक बूट उतार लिया – पर फ़ौरन अचेत हो गया। जब होश आया तो उसने सावधानी से पैर पर चढ़ी पट्टी खोल डाली। पैर सूज गया था और वह पूरे का पूरा एक नीली-नीली चोट जैसा जान पड़ता था। पैर का एक-एक जोड़ जल रहा था और दर्द कर रहा था। उसने बर्फ़ पर अपना पैर टिकाया तो दर्द किसी हद तक कम हो गया। उसी प्रकार उन्मत्त होकर खींच-तान करके, मानों वह अपना ही दांत उखाड़ रहा हो, उसने दूसरे पैर से भी बूट उतार लिया।

उसके दोनों पैर बेकाम हो गये थे। स्पष्ट था कि वायुयान के पेड़ों की चोटियों से टकराने के समय, जब वह अपने आसन से बाहर फिंक गया था, किसी चीज़ में उसके पैर उलझ गये होंगे और उससे पैरों का अगला भाग तथा उंगलियां चूर हो गयी होंगी। साधारण परिस्थितियां होतीं तो निश्चय ही, अपनी ऐसी भयानक अवस्था में वह सपने में भी खड़े होने की कोशिश न करता। मगर वह इस अछूते जंगल के गर्भ में, शत्रु के पृष्ठ-प्रदेश में, बिल्कुल अकेला था, जहां किसी इनसान का सामना होने का अर्थ राहत नहीं, मौत होता। इसलिए उसने पूर्व की ओर, जंगल को चीरकर, बराबर बढ़े चलने और कोई भी सहज सड़क या आबाद स्थल खोजने की कोशिश न करने का संकल्प किया: हर क़ीमत पर बढ़े चलने का निश्चय किया।

भालू के शव पर से वह दृढ़तापूर्वक उठ बैठा, हांफ उठा, दांत किट-किटाये और पहला क़दम बढ़ाया। एक क्षण वह खड़ा रहा, फिर बर्फ़ में से दूसरा पैर निकाला और दूसरा क़दम बढ़ाया। उसके मस्तिष्क में विभिन्न स्वर गूंज उठे और मैदान घूमने लगा और उड़ता-लहराता ग़ायब हो गया।

अलेक्सेई को महसूस हुआ कि वह थकन और दर्द से कमज़ोर होता जा रहा है। ओंठ काटते हुए वह बढ़ता गया और जंगल की एक सड़क तक पहुंचा जो एक ध्वस्त टैंक और हथगोला थामे हुए उज़्बेक के पास से गुज़रती, पूर्व की ओर, जंगल के गर्भ में समा गयी थी। नरम बर्फ़ पर लंगड़ी चाल चलना इतना बुरा न था, मगर ज्यों ही उसके पैरों ने बर्फ़ से ढंकी, हवाओं से सख़्त बनी सड़क की ऊबड़-खाबड़ सतह को छुआ, उसका दर्द इतना दुखदायक बन गया कि उसे फिर क़दम बढ़ाने का साहस न हुआ और वह रुक गया। और इस तरह वह खड़ा रहा, उसके पैर इस भौंड़े ढंग से एक दूसरे से दूर जमे थे और उसका शरीर यों झूल रहा था, मानों आंधी उसे उड़ाये ले जा रही हो। यकायक उसकी आंखों के सामने धूसर धुंध छा गयी। सड़क, देवदार के वृक्ष, चीड़ की मटमैली चोटियां और उनके बीच आसमान के नीले चकत्ते—ये सभी विलीन हो गये... वह अपने हवाई अड्डे पर था, अपने ही विमान के पास खड़ा था और उसका मेकेनिक, दुबला-पतला यूरा, जिसके दांत और आंखें हमेशा की तरह उसके दाढ़ी बढ़े, मलिन चेहरे पर चमक रही थीं, विमान की गद्दी की तरफ़ इशारा कर रहा था, मानों कह रहा था: "यह तैयार है, चढ़कर हवा हो जाओ..." अलेक्सेई ने विमान की तरफ़ पैर बढ़ाया, मगर ज़मीन घूम गयी और उसके पैर इस तरह जल उठे मानों तपकर लाल-लाल धातु पर उसने पैर रख दिया हो। इस ज्वालामय स्थल से बचकर उसने वायुयान के पंख की तरफ़ बढ़ने का प्रयत्न किया, मगर वह उसके ठंडे-ठंडे ढांचे से टकरा गया। वह आश्चर्यचकित था कि हवाई जहाज़ का ढांचा चिकना और पालिश किया हुआ नहीं, ख़ुरदरा था मानो उसपर चीड़ की छाल चढ़ा दी गयी हो... मगर वहां कोई वायुयान न था; वह सड़क पर खड़ा था और एक पेड़ के तने पर हाथ फेर रहा था।

"इन्द्रजाल? चोट से शायद मेरा दिमाग़ फिरता जा रहा है," अलेक्सेई ने सोचा। "इस सड़क पर चलना तो यातनापूर्ण होगा। क्या कहीं मुड़ चलूं? मगर उससे तो चाल धीमी हो जायेगी..." वह बर्फ़ पर बैठ गया और उसी संक्षिप्त, किन्तु तीव्रतम झटके से उसने फ़र-बूट निकाल डाले और उनको जर्जर पैरों के लिए आरामदेह बनाने के लिए दांतों और नाख़ूनों का ज़ोर लगाकर बूटों के ऊपरी हिस्से को फाड़कर उनका मुंह

खोल दिया, फिर अंगोरा ऊन के रोएंदार, बड़े ऊनी मफलर को दो हिस्सों में फाड़कर उनको पैरों पर लपेटकर पुनः बूट चढ़ा लिये।

अब चलना आसान हो गया। मगर इसे चलना कहना सही न होगा: चलना नहीं, किसी तरह आगे घसिटना, सावधानी से आगे बढ़ना, एड़ी पर ज़ोर लगाकर और पैर ऊंचे उठाकर इस तरह क़दम बढ़ाना मानो कोई आदमी दलदल में चल रहा हो। चंद क़दमों के बाद उसका सिर दर्द और मेहनत के ज़ोर के कारण चक्कर खाने लगता था। वह रुकने के लिए मजबूर हो जाता, आंखें बंद कर लेता, किसी पेड़ के तने का सहारा ले लेता या बर्फ़ के किसी ढेर पर आराम करने बैठ जाता और महसूस करता कि उसकी धमनियों में ख़ून तेज़ी से उछल रहा है।

इस तरह वह घंटों आगे बढ़ता रहा। मगर उसने जब घूमकर पीछे देखा तो उसे अभी भी सूर्य की किरणों से आलोकित सड़क के मोड़ पर जंगल की सीमा दिखाई दे रही थी, जहां बर्फ़ पर उस उज़्बेक का शव एक काले धब्बे-सा पड़ा हुआ था। अलेक्सेई को घोर निराशा अनुभव हुआ। निराशा तो अवश्य, मगर भय नहीं। उसमें और तेज़ चलने की भावना जाग उठी। वह बर्फ़ के ढेर पर से उठ बैठा, दांत कसकर भींच लिये और नज़दीक ही कोई लक्ष्य चुनकर, उसपर ध्यान केन्द्रित करते हुए, चीड़ के एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक, एक ठूंठ से दूसरे ठूंठ तक, बर्फ़ के एक ढेर से दूसरे ढेर तक वह बराबर बढ़ता चला गया। और ज्यों-ज्यों वह बढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों अपने पीछे जंगल की उस वीरान सड़क पर अछूती बर्फ़ के ऊपर टेढ़े-मेढ़े, टूटे-फूटे चरण-चिह्न इस तरह छोड़ता जा रहा था, जैसे कि कोई घायल जानवर छोड़ता है।

४

और इस तरह वह शाम तक चलता रहा। पीठ पीछे डूबते हुए सूरज ने जब अपनी शीतल अरुणिमा वृक्ष-शिखरों पर बिखेर दी और जंगल में साये घने होने लगे, तब तक वह जूनिपर की झाड़ियों के दोन तक पहुंच चुका था, और यहां उसकी आंखों के सामने ऐसा दृश्य साकार हो गया कि जिससे उसे महसूस हुआ मानो किसी ने उसकी रीढ़ पर गीला तौलिया फेर दिया हो, और टोप के तले उसके बाल खड़े हो गये हों।

स्पष्ट था कि जब मैदान में युद्ध चल रहा था, तब इस दोन में मेडिकल दस्ता नियुक्त किया गया था। यहां घायल लाये जाते थे और देवदार की नुकीली पत्तियों की शैया पर उन्हें लेटाया जाता था। और यहां अभी भी झाड़ियों के साये में वे घायल, बर्फ़ के नीचे आधे गड़े हुए और कुछ तो पूरी तरह गड़े हुए पड़े रह गये थे। पहली ही नज़र से यह स्पष्ट था कि वे अपने घावों के कारण नहीं मरे थे। किसी ने छुरे के कुशल वारों से उनके गले काट दिये थे और वे सब अभी भी उसी स्थिति और मुद्रा में, गर्दनें पीछे की तरफ़ लटकाये हुए पड़े थे, मानो यह देखने की कोशिश कर रहे हों कि उनकी पीठ पीछे क्या हो रहा है। और इस भयानक काण्ड का कारण भी यहां मिल रहा था। एक देवदार के नीचे, लाल सेना के किसी सिपाही के बर्फ़ से ढंके शव के पास, एक नर्स कमर तक बर्फ़ में धंसी अपनी गोद में इस सिपाही का सिर रखे बैठी थी – वह छोटी-सी दुबली-पतली युवती थी जो सिर पर रोएंदार खाल की टोपी पहने थी और इस टोपी के कनफुंदने ठोड़ी के नीचे फ़ीते से बंधे थे। उसके कंधों के बीच किसी छुरे की बढ़िया पालिशदार मूठ झलक रही थी। पास में एस० एस० टुकड़ी की काली वर्दी पहने फ़ासिस्ट सिपाही और माथे पर ख़ून रंगी पट्टी बांधे रूसी सिपाही के शव पड़े थे। दोनों अपने आख़िरी संघर्ष में एक दूसरे का गला पकड़े थे। अलेक्सेई ने फ़ौरन अनुमान कर लिया कि इसी काली वर्दीधारी ने घायलों की हत्या की थी और ज्यों ही उसने नर्स को छुरा मारा था, त्यों ही वह सिपाही, जो अभी मरा नहीं था, हत्यारे पर टूट पड़ा था और शत्रु का गला दबाने के लिए उसने अपनी आख़िरी शक्ति को उंगलियों में भर लिया था।

और फिर बर्फ़ीले तूफ़ान ने सभी को दफ़न कर दिया था – वह रोएंदार खाल की टोपी पहने छरहरी युवती, जो अपने शरीर की आड़ करके घायल सिपाही की रक्षा करने का प्रयत्न कर रही थी, और ये दो – हत्यारे और प्रतिशोधक – जो एक दूसरे का गला पकड़े हुए पुराने और ख़ूब लम्बे-चौड़े फ़ौजी बूट पहने युवती के पैरों के पास पड़े थे।

अलेक्सेई कई क्षण तक मूर्तिवत खड़ा रहा और फिर नर्स तक लंगड़ाता हुआ पहुंच गया और उसकी पीठ में से छुरा निकाल लिया। यह एस० एस० कटार थी जो पुरानी जर्मन तलवार की तरह बनायी गयी थी

और उसकी महोगनी लकड़ी की मूठ पर एस० एस० का चिह्न बना था। उसके जंग खाये फल पर अभी भी यह लेख दिख रहा था: «Alles für Deutschland» (सर्वस्व जर्मनी की सेवा में)। अलेक्सेई ने जर्मन के शव से चमड़े का म्यान निकाल लिया: रास्ते में उसे इस छुरे की आवश्यकता पड़ेगी। फिर उसने बर्फ़ के नीचे से सख़्त जमा हुआ लबादा खोदा; हार्दिकता के साथ नर्स के शव को इस लबादे से ढंक दिया और उस पर चीड़ की कुछ डालियां रख दीं...

यह करते-करते सांझ उतर आयी। वृक्षों के बीच से झांकती रोशनी की लकीरें भी मिट गयीं। इधर दोन पर घना और बर्फ़ीला अंधेरा छा गया। सब ओर शांति थी, किन्तु सांझ की हवा के झकोरे वृक्ष-शिखरों को झकझोर रहे थे और वन गा रहा था... कभी सुहावनी लोरियां, तो कभी भयपूर्ण राग। बर्फ़ गिरने लगी, और सूक्ष्मतम शुष्क कण, जो अब आंखों से दिखाई तो न देते थे किन्तु हल्की-सी सर्राहट के साथ झर रहे थे और चेहरे पर चुभ रहे थे, इस दोन के अन्दर भी उड़ते चले आ रहे थे।

वोल्गा स्तेपी में कमीशिन नगर में जन्मा, एक नगरवासी, वन-जीवन से अनुभवहीन अलेक्सेई ने रात का सामना करने की या आग जलाने की तैयारी न की थी। घने अंधकार से घिर जाने और अपने क्षत-विक्षत तथा थकित पैरों में असहनीय पीड़ा अनुभव करने के कारण उसमें लकड़ी जुटाने की शक्ति ही न थी; वह रेंगते हुए नव देवदारों के घने झुरमुट में घुस गया और वृक्ष के नीचे बैठ गया; उसने कंधे सिकोड़ लिये, अपना सिर भुजाओं से घिरे हुए घुटनों पर टेक लिया और अपनी ही श्वास-निश्वास से अपने को गरम बनाता हुआ बिल्कुल मूर्त्तिवत बैठकर उस नीरवता और शान्ति का उपभोग करने लगा।

वह अपना पिस्तौल तैयार रखे था, मगर जंगल में गुज़ारी गयी उस पहली रात में वह उसका उपयोग करने में समर्थ होता, यह संदिग्ध है। वह निर्जीव लट्ठे-सा पड़ा सोता रहा। उसे न चीड़ की अनवरत खड़खड़ाहट सुनाई दी, न सड़क के पास ही कहीं बैठे हुए उल्लू की कर्कश बोली और न कहीं दूर पर से भेड़ियों का चीत्कार—गरज़ यह कि इस जंगल के कोई भी स्वर उसे न सुनाई दिये, जिन से वह घना अंधकार परिपूर्ण था जिसकी चादर में वह लिपटा पड़ा था।

लेकिन जब उषा की पहली किरण फूट पड़ी और जब उस मनहूस पाले में निकट की वृक्ष-राशि धुंधली छायाकार प्रतीत होती थी, तब वह चौंककर जाग पड़ा, मानो उसे किसी ने हिला दिया हो। जागने पर ही उसे याद आ सका कि उस पर क्या बीती है और वह कहां पर है, और अब, जब सब कुछ बीत चुका था तब जिस असावधानी से उसने जंगल में रात गुज़ारी थी उसका स्मरण करने से रोमांच हो आया। भीषण ठंड उसके रोएंदार खाल के अस्तरवाली वर्दी के भीतर घुसकर हड्डियों तक पैठ चुकी थी। वह कांपने लगा, मानो ज्वर चढ़ रहा हो। उसके पैरों का तो और भी बुरा हाल था, दर्द पहले से भी ज़्यादा तेज़ हो गया था, हालांकि इस समय वह आराम कर रहा था। खड़े होने की कल्पना मात्र से ही वह भयभीत हो उठा। फिर भी एक झटके के साथ उसी प्रकार वह दृढ़तापूर्वक उठ खड़ा हुआ, जिस तरह पिछले दिन उसने पैरों से बूट खींचे थे। एक-एक क्षण अमूल्य था।

अलेक्सेई जितनी यातनाएं भोग रहा था, उनमें भूख की यातना और जुड़ गयी। पिछले दिन जब उसने नर्स के शव पर लबादा डाला था, तब नर्स की बग़ल में उसने रेड क्रास का कनवास थैला पड़ा देखा था। कोई छोटा जानवर इसकी सामग्री पहले ही चट कर चुका था और ज़मीन में जानवरों द्वारा बनाये गये छेदों के पास बर्फ़ पर कुछ टुकड़े पड़े हुए थे। इनकी तरफ़ पिछले दिन अलेक्सेई ने कोई ख़ास ध्यान न दिया था, मगर अब उसने वह थैला उठाया और उसमें कई तरह की मरहमपट्टियां, गोश्त का एक बड़ा टिन, चिट्ठियों का एक गट्ठा और एक शीशा मिला जिसके पीछे की तरफ़ किसी दुबले चेहरेवाली बूढ़ी महिला का चित्र था। स्पष्ट था कि थैले में कुछ रोटी के टुकड़े भी रहे होंगे लेकिन चिड़ियों या जानवरों ने उनको निपटा दिया था। अलेक्सेई ने गोश्त के डिब्बे और पट्टियों को अपनी वर्दी के हवाले कर दिया और अपने आप से कहा: "धन्यवाद प्रियवर।" उसने वह लबादा फिर संभाल दिया जिसे हवा ने नर्स के पैरों पर से हटा दिया था, और पूर्व की ओर बढ़ चला, जो अब वृक्षों की डालियों के जाल के पीछे नारंगी रंग की लौ से आलोकित हो गया था।

अब उसके पास एक किलोग्राम गोश्त का टिन हो गया था और उसने संकल्प किया कि वह दिन में एक बार, दोपहर को, खाया करेगा।

५

एक-एक पग पर अलेक्सेई जो यातना भोग रहा था, उसकी तरफ़ से ध्यान हटाने के लिए उसने अपने रास्ते के बारे में सोच-विचार करना और हिसाब-किताब लगाना शुरू कर दिया। अगर वह हर दिन दस या बारह किलोमीटर चले तो तीन दिन में या अधिक से अधिक चार दिन में अपने लक्ष्य तक पहुंच जायेगा।

"यह ठीक रहा! मगर दस या बारह किलोमीटर चलने का मतलब क्या होगा? दो हज़ार क़दम का एक किलोमीटर होता है; इस तरह दस किलोमीटर के बीस हज़ार क़दम हुए; लेकिन अगर यह ध्यान रखा जाय कि मुझे हर पांच या छः सौ क़दम के बाद आराम करना होगा तो यह बहुत बैठेगा..."

पिछले दिन यात्रा आसान बनाने के लिए अलेक्सेई ने कुछ प्रत्यक्षदर्शी लक्ष्य बनाये थे: कोई चीड़ वृक्ष, कोई ठूंठ या सड़क का कोई गड्ढा और इस तरह हर लक्ष्य को विश्राम-स्थल बनाता हुआ वह उसकी तरफ़ बढ़ रहा था। अब उसने यह सब आंकड़ों में परिवर्तित कर दिया—यानी किसी ख़ास संख्या तक क़दमों के रूप में। उसने प्रत्येक मंजिल के लिए एक हज़ार क़दम की सीमा यानी आधा किलोमीटर, और घड़ी देखकर एक निश्चित समय तक यानी पांच मिनट तक ही विश्राम की अवधि निश्चित की। उसने हिसाब लगाया कि इस तरह, यद्यपि कठिनाई का सामना करना पड़ेगा, फिर भी वह सूर्योदय से सूर्यास्त तक दस किलोमीटर पार कर सकेगा।

किन्तु प्रारम्भिक एक हज़ार पग कितने कठिन थे! दर्द भुलाने के लिए उसने क़दम गिनना शुरू किया, मगर पांच सौ के बाद वह गिनती भूल गया और उसके बाद दाहक और बेधक पीड़ा के अतिरिक्त अन्य कोई बात न सोच सका। इस सबके बावजूद, फिर भी उसने एक हज़ार क़दम पूरे कर ही लिये। बैठने की शक्ति के अभाव में वह बर्फ़ पर औंधा लेट गया और उसे भूखे की तरह चाटने लगा, उसने अपना मस्तक और कनपटियां बर्फ़ से चिपका दीं और हिम-स्पर्श से अवर्णनीय आनन्द अनुभव करने लगा।

वह सिहर उठा और घड़ी की ओर देखने लगा। सेकंड की सुई नि-

श्चित पांच मिनटों के ग्राखिरी सेकंडों पर से गुज़र रही थी। भागती हुई सुई की तरफ़ उसने भयपूर्वक दृष्टि डाली और इस तरह कांप उठा, मानो जब उसका चक्कर पूरा हो जायेगा तो कोई भयंकर काण्ड होने की सम्भावना है, किन्तु ज्यों ही वह सुई साठ के अंक पर पहुंची, वह एक कराह भरकर फ़ौरन खड़ा हो गया और आगे चल दिया।

दोपहर तक, जब चीड़ की घनी शाखाओं को चीरकर आनेवाली रवि-रश्मियां जंगल के अर्ध-अंधकार में रेशमी डोरों-सी चमक रही थीं और पेड़ों की गोंद और पिघली बर्फ़ की तीखी गंध जंगल में भर उठी थी, तब तक वह सिर्फ़ चार मंज़िल पार कर पाया था। अंतिम मंज़िल के बाद वह बर्फ़ पर लुढ़क गया, क्योंकि उसमें इतनी भी शक्ति न बची थी कि वह भोज वृक्ष के तने का सहारा ही ले सके जो लगभग एक हाथ की दूरी पर ही था। यहां वह बड़ी देर तक छाती पर सिर लटकाये बैठा रहा, वह कुछ नहीं सोच पा रहा था, कुछ नहीं देख या सुन रहा था, भूख की तड़प तक उसे महसूस न हो रही थी।

उसने गहरी सांस ली, बर्फ़ के कुछ टुकड़े मुंह में डाले और जिस जड़-ता से उसका शरीर बंधा था, उसे दूर कर उसने जेब से गोश्त का जंग खाया टिन निकाला और छुरा निकालकर उस डिब्बे को खोल डाला। उसने जमी हुई निस्वाद चर्बी का एक टुकड़ा मुंह में डाला और उसे निगलना ही चाहता था कि वह चर्बी पिघल गयी। पिघली हुई चर्बी का स्वाद मिलते ही उसे भूख की ऐसी ज्वाला सताने लगी कि वह बड़ी ही कठिनाई से अपने को डिब्बे से अलग कर सका, और कोई भी चीज़ निगलने की ग़रज़ से बर्फ़ के टुकड़े खाने लगा।

और आगे बढ़ने से पहले उसने जूनिपर झाड़ी की टहनियां काटकर एक जोड़ा छड़ी बना ली। वह इन छड़ियों के सहारे चलने लगा, मगर ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, उसके लिए चल पाना अधिकाधिक दूभर होता गया।

६

उस घने वन में यातनापूर्ण यात्रा के तीसरे दिन, जिसमें उसे कहीं भी मनुष्य का चिह्न नहीं मिला, एक अप्रत्याशित घटना हो गयी।

सूर्य की पहली किरण के साथ वह शीत और अंदरूनी ज्वर से कांप-

ता हुआ जाग गया। अपनी वर्दी की एक जेब में उसे सिगरेट लाइटर मिल गया जिसे उसके मेकेनिक ने ख़ाली कारतूस के खोल से बनाया था और उपहार-स्वरूप भेंट किया था। इसके बारे में वह बिल्कुल भूल ही गया था, वरना वह आग जला सकता था और जला भी लेना चाहिए था। जिस चीड़ के वृक्ष के नीचे वह सोया था उसकी सूखी और काई जमी डालियां तोड़कर उसने उन्हें चीड़ की पत्तियों से ढंक दिया और आग लगा दी। नीलगूं धुएं के बीच से लपलपाती हुई पीली ज्वालाएं उठने लगीं। सूखी, गोंदयुक्त लकड़ी शीघ्र ही विह्वल भाव से जल उठी। लपटें चीड़ की पत्तियों पर झपटीं और हवा का सहारा पाकर हिसहिसाती और कराहती हुई उमड़ पड़ीं।

अलाव से शुष्क सुखकर गर्मी आ रही थी। अलेक्सेई का मन एक सुखद भावना से भरपूर हो उठा। उसने अपनी वर्दी के ज़िपर तोड़ डाले और अंदर की क़मीज़ की जेब से मुड़े-मुड़ाये कुछ पत्र निकाले जो एक ही हस्तलिपि में लिखे हुए थे। एक पत्र के अंदर सेलाफ़ोन के टुकड़े में लिपटी हुई एक तस्वीर निकली, जिसमें फूलोंवाली छींट की फ़ाक पहने एक छरहरी लड़की घास पर पैर समेटे हुए बैठी थी। वह काफ़ी देर तक उस फ़ोटो की ओर दृष्टि गड़ाये रहा और फिर उसी सेलाफ़ोन के टुकड़े में उसे लपेटकर लिफ़ाफ़े में बंद करके वह क्षण भर किन्हीं विचारों में लीन-सा उसे हाथ में थामे रहा और अंत में उसे जेब के हवाले कर दिया।

"सब ठीक है, सब कुछ ठीक हो जायेगा," उसने कहा, उस लड़की से या अपने आप से, यह बताना कठिन है। और पुनः विचारलीन होकर उसने दोहराया, "सब ठीक है..."

फिर अभ्यस्त भाव से उसने रोएंदार खाल के बूट झाड़े और ऊनी पट्टियां खोलकर पैरों की परीक्षा करने लगा। वे और भी सूज आये थे, उंगलियां सभी दिशाओं में फैल गयी थीं, पैर ऐसे लगते थे मानो हवा भरकर फुलाये गये गुब्बारे हों और पिछले दिन की अपेक्षा और भी गहरे स्याह रंग के हो गये थे।

अलेक्सेई ने ठंडी सांस ली, बुझती हुई आग की ओर विदाई की नज़र डाली और पुनः अपनी यात्रा पर चल पड़ा—उसकी छड़ियां सख़्त बर्फ़ पर किटकिटाने लगीं। वह ओंठ काटता हुआ बढ़ रहा था और कभी-कभी

तो लगभग चेतना खो बैठता था। यकायक जंगल के उन सामान्य स्वरों के बीच, जिनके प्रति उसके कान इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि उन स्वरों की ओर वह कान भी न दे पाता था, उसे मोटर इंजनों की दूरागत धड़कन सुनायी पड़ी। पहले तो उसने सोचा कि वह थकान के कारण मायावी भ्रम का शिकार हो रहा है, किन्तु वह आवाज़ें और भी तीव्र हो उठीं—कभी पूरे वेग से धड़धड़ातीं, तो कभी मंद हो जातीं। स्पष्ट था कि वे जर्मन हैं और वे उसी दिशा में जा रहे हैं जिसमें वह स्वयं जा रहा था। फ़ौरन अलेक्सेई का दिल दहल उठा।

भय ने उसमें शक्ति भी पैदा कर दी। अपनी थकान और पैरों का दर्द भूलकर वह सड़क से मुड़ गया और एक झाड़ी की ओर चल दिया। वहां पहुंचकर वह उसके अंदर रेंग गया और बर्फ़ पर लेट गया। सड़क से उसे देख पाना तो कठिन था, मगर देवदार की चोटियों की कंटीली चहारदीवारी से ऊपर चढ़ आये सूरज की किरणों से रोशन सड़क को वह ख़ुद बख़ूबी देख सकता था।

आवाज़ें और क़रीब आ गयीं। अलेक्सेई को याद आया कि जहां से उसने रास्ता छोड़ा है, वहां से उसके चरण-चिह्नों की रेखा साफ़ दिखाई देती है, किन्तु यहां से भागने की कोशिश करने के लिए अब अवसर भी नहीं था, क्योंकि सबसे आगे की गाड़ी के इंजन की धड़-धड़ अब बहुत क़रीब आ गयी थी। अलेक्सेई बर्फ़ से और भी अधिक चिपक गया। पहले एक लम्बी, पंचकोण, सफ़ेद रंग की बख़्तरबंद गाड़ी पत्तियों के बीच से प्रगट हुई। डगमगाते हुए और जंजीरें खनखनाते हुए वह गाड़ी उस स्थान के निकट आ पहुंची जहां से अलेक्सेई के पद-चिह्न सड़क छोड़कर मुड़ गये थे। अलेक्सेई ने सांस रोक ली। बख़्तरबंद गाड़ी बढ़ती ही गयी। उसके बाद एक छोटी खुली हुई मोटर-गाड़ी निकली। ऊंची टोपी पहने और रोएंदार खाल के कोट के भूरे कालर में अपनी नाक घुसेड़े हुए कोई व्यक्ति ड्राइवर की बग़ल में बैठा था और उसके पीछे ऊंची बेंचों पर, मोटर-गाड़ी के हर धचके से झूलते हुए कई टामीगनवाले बैठे थे, वे धूसर-हरित ग्रेटकोट और लोहे के कनटोप पहने थे। उससे कुछ पीछे एक और, मगर पहली से बड़ी

खुली गाड़ी पेटियों से चरमराती और खनखनाती हुई प्रकट हुई और उसमें पंद्रह जर्मन क़तारों में बैठे थे।

अलेक्सेई बर्फ़ से और भी ज़ोर से चिपक गया। गाड़ियां इतने पास आ गयी थीं कि उनके इंजन से निकलनेवाली बेकार गैस के थपेड़े अलेक्सेई के मुंह पर पड़ रहे थे। उसे महसूस हुआ कि गर्दन पर रोएं खड़े हो गए हैं और उसकी मांसपेशियां तनकर गेंद बन गयी हैं। मगर गाड़ियां गुज़र गयीं, उनकी गैस की गंध विलीन हो गयी और उनके इंजनों की आवाज़ कहीं इतनी दूर पहुंच गयी थी कि सुनना कठिन था।

जब सब शांत हो गया तो अलेक्सेई फिर सड़क पर निकल आया जहां गाड़ियों की पेटियों के चिह्न साफ़ दिखाई दे रहे थे, और इन्हीं चिह्नों के पीछे-पीछे वह पूर्व की ओर बढ़ चला। वह उसी तरह नपी-तुली मंजिलें बांधकर चलने लगा, वह उसी तरह विश्राम करता और उसी तरह आधे दिन का रास्ता तय करने के बाद उसने नाश्ता किया। किन्तु अब वह जंगली पशु की तरह, अत्यन्त सावधानी से चल रहा था। उसके चौकन्ने कान तनिक-सी आहट भी पकड़ लेते, उसकी आंखें चारों तरफ़ इस तरह घूमतीं, मानो पास-पास कोई बड़ा भारी और ख़तरनाक जानवर घात में बैठा है।

एक हवाबाज़ के लिए, जो आकाश-युद्ध का ही अभ्यस्त हो, यह पहला अवसर था जब उसने सामने भूमि पर जीवित और अक्षत शत्रु को देखा था। अब उनके क़दमों के चिह्नों पर वह चहलक़दमी कर रहा था और प्रतिशोध के भाव से वह हंस पड़ा। यहां शत्रु को मज़े मारने का मौक़ा भी नहीं मिल रहा है, जिस भूमि पर उसने अधिकार जमा लिया है, वहीं उसे न कोई आनन्द मिला और न कोई आतिथ्य! इस अक्षत वन में, जहां पिछले तीन दिन में अलेक्सेई को इनसान का कोई निशान तक न मिला, शत्रु का अफ़सर इतने अधिक अंगरक्षकों की छाया में यात्रा करने के लिए विवश हो रहा था।

"सब ठीक है, सब कुछ ठीक हो जायेगा!" अलेक्सेई ने अपना हौसला बढ़ाने के लिए कहा और यह भुलाने की कोशिश करते हुए कि उसके पैरों की पीड़ा अधिकाधिक तीव्र होती जा रही है और प्रत्यक्षतः वह स्वयं सारी शक्ति खोता जा रहा है, वह क़दम-ब-क़दम बढ़ता ही चला गया।

नन्हे देवदार की नरम छाल चबाकर और निगलकर, अथवा भोज वृक्ष की कड़ुवी कलियां खाकर या लाइम वृक्ष की नाज़ुक और चपकती छाल चूसकर, जो मुंह में चुसनी-गोंद जैसी लगती है, अब अपने पेट को धोखा देना सम्भव न रहा।

सांझ होते-होते वह मुश्किल से पांच पड़ाव पार कर पाया था। मगर रात में उसने भोज वृक्ष के आधे सड़े, बड़े भारी तने के चारों ओर, जो उसे ज़मीन पर पड़ा मिल गया था, बड़ी तादाद में देवदार की डालियां और सूखी झाड़ियां जमाकर भारी आग जलायी। तना मद्धिम चमक और सुखकर उष्णता प्रदान करता हुआ सुलगता रहा और वह उस जीवनदायिनी उष्णता का आनंद लेते हुए स्वभावतः पहले एक करवट और फिर दूसरी करवट बदलता हुआ पांव फैलाये सोता रहा, और कभी जाग उठता ताकि उस लट्ठे के अग़ल-बग़ल हौले-हौले लपलपाती हुई ज्वालाओं को पुनर्जीवित करने के लिए झाड़-झंखाड़ और रख दिये जायें।

अर्धरात्रि को बर्फ़ीला तूफ़ान आया। भयभीत चीड़ वृक्ष झूमने, खड़खड़ाने, चटखने और कराहने लगे। नुकीले हिम-कणों के बादल धरती पर उमड़ पड़े। छनछनाती, भभकती आग के चारों ओर खड़खड़ करती हुई मनहूसियत घुमड़ने लगी। लेकिन इस अंधड़ से अलेक्सेई विचलित न हुआ; वह आग की उष्णता से संरक्षित, गहरी और मधुर निद्रा में लीन था।

आग ने वन्य पशुओं से भी उसकी रक्षा की। और जहां तक फ़ासिस्टों का प्रश्न है, ऐसी रात में उनसे डरने की कोई आवश्यकता न थी। बर्फ़ीले अंधड़ में वे घने जंगल के अंदर प्रवेश करने की हिम्मत ही नहीं कर सकेंगे। इतना होते हुए भी, यद्यपि उसका थकित शरीर धूम-धुआंरी आग की गर्मी में विश्राम कर रहा था, फिर भी उसके कान, जो वन के निवासियों के लिए आवश्यक सावधानी के अभ्यस्त हो चुके थे, हर आवाज़ के बारे में चौकन्ने थे। भोर होने से पहले, जब तूफ़ान शान्त हो गया और मौन धरती पर घना सफ़ेद कुहरा घिर आया, तब अलेक्सेई को लगा कि झूमते हुए चीड़ वृक्षों की खड़खड़ाहट और हिमपात की कोमल थपकियों के स्वर के ऊपर कहीं दूर से युद्ध की ध्वनियां, विस्फोटों, टामीगनों के दग़ने और बंदूक़ें चलने की आवाज़ें आ रही हैं।

"मोर्चे की पांत क्या इतने क़रीब हो सकती है? इतनी जल्दी?"

लेकिन जब सुबह हवा ने कुहरे को छिन्न-भिन्न कर दिया और जंगल, जो रात में रुपहला हो गया था, ठंडे और दमकते सूरज की रोशनी में चमक उठा और पंखधारी जीव, मानो इस आकस्मिक रूपान्तर से आनन्दित होकर फुदकने, चहचहाने और वसंतागम की आशा में गाने लगे, तब अलेक्सेई को बहुत कान लगाने पर भी न तो किसी युद्ध की आहट जान पड़ी और न किसी बंदूक़ के दगने या तोप तक के गरजने की आवाज़ सुनाई दी।

सूर्य की रोशनी में चमचमाते हुए नुकीले हिम-कण सफ़ेद धूम-धुआंरे झरने की तरह वृक्षों से झर पड़े। यहां-वहां भारी जल-कण भूमि पर पड़ी बर्फ़ के ऊपर हल्की-सी थपकी के स्वर में गिर पड़ते थे। वसंत! आज पहली बार उसने इतनी स्पष्टता और दृढ़ता से अपना आगमन घोषित किया था।

अलेक्सेई ने डिब्बे में से बची-खुची सौंधी चरबी में लिपटे हुए गोश्त के चंद क़तरों को भी आज सुबह ही खा डालने का निश्चय किया, क्योंकि उसे लग रहा था कि अगर उसने ऐसा न किया तो वह उठने भर की शक्ति भी न संजो पायेगा। उसने उंगलियों से इस तरह डिब्बा बिल्कुल साफ़ कर दिया कि खुरदरे किनारों की रगड़ से जहां-तहां उसकी उंगलियां कट गयीं, किन्तु फिर भी उसे यही लगता रहा कि अभी भी चरबी की खुरचन कहीं लगी रह गयी है। उसने डिब्बे में बर्फ़ भर ली, बुझती हुई आग की राख झाड़ दी और दमकते शोलों पर डिब्बा रख दिया। बाद में गोश्त की हल्की गंध से सुवासित गर्म पानी को उसने अत्यन्त स्वाद से पी डाला। पानी ख़त्म कर उसने डिब्बा फिर जेब में खिसका दिया—इस इरादे से कि बाद में उसे चाय बनाने के लिए इस्तेमाल करेगा। गरम चाय! यह आनन्ददायक खोज थी, और इस बार जब उसने पुनः यात्रा आरम्भ की, तो इस खोज के कारण उसका हौसला कुछ बढ़ गया।

किन्तु अभी तो उसपर एक और बड़ी निराशा टूट पड़नेवाली थी। रात के बर्फ़ीले तूफ़ान में सड़क पूर्णतया विलीन हो गयी थी, बर्फ़ कोणाकार और ढलवां ढेरों के कारण वह मार्ग अवरुद्ध हो गया था। उस एकरस, आसमानी चकाचौंध से अलेक्सेई की आंखें दुखने लगीं। फुसफुसी

ग्रौर ग्रभी तक ग्रनजमी बर्फ़ में उसके पैर धंस-धंस जाते थे ग्रौर वह बड़ी ही कठिनाई से उन्हें निकाल पाता था। इस स्थिति में उसकी छड़ियां भी किसी काम की नहीं रह गयी थीं, क्योंकि वे भी बर्फ़ में गहरी धंस जाती थीं।

दोपहर तक, जब पेड़ों के नीचे साये गहरे हो चुके थे ग्रौर वृक्षों की चो-टियों के ऊपर से सूरज सघनता की दरारों के बीच से झांकने लगा था, तब तक ग्रलेक्सेई सिर्फ़ क़रीब पंद्रह सौ क़दम पार कर पाया था ग्रौर वह इतना थक चुका था कि इच्छाशक्ति का ज़बर्दस्त जोर लगाकर ही वह एक-एक क़दम चल पाता था। उसे चक्कर ग्रा गया। पैरों तले ज़मीन खिसक गयी। बार-बार वह गिर पड़ता, बर्फ़ के किसी ढेर के ऊपर कुरकुरी बर्फ़ से मस्तक चिपकाये हुए वह एक क्षण निर्जीव-सा पड़ा रहता ग्रौर फिर उठकर चंद क़दम ग्रौर चल पड़ता। सोने की, लेट जाने ग्रौर सब कुछ भूल जाने की, कोई भी ग्रंग न हिलाने-डुलाने की ग्रदम्य ग्राकांक्षा उसे सताने लगी। जो होना है वह हो। वह रुक जाता, सुन्न-सा खड़ा रहता, इधर-उधर डगमगाता-फिरता ग्रौर फिर ग्रोंठ इतने ज़ोर से काटकर कि उनमें दर्द हो उठता, वह ग्रपने को संभालता ग्रौर बड़ी मुश्किलता से पैर घसीटते हुए कुछ क़दम बढ़ जाता।

ग्रंत में उसने ग्रनुभव किया कि ग्रब वह ग्रागे नहीं चल पायेगा, कोई ताक़त नहीं जो उसे इस जगह से हिला सके, ग्रौर ग्रगर वह बैठ गया तो कभी न उठ सकेगा। उसने चारों ग्रोर लालसापूर्ण दृष्टि डाली। सड़क के किनारे एक नन्हा-सा, घुंघराला चीड़ वृक्ष खड़ा था। बचा-खुचा जोर लगाकर ग्रलेक्सेई उस ग्रोर बढ़ा ग्रौर उसके ऊपर गिर पड़ा। उसकी ठोड़ी ग्राड़ी डालियों पर जा टिकी। उससे उसके टूटे हुए पैरों पर से कुछ भार कम हो गया ग्रौर उसे कुछ राहत महसूस हुई। वह स्प्रिंग जैसी शाखाग्रों पर झुक गया ग्रौर विश्राम का उपभोग करने लगा। जरा ग्रौर ग्राराम पाने की ग़रज़ से उसने पेड़ की ग्राड़ी डाल पर ठोड़ी टिकाये हुए ग्रपना एक पैर फैला दिया ग्रौर फिर दूसरा भी सीधा कर दिया, ग्रौर इस तरह ग्रपने पैरों को पूर्णतया भार-मुक्त करते हुए उन्हें ग्रासानी से बर्फ़ में से निकाल लिया। इस बार उसे एक ग्रौर शानदार सूझ ग्रायी।

"क्यों, ठीक तो है! इस छोटे-से पेड़ को काट लेना ग्रौर ग्राड़ी पड़ी हुई डाल छोड़कर, बाक़ी डालियां ग्रलग करके एक डंडा बना लेना ग्रासान

होगा और उस डंडे को आगे बढ़ाकर अभी जैसे कर रहा हूं वैसे ही उसके सिरे पर लगी आड़ी डाल पर ठोड़ी टिकाकर, सारे शरीर का बोझ उसी पर डालकर मैं अपने पैर आगे बढ़ा सकूंगा। चाल धीमी होगी? हां, धीमी तो ज़रूर होगी, मगर मैं इस क़दर थकूंगा नहीं और मैं बर्फ़ के ढेरों के बैठने और दबने का इंतज़ार किये बिना ही आगे बढ़ सकूंगा।"

वह उसी क्षण घुटनों के बल बैठ गया, कटार से पेड़ काट डाला, उसकी शाखाएं अलग कर दीं और बैसाखी जैसी डाल की चोटी पर रूमाल और पट्टियां बांध दीं तथा तत्काल अपने प्रयोग की परीक्षा करने में जुट गया। उसने डंडा आगे बढ़ाया, अपने हाथों और ठुड्डी को उस डंडे के सिर पर आड़ी डाल के ऊपर टिका दिया, एक पैर आगे रखा और फिर दूसरा पैर आगे बढ़ाया; उसने फिर डंडा आगे बढ़ाया और दो क़दम और बढ़ाये। और इस तरह वह क़दम गिनता और अपनी प्रगति की नयी गति निश्चित करते हुए बढ़ता चला गया।

निस्संदेह, एक व्यक्ति को घने जंगल के अंदर इस विचित्र ढंग से चहलक़दमी करते हुए, गहरी बर्फ़ पर घोंघे की गति से रेंगते हुए और सूर्योदय से सूर्यास्त तक पांच किलोमीटर से अधिक न पार कर पाते हुए देखकर किसी अनजान दर्शक को आश्चर्य अवश्य होता। लेकिन इस विचित्र कार्यकलाप के एक मात्र दर्शक थे नीलकण्ठ, जो अपने को आश्वस्त करने के बाद कि यह विचित्र, तीन पैरोंवाला, ऊबड़-खाबड़ जानवर बिल्कुल नुक़सानदेह नहीं है, उसके नज़दीक आने पर उड़ नहीं जाते थे, बल्कि हठपूर्वक फुदककर उसके रास्ते से हट जाते थे, और सिर झुकाकर उसकी ओर अपनी काली-काली, जिज्ञासापूर्ण, गुरिया जैसी आंखों से व्यंग्यपूर्वक ताक उठते थे।

८

और इस तरह वह दो दिन तक बर्फ़ से ढंकी सड़क पर, बैसाखी आगे बढ़ाकर, उस पर पूरा भार डालता और पैर घसीटता लंगड़ी चाल से चलता रहा। इस समय तक उसके पैर सुन्न पड़ गये थे और कुछ महसूस न करते थे, मगर उसका सारा शरीर हर क़दम पर दर्द से ऐंठा जाता था। अब भूख की आग भी महसूस न होती थी। पेट की मरोड़ और शूल-सा

दर्द अब मंद-मंद, अनवरत पीड़ा बनकर रह गया था, मानो ख़ाली पेट अब सख़्त हो गया है और उलटा होकर अंतड़ियों को दबा रहा है।

विश्राम के क्षणों में अलेक्सेई अपनी कटार से किसी नवविकसित सनोवर की छाल छील लेता, भोज और लाइम वृक्ष की कलियां चुनता और बर्फ़ के नीचे से नर्म, हरी काई भी उखाड़कर रात के पड़ाव में पानी में उबाल लेता—यही उसका भोजन बन गया था। आनन्द की चीज़ थी "चाय" जिसे वह गली हुई बर्फ़ के चकत्तों में से झांकती हुई बिलबेरी पौधे की रोग़नदार पत्तियां चुनकर तैयार करता था। इस गर्म पेय से सारे शरीर में उष्णता फैल जाती और उसे तुष्टि का भ्रम भी हो जाता। धुएं और पत्तों की गंध से भरे उस गर्म पेय का घूंट लेते हुए उसे राहत मिलती और यात्रा इतनी अनन्त और भयानक न महसूस होती।

छठवें पड़ाव पर वह फिर एक घने चीड़ के हरे ख़ेमे के अंदर लेटा और एक पुराने, गोंददार ठूंठ के इर्द-गिर्द आग जला ली, जो उसके हिसाब से सारी रात सुलगती और आग देती रहेगी। अभी भी उजाला था। ऊपर, चीड़ की चोटी की शाखाओं में कहीं एक अदृश्य गिलहरी चीड़ के चिलग़ोज़ों का मज़ा ले रही थी और जब-तब ख़ाली और क्षत-विक्षत फलों को धरती पर फेंक रही थी। अलेक्सेई, जिसका दिमाग़ अब बराबर भूख की तरफ़ केन्द्रित था, हैरान था कि गिलहरी को इन चिलग़ोज़ों में क्या मज़ा मिल रहा है। उसने एक चिलगोज़ा उठाया, एक तरफ़ से उसकी एक पर्त उठा दी और उसके नीचे बाजरे के दाने के बराबर छोटा-सा बीज पाया। देखने में वह साइबेरियाई चीड़ का नन्हा-सा बीज मालूम होता था। उसने बीज को मुंह में डाल लिया, दांतों से पीस डाला और चीड़ के तेल का मधुर स्वाद महसूस किया।

फ़ौरन उसने कुछ ताज़े चीड़ के चिलगोज़े जमा किये, जो ज़मीन पर बिखरे थे, उन्हें आग पर रखकर थोड़े से झाड़-झंखाड़ रख दिये, और जब आग से इन चिलगोज़ों के मुंह खुल गये तो उनके बीजों को हाथ में हिलाया, हथेलियों से पीसकर उसका छिलका उड़ा दिया और फंकी मारकर मुंह में रख लिया।

जंगल हल्की-सी गुंजार से गूंज रहा था। गोंद भरा ठूंठ सुलग रहा था और हल्का-सा सुगंधित धुआं इस तरह छोड़ रहा था कि अलेक्सेई को

अगरबत्ती की याद आ गयी। छोटी-छोटी लौएं कांप उठती थीं, किसी क्षण तेज़ी से जल उठतीं तो दूसरे क्षण बुझ जातीं और इस प्रकार वे सुनहले सनोबर और रुपहले भोज वृक्षों के तनों को कभी प्रकाश के गोल घेरे से बांध देतीं तो कभी उन्हें गहरी मनहूसियत के पर्दे से ढंक देतीं।

अलेक्सेई ने आग पर कुछ झाड़-झंखाड़ और रख दिये और पहले की भांति कुछ और चिलग़ोज़ों को भूंज लिया। चीड़ के तेल की सुगंध से उसके मस्तिष्क में सुदूर बचपन के भूले हुए दृश्य उभर आये... सुपरिचित वस्तुओं से भरा हुआ वह छोटा-सा कमरा। छत से लटके हुए लैम्प के नीचे वह मेज़। छुट्टी के दिन की पोशाक पहने हुए उसकी मां, जो अभी गिरजाघर से लौटी थी, गम्भीरतापूर्वक संदूक़ से काग़ज़ का थैला निकालती है और एक कटोरे में चिलगोज़े उंडेल देती है। सारा परिवार – मां, दादी, उसके दो भाई और सबसे छोटा वह स्वयं – मेज़ के चारों ओर बैठे हैं: चिलगोज़े छीलने का पुनीत कार्य – छुट्टी के दिन का विलास – प्रारम्भ हुआ। कोई एक शब्द नहीं बोलता। दादी बालों में लगनेवाले पिन से बीज निकाल रही थीं और मां मामूली पिन की मदद से। वह बड़ी होशियारी से दांत के बीच कोण रखकर उसका छिलका तोड़तीं, उसके अन्दर से बीज निकालती और मेज़ पर ढेर बनाती जातीं, और जब काफ़ी ढेर जमा हो जाता तो वह हथेली पर रखकर उन्हें किसी बच्चे के मुंह में उंडेल देतीं; और सौभाग्यशाली बच्चा अपने होंठों पर उनके खुरदरे, सख़्त काम-काज से फटे हाथों का स्पर्श अनुभव करता, जिनसे आज छुट्टी का दिन होने के कारण झरबेरी की सुगंध के साबुन की महक आती।

कमोशिन... बचपन! नगर की सीमा पर स्थित उस नन्हे-से घर में रहना कितना आनन्ददायक था!.. लेकिन यहां, जंगल के शोरग़ुल के बीच, एक तरफ़ चेहरा आग-सा तप रहा है और दूसरी तरफ़ पीठ में ठंड तीर-सी बेध रही है। अंधेरे में कहीं उल्लू बोल रहा है, लोमड़ियां रो रही हैं। आग के किनारे गठरी बना हुआ और बुझती हुई आग की कांपती हुई लौ को चिन्तित भाव से ताकता हुआ एक भूखा, बीमार और थकान से चूर इनसान बैठा है – इस विस्तृत और घने जंगल में केवल अकेला और उसके सामने अंधेरे में डूबी हुई अनजानी सड़क है जो न जाने कितनी अप्रत्याशित परीक्षाओं और ख़तरों से पूर्ण है।

"यह भी ठीक है, सब ठीक हो जायेगा!" वह व्यक्ति यकायक कह बैठा और आग की लौ की आख़िरी चमक में साफ़ देखा जा सकता था कि किसी रहस्यपूर्ण विचार से प्रेरित होकर उसके फटे होंठ मुसकराहट बनकर फैल गये थे।

६

अपनी यात्रा के सातवें दिन अलेक्सेई को ज्ञात हुआ कि उस अंधड़ की रात में किसी दूरस्थ युद्ध की आहट कहां से मिली थी।

थकान से बिल्कुल चूर, हर क्षण विश्राम के लिए रुकता हुआ, वह गलती हुई बर्फ़ से भरी जंगल की सड़क पर अपने को घसीटे लिये जा रहा था। वसंत अब दूर न था, वह अपनी उष्ण और झकझोरती हुई हवाएं लेकर इस अक्षत वन में आ पहुंचा था; उसकी निर्मल सूर्य-रश्मियां डालियों से छनकर आ रही थीं और टीलों और पहाड़ियों से बर्फ़ बुहार रही थीं; वह अपने साथ लाया था सांझ के समय शोकार्त कांव-कांव गुंजानेवाले काले कौए, सड़क की कुबड़ों पर मंद-मंद गम्भीर चाल से फुदकनेवाले काक, नम बर्फ़ जो अब मधुमक्खी के छत्ते की तरह छिद्रपूर्ण हो गयी थी, गड्ढों में पिघली बर्फ़ की चमचमाती हुई पोखरियां और वह अत्यंत मादक सुगंध जो हर जीव को आनन्द से अर्द्धमूर्च्छित कर देती है।

अलेक्सेई को वर्ष का यह काल बचपन से ही प्रिय था और अब भी, जब वह भूख से पीड़ित, दर्द और थकान से मूर्च्छित स्थिति में गड़्हों-पोखरियों के बीच भारी और भीगे हुए बूटों में बंधे दुखदायी पैरों को घसीटता और पोखरियों, दलदली बरफ़ और असामयिक कीचड़ को कोसता चला जा रहा था, तब लालायित भाव से उसने नम और मादक सुगंध से फेफड़े भर लिये। अब वह ठौर-कुठौर नहीं देखता था, गड़्हों-पोखरियों से बच निकलने का प्रयत्न न करता था, वह ठोकर खाता, गिर पड़ता, फिर उठ बैठता, डगमगाता हुआ बैसाखी पर पूरा बोझ डालकर खड़ा हो जाता और ताक़त संजोता; और फिर जितना दूर हो सके उतने आगे डंडे को बढ़ा देता और हौले-हौले पूर्व दिशा की ओर बढ़ना जारी रखता।

यकायक एक ऐसे स्थान पर जहां वन मार्ग अकस्मात बायीं तरफ़ मुड़ गया था, वह रुक गया और टकटकी बांधे खड़ा रह गया। जिस जगह

सड़क असाधारण रूप से संकरी थी, वहां दोनों तरफ़ नवजात घने देवदारों की आड़ में खड़ी हुई वही जर्मन गाड़ियां दिखाई दे रही थीं, जो कुछ दिन पहले उसके क़रीब से गुज़री थीं। उनका रास्ता सनोबर के दो बड़े भारी वृक्षों से रुका था। इन पेड़ों के ठीक बग़ल में, वही बख़्तरबंद गाड़ी पड़ी थी और उसका रेडियेटर उन वृक्षों के बीच में फंसा था, मगर अब यह गाड़ी सफ़ेद चकत्तों के रंग की नहीं, ज़ंग खाये हुए लाल रंग की हो गयी थी और अपने पहियों के रिम के बल झुकी खड़ी थी, क्योंकि उसके टायर जल गये थे। उसका छप्पर एक पेड़ के नीचे बर्फ़ पर दानवाकार कुकुर-मुत्ते की तरह पड़ा हुआ था। बख़्तरबंद गाड़ी के पास तीन लाशें – उसके चालकों की – काली और तेल से सनी जाकेटें और कपड़े के कनटोप पहने पड़ी हुई थीं।

दो अन्य मोटर-गाड़ियां भी ज़ंग खाये हुए लाल रंग की पड़ गयी थीं। उनके अंदर का भाग जला हुआ था। वे मोटर-गाड़ियां उस बख़्तरबंद गाड़ी के बग़ल में पिघलती बर्फ़ पर खड़ी थीं और वहां की बर्फ़ धुएं, राख और जली लकड़ी के कारण काली पड़ गयी थी। चारों ओर, सड़क पर, सड़क के किनारे की झाड़ियों के नीचे, खाइयों में हिटलरी सिपाहियों के शव पड़े थे, और उनके चेहरों से स्पष्ट था कि वे भयभीत होकर भाग खड़े हुए थे और, अंधड़ द्वारा खड़े किये गये सफ़ेद पर्दों के पीछे से, उनके ऊपर हर वृक्ष और हर झाड़ी की ओट से मौत टूट पड़ी थी और इसके पहले कि वे जान पाते कि क्या हो रहा है, वे काल के गाल में समा गये। अफ़सर का शरीर, सिर्फ़ उसकी पतलून ग़ायब थी, एक पेड़ से बंधा था। उसकी हरी वर्दी के स्याह कालर पर एक काग़ज़ का टुकड़ा पिन से लगा था, जिस पर लिखा था: "जैसा करने जा रहे थे, वैसा भरो," और उसके नीचे किसी अन्य हस्तलिपि में, पक्की पेंसिल से बड़े मोटे अक्षरों में "लेंड़ी कुत्ता" लिखा हुआ था।

खाने की चीज़ की खोज में अलेक्सेई ने इस युद्ध-स्थल की तलाशी ली। सिर्फ़ एक जगह उसे बासा और गंदा रोटी का टुकरा मिला जो बर्फ़ में कुचला गया था और चिड़ियों की चोंचें मारा हुआ था। उसने उसे फ़ौरन मुंह से लगा लिया और व्याकुलतापूर्वक राई की रोटी की ख़मीरी गंध सांस में समेट ली। उसके मन में रोटी के समूचे टुकड़े को मुंह में रखने

और सुगंधित, गूदे जैसी रोटी को चूसने, चूसते जाने, बराबर चूसते रहने की तीव्र लालसा जाग उठी, लेकिन इस इच्छा को उसने दबा दिया और रोटी के तीन टुकड़े किये; उनमें से दो टुकड़े उसने जांघवाली जेब के हवाले किये और फिर तीसरे टुकड़े के निवाले तोड़े और हर निवाले को चूसनी-गोली की तरह चूसने लगा और जितनी देर सम्भव हो सके, आनन्द लूटने का प्रयत्न करने लगा।

एक बार फिर उसने युद्ध-स्थल का चक्कर काटा और उससे एक नयी सूझ टकरा गयी: "छापेमार आस-पास ही होंगे। झाड़ियों में और पेड़ों के पास की दलदली बर्फ़ उन्हीं के पैरों से रौंदी पड़ी है!" और शायद इन लाशों के बीच उसे टहलते हुए किसी ने देख भी लिया हो और क्या जाने, शायद किसी देवदार की चोटी पर बैठा या झाड़ी के पीछे छिपा हुआ कोई छापेमार उसकी निगरानी कर रहा हो? हाथों को जोड़कर अलेक्सेई पूरी ताक़त से चिल्लाया:

"ओ...हो! छापेमारो! छापेमारो!"

उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी आवाज़ इतनी मंद और कमजोर हो गयी है। उसकी बनिस्बत तो घने जंगल के गर्भ से लौटी हुई प्रतिध्वनि, पेड़ के तनों से दुबारा गूंजकर ज्यादा जोरदार मालूम होती थी।

"छापेमारो! छापेमारो! ओ...हो!" शत्रु की ख़ामोश लाशों के बीच काले, ग्रीज़ सनी बर्फ़ पर बैठकर उसने बार-बार यही पुकार लगायी।

वह आवाज़ लगाता और जवाब के लिए कानों पर जोर देता। अब उसकी आवाज़ भी बैठ उठी और फट गयी; समझ गया कि अपना काम ख़त्म कर और विजयोपहार लेकर छापेमार कभी के जा चुके होंगे—और वास्तव में इस निर्जन वीरान वन में उनके ठहरने से लाभ ही क्या था? फिर भी वह पुकार लगाता रहा, किसी चमत्कार की आशा लगाये रहा, आशा करता रहा कि जिस दाढ़ीवाले व्यक्ति के विषय में उसने इतना अधिक सुन रखा है, वह यकायक झाड़ियों के बीच से प्रगट हो जायेगा, उसे संभाल लेगा और ऐसी जगह ले जायेगा जहां पर एक दिन या एक घंटे ही सही, वह आराम कर सकेगा, उसे किसी बात की चिन्ता न रहेगी और न कहीं पहुंचने के लिए प्रयत्न करना होगा।

गूंजती और कांपती प्रतिध्वनि के स्वर में सिर्फ़ जंगल ही जवाब दे रहा था। लेकिन यकायक, चीड़ की गहरी और मधुर गुंजार के ऊपर उसने हल्की और वेगवती धम-धम की आवाज़ सुनी या कहिए कि जिस ज़ोर से कान लगाकर वह सुन रहा था, उसमें उसे जान पड़ा कि वह सुन रहा है; यह आवाज़ कभी बिल्कुल साफ़ सुनाई देती और कभी बिल्कुल हल्की और अस्पष्ट। वह इस तरह चौंक उठा मानो इस वीराने में किसी मित्रतापूर्ण आवाज़ ने पुकारा हो। वह अपने कानों पर विश्वास न कर सका और गर्दन लम्बी किये हुए ध्यान लगाकर देर तक बैठता रहा।

नहीं! वह भूल नहीं कर रहा था। पूर्व दिशा से नम पवन बह रही थी और साथ में कहीं दूर पर छूटती तोपों के दग़ने की आवाज़ ली रही थी। यह गोलाबारी उन धीमी और छितरी आवाज़ों जैसा नहीं था, जो वह पिछले महीने सुना करता था, जब दोनों पक्ष सुदृढ़ रक्षा पांतों में जमकर और क़िलेबन्दी करके एक दूसरे को परेशान करने के लिए यदा-कदा गोली चला दिया करते थे। यह गोलाबाज़ी तेज़ और लगातार थी और उसकी आवाज़ यों लगती थी, मानो कोई व्यक्ति पत्थर लुढ़का रहा हो या बलूत के उलटे पीपे को घूंसा मारकर बजा रहा हो।

सचमुच! गोलाबाज़ी में ज़बर्दस्त मल्लयुद्ध चल रहा था। आवाज़ों से अंदाज़ लगाने से मोर्चा कोई दस किलोमीटर दूर जान पड़ता था और वहां कोई गम्भीर घटना होती समझ पड़ती थी; कोई पक्ष हमला करने जा रहा था और दूसरा पक्ष जमकर रक्षा करने में जुटा हुआ था। अलेक्सेई के कपोलों पर आनन्द के आंसू ढुलक गये।

वह अपनी आंखें पूर्व की ओर लगाये रहा। यह सच था कि जिस जगह वह बैठा था, वहां से सड़क अकस्मात दूसरी दिशा में मुड़ गयी थी और सामने बर्फ़ीला कालीन बिछा था, मगर उसे आमंत्रित करनेवाली आवाज़ें पूर्व दिशा से ही आ रही थीं; छापेमारों के दीर्घाकार चरण-चिह्न, जो बर्फ़ पर स्याह नज़र आ रहे थे, उसी दिशा की तरफ़ जाते दिखाई दे रहे थे; जंगल में कहीं उसी तरफ़ वे वनवासी वीर पुरुष निवास कर रहे होंगे।

और अलेक्सेई बड़बड़ाया: "यह भी ठीक है, यह भी ठीक है साथियो, सब कुछ ठीक हो जायेगा।" उसने फुर्ती से अपनी बैसाखी आगे बढ़ायी,

उसपर अपनी ठोड़ी टिका दी और उसपर शरीर का सारा बोझ डालते हुए बड़ी कठिनाई से मगर दृढ़ता के साथ उसने पहले एक पैर और फिर दूसरा पैर बर्फ़ पर रखा और सड़क छोड़ दी।

१०

उस दिन वह डेढ़ सौ क़दम भी बर्फ़ पर पूरे न कर सका। सांझ उतर आयी और वह रुकने के लिए मजबूर हो गया। उसने फिर किसी पेड़ का पुराना ठूंठ चुना, उसके चारों तरफ़ सूखे झाड़-झंखाड़ जमाये, अपना कारतूस के खोल से बना सिगरेट-लाइटर निकाला और उसके छोटे-से इस्पाती पहिये को रगड़ा; एक बार फिर रगड़ा—और उसके शरीर में कंपकंपी छूट गयी: लाइटर ख़ुश्क हो चुका था। उसने उसे हिलाया-डुलाया, गैस के आख़िरी क़तरों को सुलगाने की ग़रज़ से उसमें फूंक मारी, मगर कुछ न हाथ लगा। रात घिर आयी। जब तब लाइटर से जो चिनगारियां झर पड़ती थीं, उनसे एक क्षण उसके चेहरे के आसपास का अंधेरा दूर हो जाता था। वह लाइटर का पहिया तब तक रगड़ता रहा जब तक कि चिनगारियां झरना बन्द न हो गयीं, फिर भी आग न तैयार कर सका।

वह अंधेरे में रास्ता टटोलते-टटोलते नन्हे से चीड़ वृक्ष के निकट पहुंचा, उसके नीचे गठरी बनकर बैठ गया, घुटनों पर अपनी ठुड्डी टेक ली, उनको अपने हाथों में कस लिया और जंगल की खड़-खड़ ध्वनियां सुनता हुआ ख़ामोश बैठा रहा। उस रात शायद वह मायूसी का शिकार हो जाता, मगर उनींदे जंगल में उसे तोपों की गड़गड़ाहट और भी साफ़ सुनाई दे रही थी और उसे महसूस हुआ कि अब वह गोलों के दग़ने तथा उनके दूर जाकर गिरने के विस्फोटों की आवाज़ों में भेद कर पा रहा है।

प्रातःकाल जब वह जागा तो अवर्णनीय घबराहट और क्लेश से पीड़ित था। उसने अपने आप से प्रश्न किया: "यह क्या था? क्या दुःस्वप्न था?" उसे याद पड़ा: सिगरेट-लाइटर। किन्तु इस समय जब आसपास की प्रत्येक वस्तु—फुसफुसी बर्फ़, पेड़ों के तने और चीड़ की नुकीली पत्तियां तक—चमक और दमक रही थीं, तब सूर्य की जीवनदायिनी रश्मियों की उष्णता

से उद्दीप्त होकर उसे अपने दुर्भाग्य की उतनी चिन्ता न रह गयी थी। मगर उससे बुरी बात यह थी कि जब उसने अपने सूजे हाथों को घुटनों पर से हटाया, तो उसने देखा कि अब उसके लिए उठना भी असम्भव हो गया था। उठने की कई कोशिशें करने के कारण उसका बैसाखीनुमा डंडा टूट गया और वह बोरे की तरह धम् से ज़मीन पर गिर पड़ा। अपने सूजे हुए अंग-प्रत्यंग को राहत देने के लिए वह पीठ के बल लुढ़क गया और चीड़ की शाखाओं के पार अनन्त नीले आकाश को निहारने लगा जहां घुंघराली स्वर्ण-कोरों से सुसज्जित, सफ़ेद, रूई जैसे बादल भागे चले जा रहे थे। शरीर किसी भांति सीधा हो गया, मगर पैरों को न जाने क्या हो गया था। एक क्षण भी वे उसका बोझ वहन न कर सकते थे। चीड़ का वृक्ष पकड़कर उसने एक बार फिर उठने का प्रयत्न किया और अंततः सफल भी हुआ, किन्तु ज्यों ही उसने अपने पांव पेड़ की तरफ़ बढ़ाने का प्रयत्न किया, त्यों ही कमज़ोरी के कारण और पैरों में एक नये प्रकार की भयानक पीड़ा के वशीभूत होकर वह लुढ़क गया।

क्या अंत निकट है? क्या इस चीड़ के वृक्ष के नीचे ही उसकी मृत्यु हो जायेगी, जहां जंगल के जीव-जन्तुओं द्वारा साफ़ की गयी उसकी हड्डियां भी किसी को न मिलेंगी, कोई उन्हें न गाड़ेगा? कमज़ोरी के वशीभूत होकर वह धरती से चिपक गया। किन्तु दूर पर तोपें गरज उठीं। वहां युद्ध हो रहा था और उसके अपने साथी वहां मौजूद थे। क्या इस आठ या दस किलोमीटर दूरी पार करने की शक्ति वह न संजो सकेगा?

तोपों की गड़गड़ाहट से उसमें नयी शक्ति भर गयी, वह उसको बार-बार आवाहन करने लगी और इस आवाहन पर वह ख़ुद भी कमर कस उठा। वह चारों हाथ-पैरों के बल उठ बैठा और प्रारम्भ में अंतर्प्रेरणा से प्रेरित होकर चौपाये की भांति चलने लगा, मगर बाद में यह देखकर कि डंडे की सहायता की अपेक्षा इस ढंग से जंगल पार कर लेना आसान होगा, वह इस रीति से जानबूझकर, सचेतन भाव से चलने लगा। अब कोई बोझा न ढोना था, इसलिए उसके पैरों में पीड़ा भी कम हुई और अपने हाथों तथा घुटनों के बल वह चल भी तेज़ी से पा रहा था। और एक बार फिर उसे अनुभव हुआ कि आनन्दवश उसका गला भर आया है। और मानो वह किसी ऐसे व्यक्ति की हिम्मत बढ़ा रहा हो, जो हिम्मत हार चुका

है और इस विचित्र तरीक़े से आगे बढ़ने की सम्भावना पर संदेह कर रहा है, वह जोर से बोल उठा :

"अब सब ठीक है, मेरे भाई, अब सब ठीक हो जायेगा!"

अपनी एक मंज़िल पार कर चुकने के बाद अलेक्सेई ने अपने सुन्न हाथों को बग़ल में दबाकर गर्म किया और फिर एक नये देवदार वृक्ष के पास सरक गया; उसकी छाल के दो चौकोर टुकड़े काटे और भोज वृक्ष के तने से उसके रेशे की लम्बी-लम्बी पट्टियां उखाड़ लीं, हालांकि इस क्रिया में उसके हाथों के नाख़ून तक उखड़ गये। फिर उसने अपने रोयेंदार बूटों पर से ऊनी गुलूबंद की पट्टियां उतार लीं और अपने हाथों में लपेट लीं; उंगलियों की पोरों पर उसने छाल के टुकड़े रखे तथा रेशे की पट्टियों से उन्हें लपेटा और फिर उस सब को मरहमपट्टी के तस्मे से बांध दिया। इस प्रकार दाहिने हाथ में ख़ूब मोटा और आरामदेह दस्ताना चढ़ा लिया। मगर बायें हाथ के विषय में वह उतना कामयाब न हुआ – यहां ये पट्टियां बांधने में उसे दांतों का सहारा लेना पड़ा। फिर भी उसके हाथों में एक तरह के 'जूते' थे और अलेक्सेई फिर अपनी राह चल दिया – इस बार उसे यात्रा कुछ सहज प्रतीत हुई। अगले विश्राम-स्थल पर उसने घुटनों में भी इसी तरह के टुकड़े बांध लिये।

दोपहार तक, जब गर्मी काफ़ी हो चली थी, उसने हाथों के बल काफ़ी "क़दम" पार कर लिये थे। या तो इस कारण कि वह उस जगह के क़रीब पहुंच गया था जहां से तोपों की गड़गड़ाहट आ रही थी, या किसी कर्णेन्द्रिय-जनित भ्रम के कारण उसे वह आवाजें और भी ज़ोरदार मालूम होने लगी थीं। अब इतनी गर्मी हो गयी थी कि अलेक्सेई अपनी विमान-चालक वर्दी के ज़िपर खोलने के लिए मजबूर हो गया।

काई से ढंके दलदल पर, जिसमें नीचे से हरे-हरे टीले पिघलती हुई बर्फ़ में से झांकने लगे थे, जब वह रेंगकर पार कर रहा था, तभी उसके भाग्य ने एक और उपहार संजो दिया: धूसर, नर्म और नम काई के ऊपर उसे फलदार पौधे की डंडियां दिखायी दीं, जिनमें अनूठे ढंग की, नुकीली, आबदार पत्तियों के बीच टीलों के ऊपर ही लाल, थोड़े-से पिचके हुए, मगर अभी भी रसीले क्रेनबेरी के फल लगे हुए थे। अलेक्सेई ने टीलों के ऊपर सिर झुकाया और होंठों से उस गर्म, मख़मली काई में से,

जिससे दलदल की सौंधी गंध उठ रही थी, बेर के बाद बेर चुगने लगा।

क्रेनबेरी के ज़ायक़ेदार खट-मिट्ठे फलों के कारण – जो कई दिनों के बाद उसे पहली बार भोजन नाम की चीज़ के रूप में मिले थे – उसके पेट में मरोड़ होने लगी। लेकिन उसके दिमाग़ में इतनी शक्ति ही कहां थी कि वह मरोड़ शान्त हो जाने के लिए इंतज़ार कर पाता। वह भालू की तरह एक टीले से दूसरे टीले पर मुंह मारता और अपने होठों और जीभ से मीठी और खट्टी बेरियां चुन लेता। इस प्रकार उसने कई टीले साफ़ कर दिये और उसे न तो अपने जूतों में वसन्त-ऋतु के पानी बैठ जाने की नमी अनुभव हुई, न पैरों का जलन भरा दर्द महसूस हुआ और न थकान मालूम पड़ी – मुंह में खट-मिट्ठे स्वाद और पेट में दिलकश भारीपन के अलावा उसे और कुछ नहीं अनुभव हो रहा था।

उसे क़ै हो गयी, मगर फिर भी वह अपने को न रोक सका और बेरियों पर फिर जुट गया। उसने अपने हाथों से ख़ुद बनाये हुए "जूते" उतार दिये और अपने पुराने टिन को बेरियों से भर लिया, उसने अपने चमड़े के कनटोप को भी भर लिया, उसे एक फ़ीते से अपनी पेटी में बांध लिया और सारे शरीर में फैलती जानेवाली ऊंघ को बड़ी मुश्किल से दबाकर वह आगे रेंग चला।

उस रात एक पुराने देवदार के तले बसेरा बनाकर उसने वही बेरियां खायीं, और पेड़ की छाल तथा देवदार के चिलग़ोज़े के बीज चबाये। फिर वह लुढ़क गया, मगर उसकी नींद चौकन्ने पहरेदार जैसी थी। अनेक बार उसे महसूस हुआ कि अंधेरे में कोई व्यक्ति ख़ामोशी के साथ उसकी तरफ़ रेंगता आ रहा है। वह आंखें फाड़कर देखता, कानों पर इतना जोर डालता कि उनमें सन-सन होने लगती, पिस्तौल निकाल लेता और देवदार के हर चिलग़ोज़े के गिरने की आहट, रात की सख़्त बर्फ़ के चटखने की आवाज़ और बर्फ़ के नीचे बहनेवाले नन्हे-से झरने की हल्की लहर-ध्वनि से चौंक-चौंक पड़ता।

भोर होने से तनिक पहले ही उसे गहरी नींद आ सकी। उसकी नींद जब टूटी तो रोशनी ख़ूब फैल चुकी थी और उस पेड़ के नीचे, जहां वह सो रहा था, उसे किसी लोमड़ी के पैरों के टेढ़े-मेढ़े चिह्न और उनके बीच में उसकी घसिटती हुई पूंछ की लम्बी रेखा नजर आयी।

"तो यही थी जिसने मेरी नींद बार-बार भंग की!" चिह्नों से यह स्पष्ट था कि लोमड़ी ने चारों तरफ़ चक्कर लगाया था, वहां बैठी भी रही थी और फिर चक्कर लगाने लगी थी। अलेक्सेई के दिमाग़ में एक बदख़्याल कौंध गया। शिकारी कहा करते हैं कि यह चालाक जानवर आदमी की मौत का आना भांप जाता है और मृत्योन्मुख व्यक्ति का चक्कर लगाने लगता है। क्या इसी पूर्वबोध के कारण यह डरपोक जानवर यहां आया था?

"फ़िज़ूल बात! कितनी बेबुनियाद बात है! सब ठीक हो जायेगा," उसने अपना हौसला बढ़ाने के लिए कहा और हाथों तथा घुटनों के बल वह फिर रेंगने लगा और रेंगता रहा और इस मनहूस जगह से शीघ्र से शीघ्र दूर होने का प्रयत्न करने लगा।

उस दिन उसका भाग्य एक बार फिर खिल उठा। सौरभपूर्ण जूनिपर झाड़ी में, जहां वह होठों से मटमैली बेरियां चुग रहा था, उसे झरी हुई पत्तियों का विचित्र ढेर दिखाई दिया। उसने हाथ से यह ढेर छुआ, मगर ढेर जमा ही रहा। तब उसने पत्तियों को एक-एक कर अलहदा किया और अंत में किन्हीं खस्ताहाल कांटों पर उसका हाथ पड़ा। वह तुरन्त भांप गया कि वह साही है। वह भारी-भरकम साही थी जो शीतकालीन नींद पूरी करने के लिए झाड़ी में घुस आयी और अपने को गर्म रखने के लिए पतझर की पत्तियों में दुबक गयी। अलेक्सेई पर उन्मत्त आह्लाद सवार हो गया। इस यातनापूर्ण यात्रा भर में वह किसी पशु-पक्षी को मारने का सपना देखता आ रहा था। कितनी ही बार उसने पिस्तौल तानी और किसी नीलकण्ठ, सोयका या ख़रगोश को निशाना बनाने का इरादा किया, लेकिन हर बार बड़ी कश-मकश के बाद वह गोली दाग़ने की आकांक्षा को दबा पाया, क्योंकि उसके पास सिर्फ़ तीन गोलियां शेष थीं—दो शत्रु के लिए और तीसरी, आवश्यकता पड़ने पर, अपने लिए। हर बार उसने पिस्तौल वापस रख लेने के लिए अपने को मजबूर किया, उसे ख़तरा मोल लेने का कोई अधिकार नहीं।

और अब सचमुच ही उसके हाथ गोश्त का टुकड़ा लग गया था! वह यह बिना सोचे-विचारे कि आम विश्वास के अनुसार साही अपवित्र जीव समझी जाती है, उसने फ़ौरन शेष पत्तियां भी हटा दीं। साही सोती रही,

सिमट भी गयी और कांटेदार, भारी-भरकम, अजीबोग़रीब सेम जैसी मालूम दे रही थी। अलेक्सेई ने अपनी कटार के एक वार से उसे मार डाला, उसे खोला, उसके ऊपरी कवच को और अंदर की पीली चमड़ी को उतार दिया और लोथ के टुकड़े-टुकड़े कर, लोलुपता के साथ, अपने दांतों से गर्म, धूसर, नसदार मांस को नोचने लगा, जो हड्डियों से बुरी तरह चिपका हुआ था। इस जानवर का कुछ भी न बचा। अलेक्सेई ने छोटी-छोटी हड्डियां भी चबा डालीं, उन्हें निगल लिया और तब जाकर उसे कुत्ते जैसे बदबूवाले उस गोश्त के बदज़ायक़े का अहसास हुआ। लेकिन भरे पेट के मुक़ाबले, जिससे सारे शरीर में तृप्ति, गर्मी और मदालस पैदा हो गया था, उस दुर्गंध की क्या बिसात थी?

उसने फिर चारों तरफ़ देखा, जो भी हड्डी मिली उसे उठाकर फिर चूसा और उष्णता तथा शान्ति का उपभोग करते हुए बर्फ़ पर लेटा रहा। उसे अगर झाड़ियों से निकली लोमड़ी की सतर्क गुर्राहट न सुनाई दी होती तो शायद वह सो ही जाता। अलेक्सेई ने फिर कान लगाये और यकायक दूर पर गरजनेवाली तोपों की आवाज़ के ऊपर, जिसे वह बराबर पूर्व की दिशा से आती सुन रहा था, उसने मशीनगनों के दग़ने की आवाज़ पहचानी।

सारी थकान फेंककर, लोमड़ी की बात भुलाकर और आराम की आवश्यकता भूलकर वह फिर घने जंगलों की गहराइयों के अंदर रेंग गया।

११

जिस दलदल को उसने पार किया था, उसके बाद एक मैदान था जिसके बीच में दोहरी चहारदीवारी खिंची हुई थी, जिसमें मौसम खाये बांस सरपत और घासपात की रस्सियों से ज़मीन में गड़े खूंटों से बंधे थे। इन बांसों के बीच जहां-तहां बर्फ़ के नीचे से कोई परित्यक्त, निर्जन सड़क झांक रही थी। इससे पता चलता था कि आसपास ही कहीं आदमी बसते हैं! अलेक्सेई का दिल उछल पड़ा। इसकी तो संभावना ही कठिन थी कि इस सुदूर स्थान में हिटलर सिपाही कभी पहुंच पाये हों, और आ भी गये हों, तो अपने आदमी भी कहीं आसपास ही होंगे, और वे निश्चय

ही एक घायल आदमी को पनाह देंगे और अवश्य ही यथासाध्य सहायता देंगे।

अपने भटकने का अंत निकट आया समझकर अलेक्सेई पूरी शक्ति से, एक क्षण भी विराम किये बिना आगे बढ़ता चला। वह रेंगता ही गया, यद्यपि सांस फूल रही थी, बर्फ़ पर औंधे मुंह गिर पड़ता था, चूर होकर चेतना खो बैठता था, फिर भी वह उस टीले की चोटी पर पहुंचने के लिए तेज़ी से रेंगता ही गया, क्योंकि वहां से उसे कोई ऐसा गांव दिखाई पड़ जाने की आशा थी जहां वह अपना आश्रय-स्थल बना सकेगा। किसी बस्ती तक पहुंच जाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देने की आकुलता में वह यह देख पाने में असमर्थ रहा कि इस बाड़े के अलावा और उस सड़क के अतिरिक्त, जो अब बर्फ़ के बाहर अधिकाधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगी थी, इस क्षेत्र में और कोई चिह्न नहीं था जिससे कि आसपास किसी इनसान के होने का बोध हो सके।

अंततः वह टीले की चोटी पर पहुंच ही गया। हांफते हुए, सांस के लिए तड़पते हुए अलेक्सेई ने आंखें उठायीं और फ़ौरन नीचे झपका लीं—ऐसा भयानक था वह दृश्य जिससे उसका साक्षात्कार हुआ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि हाल तक यहां इस वन में एक छोटा-सा ग्राम था। बर्फ़ से ढंके जले-जलाये मकानों के खंडहरों के ऊपर ऊंची-नीची पांतों में सिर उठाये हुए चिमनियों को देखकर उस ग्राम की रूपरेखा सहज ही पहचानी जा सकती थी। यहां-वहां बच रहे थे कुछ बग़ीचों के अवशेष, बेंतों की चहारदीवारें या नंगे एश वृक्ष, जो किसी की खिड़की के बाहर उग आये थे। अब निर्जीव-से और आग में जलकर स्याह बने ये सब वृक्ष बर्फ़ के ऊपर गड़े खड़े थे। यह बर्फ़ से ढंका मैदान मात्र था, जिसमें कटे हुए जंगल के ठूंठों की भांति चिमनियां खड़ी थीं और बीच में, इस दृश्य से बिलकुल बेमेल-सी, एक कुएं की क्रेन उझक रही थी, जिसपर पुराना, लोहे की पत्ती मढ़ा लकड़ी का डोल लटक रहा था और हवा के झोंकों के बल ज़ंग खायी हुई ज़ंजीर से हौले-हौले झूल रहा था। और उधर, गांव के प्रवेश-स्थल पर, हरे-भरे बाड़े से घिरे एक बग़ीचे के पास एक सुन्दर मेहराब खड़ी थी, जिसके नीचे दरवाज़े का किवाड़ ज़ंग खायी चूलों पर हल्के-हल्के डोलता हुआ चरमरा रहा था।

कहीं कोई जीव नहीं, कोई आवाज़ नहीं, कहीं पर धुएं की रेख नहीं। हर तरफ़ वीरानगी! कहीं भी किसी जीवित इनसान का कोई चिह्न नहीं। एक ख़रगोश, जिसे अलेक्सेई ने झाड़ी में भयभीत कर दिया था, भाग खड़ा हुआ और बड़े ही मज़ेदार ढंग से अपनी पिछली टांगें फटकारता हुआ सीधा गांव की तरफ़ नौ-दो-ग्यारह हो गया। वह मेहराब के दरवाज़े पर रुका, अपने पिछले पैरों पर बैठ गया, उसने सामने के पंजे उठाये और एक कान तिरछा किया, किन्तु इस भारी-भरकम, अजीबोग़रीब जानवर को अपनी राह पर फिर रेंग पड़ते देखकर वह ख़रगोश फिर जले-जलाये वीरान बग़ीचों के किनारे-किनारे ग़ायब हो गया।

यांत्रिक गति से अलेक्सेई आगे बढ़ता गया। उसके दाढ़ी भरे कपोलों पर से बड़े-बड़े आंसू ढुलक गये और बर्फ़ में विलीन हो गये। वह मेहराब के उस द्वार पर रुका जहां एक क्षण पहले ख़रगोश रुका था। उस दरवाज़े पर एक तख़्ती के बचे-खुचे हिस्से पर "किंड..." अक्षर लिखे रह गये थे। यह समझ पाना कठिन न था कि इस हरे-भरे बाड़े के अन्दर किसी किंडरगार्टन का साफ़-सुथरा भवन था। गांव के बढ़ई की बनायी हुई कुछ छोटी बेंचें भी मौजूद थीं। उसने बच्चों के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर उन्हें रंदा फेरकर और कांच से रगड़कर समतल और चिकना किया था। अलेक्सेई ने धक्का मारकर दरवाज़ा खोला, रेंगकर वह एक बेंच पर बैठना चाहता था मगर उसका शरीर पेट के बल सरकने का इतना आदी हो चुका था कि वह उठकर बैठ न सका। किसी भांति वह बैठ ही गया तो सारी रीढ़ दर्द करने लगी। विश्राम के लिए वह बर्फ़ पर लेट गया और इस तरह अर्ध चक्राकार हो गया जैसे थके जानवर लेटते हैं।

उसका मन भारी और दुखी हो उठा।

बेंच के चारों ओर बर्फ़ पिघल रही थी, उसमें से काली धरती प्रकट हो रही थी जिससे गर्म-गर्म भाप रोशनी में कांपती, बाल खाती हुई उठती साफ़-साफ़ दिखाई दे रही थी। अलेक्सेई ने मुट्ठी भर गर्म और नर्म मिट्टी ली: वह उसकी उंगलियों में से मक्खन की तरह बह निकली और उसमें से गोबर जैसी सौंधी-सौंधी गंध, गोशाला और लिपे-पुते घर की ख़ुशबू आ रही थी।

यहां इनसान रहते थे, किसी समय, शायद बहुत ज़माना बीत गया,

तब उन्होंने ज़मीन के इस टुकड़े को काले वन-दैत्य से छीना था, अपने लकड़ी के हलों से उसकी जुताई की थी, हेंगी चलाकर उसके ढेले फोड़े थे, उसमें खाद दी थी और उसकी चिन्ता की थी। जंगल और जंगली जानवरों के ख़िलाफ़ बराबर संघर्ष करना, अगली फ़सल तक गुज़र-बसर चलाने की चिन्ता के बराबर परेशान रहना—वह कितना कठिन जीवन था। सोवियत शासन आने पर सामूहिक खेती शुरू की गयी और किसान बेहतर ज़िन्दगी का सपना देखने लगे; खेती की मशीनें आ गयीं और उनके साथ आत्मनिर्भरता भी। गांव के बढ़इयों ने एक किंडरगार्टन बनाया और शाम को इसी बग़ीचे में गुलाबी कपोलों वाले बच्चों को उछलते-कूदते देखकर ग्रामवासी सोचते होंगे कि अब एक क्लब और वाचनालय बनाने का समय आ गया है जिसमें जाड़े की वह सांझ गरमाई और चैन के साथ बितायी जा सके जब बाहर बर्फ़ीला अंधड़ चिंघाड़ता फिरता है; वे इस जंगल की गहराइयों के बीच बिजली लाने का सपना देख रहे होंगे... मगर यहां क्या रह गया—निर्जनता मात्र, जंगल मात्र, अनन्त निर्द्वन्द्व मौन के अतिरिक्त और कुछ नहीं...

इस विषय पर अलेक्सेई जितना सोचता गया, उसका मस्तिष्क उतना ही सक्रिय होता गया। उस कमीशिन का दृश्य, वह वोल्गा पर सपाट और शुष्क स्तेपी मैदान में बसे हुए छोटा-सा धूसर क़स्बा उसकी आंखों के सामने साकार हो उठा। ग्रीष्म और पतझड़ में स्तेपी की तेज़ हवाएं धूल और बालू के बादल लेकर उस क़स्बे पर उमड़ा करती थीं, चेहरों पर थपेड़े मारती थीं, घरों में घुस आती थीं, बंद खिड़कियों में से झपट पड़ती थीं, आंखें अंधी बन जाती थीं और दांत किसकिसे कर जाती थीं। स्तेपी से उठनेवाले यह रेतीले बादल "कमीशिन वर्षा" के नाम से पुकारे जाते थे और कई पीढ़ियों से कमीशिन की जनता इस बालू की आंधी को रोकने और शुद्ध, ताज़ी हवा में सांस-भर लेने का सपना देखती आ रही थी। किन्तु यह स्वप्न तो समाजवादी देश में ही पूरा हो सकता है। लोगों ने आपस में विचार-विमर्श किया और आंधी और धूल के ख़िलाफ़ जिहाद छेड़ दिया। हर शनिवार को सारी आबादी छड़-फावड़े और कुल्हाड़ियां लेकर निकल पड़ती और शीघ्र ही नगर के बीच ख़ाली पड़े मैदान में एक पार्क बन गया और छोटी-छोटी गलियों के दोनों ओर नये-नये क्षीणकाय

पोपलर वृक्षों की पांतें सज गयीं। लोगों ने इतनी सावधानी से इन पेड़ों को पानी दिया और छांट-छूंट की मानो वे उनकी अपनी खिड़कियों पर उगनेवाली किसी बेल के फूल हों। अलेक्सेई को स्मरण हो आया कि जब वसंतकाल में पतली-पतली नंगी शाखाओं में कोपलें निकलीं और उन्होंने हरियाली की पोशाक ओढ़ ली तो क़स्बे के सभी निवासियों ने, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक ने, कितना आनन्द उत्सव मनाया था... यकायक उसने अपने जन्मस्थान कमीशिन की गलियों में फ़ासिस्टों के प्रवेश के दृश्य की कल्पना की। वे ईंधन जुटाने के लिए उन पेड़ों को काट रहे थे, जिन्हें लोगों ने इतने प्यार से पाला-पोसा था। उसका क़स्बा धुएं के गर्भ में समा गया और जिस स्थान पर उसका मकान था, जहां वह बड़ा हुआ और जहां उसकी मां रहती थी, वहां इसी तरह की नंगी, कालिख पुती, दानवी चिमनी रह गयी, जैसी कि यह सामने दिखाई दे रही है।

पीड़ा और मानसिक वेदना से उसका दिल फटने लगा।

इन्हें अब और आगे न बढ़ने देना चाहिए! हमें लड़ना चाहिए, लड़ना ही चाहिए, अपनी आख़िरी सांस तक उनके ख़िलाफ़ जूझना चाहिए – उस रूसी सिपाही की भांति, जो वन-प्रान्तर में शत्रुओं के शवों के ऊपर पड़ा हुआ था।

वृक्षों के धूसर शिखरों को सूर्य की किरणें चूमने लगी थीं।

अलेक्सेई फिर उस जगह उतरकर रेंगने लगा जो कभी गांव की सड़क थी। राख के ढेरों से सड़े शवों की दुर्गंध आ रही थी। गांव उस जंगल से भी अधिक वीरान लग रहा था। यकायक एक विचित्र स्वर सुनकर वह सतर्क हो गया। गली के बिल्कुल सिरे पर राख के एक ढेर के पास उसने एक कुत्ता देखा। वह लम्बे बालों और लटके हुए कानों वाला मामूली कुत्ता था। वह हल्के से गुर्राता हुआ मांस के लोथड़े पर चिपटा हुआ था जिसे उसने अपने पंजों के बीच दबा रखा था। अलेक्सेई पर नज़र पड़ते ही यह कुत्ता, जो सब जानवरों से अधिक विनम्र समझा जाता है और गृहणियों की लगातार झिड़कियों और बच्चों के दुलार का सामान होता है, यकायक गुर्राने लगा और दांत निकाल उठा। उसकी आंखें इस भयानक रूप में जलने लगीं कि अलेक्सेई के रोंगटे खड़े हो गये। उसने अपना दस्ताना उतार फेंका और पिस्तौल संभाल ली। कई क्षणों तक यह मनुष्य और वह कुत्ता,

जो अब जंगली जानवर बन गया था, एक दूसरे को घूरते रहे, और फिर शायद उस जानवर में कोई पुरानी स्मृति जाग गयी कि उसने अपनी थूथनी लटका ली, मुजरिमाने ढंग से दुम हिलाने लगा और अपने गोश्त का टुकड़ा उठाकर, टांगों के बीच दुम दबाकर राख के पीछे भाग गया।

भागो! इस जगह से जितनी जल्दी हो सके, दूर हो जाओ! प्रकाश की अंतिम किरणों का लाभ उठाकर, कोई ख़ास राह न चुनकर, बल्कि सीधे बरफ़ को पार करते हुए अलेक्सेई जंगल की ओर रेंग गया और सहज प्रवृत्तिवश वह उस तरफ़ बढ़ने लगा जहां से तोपों के गरजने की आवाज़ें साफ़-साफ़ सुनाई दे रही थीं। उन आवाज़ों ने उसे चुम्बक की तरह खींच लिया, और जितना ही वह उन आवाज़ों के क़रीब पहुंचता जाता, उतना ही अधिक उनका आकर्षण भी बढ़ता जा रहा था।

१२

एक दिन, दो दिन, शायद तीन दीन तक अलेक्सेई इसी प्रकार रेंगता बढ़ता रहा। वह वक़्त गिनना भूल गया था, हर बात अब स्वयंस्फूर्त प्रयत्न की एक अनन्त शृंखला बनकर रह गयी थी। कभी-कभी नींद या शायद बेहोशी उस पर हावी हो जाती। घिसटता-घिसटता वह सो जाता, किन्तु उसे पूर्व दिशा की ओर जो शक्ति खींचे लिये जा रही थी, वह इतनी शक्तिशाली थी कि बेहोशी की हालत में भी वह हौले-हौले रेंगता हुआ बढ़ता ही चला जाता कि या तो वह किसी पेड़ या झाड़ी से टकरा जाता, या कभी उसके हाथ फिसल पड़ते और पिघलती हुई बर्फ़ पर वह औंधे मुंह गिर पड़ता। उसकी सारी आकांक्षा, उसके सारे अस्पष्ट विचार केन्द्रीभूत प्रकाश-पुंज की भांति एक ही स्थान पर केन्द्रित थे: रेंगते चलो, खिसकते चलो, हर क़ीमत पर आगे बढ़ते चलो!

राह में, चेतना की घड़ियों में, वह फिर कोई साही पकड़ पाने की आशा में हर झाड़ी की छानबीन कर लेता। उसका भोजन था बर्फ़ के नीचे दबी मिल जानेवाली बेरियां और काई। एक बार उसे चींटियों की विशालकाय वल्मीक मिली, जो वर्षा से धुली, स्वच्छ घास-पात के ढेर

की भांति खड़ी थी। चींटियां अभी भी सो रही थीं और उनका निवास-स्थान निर्जीव मालूम होता था। अलेक्सेई ने इस जमे ढेर में हाथ घुसेड़ दिया और जब हाथ बाहर निकाला तो सख़्ती के साथ चमड़ी से चिपकी हुई चींटियों से वह ढंक गया था। उसने बड़े स्वाद से इन्हें खाना शुरू कर दिया और अपने सूखे, चटख रहे मुंह में उसने चींटियों के चटपटे, खट्टे अम्ल का स्वाद अनुभव किया। उसने अपना हाथ बार-बार वल्मीक में घुसेड़ा तो इस अप्रत्याशित आक्रमण से इसके सारे निवासी जाग गये।

नन्ही चींटियों ने भयंकर रूप से आत्मरक्षा की; उन्होंने अलेक्सेई के हाथ, होंठ और जीभ को काटा; वे उसकी वर्दी में घुस गयीं और सारे शरीर में काटने लगीं। किन्तु उसकी जलन उसे सुखकर ही मालूम हुई और उनको खाने के कारण जिस अम्ल ने उसके शरीर में प्रवेश किया, उसने शक्तिवर्धक तत्व जैसा काम किया। उसे प्यास लग आयी। टीलों के बीच उसे भूरे-भूरे जंगली पानी से भरी छोटी-सी पोखरी दिखाई दी; और जब पानी के लिए वह उस पर झुका तो वह भय से एकदम पीछे हट गया; उस मटमैले पानी में से नीले आसमान के प्रतिबिम्ब की पृष्ठभूमि में उसकी ओर एक अजीब भयानक शक्ल ने घूर दिया था। वह चेहरा एक कंकाल मात्र था जो स्याह चमड़ी और गंदे, घुंघराले बालों से ढंका हुआ था। आंखों के गहरे गड्ढों से बड़ी-बड़ी, गोल-गोल पुतलियां भयानक रूप से चमक रही थीं और माथे पर बिखरे हुए बालों की गंदी लटें लटक रही थीं।

"क्या यही मैं हूं?" अलेक्सेई ने अपने आप से प्रश्न किया और दुबारा वह शक्ल देख लेने के डर से उसने पानी नहीं पिया, बल्कि उसके बजाय कुछ बर्फ़ मुंह में रख ली और उसी शक्तिशाली चुम्बक के आकर्षण के वशीभूत होकर, रेंगता हुआ वह पूर्व दिशा की ओर बढ़ने लगा।

उस रात उसने एक बड़े भारी बम के गड्ढे को अपना आश्रयस्थान बनाया, जो विस्फोट से उड़ी हुई पीली रेत की चहारदीवारी से घिरा हुआ था। इस गड्ढे के तल में उसे बड़ी शान्ति और आराम मिला। इसमें हवा न घुस पाती थी; सिर्फ़ रेत के कण, जो चहारदीवारी से उड़कर आ रहे थे, उसमें खड़खड़ा रहे थे। उसमें से तारे असाधारण रूप से बड़े नज़र आ रहे थे और निचाई पर, ठीक उसके सिर पर, लटके मालूम होते थे। चीड़

के वृक्ष की एक झबरी शाखा, जो तारों के नीचे इधर-उधर झूल रही थी, ऐसी लगती थी मानों किसी के हाथ में कोई चीथड़ा है जो इन उज्ज्वल रोशनियों को साफ़ करता है। सुबह से पहले ठंड बढ़ गयी। जंगल पर कच्चा कुहरा घिर आया। हवा के झोंके घुमड़ रहे थे और उत्तर से आ रहे थे, और इस कुहरे को बर्फ़ के रूप में बदल रहे थे। अन्ततः जब शाखाओं के बीच से दीर्घ-प्रतीक्षित, मंद-मंद प्रकाश फूट पड़ा तो गहरा कुहरा उतर आया और धीरे-धीरे छिन्न-भिन्न होने लगा, और चारों ओर धरती फिसलनी, बर्फ़ीली पर्त से ढंक गयी। गड्ढे के ऊपर जो डाल झूल रही थी, वह अब चीथड़ा पकड़े हाथ जैसी नहीं लग रही थी, बल्कि नन्हे-नन्हे घनाकार कांच के बने, उज्ज्वल तथा अद्भुत झाड़फ़ानूस जैसी लगती थी, जो हवा के झोंकों से डोलकर हल्की-हल्की टन-टन ध्वनि कर उठती थी।

नींद टूटी तो अलेक्सेई ने असाधारण निर्बलता अनुभव की। चीड़ की छाल चूसने तक को उसका मन न हुआ, जिसका काफ़ी बड़ा भण्डार वह छाती पर अपनी वर्दी के अंदर छिपाये हुए था। बड़ी ही कठिनाई से वह अपने को ज़मीन से उठा सका, मानों रात में उसका शरीर वहां चिपका दिया गया हो। अपने कपड़ों, दाढ़ी और मूंछ से बर्फ़ फेंके बिना उसने बम के गड्ढे से बाहर निकलने का प्रयत्न किया, मगर उसके हाथ उस धूल पर से फिसल गये जो रात को वहां जमकर रह गयी थी। उसके बाहर निकलने के लिए उसने बार-बार प्रयत्न किया, मगर हर बार वह फिसलकर तली में लुढ़क जाता। उसके प्रयत्न अधिकाधिक क्षीण होते गये। और अंततः वह यह देखकर घबरा उठा कि वह किसी की सहायता के बिना इससे बाहर निकल न पायेगा। इस कल्पना मात्र से प्रेरित होकर उसने उस फिसलनी दीवार पर चढ़ जाने के लिए एक बार और ज़ोर लगाया, मगर वह थोड़ा ही चढ़ पाया था कि चूर-चूर होकर, असहाय-सा फिर फिसलकर नीचे आ गिरा :

"अन्त निकट आ गया! अब क्या है!"

वह खोल के तल में वर्तुलाकार ढेर हो गया और अनुभव करने लगा कि विश्रान्ति की एक भयावनी संवेदना सारे शरीर में रेंगती चढ़ रही है जिससे इच्छा-शक्ति विशृंखलित और विजड़ित हो गयी है। सुस्त गति से

उसने अपने कोट से जर्जर पत्र निकाले, लेकिन उन्हें पढ़ पाने की शक्ति न रह गयी थी। उसने सेलाफ़ोन के रेपर में से एक चित्र निकाला जिसमें चितकबरा फ़्राक पहने एक लड़की खुले मैदान में घास पर बैठी थी। करुण मुसकान के साथ वह उससे पूछने लगा:

"क्या, सचमुच अलविदा का वक़्त आ गया?"—और यकायक वह चौंक उठा और हाथ में तस्वीर लिये मूर्तिवत् बैठा रह गया। उसे ऐसा महसूस हुआ कि जंगल के ऊपर कहीं बहुत ऊंचाई से ठंडी, पालेदार हवा में उसे कोई सुपरिचित स्वर सुनायी दे गया है।

वह तुरन्त आलस झाड़कर उठ बैठा। इस स्वर के विषय में कोई विशेष बात नहीं थी। वह इतना हल्का था कि जंगली जानवर के अत्यन्त सूक्ष्मग्राही कान भी बर्फ़ से लदे वृक्षों की एकरस खड़खड़ाहट के बीच उस स्वर को पहचान पाते। किन्तु उसकी विचित्र सीटी जैसी गूंज सुनकर अलेक्सेई निर्भ्रांत रूप से समझ गया कि वह उसी वायुयान की आवाज़ है जिसे वह स्वयं चलाया करता था।

इंजन की गुनगुनाहट और नज़दीक आती गयी, उसकी गूंज भी बढ़ती गयी और ज्यों-ज्यों विमान आकाश चीरता बढ़ता जाता, त्यों-त्यों कभी उसका स्वर सीटी के रूप में बदल जाता तो कभी क्रन्दन के रूप में, और अंततः धूसर आकाश में बहुत ऊंचाई पर अलेक्सेई को मंद गति से चलती हुई, छोटी-सी, क्रास जैसी चीज़ दिखाई दी जो कभी धूसर, कुहरे जैसे बादलों में ग़ायब हो जाती, तो कभी उनसे बाहर निकल आती। उसके पंखों पर चिह्नित लाल सितारे अब उसे दिखाई देने लगे और ठीक उसके सिर पर आकर उस विमान ने चक्कर लगाया और धूप में चमक उठा और फिर मोड़ लेकर वह दूर उड़ गया। शीघ्र ही उसके इंजन की गुनगुनाहट बंद हो गयी और हवा में झूमते हुए बर्फ़ से ढंके वृक्षों की मर्मर ध्वनि में डूब गयी, किन्तु बड़ी देर तक अलेक्सेई अनुभव करता रहा कि उसकी हल्की-सी, सीटी जैसी आवाज अभी भी उसे सुनाई दे रही है।

उसने विमान की गद्दी पर बैठे हुए अपनी कल्पना की। एक क्षण में ही, जितने में कि सिगरेट में एक कश लगता है, वह वन-प्रान्तर में स्थित अपने हवाई अड्डे पर वापस लौट सकता है। उस वायुयान में कौन था?

शायद अन्द्रेई देगत्यरेन्को था, जो प्रातःकालीन निरीक्षण-उड़ान पर निकला होगा। ऐसी यात्राओं के दौरान शत्रु से मुठभेड़ की गोपन आशा के वशीभूत होकर ऊंची उड़ान भरने का शौक़ उसी को है। देगत्यरेन्को... वायुयान... मेरे दोस्त...

ताज़ी शक्ति से प्रेरित होकर अलेक्सेई ने उस गड्ढे की सर्द दीवार पर नज़र डाली। "इस प्रकार तो मैं कभी इससे नहीं निकल सकता," उसने अपने आपसे कहा, "लेकिन मैं यहां पड़ा हुआ मौत का इंतज़ार भी नहीं कर सकता!" उसने मियान से कटार निकाल ली और बड़ी ही शिथिलता और निर्बलता के साथ खोद-खोदकर उस बर्फ़ीली दीवार पर पैर जमाने के लिए गड्ढे बनाने लगा—जमी हुई रेत को वह हाथ के नाखूनों से खुरचता जाता। उसने इतना खुरचा कि नाख़ून टूट गये और उंगलियों से ख़ून बह निकला, लेकिन अविश्रांत गति से वह अपनी कटार और नाख़ूनों के द्वारा गड्ढे बराबर बनाता गया। फिर गड्ढों पर हाथ और घुटने जमाकर वह धीरे-धीरे ऊपर सरकने लगा और आख़िरकार ऊपर के किनारे तक पहुंच गया। एक बार और ज़ोर लगाकर अगर वह इस किनारे पर लेट जाता और दूसरी तरफ़ लुढ़क जाता, तो वह मुसीबत से छुटकारा पा लेता, मगर तभी उसके पांव फिसल गये और वह दर्दनाक तरीक़े से मुंह के बल पर बर्फ़ पर आ गिरा और नीचे लुढ़कने लगा। उसे सख़्त चोट आयी, मगर वायुयान के इंजन का गुंजन अभी भी उसके कानों में गूंज रहा था। वह फिर ऊपर चढ़ा और फिर फिसलकर पेंदी में आ गिरा। तब, उन गड्ढों की बारीकी के साथ परीक्षा कर उसने उन्हें और गहरा बनाना शुरू किया और चोटी के गड्ढों के किनारे और नुकीले बना डाले, जब यह काम ख़त्म हो गया तो सावधानी से अपनी बची-खुची शक्ति लगाता हुआ वह फिर चढ़ने लगा।

बड़ी ही कठिनाई से वह रेतीले किनारे पर लेट सका और फिर असहाय-सा समतल धरती पर लुढ़क गया। इसके बाद वह फिर उस दिशा की तरफ़ रेंगने लगा जिस ओर विमान उड़ गया था और जिस ओर से बर्फ़ गलानेवाले कुहरे को दूर करता हुआ, बर्फ़ की पर्त को स्फटिक की भांति दमकाता हुआ, बाल रवि वृक्षावलि के ऊपर उग आया था।

१३

लेकिन अब उसे रेंगना भी बहुत मुश्किल लगने लगा। उसकी भुजाएं थरथराने लगीं और शरीर का बोझ संभालने के योग्य भी न रहीं। कई बार वह पिघलती बर्फ़ पर औंधे मुंह गिर पड़ा। ऐसा लगने लगा मानो धरती ने अपनी आकर्षण-शक्ति इतनी अधिक तीव्र कर दी है कि अब उसका प्रतिरोध कर पाना असम्भव है। अलेक्सेई को लेट जाने और कुछ क्षण, आध घंटे ही सही विश्राम कर लेने की अदम्य इच्छा सताने लगी, लेकिन आगे बढ़ते जाने के संकल्प ने भी आज उन्मत्त रूप धारण कर लिया था, और इसलिए वह रेंगता ही गया, बराबर रेंगता गया – कभी गिर पड़ता, तो उठ बैठना और फिर रेंगने लगता, उसे न दर्द का बोध रहा, न भूख-प्यास का, उसे कुछ नजर नहीं आ रहा था, और तोपें तथा मशीनगनें दग़ने की आवाज़ के अलावा उसे कोई स्वर नहीं सुनाई दे रहा था।

जब उसकी भुजाओं ने सहारा देने से इनकार कर दिया, तो उसने कुहनी के बल सरकना शुरू किया, लेकिन यह ढंग बहुत भौंड़ा साबित हुआ, इसलिए वह लेट गया और कुहनियों के बल लुढ़कने का प्रयत्न करने लगा। यह ढंग सफल सिद्ध हुआ। रेंगने की अपेक्षा इस तरह लुढ़कते चलना आसान था और इसमें ज्यादा ज़ोर लगाने की भी जरूरत नहीं थी। लेकिन इससे उसको चक्कर आने लगे और जब तब वह बेहोश होने लगा। बार-बार वह रुकने के लिए मजबूर हो जाता, बैठ जाता और जब तक धरती, जंगल और आसमान चक्कर खाना बंद न कर देते, तब तक इंतज़ार करता।

वृक्षावलि क्षीण होने लगी और जहां पेड़ गिरा दिये गये थे, वहां खुला मैदान बन गया था। शीतकालीन सड़क के चिह्न प्रकट होने लगे। अलेक्सेई को अब यह चिन्ता न रही थी कि वह अपने लोगों तक पहुंच पाने में सफल होगा या नहीं, बल्कि वह संकल्प कर चुका था कि जब तक हिलने-डुलने की शक्ति शेष रहेगी तब तक वह बराबर लुढ़कता बढ़ता जायेगा। उसके कमजोर पट्ठों पर जिस क़दर भयानक ज़ोर पड़ रहा था, उसके कारण जब वह चेतना खो बैठा तब भी उसका सारा शरीर अपने आप उसी जटिल रीति से हिलता-डुलता रहा, और वह बर्फ़ पर बराबर लुढ़कता रहा – उसी पूर्व दिशा की ओर, जहां से तोपों की आवाज़ आ रही थी।

अलेक्सेई को याद न रहा कि उसने रात किस तरह बितायी थी या अगली सुबह उसने कोई प्रगति की थी या नहीं। उसके लिए हर वस्तु अर्द्धमूर्च्छा के अंधकार में डूबी हुई थी। उसे राह में मिली रुकावटों की ही धुंधली-सी याद थी: वह कटे-गिरे सनोबर वृक्ष का सुनहला तना जिससे भूरे रंग की गोंद रिस रही थी; वह लट्ठों और बुरादे का ढेर और छीलन जो चारों तरफ़ बिखरी हुई थी; वह किसी वृक्ष के ठूंठ जिसके कटे हुए सिरे पर उसकी उम्र के एक-एक साल का एक-एक छल्ला पड़ा हुआ था।

किसी विलक्षण आवाज़ ने उसे अर्धमूर्च्छा के लोक से पुकार लिया, उसे होश ला दिया और वह बैठ गया तथा चारों ओर देखने लगा। उसने अपने को किसी बड़े जंगल की कटाई के क्षेत्र में बैठा हुआ पाया, जहां धूप चिलक रही थी और चारों ओर कटे हुए नंगे वृक्ष और लट्ठे बिखरे पड़े थे। एक ओर ईंधन की लकड़ी का ख़ूबसूरत ढेर लगा हुआ था। दोपहर का सूर्य आसमान में शीर्ष पर चढ़ आया था, गोंद की तेज़ गंध, तपते हुए कानीफ़र और बर्फ़ की नमी से हवा बोझिल थी; और अनपिघली धरती के ऊपर बैठी लवा अपनी सहज तान में प्राणों का सारा रस उड़ेलती हुई गा रही थी।

किसी अवर्णनीय ख़तरे की संवेदना से प्रेरित होकर अलेक्सेई ने कटाई के क्षेत्र पर नज़र डाली। कटाई ताज़ी ही थी, और ऐसा नहीं लगता था कि कोई इसे छोड़कर चला गया है। वृक्ष हाल ही में गिराये गये थे, क्योंकि नंगे पेड़ों की डालियां अभी भी ताज़ी और हरी थीं, कटे हुए स्थलों से शहद की तरह गोंद अभी भी रिस रही थी और चारों तरफ़ बिखरी हुई कच्ची छाल और खपच्चियों से ताज़ी सुगंध आ रही थी। अतः सारी कटाई अभी सजीव थी। शायद हिटलर सिपाही अपने लिए शरण-स्थल और क़िलेबंदी बनाने के लिए लट्ठे तैयार कर रहे थे? तब तो बेहतर हो कि वह इस स्थल से यथाशीघ्र खिसक जाये, क्योंकि लकड़ी चीरनेवाले लोग किसी भी क्षण यहां आ धमकेंगे। मगर उसका शरीर जड़ता महसूस करने लगा, भारी दर्द और टीस से जकड़े गया और उसमें हिलने-डुलने की भी शक्ति न रही।

तब क्या वह रेंग चले? वन-जीवन के इन दिनों में उसकी जो सहज प्रवृत्ति बन गयी थी, उसने उसे सतर्क कर दिया। उसे कुछ नज़र तो न

आ रहा था, मगर वह यह अनुभव कर रहा था कि कोई व्यक्ति उसे ग़ौर से निरन्तर ताक रहा है। कौन है वह? जंगल में शान्ति का साम्राज्य था, कटाई के क्षेत्र में ऊपर आसमान में लवा गा रही थी, किसी कठफोड़वे की ठक-ठक सुनाई दे रही थी, और कटे वृक्षों की मुरझायी हुई शाखाओं पर फुदकियां एक दूसरे का पीछा करती हुई क्रोधपूर्वक चीख़ रही थीं। किन्तु इस सबके बावजूद अलेक्सेई अपने रोम-रोम से यह महसूस कर रहा था कि कोई उसे ताक रहा है।

एक शाख़ चटखी। उसने चारों ओर देखा और नवजन्मे सनोबर वृक्षों के कुंज में, जिनके घुंघराले शीश हवा के झोंके से झूम रहे थे, उसने देखा कि कई शाखाएं स्वतंत्र रूप से हिल-डुल रही हैं – वे बाक़ी शाखाओं की ताल के साथ नहीं झूम रही हैं। और उसे ऐसा लगा कि उस कुंज से आती हुई हल्की-हल्की, मगर उत्तेजनापूर्ण कानाफूसी के स्वर – इनसानों की कानाफूसी के स्वर – उसे सुनाई दे रहे हैं। और एक बार फिर उसका रोम-रोम उसी तरह खड़ा हो गया, जैसा कि कुत्ते से मुठभेड़ के समय हुआ था।

उसने तेज़ी से अपनी चालकवर्दी के सीने में से जंग खायी, धूल सनी पिस्तौल निकाली और उसे साध लिया, हालांकि उसके लिए उसे दोनों हाथ काम में लाने पड़े। पिस्तौल की खटक से सनोबर में छिपा हुआ कोई व्यक्ति चौंकता जान पड़ा। कई वृक्षों के शिखर बोझ से थरथरा गये, मानों कोई व्यक्ति उनसे छू रहा है, मगर शीघ्र ही फिर सब शान्त हो गया।

"वह क्या है, आदमी या जानवर?" अलेक्सेई ने अपने आपसे पूछा और उसे ऐसा लगा कि उस वृक्ष कुंज में उसने किसी को पूछते हुए सुना: "आदमी?" क्या यह महज़ उसकी कल्पना मात्र है या सचमुच उस कुंज में उसने किसी को रूसी भाषा बोलते सुना है? हां, हां, वह रूसी भाषा ही है! और चूंकि वह रूसी भाषा के शब्द थे, इसलिए वह ऐसे उन्मत्त आनन्द से विह्वल हो उठा कि यह विचार किये बिना कि वह मित्र है या शत्रु, वह बड़े विजयी भाव से चिल्ला उठा, पैरों पर उठ खड़ा हुआ, उस जगह की तरफ़ दौड़ पड़ा जहां से वह स्वर आया था और तत्काल वहीं लुढ़क गया मानों किसी ने पेड़ को काटकर गिरा दिया हो, और उसकी पिस्तौल बर्फ़ पर जा गिरी...

१४

एक बार फिर उठ बैठने का असफल प्रयास करने के बाद जब अलेक्सेई लुढ़क गया तो वह चेतना खो बैठा, मगर ख़तरा सिर पर होने के बोध के कारण वह फ़ौरन होश में आ गया। अब कोई संदेह न रहा कि सनोबर के कुंज में कुछ लोग छिपे हुए थे, उसपर नज़र रख रहे थे और किसी विषय पर आपस में कानाफूसी कर रहे थे।

वह भुजाओं के बल उठ बैठा और बर्फ़ पर पड़ी पिस्तौल उठा ली, मगर उसे धरती से सटाकर आंखों से ओझल किये रहा, और चौकसी करने लगा। ख़तरे ने उसे मूर्च्छितावस्था से पूरी तरह मुक्त कर दिया था। उसका मस्तिष्क बड़ी मुस्तैदी से काम कर रहा था। वे लोग कौन हैं? शायद लकड़ी चीरनेवाले लोग हैं, जिन्हें जर्मन लोग अपने लिए ईंधन तैयार करने के लिए ज़बर्दस्ती यहां ले आये होंगे? या शायद वे रूसी हैं, जो अलेक्सेई की ही तरह घिर गये होंगे और अब चोरी-चोरी जर्मन पांतों से बच निकलकर अपने पक्ष के लोगों तक पहुंचने का प्रयत्न कर रहे हैं। या शायद आसपास रहनेवाले किसान हैं? जो हो, यह तो निश्चय है कि उसने किसी को साफ़-साफ़ कहते सुना था: "आदमी?"

रेंगने के कारण विजड़ित हाथों में पिस्तौल कांप रही थी; फिर भी वह लड़ने के लिए और शेष बची तीन गोलियों का सदुपयोग करने के लिए तैयार था...

इसी समय किसी उत्तेजित, बच्चों जैसी आवाज़ ने कुंजों से पुकारा:

"ए-ए! कौन हो तुम? जर्मन?"

इन अजनबी शब्दों से अलेक्सेई चौकन्ना हो गया लेकिन जिसने पुकारा था वह निस्सन्देह रूसी था और बालक था।

एक और बचकानी आवाज़ ने पूछा: "तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"और तुम कौन हो?" अलेक्सेई ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया और अपनी आवाज़ के हल्केपन और कमज़ोरी पर आश्चर्यान्वित होकर रुक गया।

इस प्रश्न से वृक्षों में सनसनी फैल गयी होगी, क्योंकि वहां जो भी लोग थे, उनमें बड़ी देर तक कानाफूसी के स्वरों में सलाह-मशविरा होता रहा और निश्चय ही, यह सलाह-मशविरा उत्तेजनापूर्वक हो रहा था, क्योंकि वृक्षों की शाखाएं तेज़ी से डोल रही थीं।

"बातें न बनाओो, तुम हमें उल्लू नहीं बना सकते! मैं जर्मन को पांच मील से पहचान लेता हूं। क्या तुम जर्मन हो?"

"तुम कौन हो?"

"तुम यह क्यों जानना चाहते हो?"

"मैं रूसी हूं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। झूठ न बोल रहे हो तो मेरी आंखें निकाल लेना। तुम फ़ासिस्ट हो!"

"मैं रूसी हूं, रूसी हूं! हवाबाज़। जर्मनों ने मुझे नीचे गिरा दिया।"

अलेक्सेई ने अब सारी सतर्कता ताक़ पर रख दी। उसे विश्वास हो गया था कि उसके अपने आदमी, रूसी, सोवियत लोग ही उन वृक्षों में छिपे हैं। वे उसपर विश्वास नहीं करते। यह स्वाभाविक है। युद्ध हर एक को सावधान होना सिखा देता है। और अब, यात्रा शुरू करने के क्षण बाद आज पहली बार, उसने महसूस किया कि वह बिल्कुल निष्प्राण हो गया है, उसने महसूस किया कि अब वह हाथ-पैर हिला भी न सकेगा, न यहां से खिसक सकेगा और न अपनी रक्षा कर सकेगा। उसके कपोलों से स्याह गड्ढों पर से आंसू लुढ़क पड़े।

"देखो, वह रो रहा है," पेड़ों के पीछे से एक आवाज़ आयी, "ए-हो! तुम क्यों रो रहे हो?"

"हां, मैं रूसी है, तुम्हारी ही तरह रूसी हूं, विमान-चालक हूं।"

"किस हवाई अड्डे के हो?"

"मगर तुम कौन हो?"

"यह तुम क्यों जानना चाहते हो? जवाब दो!"

"मैं मोन्चालोव हवाई अड्डे का हूं। तुम लोग मेरी सहायता क्यों नहीं करते? बाहर आओ! क्या मुसीबत है!.."

एक बार फिर उन पेड़ों के पीछे पहले से भी अधिक उत्तेजनापूर्वक काना-फूसी के ज़रिए सलाह-मशविरा हुआ। अलेक्सेई साफ़-साफ़ सुन रहा था:

"सुन रहे हो? वह कहता है कि वह मोन्चालोव हवाई अड्डे का है... शायद वह सच बोल रहा है... और वह रो रहा है..." और फिर किसी ने चिल्लाकर कहा: "ए विमान-चालक! पिस्तौल दूर करो! उसे फेंक दो, वरना, हम बताये देते हैं कि हम बाहर न आयेंगे! हम भाग जायेंगे!"

अलेक्सेई ने पिस्तौल फेंक दी। डालियां फट गयीं और उनमें से दो बालक कूदकर, सतर्कतापूर्वक, फुदकियों की भांति एक क्षण में फुर्र हो जाने के लिए तैयार-से, बड़ी सावधानी के साथ हाथ में हाथ दिये अलेक्सेई की ओर बढ़ने लगे। उनमें से बड़ा दुबला-पतला, नीली आंखों और पटसन जैसे बालोंवाला लड़का था, जो पुराने फ़ैशन की महिलाओं की जाकेट कमर पर किसी डोर के टुकड़े से कसकर पहने हुए था, भारी-भरकम नमदे के जूते पहने था जो शायद उसके पिता के थे और सिर पर जर्मन हवाबाज़ की टोपी लगाये थे, हाथ में कुल्हाड़ी लिये था। और दूसरा छोटा-सा, लाल बालों और झाइयोंयुक्त चेहरेवाला नन्हा लड़का, जिसकी आंखें अदम्य कौतूहल से चमक रही थीं, पहले लड़के के एक क़दम पीछे-पीछे आ रहा था और फुसफुस स्वर में कह रहा था :

"वह रो रहा है। सचमुच रो रहा है। और कैसे हड्डी-हड्डी रह गया है! क्यों, हड्डी-हड्डी है न?"

अभी भी कुल्हाड़ी संभाले हुए बड़ा लड़का अलेक्सेई के पास आया और लात मारकर पिस्तौल दूर फेंककर बोला :

"तुम कहते हो, तुम हवाबाज़ हो। कोई सबूत है? हमें दिखाओ!"

"इस जगह कौन है, हमारे लोग या जर्मन?" अलेक्सेई ने फुसफुसे स्वर में पूछा और बरबस मुस्कुरा उठा।

"मैं तो इस जंगल में रहता हूं, मैं क्या जानूं? मुझे तो कोई रिपोर्ट नहीं देता," बड़े लड़के ने कूटनीतिक भाषा में कहा।

जेब में हाथ डालने और अपना प्रमाणपत्र निकाल लेने के सिवाय अलेक्सेई के सामने कोई रास्ता न रहा। लाल-लाल, अफ़सरों की पुस्तिका देखते ही, जिसके आवरण पर सितारा अंकित था, इन बालकों पर जादू जैसा प्रभाव पड़ा। मानो उनका बचपन, जो जर्मन-अधिकार के काल में कहीं खो गया था, यकायक अपने प्यारे सोवियत विमान-चालक के प्रगट होते ही फिर वापस लौट आया है। उससे बात करने की विह्वलता के कारण वे एक दूसरे के ऊपर लुढ़क पड़े।

"हां, हां, अपने ही लोग यहां हैं। यहां तीन दिन से हैं।"

"तुम्हारे हड्डी-हड्डी क्यों निकल आयी है?"

"...अपने लोगों ने उनको ऐसा मज़ा चखाया! ऐसी पिटाई लगा-

थी! यहां बड़ी घमासान लड़ाई हुई! और उनमें से भयंकर तादाद में लोग मारे गये। भयंकर तादाद में!"

"और क्यों, वे भागे भी तो किस तरह! उनका भागना भी कैसा मज़ेदार था। उनमें से एक ने नहाने के टब में घोड़ा जोत लिया और उसमें छिपकर भाग गया। उनमें से दो घायल थे, वे भागते हुए घोड़े की पूंछ पकड़े रहे और तीसरा आदमी घोड़े पर राजकुमार की तरह बैठकर भागा। काश तुम भी देख पाते! .. तुम्हें उन्होंने कहां गिरा दिया था?"

कुछ देर बड़बड़ करने के बाद ये बालक काम में जुट गये। उन्होंने बताया कि उनके परिवार के लोग पांच किलोमीटर दूर रहते हैं। अलेक्सेई इतना कमजोर हो गया था कि पीठ के बल आराम से लेट जाने के लिए वह करवट भी न बदल पा रहा था। इस स्थान से, जिसे वे "जर्मन लकड़ी भण्डार" कहते थे, ईंधन ले जाने के लिए वे लड़के जो स्लेज लाये थे, वह इतनी छोटी थी कि अलेक्सेई उसमें समा नहीं सकता था। इसके अलावा, अनकुचली बर्फ़ पर स्लेज घसीटकर उसका बोझा ढो ले जाना इन बालकों के बस की बात न थी। बड़े लड़के ने, जिसका नाम सेर्योन्का था, अपने भाई फ़ेद्का से कहा कि वह जितनी तेजी से हो सके, दौड़कर गांव जाकर मदद लाये, तब तक वह जर्मनों से अलेक्सेई की हिफ़ाज़त करेगा—उसने कारण तो यही बताया, मगर असलियत यह थी कि वह मन ही मन अलेक्सेई का विश्वास न कर रहा था। वह अपने मन में सोच रहा था: "क्या भरोसा। ये फ़ासिस्ट बड़े चालाक हैं—वे मरने का बहाना कर सकते हैं और लाल फ़ौज के प्रमाणपत्र भी हथिया सकते हैं..." लेकिन धीरे-धीरे उसके संदेह दूर हो गये और वह खुलकर बातें करने लगा।

अलेक्सेई सनोबर की पत्तियों की नर्म सेज पर आंखें आधी बन्द किये ऊंघ रहा था—वह कभी इस बालक की कहानी सुन पाता और कभी न सुन पाता। उनींदी मूर्च्छा को चीरकर, जो एकाएक सारे शरीर में व्याप्त हो गयी थी, जब-तब कुछ बिखरे हुए शब्द उसके मस्तिष्क तक पहुंच जाते; और यद्यपि वह नहीं समझ पा रहा था कि इन शब्दों का क्या अर्थ है, फिर भी महज़ अपनी मातृभाषा के स्वर सुनकर उसे गहनतम आनन्द प्राप्त हो रहा था। बड़ी देर बाद वह प्लावनी ग्राम के निवासियों की विपत्ति की कहानी को जान पाया।

इस जंगल और झील प्रदेश में जर्मन पिछले अक्तूबर में आये थे; तब भोज वृक्षों पर पीली पत्तियां झिलमिला रही थीं और एस्प वृक्ष किन्हीं क्रूर लाल ज्वालाओं में जलते प्रतीत हो रहे थे। प्लावनी के निकटवर्ती क्षेत्रों में कोई युद्ध न हुआ था। इस गांव से तीस किलोमीटर पश्चिम में टैंकों के शक्तिशाली अग्रदल के साथ जर्मन दस्ते सोवियत फ़ौज की उस टुकड़ी का सफ़ाया करने के बाद, जो उस जगह जल्दबाज़ी में रक्षा-पांत बनाकर शत्रु को रोकने की कोशिश कर रही थी, इस प्लावनी ग्राम के पास होकर, जो सड़क से अलग एक झील के किनारे ओट में बसा हुआ था, पूर्व दिशा की ओर बढ़ चले। वे बड़े रेलवे जंक्शन बोलोगोये तक शीघ्र पहुंचना चाहते थे, उसपर अधिकार करना चाहते थे और इस तरह सोवियत सेनाओं के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी मोर्चों का आपसी सम्बंध तोड़ देना चाहते थे। यहां, दूरवर्ती क्षेत्र में कालीनिन क्षेत्र के सभी निवासियों ने, शहरवासियों ने, किसानों ने, महिलाओं ने, बूढ़ों और बच्चों ने पूरे ग्रीष्म और पतझड़ भर वर्षा बरदाश्त कर मच्छरों का शिकार होकर, दलदल की नमी और गंदला पानी पीने की यातना सहकर, खुदाई करने और रक्षा-पांत बनाने में रात-दिन जीतोड़ परिश्रम किया था। यह क़िलेबन्दी उत्तर से दक्षिण, सैकड़ों किलोमीटर दूर तक, जंगलों और दलदलों के पार, झीलों के इर्द-गिर्द, छोटी-मोटी नदियों और झरनों के किनारे फैली चली गयी थी।

निर्माणकर्त्ताओं ने घोर यातनाएं सहीं, किन्तु उनका परिश्रम व्यर्थ न गया। अपने बढ़ाव के ज़ोर से जर्मन कुछ रक्षा-क्षेत्रों को तोड़ने में सफल तो हुए, मगर अंतिम रक्षा-पांत पर वे रोक लिये गये। लड़ाई ख़ंदक़ के युद्ध में बदल गयी। जर्मन बोलोगोये तक पहुंचने में असफल रहे। वे अपने हमले की शक्ति और दक्षिण की तरफ़ लगाने के लिए मजबूर हुए और इस क्षेत्र में उन्हें रक्षात्मक स्थिति ग्रहण करनी पड़ी।

प्लावनी के किसान, जो अपनी रेतीली मिट्टी वाली ज़मीन की सामान्यतः कम पैदावार की पूर्त्ति जंगल की झीलों में कामयाबी के साथ मछलियां मारकर किया करते थे, अब आनन्द मना रहे थे कि लड़ाई उनके सिर से टल गयी। जर्मनों का हुक्म पालन करके उन्होंने अपने सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष मुखिया के रूप में बदल दिया, मगर इस आशा में कि सोवियत

भूमि को ये फ़ासिस्ट हमेशा न रौंदते फिरेंगे और तूफ़ान थमने तक वे इस सुदूर स्थल में शान्तिपूर्वक रह सकेंगे, वे अभी भी सामूहिक खेती के रूप में अपना जीवन बिता रहे थे। लेकिन मटमैली हरी वर्दीवाले जर्मनों के बाद काली वर्दीवाले जर्मन आ धमके जिनकी फ़ौजी टोपियों पर क्रॉस की शक्ल में हड्डियों और खोपड़ी का चिह्न बना हुआ था। सख्त सजा का भय दिखाकर प्लावनी के निवासियों को जर्मनी में जाकर स्थायी काम करने के लिए पन्द्रह स्वयंसेवक चौबीस घंटे के अंदर देने का हुक्म दिया गया। इन स्वयंसेवकों को गांव के अंतिम भाग में स्थित मकान में उपस्थित होना था जहां सामूहिक फ़ार्म का दफ़्तर और मछली-भण्डार था; और उन्हें अपने साथ एक जोड़ा कपड़े, एक चम्मच, छुरी और कांटे और दस दिन भोजन की सामग्री भी लानी थी। लेकिन निश्चित समय पर कोई भी उपस्थित न हुआ। और यह भी कहना चाहिए कि अनुभव से सीखे हुए काली वर्दीवाले जर्मनों को भी कोई यह उम्मीद नहीं थी कि कोई उपस्थित होगा। गांव को सबक़ सिखाने के लिए उन्होंने सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष यानी गांव के मुखिया को, किंडरगार्टन की प्रधान अध्यापिका वेरोनिका ग्रिगोर्येवना को, सामूहिक फ़ार्म की टीमों के दो नेताओं को और दस अन्य किसानों को हिरासत में ले लिया और उन्हें गोली मार दी। उन्होंने हुक्म दिया कि शवों को गाड़ा न जाये और कहा कि अगर अगले दिन भी निश्चित समय पर स्वयंसेवक उपस्थित न हुए तो बाक़ी गांव के साथ भी यही सलूक किया जायेगा।

इस बार भी कोई उपस्थित न हुआ। अगले दिन सुबह जब एस० एस० सिपाही गांव का चक्कर लगाने गये, तो उन्होंने हर घर वीरान पाया। एक भी इनसान न था—न बच्चे, न बूढ़े। अपना घर, अपनी जमीन, वर्षों के कठोर श्रम से अर्जित सारी सम्पत्ति और लगभग सारे जानवर छोड़कर, रात के घने कुहरे में छिपकर सारे लोग ग़ायब हो गये थे, अपना नामोनिशान भी न छोड़ गये थे। सारा गांव, बच्चा-बच्चा तक, अठारह किलोमीटर दूर, जंगल की गहराई में बहुत दिन पहले साफ़ किये गये एक स्थल पर जा बसा था। अपने रहने के लिए खोहें बनाकर पुरुष तो छापेमार दलों में शामिल होने चले गये और औरतें-बच्चे वसंत तक का समय काटने के लिए वहीं रह गये। फ़ासिस्टों ने इस हठधर्मी गांव को

जलाकर धूल में मिला दिया, जैसा कि वह इस जिले के अन्य गांवों में भी कर चुके थे और उसे मृत-क्षेत्र कहकर पुकारते थे।

सेर्योन्का ने बताया: "मेरे पिता सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष थे, उन्हें जर्मन गांव का मुखिया कहते थे।" और उसके शब्दों ने अलेक्सेई के मस्तिष्क में इस प्रकार प्रवेश किया, मानो वे दीवार के दूसरी ओर से आ रहे हों। "और उन लोगों ने उन्हें मार डाला। और उन्होंने मेरे बड़े भाई को भी मार डाला। वह पंगु था। उसके सिर्फ़ एक बांह थी। उसकी दूसरी बांह में खलिहान में काम करते समय चोट लग गयी थी और उसे कटा डालना पड़ा था। उन लोगों ने कुल सोलह मारे... मैंने अपनी आंखों से देखा था। जर्मनों ने हम सबको जमा होने और अपनी आंखों से देखने के लिए मजबूर किया था। मेरे पिता चीखे-चिल्लाये और उन्हें कोसते रहे, 'शैतान की औलादो, तुम्हें इसका फल भोगना पड़ेगा! इसके लिए तुम्हें ख़ून के आंसू बहाने पड़ेंगे...' उन्होंने उन लोगों से कहा।"

बड़ी-बड़ी दुखभरी, थकी आंखों और सुन्दर बालोंवाले इस नन्हे-से इनसान की बातें सुनते-सुनते अलेक्सेई ने एक विचित्र संवेदना अनुभव की। उसे लगा कि वह घने कुहरे में उड़ रहा है। जिस शरीर से उसने इतना अतिमानवीय श्रम किया था, वह समूचा शरीर अजेय क्लान्ति से जकड़ गया। उसमें उंगली भी उठाने की शक्ति न रही और अब तो उसके लिए यह विश्वास करना भी कठिन था कि अभी दो घंटे पहले वह आगे बढ़ रहा था।

"इसलिए तुम आजकल जंगल में रहते हो?" उसने बड़ी कठिनाई से अपने को नींद के बंधनों से मुक्त कर, लगभग अकर्णगोचर स्वर में उस बालक से पूछा।

"हां, सचमुच! हम सब तीन प्राणी हैं। मैं, फ़ेद्का और मेरी मां। मेरी एक बहिन भी थी, न्यूश्का नाम था। वह इस जाड़े में मर गयी। उसका सारा शरीर सूज गया और मर गयी। और मेरा छोटा भाई, वह भी मर गया। इस तरह अब हम तीन ही हैं... जर्मन अब वापस नहीं आयेंगे, क्यों? तुम्हारा क्या ख़्याल है? मेरे नाना, यानी मां के पिता, जो आजकल अध्यक्ष हैं, वे कह रहे थे कि अब वे न आयेंगे। वे कहते हैं, 'मरनेवाले क़ब्रिस्तान से नहीं लौटा करते।' लेकिन मां, वह अभी भी

डरती है। वह दूर भाग जाना चाहती है। वह कहती है कि वे फिर वापस आ सकते हैं.. उधर देखो! नाना और फ़ेद्का।"

मैदान के छोर पर खड़ा लाल बालोंवाला फ़ेद्का अलेक्सेई की तरफ़ इशारा कर रहा था और उसके साथ एक लम्बा-सा, गोल कंधों वाला बूढ़ा आदमी फटा-पुराना, घर का बुना, हल्के भूरे रंग का कोट कमर पर एक डोरी से बांधे खड़ा था और सिर पर किसी जर्मन अफ़सर की ऊंची-सी टोपी पहने था।

बूढ़ा आदमी, जिसे लड़कों ने मिख़ाईल नाना कहकर पुकारा, लम्बा, ऊंचे कंधों वाला और दुबला-पतला व्यक्ति था। गांव की सीधी-सादी मूर्त्तियों में संत निकोलस का जैसा चेहरा होता है, उसका चेहरा भी उतना करुणामय था, बच्चों जैसी निर्मल आंखें थीं और मुलायम, विरली, हल्की दाढ़ी थी जो बिल्कुल रुपहली हो चुकी थी। उसने अलेक्सेई को भेड़ की खाल के पुराने कोट में लपेटा जिसमें तमाम रंगों की थिगलियां लगी थीं; वह आसानी से अलेक्सेई को उठाते हुए और उसके हल्के सूखे शरीर को गोद में लुढ़काते हुए बड़े आश्चर्य मिश्रित भोलेपन से बड़बड़ाता जा रहा था :

"बेचारा! बेचारा! अरे, तुमसे बाक़ी ही क्या बचा है! हे भगवान, तुम तो अस्थिपंजर भर रह गये हो! यह लड़ाई भी लोगों पर कैसी-कैसी आफ़त ढा रही है! हाय... हाय!"

इतनी सावधानी से, मानो वह नवजात शिशु को उठा रहा है, उसने अलेक्सेई को बर्फ़ पर फिसलनेवाली स्लेज पर रख दिया, उसे रस्सी से बांध दिया, एक क्षण सोचा और फिर कोट उतारकर उसे तह किया और अलेक्सेई के सिरहाने रख दिया। फिर स्लेज के सामने जाकर उसने अपने को बोरे से बने जुए में जोत दिया, और फिर दोनों लड़कों को एक-एक रास पकड़ाकर उसने कहा, "भगवान मदद करे!" और वे तीनों स्लेज को गलती हुई बर्फ़ पर से घसीटकर ले चले और बर्फ़ इन दौड़नेवालों के पैरों में चिपकने लगी, उनके बोझ से आलू से बने आटे की तरह चटखने लगी और पैरों के नीचे विलीन होने लगी।

१५

अगले दो-तीन दिन तक अलेक्सेई को लगा मानो वह घने और गर्म कुहरे में लिपटा है जिसके भीतर से उसे अपने चारों तरफ़ चलनेवाले कामकाज की धुंधली तस्वीर मात्र दिखाई दे जाती थी। वास्तविकता के साथ-साथ ऊल-जलूल कल्पना-चित्र मिश्रित दिखाई देने लगे, और काफ़ी समय बाद कहीं जाकर वह तमाम घटनाओं को उचित क्रमबद्ध करके समझ पाया।

ये भागे हुए लोग अछूते जंगल के बीच रहते थे। उनकी खोहें, जिनपर सनोबर की शाखाओं का छप्पर था, अभी भी बर्फ़ से ढंकी थीं और शायद ही दृष्टिगोचर होती हों। उनसे जो धुआं उठ रहा था, वह सीधे ज़मीन से निकलता लग रहा था। जिस दिन अलेक्सेई आया, उस दिन हवा बंद थी और नमी थी और धुआं काई में चिपका-सा तथा पेड़ों में लहराता रह गया था, जिससे अलेक्सेई को यों महसूस हुआ मानो यह स्थान बुझती हुई दावाग्नि के धुएं से भरा है।

यहां के सभी निवासियों को – उनमें मुख्यतः औरतें और बच्चे थे और कुछ बूढ़े लोग थे – ज्यों ही यह पता लगा कि कोई सोवियत हवाबाज़ यहां आ गिरा है – पता नहीं कौन और कैसे – जिसे मिख़ाईल उठाकर ला रहा है, और जैसा फ़ेद्का ने बताया, वह सिर्फ़ "हड्डियों का ढांचा भर" रह गया है, त्यों ही वे सब उनसे मिलने आ गये। जब पेड़ों के बीच से "गाड़ी" आती दिखाई देने लगी, तो औरतें उसकी तरफ़ भागीं और उनके साथ जो बच्चे उमड़ पड़े थे उन्हें खदेड़कर उन्होंने स्लेज को घेर लिया और रोती चीख़ती हुई गाड़ी के साथ खोह तक आयीं। वे सभी चिथड़े पहने थीं और सभी समान रूप से बूढ़ी लग रही थीं। खोहों में जल रही आग के धुएं और कालिख से उनके चेहरे स्याह पड़ गये थे, और जब कभी वे मुसकुरा पड़ती थीं, तब भूरी चमड़ी के बीच उनके चमकते हुए सफ़ेद दांत और झिलमिलाती हुई आंखें देखकर ही यह भेद करना सम्भव होता था कि उनमें कौन जवान है और कौन बूढ़ी।

"औरतो! अरी औरतो! तुम सब यहां क्यों जमा हो गयी हो? तुम समझती हो यहां थियेटर लगा है? या नाटक हो रहा है?" मिख़ाईल नाना

अपना कालर और ज़ोर से खींचते हुए चीख पड़े, "भागो यहां से, भगवान के लिए! हे भगवान, ये सब तो भेड़ें जैसी हैं। बिल्कुल जाहिल!"

और औरतों के झुण्ड में अलेक्सेई ने कुछ आवाज़ें यह कहते सुनीं:

"आह, कितना दुबला है! यहां, सचमुच, बिल्कुल हड्डियों का ढांचा भर है। वह हिलता-डुलता भी नहीं है। क्या अभी ज़िंदा है?"

"वह बेहोश है! इसे हो क्या गया है? हाय कितना दुबला है बेचारा, कितना दुबला है!"

और फिर अचरज भरी बातें बंद हो गयीं। इस विमान-चालक ने जो अज्ञात, मगर भयंकर मुसीबतें उठायी होंगी, उससे महिलाएं बहुत प्रभावित हुईं, और जब जंगल के किनारे-किनारे स्लेज आ रही थी और भूमिगत गांव निकट आता जा रहा था, तब उनमें यह झगड़ा पैदा हो गया कि उनमें से कौन अलेक्सेई को अपनी खोह में ले जायेगी।

"मेरी जगह सूखी है। रेत, सब रेत है और हवा भी ख़ूब आती है... और मेरे यहां चूल्हा भी है," एक छोटे क़द की, गोल चेहरेवाली औरत बहस कर रही थी, जिसकी हंसती हुई आंखों की सफ़ेदी इस तरह चमक रही थी मानो जवान नीग्रो की आंखें हों।

"'चूल्हा!' लेकिन तुम कितने लोग रहते हो? खोह की गंध ही ऐसी है कि नरक याद आ जाये! मिख़ाईल, उसे मेरे यहां पहुंचा दो। लाल सेना में मेरे तीन बेटे हैं, और मेरे पास थोड़ा-सा आटा भी बचा है। मैं उसके लिए कुछ चपातियां पका दूंगी!"

"नहीं, नहीं! इसे मेरे यहां भेज दो। मेरे यहां जगह काफ़ी है। हम दो ही तो प्राणी हैं और इतनी बड़ी जगह है। तुम चपातियां पकाकर मेरे यहां ले आना; उसके लिए क्या फ़र्क़ पड़ेगा, वह कहीं खा लेगा। क्स्यूशा और मैं उसकी देखभाल कर लेंगे, तुम इत्मीनान रखना। मेरे पास कुछ जमी हुई मछलियां हैं और सफ़ेद खुंभें भी हैं... मैं उसके लिए कुछ मछलियों और खुंभों का शोरबा पका दूंगी..."

"उसका एक पैर तो क़ब्र में है, फिर मछली से भला उसे क्या फ़ायदा होगा? नाना, इसे मेरे यहां ले चलो, हमारे पास गाय है और हम उसे दूध पिला सकेंगे!"

लेकिन मिख़ाईल स्लेज अपनी खोह की तरफ़ ले गया, जो इस भूमिगत गांव के बीच में थी।

...अलेक्सेई को याद है कि उसे ज़मीन में खोदकर बनायी गयी छोटी-सी धुंधली गुफा में एक चटाई पर लेटा दिया गया–रोशनी के नाम पर यहां एक धुआं उगलती भभकती छिपटी थी, जो दीवाल में खोंस दी गयी थी और चिनगारियां छोड़ रही थी। उसकी रोशनी में उसने एक मेज़ देखी जो जर्मनों की सुरंगों का बक्स तोड़कर उसके तख़्तों को ज़मीन में गड़े ठूंठ पर टिकाकर बनायी गयी थी; उसके चारों ओर कई लट्ठों के टुकड़े रखे थे जो स्टूलों का काम दे रहे थे; उसने काला रूमाल ओढ़े छरहरी मूर्त्ति भी देखी जो बूढ़ी औरतों जैसे कपड़े पहने मेज़ पर झुकी हुई थी–यह वारवारा थी, मिख़ाईल नाना की सबसे छोटी बहू; और उसे मिख़ाईल का सिर भी दिखायी दिया जो सफ़ेद विरल घुंघराले बालों से ढंका था।

अलेक्सेई पुआल की धारीदार तोशक पर लेटा था और अभी भी वही थिगलीदार, भेड़ की खाल का कोट ओढ़े था, जिससे बड़ी ही सुखद, खट्टी-मिट्ठी, घर जैसी गंध आ रही थी... और यद्यपि उसका शरीर इस तरह दुख रहा था मानो पत्थरों की मार पड़ी हो और उसके पैर इस तरह जल रहे थे मानो उनसे गर्म ईंटें चिपका दी गयी हों, फिर भी इस बोध के कारण कि अब वह सुरक्षित है, अब उसे न तो और कहीं भागना पड़ेगा या चिन्ता करना पड़ेगा या बराबर सतर्क रहना होगा, इस प्रकार निश्चल पड़े रहना बड़ा आनन्ददायक लग रहा था।

कोने के चूल्हे की आग से धुआं उठकर छत में नीलगूं चंचल छल्लेदार तहें जमा रहा था और अलेक्सेई को ऐसा महसूस हुआ कि न सिर्फ़ यह धुआं, बल्कि मेज़ भी, सदा व्यस्त रहनेवाले, कुछ न कुछ काम करते रहनेवाले मिख़ाईल नाना का रुपहला सिर भी, और वारवारा का छरहरा शरीर भी हवा में तैर रहा है, उड़ रहा है और विलीन होता जा रहा है। उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं। उसने आंखें तब खोलीं जब उधर दरवाज़े से जिसके किवाड़ों पर बोरे पड़े थे, एक ठंडी हवा के तेज़ झोंके ने आकर उसे जगा दिया। मेज़ के पास एक औरत खड़ी थी। उसने मेज़ पर एक थैला रख दिया था और उसके ऊपर इस तरह हाथ रखे खड़ी थी मानो यह सोच रही हो कि इसे वापस ले जाना चाहिए या नहीं। उसने सांस खींची और वारवारा से कहा:

"यह कुछ सूजी है, जो मेरे पास लड़ाई के पहले से पड़ी हुई थी।

इसे मैंने अपने कोस्त्या के लिए बचा रखा था, लेकिन अब उसे इसकी ज़रूरत नहीं रही। इसे ले लो और अपने अतिथि के लिए कुछ खीर पका लेना। यह बच्चों के लिए होती है, लेकिन इस वक़्त उसके लिए ऐसी ही चीज़ चाहिए।"

वह मुड़ी और बाहर निकल गयी—और अपने दुख का असर खोह में मौजूद सभी लोगों पर छोड़ गयी। कोई महिला बर्फ़ से जमायी गयी ब्रीम मछली दे गयी और एक अन्य महिला तंदूर पर पकायी गयी चपाती ले आयी, जिससे सारी खोह में ताजी पकी रोटियों की ख़मीरी गर्म गंध भर गयी।

सेर्योन्का और फ़ेद्का आ गये। किसान जैसी गम्भीरता के साथ अपने सिर से फ़ौजी टोपी उतारते हुए सेर्योन्का ने कहा 'सुप्रभात' और मेज़ पर शक्कर के दो टुकड़े रख दिये जिनपर तम्बाकू के रेशे और चोकर चिपके हुए थे।

"मां ने भेजी है। शक्कर तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद होगी, खा लो," उसने कहा और मिख़ाईल की तरफ़ मुड़कर उसने बड़े व्यावहारिक स्वर में कहा: "हम लोग फिर पुरानी जगह गये थे। वहां हमें एक कच्चे लोहे का बर्तन मिला, दो खुरपियां मिलीं, जो बहुत जली नहीं हैं, और कुल्हारी का फल मिला। हम ये चीज़ें ले आये हैं, हमारे काम में आ सकती हैं।"

इस बीच फ़ेद्का अपने भाई के पीछे खड़ा हुआ, मेज़ पर चमकते हुए शक्कर के टुकड़ों को लोलुप दृष्टि से देख रहा था और उसने मुंह में भर आये पानी को इस तरह सड़ोपा कि उसकी आवाज़ साफ़ सुनाई दे गयी।

बहुत बाद में जाकर, जब अलेक्सेई ने इस सब के बारे में सोच-विचार किया, तब वह इन उपहारों का पूरा मूल्य समझ सका, जो ऐसे गांव ने दिये थे जिसके एक-तिहाई निवासी उस शीतकाल में भूख से मर गये थे, जहां एक भी परिवार ऐसा न था जिसे अपने एक या दो सदस्यों के बिछोह का शोक न सहन करना पड़ा हो।

"वाह औरतो, औरतो, तुम अमूल्य हो। सुनते हो, अलेक्सेई, मैं क्या कह रहा हूं? मैं कहता हूं, रूसी औरतें अमूल्य हैं। तुम उनका दिल छू भर लो और वे अपना सर्वस्व निछावर कर देंगी, ज़रूरत हो तो अपने

सिर की भी बलि चढ़ा देंगी। ऐसी हैं हमारी औरतें। क्यों, ठीक नहीं है?" मिख़ाईल नाना अलेक्सेई के लिए इन भेंटों को स्वीकार करते हुए यह कहते जाते और फिर वे अपने काम में जुट जाते, जो उनके पास हमेशा ही बना रहता था—घोड़े के साज़, पट्टे या नमदे के घिसे-फटे जूतों की मरम्मत करना। "और काम में भी हमारी औरतें मर्दों से पीछे नहीं हैं। सच कहूं, तो वे हमें दो-चार बातें सिखा सकती हैं! बस बुरी है तो उनकी ज़बान, बस उनकी ज़बान बुरी है! मैं बताये देता हूं, ये औरतें मेरी जान लेकर छोड़ेंगी, बस जान ही लेंगी! जब मेरी अनीस्या मर गयी, तो, कितना पापी हूं मैं, मैंने सोचा, 'शुक्र है भगवान, अब कुछ चैन तो मिलेगा!' लेकिन, तुम्हीं देख लो, इसके लिए भगवान ने मुझे सज़ा दे ही दी। हमारे यहां के सभी मर्द, जिन्हें फ़ौज में नहीं लिया गया, जर्मनों से लड़ने के लिए छापेमारों में शामिल हो गये, और मैं हूं कि अपने पापों के कारण औरतों का सरदार बन गया—भेड़ों के झुंड में बकरे की तरह... ओह-हो-हो!"

इस वनवास में अलेक्सेई ने ऐसी बहुत-सी चीज़ें देखीं जिनसे वह चकित रह गया। फ़ासिस्टों ने प्लावनी के निवासियों से उनका घर, उनकी सम्पत्ति, उनके खेती के औज़ार, पशु, घरेलू साज़-सामान और कपड़े—हर चीज़ छीन ली थी, जिसे उन्होंने पीढ़ियों तक ख़ून-पसीना बहाकर हासिल किया था और आजकल ये लोग जंगल में वास कर बड़ी तकलीफ़ें भुगत रहे थे—उन्हें बराबर ख़तरा था कि फ़ासिस्ट उनका पता न पा लें। वे भूखे रहते, ठंड भोगते—मगर उनकी सामूहिक खेती की व्यवस्था न टूटी; इसके विपरीत युद्ध की भयानक विपत्ति ने इन लोगों को और भी अधिक घनिष्ठ सूत्र में बांध दिया। वे खोहें भी सामूहिक रूप से बनाते और उन्हें बेतरतीबी से नहीं, अपने सामूहिक खेत में जिस तरह टीमें बनाकर काम करते थे, उन्हीं टीमों के अनुसार बसा रहे थे। जब मिख़ाईल नाना का दामाद मारा गया तो उन्होंने स्वयं सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष का काम संभाल लिया और इस जंगल में बड़ी निष्ठा के साथ सामूहिक कृषि-व्यवस्था के नियमों का पालन करने लगे। और अब उनके तत्वावधान में घने जंगल के बीच बसा हुआ यह भूमिगत गांव ब्रिगेडें और टीमें बनाकर वसंत के कामों की तैयारी कर रहा था।

किसान औरतें, हालांकि ख़ुद भूखी रह रही थीं, सामूहिक खोह में अपना सारा अनाज—एक-एक दाना तक, सब का सब—ला रही थीं, जिसे गांव से भागते समय वे किसी तरह बचा लायी थीं। जर्मनों से बच गयी गायों के बछड़ों की देखभाल सबसे ज़्यादा की जा रही थी। वे ख़ुद भूखे रहते, मगर सामूहिक सम्पत्ति की गायों को न मारते। प्राणों की बाज़ी लगाकर गांव के लड़के अपने पुराने, जले-जलाये गांव में गये और राख की ढेरियों में से हल निकाल लाये जो तपकर नीले पड़ गये थे। इन्हें वे अपने भूमिगत गांव में ले आये और उनमें से काम के हलों पर लकड़ी के हत्थे लगाये गये। औरतों ने वसंतकालीन जुताई के लिए गायों को जोतने के लिए बोरों को मांजकर जुए बना दिये। औरतों की टीमों ने झील से मछलियां पकड़ने के लिए पालियां बांध दी थीं और इस प्रकार जाड़े भर वे सारे गांव को भोजन देती रहीं।

हालांकि मिख़ाईल नाना बड़बड़ा उठते और "अपनी औरतों" पर गुर्रा उठते और जब उनकी खोह में सामूहिक खेती से सम्बन्धित किसी प्रश्न पर वे औरतें क्रोधपूर्वक लम्बे-लम्बे झगड़ों में उलझ जातीं, जिनका सिर-पैर अलेक्सेई की समझ में न आ पाता, तो मिख़ाईल कान पर हाथ रख लेते और धीरज छूट जाने पर वे अपनी बुलंद, बनावटी आवाज़ में उन औरतों पर बरस पड़ते, फिर भी वे उनके क़ायल थे और अपने श्रोता के मौन को स्वीकृति समझकर आसमान तक "औरतों की जात" की प्रशंसा करते रहते।

"लेकिन, अलेक्सेई प्यारे, देखो तो क्या से क्या हो गया है," वे कहते, "औरत हर चीज़ को दोनों हाथों से पकड़ती है। ठीक कहता हूं न? वह ऐसा क्यों करती है? क्या इसलिए कि वह कंजूस होती है? बिल्कुल नहीं! वह इसलिए करती है कि वह चीज़ उसे प्यारी होती है। बच्चों को वही पालती-पोसती है; तुम कुछ भी कहो, घर भी वही चलाती है। अब देखो, यहां क्या हुआ है। तुम देख ही रहे हो, हम यहां कैसे रहते हैं: हम एक-एक दाना गिनते हैं। हां, हम भूखे मर रहे हैं। तो वह जनवरी की बात है। यकायक छापेमारों का एक जत्था आ टपका। नहीं, हमारे आदमी नहीं। हमारे आदमी तो, सुनते हैं, ओलेनिनो के पास कहीं लड़ रहे हैं। ये लोग हमारे लिए अजनबी थे, रेलवे के लोग थे। वे हमारे

यहां आ धमके और बोले, 'हम भूख से मर रहे हैं।' तो बोलो, क्या हुआ होगा? अगले दिन इन्हीं औरतों ने उन लोगों के थैले भोजन से भर दिये, और इधर उनके अपने बच्चों के शरीर भूख के मारे सूज रहे थे, इतने कमज़ोर थे कि चल-फिर भी न सकते थे। तो? मैं ठीक कहता हूं? मैं बताऊं! अगर मैं बड़ा सेनापति होता, तो जर्मनों को मारकर भगा देने के बाद, मैं अपनी सर्वोत्तम सेनाओं को एकत्र करता और उन्हें इस रूसी औरत के सामने मार्च करने और सलामी देने का हुक्म देता। मैं तो यही करता! .."

सामान्यतः इस बूढ़े की बकवास, अलेक्सेई के ऊपर लोरी जैसा असर करती और उधर वह बोलता जाता और अलेक्सेई छोटी-सी मीठी नींद मार देता। किन्तु कभी-कभी उसकी इच्छा होती कि अपनी जेब से चिट्ठियां और उस लड़की का फ़ोटो ले और उसको दिखाये, लेकिन वह अपने में हाथ-पैर हिलाने की भी शक्ति न पाता। मगर जब मिख़ाईल नाना ने अपनी औरतों की प्रशंसा करना प्रारम्भ कर दिया तो अलेक्सेई ने उन पत्रों की सुखद उष्णता वर्दी के कपड़े चीरती हुई अपने शरीर तक पहुंचती अनुभव की।

उधर, मेज़ के पास, मिख़ाईल नाना की बहू सांझ की ख़ामोशी में बराबर किसी न किसी काम में व्यस्त-सी, तेज़ी से अपनी निपुण उंगलियां चला रही थी। पहले तो अलेक्सेई ने उसे कोई बूढ़ी, मिख़ाईल नाना की पत्नी, समझा—मगर बाद में उसने देखा कि वह बीस-बाईस साल से अधिक नहीं—चपलगामिनी, लावण्यमयी और नयनाभिरामा; और उसने यह भी देखा कि वह उसकी तरफ़ भयभीत, चिन्तित दृष्टि डालकर गहरी सांस भर सिहर उठती है, मानो गले में अटकी हुई वस्तु निगल रही हो। कभी-कभी रात में, जब मशाल बुझ जाती और खोह के धुएं भरे अंधेरे में वह झींगुर झनकार उठता, जिसे मिख़ाईल नाना ने ध्वस्त गांव में पड़ा पाया था और उसे घोंसले जैसा आराम देने के लिए अपनी आस्तीन में छिपाकर किसी टूटे-फूटे बर्तन के साथ ले आये थे, तब अलेक्सेई महसूस करता कि कोई उधर दूसरे तख़्ते पर लेटा हुआ हौले-हौले रो रहा है और मुंह में तकिया दबाकर अपनी आवाज़ मारने की कोशिश कर रहा है।

१६

मिख़ाईल नाना के साथ अलेक्सेई के ठहरने के तीसरे दिन सुबह ही बूढ़े ने उससे दृढ़तापूर्वक कहा :

"तुम्हारे कितने चीलर भर गये हैं, अलेक्सेई, देखो तो! कितने चीलर! गौबरौले से भी अधिक। और तुम इन्हें अपने आप न निकाल सकोगे। मैं बताता हूं कि मैं क्या करूंगा, मैं तुम्हें नहलाऊंगा। तुम्हारी क्या राय है? भाप से नहलाऊंगा। मज़ा आ जायेगा! मैं तुम्हें नहला दूंगा और तुम्हारी हड्डियों को ज़रा भाप दे दूंगा। जिस मुसीबत से तुम गुज़रे हो, उसके बाद इससे बहुत फ़ायदा होगा। क्या कहते हो? मेरी बात ठीक नहीं है क्या?"

और वह स्नान का इंतज़ाम करने चला गया। कोने के चूल्हे में उसने तेज़ आग जलायी कि चूल्हे के पत्थर बड़ी ज़ोर से चटख गये। खोह के बाहर एक और आग जलायी गयी और, जैसा कि अलेक्सेई को बताया गया, वहां एक पत्थर गर्म किया गया। वारवारा ने लकड़ी का पुराना टब पानी से भर दिया। सुनहली पुआल फ़र्श पर बिछा दी गयी। इसके बाद मिख़ाईल नाना ने कमर तक अपने कपड़े उतार डाले – सिर्फ़ पेंट पहने रहा – उसने जल्दी से कुछ क्षार लकड़ी की छोटी-सी बाल्टी में घोल दिया और नहाने के वक़्त शरीर मलने के लिए चटाई का टुकड़ा फाड़कर स्पंज-सा बना लिया। जब खोह इतनी गर्म हो गयी कि छत से पानी की ठंडी बूंदें ज़ोरों से चूने लगीं, तो बूढ़ा शीघ्रतापूर्वक बाहर गया और लोहे के टुकड़े पर गर्म लाल पत्थर रखकर ले आया। इसे उसने टब में डाल दिया और सी-सी आवाज़ के साथ भाप का एक बादल उठकर छत से टकरा गया, उसके नीचे फैल गया और फिर घुंघराले रोएं बनकर बिखर गया। इस कुहरे में कुछ नहीं दिखाई दे रहा था, मगर अलेक्सेई को लगा कि बूढ़े के होशियार हाथ इसके कपड़े उतार रहे हैं।

वारवारा अपने श्वसुर की सहायता कर रही थी। गर्मी के कारण उसने अपना रूई भरा कोट और सिर का रूमाल उतार दिया। उसकी घनी लटें – तार-तार रूमाल के नीचे उनके अस्तित्व की कल्पना भी करना कठिन था – खुलकर पीठ पर बिखर गयीं, और यकायक वह धर्मपरायण

बूढ़ी औरत से बदलकर छरहरी, बड़ी-बड़ी आंखोंवाली फुरतीली युवती के रूप में प्रकट हो गयी। यह परिवर्तन इतना आकस्मिक था कि अलेक्सेई, जिसने अभी तक उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया था, यकायक अपनी नंगी अवस्था पर लजा गया।

"फ़िक्र न करो, अलेक्सेई, बेटे, कोई फ़िक्र न करो," मिखाईल नाना ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "कोई चारा भी तो नहीं है। तुम्हारे लिए यह काम तो हमें करना ही पड़ेगा। मैंने सुना है कि फ़िनलैंड में मर्द-औरत साथ-साथ नहाते हैं। क्या? सच नहीं है? शायद उन्होंने मुझे झूठ बताया है। लेकिन वारवारा तो यहां, इस समय अस्पताल की नर्स के समान है, युद्ध में घायल हुए एक व्यक्ति की सेवा कर रही है, इसलिए शर्म खाने की कोई बात नहीं है। वारवारा, संभालना इसे, तब तक मैं इसकी क़मीज़ उतार दूं। हे भगवान, यह तो बिल्कुल सड़ गयी है। चिथड़े-चिथड़े हो रही है!"

और अब अलेक्सेई ने युवती की बड़ी-बड़ी काली-काली आंखों में भयाकुलता का भाव उतरते देखा। दुर्घटना के बाद आज पहली बार अलेक्सेई ने, भाप के झीने परदे में से, अपना शरीर देखा। सुनहली पुआल पर चमड़ी मात्र से ढंका हुआ मनुष्य का कंकाल पड़ा था, जिसके घुटनों की टोपियां उभरी थीं, वस्ति प्रदेश की रेखाएं गहरी थीं, पेट बिल्कुल गड्ढा बना हुआ था और पसली की हड्डियां साफ़-साफ़ दिखाई दे रही थीं।

बूढ़े ने बाल्टी का क्षारमिश्रित पानी चलाया और उस धूसरित, चिकने द्रव में चटाई के टुकड़े का स्पंज डुबोकर अलेक्सेई के शरीर पर मलने के लिए उठाया। पुआल पर पड़े कृश शरीर पर गर्म भाप में से उसकी नजर पड़ी तो स्पंज पकड़े हुए उसका हाथ उठा रह गया।

"हे भगवान!" वह विस्मयपूर्वक चीख़ उठा, "अलेक्सेई, तुम्हारी हालत तो बड़ी ख़तरनाक है! मैं कहता हूं, तुम्हारा बुरा हाल है। क्या कहा? तुम जर्मनों के हाथ से तो किसी तरह बच निकले, लेकिन क्या उस दंडधारी यमदूत के हाथों से बच सकोगे?.."

और यकायक वह वारवारा पर खीझ पड़ा जो अलेक्सेई की पीठ को सहारा दिये खड़ी थी।

"नंगे आदमी की तरफ़ क्या घूर रही है, री दुष्टा? और होंठ क्यों

काट रही है? तुम औरतो, सब एक ही होती हो! और तुम, अलेक्सेई किसी बात का ख़्याल न करना, कोई चिन्ता न करना। उस हंसियेवाले यमदूत के चंगुल में हम तुम्हें न फंसने देंगे। हम फंसने नहीं देंगे! हम तुम्हें फिर स्वस्थ बनायेंगे, खड़ा कर देंगे। यक़ीन करो मेरी बात पर।"

सावधानी और होशियारी से, मानो वह किसी बच्चे को संभाल रहा हो, उसने अलेक्सेई को ऊपर से नीचे तक क्षार के पानी से धो डाला, उसके ऊपर पानी डालते हुए कई बार इधर से उधर लुढ़काया और इतने ज़ोर से रगड़ाई की कि उभरी हुई हड्डियों के ऊपर से जब उसके हाथ फिसलते तो वे किचकिच आवाज़ कर उठते।

वारवारा बिना एक शब्द बोले उसकी सहायता करती रही।

लेकिन बूढ़े ने व्यर्थ ही उसे फटकार बतायी। वह उस भयानक, कृश शरीर की तरफ़, जो असहाय-सा उसकी गोद में पड़ा था, देख भी नहीं रही थी। वह अपनी आंखें उस तरफ़ से दूर रखने की कोशिश करती रही, मगर जब भाप में से, अनजाने ही, आंखें अलेक्सेई की टांग या बांह पर पड़ जातीं, तो उनमें भय का भाव कौंध जाता। वह कल्पना कर उठी, यह हवाबाज़ जो, भगवान जाने कैसे उसके परिवार में आ गया है, कोई अजनबी नहीं है, बल्कि उसका अपना मीशा है, वह अप्रत्याशित अतिथि नहीं है, बल्कि उसका पति है जिसके साथ वह केवल एक वसंत बिता पायी थी–लम्बा-चौड़ा सुपुष्ट व्यक्ति, चेहरे पर चमकीली झाइयां, भौंहें इतनी बारीक मानो हैं ही नहीं, विशालकाय शक्तिशाली हाथ, फ़ासिस्ट दानवों ने उसकी यह हालत कर दी है; यह मीशा का ही निर्जीव-सा शरीर है जिसे वह अपनी भुजाओं में संभाले है। और उसका शरीर सिहर उठा, सिर घूमने लगा और केवल अपने होंठ काटकर ही वह अपने को मूर्च्छित होने से बचा सकी।

...बाद में अलेक्सेई थिगलियों भरी मगर साफ़ और नर्म क़मीज़ पहने हुए, जो मिख़ाईल नाना की थी, पतली-सी धारीदार तोशक पर लेटा था; वह अपने सारे शरीर में ताज़गी और ताक़त का अहसास कर रहा था। नहाने के बाद, जब चूल्हे के ऊपर छत में बने छेद से भाप निकल गयी, तो वारवारा ने उसे बिलबेरी की पत्तियों की गर्म-गर्म धुआंरी चाय दी। शक्कर के उन दो ढेलों को, जिन्हें वे लड़के लाये थे, और जिन्हें

तोड़कर वारवारा ने भोज वृक्ष की सफ़ेद छाल के टुकड़े पर रखकर उसके सामने रख दिया था, उसने चाय में डालकर चुस्की लेना शुरू किया। और फिर वह सो गया – उस क्षण के बाद जब उसपर विपत्ति टूट गिरी थी, यह पहली गहरी, स्वप्न-विहिन नींद थी।

ऊंचे स्वरों में होनेवाली बातचीत से उसकी नींद टूट गयी। खोह में बिल्कुल अंधेरा हो गया था, छिपटी की मशाल मुश्किल से टिमटिमा रही थी। इस धुआं भरे अंधेरे में उसने मिखाईल नाना की कांपती हुई, ख़ूब ऊंची आवाज़ सुनी:

"वही औरतों जैसी बेवक़ूफ़ी! कहां है तुम्हारा दिमाग़? इस आदमी के मुंह में ग्यारह दिन से जुआर-बाजरे का एक दाना तक तो गया नहीं है और तुम हो कि इसे इतना सख़्त उबाल लायी हो!.. वाह, इतने सख़्त उबले अंडों से तो वह मर ही जायेगा!" फिर वह अनुनय के स्वर में कहने लगा: "उसे अभी अंडों की जरूरत नहीं है। तुम जानती हो, वसिलीसा, उसके लिए क्या चीज़ जरूरी है? मुर्ग़ी का थोड़ा-सा शोरबा! हां, इसकी जरूरत है उसे! इससे उसमें नयी ज़िंदगी पड़ जायेगी। लो, अब अगर तुम्हीं अपनी प्यारी... हुंह?"

लेकिन उसकी बात उस डरी हुई बूढ़ी औरत की क्रुद्ध, कर्कश आवाज़ ने काट दी:

"मैं नहीं दूंगी, नहीं दूंगी, नहीं दूंगी। शैतान बूढ़े, तुझसे तो कुछ कहना ही बेकार है। उसके बारे में अब कभी ज़बान भी न खोलना! अपनी मुर्ग़ी को दे दूं?.. मुर्ग़ी का शोरबा! थोड़ा-सा, मुर्ग़ी का बढ़िया शोरबा! पहले ही हम कितना दे चुके हैं? इतने में तो एक ब्याह हो जाता! अब आगे क्या मांगोगे?"

"अक्ख, वसिलीसा! औरतों की तरह बात करते तुझे तो शर्म आनी चाहिए!" बूढ़े ने फिर कांपती हुई आवाज़ में कहा। "ख़ुद तुम्हारे दो आदमी हैं मोर्चे पर, और फिर भी तुम ऐसी बेवक़ूफ़ी की बात करती हो! इस आदमी ने, तुम समझो, अपने को हमारे लिए पंगु बना लिया है, अपना ख़ून बहाया है..."

"मुझे उसका ख़ून नहीं चाहिए! मेरे लिए मेरे दो बेटे ख़ून बहा

ही रहे हैं! अब मांगने से कोई फ़ायदा नहीं। मैं कह चुकी—नहीं दूंगी... और बस, नहीं दूंगी!"

बुढ़िया की आकृति दरवाज़े की ओर लपका और जब वह खुला तो वसन्ती प्रकाश की एक किरण इस खोह में आ धमकी, उसमें इतनी चकाचौंध थी कि अलेक्सेई ने कसकर आंखें मींच लीं और कराह उठा। बूढ़ा दौड़कर उसके पास आ गया:

"तुम सो नहीं रहे थे, अलेक्सेई? तुमने ये बातें सुनीं? सुन लीं? मगर उसकी निन्दा मत करना, अलेक्सेई, उसकी बातों के लिए उसकी निन्दा मत करना। शब्द तो खोखले हैं, मगर उनका सार सही-सलामत है। क्या तुम्हारा ख़्याल है कि मुर्ग़ी देने में वह कुढ़ रही है? बिल्कुल नहीं! जर्मनों ने उसके सारे कुनबे का सफ़ाया कर दिया और वह बड़ा कुनबा था: दस प्राणी थे। उसका सबसे बड़ा लड़का कर्नल है। जर्मनों को यह पता चल गया और कर्नल के सारे कुनबे को, वसिलीसा को छोड़कर सबको वे एक साथ गोली मारने की जगह पर ले गये। और उन्होंने उसका घर फूंक डाला। तुम समझ ही सकते हो कि उसकी उम्र की औरत के बेसहारे हो जाने का क्या मतलब होता है! अब उसके पास कुछ बचा है तो एक मुर्ग़ी। और बताऊं, अलेक्सेई, वह बड़ा होशियार पंछी है। जर्मनों ने पहले ही हफ़्ते में सारी मुर्ग़ी-बतख़ वग़ैरा हथिया लीं। वे लोग, वे जर्मन मुर्ग़ी-बतख़ के बड़े शौक़ीन हैं। चारों तरफ़ यही सुनाई देता था: 'मुर्ग़ी! मुर्ग़ी!' लेकिन यह एक बच निकली! यह कोई साधारण मुर्ग़ी नहीं है, मैं बताये देता हूं! वह तो सरकस के लायक़ है! जब कोई फ़ासिस्ट हाते में घुस आता तो वह अटारी में दुबक जाती और बिल्कुल चुप्पी साध लेती, मानो वह उसमें है ही नहीं। लेकिन अगर कोई हमारा ही आदमी आता तो वह ज़रा भी परवाह न करती। वह यह फ़र्क़ कैसे जान जाती थी, भगवान ही जाने! और इस तरह वह बच गयी—सारे गांव में एक, अकेली..."

अलेक्सेई मेरेस्येव खुली आंखों ही ऊंघ गया; वन-जीवन में वह इसका अभ्यस्त हो गया था। उसकी चुप्पी से मिख़ाईल नाना अवश्य चिन्तित हो उठे होंगे। खोह भर में चक्कर लगाकर और फिर मेज के पास बैठकर कुछ काम करते हुए उन्होंने फिर उसी बात की चर्चा छेड़ दी, जिसके बारे में वे पहले बता रहे थे।

"उस औरत की निन्दा मत करना, अलेक्सेई! उसे समझने की कोशिश करो, मेरे दोस्त! वह घने जंगल के बीच पुराने भोज वृक्ष की तरह थी, जिसके चारों तरफ़ आंधियों से बचाव मौजूद था लेकिन अब वह कटे हुए जंगल के बीच पुराने, सड़े हुए ठूंठ की तरह है, और उसका अकेला सहारा वह मुर्ग़ी है। तुम बोलते क्यों नहीं? सो रहे हो क्या? अच्छा, सो जाओ, सो जाओ।"

अलेक्सेई सो रहा था और नहीं भी सो रहा था। वह भेड़ की खाल का कोट ओढ़े पड़ा था जिसमें रोटी की ख़मीरी गंध, पुराने ज़माने के किसानी घर की गंध व्याप्त थी; वह झींगुर की सुखद झनकार सुन रहा था और उसमें उंगली भी हिलाने की इच्छा न थी। उसे लग रहा था, मानों उसके शरीर से हड्डियां निकाल ली गयी हैं और गर्म रूई ठूंस दी गयी है, जिसमें ख़ून बह रहा है और उमड़ रहा है। उसके सूजे हुए आहत पांव जल रहे थे, सख़्त दर्द से फटे जा रहे थे, लेकिन उसमें करवट बदलने या हाथ-पैर हिलाने की भी ताब न थी।

अर्द्ध-मूर्च्छित अवस्था में अलेक्सेई कोई बाहरी दुनिया का अहसास झटकों में होता था, मानों वह वास्तविक जीवन न हो, बल्कि सिनेमा के पर्दे पर किन्हीं असम्बद्ध, और काल्पनिक दृश्यों की झलकियां हों।

वसंत आ गया था। शरणार्थी गांव अब अपनी मुसीबत के सबसे बुरे दिन भोग रहा था। ये निवासी अब अपनी आख़िरी सामग्री भी खाये डाल रहे थे, जिसे उन्होंने धरती में गाड़कर किसी तरह बचा लिया था; उसे खोद निकालने के लिए वे रात में चोरी-चोरी अपने ध्वस्त गांव में जाते और इस जंगल में ले आते। बर्फ़ पिघल रही थी। जल्दबाज़ी में बनायी गयी खोहें 'आंसू बहा रही थीं'; दीवारों और छतों से पानी बह निकला। इस भूमिगत गांव के पश्चिम में, ओलेनिनो जंगल में जो आदमी छापेमार लड़ाई चला रहे थे, वे भी यहां आया करते, हालांकि वे अकेले और रात में ही आ पाते थे, मगर युद्ध की पांत आड़े आ जाने से अब वे भी कट गये थे। उनका कुछ पता न था। इससे मुसीबतज़दा औरतों की हालत और भी बिगड़ गयी। और अब वसंत आ गया था, बर्फ़ पिघल रही थी और उन्हें फ़सल के लिए जुताई करने और सागभाजी के बग़ीचे लगाने की फ़िक्र करनी थी।

फ़िक्र से दबी और चिढ़चिढ़ी औरतें काम में लगी थीं। मिख़ाईल नाना की खोह में जब-तब ज़ोर-शोर के झगड़े और आपसी तू-तू मैं-मैं चल पड़ती, जिनके दौरान में औरतें अपने सभी नये और पुराने, असली और हवाई दुखड़े रोने लगतीं। कभी-कभी तो अराजकता छा जाती; लेकिन क्रुद्ध औरतों के उस तूफ़ान के बीच, चतुर बूढ़े ने जहां उनकी सामूहिक खेती के बारे में कुछ अमली सुझाव फूंक दिये कि सारा झगड़ा फ़ौरन शान्त हो जाता, जैसे, "क्या अब बेहतर यह न होगा कि कोई पुराने गांव चला जाये और देख आये कि बर्फ़ पिघल गयी है या नहीं?" या, "आजकल क्या बढ़िया हवा चल रही है। बीज को हवा खिला दी जाये तो शायद ठीक रहे। ज़मींदोज़ खत्ती की सीली ज़मीन से वह नम हो गया है..."

एक दिन नाना खोह में ख़ुश-ख़ुश तो आये, फिर भी कुछ परेशान नज़र आ रहे थे। वे अपने साथ हरी घास की पत्ती लाये थे। उसे बड़े प्यार से उन्होंने अपनी खुरदरी हथेली पर रखा और अलेक्सेई को दिखाया।

"इसे देखो," उन्होंने कहा, "मैं अभी-अभी खेत से लौटा हूं। धरती साफ़ होती जा रही है और शुक्र है भगवान का, जाड़े की फ़सल की आशा है। बर्फ़ बहुत गिरी थी। वसंत की फ़सल से हमें एक दाना भी न मिले, तो जाड़े की फ़सल से हमें रोटी नसीब हो ही जायेगी। मैं जाता हूं, औरतों को बता दूं। इससे खिल जायेंगे बेचारियों के।"

खोह के बाहर औरतें चिड़ियों के झुण्ड की तरह चें-चें कर रही थीं, खेत से लायी गयी घास की हरी पत्ती देखकर उनके अन्दर नयी आशा जाग गयी थी। शाम को मिख़ाईल नाना हथेलियां रगड़ते हुए आये और बोले:

"बता सकते हो, अलेक्सेई, कि मेरे लम्बे-लम्बे बालोंवाले मंत्रियों ने क्या फ़ैसला किया है? कुछ बुरा नहीं रहेगा, मैं कहता हूं। एक टीम तो निचली ज़मीन में जुताई करेगी जहां भारी मशक़्क़त पड़ती है। वे लोग गायें जोत लेंगे। यह नहीं कि उनसे कोई बहुत काम बन जायेगा। पूरे झुण्ड में से अब छै ही तो हमारे पास रह गयी हैं! दूसरी टीम ऊंची ज़मीन में काम करेगी जो तनिक सूखी है। वे लोग खुरपी और फावड़े से खुदायी करेंगे। शाक-सब्ज़ी की ज़मीन को तो हम इसी तरह खोदते हैं, क्यों न? तीसरी टीम पहाड़ी पर चढ़ जायेगी। वहां रेतीली मिट्टी है, उसे हम

आलू के लिए तैयार करेंगे। यह काम आसान है। इस काम में हम बच्चों और कमजोर औरतों को लगा देंगे। और जल्दी ही हमें सरकार से मदद मिल जायेगी। लेकिन अगर हमें न भी मिले, तब भी हम काम चला लेंगे। हम यह काम अपने बल पर करेंगे, और हम एक चप्पा जमीन बेकार न जाने देंगे, इतना भरोसा मैं तुम्हें दिला सकता हूं। शुक्र है हमारे आदमियों का जिन्होंने यहां से फ़ासिस्टों को भगा दिया; अब हम जिंदा रह सकेंगे। हमारी जाति बड़ी मजबूत है और चाहे जैसी मुसीबत टूट पड़े, हम उसका सामना कर सकते हैं।"

नाना को बड़ी देर तक नींद न आयी। वे पुआल के बिस्तरे पर अंगड़ाइयां लेते और करवट बदलते, खांसते, खुजलाते रहते और बड़बड़ाते जाते, "हे मालिक! हे मेरे भगवान!" वे कई बार उठे, बालटी तक गये, डबुआ गड़गड़ डुबोकर पानी भरा और थके हुए घोड़े के समान, विह्वलतापूर्वक, बड़े-बड़े घूंट पी गये। आख़िरकार उनसे लेटे न रहा गया। वे उठ बैठे, उन्होंने मशाल जला ली और जाकर अलेक्सेई को स्पर्श किया जो अर्धचेतन अवस्था में आंखें खोले पड़ा था, और बोले:

"तुम सो रहे हो, अलेक्सेई? मैं लेटा था और सोच रहा था। सुनते हो, मैं लेटा था और सोच रहा था। वहां, उस पुराने गांव में चौराहे पर एक बलूत का वृक्ष खड़ा हुआ है। तीस वर्ष पहले, पहली बड़ी लड़ाई के दौरान, जब ज़ार निकोलाई गद्दी पर था, इस पेड़ पर बिजली गिरी थी, जिससे उसका शीश जल गया था। लेकिन वह मजबूत पेड़ था—ताक़तवर जड़ें और ख़ूब रस। वह रस भला ऊपर की तरफ़ कहां जाता, इसलिए उससे बग़ल में एक टहनी फूट पड़ी और अब तुम देखो तो कैसा बढ़िया, हराभरा, घुंघराला उसका सिर है... हमारे प्लावनी की भी यही तासीर है... अगर आसमान साफ़ रहे और जमीन जरखेज़ हो, तो देखो कि अपनी सरकार, सोवियत सरकार, के बल पर हम हर चीज पांच साल के अन्दर फिर खड़ी कर देंगे, अलेक्सेई भाई। यह न भूलना कि हम इरादे के पक्के हैं, हां! काश, यह लड़ाई जल्दी ख़त्म हो जाती! हम उन्हें ठिकाने लगा देंगे, फिर काम में जुट जायेंगे, सब एक साथ। क्या ख़्याल है तुम्हारा?"

उस रात अलेक्सेई की हालत बिगड़ गयी।

नाना के स्नान ने अलेक्सेई पर उत्तेजक प्रभाव डाला था और उसे जड़ता से मुक्त कर दिया था। उसे अपनी क्षीणता और थकान, और पैरों के दर्द का अहसास भी पहले से अधिक होने लगा था। वह अपनी चटाई पर बुरी तरह करवटें बदल रहा था, कराह उठता था, दांत किटकिटा उठता था, किसी को पुकार उठता था, किसी पर बिगड़ उठता था, कभी कुछ मांग बैठता था।

वारवारा टांगें सिकोड़े, घुटनों पर ठोड़ी रखे और अपनी बड़ी-बड़ी, वेदनापूर्ण आंखों से सामने नज़र गड़ाये हुए, सारी रात उसके पास बैठी रही। जब-तब वह ठंडा-गीला चिथड़ा अलेक्सेई के सिर या सीने पर रख देती या भेड़ की खाल का कोट ओढ़ा देती जिससे वह बार-बार फेंक देता था, और सारे वक़्त अपने पति के विषय में सोचती रही, जो कहीं दूर होगा—युद्ध की आंधी में इधर-उधर उड़ता न जाने कहां होगा।

उषा की पहली किरण के साथ बूढ़ा जाग गया, उसने अलेक्सेई पर नज़र डाली जो अभी शान्त था और ऊंघ रहा था, और कानाफूसी के स्वर में वारवारा से न जाने क्या कहकर यात्रा के लिए तैयार हो गया। उसने अपने नमदे के जूतों के ऊपर एक और बरसाती जूता चढ़ा लिया जिसे उसने मोटर टायर से ख़ुद अपने हाथों बनाया था; सरपत के कमरबंद से अपना कोट कस लिया और जूनिपर की डाल की छड़ी उठा ली जिस पर उसने अपने हाथ से पालिश की थी और जिसे लम्बी यात्राओं पर वह हमेशा अपने साथ रखता था।

अलेक्सेई से एक शब्द कहे बिना वह बाहर चला गया।

१७

मेरेस्येव की हालत ऐसी थी कि उसे अपने मेज़बान के चले जाने का भी बोध न हुआ। अगले दिन वह बराबर अचेत पड़ा रहा, और तीसरे दिन जाकर उसे तब होश आया, जब सूरज आसमान पर ऊंचे चढ़ आया था और चूल्हे के धुएं की धूसर, घनी पर्तों को चीरकर सूर्य की सुनहली मोटी किरण खोह में झरोखे से घुसकर अलेक्सेई के पैरों तक फैली थी, जिससे खोह का अंधेरा दूर होने के बजाय और गहरा हो गया था।

खोह में कोई न था। वारवारा की धीमी रूखी आवाज़ दरवाज़े के पार से आ रही थी। स्पष्ट था, वह किसी काम में लगी हुई थी और किसी पुराने गीत की कड़ी गा रही थी जो इस वन-प्रदेश में लोकप्रिय था। वह गीत किसी एकाकी एश वृक्ष के विषय में था जिसकी कामना थी कि उस बलूत वृक्ष के पास पहुंच जाये जो कुछ दूर पर उसकी ही तरह एकाकी खड़ा है।

अलेक्सेई इस गीत को पहले भी कई बार सुन चुका था; यही गीत वे उल्लासित लड़कियां भी गा रही थीं, जो दल बांधकर आसपास के गांवों से हवाई अड्डा समतल करने और साफ़ करने आयी थीं। उसकी मंद-मंद, करुणापूर्ण स्वर-लहरी उसे पसंद थी। किन्तु इसके पहले उसने इस गीत के शब्दों पर ध्यान न दिया था, और फ़ौजी ज़िंदगी के शोरगुल में उसकी पंक्तियां, कोई भी स्मृति छोड़े बिना, उसके दिमाग़ से उतर जाती थीं। इस यौवनपूर्ण, बड़ी-बड़ी आंखोंवाली, इतनी मृदुल भावनाओं से पूर्ण लड़की के अधरों से वही शब्द फूट पड़े और उनसे इतनी वास्तविक, और न केवल कवित्वपूर्ण, वरन्, नारी-सुलभ कामना अभिव्यक्त हो रही थी कि अलेक्सेई ने फ़ौरन उस स्वर की सम्पूर्ण गहनता की अनुभूति ग्रहण कर ली और समझ गया कि वारवारा नामक वन-लता अपने बलूत वृक्ष के लिए कितनी विरह-कातर है।

...कहां लिखा है वन्य लता की क़िस्मत में
एकाकी बलूत तरुवर से मिल पाना,
उस अनाथ को, बेचारी को, इस गति में,
युग-युगान्त तक एकाकी ही लहराना।

वारवारा गा रही थी और उसके स्वर में वास्तविक आंसुओं की कातरता अनुभव हो रही थी। जब वह स्वर रुक गया तो अलेक्सेई की आंखों के सामने साकार हो उठा कि बाहर पेड़ के नीचे वह वसंती धूप से नहायी हुई बैठी है और उसकी बड़ी-बड़ी, गोल-गोल, व्याकुल आंखें आंसुओं से भरी हैं। उसे ख़ुद अपना गला रुंधा मालूम हुआ और उसके अन्दर अदम्य कामना जागृत हुई कि वह अपनी वर्दी की जेब में पड़े हुए, पुराने पत्रों को पढ़े नहीं, देखता रहे, जिनकी एक-एक बात उसे कंठस्थ है और मैदान में बैठी हुई छरहरी लड़की के उस फ़ोटो की तरफ़ भी देखता रह जाये। उसने

वर्दी की तरफ़ हाथ ले जाने का प्रयत्न किया, मगर उसका हाथ असहाय-सा चटाई पर गिर गया। एक बार फिर हर चीज, इन्द्रधनुषी धब्बों से भरे, मटमैले अंधकार में तैरती नजर आने लगी। आगे चलकर उस अंधकार में, जहां विचित्र मर्मभेदी स्वर गूंज रहे थे, उसे दो आवाजें सुनाई दीं—एक तो वारवारा की और दूसरी, किसी बूढ़ी महिला की, जो उसको परिचित लगी। वे फुसफुसाकर बातें कर रही थीं।

"वह खाता कुछ नहीं?"

"नहीं, खा ही नहीं पाता। कल उसने रोटी का एक टुकड़ा—बहुत ही छोटा टुकड़ा—चूसा थाऔर उससे उसे क़ै हो गयी। इसे कुछ खाना-पीना कहते हैं? वह थोड़ा-सा दूध पी पाता है, इसलिए हम थोड़ा-सा दे देते हैं।"

"देख, मैं कुछ शोरबा लायी हूं... शायद बेचारा थोड़ा-सा चखना पसंद करे।"

"वसिलीसा चाची!" वारवारा विस्मय से बोली, "तो तुमने सचमुच..."

"हां, यह मुर्ग़ी का शोरबा है। तुम इतनी हैरान क्यों हो रही हो? इसमें ग़ैरमामूली बात कुछ नहीं। उसे हिलाओ, जगा दो जरा, शायद वह इसे चखना पसंद करे।"

और इसके पहले कि अलेक्सेई—जो यह वार्ता सुन रहा था—आंखें खोल पाता, वारवारा ने उसे जोर से, बेहिचक, झकझोर दिया और उल्लास से चिल्ला पड़ी:

"अलेक्सेई पेत्रोविच! अलेक्सेई पेत्रोविच! उठो तो! वसिलीसा चाची तुम्हारे लिए मुर्ग़ी का शोरबा लायी है! मैं कहती हूं उठ तो बैठो!"

दीवार में गड़ी छिपटी की मशाल चटख उठी और जरा तेजी से जल उठी। धुएं भरी, कांपती हुई लौ की रोशनी में अलेक्सेई ने एक ठिंगनी-सी औरत देखी—कमर झुकी हुई, नाक हुक जैसी, झुर्रीदार कर्कश चेहरा। वह मेज पर किसी बड़ी-सी चीज़ पर से कपड़ा हटाने में व्यस्त थी, पहले उसने बोरे का टुकड़ा हटाया, फिर कोई पुराना-सा, औरतों का कोट हटाया और फिर काग़ज़ का पन्ना अलग किया और अंत में एक छोटा-सा लोहे का बर्तन निकल आया, जिससे उस खोह में मुर्ग़ी के गाढ़े शोरबे की ऐसी लजीज गंध फैल गयी कि अलेक्सेई को अपने ख़ाली पेट में ऐंठन महसूस होने लगी।

वसिलीसा चाची के झुर्रीदार चेहरे ने अपना सख्त और कर्कश भाव बनाये रखा।

"देखो, तुम्हारे लिए मैं यह लायी हूं," उसने कहा, "दया करके, इससे इनकार न करना। इसे खा डालो और अच्छे हो जाओ। भगवान की मर्ज़ी, शायद इससे तुम्हें फ़ायदा होगा।"

और अलेक्सेई को इस बुढ़िया के परिवार की करुण कहानी याद आ गयी और मुर्ग़ी की कहानी याद आ गयी और फिर हर चीज – वह बुढ़िया, वारवारा और लज़ीज़दार गंध फैलानेवाला वह लोहे का बर्तन जो मेज़ पर रखा था – आंसुओं की नदिया में तैरते-उतराते नज़र आने लगे और इन आंसुओं में से उसने बुढ़िया की सख्त आंखें भी देखीं जो अनन्त दया के भाव से उसे निहार रही थीं।

बुढ़िया जब दरवाज़े की तरफ़ बढ़ने लगी तो अलेक्सेई सिर्फ़ इतना ही कह सका, "धन्यवाद दादी।"

और जब वह दरवाज़े तक पहुंच गयी, तो उसने उसे यह कहते सुना:

"ऐसी बातें न करो। मुझे किस बात के लिए धन्यवाद देते हो? मेरे बेटे भी लड़ाई पर गये हैं। शायद उन्हें भी कोई मुर्ग़ी का शोरबा खिलायेगा। इसे खा लो। भगवान करे, यह तुम्हें फ़ायदा करे। बस, चंगे हो जाओ।"

"दादी! दादी!" अलेक्सेई ने उसके पास पहुंचने की कोशिश की, मगर वारवारा ने उसे रोक दिया और आहिस्ते से उसे फिर चटाई पर धकेल दिया।

"लेटे रहो, लेटे रहो! लो, थोड़ा-सा शोरबा पी लो!" तश्तरी के बनाम उसने अलुमीनम के जर्मन फ़ौजी डिब्बे का ढक्कन उसके सामने पेश कर दिया जिससे लज़ीज़ ख़ुशबूदार भाप उठ रही थी, और उसके सामने वह पेश करते हुए उसने अपना सिर दूसरी तरफ़ मोड़ लिया – स्पष्ट था कि उसकी आंखों में जो बिना बुलाये आंसू उमड़ पड़े थे, उन्हें वह छिपाने का प्रयत्न कर रही थी। "थोड़ा-सा पी लो," उसने दोहराया।

"मिख़ाईल नाना कहां है?"

"वे बाहर गये हैं। काम से गये हैं। ज़िला कमेटी कहां है, इसका पता लगाने। वे जल्दी वापस न आयेंगे। लेकिन यह शोरबा पी लो। पी डालो।"

और ठीक अपनी नाक के नीचे, अलेक्सेई ने लकड़ी का बड़ा-सा,

थोड़ा-सा टूटा चम्मच देखा, जो पुराना होने के कारण काला पड़ गया था – उसमें भूरे रंग का शोरबा भरा था।

एक दो चम्मच पीने से उसमें भेड़िये जैसी भूख जाग गयी; वह भूख से इतना व्याकुल हो गया था कि उसे पेट में दर्द, ऐंठन महसूस हुई, लेकिन उसने सिर्फ़ दस चम्मच और मुर्गे के सफ़ेद गोश्त के चंद नरम-नरम टुकड़े से अधिक अपने को न खाने दिया। हालांकि उसका पेट और अधिक की मांग बड़े ज़ोर से कर रहा था, फिर भी उसने जी कड़ा करके भोजन दूर कर दिया, क्योंकि वह जानता था कि इस हालत में एक भी फ़ाज़िल चम्मच उसके लिए जहर साबित हो सकता है।

मुर्गी के शोरबे ने करिश्मा कर दिखाया। इस अल्पाहार के बाद अलेक्सेई सो गया – झपकी भर नहीं, असली, गहरी, स्वास्थ्यकर नींद। जब नींद खुली तो उसने थोड़ा और खाया और फिर सो गया, और न तो चूल्हे के धुएं से, न औरतों की बातचीत से और न वारवारा के हाथों के स्पर्श से ही उसे जगाया जा सका – वारवारा आशंकावश कि कहीं वह मर नहीं गया है, बार-बार उसके ऊपर झुक जाती और देखती कि उसका दिल धड़क रहा है या नहीं।

वह जीवित था; नियमित और गहरी सांस ले रहा था। वह सोता ही रहा सारे दिन, सारी रात, और इस तरह सोता रहा मानो धरती की कोई ताक़त उसे जगा नहीं पायेगी।

अगले दिन बड़े भोर ही वन में छाये हुए स्वरों के ऊपर एक दूरागत, अनवरत गुंजार स्पष्ट सुनाई दी। अलेक्सेई चौंक गया, उसने तकिये से सिर उठाया, और कान लगाकर सुनने लगा।

उन्मत्त और अदम्य उल्लास का भाव उसके समूचे शरीर में व्याप गया। वह निश्चल लेटा रहा, उसकी आंखें उत्तेजना से कौंधने लगीं। उसे चूल्हे के ठंडे होनेवाले पत्थरों की चटख, रात भर गाते रहने के कारण थके हुए झींगुर की हलकी-सी झनकार, खोह के चारों ओर खड़े हुए पुराने चीड़ वृक्षों के सरसराने की नियमित ताल और दरवाज़े के बाहर पिघली हुई बसंती बर्फ़ की भारी बूंदों के टपकों तक के स्वर सुनाई दे रहे थे। किन्तु इन सारे स्वरों के ऊपर लगातार गुंजार का स्वर आसानी से पहचाना जा सकता था। अलेक्सेई भांप गया कि यह आवाज़ "ऊ-२" वायुयान से आ

रही है। यह आवाज़ किसी क्षण बुलन्द हो जाती तो कभी दब जाती, लेकिन पूरी तरह विलीन कभी न हुई। अलेक्सेई ने सांस रोक ली। स्पष्ट था कि हवाई जहाज़ कहीं आसपास ही था और वह या तो निरीक्षण करता या उतरने के लिए उचित स्थान खोजता, जंगल के ऊपर मंडरा रहा था।

"वारवारा, वारवारा!" अलेक्सेई ने पुकारा और अपने को कुहनी के बल उठाने का प्रयत्न किया।

किन्तु वारवारा उस खोह में न थी। बाहर से उत्तेजित औरतों की आवाजें और भाग-दौड़ की आहट सुनाई दी। बाहर कुछ हो रहा था।

एक क्षण खोह का द्वार खुला और फ़ेद्का का चित्तीदार चेहरा प्रकट हुआ।

"वारवारा चाची! वारवारा चाची!" लड़का चिल्लाया और फिर उत्तेजित स्वर में बोला, "उड़ रहा है! .. चक्कर लगा रहा है! .. हमारे ऊपर चक्कर लगा रहा है!" और इसके पहले कि अलेक्सेई पूछ पाता कि क्या उड़ रहा है, वह ग़ायब हो गया।

बड़ा ज़ोर लगाकर अलेक्सेई उठकर बैठ गया। हृदय की धक-धक, कनपटियों में ख़ून के उमड़ने और आहत पैरों में दर्द के कारण उसके सारे शरीर से कंपकंपी छूटने लगी। हवाई जहाज़ जितने चक्कर लगा रहा था, उन्हें वह गिनने लगा: उसने गिना एक, दो, तीन और उत्तेजनावश फिर चटाई पर गिर गया, और पुनः शीघ्रतापूर्वक, अदम्य गति से उसी गहरी, स्वास्थ्यकर निद्रा में डूब गया।

किसी युवा, गुंजायमान, सुरीले मंद स्वर के द्वारा वह जाग गया। इस कंठ को वह किसी समूह गान में भी पहचान लेता। लड़ाकू रेजीमेंट में इस तरह के कंठ का एक मात्र व्यक्ति था स्क्वाड्रन कमांडर अन्द्रेई देगत्यरेन्को।

अलेक्सेई ने आंखें खोलीं, मगर उसे महसूस हुआ कि वह अभी भी सो रहा है और यह स्वप्न ही है, कि उसे अपने मित्र का चौड़ा-सा, उभड़े कपोलवाला, अनगढ़, मधुर स्वभाव अंकित, नुकीला चेहरा दिखाई दे रहा है, माथे पर बैंगनी घाव का चिह्न है, हल्के रंग की आंखें हैं, और उतनी ही हल्की और बेरंग लम्बी-लम्बी बरौनियां हैं जिनको अन्द्रेई के शत्रु 'सुअर

की बरौनियां' कहा करते हैं। धुएं जैसे अर्द्ध-अंधकार में से हल्के नीले रंग की दो आंखें प्रश्न-भाव से झांकने लगीं।

"दावा, अब दिखाओ तुम अपने तोहफ़े को," देगत्यरेन्को की आवाज़ ख़ास उक्रइनी उच्चारण के साथ गूंज गयी।

यह स्वप्न विलीन न हुआ। सचमुच देगत्यरेन्को ही था, यद्यपि यह नितांत कल्पनातीत था कि यहां, इस वन की गहराई में बसे भूमिगत गांव में उसका मित्र आ भी सकता है। वह सामने खड़ा था – लम्बा क़द, चौड़े कंधे और हमेशा की तरह उसके कोट के कालर के बटन खुले हुए। वह अपना टोप हाथ में लिये था और उसके रेडियोफ़ोन के तार उससे लटक रहे थे, और वह कुछ पैकेट और पार्सलें भी पकड़े था। उसके पीछे मशाल जल रही थी और उसके सुनहले, बारीक कटे, खुरखुरे बाल दिव्य प्रभा की भांति चमक रहे थे।

देगत्यरेन्को के पीछे से मिखाईल नाना का ज़र्द, थका हुआ चेहरा झांक रहा था, उनकी आंखें उत्तेजना से भरी थीं, और उनके बग़ल में एक नर्स खड़ी थी – वही नुकीली नाकवाली, नटखट लेनोच्का, जो जंगली जानवर जैसे कौतूहल के साथ अंधेरे में से झांक रही थी। वह बग़ल में जीन का रेडक्रास थैला दबाये थी और विचित्र से फूलों को अपनी छाती से चिपकाये थी।

सभी लोग ख़ामोश खड़े थे। देगत्यरेन्को ने व्यग्रतापूर्वक चारों ओर देखा; स्पष्ट था कि इस अंधेरे में उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। एक-दो बार उसकी नज़रें ऐसे ही अलेक्सेई के चेहरे पर से गुज़र गयीं; और अलेक्सेई भी अभी तक अपने को यह न समझा पाया था कि उसका मित्र यकायक ही यहां आ सकता है, और डर रहा था कि कहीं यह सब सान्निपातिक स्वप्न भर न निकले।

"हे भगवान, तुम्हें वह दिखाई भी नहीं देता? वह इधर लेटा है," वारवारा ने मेरेस्येव के ऊपर से भेड़ की खाल का कोट उतारते हुए, फुसफुसाकर कहा।

देगत्यरेन्को ने अलेक्सेई के चेहरे पर पुनः किंकर्त्तव्यविमूढ़ दृष्टि डाली।

"अन्द्रेई!" मेरेस्येव ने अपने को कुहनी के बल उठाने का प्रयत्न करते हुए क्षीण स्वर में पुकारा।

अन्द्रेई ने मेरेस्येव की ओर विस्मय से देखा और उसके लिए अपनी त्रस्त मुद्रा छिपाना मुश्किल हो गया।

"अन्द्रेई! तुम मुझे पहचान नहीं पाये?" मेरेस्येव फुसफुसाया और उसे महसूस हुआ कि वह सिर से पैर तक कांपने लगा है।

अन्द्रेई एक निमिष और उस जीवित कंकाल को देखता रहा, जिसपर स्याह, जली हुई सी चमड़ी चढ़ी थी, और अपने मित्र की हंसमुख प्रकृति को पहचानने का प्रयत्न करता रहा, और सिर्फ़ उसकी बड़ी-बड़ी, लगभग गोलाकार आंखों में उसे वह स्पष्टवादी और दृढ़संकल्पी मेरेस्येव वाला भाव दृष्टिगोचर हुआ जिससे वह सुपरिचित था। उसने अपने हाथ आगे बढ़ाये। उसके हाथ से छूटकर टोप फ़र्श पर गिर पड़ा, पैकेट और पार्सल खुल पड़े, और सेब, नारंगी और बिस्कुट फ़र्श पर बिखर गये।

"अलेक्सेई! यह तुम्हीं हो?" भावोद्रेक से उसका कंठ भर आया और उसकी लम्बी-लम्बी, रंगहीन बरौनियां झुक गयीं। "अलेक्सेई! अलेक्सेई!" वह फिर चीख़ उठा। उसने बिस्तर से कृश शरीर को इतनी आसानी से उठाया मानो वह शिशु हो, उसे अपने सीने से लगा लिया और बराबर दोहराता रहा, "अलेक्सेई! प्यारे दोस्त! अलेक्सेई!"

वह कुछ देर तक अलेक्सेई को भुजाओं में थामे रहा और उसको निहारता रहा, मानो अपने को आश्वस्त कर लेना चाहता हो कि यही उसका दोस्त है, और फिर उसे अपने सीने से लगा लिया:

"हां, तू ही है! अलेक्सेई! शैतान की औलाद!"

वारवारा और नर्स ने उस दुर्बल शरीर को उसके जबर्दस्त भालू जैसे शिकंजे से छुड़ाने का प्रयत्न किया।

"भगवान के वास्ते, अब उसे छोड़ दो, उसमें जान ही कहां है!" वारवारा रोषपूर्वक फुसफुसायी।

"भावावेश में फंसना इस समय उसके लिए ख़तरनाक है। उसे लेटा दो!" नर्स ने वेग से बोलते हुए कहा।

अंततः आश्वस्त होकर कि वह स्याह, जीर्ण-शीर्ण, हल्का-सा शरीर उसके सहयोगी, उसके दोस्त, अलेक्सेई मेरेस्येव का ही है, जिसे सारी रेजीमेंट मरा मान बैठी थी, अन्द्रेई ने अलेक्सेई को बिस्तर पर लेटा दिया, ख़ुद अपना सिर पकड़ लिया, विजयी भाव से चीख उठा और अलेक्सेई को

कंधों से पकड़कर उसकी काली-काली आंखों में झांकने लगा जो गहरे गड्ढों के अंदर आनन्द से चमक रही थीं, और फिर चिल्ला उठा:

"जिन्दा है! पवित्र माता! जिन्दा है; शैतान तुझे तो ले जाये! कहां था तू इतने दिन? क्या हो गया था तुझे?"

लेकिन उस चिपटी नाकवाली, नाटी गलफुल्ली नर्स ने जिसे रेजीमेंट भर उसके लेफ़्टीनेंट ओहदे की उपेक्षा करके सिर्फ़ लेनोच्का या "चिकित्सा विज्ञान की सिस्टर" कहकर पुकारा जाता था, क्योंकि यह दोष तो उसी का था कि उसने अपने से बड़े ओहदेवालों को अपना परिचय इसी प्रकार दिया था,—उस हंसती, गाती रहनेवाली लेनोच्का ने, जो एक साथ एक समय सभी लेफ़्टीनेंटों से प्रेम किया करती थी, उत्तेजित विमान-चालक को बिस्तर से दूर धकेल दिया और सख़्ती से बोली:

"कामरेड कप्तान, अब रोगी को अकेला छोड़ दो, इसी समय!"

जिस गुलदस्ते के लिए एक दिन पहले विमान क्षेत्रीय केन्द्र उड़ा था, और जो इस समय फ़िज़ूल साबित हो रहा था, उसे मेज़ पर फेंककर उसने ज़ीन का रेडक्रास थैला खोला और बाक़ायदा रोगी की परीक्षा करने लगी। उसने कुशलतापूर्वक अपनी ठूंठ-सी उंगलियों से अलेक्सेई के पैर ठोंके और पूछा:

"दर्द होता है? ऐसा? और ऐसा?"

अब पहली बार अलेक्सेई ने अपने पैरों पर भरपूर नज़र डाली। पैर बुरी तरह सूज गये थे और लगभग काले पड़ गये थे। तनिक स्पर्श भर से उसके सारे शरीर में दर्द बिजली की तरह दौड़ जाता था। लेकिन स्पष्ट था कि लेनोच्का को जो बात ज़रा भी अच्छी न लगी, वह यह थी कि पैरों की उंगलियां बिल्कुल काली पड़ गयी थीं और बिल्कुल सुन्न हो गयी थीं।

मिख़ाईल नाना और देगत्यरेन्को मेज़ के पास बैठ गये। इस अवसर को मनाने के लिए हवाबाज़ की बोतल से चोरी-चोरी दो घूंट पीकर वे ज़ोरों से गपशप में लग गये थे। अपनी कांपती हुई, ऊंची आवाज़ में मिख़ाईल नाना बताने लगे कि अलेक्सेई कैसे मिला—और ज़ाहिर था कि वे इस बात को पहली बार नहीं बता रहे थे।

"हां तो, हमारे बच्चों ने उसे कटे हुए जंगल में पड़ा पाया। जर्मनों ने अपनी आड़बन्दी के लिए लट्ठ गिराये थे और इन बच्चों की मां ने,

यानी मेरी बेटी ने उन्हें ईंधन जमा करने के लिए भेजा था। इस तरह वह मिल गया... 'आहा! उधर वह अजीब-सी चीज़ क्या पड़ी हुई है?' पहले तो उन्होंने सोचा कि वह घायल भालू है जो लुढ़कता फिर रहा है और वे फ़ौरन सिर पर पैर रखकर भागे। लेकिन कौतूहल की जीत हुई और वे लौट पड़े, 'यह कैसा भालू है? वह लुढ़कता क्यों फिर रहा है? आहा, इसमें भी कोई मज़ेदार राज़ है?' वे बराबर उसे देखते रहे और उन्होंने इस चीज़ को बराबर लुढ़कते जाते और कराहते देखा।"

"तुम्हारा 'लुढ़कने' से क्या मतलब है?" देगत्यरेन्को ने संदेहपूर्वक पूछा और मिख़ाईल नाना के सामने सिगरेट केस बढ़ा दिया, "आप पीते हैं?"

दादा ने सिगरेट ले ली, अपनी जेब से अख़बार का एक तहशुदा काग़ज़ निकालकर उसमें से एक टुकड़ा फाड़ा, उसपर सिगरेट की तम्बाकू झाड़ ली, उसे लपेट लिया और उसे जलाकर बड़े स्वाद से गहरा कश ले लिया।

"सिगरेट? ज़रूर पीता हूं," एक और कश खींचने के बाद वे बोले, "हां, हां! बस, बात यह है कि जब से जर्मन आये हैं, तब से मैंने तम्बाकू देखी नहीं है। मैं सेवार पीता हूं और हां, स्पर्ज की सूखी पत्तियां भी! .. और वह कैसे लुढ़कता फिरा, यह उसी से पूछो। मैंने नहीं देखा। लड़के बताते हैं कि वह पीठ से पेट की तरफ़ और पेट से पीठ की तरफ़ लुढ़कता था। बात यह थी कि उसमें हाथों और घुटनों के बल रेंगने की ताक़त नहीं थी। ऐसा है यह आदमी!"

देगत्यरेन्को अपने मित्र को देखने के लिए जब-तब उछल पड़ता था और अलेक्सेई को महिलाएं उस मटमैले फ़ौजी कम्बलों में लपेट रही थीं जिन्हें नर्स अपने साथ लायी थी।

"शान्त बैठे रहो, बेटे, शान्त बैठो। यह कपड़ा लपेटने का काम मर्दों का नहीं होता!" नाना ने उसे रोकते हुए कहा, "सुनो जो मैं कह रहा हूं और यह बात अपने बड़े अफ़सरों को बताना न भूलना। इस आदमी ने बहुत बड़ा काम किया है। देखते हो, क्या हालत है उसकी। हम सब, सामूहिक खेत के सारे लोग, एक हफ़्ते से इसको संभाल रहे हैं और तब भी वह हिल-डुल तक नहीं सकता। लेकिन इसी में इतनी ताक़त थी कि वह हमारे जंगलों और दलदलों को रेंगकर पार कर आया। विरले ही ऐसे

मिलेंगे जो यह कर दिखायें। साधु-महात्माओं ने भी अपनी उपासना में कभी इस तरह का करतब नहीं दिखाया। किसी खम्भे पर खड़े रहने में क्या है? सच है न मेरी बात! मैं तो यही कहूंगा! लेकिन सुनो, बेटे, सुनो..."

बूढ़ा देगत्यरेन्को के कान के पास झुक आया और अपनी मुलायम, झबरी दाढ़ी से उसे गुदगुदाते हुए, लगभग कानाफूसी के स्वर में बोला:

"फिर भी, मुझे आशंका है कि वह न मर जाये। तुम्हारा क्या ख़्याल है? वह जर्मनों के चंगुल से बच निकला, लेकिन उस दंडधारी यमदूत के हाथों से कोई बच सकता है? चमड़ी और हड्डियों के सिवा क्या रहा है–वह कैसे रेंगता फिरा, मैं कल्पना ही नहीं कर पाता! अपने लोगों के पास पहुंचने के लिए वह बुरी तरह छटपटाता रहा होगा, क्यों? जितने भी वक़्त उसके होश-हवास गुम रहे, वह बराबर बड़बड़ाता रहा, 'हवाई अड्डा', 'हवाई अड्डा', और कुछ और भी शब्द थे और उसने ओल्गा का नाम भी लिया था। तुम्हारे यहां कोई इस नाम की लड़की है क्या? शायद यह उसकी घरवाली है। सुन रहे हो मेरी बात? सुना तुमने, मैंने क्या कहा? ऐ हवाबाज़!"

मगर देगत्यरेन्को नहीं सुन रहा था। वह इस व्यक्ति, इस अपने साथी के विषय में, जो रेजीमेंट में बड़ा साधारण-सा लड़का मालूम होता था, उस स्थिति की कल्पना कर रहा था जब वह सुन्न पैरों या टूटी टांगों से पिघलती हुई बर्फ़ के ऊपर, जंगलों और दलदलों को रेंगकर पार करता फिर रहा था, लुढ़कता फिर रहा था ताकि शत्रु से बच जाये और अपने लोगों तक पहुंच जाये। लड़ाकू-विमान के चालक की हैसियत से वह अपने स्वयं के अनुभव से उसके ख़तरों से परिचित हो चुका था। जब वह युद्ध में टूट पड़ता तो मौत के बारे में कभी सोचता ही नहीं, उसे आनन्दमय स्फूर्ति ही अनुभव होती। मगर जंगल में बिल्कुल अकेले रहकर कोई आदमी ऐसी बात कर दिखाये...

"तुम्हें यह कब मिला था?"

"कब?" बूढ़े ने अपने होंठ हिलाये, खुले केस में से एक और सिगरेट ली और पहले की तरह कागज मोड़कर एक और सिगरेट बनाने लगा, "अच्छा तो, वह कब की बात है? हां, ठीक है। लेंट के दिनों का वह पहला शनिवार था, यानी ठीक एक हफ़्ते पहले।"

देगत्यरेन्को ने मन ही मन तारीखें गिनीं श्रौर हिसाब लगाया कि अलेक्सेई मेरेस्येव अठारह दिन तक घिसटता रहा। कोई घायल आदमी इतने वक़्त तक श्रौर वह भी बिना भोजन घिसटता रहे – यह बिल्कुल कल्पनातीत प्रतीत होता था!

"अच्छा, दादा, तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद!" हवाबाज़ ने कसकर बूढ़े का आलिंगन किया श्रौर अपने सीने से चिपटा लिया, "धन्यवाद, भाई।"

"ऐसा न कहो। मुझे धन्यवाद देने की कौनसी बात है। कहता है, धन्यवाद! मैं क्या हूं? कोई ग़ैर हूं, विदेशी हूं, क्या हूं? आहा!" श्रौर फिर वह क्रोधपूर्वक अपनी बहू पर चिल्ला उठा, जो अपनी हथेली पर कपोल रखे किसी दुश्चिन्ता में लीन खड़ी थी... "फ़र्श पर से यह सामान समेट लो! देखो तो कैसी बेशक़ीमत चीज़ें ज़मीन पर बिखेर दी हैं! .. कहता है, धन्यवाद!"

इस बीच लेनोच्का ने मेरेस्येव को यात्रा के लिए तैयार करने का काम ख़त्म कर लिया था।

"बस, अब ठीक है, अब ठीक है, कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट," वह बड़बड़ा उठी श्रौर उसके शब्द इस तरह निकल रहे थे मानो तेज़ी के साथ किसी थैले से दाने बिखर रहे हों। "अब, मास्को में वे लोग तुम्हें जल्दी ही चंगा कर देंगे। श्रौर मास्को तो बड़ा शहर है, क्या नहीं? वे तुमसे भी बुरे मामलों को ठीक कर लेते हैं!"

उसका अतिरंजित उत्साह देखकर श्रौर जिस तरह वह बराबर दोहरा रही थी कि मेरेस्येव को तुरंत ही चंगा कर दिया जायेगा, उससे देगत्यरेन्को समझ गया कि उसके परीक्षण से स्पष्ट हो गया है कि मामला गम्भीर है श्रौर उसके मित्र की हालत बुरी है। "चिकित्सा विज्ञान की सिस्टर" की तरफ़ मुंह चिढ़ाकर वह अपने से बड़बड़ाने लगा: "चिड़ियों की तरह चें-चें कर रही है।" यकायक उसे याद आया कि रेजीमेंट में कोई भी आदमी इस लड़की की बात पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान नहीं देता, श्रौर हर आदमी मज़ाक़ में कहता है कि अगर वह किसी रोग का इलाज कर सकती है तो प्रेम का – श्रौर यह सोचकर देगत्यरेन्को को कुछ ढाढ़स बंधा।

कम्बलों में लिपटे अलेक्सेई को देखकर – सिर्फ़ उसका सिर बाहर दिखायी दे रहा था – देगत्यरेन्को को मिस्र के पुराने राजाओं की ममियों की याद आ गयी, जिनके चित्र उसने प्राचीन इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में देखे थे। उसने अपना लम्बा-चौड़ा हाथ अपने मित्र के चेहरे पर फेरा जिस पर सख़्त, घनी, भूरी-सी दाढ़ी उगी हुई थी।

"कोई बात नहीं, अलेक्सेई! तुम शीघ्र ही चंगे हो जाओगे! तुम्हें मास्को के शानदार अस्पताल में भेजने के लिए हमको हुक्म मिला है। सभी विशेषज्ञ होंगे! और जहां तक नर्सों का सवाल है," उसने जबान तालू पर फेरी और लेनोच्का को आंख मारी, "वहां ऐसी हैं कि मुर्दा भी उठकर चलने-फिरने लगे! हमारे-तुम्हारे भाग्य में अभी बहुत दिनों तक साथ उड़ना लिखा है..." और देगत्यरेन्को को लगा कि वह ख़ुद भी उसी बनावटी, निर्जीव उत्तेजना का शिकार हो गया है जो लेनोच्का पर सवार थी। अपने मित्र के कपोल थपथपाते हुए उसने यकायक महसूस किया कि उसकी हथेलियां नम हो गयी हैं। "स्ट्रेचर कहां है?" उसने रोषपूर्वक पुकारा, "चलो, इसे बाहर ले चलें! देर-दार करने से क्या फ़ायदा?"

बूढ़े की सहायता से उन्होंने कम्बलों में लिपटे अलेक्सेई को सावधानी से स्ट्रेचर पर रखा। वारवारा ने उसकी चीज़ें समेटीं और एक बंडल में बांध दीं।

वारवारा बंडल के अंदर जब जर्मन सिपाही की कटार बांधने लगी तो उसे रोकते हुए अलेक्सेई ने पुकारा, "नाना!" क़िफ़ायती मिख़ाईल नाना अक्सर उस कटार की कौतूहलपूर्वक परीक्षा किया करते, उसे साफ़ करते, पैना किया करते और अपने अंगूठे पर फेरकर उसकी धार आजमाया करते, "इसे मेरी तरफ़ से भेंट के रूप में ले लीजिए।"

"ख़ूब, धन्यवाद अलेक्सेई! धन्यवाद! वह बड़े बढ़िया क़िस्म का इस्पात है। और देखो! इस पर कुछ लिखा है, अपनी भाषा में नहीं," उन्होंने देगत्यरेन्को को कटार दिखाते हुए कहा। देगत्यरेन्को ने फल पर जर्मन में खुदे हुए अक्षर पढ़े और अनुवाद कर दिया, "सर्वस्व जर्मनी की सेवा में।"

"सर्वस्व जर्मनी की सेवा में," अलेक्सेई ने दोहराया और उसे याद आ गया कि यह कटार कैसे उसके हाथ लगी थी।

स्ट्रेचर के एक सिरे का हैंडिल पकड़ते हुए देगत्यरेन्को चिल्लाया, "अच्छा तो बुढ़ऊ, उठा लो उसे, उठा लो उसे!"

स्ट्रेचर झूल उठा और इतनी कठिनाई से उसे खोह के तंग दरवाज़े से निकाला जा सका कि दीवारों से मिट्टी झड़ गयी।

खोह में जितने भी लोग उमड़ आये थे, वे सब इस असहाय व्यक्ति को विदाई देने के लिए बाहर निकल गये। अन्दर रह गयी सिर्फ़ वारवारा। उसने हौले-हौले मशाल को ठीक रख दिया और धारीदार चटाई के पास आ गयी जिस पर अभी तक उस मानव-शरीर का नक़्श बाक़ी था जो यहां लेटा हुआ था, और उसको थपथपाने लगी। उसकी दृष्टि गुलदस्ते पर पड़ी जो जल्दी में यहीं छूट गया था। उसमें बकाइन की कई टहनियां थीं – पीली और मुरझाई-सी – इस विस्थापित ग्राम की ही तरह, जिसने सारा शीतकाल ठंडी और नम खोहों में गुज़ार दिया था। युवती ने वसंती सौरभ से सुवासित फूल उठाये, और ज़ोर से उन्हें सूंघ लिया। हालांकि वह सुगंध इतनी हल्की थी कि धुएं और कालिख के वातावरण में उसका अहसास मुश्किल था, फिर वह एक तख़्ते पर पछाड़ खाकर गिर गयी और मर्मवेधी अश्रुधारा में फूट पड़ी।

१८

अपने अप्रत्याशित अतिथि को विदा करने के लिए प्लावनी गांव के सभी लोग उमड़ आये। वायुयान जंगल के पीछे एक छोटी, लम्बी-सी झील पर उतरा जिसका बर्फ़, हालांकि किनारे पिघल चली थी, फिर भी अभी ठोस और मज़बूत थी। इस झील के लिए कोई रास्ता न था। उस तक एक पगडंडी थी, जिस पर जमी हुई नर्म, फुसफुसी बर्फ़ रौंदते हुए मिख़ाईल नाना, देगत्यरेन्को और लेनोच्का अभी एक घंटे पहले आये थे। इस पगडंडी से एक हुजूम झील की तरफ़ बढ़ रहा था, जिसके अगुआ गांव के लड़के थे और बिल्कुल आगे, गम्भीर सेर्योन्का और फ़ेद्का उत्साह से मचलते चल रहे थे। साधिकार एक मित्र की हैसियत से जिसने विमान-चालक को जंगल में पड़ा पाया था सेर्योन्का स्ट्रेचर के आगे-आगे, अपने पिता द्वारा छोड़े गये भारी-भरकम नमदे बूटों में बंधे पैरों को बर्फ़ में से श्रमपूर्वक

निकालते-घसीटते चल रहा था और दूसरे लड़कों को डांटता-फटकारता जा रहा था, जिनके चेहरे मलिन और कपड़े कल्पनातीत रूप में चिथड़े-चिथड़े थे। देगत्यरेन्को और नाना क़दम मिलाते हुए स्ट्रेचर लिये चल रहे थे और लेनोच्का बग़ल में अनकुचली बर्फ़ पर चल रही थी, कभी अलेक्सेई का कम्बल संवार देती और कभी उसके सिर पर अपना गुलूबंद बांध देती। उसके पीछे औरतों, लड़कियों और बूढ़ियों की पांत थी जो बातें करते चल रही थीं।

शुरू में बर्फ़ से प्रतिबिम्बित उज्ज्वल प्रकाश में अलेक्सेई ने चकाचौंध महसूस की। निर्मल वसंती प्रकाश आंखों में इतना तेज़ लगा कि वह उन्हें बंद कर लेने के लिए विवश हुआ और लगभग अचेत हो गया। पलकें थोड़ी-सी उठाकर उसने अपनी आंखों को अभ्यस्त किया और फिर चारों ओर देखने लगा। भूमिगत ग्राम का सारा चित्र उसके सामने साकार हो गया।

किसी भी तरफ़ नज़र डालो, यह प्राचीन जंगल दीवार जैसा खड़ा दिखाई देता था। पेड़ों के शिखर ऊपर लगभग मिल गये थे और ज़मीन को अर्द्ध-अंधकार से आवृत कर रहे थे। वह मिश्रित प्रकार का जंगल था। सनोबर के सुनहले तनों के आस-पास निराच्छादित भोज वृक्षों के तने थे जिनकी चोटियां आकाश में ऐसी लगती थीं मानो उनपर धुआं जम गया हो, और उनके बीच जहां-तहां देवदार की ऊंची नुकीली, स्याह चोटियां दीख रही थीं।

इन पेड़ों के नीचे, जहां धरती और आकाश से शत्रु की आंखें उन्हें देख न सकतीं, एक ऐसे स्थल पर उनकी खोहें थीं, जिस जगह पर बर्फ़ बहुत दिनों से सैकड़ों पैरों द्वारा कुचली जा रही थी। सदियों पुराने देवदार वृक्षों की शाखाओं पर बच्चों के कपड़े सूख रहे थे, छोटे सनोबरों के ठूंठों पर बर्तन और घड़े हवा खा रहे थे, और एक प्राचीन देवदार वृक्ष के नीचे, जिसके तने पर मटमैली काई की दाढ़ियां लटक रही थीं, उसके विशाल तने की जड़ पर, जहां हर प्रकार के नियमों के अनुसार किसी शिकारी जानवर को लेटे होना चाहिए था, ज़मीन पर एक चिकटी गुड़िया पड़ी हुई थी जिसके चपटे मुंह पर काली पेंसिल से मासूम चेहरा-मुहरा बना हुआ था।

भीड़ आगे-आगे स्ट्रेचर लिए हुए काई की क़ालीन बिछी 'सड़क' पर धीरे-धीरे बढ़ रही थी।

अपने को खुली हवा में पाकर अलेक्सेई ने पहले तो स्वयंस्फूर्त पाशविक उल्लास का उफान अनुभव किया, किन्तु उसके बाद मधुर, मूक वेदना की भावना छा गयी।

लेनोच्का ने अपने छोटे रूमाल से उसके चेहरे पर से आंसू पोंछ दिये और अपने ही ढंग से इन आंसुओं का अर्थ लगाकर उसने स्ट्रेचर-वाहकों से तनिक आहिस्ते चलने का अनुरोध किया।

"नहीं, नहीं! और तेज़ चलो!" मेरेस्येव ने उन्हें शीघ्रता करने के लिए कहा।

उसे तो पहले से ही यह लग रहा था कि वे लोग बड़े धीरे-धीरे चल रहे हैं। उसे आशंका होने लगी कि वह यहां से निकल नहीं पायेगा, वह हवाई जहाज़ जिसे मास्को से उसके लिए भेजा गया है, उसका इंतज़ार किये बिना ही उड़ जायेगा, और वह उस अस्पताल तक नहीं पहुंच पायेगा जहां उसे जीवनदान प्राप्त करने की आशा थी। स्ट्रेचर-वाहकों की तेज़ चाल के कारण उसे जो दर्द हुआ, उससे वह हल्के से कराह उठा, फिर भी दुहराता रहा: "और तेज़ भाई, और तेज़!" वह उन्हें और तेज़ चलने के लिए ही कहता रहा, हालांकि वह मिख़ाईल नाना की हांफनी सुन रहा था और उन्हें फिसलते, ठोकर खाते देख चुका था। स्ट्रेचर पर बूढ़े की जगह दो औरतों ने संभाल ली, बूढ़े ने स्ट्रेचर की बग़ल में ही लेनोच्का के दूसरी ओर चलना जारी रखा। पसीने से गीले गंजे सिर, सुर्ख़ चेहरे और झुर्रीदार गर्दन को अपनी अफ़सरी टोपी से पोंछते हुए वह बड़े संतोषपूर्वक बड़बड़ाता रहा:

"हमें दौड़ाता है, अच्छा? इतनी जल्दी है!.. ठीक है, बेटे, तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, उन्हें और तेज़ चलाओ! जब कोई आदमी जल्दी करने को कहे तो समझ लो उसमें प्राण बाक़ी हैं और वे ज़ोर से धड़क रहे हैं। मैं ठीक नहीं कहता, प्यारे-दुलारे बेटे?.. अस्पताल से हमें चिट्ठी लिखना। पता याद रखना: कालीनिन प्रदेश, बोलोगोये ज़िला, प्लावनी का भावी ग्राम, समझे? भावी, मैंने कहा। ठीक कहता हूं? डरो नहीं, चिट्ठी हम तक पहुंच जायेगी। भूलना नहीं। यह पता ठीक है!"

जब स्ट्रेचर हवाई जहाज़ में चढ़ाया गया और हवाई जहाज़ के पेट्रोल आदि की तीखी गंध उसके नथुनों में समा गयी, तो उसने एक बार फिर आनन्द का उफान महसूस किया। सेलुलाइड का ढकना उसके सिर के ऊपर चढ़ा दिया गया। जो लोग उसको विदा करने आये थे उनके हाथ हिलते वह न देख सका था, वह उस छोटी नाकवाली बूढ़ी को भी न देख सका, जो मटमैला रूमाल बांधे क्रुद्ध कौए जैसी दिखाई दे रही थी; वह हवाई जहाज़ के पंखे की हवा और आशंका से जूझती हुई देगत्यरेन्को की तरफ़ बढ़ी जो विमान-चालक की गद्दी पर बैठ चुका था, और उसके हवाले एक पैकेट कर गयी जिसमें उस मुर्गी का बचा-खुचा हिस्सा बंधा था; वह यह भी न देख सका कि मिख़ाईल नाना औरतों को फटकारते हुए और बच्चों को भगाते हुए हवाई जहाज़ का चक्कर लगाते घूम रहे थे और जब हवा ने उनके सिर से टोपी उड़ा दी और उसे दूर बर्फ़ पर जा फेंका तो वे अपनी गंजी चांद और रुपहली विरल लटें चमकाते नंगे सिर खड़े रहे, और इस तरह मालूम हो रहे थे मानो गांव की मूर्त्तियों में अंकित संत निकोलस हों। विदा होते हवाई जहाज़ की ओर हाथ हिलाते हुए वे खड़े रहे—औरतों के रंगबिरंगे हुजूम के बीच वह एक अकेला मर्द था।

झील की बर्फ़ीली सतह से ऊपर उठकर देगत्यरेन्को भीड़ के ऊपर से उड़ा और बड़ी सावधानी से, वह झील के ऊंचे-ऊंचे किनारों के सहारे-सहारे विमान चलाता हुआ जंगल से ढंके द्वीप के पीछे गायब हो गया। रेजीमेंट का यह सबसे साहसी चालक, जो हवा में बड़ी ही लापरवाही से उड़ने के कारण अपने अफ़सर से कई बार झिड़कियां खा चुका था, इस बार बड़ी सावधानी से उड़ रहा था, वह उड़ा नहीं, रेंगता रहा, जमीन को चूमता रहा, छोटी-छोटी नदियों की सतह पर ही चलता रहा और झीलों के कगारों की ओट लेता रहा। अलेक्सेई को कुछ नहीं दिखायी दे रहा था, कुछ न सुन पड़ रहा था। पेट्रोल और तेल की सुपरिचित गंध और हवाई उड़ान के आनन्द की अनुभूति के कारण वह चेतना खो बैठा और उसे होश तभी आया जब हवाई अड्डे पर पहुंचने के बाद उसके स्ट्रेचर को उतारकर एक दूसरे तेज रफ़्तारवाले रेडक्रास विमान में ले जाया जा रहा था जो मास्को से वहां आ पहुंचा था।

१६

वह अपने हवाई अड्डे पर पहुंचा तो वह दिन का सबसे व्यस्त काल था और वहां पूरी शक्ति से काम चल रहा था—जैसा कि उस वसंत के दिनों में रोज़ ही होता था ;

इंजनों की गड़गड़ाहट एक क्षण के लिए भी न रुकती थी। पेट्रोल-तेल पुनः लेने के लिए आसमान से एक स्क्वाड्रन उतरता तो दूसरा उसकी जगह आसमान में पहुंच जाता और फिर तीसरा उसकी जगह ले लेता। विमान-चालकों से लेकर तेल की टंकियों के ड्राइवर और स्टोर-कीपर तक तब तक काम करते, जब तक वे थकान के मारे गिर न जाते। प्रधान स्टाफ़-अफ़सर की आवाज़ बैठ गयी थी और अब वह फटे हुए फुसफुसाहट के स्वर में ही बात कह पाता।

लेकिन इतनी ज़बर्दस्त कार्यव्यस्तता और आम तनाव के बावजूद हर व्यक्ति बड़ी उत्सुकता के साथ मेरेस्येव के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

विमान उतारकर उन्हें विश्राम-स्थल तक ले जाने के पहले ही विमान-चालक अपने इंजनों की गड़गड़ाहट से भी ऊंचे स्वर में चिल्लाकर मेकेनिकों से पूछते, "क्या अभी वह नहीं आया ?"

तेलवाहक गाड़ियों को ज़मीन में गड़ी तेल-टंकियों तक ले जाते हुए 'तेल-मालिक' पूछ बैठते, "कुछ ख़बर उसके बारे में ?"

और हर आदमी कानों पर ज़ोर लगाकर सुनने लगता कि जंगल पार से रेजीमेंट के रेडक्रास वायुयान की सुपरिचित आवाज़ आ रही है या नहीं।

जब अलेक्सेई को होश आया और उसने अपने को एक स्प्रिंगदार झूलते हुए स्ट्रेचर पर पड़े पाया तो उसने अपने चारों ओर सुपरिचित चेहरों का घेरा देखा। उसने आंखें खोल लीं। भीड़ में हर्ष-ध्वनि गूंज उठी। ठीक स्ट्रेचर की बग़ल में उसे रेजीमेंटल कमांडर का युवा, भावशून्य चेहरा दिखाई दिया जिस पर संयमित मुस्कान अंकित थी। उसकी बग़ल उसने प्रधान स्टाफ़-अफ़सर की रक्ताभ, स्वेदपूर्ण मुखाकृति और ए० एस० बी० एयरोड्रोम सर्विस (बटालियन) के कमांडर की वही गोलाकार, मांसल और श्वेत मुखाकृति भी देखी जिसकी नियम-पाबन्दी और कंजूसी की आदतों से अलेक्सेई को घृणा थी। कितने सुपरिचित चेहरे थे! आगे का स्ट्रेचर-

वाहक यूरा था, जो अलेक्सेई की ओर देखने के लिए बार-बार सिर घुमाता था और इसलिए लड़खड़ा जाता था। पास ही लाल बालोंवाली लड़की, मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की सार्जेन्ट थी। पहले अलेक्सेई कल्पना किया करता था कि वह किसी कारण उससे घृणा करती है; वह सदा ही अपने को उसकी नज़रों से दूर रखती और आंखों में विचित्र भाव भरकर उसकी ओर चोरी-चोरी ताका करती। वह भी उसे मज़ाक़ में "मौसमी सार्जेन्ट" कहा करता। उसके पास ही मंद-मंद चाल से कुकूश्किन चल रहा था— नाटा-सा व्यक्ति, पीलियापीड़ित-सा, अप्रिय चेहरा, जिसे स्क्वाड्रन भर उसकी ग़ैर-मिलनसार आदतों के कारण नापसंद करता था। वह भी मुसकरा रहा था और यूरा के बड़े-बड़े क़दमों के साथ क़दम मिलाकर चलने का प्रयत्न कर रहा था। मेरेस्येव को स्मरण हो आया कि अपनी आख़िरी उड़ान के पहले, बहुत-से साथियों के बीच, उसने कुकूश्किन को ताना मारा था, क्योंकि वह उसे एक क़र्ज़ा नहीं लौटा पाया था, और तब उसे विश्वास हो गया था कि यह प्रतिशोधी व्यक्ति इस अपमान के लिए उसे कभी क्षमा न करेगा। लेकिन अब वह स्ट्रेचर के साथ दौड़ लगा रहा था, सावधानी से उसे सहारा देता जाता था और धक्का-मुक्की से बचाने के लिए अग़ल-बग़ल खड़े लोगों को कुहनी से हटाता जा रहा था।

अलेक्सेई ने कभी कल्पना भी न की थी कि उसके इतने अधिक मित्र हैं। लोग जब अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट करते हैं तो वे ऐसे निकलते हैं! उसे अब "मौसमी सार्जेन्ट" के बारे में अफ़सोस होने लगा, जो किसी कारण उससे डरी हुई जान पड़ती थी; वह ए० एस० बी० कमाण्डर की उपस्थिति से भी लज्जित हो उठा, जिसकी कंजूसी के बारे में उसने डिवीजन भर में न जाने कितने मज़ाक़ और क़िस्से फैलाये थे, और उसे लगा कि वह कुकूश्किन से क्षमा मांगे और अन्य साथियों को बता दे कि कुकूश्किन आख़िर इतना मनहूस और ग़ैरमिलनसार नहीं है। अन्यथा, अलेक्सेई ने महसूस किया कि जितनी भी यातनाएं उसे सहन करनी पड़ीं, उन सबके बाद, आख़िरकार, वह अपने परिवार के बीच आ गया है, जहां हर व्यक्ति उसके वापस आने पर हृदय से आनन्दित है।

मैदान पार करके उसे सावधानीपूर्वक रेडक्रास के रुपहले विमान तक ले जाया गया जो अनाच्छादित भोज वृक्षों के जंगल के किनारे छिपा खड़ा

था। उधर मेकेनिक लोग उसके हिम जड़ित इंजन को रबर के आघात-रक्षक के सहारे स्टार्ट करते नज़र आ रहे थे।

मेरेस्येव ने रेजीमेंट के कमांडर की ओर मुख़ातिब होकर, जितने भी उच्च स्वर और दृढ़ता के साथ सम्भव हो सकता था, यकायक कहा, "कामरेड मेजर!"

कमांडर अपनी सौम्य और गूढ़ार्थ मुसकान के साथ अलेक्सेई के निकट झुक आया।

"कामरेड मेजर... मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं मास्को न जाऊं बल्कि यहीं रहूं, आप लोगों के साथ..."

कमांडर ने अपना टोप उतार दिया, जिससे सुनने में बाधा पड़ रही थी।

"मैं मास्को नहीं जाना चाहता। मैं यहीं रहना चाहता हूं, यहीं दवादारू केन्द्र पर।"

मेजर ने रोएंदार दस्ताने उतार डाले, कम्बल के नीचे हाथ डालकर अलेक्सेई का हाथ टटोला और उसे दबाते हुए बोला:

"अजीब छोकरे हो! तुम्हें उचित गम्भीर चिकित्सा की आवश्यकता है।"

अलेक्सेई ने सिर हिला दिया। अब उसे आनन्द और आराम महसूस हो रहा था। उसे अब न तो वह तजुर्बा भयंकर महसूस हो रहा था, जिससे उसे गुज़रना पड़ा था, और न अपने पैरों की पीड़ा ही।

"क्या कह रहा है?" प्रधान स्टाफ़-अफ़सर ने अपनी फटी आवाज़ में पूछा।

"वह यहीं हमारे साथ रहना चाहता है," कमांडर ने मुसकुराते हुए उत्तर दिया।

और इस क्षण उसकी मुसकान, हमेशा की तरह गूढ़ नहीं, मैत्रीपूर्ण और उदास थी।

"मूर्ख! रोमांटिक!" प्रधान स्टाफ़-अफ़सर ने सिसकारी भरी। "वे लोग ख़ुद सेनापति के आदेशानुसार मास्को से इसके लिए वायुयान भेजकर इसका सम्मान कर रहे हैं और यह है कि... क्या समझते हो इसे?.."

मेरेस्येव उत्तर देना चाहता था और कहना चाहता था कि वह रोमांटिक नहीं है, उसे तो केवल विश्वास हो गया है कि यहां, चिकित्सा

केन्द्र के ख़ेमे में, जहां वह एक बार क्षत-विक्षत जहाज़ लेकर उतरने की दुर्घटना के बाद पैर के उखड़े जोड़ के इलाज के लिए कुछ दिन गुज़ार चुका है—यहां, इस सुपरिचित वातावरण में वह मास्को की अपरिचित सुविधाओं के वातावरण की बनिस्बत कहीं जल्दी अच्छा हो जायेगा। उसने ऐसे शब्द भी सोच लिये, जिनसे प्रधान स्टाफ़-अफ़सर को कटु उत्तर दिया जा सके, मगर इसके पहले कि वह उन्हें ज़बान से निकाल पाता, ख़तरे के भोंपू ने अपनी क्रंदनपूर्ण आवाज़ फैला दी।

हर चेहरे पर फ़ौरन एक गम्भीरता और कर्त्तव्यनिष्ठा का भाव छा गया। मेजर ने कई संक्षिप्त आदेश दे डाले। और सारे कर्मचारी चींटियों की तरह व्यस्त हो गये, कुछ लोग उन वायुयानों के निकट पहुंच गये जो जंगल के किनारे ओट में खड़े थे; कुछ लोग कमाण्डर की खोह पर पहुंच गये, जो मैदान के सिरे पर एक टीले के रूप में दिखाई दे रही थी और कुछ लोग उन मशीनों के पास पहुंच गये जो जंगल में छिपी थीं। अलेक्सेई ने आसमान में धुएं की स्पष्ट रेखा देखी और कई पूंछोंवाले राकेट के गिरने का रुपहला, धीरे-धीरे मिटता हुआ निशान देखा। अलेक्सेई समझ गया, वह क्या था: हमले के ख़तरे का 'अलर्ट' था। उसका दिल उछलने लगा, नथुने फड़कने लगे और रीढ़ में एक ठंडी सिहरन ऊपर से नीचे तक दौड़ गयी—जैसा कि वह ख़तरे की घड़ी में हमेशा महसूस किया करता है। लेनोच्का, मेकेनिक यूरा और "मौसमी सार्जेन्ट", जिन्हें ख़तरे का भोंपू बजने पर हवाई अड्डे की ज़बर्दस्त सरगर्मियों के बीच कोई विशेष काम न करना होता था, इस समय स्ट्रेचर झपटकर तीनों जंगल के निकटतम किनारे की ओर दौड़ पड़े—वे एक दूसरे के साथ क़दम मिलाकर भागने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उत्तेजना के कारण यह कर नहीं पा रहे थे।

अलेक्सेई कराह उठा। वे संभलकर साधारण पैदल चाल से चलने लगे। लेकिन दूर पर स्वचालित विमान-भंजक तोपें भयानक तरीक़े से गर्जन करने लगी थीं। हवाई जहाजों के दस्ते एक के बाद एक दौड़ की पट्टी पर सरक जाते और फुदककर उड़ जाते और उनके इंजनों की सुपरिचित आवाज के ऊपर अलेक्सेई को जंगल की ओर से विशृंखलित गुंजार सुनाई पड़ी, जिसको सुनते ही उसकी मांसपेशियां कसी हुई स्प्रिंगों की तरह अपने आप तन

गयीं, और स्ट्रेचर से बंधा हुआ यह कमज़ोर व्यक्ति कल्पना करने लगा कि वह किसी लड़ाकू-विमान की गद्दी पर बैठा हुआ शत्रु से भिड़ने के लिए झपट रहा है।

तंग खाई के अंदर स्ट्रेचर नहीं जा रहा था। यूरा और लड़कियां चाहती थीं कि उसको बांहों में उठाकर अन्दर ले जायें, लेकिन अलेक्सेई ने विरोध किया और मांग की कि जंगल के किनारे पर ही एक बड़े भोज वृक्ष के नीचे स्ट्रेचर रख दिया जाये। यहां लेटे-लेटे उसने सारी घटनाएं देखीं जो इतनी तेज़ी से घट गयीं जैसे गहरे सपने में हुआ करती हैं। ज़मीन से आकाश-युद्ध देखने का अवसर हवाबाज़ों को कम ही मिलता है। मेरेस्येव ने, जो युद्ध के पहले ही दिन से वायुसेना में लड़ रहा था, ज़मीन से आकाश-युद्ध कभी न देखा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि जहां वह लेटा था, वहां से आकाश-युद्ध कितना धीमा और हानि-रहित, इन पुराने और चपटी नाकवाले लड़ाकू-वायुयानों की गति कितनी स्फूर्ति-रहित और उनकी मशीनगनों की खटपट कितनी मासूम मालूम होती है, उसे कुछ घरेलू चीज़ों की याद आ गयी—जैसे सिलाई की मशीन खड़खड़ाती है, या कपड़ा जब फाड़ा जाता है तो उसमें चर्राहट होती है।

सारसों की पांत जैसी क़तार में बारह जर्मन बममारों ने हवाई अड्डे का चक्कर लगाया और आसमान में ऊंचे चढ़ आये सूरज की चमकीली किरणों के बीच ग़ायब हो गये। वहां से, उन बादलों के पीछे से, जिनके किनारे धूप से इतने चकाचौंध हो रहे थे कि उनकी तरफ़ देखने से आंखें दुखने लगती थीं, विमानों के इंजनों की हल्की-सी घरघराहट भौंरों की गुंजार की तरह सुनाई दे रही थी। जंगल में वायुयान-भंजक तोपें पहले से भी अधिक क्रुद्ध होकर गरज और गुर्रा रही थीं। फूटनेवाले गोलों से धुआं डैंडेलियन के रोएंदार बीज की तरह आकाश में उतराने लगता था। लेकिन किसी लड़ाकू-विमान के पंखों की विरली चमक के अलावा और कुछ नहीं दिखाई दे रहा था।

थोड़ी-थोड़ी देर बाद भौंरों का गुंजार कपड़े चीरने की आवाज़ में बदल जाता था: र-र्र-र्र-रिप, र-र्र-र्र-रिप, र-र्र-र्र-रिप! सूर्य की किरणों की चकाचौंध के बीच घमासान हवाई लड़ाई चल रहा था, लेकिन उसमें भाग लेनेवाले को वह जैसा दिखाई देता है, उससे वह इतना भिन्न था और

नीचे से इतना तुच्छ और नीरस पड़ता था कि उसे देखकर अलेक्सेई को तनिक-सा भी रोमांच न महसूस हुआ।

यहां तक कि जब आसमान में अधिकाधिक तेज़ आवाज़ के साथ मर्मवेधक, मनहूस-सी चर्राहट सुनाई देती और बम बूंदों की तरह ज्यों-ज्यों नीचे की तरफ़ आते, त्यों-त्यों आकाश में बड़ी होते जाते, तब भी अलेक्सेई को कोई भय न मालूम होता और वह सिर उठाकर देखता कि बम कहां गिरेंगे।

इस क्षण "मौसमी सार्जेन्ट" का व्यवहार देखकर अलेक्सेई चकित रह गया। जब बमों का चीत्कार शिखर पर पहुंच गया, तब वह लड़की जो कमर तक खाई में थी और हमेशा की तरह नज़र बचाकर उसकी तरफ़ निहार रही थी, यकायक उछल पड़ी, स्ट्रेचर की तरफ़ झपटी, ज़मीन पर गिर पड़ी और भय तथा उत्तेजना से कांपते हुए उसने शरीर से अलेक्सेई को ढंक लिया।

उस क्षण अलेक्सेई ने ठीक अपनी आंखों के पास एक भरी-सी, शिशु-सुलभ मुखाकृति, गदराये होंठ और चपटी-सी नाक देखी। जंगल में कहीं से किसी विस्फोट की गड़गड़ाहट आती सुनाई दी और उसके बाद पास ही कहीं दूसरा, तीसरा और चौथा विस्फोट सुनाई दिया। पांचवां इतना भयंकर था कि धरती कांपने और डोलने लगी, और जिस पेड़ के नीचे अलेक्सेई लेटा हुआ था, उसका शीशा बम के टुकड़े से कटकर बड़े ज़ोर से सनसनाता हुआ धरती पर आ गिरा। एक बार फिर लड़की की पीली, भयग्रस्त मुखाकृति उसकी आंखों के सामने कौंध गयी और उसके ठंडे कपोल उसे अपने कपोलों से चिपके महसूस हुए, और बमों के दो गोलों के धमाके के अंतराल में यह आतंकित लड़की फुसफुसा रही थी :

"प्यारे! .. प्यारे!"

बमों के एक और आघात से धरती हिल गयी और ऐसा जान पड़ा कि मानो सारे पेड़ ज़मीन से उखड़कर हवाई अड्डे के ऊपर आकाश में उड़ने लगे हों; उनके शिखर छिन्न-भिन्न हो गये थे, और फिर जमी हुई मिट्टी के लोंदे, बादलों जैसी गरजना के साथ हवा में भूरे से, तीखे धुएं की लकीर छोड़ते हुए धरती पर आ गिरे जिससे लहसुन जैसी गंध आ रही थी।

जब धुआं तितर-बितर हो गया, तब तक चारों तरफ़ शान्ति छा चुकी थी। जंगल की ओर से आकाश-युद्ध की आवाज़ें मुश्किल से ही सुनाई देती थीं। लड़की भी उछलकर अलग खड़ी हो चुकी थी, उसके कपोल अब पीले नहीं, लाल हो गये थे। बुरी तरह लजाते हुए और मानो रोने ही वाली है, उसने अलेक्सेई की तरफ़ से आंखें दूर रखते हुए क्षमा-याचना जैसे स्वर में कहा :

"मेरे कारण तुम्हें चोट तो नहीं पहुंची? मैं भी क्या बेवक़ूफ़ हूं, हे भगवान, क्या बेवक़ूफ़ हूं! मुझे बड़ा अफ़सोस है!"

"माफ़ी मांगने से अब कोई फ़ायदा नहीं," यूरा बड़बड़ाया, उसे शर्म महसूस हो रही थी कि अपने मित्र की रक्षा के लिए वह स्वयं नहीं, मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की यह लड़की दौड़ पड़ी।

बड़बड़ाते हुए उसने अपने कपड़ों से धूल झाड़ी, खोपड़ी खुजलायी और आश्चर्य से भोज वृक्ष के कटे सिर की टूट को देखने लगा, जिसके तने से पारदर्शी रस बुरी तरह गिर रहा था। घायल वृक्ष का रस, धूप में झिलमिलाता, काईदार छाल पर बह रहा था और धरती पर टपक रहा था—स्वच्छ और पारदर्शी आंसुओं की तरह!

"देखो! पेड़ रो रहा है!" लेनोच्का बोली, जो इस ख़तरे के बीच भी अपना पुरजोश कौतूहल बनाये हुए थी।

"तो तुम भी रोओगी!" यूरा ने उदास भाव से जवाब दिया। "ख़ैर, तमाशा ख़त्म हुआ। चलो चलें! एम्बुलेंस विमान को कोई क्षति तो नहीं पहुंची है, क्यों?"

वृक्ष के खंडित तने को, उससे ज़मीन पर टपकती हुई चमचमाती पारदर्शी रस की बूंदों को और अपने से काफ़ी बड़ा ग्रेटकोट पहने, चपटी नाकवाली 'मौसमी सार्जेन्ट' को, जिसका नाम भी अलेक्सेई को न मालूम था, निहारता वह बोल उठा : "वसंत आ गया है!"

बमों से बने गड्ढों के बीच, जिनसे अभी भी धुआं उठ रहा था और जिनमें गलती हुई बर्फ़ से पानी झरकर भर रहा था, वे तीनों—यूरा आगे से और दोनों लड़कियां पीछे से—अलेक्सेई को उठाकर टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बनाते हवाई अड्डे की तरफ़ बढ़ रहे थे, तब उसने उन नन्हे-नन्हे सशक्त हाथों पर कौतूहलपूर्वक कनखियों से दृष्टि डाली जो ग्रेटकोट की खुरदरी

आस्तीनों से निकल आये थे और स्ट्रेचर की मूठ कसकर पकड़े थे। इस लड़की को क्या हो गया था? या अलेक्सेई को भयभीत अवस्था में इसके मुंह से वे शब्द सुनने का भ्रम हो गया था?

उस दिन, जो अलेक्सेई मेरेस्येव के लिए बड़ा शुभ दिन था, उसने एक और घटना देखी। वह रुपहला हवाई जहाज़, जिसके पंखों और ढांचे पर रेडक्रास के निशान बने थे और जिसके चारों ओर विमान-मेकेनिक सिर हिलाता चक्कर लगा रहा था और देख रहा था कि बम के किसी विस्फोट या टुकड़े से उसे कोई नुक़सान तो नहीं पहुंचा है — यह सब अलेक्सेई को दृष्टिगोचर होने लगा था, तभी एक के बाद एक लड़ाकू-विमान वापस लौटने लगे और ज़मीन पर उतरने लगे। वे जंगल के ऊपर से झपटे, हमेशा की तरह चक्कर लगाये बिना धरती पर फिसल पड़े और दौड़ लगाते हुए जंगल के किनारे पर स्थित अपनी खोहों तक पहुंच गये।

शीघ्र ही आकाश में पूर्ण शान्ति छा गयी। हवाई अड्डा साफ़ हो गया और जंगलों में इंजनों की घर्राहट भी बंद हो गयी। लेकिन लोग अभी भी कमाण्ड की चौकी पर खड़े थे और आंखों पर हथेलियों से छाया करके आसमान छान रहे थे।

"नम्बर नौ नहीं लौटा। कुकूश्किन कहीं फंस गया है," यूरा बोला।

अलेक्सेई ने कुकूश्किन का छोटा-सा, पीलिया जैसा चेहरा स्मरण किया, जिस पर हमेशा असंतोष का भाव अंकित रहता था, और उसे याद आया कि सुबह ही कितनी सावधानी से उसने स्ट्रेचर संभाला था। क्या यह सच है? यह विचार आना सरगर्मियों के दिनों में विमान-चालक के लिए बड़ी ही साधारण बात है, लेकिन आज, जब हवाई अड्डे की ज़िंदगी से उसे अलग रखा जा रहा है, यह ख़्याल आते ही अलेक्सेई सिहर उठा। इसी क्षण आकाश में गरज सुनाई पड़ी।

यूरा हर्ष से चीख़ता उछल पड़ा:

"वह आ गया!"

कमान्डर के केन्द्र पर उपस्थित लोगों के बीच चहल-पहल मच गयी। कोई बात हो गयी थी। 'नम्बर नौ' उतरा नहीं, बल्कि वह हवाई अड्डे के ऊपर चक्कर काटता रहा, और जब वह अलेक्सेई के सिर पर पहुंचा तो उसने देखा कि उसके पंख का कुछ भाग टूटकर ग़ायब हो गया है, और

बुरी बात तो यह थी कि ढांचे के नीचे उसका एक ही 'पैर' नज़र आ रहा था। एक के बाद एक लाल राकेट आसमान में छोड़े गये। कुकूश्किन एक बार फिर सिर पर आकर उड़ने लगा। उसका हवाई जहाज़ ऐसा लग रहा था मानो कोई पंछी अपने टूटे घोंसले पर मंडरा रहा हो और यह न समझ पा रहा हो कि कहां उसे बसेरा लेना है। उसने तीसरा चक्कर शुरू किया।

"वह एक मिनट में ही कूद पड़ेगा। उसका पेट्रोल ख़त्म हो गया है। आख़िरी बूंदों के बल उड़ रहा है!" यूरा ने कानाफूसी के स्वर में कहा और उसकी आंखें अपनी घड़ी पर टिक गयीं।

ऐसी स्थिति में, जब जहाज़ उतारना असम्भव होता है, तब विमान-चालकों को ऊंचाई पर जाने और पैराशूट के बल पर उतर आने की इजाज़त है। शायद 'नम्बर नौ' को ज़मीन से इस तरह का हुक्म मिल भी चुका था, फिर भी वह हठपूर्वक चक्कर लगाता जा रहा था।

यूरा कभी हवाई जहाज़ की ओर और कभी घड़ी की ओर देखता रहा। हर बार जब उसे लगता कि इंजन धीमा पड़ गया है, तो नीचे झुक जाता और सिर दूसरी तरफ़ मोड़ लेता, "क्या वह हवाई जहाज़ बचाने की बात सोच रहा है?" हर आदमी मन ही मन चिल्ला रहा था: "कूद पड़ो! कूद पड़ो, भाई!"

एक लड़ाकू जहाज़, जिसकी पूंछ पर नम्बर "एक" लिखा था, हवाई अड्डे से बाहर निकला, झपट्टा मारकर हवा में उड़ गया और एक चक्कर लगाकर, होशियारी से घायल "नम्बर नौ" के पास पहुंच गया। जिस धैर्य और कुशलता से वह जहाज़ चलाया जा रहा था, उससे अलेक्सेई भांप गया कि उसे रेजीमेंटल कमांडर ख़ुद चला रहा है। स्पष्ट था, यह समझकर कि कुकूश्किन का रेडियो-सेट बिगड़ गया है या चालक का होश दुरुस्त नहीं है, वह उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ा था। अपने पंखों से इशारा करते हुए, "जैसा मैं करूं, तैसा करो," वह उसके बग़ल में जा पहुंचा और फिर ऊंचा उठ गया। उसने कुकूश्किन को आदेश दिया कि वह निकल आये और कूद पड़े। लेकिन उसी क्षण कुकूश्किन ने गैस कम कर दी और उतरने की तैयारी करने लगा। टूटे पंखवाला उसका विमान ठीक अलेक्सेई के सिर के ऊपर से झपट्टा मारकर निकला और शीघ्रता से धरती के नज़दीक पहुंच

गया। ठीक धरती की सतह पर पहुंचकर वह यकायक बायीं ओर झुक गया और अपनी सही-सलामत 'टांग' के बल उतर आया; कुछ दूर एक ही पहिए पर दौड़ते हुए, उसने चाल हल्की की, दाहिनी ओर झोंका खाया, अपने अक्षत पंख के बल ज़मीन पकड़कर अपनी धुरी पर चक्कर काटने लगा, जिससे बर्फ़ के बदल उठने लगे।

आख़िरी क्षण में वह ग़ायब हो गया। जब बर्फ़ के बादल बिखर गये तो क्षत-विक्षत झुके हुए वायुयान के पास एक स्याह-सी चीज़ पड़ी दिखाई दी। इस स्याह वस्तु की ओर लोग दौड़ पड़े और घंटी बजाती हुई एम्बुलेंस मोटर भी उसी तरफ़ लपकी।

"उसने हवाई जहाज़ बचा लिया! कितना होशियार आदमी है कुकूश्किन भी! यह कला उसने कब सीखी?" मेरेस्येव ने स्ट्रेचर पर लेटे-लेटे सोचा और अपने साथी से ईर्ष्या अनुभव की।

वह उत्कंठित हो उठा कि अपनी पूरी शक्ति से दौड़कर उस स्थान पर पहुंच जाये जहां वह नाटा-सा, सब का अप्रिय व्यक्ति पड़ा था जो इतना वीर और कुशल चालक सिद्ध हुआ। किन्तु वह तो स्ट्रेचर से बंधा था और पैर पीड़ा से जंकड़ गये थे जिसने एक बार फिर, ज्यों ही स्नायुओं का तनाव कम हो गया उसे धर दबोचा।

इन सब घटनाओं में घंटे भर से अधिक न बीता था, लेकिन वे इतनी अनगिनत और तेज़ थीं कि अलेक्सेई तुरंत ही उनका विश्लेषण न कर पाया। जब उसका स्ट्रेचर रेडक्रास विमान में बने हुए विशेष स्थान पर लगा दिया गया और एक बार फिर "मौसमी सार्जेन्ट" की अपलक दृष्टि की ओर उसका ध्यान गया, तब वह उन शब्दों का महत्त्व वास्तविक रूप में अवगत कर पाया, जो बमबारी के अंतराल में इस युवती के पीतवर्ण होठों से फूट पड़े थे। वह यह सोचकर लज्जित हो उठा कि इस अच्छी, आत्म-त्यागिनी लड़की का नाम तक वह नहीं जानता।

कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर निहारते हुए वह आहिस्ते से पुकार उठा: "कामरेड सार्जेन्ट!"

इसमें सन्देह है कि इंजन की घड़घड़ाहट के बीच वह उसकी आवाज़ सुन सकी या नहीं, किन्तु वह आगे बढ़ी और एक छोटा-सा पैकेट निकालकर कहने लगी:

"कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट, ये पत्र आपके लिए हैं। मैंने इन्हें बचा रखा था, इसलिए कि मुझे विश्वास था कि आप ज़िन्दा हैं और वापस ज़रूर लौट आयेंगे। मैं जानती थी, महसूस करती थी।"

उसने चिट्ठियों का छोटा-सा पुलिंदा उसके वक्ष पर रख दिया। उनमें अनेक पत्र उसे अपनी मां के दिखाई दिये—त्रिकोणाकार मोड़े हुए, बूढ़े हाथों की छोटी-बड़ी अनियमित लिखावट में लिखे पते; और कई उसी प्रकार के सुपरिचित लिफ़ाफ़े थे जैसे कि वह अपनी वर्दी की जेब में सदा रखे रहता है। उन लिफ़ाफ़ों को देखकर उसका चेहरा दमक उठा और उसने कम्बल से अपना हाथ मुक्त करने का प्रयत्न किया।

"ये किसी लड़की ने भेजे हैं?" दुखित भाव से 'मौसमी सार्जेन्ट' ने पूछा और शर्म से लाल हो गयी; उधर उसकी आंखों में आंसू भर आये जिनसे उसकी लम्बी-लम्बी भरी बरौनियां चिपक गयीं।

मेरेस्येव को विश्वास हो गया कि विस्फोट के बीच में जब वे शब्द सुनाई दिये थे तो वह भ्रम न था, और इस विश्वास के बाद अब वह सच-सच बताने का साहस न कर सका।

"ये मेरी विवाहित बहिन ने भेजे हैं। उसका कुलनाम अब दूसरा है," उसने उत्तर दिया और अपने आपसे घृणा अनुभव कर उठा।

इंजन की घर्राहट के बीच उसे कुछ स्वर सुनाई दिये। बग़ल का दरवाज़ा खुला और एक अजनबी सर्जन ने वायुयान में पैर रखा, जो अपने ग्रेटकोट के ऊपर एक सफ़ेद लबादा पहने था।

"एक रोगी तो पहले से ही आ गया है? ठीक!" उसने मेरेस्येव की ओर देखकर कहा। "दूसरे को भी अन्दर ले आओ! एक मिनट में ही हम रवाना हो जायेंगे। और मैडम, आप यहां क्या कर रही हैं?" उसने भाप से धुंधले चश्मे के भीतर से "मौसमी सार्जेन्ट" की ओर घूरकर पूछा, जो यूरा के पीछे छिपने का प्रयत्न कर रही थी। "कृपया जाइये, हम मिनट भर में ही चल देंगे। ए, स्ट्रेचर अन्दर लगाओ!"

"लिखना, भगवान के लिए मुझे चिट्ठी लिखना, मैं इंतज़ार करूंगी!" अलेक्सेई ने उस लड़की की फुसफुसाहट सुनी।

यूरा की सहायता से सर्जन ने हवाई जहाज़ में एक स्ट्रेचर चढ़ाया जिस पर कोई हल्के-से कराह रहा था। उसे जब लगाया जा रहा था, तब वह

चादर खिसक पड़ी जिससे वह ढंका था और मेरेस्येव ने कुकूश्किन का चेहरा देखा—दर्द से ऐंठा हुआ। सर्जन ने हाथ मले, केबिन में चारों तरफ़ नज़र डाली और मेरेस्येव का पेट थपथपाते हुए बोला:

"बढ़िया! बहुत बढ़िया! तुम्हारा साथ देने के लिए एक साथी यात्री है, नौजवान! क्या? और अब जिन लोगों को इसपर सफ़र नहीं करना है, वे उतर जायें, कृपया जल्दी! अच्छा तो सार्जेन्टी बिल्लेवाली परी चली गयी, एह्? ठीक! अब चलो! .."

यूरा की उतरने की मंशा न दिखाई दे रही थी। आख़िरकार सर्जन ने उसे जबर्दस्ती बाहर किया! दरवाज़ा बंद कर दिया गया, विमान कांपा, चला, फुदका और फिर शान्त भाव से, स्वाभाविक गति से इंजन की नियमित धड़कनों के साथ उड़ चला। सर्जन दीवार के सहारे मेरेस्येव के पास गया।

"कैसे हो?" उसने पूछा। "लाओ तुम्हारी नाड़ी देखूं।" उसने कौतूहल से मेरेस्येव की ओर देखा, सिर हिलाया और बड़बड़ाया: "ठीक। मज़बूत आदमी हो।" और फिर मेरेस्येव से बोला: "तुम्हारे दोस्त लोग तुम्हारे साहसिक कामों की ऐसी कहानियां सुनाते हैं कि जो बिल्कुल अद्भुत हैं, जेक लंडन की कहानी की तरह।"

वह अपनी सीट पर बैठ गया, उसने अपने को आराम से जमाया, फ़ौरन शिथिल हो गया और ऊंघने लगा। स्पष्ट था कि ढलती उम्र वाला यह पीत-वर्ण व्यक्ति थककर निर्जीव हो गया है।

"जेक लंडन की कहानी की तरह," मेरेस्येव ने सोचा और सुदूर बचपन की स्मृतियां, उस व्यक्ति की स्मृतियां, जो हिम-जड़ित पैरों से वीरान क्षेत्र में रेंग रहा था और एक बीमार और भूखा भेड़िया उसका पीछा कर रहा था, उसके मस्तिष्क पर छा गयीं। वह इंजनों की लगातार गुंजार से उनींदा हो गया; हर चीज़ तैरने लगी, अपनी रूपरेखा खोने लगी, और अलेक्सेई के मस्तिष्क के सामने से जो अंतिम दृश्य गुज़रा, वह यह कि अब युद्ध नहीं, बमबारी नहीं, पैरों में अनवरत पीड़ा नहीं, मास्को की ओर भागता हुआ कोई वायुयान नहीं, और यह सब घटनाएं किसी अद्भुत पुस्तक का अध्याय मात्र थीं, जिसे उसने सुदूर कमीशिन नगर में अपने बचपन में पढ़ा था।

द्वितीय खण्ड

१

अन्द्रेई देगत्यरेन्को और लेनोच्का ने तब कोई अत्युक्ति न की थी, जब उन्होंने अपने मित्र को राजधानी के उस अस्पताल की शान-शौक़त का वर्णन किया था, जिसमें मेरेस्येव और लेफ़्टीनेंट कुकूश्किन, दोनों को रखा गया था।

युद्ध के पहले यह एक संस्थान का चिकित्सालय था जिसमें एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, बीमारी या चोट के बाद लोगों को शीघ्रतापूर्वक स्वस्थ बनाने के नये उपायों के विषय में शोध-कार्य करते थे। इस संस्थान की अपनी परम्पराएं थीं और विश्वव्यापी प्रसिद्धि थी। जब युद्ध छिड़ गया तो वैज्ञानिक ने इसे घायल फ़ौजी अफ़सरों के अस्पताल के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस समय प्रगतिशील विज्ञान-जगत में जितने भी प्रकार के इलाजों की जानकारी थी, वे सब इस अस्पताल में रोगियों को बराबर उपलब्ध किये जाते रहे। मास्को के बाहर ही जो युद्ध छिड़ा हुआ था, उससे घायलों की ऐसी बाढ़ आ गयी कि यह चिकित्सालय जितनी रोगशैय्याओं के लिए बनाया गया था, उससे चार गुनी रोगशैय्याएं बढ़ानी पड़ीं। अभ्यागतों के कमरे, वाचनालय, मनोरंजन कक्ष, कर्मचारियों के कमरे और आम भोजनालय – सभी वार्ड बना दिये गये थे। वैज्ञानिक ने प्रयोगशाला के बग़ल में स्थित अपना अध्ययन कक्ष तक दे डाला और अपनी पुस्तकें तथा अन्य रोज़मर्रे की चीज़ें लेकर ख़ुद एक छोटे-से कमरे में चला गया जो ड्यूटी पर रहनेवाले डाक्टर के लिए निश्चित था। तब भी अक्सर गलियारों में रोगशैय्याएं डालने की आवश्यकता पड़ जाती थी।

चमकदार दीवारों के पीछे से, जो इस तरह मालूम होती थीं, मानो शिल्पकार ने आरोग्य मंदिर की पवित्र शान्ति की रक्षा के लिए इनकी रचना जानबूझकर इस प्रकार की है, रोगियों का देर तक कराहना, रोना और

सोनेवालों के खर्राटे तथा सन्निपात-ग्रस्त लोगों की बक-झक सुनाई दे रही थी। सारा क्षेत्र युद्ध की दमघोंटू, तीखी गंधों से भरा था – ख़ूनसनी पट्टियां, सूजे हुए घाव, जीवित मनुष्यों के मांस की सड़ांध – जिन्हें हवा का लाख प्रबन्ध करके भी दूर नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिक की अपनी रूपरेखा के अनुसार बनायी गयी आरामदेह चारपाइयों के साथ ही कैम्पों में तह करके रखी जानेवाली चारपाइयां भी पड़ी थीं। बर्तनों की कमी थी। चिकित्सालय में सुन्दर चीनी मिट्टी के बर्तनों के अलावा अलुमीनम के गहरे कटोरे भी इस्तेमाल किये जा रहे थे। किसी बम की धमक से, जो पड़ोस में ही फूटा था, बड़ी-बड़ी इटालियन खिड़कियों के शीशे चूर-चूर हो गये थे और उनकी जगह प्लाईवुड के तख़्ते जड़ दिये गये थे। यहां पानी तक की कमी थी, जब तब गैस बंद हो जाती थी, और औज़ारों को बाबा आदम के ज़माने के स्टोवों पर गर्म करके शुद्ध करना पड़ता था। मगर घायलों की बाढ़ आती रही। हवाई जहाज़ों, मोटरों, ट्रेनों के ज़रिए उन्हें बराबर बढ़ती हुई संख्या में लाया जा रहा था। और जिस अनुपात में हमारा आक्रमण बढ़ा, उसी अनुपात में आनेवाले घायलों की संख्या भी बढ़ती गयी।

इस सबके बावजूद अस्पताल के सारे कर्मचारी – सम्मानित वैज्ञानिक तथा सर्वोच्च सोवियत के सदस्य उसके प्रधान से लेकर वार्डों की नौकरानियों, कपड़े बदलने के कमरे के सेवकों और पोर्टरों तक – सभी थके हुए और कभी-कभी अधभूखे रह जानेवाले लोग, जिन्होंने सारी रात सोने का सुख कभी नहीं जाना, अपने संस्थान के सुस्थापित नियमों का धर्मोन्मित्त भाव से अनवरत पालन कर रहे थे। वार्डों की परिचारिकाओं को, जो कभी-कभी बिना विश्राम किये लगातार दो-दो तीन-तीन पालियां ड्यूटी देती थीं, कोई भी वक़्त ख़ाली मिला तो वे सफ़ाई-धुलाई और रगड़ाई का काम कर डालती थीं। दुबली-पतली, ढली हुई, थकान से लड़खड़ाती हुई नर्सें पहले की ही तरह सफ़ेद, कलफ़दार पोशाकें पहनकर बराबर आती रहतीं और डाक्टरों की हिदायतों का पालन करने में वही सख़्ती बरतती रहीं। हाउस सर्जन, हमेशा की तरह, रोगियों की चादरों पर ज़रा-सा धब्बा पाकर झिड़कियां देने लगते तथा दीवारों, रेलिंगों और दरवाज़ों की मूठों को रूमाल से रगड़कर देखते कि वे बिलकुल साफ़ हैं या नहीं। और निश्चित समयों पर, दिन में दो बार, स्वयं प्रधान महोदय –

लम्बा क़द, लाल-लाल चेहरा, चौड़े माथे के ऊपर खड़े हुए काले-सफ़ेद खिचड़ी बाल, मूंछोंवाले, शाही रोबदाबवाली खिचड़ी दाढ़ीवाले वयोवृद्ध सज्जन–जो नियम के बड़े पक्के थे, युद्ध से पहले की ही भांति, कलफ़दार पोशाक पहने हाउस सर्जनों और सहकारियों की भीड़ के साथ वार्डों का चक्कर लगाते, हर नये मरीज़ के रोग-कार्ड का निरीक्षण करते और संगीन मामलों में सलाह देते।

इन सरगर्म दिनों में उन्हें अस्पताल के बाहर का भी भारी काम करना पड़ता था, मगर वे फिर भी अपने आराम और नींद का बलिदान कर इस स्वनिर्मित संस्थान का निरीक्षण करने के लिए समय निकाल ही लेते। कोई कमज़ोरी देखकर जब वे अस्पताल के किसी कर्मचारी को झिड़कते–और यह काम वे हमेशा बड़े प्रचण्ड रूप में, बहुत आवेशपूर्वक, 'अपराध' के स्थल पर ही करते–तो वे हमेशा ज़ोर देते कि इस युद्धकालीन, सदा सचेत, अंधकार-ग्रस्त मास्को में भी इस चिकित्सालय को एक आदर्श संस्था के रूप में काम जारी रखना चाहिए–हिटलरों और गोयरिंगों को यही उनका जवाब होगा; ये युद्धकालीन कठिनाइयों के नाम पर कोई बहाना न सुनते और कहते कि आरामतलब और कामचोर यहां से जहन्नुम जायें, और ख़ूबी तो यही होगी कि आज जब कठिनाइयां हैं, तब इस स्थान पर सुदृढ़ व्यवस्था हो। उन्होंने ख़ुद वक़्त की इतनी पाबंदी के साथ वार्डों का चक्कर लगाने के लिए आना जारी रखा कि पहले की ही तरह परिचारिकाएं उनके आगमन को देखकर वार्ड की घड़ियां मिला लेतीं। हवाई हमलों से भी इस व्यक्ति की पाबन्दी नहीं टूटी। यही कारण था कि कल्पनातीत कठिनाइयों के बीच भी सारे कर्मचारी चमत्कार दिखाते रहे और युद्ध-पूर्व जैसी व्यवस्था सुरक्षित रखते रहे।

एक सुबह वार्ड में चक्कर लगाते समय प्रधान ने–हम उन्हें वसीली वसील्येविच कहेंगे–दूसरी मंज़िल पर सीढ़ियों के नीचे दो चारपाइयां एक दूसरे के पास पड़ी देखीं।

"यह क्या नुमाइश है?" वे चिल्ला पड़े और अपनी घनी भौंहों के नीचे से हाउस सर्जन की तरफ़ उन्होंने ऐसी भयावनी दृष्टि से देखा कि वह लम्बे क़द का, गोल कंधोंवाला व्यक्ति–जो अब जवान न रह गया

था, मगर देखने में रोबदार था—स्कूली लड़के की तरह सीधा 'अटेंशन' खड़ा रह गया और बोला :

"कल रात ही आये हैं... ये हवाबाज़। इस व्यक्ति की जांघ और दाहिने हाथ की हड्डियां टूट गयी हैं। स्थिति सामान्य है। लेकिन इस व्यक्ति की"—उसने अनिश्चित आयु की दुबली-पतली आकृति की ओर इशारा किया जो आंखें बंद किये निस्पन्द पड़ी थी—"हालत बहुत ख़राब है। पैरों में कम्पाउंड फ़्रैक्चर है, दोनों पैरों में गैंगरीन है, लेकिन मुख्य बात है अत्यन्त शक्ति-क्षीणता। मैं विश्वास नहीं करता, मगर इनके साथ दूसरी श्रेणी का डाक्टर आया था, उसने रिपोर्ट दी है कि वह टूटे हुए पैरों से अठारह दिन तक जर्मन पांतों के पीछे रेंगता रहा। यह बात सचमुच अत्युक्ति है..."

हाउस सर्जन की बातें न सुनते हुए वसीली वसील्येविच ने कम्बल उठाया। अलेक्सेई मेरेस्येव अपने वक्ष पर बाहें चिपकाये पड़ा था। इन स्याह चमड़ीवाली बांहों को देखकर जो ताज़ी सफ़ेद क़मीज़ और चादरों की पृष्ठभूमि में साफ़ उभर आयी थीं, इस व्यक्ति की हड्डियों की बनावट का अध्ययन करना सम्भव था। प्रोफ़ेसर ने आहिस्ते से कम्बल रख दिया और हाउस सर्जन की बात काटते हुए गुर्राये :

"ये यहां क्यों पड़े हैं?"

"गलियारे में अब जगह नहीं है। आप ख़ुद..."

"आप ख़ुद! आप ख़ुद! बयालीस नम्बर का क्या हुआ?"

"वह कर्नल वार्ड है।"

"कर्नल वार्ड!" प्रोफ़ेसर बरस पड़े। "किस बेवक़ूफ़ ने इसका आविष्कार किया?"

"लेकिन हमें बताया गया था: 'सोवियत संघ के वीरों के लिए एक स्थान सुरक्षित छोड़ो।'"

"वीर! वीर! इस युद्ध में सभी वीर हैं! लेकिन तुम मुझे सिखाने की कोशिश क्यों कर रहे हो? यहां प्रधान कौन है? इन आदमियों को फ़ौरन बयालीस में रखो। 'कर्नल वार्ड' जैसी मूर्खतापूर्ण बातों का आविष्कार करते घूमते हैं!"

वे अपने रोब खाये सहकारियों के साथ चले गये, लेकिन शीघ्र ही

लौट पड़े, मेरेस्येव की चारपाई के ऊपर आ झुके और हवाबाज़ के कंधे पर अपना मोटा हाथ रखकर, जो तमाम तरह के कीटाणुनाशक द्रवों के प्रभाव से छिल गया था, उन्होंने पूछा:

"क्या यह सच है कि तुम दो सप्ताह से ज्यादा जर्मन पांतों के पीछे घिसटते रहे?"

"क्या मुझे गैंगरीन हो गया है?" जवाब में मेरेस्येव ने डूबती हुई आवाज़ में पूछा।

प्रोफ़ेसर ने अपने सहकारियों की ओर, जो द्वार पर रुक गये थे, क्रुद्ध निगाह डाली और हवाबाज़ की बड़ी-बड़ी आंखों में, जिनसे दुख और चिन्ता टपक रही थी, अपनी आंखें डालकर मुंहफट ढंग से कहा:

"तुम जैसे आदमी को धोखा देना ग़लत होगा। हां, गैंगरीन हो गया है। लेकिन हौसला ऊंचा रखो। जैसे कोई भी परिस्थिति निराशाजनक नहीं होती, ऐसे ही कोई भी रोग असाध्य नहीं होता। समझे तुम? ठीक है!"

और वह लम्बे-लम्बे, तेज क़दम बढ़ाते हुए, गलियारे के शीशेवाले दरवाज़े को पार कर अकड़ के साथ चले गये, और उनकी गुर्राहट भरी आवाज़ की गूंज दूर पर सुनाई दी।

"बूढ़ा मजेदार है," अपनी भारी आंखों से जाती हुई आकृति का पीछा करते हुए मेरेस्येव ने कहा।

"उसका दिमाग़ ख़राब है। सुनीं उसकी बातें? हमें बना रहा है। ये मामूली बातें हमें ख़ूब मालूम हैं," कुकूश्किन ने शैतानी से मुसकुराकर जवाब दिया, "तो हमें कर्नल वार्ड में रहने की इज्ज़त बख़्शी जा रही है।"

"गैंगरीन," मेरेस्येव ने आहिस्ते से कहा और दुखी भाव से दोहराया, "गैंगरीन।"

२

तथाकथित 'कर्नल वार्ड' पहली मंज़िल के गलियारे के अंत में था। उसकी खिड़कियों का मुंह दक्षिण और पूर्व की ओर था इसलिए उसमें सारे दिन सूरज का प्रकाश रहता और उसकी किरणें एक चारपाई से दूसरी चारपाई तक सरकती रहतीं। यह छोटा वार्ड था। लकड़ी के फ़र्श पर स्याह चकत्ते पड़े देखकर यह अनुमान हो जाता है कि पहले यहां दो शय्याएं थीं,

उनके किनारे दो छोटी अलमारियां थीं और बीच में एक गोल मेज़ थी। अब कमरे में चार शय्याएं थीं। एक पर पट्टियों में लिपटा कोई घायल व्यक्ति पड़ा था, जो नवजात शिशु की भांति गठरी-सा पड़ा था। वह पीठ के बल पड़ा रहने और पट्टियों की दरारों में से शून्य, निस्पन्द आंखों से छत की तरफ़ ताकते रहने के अलावा कुछ नहीं करता था। अलेक्सेई की बग़ल में एक चारपाई पर एक उदार, बातूनी और स्फूर्तिवान व्यक्ति पड़ा था—झुर्रियोंदार, चेचक-मुंह सिपाहियाना चेहरा और पतली-बारीक मूंछें।

अस्पताल में लोग दोस्त जल्दी बन जाते हैं। शाम तक अलेक्सेई को मालूम हो गया कि चेचक-मुंह व्यक्ति साइबेरियाई है—एक सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष और शिकारी था—और फ़ौज में स्नाइपर है, और बड़ा ही कुशल स्नाइपर। येल्ना के पास के युद्ध से लगाकर, जहां अपनी साइबेरियाई डिवीजन के साथ, जिसमें उसके दो बेटे और दामाद भी हैं, उसने लड़ाई में प्रवेश किया था, अब तक वह सत्तर फ़ासिस्टों का नाम—जैसा कि वह कहा करता है—"काट चुका था।" वह सोवियत संघ के वीर की उपाधि प्राप्त कर चुका है, और जब उसने अलेक्सेई को अपना नाम बताया तो इस आकर्षणरहित आकृति की ओर अलेक्सेई कौतुकतापूर्वक ताकता रह गया। उस समय यह नाम फ़ौज में व्यापक रूप से विख्यात था और उसके विषय में प्रमुख पत्रों ने अग्रलेख लिखे थे। अस्पताल में प्रत्येक व्यक्ति—नर्सें, हाउस सर्जन और स्वयं वसीली वसील्येविच—उसे सम्मानपूर्वक स्तेपान इवानोविच कहकर पुकारते थे।

वार्ड में चौथे साथी ने, जिसका अंग-अंग पट्टियों में लिपटा था, सारे दिन अपने विषय में कुछ नहीं कहा, दरअसल, उसने एक शब्द भी नहीं कहा। लेकिन स्तेपान इवानोविच ने, जिसे दुनिया की हर बात का ज्ञान था, मेरेस्येव को उसकी सारी कहानी सुना दी। उसका नाम ग्रिगोरी ग्वोज्देव था। वह टैंक सेना में लेफ़्टीनेंट था और उसे भी सोवियत संघ के वीर की उपाधि प्राप्त हुई थी। टैंक-स्कूल से परीक्षा पास करके वह फ़ौज में भरती हो गया और प्रारम्भ से ही युद्ध में भाग ले रहा था। उसने सीमा पर, ब्रेस्त-लितोव्स्क की गढ़ी के आसपास कहीं पहली मुठभेड़ में भाग लिया था। बेलोस्तोक के पास प्रसिद्ध टैंक-युद्ध में उसका टैंक चूर-चूर हो गया था, लेकिन उसने फ़ौरन ही दूसरा टैंक संभाल लिया जिसका कमांडर

मारा जा चुका था, और बची-खुची टैंक डिवीजन लेकर उसने मीन्स्क की तरफ़ पीछे हटती हुई सेनाओं को आड़ दी थी। बूग के पास युद्ध में उसका टैंक फिर ध्वस्त हो गया और वह स्वयं भी घायल हो गया। उसने फिर एक और टैंक ले लिया जिसका कमांडर मारा जा चुका था और कम्पनी की कमान ख़ुद संभाल ली। बाद में शत्रु की पांतों के पीछे रह जाने पर उसने तीन टैंकों का घूमता-फिरता दस्ता बना लिया, और एक महीने तक जर्मन पांत के पीछे दूर तक शत्रु के यातायात को और फ़ौजी दस्तों को परेशान करता घूमता रहा। वह ताज़े युद्ध क्षेत्रों से अपने टैंकों के लिए पेट्रोल, गोला-बारूद और फ़ालतू पुर्जे जुटा लेता था। सड़कों के किनारे हरे-भरे गह्वरों में, जंगलों में और दलदलों में हर तरह की टूटी-फूटी मशीनें कितनी ही पड़ी मिल जाती थीं।

वह स्मोलेन्स्क प्रदेश के दोरोगोबूज के पास एक स्थान का निवासी था। जब उसे सोवियत सूचना केन्द्र की विज्ञप्तियों से, जिन्हें टैंक-चालक कमाण्डर के टैंक में लगे रेडियो पर सुनते थे, पता चला कि युद्ध का मोर्चा उसके निवासस्थान के निकट पहुंच गया है, तो वह अपने को रोक न सका और अपने तीनों टैंकों को बारूद से उड़ा देने के बाद अपने आठ बचे-खुचे आदमियों सहित, अपने गांव की ओर जंगल पार करता हुआ बढ़ चला।

युद्ध छिड़ने के ठीक पहले ग्वोज़देव छुट्टी लेकर अपने गांव गया था, जो मैदानों में टेढ़ी-मेढ़ी बहनेवाली एक छोटी-सी नदी के किनारे बसा था। उसकी मां, जो ग्रामीण अध्यापिका थी, सख़्त बीमार पड़ गयी थी, और उसके पिता ने, जो वयोवृद्ध कृषि विशेषज्ञ थे और मेहनतकश जनता के प्रतिनिधियों की क्षेत्रीय सोवियत के सदस्य थे, उसे तार देकर घर बुलाया था।

ग्वोज़देव के सामने साकार हो गया वह स्कूल के पास ही लट्ठों से बना छोटा-सा घर, अपनी मां, पुराने कोच पर असहाय पड़ी हुई छोटी-सी दुबली औरत; और अपने पिता, पुराने क़िस्म की शान्तुंग जाकेट पहने, मां के सिरहाने खांसते और चिन्ता से अपनी छोटी-सी दाढ़ी नोचते खड़े हुए और अपनी तीन नन्ही, काले केशोंवाली बहिनें, जिनकी शक्लें मां से मिलती-जुलती थीं। उसे अपने गांव की डाक्टरनी – छरहरी, नीली आंखोंवाली

जेन्या—भी याद आयी, जो उसे विदा करने के लिए उसके साथ घोड़ा-गाड़ी पर स्टेशन तक आयी थी और जिससे उसने हर रोज़ पत्र लिखने का वायदा किया था। बेलोरूस के रौंदे हुए खेतों और जले हुए वीरान गांवों में जंगली जानवर की तरह भटकते हुए, शहरों और सड़कों को छोड़ते हुए वह अपने दिल के दर्द को दबाकर यह अनुमान करने का प्रयत्न करता कि अपने गांव में जाकर उसे क्या देखने को मिलेगा, क्या उसके परिवार के लोग बच निकलने में सफल हो गये और अगर नहीं कामयाब हुए तो उनका क्या हाल हुआ।

अपने गांव पहुंचकर उसने जो कुछ आंखों देखा, वह उसकी भयंकरतम कल्पनाओं से भी गया-बीता था। उसे न अपना मकान मिला, न परिवार के लोग, न जेन्या और न वह गांव ही। उसे एक अधपगली बुढ़िया मिली, जो राख बने खंडहरों के ढेरों के बीच एक चूल्हे के पास खड़ी, अपने आप बड़बड़ाती हुई और क़दम इस तरह उचकाती हुई मानो नाच रही हो, कुछ पका रही थी; उसी के मुंह उसे पता चला कि जब हिटलरी सिपाही निकट आ रहे थे, तो अध्यापिका इतनी बीमार थी कि कृषि विशेषज्ञ और उसकी पुत्रियों को उसे कहीं ले जाने का, या उसे छोड़कर ख़ुद चले जाने का साहस न हुआ। फ़ासिस्टों को पता चल गया कि क्षेत्रीय सोवियत का एक सदस्य और उसका परिवार गांव में रह गया है। उन्होंने पूरे परिवार को पकड़ लिया और उसी रात उन्हें मकान के सामने एक भोज वृक्ष पर फांसी लटका दिया और घर को जलाकर ख़ाक कर दिया। बूढ़ी ने यह भी बताया कि ग्वोज्देव परिवार के लिए दया की भिक्षा मांगने के लिए जेन्या बड़े अफ़सर के पास गयी थी, मगर अफ़सर ने उसे सर्वस्व समर्पण करने के लिए बड़ी देर तक यातनाएं दीं। फिर क्या हुआ, यह बुढ़िया को न मालूम था, लेकिन दूसरे दिन वह लड़की उस मकान से मरी हुई निकाली गयी जिसमें वह अफ़सर टिका हुआ था, और दो दिन तक उसकी लाश नदी के किनारे पड़ी रही। बाद में जर्मनों ने सारा गांव जला डाला क्योंकि किसी ने उनके पेट्रोल टैंकियों में आग लगा दी थी, जो सामूहिक फ़ार्म की घुड़साल में खड़ी थीं। यह सिर्फ़ पांच दिन पहले की घटना थी।

बुढ़िया ग्वोज्देव को उसके मकान के ध्वंसावशेषों तक ले गयी और उसे वह भोज वृक्ष दिखाया। बचपन में उसका झूला उस वृक्ष की मजबूत

शाखा से बंधा लटका रहता था। वह अब सूख गया था और जली हुई शाखा पर पांच रस्सियों के छोर हवा में झूल रहे थे। अपने पैर पटकती हुई और कोई प्रार्थना बड़बड़ाती हुई बुढ़िया ग्वोज़्देव को नदी के किनारे ले गयी, जहां उस लड़की का शव पड़ा रहा था, जिससे उसने हर रोज़ पत्र लिखने का वायदा किया था और जिसके लिए उसे कभी समय न मिला। एक क्षण वह खड़खड़ाती झाड़ियों के बीच खड़ा रहा और फिर जंगल में वापस लौट गया, जहां उसके साथी उसका इंतज़ार कर रहे थे। उसने न एक शब्द कहा और न एक आंसू बहाया।

जून के अंत में, पश्चिमी मोर्चे पर जनरल कोनेव के आक्रमण काल में ग्रिगोरी ग्वोज़्देव और उसके आदमी जर्मन पांतों को पार करने में सफल हो गये। अगस्त में उसे एक नया टैंक दिया गया—प्रसिद्ध 'त—३४', और शीतकाल से पहले ही वह 'असीम साहसी व्यक्ति' के नाम से बटालियन में प्रसिद्ध हो गया। उसके बारे में ऐसी कहानियां कही और लिखी जाती थीं, जो अविश्वसनीय मालूम होती थीं, मगर थीं सत्य। एक रात जब उसे गश्त पर भेजा गया तो वह पूरे वेग से जर्मन क़िलेबन्दी चीरता गुज़र गया, उनके सुरंग क्षेत्र को भी उसने सुरक्षित ढंग से पार कर लिया और अपनी तोपें चलाते हुए शत्रु की पांत में भगदड़ मचाता, वह उस क़स्बे से निकल गया जो लाल सेना से आधा घिरा था, और दूसरी तरफ़ जाकर अपनी पांत में फिर शामिल हो गया। शत्रु की पांतों में कोई कम घबराहट नहीं फैली। एक दूसरे अवसर पर, जर्मन पांतों के पीछे एक घूमते-फिरते दल को लेकर वह प्रोट में से टूट पड़ा और जर्मन यातायात दस्तों पर हमला कर दिया, और अपने टैंकों से उनके सिपाहियों, घोड़ों और गाड़ियों को रौंद डाला।

शीतकाल में एक छोटे-से टैंक दल का नेतृत्व करते हुए उसने र्ज़ेव के निकट क़िलेबंद गांव की रक्षक सेना पर धावा कर दिया, जहां शत्रु के संचालक अधिकारियों का प्रधान कार्यालय था। गांव की सरहद पर, जब उसके टैंक रक्षा क्षेत्र पार कर रहे थे, तब ख़ुद उसके टैंक पर दाहक द्रव की बोतल आ गिरी। धुआं उगलती दमघोंटू लपटों से सारा टैंक छा गया, लेकिन टैंक-चालक लड़ते ही रहे। बड़ी-भारी मशाल की तरह वह टैंक गांव भर में दौड़ लगाता रहा, अपनी अग़ल-बग़ल की तोपों से गोले

बरसाता रहा, मोड़ लेता और भागते हुए जर्मन सिपाहियों का पीछा करता और उन्हें रौंदता रहा। ग्वोज्देव और उसके साथी टैंक-चालक, जिन्हें उसने अपने साथ शत्रु की पांत के पीछे लड़नेवालों में से चुना था, यह जानते थे कि किसी भी क्षण पेट्रोल की टंकी या गोला-बारूद के भण्डार में आग लग जाने पर उनके उड़ जाने की सम्भावना थी; धुएं से उनका दम घुट रहा था, टैंक की गर्म लाल दीवारों से टकराकर उनके अंग जल गये थे, उनके कपड़े भी सुलगने लगे थे, फिर भी वे लड़ते रहे। टैंक के नीचे किसी भारी बम के आ जाने से टैंक उलट गया और या तो विस्फोट के धमाके से या उससे धूल और बर्फ़ का जो बादल छा गया उसके कारण, लपटें बुझ गयीं। ग्वोज्देव को टैंक से निकाला गया तो वह बुरी तरह जला हुआ था। वह टैंक में तोपची के शव की बग़ल में मिला, जिसका स्थान उसने स्वयं ले लिया था।

एक महीने से टैंक-चालक, चंगे होने की आशा बिना, जीवन और मृत्यु के बीच जूझ रहा था; वह किसी बात में कोई दिलचस्पी न लेता था और कभी-कभी कई दिनों तक एक शब्द भी न बोलता था।

संगीन रूप से घायल लोगों की दुनिया अक्सर अस्पताल के वार्ड की चहारदीवारी तक ही सीमित रहती है। उन दीवारों के पार कहीं घमासान युद्ध छिड़ा हुआ है, बड़े और छोटे महत्व की घटनाएं घट रही हैं, उत्तेजना अपने शिखर पर है और प्रत्येक दिन हर व्यक्ति की आत्मा पर कोई एक ताजा चिह्न छोड़ जाता है। लेकिन बाहरी दुनिया की ज़िन्दगी की हवा भी 'संगीन घायलों' के वार्ड में आने नहीं दी जाती, और अस्पताल की दीवारों के बाहर जो तूफ़ान घहरा रहा है, उसकी दूरागत, दबी हुई गूंज मात्र यहां आ पाती है। वार्ड की ज़िंदगी सिर्फ़ अपनी ही छोटी-मोटी दिलचस्पियों तक सीमित रहती है। धूप से उष्ण खिड़की के शीशे पर किसी उनींदी, धूल-सनी मक्खी का आ बैठना ही यहां एक घटना है। वार्ड की इनचार्ज नर्स क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना का नये, ऊंची एड़ीवाले जूते पहनकर आना, क्योंकि वह अस्पताल से सीधे थियेटर देखने जाना चाहती है, एक ख़बर है। भोजन के तीसरे दौर में ख़ूबानी की जेली के बजाय, जिससे हर आदमी ऊब गया है, उबले हुए बेरों का परोसा जाना, बातचीत का विषय होता है।

लेकिन 'संगीन रूप से घायल' आदमी के यातनापूर्ण लम्बे-लम्बे दिनों पर जो चीज़ सदा छायी रहती है, जिस चीज़ पर उसका सारा चिन्तन केन्द्रित रहता है, वह होता है उसका घाव, जिसने उसे योद्धाओं की पांत से, युद्ध के जोशीले जीवन से, अलग कर दिया और इस मुलायम और आरामदेह चारपाई पर ला पटका जिससे उसे उसी क्षण से नफ़रत है जिस क्षण उसपर लेटाया गया था। वह अपने घाव, सूजन या टूटी हुई हड्डी के बारे में सोचते-विचारते सो जाता, अपनी नींद में भी वह उसी को देखता और जब जागता तो यह जानने का प्रयत्न करता कि सूजन कम हुई या नहीं, दाह घटा या नहीं, बुख़ार कम हुआ या बढ़ा। और जिस प्रकार रात में चौकन्ने कान प्रत्येक आहट को बढ़ा-चढ़ाकर सुनते हैं, इसी प्रकार यहां अपनी पंगु अवस्था पर मस्तिष्क बराबर केन्द्रित रहने के कारण घाव की पीर और तेज़ हो जाती है, और अत्यन्त पराक्रमी और मनस्वी व्यक्ति तक, जो युद्ध क्षेत्र में शान्तिपूर्वक मृत्यु से आंखें चार कर लेता है, यहां प्रोफ़ेसर के स्वर के उतार-चढ़ाव को भयभीत भाव से सुनने के लिए विवश होता है और धड़कते दिल से उनके चेहरे के भाव पढ़कर यह अनुमान लगाने का प्रयत्न करता है कि उसकी बीमारी कौनसा रुख़ ले रही है।

कुकूश्किन बराबर गुर्रा रहा था और बड़बड़ा रहा था। उसका ख़्याल था कि उसकी टूटी हड्डियों पर खपच्ची ठीक तरह से नहीं बांधी गयी थी, वह बहुत सख़्त कसी थी और इसके फलस्वरूप हड्डियां ठीक से नहीं बैठेंगी और उन्हें फिर से तोड़ना पड़ेगा। किन्तु नैराश्यपूर्ण अर्द्धमूर्च्छा में डूबा हुआ ग्रिगोरी ग्वोज्देव कुछ नहीं बोला। लेकिन जब क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना ने उसकी पट्टियां बदलते वक़्त उसके घावों में मुट्ठियां भर वेसलीन भरी तो वह किस अधीरता के साथ अपने सूजे हुए शरीर और फटी हुई चमड़ी को देख रहा था, और सर्जनों के आपसी सलाह-मशविरे को कितने ध्यानपूर्वक सुन रहा था, यह समझना आसान था। वार्ड में स्तेपान इवानोविच ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो चल-फिर सकता था—यह ठीक है कि वह झुककर लगभग दुहरा हो जाता, और चारपाई की पाटियां पकड़कर 'उस बेवक़ूफ़ बम' को, जिसने उसे धराशायी किया था और इस 'कमबख़्त सा साइटिका' को, जो उसके आघात के कारण उसे हो गया था, बराबर कोसता रहता।

मेरेस्येव ने अपने भाव छिपाने की सख्त कोशिश की और यह बहाना करने का प्रयत्न किया कि सर्जन आपस में जो बातें कर रहे हैं, उनमें उसे कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन हर बार जब विद्युत्-चिकित्सा के लिए उसके पैरों पर से पट्टियां खोली जातीं, और वह देखता कि अभागी लाल सूजन, धीरे-धीरे मगर लगातार, पैरों पर बढ़ती जा रही है तो वह भयभीत होकर आंखें फाड़े रह जाता।

वह बेचैन और निराश हो उठा। किसी साथी रोगी के किसी भोंड़े मज़ाक़ पर, चादर पर तनिक-सी सिकुड़न देखकर, या वार्ड की बूढ़ी परिचारिका के हाथों से झाड़ू के गिर भर जाने पर वह क्रोध से उबल पड़ता और उसे बड़ी मुश्किल से दबा पाता। यह ठीक है कि सख्त पाबंदी के साथ, धीरे-धीरे बढ़ते जानेवाले बढ़िया अस्पताली भोजन से उसकी शक्ति तेज़ी से वापस लौट आयी थी, और जब पट्टियां बदली जातीं या उसे विद्युत्-चिकित्सा के लिए बैठाया जाता तो कृशकाय शरीर को देखकर आपरेशन देखनेवाली युवती छात्राओं की निगाहों में अब भय का भाव न दिखाई देता था। लेकिन जितना ही उसका शरीर मजबूत होता जाता, उतनी ही उसके पैरों की हालत ख़राब होती जाती। अब उसके पैरों के समस्त अग्रभाग पर सूजन छा गयी थी और टखनों से ऊपर की तरफ़ बढ़ रही थी। पैरों की उंगलियां बिल्कुल सुन्न पड़ गयी थीं; सर्जन ने उनमें सुइयां चुभोयीं, मांस में गहराई तक, मगर अलेक्सेई को कोई दर्द न महसूस हुआ। वे एक नयी विधि से, जिसका अजीब-सा नाम था 'अवरोधन', सूजन रोकने में सफल तो हो गये मगर उसके पैरों में दर्द बढ़ गया। वह बिल्कुल असह्य हो उठा। दिन में अलेक्सेई तकिये में मुंह दबाये चुपचाप पड़ा रहता। रात में क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना उसे मार्फ़िया देती।

आपसी सलाह-मशविरे में सर्जन लोग, अधिकाधिक बार, भयानक शब्द 'अंग विच्छेद' का नाम लेने लगे। कभी-कभी वसीली वसील्येविच मेरेस्येव की शय्या के पास रुकते और पूछते :

"अच्छा तो, हमारे घसीटे महाशय के क्या हाल-चाल हैं? शायद हम अंग-विच्छेद करेंगे, एह? बस, चिक – और अलग हो जायेंगे।"

अलेक्सेई ठंडा पड़ जाता और कांपने लगता। अपने को चिल्ला उठने से रोकने के लिए वह बत्तीसी भींच लेता और सिर्फ़ सिर हिला देता, और प्रोफ़ेसर महोदय गुर्राते :

"अच्छा, सहे जाओ, सहे जाओ – यह तुम्हारा मामला है! हम देखते हैं, इससे क्या होता है," और वह कोई नया इलाज लिख जाते।

उनके पीछे दरवाज़ा बंद हो गया, गलियारे में उनकी पगध्वनि भी विलीन हो गयी, लेकिन मेरेस्येव आंखें बंद किये हुए शय्या पर पड़ा था और सोच रहा था: "मेरे पैर, मेरे पैर, मेरे पैर! .." क्या उसके पैर नहीं रहेंगे और क्या पंगु बनकर उसे अपने कमीशिन के मांझी अरकाशा की तरह लकड़ी के पैरों के बल चलना पड़ेगा? क्या उस बूढ़े की ही तरह उसे भी नहाने के लिए नदी किनारे अपने पांव उतार देने और छोड़ देने होंगे और बंदर की तरह चार पैरों से रेंगकर पानी में घुसना होगा?

ये तीखे विचार एक और बात से गहरे हो गये। अस्पताल में पहुंचने के पहले ही दिन उसने कमीशिन से आये अपने पत्र पढ़ डाले थे। छोटी-सी तिकोनी चिट्ठियां उसकी मां की थीं, जो हमेशा की तरह संक्षिप्त थीं और जिनमें आधे से अधिक हिस्से में रिश्तेदारों की सलाम-दुआएं लिखी थीं और यह आश्वासन था कि भगवान का शुक्र है, वे सब सकुशल हैं और यह कि वह, अलेक्सेई, उसकी फ़िक्र न करे. और आधे भाग में यह अनुरोध होता था कि वह ठीक से अपनी देखभाल करे, ठंड न खाये, पांव गीले न हो पायें, किसी ख़तरे में न कूदे और जर्मनों की चालाकियों से होशियार रहे जिनके बारे में उसने अपने पड़ोसियों से बहुत कुछ सुन रखा था। इन सभी पत्रों का भाव एक ही था। सिर्फ़ एक में उसने यह सूचना भेजी थी कि अलेक्सेई के कुशल-मंगल के लिए गिरजाघर में दुआ मांगने का अनुरोध उसने अपनी एक पड़ोसिन से किया – इसलिए नहीं कि वह ख़ुद धार्मिक अंधविश्वासों में विश्वास करती है, बल्कि इसलिए कि ऊपर शायद कहीं कोई हो तो वह भी क्यों रह जाये। एक पत्र में उसने लिखा था कि वह उसके बड़े भाइयों के बारे में चिन्तित है, जो दक्षिण में कहीं लड़ रहे हैं और बहुत दिनों से उनका कोई पत्र नहीं आया है, और आख़िरी पत्र में उसने लिखा था कि उसने सपना देखा था कि वोल्गा की वसंतकालीन बाढ़ के दौर में उसके सभी बेटे वापस लौट आये हैं और वे सब अपने पिता

के साथ—जो मर चुके हैं—मछली का शिकार करके लौटे हैं और उनके लिए उसने उनकी रुचि की कचौड़ी पकायी है; और पड़ोसिनों ने इस स्वप्न का फल यह बताया है कि उसका एक बेटा अवश्य मोर्चे से वापस आ जायेगा। इसलिए उसने अलेक्सेई से प्रार्थना की थी कि वह अपने अफ़सर से घर जाने के लिए, चाहे एक ही दिन के लिए, इजाज़त मांगे।

नीले लिफ़ाफ़ों में, जिनपर पते बड़ी-बड़ी, गोल-गोल, स्कूली लड़कियों जैसी लिखावट में लिखे हुए थे, उस लड़की के पत्र थे जो फ़ैक्टरी के प्रशिक्षण विद्यालय में उसकी सहपाठिनी थी। उसका नाम ओल्गा था। वह अब कमीशिन की लकड़ी चीरने की मिल में टेक्नीशियन थी, जहां वह ख़ुद भी किशोरावस्था में टर्नर की हैसियत से काम कर चुका है। यह लड़की बचपन की मित्र से अधिक-सी कुछ थी और उसके पत्र भी असाधारण थे। कोई आश्चर्य नहीं कि उसने हर पत्र को कई बार पढ़ा, वह उन्हें बार-बार उठाया और बिल्कुल सीधी-सादी पंक्तियों को भी इस भांति पढ़ता कि उनमें शायद कोई और सुखद, अप्रकट भाव निकल आये, हालांकि वह कौनसा अर्थ खोजना चाहता था, यह बात साफ़-साफ़ वह ख़ुद भी नहीं जानता था।

उसने लिखा था कि वह नाक तक अपने काम में डूबी हुई है; वह रात को अपने घर तक नहीं जाती, वहीं आफ़िस में सो जाती है, ताकि घर आने-जाने में वक़्त बरबाद न हो; अलेक्सेई तो इस लकड़ी चीरने की मिल को अब पहचान भी नहीं पायेगा और अगर उसे यह पता लग जाये कि वहां क्या-क्या चीजें बनने लगी हैं तो वह ख़ुशी से पागल हो जायेगा। प्रसंगवश उसने लिखा था कि कभी-कभी जब उसे छुट्टी मिलती है—महीने में एक बार से अधिक नहीं—तो वह अलेक्सेई की मां से मिलने जाती है। अपने बड़े बेटों की ख़बर न पाने के कारण बूढ़ी बहुत परेशान है; उसे बड़ी मुसीबत भुगतनी पड़ रही है और इधर कुछ दिनों से उसका स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा है। लड़की ने अलेक्सेई से प्रार्थना की थी कि वह मां को और जल्दी चिट्ठियां लिखा करे और अपने विषय में कोई बुरा समाचार देकर उसे हैरान न करे, क्योंकि, शायद उसके आनन्द का एकमात्र सहारा अब वही रह गया है।

ओल्गा के पत्र पढ़कर और बार-बार पढ़कर अलेक्सेई समझ गया कि उसको सपने का हाल लिख भेजने के पीछे मां की नन्ही-सी चाल क्या

है। वह समझ गया कि उसकी मां उसे देखने के लिए बेचैन है, अपनी सारी आशाएं उसी पर टिकाये हुए है, और वह यह भी समझ गया कि वह जिस दुर्घटना का शिकार हो गया है, उसके बारे में अगर वह मां को या ओल्गा को लिखेगा तो उन्हें कैसा भयानक धक्का लगेगा। वह बहुत देर तक सोचता रहा कि क्या किया जाये और उसे पत्र लिखने तथा सच्चाई प्रकट करने का साहस न हुआ। उसने यह समाचार कुछ दिनों और रोकने का फ़ैसला किया और निश्चय किया कि वह दोनों को सूचित करेगा कि वह सकुशल है और एक शान्त क्षेत्र में उसका तबादला कर दिया गया है; अपना पता बदल जाने का कारण देने और उसे सच्चा जताने के लिए उसने लिखा कि वह पृष्ठ प्रदेश में विशेष काम पर नियुक्त टुकड़ी में काम कर रहा है, जहां उसे शायद बहुत दिनों तक रहना पड़ेगा।

और अब, जब कि उसकी शय्या के पास सर्जनों के आपसी परामर्श के बीच 'अंग विच्छेद' शब्द अधिकाधिक बार आने लगा तो एक भय का भाव उसपर छा गया। यह अंग-भंग लेकर वह अपने घर कैसे लौटेगा? ओल्गा को वह अपने लकड़ी के पैर कैसे दिखायेगा? इससे उसकी मां को, जिसके और सब बेटे लड़ाई की बलि चढ़ गये और अब अपने आख़िरी बेटे का इंतज़ार कर रही है, कितना बड़ा सदमा पहुंचेगा! अलेक्सेई के मस्तिष्क में यही विचार चक्कर काट रहे थे, जब वह वार्ड के शोकार्त, दमघोंटू मौन के बीच लेटे हुए, कुकूश्किन के बेचैन शरीर के भार से चरमराती शय्या के स्प्रिंगों के क्रुद्ध स्वर, ख़ामोश टैंक-चालक की आहें और उस स्तेपान इवानोविच की बातें सुन रहा था, जो बिल्कुल दोहरे झुककर खिड़की के पास खड़ा था—वहीं पर वह खिड़कियों के शीशों पर ताल देता हुआ सारे दिन खड़ा रहता था।

"अंग-विच्छेद? नहीं! और कुछ भी हो ले, यह नहीं होगा! इससे मौत बेहतर... कितना दाहक और भयानक है यह शब्द 'अंग-विच्छेद'—ऐसा लगता है जैसे किसी ने छुरा भोंक दिया हो। अंग-विच्छेद? कभी नहीं। यह नहीं होगा!" अलेक्सेई ने सोचा। इस भयानक शब्द को उसने सपने में एक अनिश्चित आकृति की इस्पाती मकड़ी के रूप में देखा जो अपने तेज़, टेढ़े पंजों से उसका गोश्त नोच रही थी।

एक सप्ताह तक तो वार्ड नम्बर बयालीस के वासियों की संख्या चार रही। लेकिन एक दिन क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना परेशान-सी दो अर्दलियों के साथ आयी और उनसे बोली कि उन्हें थोड़ा-थोड़ा खिसकना पड़ेगा। स्तेपान इवानोविच की चारपाई बिल्कुल खिड़की तक खिसका दी गयी, जिससे वह बहुत ख़ुश हुआ। स्तेपान इवानोविच की बग़ल में ही कोने की तरफ़ कुकूश्किन की चारपाई लगा दी गयी और उसकी जगह पर एक बढ़िया-सी नीची चारपाई लगा दी गयी जिसपर स्प्रिंगदार गद्दा था।

उसपर कुकूश्किन बिगड़ खड़ा हुआ। उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसने अपनी चारपाई की बग़ल में खड़ी अलमारी पर घूंसा जमाया और चीख़ती हुई ऊंची आवाज़ में नर्स को, अस्पताल को और वसीली वसील्येविच तक को गाली दे डाली, इस-उस से शिकायत कर देने की धमकी दी। वह इस तरह आपे से बाहर हो गया कि बेचारी क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना के ऊपर एक मग फेंकने के लिए तैयार हो गया और अगर अलेक्सेई जिप्सी जैसी भयानक रूप से कौंधती आंखों से उसकी तरफ़ घूरकर उसको सख़्ती से डांट न देता तो वह मार ही देता।

तभी पांचवां रोगी भी वहां ले आया गया।

वह बहुत भारी रहा होगा, क्योंकि स्ट्रेचर चरमर्र बोल रहा था और स्ट्रेचर-वाहकों के क़दमों की ताल पर बोझ से झुक-झुक जाता था। एक गोल, मुंडा हुआ सिर असहाय भाव से तकिये पर इधर-उधर लुढ़क रहा था। चौड़ा, सूजा हुआ, मोम जैसा चेहरा निर्जीव दिखाई दे रहा था। मोटे-मोटे, पीले होंठों पर पीड़ा का स्थिर भाव अंकित था।

ऐसा लगता था मानो नया मरीज़ अचेत है, मगर ज्यों ही स्ट्रेचर फ़र्श पर रखा गया उसने आंखें खोल दीं; वह कुहनी के बल उठ बैठा, कौतूहलतापूर्वक उसने वार्ड में चारों तरफ़ नज़र डाली और किसी कारण स्तेपान इवानोविच की तरफ़ आंख मार दी, मानो कह रहा हो: "कैसी कट रही है, कुछ बुरी नहीं?" और ज़ोर से खांस उठा। स्पष्ट था कि उसके शरीर को बड़ी चोट लगी थी और उसे बहुत पीड़ा हो रही थी। पहली नज़र में, पता नहीं क्यों, मेरेस्येव को यह भारी-भरकम सूजी हुई

अकृति पसंद नहीं आयी, और वह बड़ी उपेक्षापूर्ण दृष्टि से दो अर्दलियों, दो परिचारिकाओं और नर्स को उसे स्ट्रेचर से उठाते और चारपाई पर रखते देखता रहा। चारपाई पर लेटाने के साथ उन लोगों ने उसके सख्त, लट्ठे जैसे पैर को भौंडे तरीक़े से मोड़ दिया। अलेक्सेई ने देखा कि नये मरीज़ का चेहरा यकायक और फीका पड़ गया और पसीने की बूंदें छलक आयीं, उसके होंठों पर से दर्द की थिरकन गुज़र गयी। लेकिन मरीज़ ने तनिक भी आवाज़ न की; सिर्फ़ दांत भींजकर रह गया।

ज्यों ही उसने अपने को चारपाई पर पाया, उसने अपने कम्बल और चादर को ठीक किया, अपने साथ जो किताबें-कापियां लाया था, उन्हें चारपाई की बग़ल में खड़ी अलमारी में क़रीने से सजा दिया, नीचे के ख़ाने में सावधानी से टूथपेस्ट और ब्रश, यू-डी-कोलोन, दाढ़ी बनाने का सामान और साबुनदानी लगा दी, फिर अपनी सारी कारगुज़ारी पर आलोचनात्मक नज़र डाली और मानो अब पूरी तरह आराम से जम गया हो, उसने अपनी गहरी, गूंजती आवाज़ में कहा:

"अच्छा, तो अब हम लोग परिचित हो लें। मैं हूं रेजीमेंटल कमिसार सेम्योन वोरोब्योव। ठीक। सिगरेट नहीं पीता। कृपया, मुझे अपना साथी बनाइये।"

उसने वार्ड के अपने साथियों पर शान्त दिलचस्पी के साथ नज़र डाली और उसकी कटीली, छोटी-सी सुनहली आंखों की तीव्र, सूक्ष्मान्वेषी दृष्टि से मेरेस्येव ने अपनी दृष्टि मिला दी।

"मैं आप लोगों के बीच अधिक नहीं रहूंगा। दूसरों के बारे में मैं नहीं जानता, लेकिन यहां पड़े रहने के लिए मेरे पास अधिक समय नहीं है। मेरे घुड़सवार दस्ते के लोग मेरा इंतजार कर रहे हैं। जब बर्फ़ ख़त्म हो जायेगी और सड़कें सूख जायेंगी, तब तक मैं भी खिसक जाऊंगा! 'लाल सैन्य के हम विख्यात घुड़सवार सिपाही और हमारा...' क्या?" वह अपनी प्रफुल्ल, गूंजती हुई मंद आवाज़ से वार्ड को भरता हुआ बोलता चला गया।

"हममें से कोई भी यहां बहुत दिन न रहेगा। जब बर्फ़ पिघल जायेगी – तो हम सब चले जायेंगे – पहले पैर जायेंगे, वार्ड नम्बर पचास में" – कुकूश्किन ने उसकी बात काट दी, और यकायक दीवार की तरफ़ मुंह फेर लिया।

अस्पताल में पचास नम्बर का कोई वार्ड न था। मरीजों ने यह नम्बर क़ब्रिस्तान को दे दिया था। कमिसार ने यह बात पहले भी सुनी थी या नहीं, इसमें संदेह है, मगर इस मज़ाक़ के पीछे भयानक अर्थ को वह फ़ौरन समझ गया। फिर भी उसने बुरा नहीं माना, उसने सिर्फ़ आश्चर्य से कुकूश्किन की ओर देखा और पूछने लगा:

"और तुम्हारी क्या उम्र होगी, दोस्त? आह, सफ़ेद दाढ़ीवाले! सफ़ेद दाढ़ीवाले! तुम ज़रा जल्दी बूढ़े हो गये हो!"

४

वार्ड नम्बर बयालीस में नये मरीज़ के आ जाने से—आपस में जिसकी चर्चा करते हुए, लोग कमिसार कहकर हवाला देते थे—वार्ड की सारी ज़िंदगी बदल गयी। उसकी उपस्थिति के दूसरे दिन तक इस भारी-भरकम कमज़ोर आदमी ने सभी से दोस्ती कर ली और जैसा कि स्तेपान वानोविच ने बाद में कहा, उसने "हर एक के दिल की चाबी खोज ली थी।"

स्तेपान इवानोविच के साथ वह जी भरकर घोड़ों और शिकार के बारे में बातें करता, जिसके दोनों ही शौक़ीन थे और जिसके दोनों ही अच्छे जानकार थे। मेरेस्येव के साथ, जो युद्ध के बारे में दार्शनिक भाव से बातें करना पसंद करता था, वह हवाई जहाज़ों, टैंकों और घुड़सवार सेनाओं के इस्तेमाल की वर्तमान विधियों के बारे में ज़बर्दस्त बहस छेड़ देता और सिद्ध करने की कोशिश करता—जिसमें कुछ न कुछ गरमा-गरमी भी हो जाती—कि यद्यपि हवाई जहाज़ और टैंक भी बड़े उपयोगी हैं, फिर भी घोड़ों का इस्तेमाल व्यर्थ नहीं हो गया है। वह आज भी उनकी उपयोगिता साबित करके दिखा सकता है। अगर घुड़सवार सेना के घोड़े तथा सवार बढ़िया हों और उसे आधुनिक हथियारों से लैस किया जाये और पुराने, मंजे-मंजाये कमाण्डरों की सहायता के लिए साहसी और बुद्धिमान जवान अफ़सर प्रशिक्षित किये जायें तो हमारी घुड़सवार सेना आज भी दुनिया को हैरत में डाल सकती है। उसने मौन टैंक-चालक से भी बातें करने के विषय खोज निकाले। संयोग से जिस डिवीजन में वह कमिसार की हैसियत

से काम कर रहा था, उसने यार्त्सेवो के पास युद्ध लड़ा था और बाद में दुख़ोवश्चिना में जनरल कोनेव के प्रसिद्ध प्रत्याक्रमण में भाग लिया था, जहां इस टैंक-चालक और उसके दल ने जर्मन पांतों को तोड़ा था। और कमिसार इसकी चर्चा करते हुए उन गांवों के नाम गिनाने लगता जिनसे वे दोनों ही परिचित थे और बताने लगता कि कहां और कैसे उन्होंने फ़ासिस्टों को मज़ा चखाया था। टैंक-चालक हमेशा की तरह ख़ामोश रहता, लेकिन अब वह यह बातें सुनकर अपना सिर दूसरी तरफ़ न घुमा लेता, जैसा कि पहले किसी की बात सुनकर किया करता था। पट्टियों की वजह से उसका चेहरा तो न दिखाई देता, लेकिन समर्थन में उसका सिर हिलता दिखाई दे जाता। कुकूश्किन को कमिसार ने जहां शतरंज खेलने का निमंत्रण दिया तो उसका ग़ुस्सा भी हंसी-ख़ुशी में बदल गया। शतरंज का पट कुकूश्किन की चारपाई पर रखा गया और कमिसार ने 'अंधी' शतरंज खेलना शुरू किया—अपनी चारपाई पर ही आंखें बंद किये लेटे रहकर। उसने खीझते-बड़बड़ाते लेफ़्टीनेंट को मात दे दी और इस प्रकार वह लेफ़्टीनेंट कुकूश्किन की नज़रों में भी बहुत ऊंचा उठ गया।

कमिसार का वार्ड में आ जाना, मास्को के नवागत वसंत की ताज़ी और नम हवा के आ जाने के समान था, जो हर सुबह परिचारिकाओं द्वारा खिड़कियों के खोल जाने पर वार्ड में घुस आती थी और तब रोगियों के कमरे की दमघोंटू ख़ामोशी सड़क की आवाज़ों के हमले से छिन्न-भिन्न हो जाती थी। आनन्द का वातावरण पैदा करने में कमिसार को कोई मेहनत भी न करनी पड़ती थी। वह तो जीवन से—आनन्द विह्वल, छलकते हुए जीवन रस से—भरपूर था, और अपनी व्याधि से उत्पन्न यंत्रणाओं को भूल गया था या भुलाने के लिए अपने को विवश कर रहा था।

सुबह जब वह जाग उठता तो चारपाई पर बैठ जाता और कसरत करने लगता—सिर के ऊपर दोनों बाहें फैलाता, अपने शरीर को पहले एक तरफ़ झुकाता और फिर दूसरी तरफ़, और बड़े ताल के साथ सिर को झुकाता और इधर-उधर मोड़ता। हाथ-मुंह धोने के लिए जब पानी आता तो वह जितना भी ठंडा हो सके, उतना ठंडा पानी लाने पर ज़ोर देता, चिलमची के ऊपर मुंह करके बड़ी देर तक छींटे मारता और फिर तौलिया से इतनी ज़ोर से रगड़कर बदन पोंछता कि उसका सूजा हुआ शरीर

लाल पड़ जाता, और उसे ऐसा करते देखकर अन्य मरीज़ों की भी इच्छा होती कि काश, वे भी यह सब कर पाते। जब अख़बार आते तो वह उन्हें उत्सुकतापूर्वक नर्स के हाथ से छीन लेता और तेज़ी से सोवियत सूचना विभाग की विज्ञप्ति पढ़ जाता और उसके बाद शांतिपूर्वक, धीरे-धीरे वह विभिन्न मोर्चों के युद्ध-संवाददाताओं की रिपोर्टें पढ़ना शुरू करता। पढ़ने का भी उसका अपना ही तरीक़ा था जिसे "सक्रिय पाठ" कहा जा सकता है। किसी क्षण वह किसी रिपोर्ट का कोई अंश जो उसे पसंद आयेगा, फुसफुस आवाज़ में पढ़ेगा और कह उठेगा: "ठीक है," और उस अंश पर निशान लगा देगा; कभी वह यकायक चिल्ला उठेगा: "यह झूठ बोल रहा है, चुड़ैल का बच्चा! बीयर की बोतल के मुक़ाबले अपना सिर दांव पर लगाकर कह सकता हूं, वह उस जगह था ही नहीं। बदमाश! और फिर भी वह लिखने की जुर्रत करता है!" एक दिन वह किसी अत्यन्त कल्पनाशील युद्ध-संवाददाता के लेख पर इतना क्रुद्ध हो उठा कि उसने उस अख़बार के नाम बड़ी ही क्रोधपूर्ण शैली में एक पोस्ट कार्ड लिख भेजा कि ऐसी बातें युद्ध में नहीं घटतीं और न घट सकती हैं, और अनुरोध किया कि इस "बेशर्म झूठे" पर लगाम लगायी जाये। कभी कोई रिपोर्ट उसे विचारमग्न कर देती, वह तकिये से टिक जाता, आंखें खुली रह जातीं, और विचारों में खो जाता, या वह अपने घुड़सवार दल के बारे में कोई दिलचस्प क़िस्सा सुनाने लगता, जिसमें—अगर उसकी बातों पर विश्वास किया जाये तो हर सिपाही परम वीर था, "सिर से पैर तक बहादुर जवान।" और तब वह फिर पढ़ने लगता। और यह बात कितनी ही अचरज की क्यों न मालूम हो, मगर सच यह था, कि उसकी इन टिप्पणियों से, इन कवित्वपूर्ण भटकावों से श्रोताओं का ध्यान इधर-उधर न भटकता था, बल्कि इसके विपरीत, इससे उन्हें वह बातें और अच्छी तरह समझने में सहायता मिलती थी, जो वह पढ़कर सुनाता था।

भोजन और दवादारू के बीच दिन में दो घंटे वह जर्मन पढ़ता था, शब्दों को रटता, वाक्य बनाता और कभी-कभी उन विदेशी शब्दों की ध्वनि से चमत्कृत होकर कहता:

"तुम्हें पता है दोस्तो, जर्मन में 'मुर्ग़ी के बच्चों' को क्या कहते हैं? 'कुहेल्हेन'। ध्वनि कैसी बढ़िया है! पता है, इससे किसी नन्ही-सी, रूई

के गाले जैसी नरम चीज़ का बोध मिलता है। और पता है कि 'छोटी-सी घंटी' को क्या कहते हैं? 'ग्लोकलिंग।' इस शब्द में टनक की ध्वनि है, क्या नहीं?"

एक दिन स्तेपान इवानोविच अपने को रोक न सका और पूछ बैठा: "कामरेड कमिसार, तुम जर्मन क्यों सीखना चाहते हो? तुम बेकार ही अपने को खपा रहे हो। अच्छा हो कि तुम अपनी शक्ति बरबाद न होने दो..."

कमिसार ने इस पुराने सिपाही की तरफ़ पैनी निगाह से देखा और बोला: "ओह, सफ़ेद दाढ़ीवाले। अरे, एक रूसी के लिए क्या यही जिंदगी है? हम जब बर्लिन पहुंचेंगे तो मैं जर्मन लड़कियों से किस भाषा में बात करूंगा? रूसी में?"

कमिसार की चारपाई की पाटी पर बैठा स्तेपान इवानोविच यह जवाब देना चाहता था, और बात तर्कसंगत भी थी कि इस समय तो युद्ध की पांत मास्को से भी दूर नहीं है और जर्मन [illegible]यों तक पहुंचने के लिए तो अभी बहुत रास्ता तय करना होगा, लेकिन कमिसार की आवाज़ में ऐसे सुखद आत्मविश्वास की गूंज थी कि पुराने योद्धा ने खांसा और गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया:

"नहीं, सचमुच, रूसी में नहीं। लेकिन, फिर भी कामरेड कमिसार, तुम्हें जो मुसीबत भोगनी पड़ी है, उसके बाद तो तुम्हें अपनी फ़िक्र करनी चाहिए।"

"मोटा घोड़ा पहले लुढ़के। क्या पहले नहीं सुनी यह कहावत? यह बुरी सलाह है जो तुम मुझे दे रहे हो, सफ़ेद दाढ़ीवाले।"

वार्ड में किसी मरीज़ के दाढ़ी न थी, फिर भी, पता नहीं क्यों, कमिसार सभी को 'दाढ़ीवाले' कहकर पुकारता था, लेकिन वह जिस ढंग से कहता था, उसमें अपमानजनक कोई बात न होती थी, उलटे, उसमें से प्यारे मज़ाक़ की ध्वनि निकलती थी, और मरीज़ों को उससे राहत महसूस होती थी।

अलेक्सेई लगातार कई दिन तक कमिसार को जांचता रहा और उसकी अनन्त प्रफुल्लता का स्रोत खोजने का प्रयत्न करता रहा। इसमें तो कोई सन्देह नहीं था कि वह भयानक पीड़ा झेल रहा था। ज्यों ही वह सो जाता

ग्रौर अपने आप पर क़ाबू खो बैठता, त्यों ही वह कराहने लगता, हाथ-पांव फेंकने लगता और दांत पीसने लगता और उसका चेहरा भी दर्द से विकृत हो उठा। स्पष्ट था कि इस बात को वह भी जानता था और इसी लिए वह दिन में न सोने की कोशिश करता और कुछ काम खोज निकालता। जागृत अवस्था में वह हमेशा शान्त और संयमित तक रहता, मानो उसे ज़रा भी दर्द न हो। वह बड़े आराम के साथ सर्जनों से बातें करता। जब वे उसके चोट खाये अंगों को ठोंक-बजाकर जांच करते तो वह हंसी-मज़ाक़ करने लगता, और सिर्फ़ जिस तरह उसके हाथ चादर को मुट्ठी में जकड़ लेते और नाक पर जिस प्रकार पसीने की बूंदें झलक आतीं, उसी से यह भांपना सम्भव था कि अपने को क़ाबू में रखने में उसे कितनी कठिनाई हो रही है। विमान-चालक यह न समझ पाया कि इतने भयानक दर्द को यह व्यक्ति कैसे दबा लेता है और इतनी शक्ति, इतनी ज़िंदादिली और इतनी स्फूर्त्ति कहां से जुटा लेता है। अलेक्सेई इस पहेली को हल करने के लिए इसलिए और भी उत्सुक था कि दवा की अधिकाधिक मात्रा लेने के बावजूद वह स्वयं रात भर सो नहीं पाता था और कभी-कभी सुबह तक आंखें खोले पड़ा रहता और अपनी कराहें दबाने के लिए कम्बल को दांतों से काटता रहता।

और भी अधिकाधिक बार और लगातार उसे सर्जनों के निरीक्षण के दौर में वही भयानक शब्द 'अंग-विच्छेद' सुनाई देने लगा। यह अनुभव कर कि वह भयानक दिन नज़दीक आ रहा है, अलेक्सेई ने तय कर लिया कि पैरों के बिना ज़िंदगी जीने लायक़ न रह जायेगी।

५

और वह दिन भी आ गया। अपने निरीक्षण के समय एक दिन वसीली वसील्येविच बड़ी देर तक खड़े-खड़े अलेक्सेई के नीले-नीले, बिल्कुल असंवेदनशील पैरों को ठोंक-बजाकर देखते रहे फिर यकायक कमर सीधी कर अलेक्सेई की आंखों में आंखें डालकर बोले: "इन्हें अलग कर देना होगा।" और इसके पहले कि मुर्दे की तरह पीला पड़ गया विमान-चालक कोई एक शब्द कह पाता, प्रोफ़ेसर ने सख़्ती से दोहराया: "इन्हें अलग कर

देना होगा। अब एक शब्द नहीं सुनूंगा, सुन रहे हो? वरना तुम अपना काम तमाम समझो! मेरी बात समझ रहे हो?"

इतना कहकर वे अपने अनुचरों की तरफ़ एक नजर डाले बिना वार्ड से बाहर निकल गये। वार्ड में एक दमघोंटू ख़ामोशी भर गयी। मेरेस्येव आंखें फाड़े, पत्थर की तरह पड़ा रह गया। उसकी आंखों के सामने, मानो कुहरे के अंदर, स्याह और भौंड़े ठूंठों के समान बूढ़े मांझी के पैर नाचने लगे और फिर उसने देखा कि वह मांझी बन्दर की तरह चारों पैरों के बल बालू पर रेंगता नदी में उतर रहा है।

"अलेक्सेई," कमिसार ने उसे आहिस्ते से पुकारा।

"क्या?" अलेक्सेई ने दूरागत, अनुपस्थित स्वर में उत्तर दिया।

"तुम्हें यह कराना ही होगा, मेरे यार।"

उस क्षण अलेक्सेई को महसूस हुआ कि मांझी नहीं, वह स्वयं ही ठूंठों के बल रेंग रहा है और उसकी प्रेमिका, उसकी ओल्गा रेतीले किनारे पर भड़कीले रंगों की फ़्राक—हल्की-फुलकी, दमकीली और सुन्दर फ़्राक, जो हवा में उड़ रही—पहने हुए उसकी तरफ़ टकटकी बांधकर निहार रही है और अपने होंठ काट रही है। तो यह हालत होगी। और वह तकिये में चेहरा गड़ाकर, फूट-फूटकर ख़ामोशी के साथ आंसू बहाने लगा। वार्ड के हर व्यक्ति पर गहरा प्रभाव पड़ा। स्तेपान इवानोविच कराहता-गुर्राता चारपाई से उठ बैठा, उसने अपना चोग़ा पहन लिया और अपने बंधे हुए पैरों को घसीटता, चारपाई की पाटी के सहारे अलेक्सेई की चारपाई की तरफ़ बढ़ने लगा, मगर कमिसार ने चेतावनी देने के लिए उंगली से इशारा किया, मानो कह रहा हो, "हस्तक्षेप मत करो, ख़ूब रो लेने दो उसे!"

और सचमुच उसके बाद अलेक्सेई ने अपने को बेहतर महसूस किया। शीघ्र ही वह शान्त हो गया, और जैसे आदमी बहुत दिनों से सतानेवाली समस्या का आख़िरकार हल कर लेने के बाद राहत महसूस करता है, वैसी ही राहत भी उसे महसूस होने लगी। शाम तक, जब अर्दली लोग उसे उठाकर आपरेशन कक्ष में न ले गये, तब तक वह एक शब्द भी न बोला। उस चकाचौंध सफ़ेद कमरे में भी वह एक शब्द न बोला। यहां तक कि जब उससे कहा गया कि उसके दिल की हालत के कारण उसे सुलाया नहीं जा

सकता और इसलिए स्थल विशेष को चेतनाशून्य करके आपरेशन किया जायेगा तब भी उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। आपरेशन के दौर में उसने न एक चीख़ निकाली और न एक कराह। कई बार वसीली वसील्येविच, जो यह सीधा-सादा आपरेशन ख़ुद कर रहे थे और हमेशा की भांति नर्सों और सहकारियों पर ग़ुस्से से गुर्रा रहे थे, बार-बार चिन्तापूर्वक उस सहकारी पर नज़र डालते जो अलेक्सेई की नब्ज़ देख रहा था।

जब हड्डियां रेतकर काटी जाने लगीं तो भयंकर दर्द हुआ, मगर अलेक्सेई अब दर्द सहने का अभ्यासी हो गया था, और वह यह भी न समझ पा रहा था कि सफ़ेद पोशाकें पहने और सफ़ेद जाली की नक़ाबें चेहरे पर लगाये हुए ये लोग उसके पैरों के साथ क्या कर रहे हैं। लेकिन जब उसे वार्ड में वापस ले जाया जा रहा था, तब वह अचेत हो गया।

जब उसे होश आया तो जो पहली चीज़ उसे देखने को मिली, वह था क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना का सहानुभूतिपूर्ण चेहरा। बड़े आश्चर्य की बात थी कि उसे कुछ याद नहीं पड़ रहा था और वह हैरान हो उठा कि इस सुन्दर, दयालुहृदया, सुनहरे बालोंवाली महिला के मुख पर चिन्ता और जिज्ञासा का भाव क्यों है। यह देखकर कि उसने आंखें खोल दी हैं, नर्स का चेहरा खिल उठा और उसने कम्बल के नीचे हाथ डालकर कोमलतापूर्वक उसका हाथ दबाया।

"तुमने तो कमाल कर दिया," वह बोली और उसकी नब्ज़ देखने के लिए फ़ौरन उसकी कलाई पकड़ ली।

"यह किस बात का जिक्र कर रही है?" अलेक्सेई हैरान था। तभी उसे पैरों में पहले से कुछ अधिक ऊंचाई पर दर्द महसूस हुआ और इस दर्द में पहले जैसी जलन, फटन और उचकन न थी, बल्कि एक टीस-सी थी मानो नसों को घुटने के नीचे बांध दिया गया हो। यकायक उसने कम्बल की सलवटें देखकर समझ लिया कि उसका शरीर पहले से छोटा हो गया है, और एक कौंध की तरह उसे स्मरण हो आया: चकाचौंध भरा सफ़ेद कमरा, वसीली वसील्येविच की भयंकर गुर्राहट, और मीनाकारी की हुई बालटी में हल्की-सी खटपट। "हो गया?" वह किंचित उदासीन भाव से हैरान रह गया और जबर्दस्ती मुसकुराकर नर्स से बोला:

"ऐसा लगता है कि मैं थोड़ा नाटा हो गया हूं।"

यह विकृत मुसकान थी, बहुत कुछ मुंह बनाने जैसी। क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना ने मृदुल भाव से उसके बाल सहलाये और बोली :

"फ़िक्र न करो, प्यारे, अब तुम्हें आराम महसूस होगा।"

"हां, कम बोझा ढोना होगा।"

"मत कहो। ऐसा न कहो, प्यारे। लेकिन तुमने सचमुच कमाल कर दिया : कुछ लोग चीख़ते-चिल्लाते हैं और कुछ लोगों को तो बांधना पड़ता है। लेकिन तुमने उफ़ तक न की। ओह, यह युद्ध! यह युद्ध!"

इस पर संध्याकाल के गोधूलि प्रकाश में कमिसार का क्रुद्ध स्वर गूंज उठा :

"यह मर्सिया बंद करो अब। नर्स, अब ये चिट्ठियां उसे दे दो। कुछ लोग भाग्यशाली हैं। मुझे ईर्ष्यालु बनाते हैं। देखो तो कितने पत्र आये हैं एक बार में।"

कमिसार ने मेरेस्येव को चिट्ठियों का एक बण्डल दे दिया। वे अलेक्सेई की रेजीमेंट से आये थे : उनपर भिन्न-भिन्न तारीख़ें थीं, मगर किसी कारण वे सब एक ही समय यहां आये थे। और अब कटे हुए पैर लिये वह लेटा था और ये मैत्रीपूर्ण पत्र पढ़ रहा था जो उससे उस सुदूर जीवन की कथा कह रहे थे जो दुस्साध्य श्रम, कठिनाइयों और ख़तरों से भरपूर था, जो उसे चुम्बक की तरह आकर्षित करता है, मगर जो अब सदा के लिए उससे छिन गया है। उसकी रेजीमेंट की बड़ी ख़बरों और घटनाओं के बारे में उन लोगों ने जो कुछ लिखा था, उसे वह उत्सुकतापूर्वक पढ़ रहा था : किसी को कोर-हैडक्वार्टर के एक राजनीतिक अधिकारी ने गुपचुप यह बात बतायी है कि रेजीमेंट को "लाल झण्डे का पदक" प्रदान करने की सिफ़ारिश की गयी है, इवानचूक को फ़ौरन दो पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, याशिन शिकार करने गया था और एक लोमड़ी मारकर लाया जो किसी कारण बिना पूंछ की निकली, स्तेपान रोस्तोव को फोड़ा हो गया और इस कारण लेनोच्का के साथ उसके प्रेमालाप में ख़लल पड़ गया — ये सभी ख़बरें उसके लिए समान रूप से दिलचस्प थीं। एक क्षण को उसका मस्तिष्क उसे जंगल में छिपे हुए और झीलों से घिरे हुए उस हवाई अड्डे पर ले गया जिसकी ज़मीन भरोसे की न होने के कारण उसे विमान-चालक कोसते रहते हैं, मगर वही इस समय अलेक्सेई को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ स्थल लगने लगा।

चिट्ठियों की बातें पढ़ने में वह ऐसा व्यस्त था कि वह न तो उनकी भिन्न-भिन्न तारीखें देख सका और न कमिसार को नर्स की तरफ़ आंख मारते और कानाफूसी के स्वर में यह कहते देख पाया, "तुम्हारी सारी बारबिटलों और वेरोनलों के मुक़ाबले मेरी दवा बेहतर है।" अलेक्सेई यह कभी न जान सका कि इस असाधारण परिस्थिति को पहले से भांपकर कमिसार ने उसे कुछ पत्र देने से रोक लिये थे, ताकि अपने प्यारे हवाई अड्डे से प्राप्त इन मैत्रीपूर्ण संदेशों और समाचारों को पढ़ाकर इस प्रचण्ड आघात की संवेदना को कम किया जा सके। कमिसार पुराना सिपाही था। वह जल्दबाजी और असावधानी से लिखे गये इन काग़ज़ के टुकड़ों का मूल्य जानता था। ये मोर्चे पर कभी-कभी दवाओं और रोटियों से भी अधिक मूल्यवान सिद्ध होते हैं।

अन्द्रेई देगत्यरेन्को के पत्र में, जो ख़ुद उसी की तरह सीधा-सादा और रूखा था, बारीक घुंघराली लिखावट में लिखा गया और विस्मय-सूचक चिह्नों से भरपूर, छोटा-सा पुरज़ा था। वह यों था:

"कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट! यह बहुत बुरी बात है कि तुमने अपना वायदा नहीं पूरा किया!!! रेजीमेंट में तुम्हें बड़ा याद किया जाता है, मैं झूठ नहीं कह रही हूं, वे लोग बातें करते हैं तो तुम्हारे बारे में। अभी थोड़ी देर पहले रेजीमेंटल कमांडर ने भोजनकक्ष में कहा था, 'हां, अलेक्सेई मेरेस्येव, आदमी तो वही है!!!' तुम ख़ुद जानते हो कि वह सबसे उत्तम आदमी के बारे में ही ऐसा कहता है। जल्दी लौट आओ, हर आदमी तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है!!! भोजनकक्ष की भारी-भरकम ल्योल्या मुझसे यह लिखने को कह रही है कि वह तुमसे अब ज़रा भी झगड़ा नहीं करेगी और भोजन के दूसरे दौर में तुम्हें तीन बार परोसा करेगी, फिर चाहे उसे काम से हाथ धोना पड़े। और यह कितनी बुरी बात है कि तुम अपना वायदा पूरा नहीं करते!!! तुमने दूसरों के नाम पत्र लिखे, लेकिन मुझको नहीं लिखा। इससे मुझे बड़ी ठेस लगी, और इसी लिए मैं तुम्हें अलग से चिट्ठी नहीं लिख रही हूं। कृपा करके अब ज़रूर अलग से पत्र लिखना — और बताना कि तुम्हारा क्या हाल है और अपने बारे में सारे हाल-चाल लिखना!.."

इस मनोरंजक पुरज़े के अंत में दस्तख़त थे: "मौसमी सार्जेन्ट"।

मेरेस्येव मुसकुराया मगर उसकी नज़र फिर इन शब्दों पर पड़ गयी, "जल्दी लौट आओ, हर आदमी तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है," और इसके नीचे रेखा खिंची हुई थी। वह चारपाई पर उठकर बैठ गया और इस भाव से मानो कोई अपनी जेबों की तलाशी ले रहा है और उसे पता चला है कि एक आवश्यक दस्तावेज़ खो गया है, उसने व्याकुलतापूर्वक वह स्थान टटोला जहां उसके पांव थे। उसके हाथ ख़ाली स्थान पर पड़ गये।

अब जाकर अलेक्सेई को अपनी क्षति की गम्भीरता का पता लगा। वह अपनी रेजीमेंट को, वायुसेना को, मोर्चे को अब कभी वापस न लौट सकेगा। वह हवाई जहाज़ पर सवार होकर आसमान में न उड़ सकेगा और अपने को आकाश-युद्ध में न झोंक सकेगा–कभी भी नहीं! वह अब पंगु हो गया था, अपना प्यारा कामकाज खो बैठा था, और अब उसे एक जगह बंधे बैठे रहना पड़ेगा, घर पर बोझा बन जायेगा, ज़िंदगी में कोई उसकी पूछ न करेगा। और उसके आख़िरी दिन तक यह सब यों ही चलता रहेगा।

६

आपरेशन के बाद ऐसी स्थिति में जो सबसे बुरी बात हो सकती है, उसका शिकार अलेक्सेई मेरेस्येव भी हो गया–वह अपने आप में खोया-सा रहने लगा। वह शिकायत न करता, कभी न रोता और न कभी चिड़चिड़ा पड़ता। बस, वह ख़ामोश बना रहता।

कई दिनों तक वह चित पड़ा रहा और छत की टेढ़ी-मेढ़ी दरार पर आंखें गड़ाये रहा। जब वार्ड के साथी कोई बात करते तो वह "हां" या "नहीं" में जवाब दे देता–कभी-कभी तो असंगत भाव से, और फिर ख़ामोश होकर प्लास्तर की स्याह दरार पर आंखें जमाकर इस प्रकार ताकता रह जाता, मानो वह कोई गूढ़ लेख है, जिसका रहस्य उद्घाटन कर लेने के ऊपर ही उसकी मुक्ति निर्भर हो। वह डाक्टर की हिदायतों का बड़े आज्ञाकारी ढंग से पालन करता; वह जो भी दवा निर्धारित करते उसे पी लेता, उदासीन भाव से, रुचि बिना वह भोजन कर लेता और फिर चित लेट जाता।

"ऐ, सफ़ेद दाढ़ीवाले," कमिसार ने पुकारा, "क्या सोच रहे हो?"

अलेक्सेई ने कमिसार की तरफ़ गरदन मोड़ी और ऐसी सूनी नज़रों से उसकी तरफ़ देखा मानो उसे वह दिखाई न दे रहा हो।

"तुम क्या सोच रहे हो, मैं तुम्हीं से पूछ रहा हूं।"

"कुछ नहीं।"

एक दिन वसीली वसील्येविच वार्ड में आये तो उन्होंने अपने हमेशा जैसे उद्दण्ड ढंग से पूछा :

"अच्छा, रेंगूमल! तुम ज़िंदा तो हो? क्या हाल-चाल है? तुम परम-वीर, परमवीर हो, मैं कहता हूं। तुमने तो उफ़ तक न की। अब मुझे यकीन हो गया है कि तुम चारों हाथ-पैरों के बल ज़रूर अठारह दिन तक जर्मनों से बच निकलने के लिए रेंगते रहे होंगे। तुमने जितने आलू खाये होंगे, मैंने उनसे भी ज़्यादा लोगों का आपरेशन किया है, मगर तुम जैसे आदमी का आपरेशन मैंने कभी नहीं किया," प्रोफ़ेसर ने अपने लाल-लाल खुरदरे हाथ मले, जिसके नाख़ून झर से गये थे, "तुम भौंहें क्यों चढ़ा रहे हो? मैं तो इसकी तारीफ़ कर रहा हूं, लेकिन यह भौंहें चढ़ाता है। मैं चिकित्सा विभाग का लेफ़्टीनेंट-जनरल हूं। मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि मुसकुराओ!"

बड़ी कठिमाई से अपने होंठ फैलाकर रबड़ जैसी सूनी-सूनी मुसकान लाकर मेरेस्येव ने मन ही मन कहा, "अगर मुझे मालूम होता कि आख़िर-कार यह हश्र होगा, तो मैं रेंगने का कष्ट न करता। मेरी पिस्तौल में तीन गोलियां तब भी शेष थीं।"

कमिसार ने किसी दिलचस्प आकाश-युद्ध का विवरण अख़बार से पढ़कर सुनाया। हमारे छे लड़ाकू विमानों ने बाईस जर्मन विमानों से मोर्चा लिया, उनमें से आठ मार गिराये और अपना सिर्फ़ एक खेत रहा। यह विवरण कमिसार ने इतनी रुचि के साथ पढ़कर सुनाया कि ऐसा जान पड़ता था मानो उसे यही मालूम है कि विमान-चालकों ने नहीं, उसके अपने घुड़सवार सैनिकों ने अपना जौहर दिखाया है। इस पर जो विवाद उठ खड़ा हुआ, उसमें कुकूश्किन तक ने उत्साह दिखाया और दोनों यह कल्पना करने लगे कि यह सब हुआ कैसे। मगर अलेक्सेई लेटा ही रहा और सोचता रहा, "कैसे भाग्यवान हैं वे लोग, उड़ानें भर रहे हैं और लड़ रहे हैं, मगर मैं अब कभी नहीं उड़ पाऊंगा।"

सोवियत सूचना विभाग की विज्ञप्तियां अधिकाधिक संक्षिप्त होने लगीं। सभी चिह्नों को देखकर यही पता लगता था कि अगले आक्रमण के लिए सोवियत सेना के पृष्ठ-प्रदेश में कहीं पर भारी शक्ति जमा की जा रही है। कमिसार और स्तेपान इवानोविच बड़ी गम्भीरतापूर्वक यह बहस करते कि यह आक्रमण कहां किया जायेगा और जर्मनों पर उसका प्रभाव क्या पड़ेगा। अभी कुछ दिनों पहले अलेक्सेई ने इस तरह की बहस में अगुआई की थी, मगर अब वह इस विषय को न सुनने का प्रयत्न कर रहा था। उसे भी बड़ी-बड़ी घटनाओं, भीषण और शायद निर्णयकारी लड़ाइयों के होने का आभास मिल रहा था। लेकिन उसे ख़्याल आता कि उसके साथी, और शायद कुकूश्किन भी जो तेज़ी से अच्छा होता जा रहा था, उन लड़ाइयों में हिस्सा लेंगे और इधर उसके भाग्य में शायद किसी पृष्ठ-प्रदेश में पड़े हुए सड़ते रहना बदा है, और इस मामले में कुछ किया भी नहीं जा सकता — और ये ख़्याल उसे इतने तीखे मालूम होते कि जब कमिसार अख़बार पढ़ने लगता या युद्ध के बारे में कोई बातचीत छिड़ जाती तो अलेक्सेई कम्बल से अपना सिर ढांक लेता और तकिये पर अपने कपोल रगड़ने लगता, ताकि वह न कुछ देख पाये और न कुछ सुन पाये। और पता नहीं क्यों उसके दिमाग़ में गोर्की की वह सुपरिचित पंक्ति चक्कर काटने लगती: "जो रेंगने के लिए पैदा हुए, वे उड़ नहीं सकते।"

क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना बेंत की कुछ टहनियां ले आयी थी — इस दुर्गम, युद्धकालीन, मोर्चाबन्द मास्को में ये कहां से आ गयीं, यह भगवान ही जाने — और उन्हें उसने हर एक चारपाई के पास गिलासों में सजा दिया। अरुणाभ टहनियां और फुज्जीदार सफ़ेद फूल इस ताज़गी के साथ महक रहे थे कि ऐसा लगने लगा मानो वार्ड नम्बर बयालीस में स्वयं वसन्त उतर आया हो। उस दिन हर व्यक्ति ने उल्लास और स्फूर्त्ति अनुभव की। मौन टैंकचालक तक अपनी पट्टियों के बीच कुछ अस्फुट शब्द बोल उठा।

अलेक्सेई लेटा था और उसके सामने वह दृश्य साकार हो उठा: कमीशिन में झरनों की गंदली धारा पंकिल पटरियों के किनारे उफनती हुई, ऊबड़-खाबड़ पत्थरों से जड़ी, दमकती सड़क पर बह रही है; उष्ण धरती, ताज़ी नमी और घोड़ों की लीद की गंध फैल गयी है। एक ऐसे ही दिन

वह और ओल्गा वोल्गा के ऊंचे कगार पर खड़े थे और उनके पास से नदी के अनन्त प्रसार में सहज भाव से तैरती हुई बर्फ़ बही चली जा रही थी, गम्भीर मौन के बीच, जो लवा पक्षी की घंटी जैसी, मधुर स्वर-लहरी से ही कभी-कभी भंग हो जाता था। और ऐसा महसूस होता था कि धारा के साथ बर्फ़ नहीं, वह और ओल्गा ही तैर रहे हैं और नीरवतापूर्वक तैरते-उतराते किसी तूफ़ानी, सर्पाकार नदी से मिलने बढ़े जा रहे हैं। वे वहां मौन खड़े थे, भविष्य के सुखों के सपनों में इस तरह मग्न कि उस स्थान पर जहां सामने वोल्गा का सुविस्तृत प्रसार था और वसंती पवन के झोंके उन्मुक्त रूप से बह रहे थे, उन्हें सांस लेने के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा था। वे सपने अब कभी सच न होंगे। वह उससे विमुख हो जायेगी। और अगर न भी हो, तो क्या वह इतनी क़ुर्बानी स्वीकार कर सकता है, क्या वह यह सहन कर सकता है कि जब वह ठूंठ जैसे पांवों के बल घसिटता चले तो उसके साथ बग़ल में हो वह शोख़, सुन्दर और सुकोमल युवती?.. और उसने नर्स से प्रार्थना की कि उसकी चारपाई के पास से वसंत के इन नादान दूतों को हटा दे।

बेंत की टहनियां हटा दी गयीं, लेकिन वह अपनी कटु स्मृतियों से इतनी आसानी से छुटकारा न पा सका, अगर ओल्गा को पता चला कि उसके पैर कट गये हैं तो वह क्या सोचेगी? क्या वह उसे त्याग देगी, अपने जीवन से बहिष्कृत कर देगी? नहीं! वह इस तरह की नहीं है। वह उसे ठुकरायेगी नहीं, उससे मुख न मोड़ेगी! लेकिन यह तो और भी बुरी बात होगी। उसने अपनी आंखों के सामने चित्र बनाया कि अपने उदात्त हृदय की प्रेरणावश ओल्गा ने उससे विवाह कर लिया है, एक पंगु से विवाह कर लिया है और उसकी ख़ातिर उसने इंजीनियरी की शिक्षा प्राप्त करने का सपना त्याग दिया है, और स्वयं अपना, अपने पंगु पति का, और क्या जाने, शायद बच्चों तक का भरण-पोषण करने के लिए दफ़्तर के कोल्हू में अपने आपको जोत चुकी है।

इतनी क़ुर्बानी स्वीकार करने का क्या उसको अधिकार है? वे अभी एक दूसरे से बंधे नहीं हैं, उनकी सिर्फ़ सगाई हुई है, लेकिन वे अभी पति-पत्नी नहीं हैं। वह उसे प्यार करता है, दिल से प्यार करता है, और इसलिए उसने निश्चय किया कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं

है, उसे ख़ुद ही फ़ौरन, एकबारगी, आपसी सम्बन्ध तोड़ लेना चाहिए, ताकि वह उसे न केवल भार जैसा भविष्य बनाने से बचा सके, वरन् अंतर्द्वंद्व की यातना से भी मुक्त कर सके।

लेकिन इसी समय पत्र आ पहुंचे जिनपर कमीशिन की डाक मुहर थी और इससे उसके ये सारे संकल्प अस्त-व्यस्त हो गये। एक पत्र ओल्गा का था और हर पंक्ति में चिन्ता झलकती थी। मानो किसी विपत्ति की भविष्य-वाणी से व्यथित होकर उसने लिखा था कि उसे चाहे कुछ हो जाये, वह सदा उसी के साथ रहेगी; वह सिर्फ़ उसी के लिए जीवित है, हर क्षण वह अलेक्सेई का ही चिन्तन करती है। इसी चिन्तन से उसे युद्ध-काल की सारी कठिनाइयां सहने, मिल की निद्राविहीन रातें काटने, छुट्टी के दिनों और रातों में खाइयां और टैंक-रोक खोहें खोदने, और क्यों छिपाया जाये, अधभूखे पेट ज़िंदगी बिताने में सहायता मिलती है। "तुमने जो अंतिम फ़ोटो लिया था–कुत्ते के साथ पेड़ के नीचे बैठे हुए और मुसकुराते हुए–वह सदा मेरे साथ रहता है। मैंने उसे मां के लाकेट में रख लिया है और सदा गले में पहने रहती हूं। जब मैं अनमना महसूस करती हूं तो मैं लाकेट खोलती हूं और तुम्हें देख लेती हूं... मेरा विश्वास है कि जब तक हम एक दूसरे को प्यार करते रहेंगे, तब तक किसी चीज़ से भय खाने की आवश्यकता नहीं।" उसने यह भी लिखा था कि इधर कुछ दिनों से अलेक्सेई की मां बड़ी चिन्तित रहती है और उसने फिर अनुरोध किया था कि बुढ़िया को और जल्दी-जल्दी पत्र लिखा करो, लेकिन कोई बुरी ख़बर देकर उसे दुखी मत करना।

घर से पत्र प्राप्त करना सदा आनन्द का अवसर होता था। इसी से उसके हृदय को लड़ाई के मोर्चे की ज़िंदगी की कठिनाइयों के बीच एक दीर्घ काल तक शान्ति प्राप्त होती रही। लेकिन अब, पहली बार, उसे कोई आनन्द नहीं प्राप्त हुआ। उनसे उसका हृदय और बोझिल हो गया और यहीं उसने ऐसी ग़लती कर डाली जिससे उसे बाद में इतनी यातना सहन करनी पड़ी: वह घर को यह लिखने का साहस न कर सका कि उसके पैर काट दिये गये हैं।

वह अपने दुर्भाग्य के विषय में विस्तारपूर्वक किसी को लिख सका तो मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की उस लड़की को। वे मुश्किल से ही परिचित थे

और इसलिए उसको इन चीज़ों के बारे में लिखना आसान था। उसका नाम न जानने के कारण उसने पत्र पर यों पता लिखा: "फ़ील्ड पोस्ट आफ़िस – फ़लां-फलां, मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र, 'मौसमी सार्जेन्ट' के नाम।" वह जानता था कि मोर्चे पर चिट्ठियों को क्या महत्व दिया जाता है, इसलिए देर-सबेर इस अद्भुत पते पर भी यह पत्र पहुंच ही जायेगा। और अगर न भी पहुंचे, तो कोई बात नहीं; वह सिर्फ़ अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहता था।

अस्पताल में अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपने दिन बड़े कटु चिन्तन में काटे। और यद्यपि उसके फ़ौलादी जिस्म ने कुशलतापूर्वक किये गये अंग-विच्छेद को आसानी से सहन कर लिया था और घाव भी जल्दी भर गये थे, फिर भी वह स्पष्ट रूप में निर्बलतर हो गया था और इसकी रोकथाम के लिए तमाम उपाय किये जाने के बावजूद हर व्यक्ति देख रहा था कि वह घुलता जा रहा है और दिन प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है।

७

और बाहर वसंत लहरा रहा था।

वह इस वार्ड नम्बर बयालीस में, इस कमरे में, भी घुस आया था जिसमें आइडोफ़ार्म की गंध छायी रहती थी। वह खिड़की से होकर आया और अपने साथ लाया पिघलती हुई बर्फ़ की नम सांस, गौरैयों की उत्तेजनापूर्ण चहक, मोड़ पर घूमती हुई ट्रामों की गूंजती हुई घरघराहट, बर्फ़ से मुक्त तारकोली सड़क पर पैरों की प्रतिध्वनि और शाम को किसी अकार्डियन की मंद-मंद एकरस स्वर-लहरी। वह बगल की खिड़की से झांक उठा, जिसमें से पोपलर के वृक्ष की धूप से आलोकित एक शाखा दिखाई देती थी जिस पर पीली-सी गोंद से ढंकी लम्बी-लम्बी कलियां फूल रही थीं। वसंत आया तो क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना के पीले-से, उदार चेहरे पर सुनहरी झाइयां बनकर, जो हर तरह के पाउडर की अवहेलना कर देती थीं और नर्स को कोई कम परेशान न करती थीं। वह खिड़कियों के बाहर टीन से ढंकी देहरी पर नमी की भारी बूंदें टपकाकर उल्लासपूर्वक ताल देता हुआ सबका ध्यान बराबर आकर्षित करता।

सदा की भांति वसंत ने दिलों को मुलायम कर दिया और सपनों को उकसा दिया।

"काश! ऐसे में किसी वनस्थली में बंदूक़ लिए बैठे होते तो कितना मज़ा आता! क्यों स्तेपान इवानोविच?" लालसापूर्वक कमिसार ने कल्पना की उड़ान भरी, "भोर के समय झोंपड़ी में बैठे हुए किसी दांव का इन्तज़ार करना... इससे भी मजेदार कोई बात हो सकती है? समझे—गुलाबी सुबह, खुनकी और थोड़ा-सा पाला, और तुम वहां बैठे हो। यकायक—गिल-गिल, और पंखों की फड़फड़ाहट—फर-फर-फर... और ठीक तुम्हारे सिर पर किसी डाल पर पंछी आ बैठे—पूंछ पंख की तरह फैलाये हुए—और फिर दूसरा आये और तीसरा..."

स्तेपान इवानोविच ने एक दीर्घ निश्वास खींचा और फिर सड़ोपने की आवाज़ की, मानो उसके मुंह में पानी भर आया हो, मगर कमिसार अपने स्वप्न में मगन रहा:

"और फिर तुम आग जलाओ, बिछावन बिछा लो, थोड़ी-सी बढ़िया, ख़ुशबूदार चाय बनाओ जिसमें धुएं जैसा स्वाद हो और फिर शरीर के पुट्ठों को गरम करने के लिए वोदका का एक घूंट भर लो, एह? और इतने हार्दिक परिश्रम के बाद कहीं..."

"ओह, इसकी चर्चा मत करो, कामरेड कमिसार!" स्तेपान इवानोविच ने जवाब दिया, "तुम्हें पता है कि इस मौसम में हमारी तरफ़ कैसे शिकार मिलते हैं? पाइक मछलियां! तुम शायद यक़ीन न करो, मगर है सच। क्या तुमने नहीं सुना इसके बारे में? बड़ा मज़ा रहता है और हां, कुछ पैसा भी कमाया जा सकता है। झील पर ज्यों ही बर्फ़ टूटने लगती है और नदियां लबालब बहने लगती हैं, तो किनारों की तरफ़, ऊंची ऊंची घास और काई की तरफ़, जिसे वसंती पानी ढांके रहता है, वे मछलियां उमड़ पड़ती हैं। वे घास में घुस जाती हैं और अंडे देती हैं। बस, ज़रा किनारे-किनारे चले जाओ और जहां तुम्हें कोई चीज़ डूबे हुए लट्ठों जैसी दिखाई दे, तो समझ लो, वहीं मछलियां हैं! यहां दिखाओ बंदूक़ के करतब। कभी-कभी तुम्हें इतनी मछलियां मिलेंगी कि तुम इन सबको अपने थैले में भी न भर पाओगे, मैं शर्त्त बदता हूं! वरना..."

और इसके बाद शिकारियों के संस्मरण शुरू हो गये। अनजाने ही बातचीत युद्ध पर आ गयी और वे अटकल लगाने लगे कि इस समय डिवीजन में या कम्पनी में क्या हो रहा होगा, जाड़े में बनायी गयी खोहें "रोने लगी" होंगी या नहीं, या क़िलेबन्दी "खिसकने" लगी है या नहीं और फ़ासिस्टों का क्या हाल होगा, क्योंकि पश्चिम में तो वे कोलतार की पक्की सड़कों पर चलने के ही आदी रहे हैं।

भोजन के बाद उन्होंने चिड़ियों को चुग्गा दिया। इस मनोरंजन का आविष्कार स्तेपान इवानोविच ने किया था। उसके लिए निठल्ले बैठना सम्भव नहीं था और वह अपने कमज़ोर और बेचैन हाथों से कुछ न कुछ किया ही करता था। एक दिन उसने सुझाव दिया कि भोजन के बाद बचे हुए टुकड़ों को चिड़ियों के वास्ते खिड़की की देहरी पर बिखेर दिया जाये। यह भी एक रिवाज बन गया और अब सिर्फ़ बचे-खुचे भोजन को ही वे खिड़की से बाहर न फेंकते, बल्कि वे जानबूझकर रोटियों के टुकड़े छोड़ देते और उन्हें मसल कर चूरा बना लेते ताकि, जैसा कि स्तेपान इवानोविच ने अभिव्यक्त किया था, गौरैयों का पूरा गिरोह "राशन की सूची में" शामिल हो सके। वे छोटे-छोटे, शोर मचानेवाले जीव किसी बड़े टुकड़े पर चोंच मारते, चहचहाते और आपस में झगड़ते, और खिड़की की देहरी साफ़ करने के बाद पोपलर की शाखाओं पर आसन जमा लेते और चोंच से अपने पंख साफ़ करते और फिर पंख झाड़कर अपने-अपने कारोबार संभालने उड़ जाते। यह सब देखकर वार्ड के निवासियों को असीम आनन्द प्राप्त होता। ये मरीज़ कुछ चिड़ियों को पहचानने लगे और कुछेक को उन्होंने नाम भी दे दिये। इनमें सबसे प्रिय थी एक पूंछ-कटी, लापरवाह, फुर्तीली चिड़िया जिसने शायद अपनी झगड़ालू आदत की वजह से अपनी पूंछ खो दी थी। स्तेपान इवानोविच ने इसका नाम 'टामी गनर' रख दिया था।

यह दिलचस्प बात है कि इस शोरगुल मचानेवाले जीवों के साथ मनोरंजन का कार्यक्रम ही था कि जिसने टैंक-चालक को मनहूसियत से उबार लिया। जब उसने पहली बार स्तेपान इवानोविच को बैसाखियों के सहारे उठते और खुली खिड़की तक पहुंचने के लिए हीटिंग नलियों के ऊपर चढ़ने की कोशिश करने में लगभग दुहरे हो जाते देखा, तो वह उसे बड़ी

उदासीनता और बिना किसी तरह की दिलचस्पी के ताकता रहा। लेकिन अगले दिन जब गौरैयां उड़ती हुई खिड़की पर आयीं, तो वह इन नन्हें-से चंचल जीवों का दृश्य भली भांति देखने के लिए चारपाई पर उठकर बैठ तक गया, हालांकि वह दर्द से तिलमिला उठा। अगले दिन तो उसने अपने भोजन में से रोटी का अच्छा-ख़ासा टुकड़ा बचा लिया—स्पष्ट ही यह सोचकर कि उन उपद्रवी भिक्षुकों को अस्पताली भोजन के ये टुकड़े विशेष रूप से पसंद आयेंगे। एक दिन 'टामी गनर' नहीं आयी और कुकूश्किन ने अनुमान लगाया कि किसी बिल्ली ने उसे चट कर लिया है, और यह बात उसे जंच गयी। उदासीन टैंक-चालक इसपर आग-बबूला हो गया और कुकूश्किन को "झक्की" कह बैठा, और अगले दिन जब कटी पूंछ वाली गौरैया फिर आयी, फिर चहक उठी और खिड़की की देहरी पर झगड़ा मचाने लगी—उसी तरह विजयी भाव से अपनी बेहयाई भरी आंखें मटकाते हुए—तो टैंक-चालक का अट्टहास फूट पड़ा। कई महीनों बाद उस दिन वह पहली बार हंसा था।

कुछ दिनों बाद ग्वोज़्देव पूरी तरह खिल उठा। सभी चकित थे कि वह प्रफुल्लचित्त, बातूनी और मिलनसार व्यक्ति निकला। वास्तव में, यह भी कमिसार की ही करनी थी, क्योंकि जैसा स्तेपान इवानोविच ने कहा, वह हर दिल की कुंजी खोज लेने में माहिर था। और यह काम उसने इस प्रकार किया।

वार्ड नम्बर बयालीस में सबसे आनन्द का समय वह था, जब क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना चेहरे पर रहस्य-भाव धारण किये और हाथ पीछे बांधे हुए अपनी हर्षोत्फुल्ल दृष्टि से वार्ड के सभी निवासियों को आंकते हुए पूछने लगी:

"बोलो, आज कौन नाच दिखायेगा?"

इसका अर्थ था कि डाक आ गयी है। भाग्यशाली प्राप्तकर्त्ताओं को उनकी चिट्ठियां देने से पहले क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना उन्हें नाच की नक़ल के रूप में, चाहे थोड़ा ही हो, कुछ न कुछ हाथ-पैर हिलाने के लिए मजबूर करती थी। अक्सर कमिसार ही होता था, जिसे यह करना पड़ता था, क्योंकि कभी-कभी उसे एक बार में दस चिट्ठियां तक प्राप्त होती थीं। उसे अपनी डिवीजन से, पृष्ठ-प्रदेश से, अपने साथी अफ़सरों से, सैनिकों से और

अफ़सरों की पत्नियों से चिट्ठियां प्राप्त होतीं, जिनमें या तो बीते दिनों की याद दिलायी जाती या उससे प्रार्थना की जाती कि वह पतियों को ज़रा "संभाले" क्योंकि वे हाथ से बाहर हो गये हैं, अपने साथी अफ़सरों की विधवा पत्नियों से उसे पत्र प्राप्त होते जो अपने मामलों में सलाह या सहायता मांगतीं, और उसे क़ज़ाख़स्तान की एक युवती पायोनियर तक से पत्र मिलते, जो लड़ाई में मारे गये एक रेजीमेंटल कमांडर की पुत्री है और जिसका नाम उसे कभी याद नहीं आ सका। वह इन सब पत्रों को गहनतम दिलचस्पी के साथ पढ़ता और सावधानी से प्रत्येक का उत्तर लिखता; वह उचित अधिकारियों को लिखकर कमांडर फ़लां-फ़लां की पत्नी की सहायता करने की प्रार्थना करता, उस पति को लिखता जो "हाथ से बाहर निकल गया है," और उसकी अच्छी ख़बर लेता, वह किसी मकान-मैनेजर को लिखता और धमकाता कि अगर फ़लां सैनिक के, जो मोर्चे पर है, परिवार के कमरे में उसने चूल्हा न बनवाया तो वह ख़ुद आ धमकेगा और "सिर कलम कर देगा," और वह क़ज़ाख़स्तान की उस लड़की को भी लिखता, जिसका नाम उच्चारण की क्लिष्टता के कारण उसे याद भी नहीं रहता और उसे दूसरी तिमाही परीक्षा में व्याकरण में बुरे अंक प्राप्त करने के कारण झिड़कियां देता।

स्तेपान इवानोविच भी मोर्चे और पृष्ठ-प्रदेश के लोगों के साथ बड़ा सजीव पत्र-व्यवहार करता। उसे अपने बेटों से पत्र मिलते जो ख़ुद भी बड़े सफल स्नाइपर थे, और उसे अपनी बेटी से पत्र प्राप्त होते जो अपने सामूहिक खेत में एक टीम की नेत्री थी और उसमें तमाम रिश्तेदारों और परिचितों की दुआ-सलाम लिखी होती और उसको सूचना दी जाती कि हालांकि सामूहिक खेत ने और भी लोगों को नये निर्माण-कार्यों के लिए भेज दिया है, फिर भी फ़लां-फ़लां योजनाएं इतने फ़ीसदी अधिक पूरी हो गयी हैं। ये पत्र जिस क्षण मिलते स्तेपान इवानोविच उन्हें ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाता, और सारे वार्ड को, सारी परिचारिकाओं, नर्सों और हाउस सर्जन जैसे नीरस, चिड़चिड़े व्यक्ति को भी अपने परिवार के बारे में सभी समाचारों से नियमित रूप से सूचित रखता।

ग़ैर मिलनसार कुकूश्किन तक को, जो सारी दुनिया से बैर मोल लिये मालूम होता था, अपनी मां से पत्र मिलते जो बरनौल में कहीं रहती थी।

वह नर्स के हाथों से पत्र छीन लेता और तब तक इंतजार करता जब तक सब सो न जाते और फिर एक एक शब्द फुसफुसाते हुए वह उसे मन ही मन पढ़ डालता। उन क्षणों में उसकी कर्कश आकृति कोमल पड़ जाती और उसके चेहरे पर ऐसा मृदुल और गम्भीर भाव आ जाता जो उसकी प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध था। वह अपनी मां को, जो गांव की डाक्टरनी है, बहुत अधिक प्यार करता था, मगर पता नहीं क्यों, वह इस मनोभाव को प्रगट करने में झेंपता था, उसे छिपाने का भरसक प्रयत्न करता था।

टैंक-चालक ही एक ऐसा व्यक्ति था जो हंसी-ख़ुशी की उन घड़ियों का ज़रा मजा न लेता, जब वार्ड में समाचारों का सजीव आदान-प्रदान होने लगता था। वह और भी खिन्न हो उठता, दीवार की तरफ़ मुंह फेर लेता तथा सिर पर कम्बल खींच लेता। उसको पत्र लिखनेवाला कोई था ही नहीं। वार्ड में जितनी अधिक संख्या में चिट्ठियां आतीं, उतना ही अधिक उसको अकेलापन महसूस होता। लेकिन एक दिन क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना दरवाज़े पर प्रगट हुई तो उसका चेहरा हमेशा से भी अधिक प्रफुल्ल था। कमिसार की तरफ़ से आंखें दूर रखने की कोशिश करते हुए उसने शीघ्रतापूर्वक कहा :

"अच्छा तो, आज कौन नाचनेवाला है?"

उसने टैंक-चालक की चारपाई पर नज़र डाली और उसके उदार चेहरे पर व्यापक मुस्कान की आभा फैल गयी। सभी ने अनुभव किया कि कोई असाधारण बात हो गयी है। वार्ड में उत्सुकतापूर्ण सन्नाटा खिंच गया :

"लेफ़्टीनेंट ग्वोज़्देव, आज आपके नाचने की बारी है। अच्छा, अब उठ तो बैठो।"

मेरेस्येव ने देखा कि ग्वोज़्देव चौंक उठा और उसने तेज़ी से गर्दन मोड़ी, और उसने पट्टियों की दरारों में उसकी आंखें कौंधती देखीं। लेकिन ग्वोज़्देव ने तुरन्त अपने को संभाल लिया और कांपती हुई आवाज़ में बोला, जिसमें उसने उपेक्षा का भाव भरने का प्रयत्न किया :

"कोई ग़लती हो गयी है। अगले वार्ड में कोई और ग्वोज़्देव होगा," लेकिन उसकी आंखें उत्सुकता से लालसापूर्वक उन तीन चिट्ठियों को निहार रही थीं, जिन्हें झण्डे की तरह नर्स ऊंचा उठाये हुए थी।

"नहीं! कोई ग़लती नहीं है," नर्स ने कहा। "देखो! लेफ़्टीनेंट जी० एम० ग्वोज़्देव और वार्ड का नम्बर भी लिखा है: बयालीस! अब बोलो?"

पट्टियों में लिपटा हुआ एक हाथ कम्बल के नीचे से झपटा। जब लेफ़्टीनेंट ने एक पत्र को मुंह से लगाया और वेगपूर्वक लिफ़ाफ़े को दांत से फाड़कर खोल लिया तो वह हाथ कांप रहा था। उत्तेजना से उसकी आंखें दमकने लगीं। आश्चर्य था: तीन युवती मित्रों ने, जो एक ही विश्वविद्यालय में डाक्टरी की एक ही कक्षा की छात्राएं थीं, भिन्न-भिन्न लिखावट और भिन्न-भिन्न भाषा में लगभग एक ही बात लिखी थी। यह समाचार सुनकर कि वीर टैंक-चालक ग्वोज़्देव घायल स्थिति में मास्को में पड़ा है, उन्होंने उसके साथ पत्र-व्यवहार करने का फ़ैसला किया था। उन्होंने लिखा था कि अगर उनका आग्रह लेफ़्टीनेंट को बुरा न लगे तो क्या वह उन्हें पत्र न लिखेगा और यह न बतायेगा कि उसकी हालत कैसी चल रही है: और उनमें से एक ने, जिसने अपना नाम अन्यूता लिखा था, पूछा था कि क्या वह किसी रूप में उसकी सहायता कर सकती है, क्या उसे अच्छी किताबें चाहिए, और अगर उसे किसी भी चीज़ की आवश्यकता हो तो निस्संकोच भाव से उसे सूचित कर दे।

सारे दिन लेफ़्टीनेंट उन्हीं पत्रों को बार-बार उलटा-पलटता रहा, उनके पते पढ़ता रहा और लिखावट की परीक्षा करता रहा। वास्तव में वह जानता था कि इस तरह का पत्र-व्यवहार तो चलता ही रहता है, और एक बार स्वयं उसने भी एक अपरिचित से पत्र-व्यवहार चलाया था जिसके हाथ का लिखा स्नेह-संदेश उसे एक ऊनी दस्तानों के जोड़े में पड़ा मिला था, जो उसे अवकाशोपहार के रूप में प्राप्त हुए थे। लेकिन जब उसके साथ पत्र-व्यवहार करनेवाली ने पुरमज़ाक़ चिट्ठी के साथ स्वयं अपना–वह एक प्रौढ़ा थी–और अपने चार बच्चों का चित्र भेज दिया था तो उसके बाद वह पत्र-व्यवहार अपने आप समाप्त हो गया था। लेकिन यह पत्र-व्यवहार भिन्न प्रकार का था। उसे हैरानी और अचरज सिर्फ़ इस बात से था कि इन पत्रों का आगमन अप्रत्याशित था, और वे एक ही साथ आये थे। वह एक और बात भी नहीं समझ पा रहा था: इन मेडिकल छात्राओं को उसके युद्ध-सम्बन्धी कामों के बारे में जानकारी कैसे प्राप्त हुई? सारा वार्ड इसपर आश्चर्य प्रकट कर रहा था और सबसे अधिक वह कमिसार। लेकिन जिस

महत्त्वपूर्ण ढंग से स्तेपान इवानोविच और नर्स के साथ कमिसार आंखें मिला रहा था, उन नज़रों को मेरेस्येव ने पकड़ लिया और वह समझ गया कि इसकी जड़ में कमिसार ही है।

जो भी हो, अगले दिन सुबह ग्वोज़्देव ने कमिसार से कुछ काग़ज़ मांगा और इजाज़त का इंतज़ार किये बिना उसने अपने दाहिने हाथ की पट्टियां खोल डालीं और शाम तक लिखता रहा – कभी पंक्तियां काट देता, कभी काग़ज़ मरोड़कर फेंक देता और कभी फिर नयी पंक्ति लिखता और इस प्रकार, अंततः, उसने अपने अपरिचित पत्र-याचकों के नाम उत्तर रच ही डाले।

दो लड़कियों ने पत्र लिखना शीघ्र ही बंद कर दिया, किन्तु सहृदय अन्यूता कितना ही लिखती रही। ग्वोज़्देव खुले दिल का आदमी था और अब सारे वार्ड को मालूम होने लगा कि विश्वविद्यालय के चिकित्सा विभाग की तृतीय वर्ष की कक्षा में क्या हो रहा है, प्राणिविज्ञान कितना रोमांचक विषय है, लेकिन ऑर्गेनिक रसायन विज्ञान कितना नीरस विषय है, प्रोफ़ेसर की आवाज़ कितनी बढ़िया है और कितनी अच्छी तरह वह अपना विषय प्रस्तुत करता है, फ़लां-फ़लां अध्यापक कितना मनहूस है, पिछले रविवार को स्वेच्छित सहायता कार्य करते हुए छात्र-छात्राओं ने बोझा ढोनेवाली ट्रामों पर कितना काठ लादा था, अस्पताल में काम के साथ अध्ययन का संयोग स्थापित करना कितना कठिन है, और एक मूर्ख छात्रा, जो तनिक भी भली लड़की नहीं थी, अपने आप पर कितना "घमंड" करती थी।

ग्वोज़्देव सिर्फ़ बातचीत ही नहीं करने लगा। वह मानो खिल उठा और शीघ्र ही चंगा भी होने लगा।

कुकूश्किन ने अपनी कमठी खुलवा ली थी। स्तेपान इवानोविच बैसाखी के बिना चलना सीख रहा था और अब काफ़ी सीधे खड़े होकर चलने लगा था। अब सारा दिन खिड़की के पास बिताने लगा और निरीक्षण करने लगा कि 'विस्तृत विश्व' में कहां क्या हो रहा है। सिर्फ़ जैसे-जैसे दिन गुज़रते जाते मेरेस्येव और कमिसार की हालत बिगड़ती जाती। कमिसार की हालत विशेष ख़राब हो रही थी। अब वह अपना प्रातःकालीन व्यायाम भी न कर पाता। उसके शरीर पर मनहूस पीली-सी लगभग पारदर्शी सूजन अधिकाधिक

उभरने लगी। वह अपनी बाहें कठिनाई से ही मोड़ पाता और अब वह पेंसिल या चम्मच न पकड़ पाता।

सुबह वार्ड की परिचारिका ने उसे नहलाया और खिलाया, और यह समझना सहज था कि उसे जो बात सबसे अधिक खिन्न करती और यंत्रणा देती, वह सख़्त दर्द न था, यह असहायता थी। फिर भी वह उदास न रहता। उसका कंठ पहले की ही तरह उल्लासपूर्वक गूंज उठता, पहले जैसी ही ज़िंदादिली से वह अख़बार पढ़कर सुनाता और जर्मन भाषा का अध्ययन भी जारी रखता रहा; लेकिन पढ़ते समय अब किताब वह स्वयं न पकड़ पाता, इसलिए स्तेपान इवानोविच ने किताब रखने के लिए तार की चौकी बना दी और उसके सिरहाने रख दी, और उसके लिए पन्ने पलटते जाने के लिए वह स्वयं सिरहाने आ बैठता। सुबह अख़बार आने से पहले कमिसार उत्सुकतापूर्वक नर्स से पूछता कि आख़िरी विज्ञप्ति में क्या ख़बर थी, रेडियो पर क्या समाचार आया है, मौसम कैसा है और मास्को में क्या देखा-सुना। उसने रेडियो का एक एक्सटेंशन अपने सिरहाने लगवाने की इजाजत वसीली वसील्येविच से ले ली थी।

ऐसा लगता था कि उसका शरीर जितना दुर्बल होता जाता था, उतना ही उसका मनोबल सशक्त होता जा रहा था। उसे जो अनगिनत पत्र प्राप्त होते, उन्हें वह उसी अमंद दिलचस्पी के साथ पढ़ता और बारी-बारी से कुकूश्किन और ग्वोज़देव को उनके जवाब लिखाता। एक दिन किसी चिकित्सा के बाद मेरेस्येव ऊंघ रहा था, तभी वह कमिसार की मद्धिम आवाज़ की गरजना से चौंक गया।

उसके सिरहाने तारों से बनी चौकी पर उसके डिवीजन के अख़बार की एक प्रति पड़ी थी, जिसपर यद्यपि इस आदेश की मुहर लगी थी: "ले जाने के लिए नहीं है," फिर भी कोई व्यक्ति उसे बराबर कमिसार के पास भेज देता था।

"रक्षात्मक रहते-रहते क्या वे लोग पागल हो गये है या कुछ और?" वह गरज उठा, "क्वत्सोव नौकरशाह बन गया? फ़ौज का सर्वोत्तम पशुचिकित्सक और नौकरशाह? ग्रिगोरी! लो, फ़ौरन लिख डालो।"

और उसने ग्वोज़देव से फ़ौजी कौंसिल के एक सदस्य के नाम एक क्रोधपूर्ण पत्र लिखवाया और अनुरोध किया कि इस "अख़बारवाले" पर

लगाम लगायी जाये जिसने एक बढ़िया और उत्साही अफ़सर पर अनुचित आक्षेप लगाये। यह पत्र डाक में रवाना करने के लिए नर्स को देने के बाद भी वह "ऐसे पत्रकारों" को झिड़कता रहा, और एक ऐसे व्यक्ति के मुंह से, जो तकिये पर अपना सिर भी नहीं घुमा पाता था, इतने भावावेशपूर्ण शब्द सुनकर हैरानी होती थी।

उस शाम एक और भी विलक्षण घटना हुई। उन नीरव घड़ियों में, जब कमरे के कोनों में साये गहरे होने लगे थे और अभी रोशनियां जलायी न गयी थीं, तब स्तेपान इवानोविच खिड़की के पास बैठा, विचारों में खोया हुआ दूर किनारे की ओर हेर रहा था। जीन के लबादे पहने हुए कुछ औरतें नदी पर बर्फ़ काट रही थीं। वे बर्फ़ में चौकोर, स्याह छेद के किनारों पर लोहे की छड़ें लगाकर बर्फ़ की बड़ी-बड़ी पट्टियां उखाड़ रही थीं, इन पट्टियों को वे छड़ों की दो एक चोट से तोड़ लेती थीं और फिर अंकुड़ों की सहायता से इन टुकड़ों को लकड़ी के तख़्तों के ऊपर घसीटकर पानी से बाहर निकाल लेती थीं। बर्फ़ के ये टुकड़े – नीचे की तरफ़ हरे-हरे पारदर्शी, और ऊपर की तरफ़ पीले और कटे-फटे – पांतों में रखे थे। बर्फ़ पर चलनेवाली स्लेज गाड़ियों की एक लम्बी क़तार, एक दूसरे से बंधी हुई, नदी के किनारे किनारे उस जगह आ रही थी, जहां बर्फ़ कट रही थी। एक बूढ़ा जो कनटोपी, रूई भरी पतलून और उसी तरह का कोट कमर पर पेटी कसे पहने हुए था, जिससे एक कुल्हाड़ी लटक रही थी, घोड़ों को उस जगह ले जा रहा था जहां बर्फ़ पड़ी थी और औरतें हिम-खण्डों को स्लेजों पर लाद रही थीं।

स्तेपान इवानोविच की अनुभवी आंखों ने उसे बता दिया कि किसी सामूहिक खेती की टीम द्वारा काम हो रहा है, मगर बुरी तरह संगठित किया गया था। काम पर बहुत ज्यादा लोग जुटे हुए थे और वे सिर्फ़ एक दूसरे के रास्ते में ही आते थे। उसके व्यावहारिक मस्तिष्क में काम की एक योजना पैदा हो गयी। उसने मन ही मन टीम को तीन दलों में बांटा – जो बर्फ़ के टुकड़ों को किसी कठिनाई बिना पानी से बाहर निकाल सकते थे। फिर उसने हर दल के लिए एक ख़ास हिस्सा निश्चित किया और तय किया कि इस काम के लिए पूरी टीम को एक मुश्त रक़म न दी जाये, बल्कि हर दल को अलग-अलग – वह जितने बर्फ़ खण्ड ढोये, उसके अनुसार – मेहनताना

दिया जाये। उसने टीम में एक गोल चेहरे, गुलाबी कपोलोंवाली फुर्तीली औरत देखी और मन ही मन उसे सुझाव दिया कि वह इन दलों के बीच समाजवादी होड़ की पहलक़दमी करे... वह अपने विचारों में ऐसा लीन था कि वह एक घोड़े को बर्फ़ के छेद के इतने क़रीब जाते न देख पाया कि उस घोड़े के पिछले पैर फिसल गये और वह घोड़ा पानी में गिर गया। स्लेज के बोझ के कारण घोड़ा रहा तो सतह के ऊपर, मगर धारा की तेज़ी उसे बर्फ़ के नीचे खींच रही थी। कुल्हाड़ी धारी बूढ़ा असहाय भाव से चीख़ने-चिल्लाने लगा, वह कभी स्लेज की पाटियों पर ज़ोर लगाता और कभी घोड़े की लगाम खींचता।

स्तेपान इवानोविच विस्मित-सा सांस रोके रह गया और पूरी आवाज़ भरकर चिल्ला उठा, "घोड़ा डूब रहा है!"

कमिसार अविश्वसनीय ज़ोर लगाकर कुहनी के बल उठ बैठा, यद्यपि दर्द से उसका चेहरा स्याह पड़ गया, और खिड़की की देहरी पर वक्ष टेककर बाहर देखने लगा और फुसफुस स्वर में बुदबुदा उठा, "मूर्ख! इतना भी समझ में नहीं आता? रासें!.. उसे रासें काट देना चाहिए। तब घोड़ा अपने आप निकल आयेगा। ओह! वह बेचारे जानवर को मार ही डालेगा!"

फूहड़ ढंग से स्तेपान इवानोविच खिड़की की देहरी पर चढ़ गया। घोड़ा डूबा जा रहा था। गंदा पानी उसके ऊपर तक छपछपाने लगा था, लेकिन फिर भी वह बाहर निकलने के लिए जबर्दस्त ज़ोर लगा रहा था और अपने नाल लगे अगले खुरों को उसने बर्फ़ के किनारे पर धंसा दिया था।

"रासें काट दो!" कमिसार चिल्लाया, मानो नदी तट का बूढ़ा उसकी आवाज़ सुन ही लेगा।

स्तेपान इवानोविच ने अपने हाथों का भोंपू बनाया और रोशनदान में से चीख़कर उसने कमिसार की सलाह सड़क के पार भेजी, "ए! बुढ़ऊ! रासें काट दो। तुम्हारी कमर की पेटी में कुल्हाड़ी बंधी है—रासें काट दो और घोड़े को छोड़ दो!"

बूढ़े ने यह आवाज़ सुन ली जो उसे किसी आकाशवाणी की सलाह मालूम हुई। उसने अपनी पेटी से कुल्हाड़ी खींच ली और दो चोटों से रासें काट दीं। जुए से छुटकारा पाकर घोड़ा फ़ौरन बर्फ़ पर चढ़ गया, बर्फ़ में

बने छेद से दूर जा खड़ा हुआ और हांफता हुआ कुत्ते की भांति कांपता रहा।

"यह क्या हो रहा है?" इसी क्षण एक आवाज़ ने सवाल किया।

वसीली वसील्येविच अपनी बटन-खुली पोशाक में और सिर पर चपक कर बैठनेवाली टोपी पहने बिना, जिसे वे अक्सर पहने रहते थे, दरवाज़े पर खड़े थे। वे आग-बबूला हो उठे, पैर पटकने लगे और कोई सफ़ाई सुनने के लिए तैयार न थे। वे बोले कि वार्ड भर पागल हो गया है; वे एक-एक को यहां से जहन्नुम भेज देंगे, और बिना यह पता लगाये कि क्या हुआ है, वे हांफते हुए और हर एक को झिड़कते हुए बाहर निकल गये। थोड़ी देर बाद क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना ने प्रवेश किया–चेहरा आंसुओं से तर था और वह बड़ी ही परेशान दिखाई दे रही थी। वसीली वसील्येविच ने उसे अभी बड़ी फटकार सुनायी थी, मगर उसकी नज़र कमिसार के स्याह और निर्जीव चेहरे पर पड़ी, जो आंखें बंद किये गतिहीन लेटा हुआ था, और वह उसकी तरफ़ दौड़ पड़ी।

शाम को कमिसार की हालत बहुत बुरी हो गयी। उन्होंने उसे कैम्फ़र का इंजेक्शन दिया, ऑक्सीजन दिया, मगर वह बड़ी देर तक अचेत पड़ा रहा। मगर जब उसे होश आया तो उसने क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना की तरफ़ देखकर मुसकुराने की कोशिश की जो ऑक्सीजन का थैला लिये उसके ऊपर झुकी खड़ी थी, और मज़ाक़ करने लगा।

"नर्स, फ़िक्र न करना, मैं जहन्नुम से भी वह चीज़ लेकर लौट आऊंगा जिसको जिन्न अपनी झाइयां दूर करने के लिए इस्तेमाल करते हैं।"

अपनी व्याधि से जूझते हुए यह भारी-भरकम, शक्तिशाली व्यक्ति जिस प्रकार दिन प्रतिदिन क्षीणतर होता जा रहा था, यह देखा न जाता था।

८

मेरेस्येव भी दिन प्रतिदिन निर्बल होता जा रहा था। उसने 'मौसमी सार्जेन्ट' के नाम जो अगला पत्र लिखा–वही तो एक व्यक्ति था, जिसको वह अपना क्लेश बता पाता था–उसने यहां तक लिख डाला कि वह इस अस्पताल को शायद जीवित अवस्था में न छोड़ेगा, मगर यह भी ठीक ही रहेगा, क्योंकि पैरों के बिना विमान-चालक ऐसा ही है, जैसे पंख बिना

पंछी, जो वैसे तो ज़िंदा रह सकता है और खा-पी सकता है, मगर उड़ना—कभी नहीं! वह पंखहीन पंछी नहीं बनना चाहता और वह बुरी से बुरी बात के लिए तैयार है—बस, यही है कि वह जल्दी आ जाये। ऐसा लिखना कितनी क्रूरता थी, क्योंकि पत्र-व्यवहार के दौरान उस लड़की ने स्वीकार किया था कि "कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट के लिए" उसके दिल में बहुत-बहुत दिनों से एक कोमल स्थान था, लेकिन अगर उसपर यह मुसीबत न टूट पड़ती तो शायद वह कभी भी यह स्वीकार न कर पाती।

"वह शादी करना चाहती है। इस वक़्त हमारी हैसियत बड़ी भारी है। अगर पेंशन अच्छी-ख़ासी हो, तो वह इन भौंड़े पैरों की परवाह क्यों करेगी," हमेशा की तरह सुनिश्चित भाव से कुकूश्किन ने टीका की।

लेकिन अलेक्सेई को वह पीला चेहरा याद आ गया, जो उस घड़ी जब मौत उनके सिर पर मंडरा रही थी, उसके चेहरे से चिपका हुआ था और वह समझ गया कि स्थिति वह नहीं है जो कुकूश्किन बता रहा है। वह यह भी जानता था कि उसका दुखद आत्म-विवरण पढ़कर उस लड़की का दिल तड़प उठेगा। वह 'मौसमी सार्जेंट' का नाम तक जाने बिना, अपने आनन्द-शून्य मनोभाव उसको प्रगट करता चला जा रहा था।

कमिसार हर दिल की कुंजी खोज लेने में पटु था, लेकिन अब तक वह मेरेस्येव की कुंजी खोजने में सफल नहीं हो सका था। जिस दिन आपरेशन हुआ, उसके अगले दिन वार्ड में ओस्त्रोव्स्की की "अग्निदीक्षा" आ गयी। पुस्तक ज़ोर-ज़ोर से पढ़ी जाती थी। अलेक्सेई भांप गया था कि यह पाठ किसके लिए हो रहा है, लेकिन कहानी से उसे कोई सान्त्वना न मिल सकी। बचपन से ही उसे पावेल कोर्चागिन के प्रति अपार श्रद्धा थी, वह उसके परम प्रिय नायकों में से एक था। "मगर कोर्चागिन विमान-चालक न था," अलेक्सेई अब सोचने लगा। "क्या वह जानता था कि 'हवा में उड़ने की आकांक्षा' का क्या मतलब होता है?" ओस्त्रोव्स्की ने अपनी किताब एक ऐसे समय में चारपाई पर लेटे-लेटे नहीं लिखी थी, जब कि देश के सभी मर्द और अधिकांश औरतें लड़ रहे हों, जब कि बहती नाकवाले लड़के तक चौकियों पर खड़े होकर, क्योंकि वे इतने लम्बे नहीं हैं कि लेथ तक पहुंच सकें, गोलाबारूद तैयार कर रहे हों।"

संक्षेप में यह कि इस अवसर पर यह पुस्तक कोई लोकप्रिय नहीं हुई। इसलिए कमिसार ने पार्श्व से हमला शुरू किया। जैसा कि अक्सर होता था, आकस्मिक ढंग से उसने एक अन्य व्यक्ति की कहानी सुनाना शुरू कर दिया जिसके पैरों को लक़वा मार गया है, मगर आज वह एक ऊंचे सार्वजनिक पद पर है। स्तेपान इवानोविच, जो दुनिया में कोई बात हो, हर चीज़ में दिलचस्पी लेता था, इसपर आश्चर्य से मुंह फाड़े रह गया, और फिर उसे याद पड़ा कि वह जिस जगह से आया था, वहां एक डाक्टर था जिसके सिर्फ़ एक ही बांह थी, मगर इसके बावजूद वह ज़िले में सबसे अच्छा डाक्टर था; वह घोड़े की सवारी कर लेता था और शिकार खेल लेता था, और एक ही हाथ से बंदूक़ तो ऐसी बढ़िया चलाता था कि वह गिलहरी की आंख में भी निशाना मार सकता था। इस जगह कमिसार को अकादमीशियन विल्यम्स की याद आयी जिन्हें वह मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में काम करते समय व्यक्तिगत रूप से जानता था। उस व्यक्ति के शरीर का आधा भाग लक़वे का शिकार था; वह एक ही बांह इस्तेमाल कर पाता था, फिर भी वह कृषि-संस्थान के काम का निर्देशन करता था और एक बड़े पैमाने पर कामों का संचालन करता था।

मेरेस्येव यह बातें मुसकुराता हुआ सुनता रहा: पांवों की बात ही क्या, पूरी टांगों के बिना भी सोचना, बात करना, लिखना, हुक्म निकालना, लोगों का इलाज करना और शिकार खेलना तक सम्भव है, लेकिन वह तो विमान-चालक है, जन्मजात विमान-चालक, बचपन से ही विमान-चालक है, उसी दिन से है, जब उसने तरबूज़ के उस खेत की रखवाली करते समय, जिसमें फटी धरती पर मुलायम पत्तियों के बीच ऐसे भारी-भरकम धारीदार तरबूज़ पड़े हुए थे जो सारे वोल्गा क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं—उसने एक आवाज़ सुनी थी और फिर देखा था एक नन्ही-सी, रुपहली दानवी मक्खी को, जिसके दो पंख धूप में झिलमिला रहे थे और वह स्तेपी मैदान के ऊपर धीरे-धीरे फिसलती हुई स्तालिनग्राद की तरफ़ बढ़ी जा रही थी।

उसी क्षण से हवाबाज़ बनने का स्वप्न उसे कभी नहीं छोड़ सका। स्कूल में पढ़ते समय और बाद में लेथ पर काम करते समय उसके मस्तिष्क में यही सपना रहता था। रात में जब सब लोग सो जाते थे, तब वह और प्रसिद्ध हवाबाज ल्यपिदेव्स्की, चेल्यूस्किन के अनुसंधान-यात्रियों को खोज

निकालते और बचा लेते, वोदोप्यानोव के साथ वह उत्तरी ध्रुव की सख़्त बर्फ़ के ऊपर भारी हवाई जहाज़ उतारता तथा चकालोव के साथ उत्तरी ध्रुव होकर अमरीका तक पहुंचने का अनखोजा रास्ता निकाल लेता।

युवक कम्युनिस्ट लीग ने उसे सुदूर पूर्व भेजा और वहां ताइगा में उसने युवकों के नगर – आमूरवर्ती कोम्सोमोल्स्क – का निर्माण करने में सहायता पहुंचायी, किन्तु उस सुदूर स्थान तक भी वह विमान-संचालन का अपना सपना साथ लिये गया। नगर के निर्माणकर्त्ताओं में उसे अपनी ही तरह के अनेक युवक-युवती मिले जो विमान-चालक के गौरवशाली पेशे में प्रवेश करने का स्वप्न देख रहे थे, और यद्यपि उस नगर में, जिसका अस्तित्व अभी सिर्फ़ नक़्शे पर ही था, यह विश्वास करना कठिन था, फिर भी उन्होंने अपने हाथों से अपने उड्डयन क्लब के लिए एक हवाई अड्डा तैयार किया था। जब शाम आती और विस्तृत निर्माणक्षेत्र कुहरे से ढंक जाता, तो सारे निर्माणकर्त्ता अपने झोंपड़ों में घुस जाते, खिड़कियां बन्द कर लेते और दरवाज़े के बाहर नम टहनियां जलाते, ताकि उसके धुएं से मच्छड़ों और वनमखियों के झुण्ड भगाये जा सकें जिनकी मनहूस और ज़ोरदार भन-भन से सारा वातावरण भर जाता। उसी क्षण, जब सारे निर्माणकर्त्ता दिन के परिश्रम से चूर होकर आराम करते, तब अलेक्सेई की अगुआई में उड्डयन क्लब के सदस्य अपने शरीरों पर मिट्टी का तेल मलकर – समझा जाता था कि इससे मच्छड़ और वनमखियां दूर रहती हैं – कुल्हाड़ियां, गेंतियां, आरियां, खुरपियां और विस्फोटक लेकर ताइगा में चले जाते थे और वहां वे पेड़ गिराते, ठूंठों को उड़ा देते, ज़मीन को समतल बनाते ताकि हवाई अड्डे के लिए ताइगा से कुछ ज़मीन निकाल सकें। और अपने ही हाथों से अछूते जंगलों को साफ़ कर उन्होंने अपने हवाई अड्डे के लिए कई किलोमीटर भूमि जीत ली।

यही अड्डा था जहां से पहली बार अलेक्सेई ने एक प्रशिक्षण विमान में चढ़कर हवा में उड़ान भरी थी और आख़िरकार अपने बचपन के सपने को सफल बना पाया था।

बाद में वह फ़ौजी उड्डयन स्कूल में गया और इस कला में पारंगत बन गया तथा अनेक नवागतों को सिखाने लगा। जब युद्ध छिड़ा, तब वह इसी स्कूल में था। स्कूल अधिकारियों के विरोध के बावजूद उसने शिक्षक का

पद त्याग दिया और सक्रिय सैनिक के रूप में फ़ौज में शामिल हो गया। उसके जीवन के सारे लक्ष्य, भविष्य के लिए उसकी सारी योजनायें, आनन्द और दिलचस्पियां और वास्तविक रूप में प्राप्त सफलताएं, सभी उड्डयन विद्या से बंधी थीं...

और फिर भी वे लोग उससे विल्यम्स की बातें करते थे।

"लेकिन विल्यम्स तो हवाबाज़ नहीं था," अलेक्सेई ने कहा और दीवार की ओर मुंह फेर लिया।

लेकिन उसके मन की "गांठें खोलने" के लिए कमिसार ने अपने प्रयत्न जारी रखे। एक दिन, जब अलेक्सेई हमेशा की तरह अपने चारों ओर की चीज़ों की तरफ़ से उदासीन था, उसने कमिसार को यह कहते सुना:

"अलेक्सेई, पढ़ो तो इसे। यह तुम्हारे बारे में है।"

कमिसार जो पत्रिका पढ़ रहा था, उसे मेरेस्येव को देने के लिए स्तेपान इवानोविच झपट पड़ा। उसमें एक छोटा-सा लेख था जिसपर पेंसिल से निशान बना था। अलेक्सेई ने अपना नाम खोजने के लिए लेख को ऊपर से नीचे तक छान डाला, मगर कहीं न मिला। यह लेख प्रथम युद्ध-काल के एक रूसी हवाबाज़ के बारे में था। पत्रिका के पृष्ठ में से एक अज्ञात युवक अफ़सर का चेहरा उसकी ओर घूर रहा था—उस चेहरे पर पैनी ऐंठी हुई छोटी मूंछें थीं और सिर पर चालक की टोपी, जिसमें सफ़ेद बिल्ला लगा हुआ था, कान को छू रही थी।

"पढ़ लो, पढ़ डालो, यह तुम्हारे लिए ही लिखा गया है," कमिसार ने अनुरोध किया।

मेरेस्येव ने लेख पढ़ डाला। वह एक रूसी फ़ौजी विमान-चालक, लेफ़्टीनेंट वलेरियान अरकादियेविच कर्पोविच के विषय में था, जिसके पैर में, शत्रु की पांतों पर उड़ते समय, एक जर्मन डमडम गोली लग गयी थी। पैर का कचूमर निकल जाने के बावजूद वह अपने 'फ़रमान' विमान को शत्रु की पांतों से निकाल लाया और अपने अड्डे पर उतर आया। पैर कट चुका था, मगर युवक अफ़सर को फ़ौज से रिटायर होने की कोई आकांक्षा न थी। उसने अपने ही डिज़ाइन के अनुसार एक कृत्रिम पैर बनवाया। दीर्घकाल तक और धैर्यपूर्वक वह जिमनास्टिक करता रहा और अपने को अभ्यस्त करता रहा, जिसके फलस्वरूप वह युद्ध के अंतिम दिनों में फिर

अपने काम पर वापस लौट आया। वह एक फ़ौजी उड्डयन स्कूल में निरीक्षक नियुक्त कर दिया गया और जैसा कि लेख में बताया गया था, "कभी-कभी वह अपने विमान में उड़ान करने का ख़तरा मोल लिया करता था।" उसे अफ़सरों वाला सेंट जार्ज क्रास का पुरस्कार दिया गया और अपनी मृत्यु तक – जो विमान के गिरकर चूर हो जाने के कारण हुई – वह रूसी वायुसेना की सफलतापूर्वक सेवा करता रहा।

मेरेस्येव ने लेख एक बार, दो बार और तीसरी बार भी पढ़ डाला। क्षीणकाय, युवक लेफ़्टीनेंट का थका हुआ, मगर संकल्पपूर्ण चेहरा अपने होठों पर किंचित हठात्, किन्तु वीरतापूर्ण मुसकान लिये हुए उसकी ओर घूर रहा था। इधर सारा वार्ड बड़ी उत्तेजना के साथ अलेक्सेई को देख रहा था। उसने अपने बालों में उंगलियां फेरीं, पत्रिका में आंखें गड़ाये हुए पेंसिल खोजने के लिए चारपाई के पास रखी आलमारी टटोली और बहुत संभालकर लेख के चारों ओर एक हाशिया बना दिया।

"पढ़ डाला?" कमिसार ने आंखों में शैतानी भरी नज़र छिपाये हुए पूछा। अलेक्सेई चुप रहा, उसकी आंखें अभी भी लेख की पंक्तियां छान रही थीं। "तो तुम क्या कहते हो इसके बारे में?"

"लेकिन उसने तो एक ही पैर खोया था।"

"मगर तुम सोवियत हवाबाज़ हो।"

"वह 'फ़रमान' चलाता था। उसे भी क्या हवाई जहाज़ कहोगे? उसमें क्या रखा था? उसको तो कोई भी चला सकता था। उसका स्टीयरिंग गीयर इतना सादा होता है कि उसके चलाने के लिए किसी भी कुशलता या तेज़ी की ज़रूरत नहीं होती थी।"

"लेकिन तुम तो सोवियत हवाबाज़ हो," कमिसार ने फिर ज़ोर दिया।

"सोवियत हवाबाज़," अलेक्सेई ने यांत्रिक ढंग से दोहराया। और आंखें अभी भी पत्रिका पर चिपकाये रहा। फिर उसका चेहरा दमक उठा, मानों किसी आंतरिक प्रकाश से, और उसने आनन्द और विस्मयपूर्ण दृष्टि से चारों ओर अपने प्रत्येक साथी मरीज़ की ओर देखा।

उस रात सोने से पहले अलेक्सेई ने पत्रिका अपने तकिये के नीचे रख ली और उसे याद आया कि जब वह बच्चा था और अपने भाइयों के साथ सोता था, तो इसी भांति भोंडे नन्हे भालू को छिपा लिया करता था जिसे

उसकी मां ने एक पुरानी रेशमी जाकेट फाड़कर बना दिया था। इस स्मृति पर वह हंस पड़ा और वह हंसी वार्ड भर में गूंज गयी।

उस रात उसकी आंख न लगी। सारा वार्ड गहरी नींद में डूबा था। ग्वोज़देव अपनी चारपाई पर लुढ़क रहा था, जिसके कारण गद्दे के स्प्रिंग चूं-चूं बोल रहे थे। स्तेपान इवानोविच मुंह फाड़े, सीटी बजाता हुआ, इस प्रकार खुर्राटे भर रहा था मानो उसका अंतर बाहर निकलने के लिए व्याकुल है। जब-तब कमिसार करवटें बदल रहा था और दांत भींजता हल्के-से कराह भर उठता था। लेकिन अलेक्सेई को कुछ न सुनाई दे रहा था। बार-बार अपने तकिये के नीचे से वह पत्रिका निकाल लेता और रात के लैम्प की रोशनी में लेफ़टीनेंट के मुसकुराते हुए चेहरे की तरफ़ देखने लगता और मानो उससे बातें कर रहा हो, इस भाव से बुदबुदा उठता: "तुम्हारी मुसीबत थी, मगर तुम निभा ले गये। मेरी तो दस गुना अधिक है, मगर मैं भी निभा ले जाऊंगा, तुम देख लेना!"

आधी रात को यकायक कमिसार बिल्कुल शान्त लेटा रह गया। अलेक्सेई कुहनी के बल उठा और उसने कमिसार को पीला और ठंडा पड़ा देखा, मानो वह सांस भी न ले रहा हो। उसने उन्मत्त भाव से घंटी बजा दी। क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना वार्ड में दौड़ी हुई आयी—नंगे सिर, उनींदी आंखें और पीठ पर उसकी लटें लटकी हुईं। कुछ क्षण बाद हाउस सर्जन भी बुलाया गया। उसने कमिसार की नब्ज़ देखी, उसे कैम्फ़र का इंजेक्शन दिया और ऑक्सीजन के थैले की टोंटी उसके मुंह से लगा दी। सर्जन और नर्स कोई एक घंटे तक मरीज़ से जूझते रहे और ऐसा लगता था मानो परिश्रम व्यर्थ हो रहा था। आख़िरकार कमिसार ने आंखें खोलीं, वह क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना की ओर देखकर आहिस्ते से, लगभग अगोचर रूप में मुसकुराया और धीमे से बोला:

"खेद है, मैंने तुम्हें व्यर्थ ही कष्ट दिया। मैं नरक तक नहीं पहुंच पाया और तुम्हारी झाइयों की दवा न ला पाया। इसलिए, प्रिये, अभी तो तुम्हें ये बरदाश्त करनी पड़ेंगी। कुछ नहीं किया जा सकता।"

यह मज़ाक़ सुनकर हर व्यक्ति ने संतोष की सांस ली। यह व्यक्ति मज़बूत बलूत वृक्ष के समान है, जो किसी भी आंधी तूफ़ान का सामना कर सकता है। हाउस सर्जन वार्ड छोड़कर चला गया, उसके जूतों की चरमराहट

गलियारे में धीरे-धीरे खो गयी, वार्ड परिचारिकाएं भी चली गयीं और सिर्फ़ क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना रह गयी जो कमिसार की चारपाई की पाटी पर बैठी थी। मरीज़ फिर सो गये सिर्फ़ मेरेस्येव को छोड़कर, जो आंखें बंद किये पड़ा था और कल्पना कर रहा था कि उसके हवाई जहाज़ के पैडलों के साथ बनावटी पांव लगाये जा सकते हैं, चाहे फिर उन्हें तस्मों से ही क्यों न बांधना पड़े। उसे याद पड़ा कि जब वह उड्डयन क्लब में था, तब शिक्षक ने गृह-युद्ध काल के एक हवाबाज़ की चर्चा की थी, जिसकी टांगें छोटी थीं और इसलिए उसने अपने हवाई जहाज़ के पैडलों में लकड़ी के सांचे लगा लिये थे, ताकि उसके पैर वहां तक पहुंच सकें।

"मैं तुमसे पीछे नहीं रहूंगा, भाई," वह कर्पोविच को विश्वास दिलाता रहा। और "मैं उड़ूंगा, मैं उड़ूंगा," ये शब्द मस्तिष्क में बराबर गूंजते और गाते रहे, और उसकी नींद भगाते रहे। वह अपनी आंखें बंद किये ख़ामोश पड़ा रहा। उसे देखकर यही भ्रम होता कि वह सो गया है और नींद में मुसकरा रहा है।

और इस प्रकार लेटे-लेटे उसने एक वार्तालाप सुना, जिसे बाद में वह अपने जीवन की कठिन घड़ियों में अनेक बार स्मरण करता रहा।

"ओह, मगर तुम इस तरह व्यवहार क्यों करते हो? जब तुम्हें इतना दर्द सता रहा है, तब इस तरह तुम्हारा हंसना और मज़ाक़ करना कितना भयानक है। तुम कैसी यंत्रणा भोग रहे हो, यह देखकर मेरा दिल बैठ जाता है। तुम अलग वार्ड में जाने से इनकार क्यों करते हो?"

ऐसा लगता था मानो यह उदार और सुन्दर, मगर ऊपर से राग-अनुरागविहीन दिखाई देनेवाली नर्स क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना नहीं, एक नारी बोल रही है—उत्तेजित और अप्रसन्न, उसके स्वर से वेदना अभिव्यक्त हो रही थी और शायद कोई और भाव भी। मेरेस्येव ने आंख खोली। रात के लैम्प की रोशनी में, जिसपर रूमाल पड़ा था, उसने तकिये की पृष्ठभूमि में कमिसार का पीला और सूजा हुआ चेहरा और सुहृद चमकती हुई आंखें, तथा नर्स की कोमल आकृति देखी। उसके सिर के पीछे पड़ती हुई रोशनी में उसके मुलायम और सुन्दर केश दैवी प्रभा के समान चमक

रहे थे, और मेरेस्येव, यद्यपि यह समझता था कि इस प्रकार देखना उचित नहीं है, फिर भी वह अपनी आंखें उधर से हटा न पाया।

"लो, देखो, नन्ही सिस्टर, इस तरह तुम्हें नहीं रोना चाहिए। क्या तुम्हें कुछ ब्रोमाइड पिलाया जाये?" कमिसार ने कहा, मानो वह किसी नन्ही लड़की से बातें कर रहा हो।

"देखो! तुम फिर मज़ाक़ करने लगे! कैसे भयंकर जीव हो तुम! यह कितनी भयानक बात है, सचमुच कितनी भयानक बात है कि जब रोना चाहिए तो कोई हंसता हो, जब तुम्हारा अपना शरीर दर्द से फटा जा रहा है, तो तुम दूसरों को राहत देने की कोशिश करते हो। मेरे प्यारे, अच्छे से प्यारे जीव, तुम अब कभी—सुनते हो—तुम अब कभी इस तरह का व्यवहार करने की कोशिश न करना!"

उसने सिर झुका लिया और ख़ामोशी के साथ रोती रही, और कमिसार उसके दुबले-पतले, सफ़ेद पोशाक में सजे, कांपते हुए कंधों को अपनी वेदनापूर्ण सुहृद आंखों से निहारता रहा।

"अब तो वक़्त निकल गया, वक़्त निकल ही गया, मेरी प्राण-प्यारी," उसने कहा, "अपने व्यक्तिगत मामलों में तो मैं हमेशा निन्दनीय रूप में मौक़ा खो देता रहा हूं। मैं हमेशा दूसरी बातों में व्यस्त रहा। और अब, मेरा ख़्याल है, कि मेरे लिए वक़्त बिल्कुल निकल गया है।"

कमिसार ने आह भरी। नर्स ने सिर उठाया और अश्रुमय, उत्सुक आशापूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा। वह मुसकुराया, फिर उसने निश्वास ली और सदा की भांति अपने उदार और किंचित विनोदपूर्ण स्वर में कहता गया:

"नन्ही-मुन्नी चालाक छोकरी, अच्छा तो यह कहानी सुन ले। मुझे अभी याद आ गयी। वह घटना बहुत दिनों पहले, गृह-युद्ध के काल में तुर्किस्तान में घटी थी। हां तो एक घुड़सवार टुकड़ी बास्मचियों का इतनी सरगर्मी के साथ पीछा करती गयी कि वह एक रेगिस्तान में पहुंच गयी जो इतना भयानक था कि घोड़े एक के बाद एक मरकर गिर गये। वे रूसी घोड़े थे और रेगिस्तान के अभ्यस्त न थे। इस तरह घुड़सवार सेना से हम लोग पैदल सेना बन गये। तब टुकड़ी के कमांडर ने यह फ़ैसला लिया: "सारा सामान छोड़ दो, और सिवाय अपने हथियारों के और कोई चीज़ पास मत रखो और किसी बड़े नगर की ओर चल दो।" यह नगर एक

सौ साठ किलोमीटर दूर था, और हमें नंगी रेत पर चलकर जाना था। तुम उसकी कल्पना कर सकती हो, नन्ही लड़की? हम एक दिन चले, दो दिन चले, तीन दिन चले। धूप तप रही थी। पीने को कुछ न था। हमारे मुंह इतने सूख गये थे कि चमड़ी फटने लगी थी, और हवा रेत से भरी थी, पैरों के नीचे रेत कुड़कुड़ा रही थी, दांतों के नीचे रेत किसकती, आंखों में भर जाती, गले में उतर जाती, कितना भयानक था, तुम्हें क्या बताऊं! अगर कोई आदमी ठोकर खाकर गिर पड़ा तो वह औंधे मुंह रेत पर पड़ा रह जाता था और उठ नहीं पाता था। हमारा एक कमिसार था, उसका नाम था याकोव पावलोविच वोलोदिन। देखने से ही वह ढीला-ढाला बुद्धिजीवी मालूम होता था—वह इतिहासज्ञ था। लेकिन वह कट्टर बोल्शेविक था। उसे देखकर कोई यही ख़्याल करता कि सबसे पहले वही गिर जायेगा, मगर वह चलता रहा और दूसरों को भी उत्साहित करता रहा: 'अब ज़्यादा दूर नहीं चलना है। हम शीघ्र ही वहां पहुंच जायेंगे,' वह बराबर यही दुहराता रहता, और अगर कोई व्यक्ति लेट जाता तो उसपर वह अपनी पिस्तौल तान देता और कहता: 'उठ बैठो, वरना गोली मार दूंगा।'

"चौथे दिन, जब हम नगर से सिर्फ़ पंद्रह किलोमीटर दूर रह गये थे, सभी आदमी पूरी तरह चकनाचूर हो गये। हम इस तरह लड़खड़ा उठे मानो पिये हुए हों और हम जो पदचिह्न छोड़ते जा रहे थे, वे इस तरह थे मानो किसी घायल जानवर के चिह्न हों। यकायक कमिसार ने एक गीत शुरू कर दिया। उसका स्वर बड़ा भोंडा और बारीक था और गीत भी जो छेड़ा था, वह बेसिरपैर था—वह प्रयाण-गीत था जो पुरानी फ़ौज में गया जाता था। मगर हम सब सुर मिलाकर गाने लगे। मैंने हुक्म दिया: 'पांत बनाओ!' और क़दम मिलवाने लगा: 'बायां! दायां! बायां! दायां!' और तुम्हें यक़ीन न होगा कि रास्ता आसान हो गया।

"इस गीत के बाद हमने दूसरा गीत गाया, और फिर तीसरा गीत गाया। तुम कल्पना कर सकती हो, नन्ही छोकरी? हम सूखे, चटखे हुए गलों से गा रहे थे और ऐसी आग-सी गर्मी में! हमें जितने भी गीत याद थे, सब गा डाले और अंत में रेगिस्तान में एक भी आदमी छोड़े बिना हम अपनी मंज़िल पर पहुंच गये... इसके बारे में क्या ख़्याल है तुम्हारा?"

"कमिसार का क्या हुआ?"

"उसका क्या होता? वह अभी भी जीवित है और सकुशल है। वह पुरातत्वशास्त्र का प्रोफ़ेसर है। प्रागैतिहासिक बस्तियों को ज़मीन से खोद निकालता है। यह सच है कि उस अभियान के बाद वह अपनी आवाज़ खो बैठा। उसकी आवाज़ फट गयी है। लेकिन वह आवाज़ का क्या करेगा? अच्छा, आज की रात अब और कोई कहानी नहीं। जाओ, छोकरी, मैं घुड़सवार सैनिक की हैसियत से तुम्हें आश्वासन देता हूं कि अब आज की रात मैं नहीं मरूंगा।"

आख़िरकार मेरेस्येव गहरी नींद में सो गया और उसने स्वप्न में एक रेतीला रेगिस्तान देखा, जिसे उसने अपने जीवन में कभी न देखा था; उसने फटे हुए, ख़ून से लथपथ होठों को गीतों की धार उगलते देखा, उसने कमिसार वोलोविन को देखा, जो पता नहीं क्यों स्वप्न में कमिसार वोरोब्योव से मिलता-जुलता था।

वह देर उठा; तब तक सूर्य की किरणें वार्ड के बीच अठखेलियां करने लगी थीं, जिससे पता चलता था कि दोपहर हो गयी है; और वह अपने हृदय में उल्लास का भाव संजोये उठा। स्वप्न? कौनसा स्वप्न? उसकी नज़र उस पत्रिका पर पड़ी जिसे वह सोते समय अपने हाथों में ज़ोर से जकड़े हुए था; सिकुड़े हुए पृष्ठ से लेफ़्टीनेंट कर्पोविच वही संयमित, किन्तु वीरतापूर्ण मुसकान बिखेर रहा था। मेरेस्येव ने पत्रिका को आहिस्ते से सीधा किया और लेफ़्टीनेंट की तरफ़ आंख मार दी।

कमिसार हाथ-मुंह धो चुका और बाल काढ़ चुका था और लेटे-लेटे मुसकुराते हुए अलेक्सेई को निहार रहा था।

"उसकी तरफ़ तुम आंख क्यों मार रहे हो?" उसने आनन्द अनुभव करते हुए पूछ डाला।

"हम फिर उड़ने जा रहे हैं," अलेक्सेई ने जवाब दिया।

"कैसे? उसने एक ही पैर गंवाया था, मगर तुम तो दोनों गंवा बैठे हो।"

"मगर मैं हूं सोवियत, रूसी!" अलेक्सेई ने जवाब दिया।

उसने ये शब्द इस अंदाज़ और विश्वास के साथ कहे थे कि जैसे वह लेफ़्टीनेंट कर्पोविच से भी एक बात में बाज़ी मार ले जायेगा और दोनों पांवों बिना उड़ सकेगा।

भोजन के समय वार्ड परिचारिका जो कुछ भी लायी थी उसने सब खा डाला, साश्चर्य से अपनी खाली तश्तरी की तरफ़ देखने लगा और कुछ और मांग बैठा। वह स्नायविक उत्तेजना की स्थिति में था; वह गीत गा उठा, सीटी बजाने की कोशिश करने लगा, और ज़ोर-ज़ोर से अपने आपसे बहस करने लगा। जब प्रोफ़ेसर अपने नित्य के चक्कर पर आये तो उन्होंने जो विशेष व्यवहार किया, उसका लाभ उठाकर अलेक्सेई ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी कि उसे अपने शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ के लिए क्या-क्या करना चाहिए। प्रोफ़ेसर ने जवाब दिया कि उसे अधिक खाना और अधिक सोना चाहिए। उसके बाद अलेक्सेई ने भोजन के दूसरे दौर में दो बार परोसने की मांग की और अपने को चार कटलेट पूरे के पूरे खाने के लिए मजबूर किया।

सुखानुभूति मनुष्य को अहंकारी बना देती है। प्रोफ़ेसर पर प्रश्नों की झड़ी लगाते समय अलेक्सेई वह बात न देख सका जिसकी तरफ़ सारे वार्ड का ध्यान आकर्षित हुआ था। वसीली वसील्येविच सदा की भांति वार्ड में उसी सुनिश्चित समय पर आये थे जब सूर्य की किरणें वार्ड के सारे फ़र्श को पार कर उस स्थान को छूने लगती हैं, जहां फ़र्श की एक तख़्ती ग़ायब थी। हमेशा की तरह प्रोफ़ेसर हर एक की ओर ध्यान दे रहे थे, मगर सभी ने आज उनके चेहरे पर ऐसा विरक्ति का भाव देखा जो पहले कभी नहीं देखा गया। उन्होंने किसी को ताना या झिड़कियां न दीं, जैसा कि हमेशा किया करते थे, और उनकी सूजी हुई आंखों के कोनों की नसें बराबर फड़क रही थीं। आज की शाम वे थोड़े झटके हुए और प्रत्यक्षतया ढली हुई आयु के मालूम होते थे। उन्होंने बड़े ही मंद स्वर में वार्ड परिचारिका को दरवाज़े की मूठ पर झाड़न छोड़ आने के कारण झिड़क दिया, कमिसार का तापमान चार्ट देखा, उसके लिए कोई दवा निश्चित की और ख़ामोशी के साथ बाहर चले गये—उनके अनुचर भी उसी ख़ामोशी और चिन्तित भाव से पीछे पीछे चले गये। वे देहलीज़ पर जाकर ठोकर खा गये और अगर कोई उन्हें कुहनी के बल संभाल न लेता तो शायद वे लुढ़क जाते। उस लम्बे, भारी-भरकम, कर्कश-स्वर, प्रचण्ड अनुशासक के लिए इतना शान्त और विनम्र होना बिल्कुल अस्वाभाविक मालूम होता था। वार्ड नम्बर बयालीस के निवासी आश्चर्य भरी दृष्टि से उसे बाहर जाते देखते रहे। इस विशालकाय, दयालु-

हृदय व्यक्ति को सभी लोग प्यार करने लगे थे और उसमें यह परिवर्तन देखकर सभी विचलित हो उठे।

अगले दिन सुबह उन्हें इसका कारण विदित हुआ : वसीली वसील्येविच के एकमात्र पुत्र, जिसका नाम भी वसीली वसील्येविच ही था और जो एक चिकित्सक और होनहार वैज्ञानिक था, अपने पिता के लिए गर्व और आनन्द का विषय था, पश्चिमी मोर्चे पर मारा गया था। सुनिश्चित समय पर सारा अस्पताल सांस रोककर यह देखने का इंतजार करने लगा कि प्रोफ़ेसर वार्डों में नित्य की तरह चक्कर लगाने आयेंगे या नहीं। वार्ड नम्बर बयालीस के निवासी फ़र्श पर सूर्य की किरणों की मंद मंद लगभग निर्बाध गति को सूक्ष्मता से देख रहे थे। अंत में वे वहां पहुंच गयीं, जहां फ़र्श की एक तख़्ती ग़ायब थी और वे सभी एक दूसरे को देखने लगे : वे नहीं आयेंगे। लेकिन तभी गलियारे से सुपरिचित भारी पदचाप और अनेक अनुचरों की पग-ध्वनियां सुनाई देने लगीं। प्रोफ़ेसर आज कुछ बेहतर भी दिखाई दे रहे थे। यह सच था कि उनकी आंखें सूजी हुई थीं और पलकें तथा नाक फूली हुई थीं, जैसा कि किसी को सख़्त ज़ुकाम हो जाने से हो जाता है, और उनके गुदाज, खुरखुरे हाथ भी उस समय साफ़ कांपते हुए नजर आये जब उन्होंने मेज से कमिसार का टेम्परेचर चार्ट उठाया; किन्तु वे सदा ही की तरह स्फूर्तिवान और नियमबद्ध रहे। फिर भी उनकी प्रचण्डता और डांट-फटकार आज ग़ायब थी।

उस दिन सभी घायल और बीमार व्यक्ति उन्हें हर प्रकार से ख़ुश करने के लिए एक दूसरे से होड़ कर रहे थे, मानो इस विषय में उन्होंने आपस में कोई समझौता कर लिया हो। हर व्यक्ति उन्हें विश्वास दिलाने लगा कि आज वह बेहतर महसूस कर रहा है; संगीन हालतवाले लोग भी कोई शिकायत नहीं कर रहे थे, और सिद्ध कर रहे थे कि वे स्वास्थ्य-लाभ की ओर बढ़ रहे हैं। और हर व्यक्ति उत्साहपूर्वक अस्पताल के प्रबंध की सराहना कर रहा था और यहां की विभिन्न चिकित्साओं के सुस्पष्ट चमत्कारपूर्ण प्रभाव को प्रमाणित कर रहा था। यह आम दुःख के सूत्र में बंधा हुआ एक मैत्रीपूर्ण परिवार लग रहा था।

वार्ड का चक्कर लगाते हुए वसीली वसील्येविच हैरान थे कि आज की सुबह उन्हें इतनी असाधारण सफलता क्यों प्राप्त हो रही है।

लेकिन वे क्या सचमुच हैरान थे? शायद इस मासूम और ख़ामोश षड्यंत्र का भेद वे समझ गये थे और अगर वे समझ भी गये होंगे तो उन्हें जो ठेस पहुंची थी, उसे बरदाश्त करना शायद उनके लिए आसान हो गया होगा।

६

पूरब की तरफ़ की खिड़की के बाहर पोपलर वृक्ष की शाखा में अब हल्के पीले रंग की चिपचिपी पत्तियां निकल आयी थीं, जिनके नीचे लाल, रोएंदार फल मोटे-मोटे कीड़ों की तरह दिखाई दे रहे थे। सुबह धूप में पत्तियां चमकने लगीं और ऐसी लगने लगीं मानो तेल-सने काग़ज़ की बनी हों। वे नमकीन ताज़गी की ऐसी तीखी और कड़वी गंध छोड़ रही थीं कि वह गंध रोशनदानों के खुले पलड़ों में से अन्दर घुस आयी और वार्ड में छायी हुई अस्पताली गंध पर हावी हो गयी।

और गौरैयों की, जो स्तेपान इवानोविच की उदारता के कारण मोटी-ताज़ी हो गयी थीं, उच्छृंखलता का कोई ठिकाना न रहा। वसंत आगमन के प्रमाण-स्वरूप, 'टामी गनर' अपने लिए नयी पूंछ प्राप्त कर ली थी और पहले से भी अधिक शोरग़ुल मचानेवाली और झगड़ालू हो गयी थी। प्रातः-काल खिड़की की देहरी के बाहर ये चिड़ियां ऐसी कोलाहलपूर्ण सभाएं करतीं कि वार्ड परिचारिका, जो वार्ड साफ़ करने आती थी, उनके कारण धीरज खो बैठती थी, वह बड़बड़ाती हुई खिड़की की देहरी पर चढ़ जाती और हाथ रोशनदान में घुसेड़कर अपने झाड़न से उन्हें दुश-श कर देती।

मास्को नदी की बर्फ़ बह गयी थी। थोड़े से तूफ़ानी दौर के बाद नदी शान्त हो गयी, अपने किनारों तक आ गयी और आज्ञाकारी की भांति उसने अपनी पीठ जहाज़ों, नौकाओं और नदीवाली ट्रामों को सौंप दी, जिनसे उस सख़्त ज़माने में राजधानी के मोटर-यातायात की भयंकर कमी पूरी होती थी। कुकूश्किन की निराशाजनक भविष्यवाणियों के बावजूद वार्ड नम्बर बयालीस का कोई भी व्यक्ति वसंतकाल की बाढ़ में न "बह गया"। कमिसार के अतिरिक्त हर व्यक्ति स्वास्थ्य-लाभ की ओर अच्छी प्रगति कर रहा था, और अब वार्ड के अंदर अधिकांश बातचीत अस्पताल से छूटने के विषय पर ही होती रहती।

वार्ड को सबसे पहले छोड़नेवाला था स्तेपान इवानोविच। वार्ड से मुक्त किये जाने के एक दिन पहले वह चिन्ता, आनन्द और उत्तेजना की मिश्रित भावनाओं के साथ अस्पताल का चक्कर लगाता रहा। वह एक क्षण भी शान्त न रह पाता। गलियारे के मरीज़ों से बात करने के बाद वह वार्ड में लौट आया, खिड़की के पास बैठा रहा, रोटी तोड़कर कुछ बनाने लगा, मगर यकायक फिर उछल पड़ा और वार्ड के बाहर चला गया। सिर्फ़ शाम को, जब झुटपुटा होने लगा, तो वह खिड़की की देहरी पर चढ़ गया और गहरे सोच-विचार में लीन-सा बुदबुदाता रहा और सांसें भरता रहा। यही वह घड़ी थी जब रोगी विभिन्न चिकित्साएं लेते थे, और इस समय वहां सिर्फ़ दो मरीज़ और रह गये थे: कमिसार, जो ख़ामोशी के साथ स्तेपान इवानोविच को निहार रहा था और मेरेस्येव जो सोने की ज़बर्दस्त कोशिश कर रहा था।

शान्ति का राज्य था। यकायक कमिसार ने स्तेपान इवानोविच की ओर सिर घुमाया – जिसका छाया-चित्र डूबते हुए सूरज की आख़िरी किरणों के प्रकाश में साफ़ उभर रहा था – और इतने मंद स्वर में बोला कि वह मुश्किल से ही सुनाई देता था:

"गांव में अब गोधूलि बेला आ गयी है और शान्त, ओह, कितनी शान्त। गलती हुई बर्फ़वाली धरती, नम खाद, लकड़ियों के धुएं की गंध। गाय खलिहान में होगी और पुआल की शय्या रौंद रही होगी, वह बेचैन होगी, क्योंकि बच्चा जनने का वक़्त आ गया है। वसंतकाल... मैं हैरान हूं कि औरतें खेत में खाद बिछा पायी होंगी या नहीं। और बीज का, और घोड़ों के साज-सामान का क्या हुआ होगा? इस मामले में क्या सब कुछ ठीक हो गया होगा?"

मेरेस्येव को लगा कि स्तेपान इवानोविच ने मुसकुराते हुए कमिसार की तरफ़ जितने घबराकर देखा, उतने आश्चर्य से नहीं, और कह उठा:

"तुम ज़रूर जादूगर हो, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार, वरना किसी दूसरे के विचारों को तुम इस तरह कैसे भांप लेते... हां-आं, औरतें बड़ी व्यावहारिक होती हैं, सचमुच, यह तो सच है, मगर शैतान जाने, वे हम लोगों के बिना कैसे सब कामकाज चला रही होंगी... यह बात सच है।"

ख़ामोशी फिर छा गयी। नदी पर किसी जहाज़ का भोंपू बज उठा, और उसकी चीख़ आनन्दपूर्वक पानी पर लहराती चली गयी और पथरीले किनारों से टकराकर प्रतिध्वनित हो उठी।

"क्या ख़्याल है तुम्हारा, क्या युद्ध जल्दी ख़त्म हो जायेगा?" स्तेपान इवानोविच ने किसी कारण फुसफुसाते हुए पूछा। "क्या वह घास कटाई के वक़्त तक ख़त्म हो जायेगा?"

कमिसार ने जवाब दिया, "तुम्हें चिन्ता क्या है? तुम्हारी आयु के लोगों को अभी लड़ाई पर बुलाया नहीं गया है। तुम तो स्वयंसेवक भर हो। तुमने अपने हिस्से की लड़ाई लड़ ही ली है। अगर तुम दरख़ास्त दो, तो तुम्हें डिसचार्ज मिल जायेगा, और फिर तुम जाकर औरतों की कमान संभाल सकते हो। व्यावहारिक आदमियों की आवश्यकता तो मोर्चे के पीछे भी होती है, क्या नहीं? क्या कहते हो, सफ़ेद दाढ़ीवाले?"

जब कमिसार ने यह बात कही तो उसने उस बूढ़े सिपाही पर ऐसी सहृदय दृष्टि डाली कि वह खिड़की की देहरी से उछलकर उतर आया—उत्साहित और उत्तेजित।

"अपना डिसचार्ज ले लूं, एह!" उसने कहा, "यही तो मैं भी सोच रहा था। मैं अपने आपसे कह रहा था: मान लो, मैं कमीशन के पास दरख़ास्त भेज दूं? आख़िर, मैं तीन लड़ाइयां भुगत चुका हूं। साम्राज्यवादी युद्ध, सारे का सारा गृह-युद्ध और इस लड़ाई के कुछ दिन। शायद इतना ही काफ़ी है, एह? तुम मुझे क्या करने की सलाह देते हो, रेजीमेंटल कमिसार?"

"अच्छा तो तुम यों दरख़ास्त दे दो: मुझे डिसचार्ज मंज़ूर किया जाये, क्योंकि मैं मोर्चे के पीछे औरतों का हाथ बंटाना चाहता हूं। जर्मनों से मेरी रक्षा दूसरे लोग करें," मेरेस्येव चारपाई से ही चिल्ला पड़ा क्योंकि वह अपने को न रोक पाया।

स्तेपान इवानोविच ने अपराधी जैसी दृष्टि से उसकी ओर देखा। कमिसार ने भौंहें सिकोड़ीं और बोला:

"मैं तुम्हें क्या सलाह दे सकता हूं, स्तेपान इवानोविच, तुम अपने दिल से पूछो। तुम्हारा दिल रूसी है। जो सलाह तुम्हें चाहिए, वह तुम्हें उसी से प्राप्त हो जायेगी।"

अगले दिन स्तेपान इवानोविच को अस्पताल से डिसचार्ज मिल गया। विदा लेने के लिए वह फ़ौजी वर्दी पहनकर वार्ड में आया। अपनी पुरानी, उड़े रंग की वर्दी पहने हुए, जो धुल-धुलकर सफ़ेद हो गयी थी, कमर पर कसकर पेटी बांधे हुए और वर्दी को पीठ पर इतने बढ़िये ढंग से खींचे हुए कि सामने एक भी सिकुड़न न थी, वह नाटा व्यक्ति जितनी उम्र का था, उससे भी पन्द्रह वर्ष छोटा नज़र आ रहा था। अपने वक्ष पर वह सोने का 'सोवियत संघ का वीर' का सितारा लगाये था, जिसपर इस क़दर पालिश थी कि वह दमक रहा था, वह लेनिन पदक और 'वीरता के सम्मान' में प्राप्त पदक भी लगाये हुए था। सफ़ेद पोशाक वह अपने कंधे पर बरसाती की तरह डाले था, लेकिन उससे फ़ौजी पदचिह्न ढंक नहीं पाये थे। और वह सर्वांग रूप से, अपने पुराने फ़ौजी बूटों की नोक से लेकर मोम लगी मूंछों की नोकों तक, जो 'सूजे' की तरह ऐंठी हुई लहरा रही थीं, उस बहादुर रूसी सिपाही की भांति लगता था, जिसकी तस्वीर १९१४ के युद्ध-कालीन क्रिसमस कार्डों पर बनी रहती थी।

यह सिपाही विदा लेने के लिए अपने वार्ड के साथियों में से प्रत्येक की चारपाई तक गया। वह उनके फ़ौजी पदों से उन्हें पुकारता और इतनी फुर्ती से एड़ियां मारता कि उसकी ओर देखना भी आनन्द का विषय था।

वह जब आख़िरी चारपाई के पास पहुंचा तो असाधारण नम्रता के साथ बोल उठा, "मुझे विदा दीजिए, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार।"

"अलविदा स्तेपान। यात्रा सकुशल हो," कमिसार ने जवाब दिया और अपने दर्द को दबाते हुए सिपाही की ओर मुड़ा।

सिपाही घुटनों के बल बैठ गया और कमिसार का भारी-भरकम सिर अपने हाथों में लेकर, पुराने रूसी रिवाज के अनुसार उन्होंने एक दूसरे का तीन बार चुम्बन किया।

"अच्छे हो जाओ, सेम्योन वसील्येविच। भगवान तुम्हें स्वस्थ और दीर्घायु करे। तुम्हारा दिल सोना है, सोना। तुम हम सब के लिए पिता से भी अधिक रहे हो। मैं जब तक ज़िंदा रहूंगा, तुम्हें याद करूंगा," गहरे भावावेश में सिपाही बुदबुदाया।

"जाओ, अब जाओ, स्तेपान इवानोविच! इन्हें उत्तेजित नहीं होना चाहिए," क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना ने सिपाही की आस्तीनें खींचते हुए कहा।

"और नर्स, तुम्हारी कृपा और देखभाल के लिए तुम्हें धन्यवाद," स्तेपान इवानोविच ने नर्स की तरफ़ मुख़ातिब होकर अत्यन्त गम्भीर स्वर में कहा और सम्मानपूर्वक काफ़ी झुककर प्रणाम किया, "तुम हमारी सोवियत देवी हो, यही तो हो तुम!"

किंकर्त्तव्यविमूढ़ता वश लजाते हुए और अब क्या कहा जाये यह न समझ पाते हुए, वह दरवाज़े की ओर वापस मुड़ गया।

"हम तुम्हें किस पते पर लिखें, साइबेरिया को?" कमिसार ने मुसकुराते हुए पूछा।

"क्यों पूछते हो, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार? तुम जानते ही हो कि मोर्चे पर जानेवाले सिपाही को कहां लिखा जाता है," स्तेपान इवानोविच ने कुछ हड़बड़ाकर कहा और एक बार फिर झुककर प्रणाम कर–इस बार सभी की ओर–वह दरवाज़े से बाहर विलीन हो गया।

एक ख़ामोशी छा गयी और वार्ड ख़ाली मालूम होने लगा। बाद में इन लोगों ने अपनी रेजीमेंटों के विषय में, अपने साथियों के बारे में, और मोर्चे पर जाकर उन्हें जिन बड़ी-बड़ी कार्रवाइयों में भाग लेना है, उनके बारे में बातचीत छेड़ दी। वे सभी अब अच्छे होते जा रहे थे और इसलिए ये बातें अब महज़ सपना नहीं रह गयी थीं, बल्कि अमली असलियत बन गयी थीं। कुकूश्किन अब गलियारों में घूम-फिर लेता था जहां वह नर्सों के काम में मीन-मेख निकालता, स्वास्थ्य-लाभ करते जानेवाले अन्य रोगियों को चिढ़ाता और अनेक के साथ झगड़े भी मोल ले बैठता था। टैंक-चालक भी चारपाई से निकलने लगा था और अक्सर गलियारे में लगे शीशे के सामने खड़े होकर बड़ी देर तक, अपने चेहरे, गर्दन और कंधों की परीक्षा करता खड़ा रहता, जिन पर से अब पट्टियां उतर गयी थीं और घाव भर रहे थे। अन्यूता के साथ उसका पत्र-व्यवहार जितना ही सजीव होता जाता और उसके विश्वविद्यालय सम्बन्धी मामलों से वह जितना ही सर्वांग रूप में परिचित होता जाता, उतनी ही सूक्ष्मता से वह अपने जले हुए और विकृत चेहरे की परीक्षा करता। झुटपुटे में अथवा वार्ड की कम रोशनी में वह इतना बुरा न मालूम होता, वास्तव में अच्छा ही लगता था: नखशिख सुन्दर था–ऊंचा मस्तक और छोटी-सी सीधी नाक, छोटी-सी काली मूंछें जो अस्पताल में उग आयी थीं और ताज़गी तथा यौवन से पूर्ण दृढ़ होंठ।

किन्तु उज्ज्वल प्रकाश में यह दिखाई देने लगता था कि उसके चेहरे पर घावों के चिह्न हैं जिनके आसपास चमड़ी सख़्ती से तनी हुई है। जब कभी वह उत्तेजित हो उठता या स्नान-चिकित्सा से ताजा होकर लौटता तो ये चिह्न उसकी आकृति को भयावना बना देते और इन क्षणों में वह शीशे के सामने जब अपनी परीक्षा करता तो उसे रोना आ जाता। उसे सान्त्वना देने का प्रयत्न करते हुए मेरेस्येव ने कहा :

"क्या बावले हो रहे हो? तुम्हें कोई फ़िल्म अभिनेता तो बनना नहीं, कि बनना है? अगर तुम्हारी वह लड़की सच्ची होगी, तो उसके लिए कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। और फ़र्क़ पड़ता है, तो इसका मतलब है कि वह मूर्ख है। ऐसी सूरत में, उसपर लानत भेजो। उससे छुटकारा भला। तुम्हें कोई दूसरी अच्छी मिल जायेगी।"

"सब औरतें एक-सी होती हैं," कुकूश्किन बीच में बोल पड़ा।

"आपकी मां कैसी है?" कमिसार ने पूछा। उसने "तुम" के बजाय "आप" का सम्बोधन किया। वार्ड में कुकूश्किन ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसको वह इतने तकल्लुफ़ाना ढंग से सम्बोधित करता था।

इस शान्त प्रश्न से लेफ़्टीनेंट पर क्या प्रभाव पड़ा, यह वर्णन करना कठिन है। वह चारपाई पर उछल पड़ा, उसकी आंखें भयानक रूप से चमक उठीं और उसका चेहरा चादर से भी अधिक सफ़ेद पड़ गया।

"अब आप माने! तो आप देख लीजिए कि दुनिया में कुछ अच्छी औरतें भी हैं," कमिसार ने समझौते के स्वर में कहा। "आप क्यों समझते हैं कि ग्रिगोरी भाग्यशाली नहीं है? जिन खोजा तिन पाइयां: जिंदगी में यही होता है।"

संक्षेप में सारा वार्ड पुनः प्रफुल्ल हो उठा। कमिसार ही एक व्यक्ति था जिसकी हालत बिगड़ती जा रही थी। उसे मार्फ़िया और कैम्फ़र से ज़िंदा रखा जा रहा था और कभी-कभी इसके फलस्वरूप वह सारे दिन दवा के आधे नशे में चारपाई पर बेचैनी के साथ लुढ़कता रहता। स्तेपान इवानोविच के चले जाने के बाद तो वह और भी तेज़ी से डूबता नज़र आने लगा। मेरेस्येव ने अनुरोध किया कि उसकी चारपाई कमिसार के और निकट सरका दी जाये ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह उसकी सहायता

कर सके। इस व्यक्ति की ओर वह अधिकाधिक आकर्षित होता महसूस कर रहा था।

अलेक्सेई जानता था कि पैरों के बिना उसका जीवन अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक कठिन और जटिल होगा, और इसलिए वह अन्तर्प्रेरणावश इस व्यक्ति की ओर आकृष्ट हो गया था जो हर बात के बावजूद असली ज़िंदगी जीना जानता था और जो अपनी रुग्णावस्था के बावजूद लोगों को चुम्बक की तरह आकर्षित कर लेता था। कमिसार अब शायद कभी ही अपनी अर्धचेतन अवस्था से उभर पाता था, मगर जब उसे बिल्कुल होश आ जाता तो वह फिर हमेशा की तरह हो जाता था।

एक बार, काफ़ी शाम गये, जब अस्पताल का कोलाहल शान्त हो गया और ख़ामोशी का साम्राज्य सिर्फ़ वार्डों से आनेवाले हल्के-से कठिनाई ही से कर्णगोचर खर्राटों, कराहों और सन्निपात के प्रलापों के कभी कभी भंग हो जाता था, तब गलियारे में सुपरिचित क़दमों की ज़ोरदार और भारी आहट सुनाई दी। दरवाज़े के कांच के शीशों से मेरेस्येव हल्की-सी रोशनी से आलोकित पूरे गलियारे की लम्बाई देख सकता था, जिसके अंत में एक मेज़ के सामने न जाने कब से जम्पर बनाती हुई एक नर्स बैठी थी। गलियारे के छोर पर वसीली वसील्येविच की लम्बी आकृति दिखाई दी – हाथ पीछे बांधे धीमे-धीमे चलते हुए। उनके आते ही नर्स उछल पड़ी, मगर उन्होंने अप्रसन्नता का भाव प्रगट कर उसे एक तरफ़ हो जाने का इशारा किया। उनकी पोशाक के बटन खुले हुए थे, सिर नंगा था और उनके मोटे, सफ़ेद बालों की कुछ लटें भौंहों पर लटक आयी थीं।

"वसीली वसील्येविच आ रहा है," मेरेस्येव कमिसार की ओर फुसफुसाया, जिसे वह कृत्रिम पैरों के विशेष डिज़ायन के बारे में बता रहा था।

वसीली वसील्येविच रुक गये, मानो राह में कोई रुकावट आ गयी हो। उन्होंने अपने को दीवाल का सहारा दिया, कुछ बड़बड़ाये और फिर दीवाल से अलग हो गये और वार्ड नम्बर बयालीस में प्रवेश किया। वे अपना माथा रगड़ते हुए कमरे के मध्य में रुक गये, मानो कोई बात याद करने का प्रयत्न कर रहे हों। कीटाणुनाशक स्पिरिट की गंध उनके चारों ओर मंडरा रही थी।

"एक मिनट बैठ जाइये, वसीली वसील्येविच। आइये हम थोड़ी-सी गपशप कर लें," कमिसार बोला।

प्रोफ़ेसर अपने पैर घसीटते हुए चारपाई के निकट आये, इतने बोझिल ढंग से चारपाई के किनारे बैठ गये कि स्प्रिंगें कराह उठीं, और उन्होंने अपनी कनपटियां रगड़ीं। पहले भी वे युद्ध की गतिविधि के विषय में बात करने के लिए कमिसार की चारपाई के पास रुक जाते थे। स्पष्ट था कि उन्होंने अपने तमाम रोगियों में कमिसार को ही छांटा है और इसलिए आज इतनी रात गये उनका आना कोई आश्चर्यजनक न था। लेकिन मेरेस्येव को महसूस हुआ कि ये दोनों कुछ ऐसी बातें करना चाहते हैं, जो किसी तीसरे के कानों के लिए नहीं हैं, इसलिए उसने आखें बंद कर लीं और सोने का बहाना कर लिया।

"आज उनतीस अप्रैल है – उसका जन्म-दिन। वह आज छत्तीस वर्ष का हो गया – नहीं, हो गया होता," प्रोफ़ेसर ने धीमे स्वर में कहा।

बड़ी ही कठिनाई से कमिसार ने कम्बल के नीचे से अपना सूजा हुआ हाथ निकाला और वसीली वसील्येविच के हाथ पर रख दिया। एक कल्पनातीत घटना घट गयी: प्रोफ़ेसर फूट-फूटकर रो पड़े। इतने विशाल और शक्तिशाली हृदयवाले व्यक्ति को इस तरह रोते देखना बड़ा पीड़ाजनक था। अलेक्सेई ने अनिच्छापूर्वक अपने कंधे सिकोड़े और कम्बल से सिर ढंक लिया।

"वहां जाने से पहले वह मुझसे मिलने आया था," प्रोफ़ेसर ने बात जारी रखी, "उसने मुझसे कहा कि वह नागरिक सेना में भरती हो गया है और मुझे बोला कि मैं उसकी जगह किसी दूसरे आदमी को नियुक्त कर लूं। वह यहां मेरे साथ काम करता था। मैं इतना हैरान रह गया कि उसके ऊपर चिल्ला उठा। मैं यह ज़रा भी न समझ सका कि चिकित्सा विज्ञान का कैंडिडेट और एक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक बंदूक़ क्यों उठाये। लेकिन उसने कहा – मुझे उसका एक एक शब्द याद है – उसने कहा, 'कभी ऐसा भी वक़्त आता है पिताजी कि जब चिकित्सा-कैंडिडेट को भी बंदूक़ संभाल लेनी चाहिए!' उसने इतना कहा और मुझसे फिर पूछा, 'मेरा काम कौन संभालेगा?' मुझे सिर्फ़ इतना ही करना था कि टेलीफ़ोन कर देता – और फिर कोई बात नहीं होती, कोई बात नहीं, रत्ती भर भी नहीं, समझ

रहे हो तुम। वह एक फ़ौजी अस्पताल में एक विभाग का प्रधान था... सच है या नहीं?"

वसीली वसील्येविच ने बोलना बंद कर दिया, लेकिन भर्राहट के साथ भारी सांसें लेने की आवाज़ सुनी जा सकती थी। वे फिर आगे बोले :

"यह मत करो, प्यारे भाई। अपना हाथ हटा लो। मैं जानता हूं कि हिलने-डुलने में तुम्हें कितनी पीड़ा होती है... हां, मैं सारी रात बैठा सोचता रहा कि क्या किया जाये। तुम्हें पता है, मैं एक और व्यक्ति को जानता था—किससे मेरा मतलब है, यह तुम जानते ही हो—उसका एक बेटा था, जो अफ़सर था और वह लड़ाई के शुरू के दिनों में ही मारा गया। तुम्हें मालूम है कि उस पिता ने क्या किया? उसने अपने दूसरे बेटे को भी युद्ध में भेज दिया—लड़ाकू विमानों की टुकड़ी में विमान-चालक की हैसियत से भेज दिया, जो युद्ध में सबसे ख़तरनाक काम होता है... उस समय मुझे उस व्यक्ति की याद आ गयी और मैं जिस तरह सोच-विचार कर रहा था, उसपर मुझे ख़ुद शर्म आयी और इसलिए मैंने टेलीफ़ोन नहीं किया...

"क्या अब आपको अफ़सोस होता है?"

"नहीं तो। क्या इसी को तुम अफ़सोस करना कहते हो? मैं अपने आपसे पूछता घूमता हूं: क्या अपने एकमात्र बेटे का हत्यारा मैं ही हूं? वह यहां मेरे साथ रह सकता था और हम दोनों मिलकर देश के लिए उपयोगी कार्य करते होते। उसमें वास्तविक प्रतिभा थी—स्फूर्तिवान, साहसी, बुद्धिमान। वह सोवियत चिकित्सा का गौरव बन सकता था—अगर उस दिन मैंने टेलीफ़ोन कर दिया होता!"

"क्या आपको अफ़सोस है कि आपने टेलीफ़ोन नहीं किया?"

"क्या कहते हो? आह, हां... मैं नहीं जानता। मैं नहीं जानता।"

"मान लो आज फिर ऐसी परिस्थिति पैदा हो तो क्या आप पहले से भिन्न कार्य करेंगे?"

ख़ामोशी छा गयी। रोगियों की नियमित सांसें सुनाई दे रही थीं। चारपाई बड़े ताल के साथ चरमरा उठी—स्पष्ट था कि प्रोफ़ेसर गहन चिन्तन में लीन होकर अपने शरीर को इधर-उधर हिला-डुला रहे थे—और हीटिंग नलियों में पानी खट-खट बोल रहा था।

"फिर ?" कमिसार ने ऐसे स्वर में पूछा कि जिसमें गहरी सहानुभूति ग्रौर सद्भावना गूंज उठी।

"मैं नहीं जानता... तुम्हारे सवाल का कोई तैयारशुदा जवाब नहीं हो सकता। मैं नहीं जानता। मेरा ख़्याल है कि फिर वही बात दोहरायी जायेगी, मैं फिर उसी ढंग से व्यवहार करूंगा। मैं दूसरे पिताग्रों से किसी तरह बेहतर नहीं हूं, तो बुरा भी नहीं हूं... युद्ध कितनी भयावनी चीज़ है..."

"ग्रौर यक़ीन मानिये कि ऐसे भयानक समाचार को बर्दाश्त करना दूसरे पिताग्रों के लिए भी इतना ही ग्रासान नहीं है जितना कि ग्रापके लिए। तनिक भी ग्रासान नहीं।"

वसीली वसील्येविच बड़ी देर तक ख़ामोश बैठे रहे। वे क्या सोच रहे थे, मंद गति से बीतती चली जानेवाली उन घड़ियों में उनके ऊंचे झुर्रीदार मस्तक के पीछे कौनसे विचार चक्कर काट रहे थे? ग्रंत में वे बोले :

"हां, तुम ठीक कहते हो। उसके लिए भी वह कोई ग्रासान न था, फिर भी उसने दूसरे बेटे को भेज दिया... धन्यवाद, प्यारे दोस्त, धन्यवाद, भाई! हमें इसे बर्दाश्त करना ही होगा..."

वह चारपाई से उठ बैठे, ग्राहिस्ते से उन्होंने कमिसार का हाथ कम्बल के नीचे रख दिया; उसके कंधों तक कम्बल खींच दिया ग्रौर ख़ामोशी के साथ कमरे से बाहर हो गये।

बहुत रात बीते कमिसार को बुरी तरह दौरा ग्राया। ग्रचेत ग्रवस्था में वह बिस्तर पर लुढ़कने लगा – दांत पीसते हुए ग्रौर ज़ोर से कराहते हुए। यकायक वह ख़ामोश पड़ जाता ग्रौर लम्बा लेटा रह जाता, ग्रौर हर ग्रादमी यह समझता कि ग्रंतकाल निकट ग्रा गया है। उसकी हालत इतनी ख़राब थी कि वसीली वसील्येविच ने – जो ग्रपने बेटे के मारे जाने के बाद, ग्रपने बड़े भारी, ख़ाली निवास-स्थान से हटकर ग्रस्पताल के छोटे कमरे में ग्रा गये थे, जहां वे मोमजामे से मढ़े कोच पर सोया करते थे – यह हुक्म दे दिया कि कमिसार की चारपाई के चारों ग्रोर परदा लगा दिया जाये, जो – जैसा कि सभी जानते हैं – इस बात का चिह्न था कि रोगी के 'वार्ड नम्बर पचास' में भेजे जाने की सम्भावना है।

कैम्फ़र और ऑक्सीजन की सहायता से उन्होंने उसकी नब्ज़ फिर चालू कर दी और रात्रिकालीन सर्जन और वसीली वसील्येविच, शेष रात में जितना भी सम्भव हो सके, उतनी नींद लेने चले गये। क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना, आंसू-सना और चिन्तित चेहरा लिये, पर्दे के अंदर रोगी की शय्या के पास बैठी रह गयी। मेरेस्येव न सो सका, बल्कि आतंक भाव से सोचता रहा, "क्या अंत आ गया है?" स्पष्ट ही कमिसार अभी भी बड़ा पीड़ाग्रस्त था। सन्निपात की अवस्था में वह लुढ़कता रहा और कोई शब्द दोहराता रहा जो मेरेस्येव को "दे दो," "दे दो," "मुझे दे दो..." जैसा लगता रहा।

क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना यह सोचकर कि रोगी प्यासा है पर्दे के बाहर आयी और कांपते हुए हाथों से एक गिलास में पानी ढाल ले गयी।

लेकिन रोगी को प्यास नहीं थी। गिलास उसके जमे हुए दांतों से टन-टन कर उठा और पानी तकिये पर बिखर गया; मगर वह फिर भी, कभी आदेशात्मक स्वर में और कभी प्रार्थना के स्वर में वही शब्द दोहराता रहा जो "दे दो" जैसा मालूम होता था। यकायक मेरेस्येव को अहसास हुआ, यह शब्द "दे दो" नहीं, "जीने दो" है, और यह महामानव अपनी अवशिष्ट शक्ति के एक एक कण से मृत्यु को दूर रखने का प्रयत्न कर रहा है।

थोड़ी देर बाद कमिसार शान्त हो गया और उसने अपनी आंखें खोल दीं।

"शुक्र है ख़ुदा का!" राहत से क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना बुदबुदायी और पर्दे की तह करने लगी।

"मत करो! रहने दो!" कमिसार ने विरोध किया, "इसे मत हटाओ, नर्स प्रिये। इस तरह बड़ा आराम मिलता है। और रोना बंद करो; वैसे ही दुनिया में कच्चापन बहुत ज़्यादा है... तुम रो क्यों रही हो, मेरी सोवियत देवी?.. तरस आता है कि हमें अप्सराएं, तुम जैसी अप्सराएं भी तभी मिलती हैं जब हम... उस जगह की दहलीज़ पर पहुंच जाते हैं।"

१०

अलेक्सेई की मानसिक अवस्था अत्यन्त विचित्र थी।

जिस क्षण से उसे यह विश्वास हो गया कि अभ्यास के द्वारा, पांव विना भी, हवाई जहाज़ उड़ाना सीख लेना सम्भव है, और वह फिर विमान-चालक बन सकता है, तभी से उसके ऊपर जीवन और सक्रियता की उत्कट आकांक्षा सवार हो गयी।

अब उसके जीवन का एक उद्देश्य था: किसी लड़ाकू विमान को चला पाना और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वह उसी अंध दृढ़ता से जुट गया जिससे वह पैर खो देने के बाद अपने ही लोगों को प्राप्त करने के लिए चारों हाथ-पैरों के बल रेंगता रहा था। बाल्यकाल से ही आगे की ओर देखने का अभ्यासी होने के कारण उसने सुनिश्चित रूप से सबसे पहले यह निर्धारित किया कि अमूल्य समय बरबाद किये बिना, यथासम्भव कम से कम दिनों में वह अपना लक्ष्य कैसे प्राप्त कर सकता है। और इसलिए उसने निश्चय किया कि, प्रथमतः, उसे शीघ्र ही अच्छे हो जाना चाहिए, स्वास्थ्य-लाभ कर लेना चाहिए और वह शक्ति प्राप्त कर लेना चाहिए जो भूखे रहने के कारण वह खो बैठा था, और इसलिए उसे और अधिक खाना तथा और अधिक सोना चाहिए। दूसरे, उसे विमान-चालक के गुण पुनः प्राप्त कर लेने चाहिए और इसलिए चारपाई से लगा व्यक्ति जितनी जिमनास्टिक कसरतें करने के योग्य होता है, उन सबके द्वारा अपने को शारीरिक रूप से विकसित करना चाहिए। तीसरे—और यही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और कठिन था—उसे अपनी टांगों को, पांवों और पिंडलियों के एक हिस्से के बिना ही, इतना विकसित कर लेना चाहिए ताकि उनकी शक्ति और लोच सुरक्षित रहे, और बाद में, जब उसके कृत्रिम अवयव लग जायें, तो उनसे वह सभी काम करना सीख ले जो हवाई जहाज़ चलाने के लिए आवश्यक होते हैं।

विना पांव आदमी के लिए चलना-फिरना भी कठिन होता है। फिर भी मेरेस्येव हवाई जहाज़ चलाने का और वह भी लड़ाकू विमान चलाने का इरादा कर रहा था। लड़ाकू विमान चलाने के लिए और वह भी आकाश-युद्ध की कौंध में, जब हर बात का हिसाब एक सेकंड के भी हिस्से

करके लगाया जाता है और सारी गति का अत्यंत तीव्र और सहज होना आवश्यक होता है, तब पैरों को कार्य-संचालन में इतना सूक्ष्म, इतना कुशल और सबसे बड़ी बात यह कि इतना वेगवान होना चाहिए जितना कि हाथ होते हैं। उसे अपने को इस हद तक अभ्यासी बनाना होगा कि उसकी टांगों के ठूंठ से जुड़ी लकड़ी और चमड़ा इस प्रकार क्रियाशील हों, मानो वे शरीर के सजीव अंग हों।

उड़ान की कला से परिचित व्यक्ति को यह बात असम्भव मालूम होगी, मगर अलेक्सेई को अब विश्वास हो गया था कि यह बात मानवीय रूप से सम्भव है और ऐसी स्थिति में वह इस कार्य में निस्संदेह सफल होगा। और इसलिए वह अपनी योजना पूरी करने में जुट गया। वह अपने लिए निर्धारित सभी इलाजों और दवाओं को इतनी नियमबद्धता से ग्रहण करता कि इसपर उसे स्वयं ही आश्चर्य होने लगा था। वह ख़ूब खाता और विशेष भूख न भी मालूम होती तब भी दूसरी बार परोसने की मांग करता। चाहे कोई भी सूरत पैदा हो जाये, वह अपने को निर्धारित घंटों तक सोने के लिए मजबूर करता और भोजन के बाद थोड़ी देर ऊंघ लेने तक के लिए उसने अपने को अभ्यस्त बना डाला, हालांकि उस जैसे क्रियाशील और स्फूर्त्तिवान प्रकृति के व्यक्ति के लिए यह घृणास्पद था।

अपने को खाने, सोने और दवा पीने के लिए मजबूर करना उसके लिए कठिन नहीं था। मगर जिमनास्टिक की बात और ही थी। उसने पहले कभी नियमपूर्वक जो कसरतें की थीं, वे एक पैर-विहीन, चारपाई से लगे व्यक्ति के लिए अनुपयुक्त थीं। इसलिए उसने नयी कसरतों का आविष्कार किया: वह घंटों तक कमर पर हाथ रखकर अपने शरीर को आगे, पीछे और अग़ल-बग़ल, दायें से बायें और बायें से दायें झुकाता रहता और वह अपने सिर को इधर-उधर इतनी तेज़ी और फुर्त्ती से घुमाता कि रीढ़ की हड्डी तड़कने लगती। वार्ड के साथी इन कसरतों के बारे में उसके साथ मज़ाक़ करते और कुकूश्किन उसे व्यंग्यपूर्वक बधाई देता और उसे ज्नामेन्स्की बन्धुओं, लेदोमेग या अन्य सुप्रसिद्ध दौड़बाज़ों के नाम से पुकारता। कुकूश्किन को इन कसरतों से नफ़रत थी और वह इन्हें भी महज़ अस्पताली सनकों में से एक समझता था। अलेक्सेई जैसे ही अपनी कसरतें शुरू करता, वह भन्नाता और बड़बड़ाता गलियारे की राह लेता।

जब उसकी टांगों की पट्टियां हटा दी गयीं और वह अपने बिस्तरे पर तनिक और आज़ादी के साथ हिलने-डुलने के योग्य हो गया तो अलेक्सेई ने एक और कसरत शुरू कर दी। चारपाई के पांवदान की तरफ़ लगे सीखचे में वह अपनी टांग का ठूंठ फंसा लेता, कमर पर हाथ रख लेता और अपने शरीर को आगे की ओर जहां तक सम्भव होता झुकाता चला जाता और फिर पीछे की ओर झुकाता। हर रोज़ वह झुकने की गति कम करता जाता और संख्या बढ़ाता जाता। तभी उसने अपने पैरों के लिए कुछ कसरतें निकाल लीं। वह पीठ के बल लेट जाता और बारी बारी से पैर मोड़कर घुटने को वक्ष की ओर समेट लेता फिर पैर को आगे फेंक देता। जब उसने पहली बार यह कसरत की, तो वह समझ गया कि आगे उसे कितनी भारी और शायद असाध्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। टांगों को समेटने में – जिनसे पिंडुलियों तक पांव काटकर अलग कर दिये गये थे – उसे सख़्त दर्द होता था। सारी चेष्टाओं में हिचकिचाहट और अनियमितता थी। उनका हिसाब लगाना उतना ही कठिन था जितना क्षत-विक्षत पंख या पूंछ का हवाई जहाज़ चलाना। मानसिक रूप से अपनी तुलना वायुयान से करने पर अलेक्सेई यह देखता कि अगर किसी कारण शरीर का आदर्श संतुलन गड़बड़ हो जाये तो फिर चाहे उसका शरीर स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रहे, मनुष्य अपने विभिन्न भागों का वह तारतम्य कभी स्थापित नहीं कर सकता जिसका अभ्यास उसे बचपन से हो जाता है।

टांगों की कसरतों से मेरेस्येव को सख़्त दर्द होता, लेकिन हर दिन वह पिछले दिन के मुक़ाबले कसरतें एक मिनट अधिक कर लेता। वे क्षण जब उसकी आंखों में अनामंत्रित आंसू भर आते और अनिच्छित कराह को दबाने के लिए वह होंठों को दांतों से इतने कसकर दबा लेता कि ख़ून बहने लगता, बड़े भयंकर क्षण होते। लेकिन वह अपने को ये कसरतें करने के लिए विवश करता रहा – पहले दिन में एक बार और बाद में दिन में दो बार। हर पारी के बाद वह असहाय-सा तकिये पर लुढ़क जाता और हैरान रह जाता कि दोबारा वह इन्हें फिर कर सकेगा या नहीं। लेकिन जब निश्चित घड़ी आ जाती तो वह फिर इसी क्रिया में जुट जाता। शाम को वह अपनी जांघों की मांसपेशियों को छूकर देखता और उसे संतोष होता कि कसरतें शुरू करने के वक़्त उसे अपने हाथों के स्पर्श से वे जितने फुसफुसे मांस की और

मोटी मालम हुई थीं, वैसे अब नहीं हैं, बल्कि उस तरह की सुदृढ़ मांसपेशियां बन गयी हैं जैसी कि कभी थीं।

मेरेस्येव के सारे विचार उसके पैरों पर केन्द्रित रहते थे। कभी-कभी जब विचारों में खो जाता तो उसे पैरों में दर्द महसूस होता और जब वह अपनी टांगों की स्थिति बदलता तभी उसे याद पड़ता कि उसके पांव तो अब हैं ही नहीं। बहुत दिनों तक, किसी स्नायुगत दोष के कारण, कटे हुए पैर शरीर के साथ सजीव सम्बन्ध बनाये रहे; यकायक उनमें टीस उठने लगती, नम मौसम में दर्द होने लगता और कभी-कभी दुखने तक लगते। अपने पैरों की तरफ़ उसका दिमाग़ इतना लगा रहता था कि कभी-कभी वह नींद में अपने को बिल्कुल हृष्ट-पुष्ट और चलने-फिरने में स्फूर्तिवान पाता। वह सपना देखता कि "अलर्ट" बज गया है और वह अपने हवाई जहाज़ की ओर दौड़ गया है, उसके पंख पर उछलकर चढ़ गया है, कॉकपिट में गद्दी पर बैठ गया है और उधर यूरा इंजिन से हुड हटा रहा है और वह स्वयं पैडलों पर पांव जमा रहा है। कभी वह और ओल्गा, हाथ में हाथ लिये, फूलों से भरे स्तेपी मैदान में, गर्म और नम भूमि के सुहावने स्पर्श का आनन्द लूटते हुए अपनी पूरी शक्ति से नंगे पैर भागते नज़र आते। वह कितना भला लगता। लेकिन जाग पड़ता और देखता कि अब उसके पैर नहीं हैं। कितना निराशाजनक होता था।

ऐसे स्वप्नों के बाद अलेक्सेई कभी कभी मायूस हो जाता। वह सोचने लगता कि व्यर्थ ही अपने शरीर को यंत्रणा दे रहा है, अब वह कभी न उड़ पायेगा और न अब स्तेपी के मैदानों में नंगे पांव दौड़ सकेगा कमीशिन की उस प्यारी-प्यारी लड़की के साथ, जो उसे उतनी ही अधिक प्रिय और उतनी ही अधिक मनोवांछित होती जा रही है जितना ही अधिक काल-चक्र उन्हें एक दूसरे से दूर रख रहा है।

ओल्गा के साथ अपने सम्बन्धों का स्मरण कर अलेक्सेई को सुख अनुभव न होता। लगभग हर सप्ताह उसे क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना "नृत्य" करने के लिए यानी चारपाई पर पड़े-पड़े ही अपने ही शरीर को झटका देने और ताली बजाने के लिए मजबूर करती ताकि उसे वह पत्र दिया जा सके जिसपर उसी सुपरिचित गोल-गोल, स्वच्छ, स्कूली लड़की जैसी लिखावट में पता लिखा होता था। ये पत्र अधिकाधिक लम्बे और प्यारे होने लगे

थे, मानो लड़की का युवा प्रेम, जिसमें युद्ध से बाधा पड़ गयी थी, अधिकाधिक परिपक्व होता जा रहा था। वह उन पंक्तियों को बड़ी विरहातुरता और उद्विग्नता के साथ पढ़ता, क्योंकि वह समझता था कि उसे उनका उसी प्रकार प्रत्युत्तर देने का कोई अधिकार नहीं है।

लकड़ी के कारखाने के प्रशिक्षण विद्यालय में जिन सहपाठियों ने साथ साथ पढ़ा था और रोमानी भावनाओं को संजोया था, जिसको उन्होंने बड़ों की नक़ल उतारकर प्रेम कह डाला था, वे सहपाठी बाद में छे-सात साल के लिए बिछुड़ गये। पहले तो लड़की टेक्निकल स्कूल में पढ़ने चली गयी। जब वह लौटी और कारख़ाने में मेकेनिक की हैसियत से काम करने लगी, तब तक अलेक्सेई क़स्बा छोड़ चुका था और उड्डयन विद्यालय में अध्ययन करने लगा था। वे फिर मिले युद्ध छिड़ने के ठीक पहले। इस मिलन की आकांक्षा उन दोनों में किसी ने न की थी और शायद वे एक दूसरे को भूल भी चुके थे—उनके विछोह के बाद न जाने कितना पानी बह चुका था। लेकिन एक वसंती शाम अलेक्सेई अपनी मां के साथ कहीं जा रहा था, तभी उलटी दिशा से कोई लड़की आयी। उसने उस लड़की की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, सिर्फ़ यह देख पाया कि उसकी टांगें सुडौल थीं।

"उस लड़की को तुमने अभिवादन क्यों नहीं किया? वह ओल्गा थी!" उसकी मां ने उसे झिड़क दिया और लड़की का कुलनाम बताया।

अलेक्सेई ने मुड़कर देखा। लड़की भी पीछे देखने के लिए घूम गयी थी। उनकी आंखें मिलीं और अलेक्सेई को लगा कि उसका हृदय उछलने लगा है। मां को छोड़कर वह उस लड़की की ओर दौड़ा जो एक नंगे पोपलर वृक्ष के तले रुक गयी थी।

"तुम?" उसने आश्चर्य से संबोधन किया और उस लड़की की ओर इस भांति देखने लगा कि मानो यह अनूठा और सुन्दर जीव समुद्रपार से आया है, और किसी विचित्र संयोग से इस वसंती शाम को शान्त और कीचड़ भरी सड़क पर निकल आया हो।

"अलेक्सेई?" लड़की ने भी उसी विस्मय और अविश्वास के स्वर में सम्बोधित किया।

छे या सात साल के विछोह के बाद वे पहली बार एक दूसरे को निहारते रहे। अलेक्सेई ने अपनी आंखों के सामने सूक्ष्माकार लड़की को

देखा—सुन्दर, गोल, लड़कों जैसा चेहरा, लावण्यमयी और कोमल आकृति, नाक के ऊपर कुछ सुनहरी झाइयां। उस लड़की ने उसकी ओर अपनी बड़ी-बड़ी, भूरी, दमकती हुई आंखों से, हल्की रेखांकित भौंहों को किंचित उठाकर देखा जिनकी कोरें कुछ घनी थीं। प्रशिक्षण विद्यालय में जब वे आख़िरी बार मिले थे, तब वह जैसी थी—हृष्ट-पुष्ट, गोल चेहरा, गुलाबी कपोल, किंचित झगड़ालू बालिका, जो अपने पिता की चिकनी जाकेट पहने और उसकी बाहें उलटाये हुए गर्व से चलती थी—उस बालिका के चिह्न इस नवयौवना, लावण्यमयी लड़की में बहुत कम थे।

मां की सुधि भूलकर अलेक्सेई इस लड़की को निहारता खड़ा रहा और उसे ऐसा लगा कि इन वर्षों में कभी भी वह इसे भुला नहीं पाया है और इस मिलन का स्वप्न देखता रहा है।

"अच्छा तो तुम अब ऐसी लगने लगी हो!" आख़िरकार वह बोल पड़ा।

"कैसी?" उसने गूंजते हुए स्वर में पूछा और यह स्वर भी उससे बिल्कुल भिन्न था जो उसने तब सुना था, जब वे स्कूल में साथ साथ थे।

गली के कोने से हवा का एक झोंका आया और पोपलर की नंगी शाखाओं से गुज़रकर सीटी बजा उठा। लड़की के सुगठित पैरों से लिपटता-फड़फड़ाता उसका फ़्राक उड़ने लगा। हंसी की लहरियों की गूंज के साथ वह झुकी और बड़ी सहज और स्वभावतः सौन्दर्यपूर्ण गति से उसने अपना फ़्राक संभाल लिया।

"बस उसी तरह!" अलेक्सेई ने जवाब दिया और वह प्रशंसा के भाव को अब छिपाये न रह सका।

"तो किस तरह?" लड़की ने फिर हंसते हुए पूछा।

मां ने एक क्षण दोनों जवान व्यक्तियों की ओर देखा, किंचित दुखित भाव से मुसकुरायी और अपनी राह चली गयी। लेकिन वे एक दूसरे को सराहते हुए खड़े रहे, उत्साहपूर्वक बातें करते रहे—वे एक दूसरे की बात काट देते और वार्तालाप में इस तरह के विस्मयों की भरमार कर रहे थे जैसे "तुम्हें याद है?", "तुम्हें पता है?", "कहां है वह?", "क्या हो गया है उसे?.."

वे बड़ी देर तक इसी प्रकार बातचीत करते खड़े रहे—अंत में ओलगा ने पड़ोस के मकानों की खिड़कियों की तरफ़ इशारा किया जहां जिरेनियम के गमलों और देवदारों की शाखाओं के पीछे से उत्सुक चेहरे झांकते नज़र आ रहे थे।

"अगर तुम्हारे पास वक़्त हो तो चलो वोल्गा की तरफ़ चलें," ओलगा ने सुझाव दिया, और एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए—जो बात उन्होंने कभी बचपन तक में नहीं की थी—और सुध-बुध भूलते हुए, वे उस ऊंची पहाड़ी पर चढ़ गये जो नदी के किनारे सीधी खड़ी थी और जहां से वोल्गा के विस्तृत प्रसार और उसकी बाढ़ पर तैरते हुए हिम-खण्डों के शानदार जलूस का मनोहर दृश्य दिखाई देता था।

इसके बाद से मां को घर पर अपना प्यारा बेटा बहुत ही कम दिखाई देने लगा। कपड़ों की अधिक परवाह न करनेवाला अलेक्सेई अब अपने पतलूनों पर रोज़ लोहा करता; खड़िया से अपनी वर्दी के बटन साफ़ करता; वायुसेना के बैज से विभूषित सफ़ेद टोपी पहनता जिसे अक्सर परेड पर ही पहना जाता है, रोज़ ही दाढ़ी बनाता और शाम को शीशे के सामने कुछ देर आड़े-तिरछे, अग़ल-बग़ल देखकर ओलगा से मिलने चला जाता जो उस समय कारख़ाने से घर लौटती होती। दिन में भी वह जब-तब ग़ायब हो जाता खोया-खोया-सा रहता और पूछे गये सवालों का ऊटपटांग जवाब दे बैठता। मां की ममता ने उसे बता दिया कि लड़के को क्या हो गया है, और इसलिए सद्भावनापूर्वक उसने अपनी उपेक्षा किये जाने को माफ़ कर दिया और अपने को इस उक्ति से सान्त्वना दे दी: बूढ़े तो और बूढ़े होते ही जाते हैं, जवानों को बढ़ने देना चाहिए।

इन युवा व्यक्तियों ने आपस में एक बार भी अपने प्यार की चर्चा नहीं की थी। हर बार जब सांझ की किरणों से जगमगाती, मंदगामी वोल्गा के ऊंचे किनारों से सैर करके वह घर लौटता या क़स्बे के बाहर स्थित तरबूज़ों के खेतों से लौटता, जहां कोलतार की तरह काली और घनी धरती पर मोटी मोटी लताएं और मकड़ी के पैरों के आकार की गहरी हरी पत्तियां पड़ी हुई थीं, तो वह तेज़ी से ख़त्म होती हुई छुट्टियों के बाक़ी दिनों को गिनता और ओलगा के सामने हृदय खोलकर रख देने का निश्चय करता। लेकिन शाम फिर आती। वह कारख़ाने के दरवाज़े पर उससे मिलता और

उसके साथ लकड़ी के छोटे-से दुमंज़िले मकान तक जाता जहां उसका एक छोटा-सा कमरा था – इतना स्वच्छ और निर्मल जैसे हवाई जहाज़ का केबिन होता है। उधर जब कपड़े की अलमारी के खुले किवाड़ की आड़ में छिपी वह कपड़े बदलती, तो वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता और उसकी नंगी कुहनियों, कंधों और पैरों की तरफ़ से, जो किवाड़ के पीछे से झांक उठते थे, अपनी आंखें दूर रखने की कोशिश करता। फिर वह हाथ-मुंह धोने चली जाती और वही सफ़ेद सिल्क का ब्लाउज़ पहने, जिसे वह छुट्टी के दिन पहनती थी, वह ताज़गी, गुलाबी कपोल और गीले केश लिये वापस लौट आती।

और फिर वे सिनेमा, सर्कस या पार्क की सैर के लिये चले जाते। वे कहां जाते हैं, इससे अलेक्सेई के लिए कोई अंतर नहीं पड़ता था। वह सिनेमा के पर्दे को, सर्कस के क्रीड़ा-क्षेत्र को या इधर-उधर घूमते हुए लोगों को न देख पाता, वह सिर्फ़ उसी की तरफ़ निहारता और उसी की ओर देखता हुआ सोचता रह जाता, "बस, आज की रात घर की तरफ़ लौटते समय राह में ही मुझे प्रस्ताव रख देना चाहिए।" लेकिन राह भी ख़त्म हो जाती और वह साहस न जुटा पाता।

एक रविवार की सुबह वे वोल्गा के दूसरे किनारे के उपवन में सैर करने के लिए निकले। वह जब उसके घर उसे लेने गया तो वह अपनी दूध जैसी सफ़ेद पतलून और खुले कालर की क़मीज़ पहने था, जो उसकी मां के कथनानुसार उसके ताम्रवर्ण, चौड़े चेहरे के साथ ख़ूब फबती थी। जब वह पहुंचा तो ओल्गा तैयार थी। उसने एक रूमाल में लिपटा पार्सल अलेक्सेई को थमा दिया और वे दोनों नदी की ओर चल दिये। बूढ़े, पैर-विहीन मल्लाह ने – पहले विश्वयुद्ध का पंगु वीर, अड़ोस-पड़ोस के बच्चों का परमप्रिय और जिसने अलेक्सेई को बचपन में सिखाया था कि छिछले पानी में मछली कैसे पकड़ी जाती है – लकड़ी के ठूंठों के बल फुदकते हुए भारी नाव को धकेला और पतवार की हल्की-हल्की चोटों से खेने लगा। धारा को तिरछे काटती हुई, हल्के-से हिचकोले खाती हुई नाव ने दूसरी तरफ़ स्थित निचले साफ़ हरे रंग के किनारे तक पहुंचने के लिए नदी पार करना शुरू किया। लड़की नाव के किनारे पर हाथ रखे, गहन चिन्तन में लीन, जड़-सी बैठी थी और अपनी उंगलियों पर से पानी को बह जाने दे रही थी।

"चाचा अरकादी, क्या तुम्हें हमारी याद नहीं?" अलेक्सेई ने पूछा।

मल्लाह ने इन युवा चेहरों की ओर उपेक्षा से देखा और कहा:

"नहीं तो।"

"क्यों, यह क्या बात है? मैं हूं अलेक्सेई मेरेस्येव। तुमने मुझे सिखाया था कि छिछले पानी में कांटे से मछली कैसे पकड़ते हैं।"

"शायद सिखाया हो। तुम जैसे यहां बहुत से छोकरे खेलते-फिरते थे। मैं उन सबको नहीं याद रख सकता।"

नाव एक घाट के पास से गुज़री, जहां एक चौड़े पाल वाली नाव बंधी थी, जिसके फूले हुए पाल पर गर्वपूर्वक नाम लिखा था 'अव्रोरा' और फिर नाव चरमर करती रेत में फंस गयी।

"मेरी जगह अब यही है। अब मैं म्युनिसिपलिटी के लिए काम नहीं करता, अपना ही काम करता हूं!" चाचा अरकादी ने समझाया और पानी में उतरकर नाव को और ऊपर धकेलने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसके ठूंठ रेत में घुस गये, नाव भारी थी और वह उसे चढ़ा न पाया। "आप लोगों को कूदना पड़ेगा," उसने मंद स्वर से कहा।

"कितना हुआ?" अलेक्सेई ने पूछा।

"मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूं। तुम लोग इतने सुखी दिखाई देते हो कि तुम्हें कुछ ज्यादा ही देना चाहिए। लेकिन मुझे तुम्हारी याद नहीं पड़ती – याद ही नहीं आ रहा है।"

नाव से कूदने में उनके पैर भीग गये और ओल्गा ने सुझाव दिया कि जूते उतार दिये जायें। उन्होंने यही किया और नदी के नम और गर्म रेत को अपने नंगे पैरों से छू जाते ही वे इतना आनन्दित और उन्मुक्त अनुभव करने लगे कि घास पर बच्चों की तरह दौड़ने और उछलने-कूदने को उनका जी चाहने लगा।

"मुझे पकड़ो!" ओल्गा चिल्लायी और कछार पार कर वह निचले, हरे रंग के मैदान की तरफ़ दौड़ पड़ी और उसकी पुष्ट, धूप खाकर ताम्रवर्ण बनी टांगें चमकने लगीं।

अलेक्सेई पूरी ताक़त से उसके पीछे भागा, उसे अपने सामने एक रंगबिरंगा धब्बा मात्र नज़र आ रहा था, जो ओल्गा की हल्की, चमकीले रंगों वाली फ़्राक से बना था। वह दौड़ा तो जंगली फूल और चुक्र की

झाड़ियां उसके नंगे पैरों से लिपट झपटकर दर्दनाक चोट करने लगीं और उसे महसूस हुआ कि नर्म, नम और धूप से तप्त धरती उसके तलवों के नीचे धंस रही है; उसे लगा कि ओल्गा को पकड़ना उसके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, कि इसी पर उनके भावी जीवन का काफ़ी दारोमदार है और यहां, इस फूलों भरे उपवन में, उन्मत्तकारी सुगंधों के बीच उसे वह सब बातें बताना आसान होगा जिन्हें कहने के लिए वह अब तक साहस न जुटा पाया था। लेकिन ज्यों ही वह उसके पास पहुंचा और उसको पकड़ने के लिए ज्यों ही उसने हाथ बढ़ाया, त्यों ही वह लड़की अकस्मात मुड़ गयी, बिल्ली जैसी फुर्ती के साथ उसकी पकड़ से खिसक गयी और उल्लासपूर्वक, लहराती हुई हंसी के साथ भिन्न दिशा में भाग गयी।

वह इरादा कर चुकी थी कि पकड़ में न आयेगी, और उसने उसे पकड़ा भी नहीं। वह स्वयं ही मैदान से नदी की ओर मुड़ी और गर्म सुनहरी रेत पर लोट गयी – उसका चेहरा लाल हो गया था, मुंह खुला था और सांस फूलने के कारण वक्ष ऊपर-नीचे हो रहा था और वह लालसापूर्वक सांसें लेती हुई हंस रही थी। बाद में उसने फूलों भरे मैदान पर सफ़ेद, सितारों जैसे बाबूनों के बीच उसका फ़ोटो लिया। फिर उन्होंने स्नान किया, जिसके बाद वह आज्ञाकारी की भांति एक झाड़ी के पीछे चला गया और दूसरी ओर मुंह फेरकर खड़ा हो गया और इधर वह कपड़े बदलती और स्नान की पोशाक निचोड़ती रही।

उसने जब बुलाया तो अलेक्सेई ने देखा कि वह अपनी महीन, हल्की फ़ाक पहने और टर्किश तौलिया सिर पर लपेटे, बालू के ऊपर अपनी धूप से तपी ताम्रवर्ण टांगें सिकोड़े बैठी हुई है। घास पर स्वच्छ सफ़ेद रूमाल बिछाकर और उसे उड़ने से बचाने के लिए उसके चारों कोनों पर पत्थर रखकर उसने अपनी पार्सल की चीज़ें रख दी थीं। उन्होंने सलाद, ठंडी मछली, जो सावधानी से चिकने काग़ज़ में बंधी थी, और घर के बने बिस्कुट खाकर संतोष किया। वह नमक और राई तक लाना न भूली थी, जिन्हें वह कोल्ड क्रीम के नन्हें मर्तबानों में रख कर लायी थी। इस नन्हीं लड़की ने जिस गम्भीर और कुशल ढंग से मेज़बान का काम किया, उसमें न जाने क्या मनहर और मार्मिक बात थी। "अब कोई ढील-ढाल नहीं," अलेक्सेई ने अपने आप से कहा, "बस तय हुआ। आज की शाम ही मैं

उसके सामने प्रस्ताव रख दूंगा। मैं सिद्ध कर दूंगा, उसे समझा लूंगा कि उसे मेरी पत्नी बन जाना चाहिए।"

वे कुछ देर तक धूप खाते रहे; उन्होंने एक बार फिर स्नान किया और शाम को ओल्गा के कमरे में फिर मिलने का निश्चय करने के बाद वे धीरे धीरे नाव की ओर बढ़े—थकित, किन्तु आनन्दित भाव से। किसी कारण वहां न तो मोटरवाली किश्ती और न नौका ही थी। वे बड़ी देर तक और ज़ोर-ज़ोर से चाचा अरकादी को आवाज़ें देते रहे कि उनके गले बैठ गये। स्तेपी में सूरज डूबने लगा था। उज्ज्वल गुलाबी धूप की किरणें नदी के दूसरे किनारे पर स्थित पहाड़ी की सतह पर फिसलती हुई, मकानों पर और क़स्बे के वृक्षों के धूल-धूसरित, निश्चल शिखरों पर मुलम्मा चढ़ा रही थीं और खिड़कियों पर रक्तिम लालिमा बिखेर रही थीं। यह ग्रीष्म की सांझ गर्म और शान्त थी। लेकिन क़स्बे में कोई बात हो गयी थी। सड़कों पर, जो इस समय अक्सर वीरान रहा करती थीं, काफ़ी भीड़ थी; लोगों से भरे दो ट्रक गुज़र रहे थे, फ़ौजी पांत बनाये एक छोटी-सी टुकड़ी मार्च कर रही थी।

"चाचा अरकादी ने पी डाली होगी," अलेक्सेई ने अनुमान लगाया, "मान लो, हमें रात यहां काटनी पड़े तो?"

"जब तुम्हारे साथ हूं, तो मुझे कोई डर नहीं सतायेगा," ओल्गा ने उसकी तरफ़ बड़ी-बड़ी, चमकती हुई आंखों से देखकर उत्तर दिया।

अलेक्सेई ने उसको भुजाओं में बांध लिया और चुम्बन कर लिया—पहली और आख़िरी बार। नदी की ओर से पतवारों की खड़क सुनाई पड़ने लगी, दूसरी ओर से नाव मुसाफ़िरों को लादे चली आ रही थी। इस समय नाव की तरफ़ उन्होंने घृणा से देखा, फिर भी मानो किसी पूर्वबोध के वशीभूत होकर वे आज्ञाबद्ध से उसकी ओर बढ़ गये।

लोग ख़ामोशी के साथ नाव से उतर रहे थे। सभी छुट्टियों की पोशाकें पहने थे, मगर उनके चेहरों पर चिन्ता और उदासी के भाव थे। मुंह लटकाये हुए और किसी जल्दी में जान पड़नेवाले आदमी, और रोने के कारण लाल-लाल आंखोंवाली औरतें, बिना कुछ कहे-सुने, इस युवा जोड़े के पास से गुज़र गये। क्या हुआ है, यह न समझ पाते हुए वे दोनों नाव में कूद

गये। चाचा अरकादी ने उनके आनन्दित चेहरों की ओर देखे बिना ही कहा :

"युद्ध ... आज सुबह जन कमिसार रेडियो पर बोले थे।"

"युद्ध ? .. किससे ?" अपनी सीट से लगभग उछलते हुए अलेक्सेई ने पूछा।

"उन्हीं मनहूस जर्मनों से, और किससे ?" चाचा अरकादी क्रुद्ध भाव से पतवारें खड़काते हुए बड़बड़ाया, "मर्द लोग ज़िले के फ़ौजी हैडक्वार्टर के लिए रवाना भी हो गये हैं ... भरती।"

अलेक्सेई घर गये बिना सीधा हैडक्वार्टर गया और रात में १२.४० की गाड़ी से वह वायुसेना की उस टुकड़ी के लिए रवाना भी हो गया जिसमें उसकी नियुक्ति हुई थी — घर से सूटकेस तक लाने का वक़्त भी बड़ी मुश्किल से मिला था, ओल्गा से विदा तक न ले पाया था।

उन्होंने कभी ही पत्र-व्यवहार किया, इसलिए नहीं कि एक दूसरे के प्रति उनकी भावनाएं ठंडी पड़ गयी थीं या वे एक दूसरे को भूलते जा रहे थे। नहीं। वह अधीरतापूर्वक गोल-गोल, स्कूली लड़कियों जैसी लिखावट में लिखे गये पत्रों की प्रतीक्षा करता, उन्हें हमेशा जेब में रखता और जब अकेला होता तो उन्हें बार-बार पढ़ता। यही पत्र थे जिन्हें उस विपत्ति-काल में जब वह जंगल में मारा-मारा घूम रहा था, अपने हृदय से चिपकाये रहता था और निहारा करता था। लेकिन इन दो प्रेमियों के सम्बन्ध इतने आकस्मिक रूप से और इतनी अनिश्चित अवस्था में टूट गये थे कि जो पत्र वे लिखते, उनमें वे पुराने, घनिष्ठ मित्रों की तरह एक दूसरे से आदान-प्रदान करते और वह बड़ी बात लिखने से डरते जो अंततः अनकही रह गयी थी।

और अब अपने को अस्पताल में पाकर वह बड़ी हैरानी के साथ देखता, और ओल्गा का नया पत्र पाकर यह घबराहट और बढ़ती जाती, कि ओल्गा अब स्वयं उससे मिलने के लिए आगे बढ़ रही है, कि अब वह अपने पत्रों में बिल्कुल स्पष्ट रूप से अपनी आकांक्षाएं व्यक्त करने लगी है ; वह अफ़सोस प्रकट करती कि उस शाम चाचा अरकादी उसी ख़ास क्षण में आ गये और अलेक्सेई को विश्वास दिलाती कि उसे चाहे कुछ हो जाये, एक व्यक्ति है जिसपर वह हमेशा विश्वास कर सकता है, और उससे प्रार्थना करती कि विदेशों में घूमते हुए वह याद रखे कि एक घर है जिसे वह हमेशा

अपना समझ सकता है और युद्ध जब ख़त्म हो जाये तो वहीं लौट सकता है। ऐसा लगता कि ये पत्र जो लिख रही है वह एक नयी, भिन्न ओल्गा है। जब कभी वह उसके फ़ोटो की ओर देखता तो वह हमेशा सोचता कि अगर हवा का झोंका आये तो फूलोंवाली फ़्राक समेत वह डंडेलियन के पके बीजों की छतरी की भांति उड़ जायेगी। लेकिन ये पत्र लिख रही थी एक महिला—एक भली प्रेममयी महिला जो अपने प्रियतम की कामना और प्रतीक्षा कर रही थी। इससे उसे सुख भी होता और दुख भी; सुख होता अपने आपको रोकने के बावजूद और दुख होता इसलिए कि वह सोचता उसे ऐसा प्रेम प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं है और वह ऐसी स्वीकृतोक्तियों के योग्य नहीं है। यही देखो, उसे कभी यह लिखने का भी साहस नहीं हुआ कि अब वह वही स्फूर्तिवान, धूप में तपा ताम्रवर्ण युवक नहीं रहा जिससे कि वह परिचित थी, बल्कि वह चाचा अरकादी की तरह पंगु व्यक्ति है। इस भय से कि इससे उसकी बीमार मां मर जायेगी वह सत्य लिखने का साहस न कर सका, इसलिए अब ओल्गा को धोखा देने के लिए विवश हो गया, और जो भी पत्र वह लिखता था, उससे वह इस प्रवंचना में अधिकाधिक फंसता जाता था।

यही कारण है कि कमीशिन से उसे जो पत्र मिलते, उनसे उसके हृदय में इतनी अंतर्विरोधी भावनाएं जागृत होतीं—आनन्द और दुख, आशा और उद्विग्नता—वे उसे एक ही साथ हर्षित करतीं और यंत्रणा देतीं। एक बार झूठ बोलने के बाद वह दूसरे झूठ भी गढ़ने के लिए मजबूर होता चला जा रहा था, लेकिन इस काम में उसका हाथ सधा न था और इसी लिए ओल्गा को उसके उत्तर संक्षिप्त और शुष्क होते थे।

"मौसमी सार्जेन्ट" को सब बातें लिखना उसे आसान मालूम होता था। उसकी आत्मा सरल और अनुरागपूर्ण थी। आपरेशन के बाद मायूसी की हालत में जब उसे दुख किसी को सुनाने की आवश्यकता थी, उसने उसको एक लम्बा और निराशापूर्ण पत्र लिखा था। कुछ दिनों बाद उसे किसी कापी से फाड़े गये पन्ने पर टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट में लिखा गया एक पत्र मिला, जिसमें जगह जगह विस्मयादिबोधक चिह्न बिखरे थे जो ऐसे दिखाई देते थे मानो मीठी रोटी के ऊपर अजमोद के दाने बिखेर गये हों, और सारा पत्र आंसुओं के धब्बों से अलंकृत था। लड़की ने लिखा था कि

अगर फ़ौजी अनुशासन का ध्यान न होता तो वह सब काम फ़ौरन छोड़ देती और फ़ौरन उसकी देखभाल करने तथा दुख बंटाने चली आती। उसने और जल्दी-जल्दी पत्र लिखने का अनुरोध किया था। इस उलझे हुए पत्र में इतनी खुली और अर्द्ध बचकानी भावनाएं व्यक्त की गयी थीं कि उससे अलेक्सेई को दुख महसूस हुआ और वह अपने आपको कोसने लगा कि जब उस लड़की ने ओल्गा के पत्र दिये थे, तब उसने यह क्यों कह दिया कि ओल्गा उसकी शादीशुदा बहिन है। ऐसी लड़की को कभी धोखा नहीं देना चाहिए। और इसलिए उसने उसको स्पष्ट रूप से लिख दिया और जता दिया कि कमीशिन में उसकी मंगेतर है और वह अभी तक यह साहस नहीं कर सका कि उसको या अपनी मां को अपने दुर्भाग्य के विषय में सच-सच बता सके।

"मौसमी सार्जेन्ट" के पास से इस बार उत्तर इतनी जल्दी आया कि जिसकी उन दिनों आशा नहीं की जा सकती थी। लड़की ने लिखा था कि इस पत्र को वह एक मेजर के हाथों भेज रही है, जो उस रेजीमेंट में आया था और उसकी ओर आकर्षित हुआ था, और निस्संदेह, जिसकी उसने उपेक्षा की थी, यद्यपि वह भला और जिंदादिल आदमी था। पत्र की ध्वनि से ही यह स्पष्ट था कि उसे निराशा हुई थी और ठेस पहुंची थी, और यद्यपि उसने अपनी भावनाओं को संयमित करने का प्रयत्न किया था, मगर सफल नहीं हो सकी थी। उसे झिड़कते हुए कि उस बार उसने सच-सच क्यों नहीं बताया था, उसने अनुरोध किया था कि वह उसे अपना मित्र समझे। इस पत्र के अंत में एक बाद की लिखी हुई टिप्पणी थी, स्याही से नहीं, पेंसिल से लिखी हुई, जिसमें उसने "कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट" को आश्वासन दिया था कि वह सदा अनुरक्त मित्र रहेगी और कहा था कि अगर वह "कमीशिन वाली" उसके साथ विश्वासघात करे (मानो कि वह जानती थी कि युद्ध-क्षेत्र के पीछे औरतें किस तरह व्यवहार कर रही हैं) या अगर वह उसे प्रेम करना छोड़ दे या उसके पंगु हो जाने के कारण उससे विरक्त हो जाये, तो वह "मौसमी सार्जेन्ट" को न भुलाये, सिर्फ़ यह करे कि उसे सच के अलावा और कभी कुछ न लिखे। जो व्यक्ति यह पत्र लाया था, वह भली भांति बंधा एक पार्सल भी लाया था, जिसमें पैराशूट के कपड़े से बनाये गये, हाथ से कढ़े अनेक रूमाल थे जिनपर

ग्रलेक्सेई के नाम के प्रारम्भिक ग्रक्षर ग्रंकित थे, तम्बाकू रखने का एक बटुग्रा था जिसपर उड़ता हुग्रा हवाई जहाज़ बना था, एक कंघा था, 'मैग्नोलिया' यू-डि-कोलोन की एक शीशी थी ग्रौर एक साबुन था। ग्रलेक्सेई जानता था कि उन कठिन दिनों में फ़ौज में काम करनेवाली लड़कियों के लिए ये सब चीज़ें कितनी बहुमूल्य थीं। वह जानता था कि साबुन या यू-डि-कोलोन की शीशी को, जो उन्हें त्योहार के ग्रवसर पर उपहार के रूप में प्राप्त होती हैं, वे पवित्र तावीज़ की तरह रखती हैं, जिनसे उन्हें युद्ध से पहले के नागरिक जीवन का स्मरण हो ग्राता है। वह इन उपहारों का मूल्य जानता था ग्रौर इसलिए जब उसने इन चीज़ों को चारपाई के पास रखी ग्रलमारी के ऊपर रखा तो वह प्रसन्न भी हुग्रा ग्रौर लज्जित भी।

ग्रब जब कि वह विलक्षण उत्साह के साथ ग्रपनी पंगु टांगों को ग्रभ्यास करा रहा था ग्रौर पुनः उड़ सकने ग्रौर युद्ध करने का सपना देख रहा था, तब मिश्रित मनोभाव उसके हृदय में द्वन्द्व मचाने लगे। यह बात कि ग्रोल्गा को, जिसके लिए हर रोज़ उसका प्रेम गहरा होता जा रहा था, वह धोखा देने ग्रौर ग्रपने पत्रों में ग्रर्द्धसत्य बताने के लिए विवश हो गया था, ग्रौर एक लड़की को, जिसको वह मुश्किल ही से जानता था, सब कुछ साफ़-साफ़ बता देता था – यह तथ्य उसकी ग्रात्मा पर भारी बोझ बन गया।

लेकिन उसने निष्ठाभाव से संकल्प किया कि वह ग्रोल्गा को ग्रपने प्रेम के बारे में तभी बतायेगा जब उसके सपने सच हो जायेंगे, वह पुनः युद्ध करने की शक्ति प्राप्त कर लेगा ग्रौर फिर योद्धाग्रों की पांत में पहुंच जायेगा। ग्रौर इससे उसका वह उत्साह ग्रौर भी पुष्ट हो गया जिस उत्साह के साथ वह ग्रपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था।

११

पहली मई को कमिसार की मृत्यु हो गयी।

ग्रकस्मात ही उसका देहावसान हो गया। सुबह जब उसे नहलाया-धुलाया जा चुका ग्रौर बाल काढ़े जा चुके, तो उसने महिला हज्जाम से, जो उसकी दाढ़ी बना रही थी, मौसम के बारे में ग्रौर इस छुट्टी के दिन मास्को कैसा लग रहा है, उसके बारे में पूछताछ की। उसे यह सुनकर

प्रसन्नता हुई कि सड़कों पर से मोर्चेबंदी हटायी जा रही है, और इस बात पर उसने अफ़सोस प्रगट किया कि इस गौरवशाली वासंती दिन को कोई प्रदर्शन न होगा, उसने क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना को चिढ़ाया भी, जिसने आज की छुट्टी के अवसर पर अपने चेहरे की झाइयों को पाउडर पोतकर छिपाने का ज़ोरदार प्रयत्न किया था। वह कुछ बेहतर लग रहा था, और हर व्यक्ति को आशा होने लगी कि अब वह बच गया है और शायद अब स्वास्थ्य-लाभ की राह पर बढ़ रहा है।

कुछ दिनों से, चूंकि वह अख़बार नहीं पढ़ पाता था, उसकी चारपाई के पास रेडियो लगा दिया गया था। मूल रूप में इसे कान में लगाकर इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन ग्वोज़्देव ने, जो रेडियो के बारे में थोड़ा बहुत जानता था, उसमें कुछ सुधार किया जिससे रिसीवर कुछ लाउडस्पीकर जैसा हो गया और अब उससे सारी वार्ता और संगीत पूरे वार्ड में सुनाई देने लगा था। नौ बजे अनाउन्सर, जिसकी आवाज़ उन दिनों सारी दुनिया में परिचित थी और सुनी जाती थी, रक्षा-मंत्री का दिवसादेश पढ़कर सुनाने लगा। हर व्यक्ति दीवार से लटकी हुई उन दो काली टिकलियों की तरफ़ सारस जैसी गरदनें लम्बी कर बिल्कुल ख़ामोश हो गया – इस भय से कि कहीं कोई शब्द छूट न जाये। जब ये शब्द भी सुना दिये गये: "महान लेनिन की अजेय पताका के नीचे, विजय की ओर आगे बढ़ो!" तब भी वार्ड में गहरी शान्ति छायी रही।

"अब कृपया, मुझे यह समझाइये, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार..." कुकूश्किन ने कहना शुरू किया और यकायक भयग्रस्त होकर चीख़ उठा, "कामरेड कमिसार!"

हर व्यक्ति ने घूमकर देखा। कमिसार अपने बिस्तर पर सीधा, सख़्त, तना हुआ पड़ा था और छत में एक स्थान पर निस्पंद आंखों से घूर रहा था। उसके दुबले-पतले, पीले चेहरे पर एक शान्त पवित्र और गौरवपूर्ण भाव था।

"वह चल बसा है!" कुकूश्किन चीख़ उठा और उसकी चारपाई के पास घुटनों के बल गिर पड़ा। "चल बसा!"

किंकर्त्तव्यविमूढ़ परिचारिकाएं अन्दर और बाहर की तरफ़ दौड़ पड़ीं, नर्स भागी-भागी फिर रही थी, हाउस सर्जन अभी भी अपनी सफ़ेद पोशाक

के बटन लगाता दौड़ा आ रहा था। किसी की तरफ़ कोई ध्यान न देकर वह चिड़चिड़ा, ग़ैरमिलनसार लेफ़्टीनेंट कोंस्तंतीन कुकूश्किन मृतक व्यक्ति के शव पर आड़ा पड़ा हुआ था और बच्चे की तरह कम्बल में मुंह गड़ाये हुए रो रहा था, सिसक रहा था – कंधे उठ-गिर रहे थे, सारा शरीर कांप रहा था...

उसी शाम, अधख़ाली वार्ड नम्बर बयालीस में एक नया मरीज़ लाया गया। वह था मास्को सुरक्षा एयर डिवीजन की एक टुकड़ी का मेजर पावेल इवानोविच स्त्रुच्कोव। फ़ासिस्टों ने त्योहार के दिन मास्को पर बड़ा भारी हवाई हमला करने का निश्चय किया था, मगर कई टुकड़ियों में उड़कर आनेवाली उनकी विमान-सेना को बीच में ही रोक लिया गया, और भयंकर युद्ध के बाद, कहीं पोद्सोल्नेच्नाया क्षेत्र में उनका सफ़ाया कर दिया गया। सिर्फ़ एक 'जंकर्स' बमबार घेरा तोड़ने में सफल हुआ और वह बहुत ऊंचाई पर चढ़कर मास्को की ओर बढ़ चला। स्पष्ट था कि उसका चालक मास्को के समारोह को मारने के लिए हर क़ीमत पर अपने काम को पूरा करने का संकल्प कर चुका था। युद्ध की सरगर्मी में स्त्रुच्कोव ने इस 'जंकर्स' को देख ही लिया था और इसलिए वह फ़ौरन उसके पीछे दौड़ा। वह शानदार सोवियत हवाई जहाज़ चला रहा था, जिनसे उस समय लड़ाकू वायुसेना को सुसज्जित किया गया था। ज़मीन से छः किलोमीटर पर, आसमान में बहुत ऊंचाई पर, उसने जर्मन विमान को पकड़ ही लिया जब कि वह मास्को के बाहरी क्षेत्र के ऊपर आ गया था। वह कुशलतापूर्वक शत्रु के पीछे पहुंच गया, उसपर स्पष्ट रूप में निशाना साधा और अपनी मशीनगन का घोड़ा दबाया। उसने घोड़ा फिर दबाया, मगर वह चकित रह गया कि उसे सुपरिचित गूंज नहीं सुनाई दी। घोड़ा काम नहीं कर रहा था।

जर्मन हवाई जहाज़ उससे थोड़ा आगे हो गया था। वह बराबर उसके पीछे लगा रहा और उस विमान की पूंछ में लगी दोहरी मशीनगनों से बचता हुआ, अपने को सुरक्षित क्षेत्र में रखता रहा। मई के उस उज्ज्वल प्रभात में मास्को बारीक कुहरे में लिपटे मटमैले ढेर की भांति क्षितिज पर दिखाई पड़ने लगा था। स्त्रुच्कोव ने हताश भाव से भिड़ जाने की ठान ली। उसने अपनी पट्टियां खोल डालीं, अपने आसन के काकपिट का ढक्कन खोल दिया

और इस प्रकार अपनी मांसपेशियां तान लीं, मानो वह उछलने की तैयारी कर रहा हो। वह अपने वायुयान को बमबार के ठीक पीछे एक रेखा में ले आया और एक क्षण दोनों हवाई जहाज़, एक के पीछे एक, इस तरह उड़ते रहे मानो वे किसी अदृश्य सूत्र से बंधे हों। 'जंकर्स' के पारदर्शी ढक्कन में से स्लुच्कोव को जर्मन तोपची की आंखें साफ़-साफ़ दिखाई दे रही थीं, जो उसकी प्रत्येक गतिविधि को ताक रहा था और इस घात में बैठा था कि उसके विमान के पंख का एक हिस्सा भी सुरक्षित क्षेत्र से बाहर आ जाये। उसने देखा कि फ़ासिस्ट ने अपनी उत्तेजना के कारण टोप उतार डाला है – उसे उसके सुनहरे और लम्बे बाल तक नज़र आने लगे, जो लटों के रूप में उसके माथे पर लटक आये थे। दोहरी, भारी मशीनगन की काली नाक बराबर स्लुच्कोव की दिशा में घुमायी जा रही थी और सजीव प्राणी की भांति अपनी घात का मौक़ा देख रही थी। एक क्षण स्लुच्कोव ने अपने को निःशस्त्र व्यक्ति की तरह महसूस किया, जिसके ऊपर किसी लुटेरे ने बंदूक़ तान दी हो, और ऐसी स्थिति में निःशस्त्र, साहसी व्यक्ति जो कर बैठते हैं, उसी तरह वह शत्रु के ऊपर टूट पड़ा, लेकिन मुक्के तानकर नहीं, जैसा कि वह ज़मीन पर करता, उसने अपने वायुयान को आगे बढ़ाया और शत्रु की पूंछ पर अपने वायुयान के चमचमाते हुए प्रोपेलर का निशाना साधा।

टक्कर की आवाज़ उसे नहीं सुनाई दी। अगले क्षण, ज़बर्दस्त आघात से ऊपर फेंके जाने के बाद, उसे महसूस हुआ कि वह हवा में कुलांटें खा रहा है। धरती उसके सिर के ऊपर कौंध गयी, रुक गयी और फिर हरी-भरी और दमकती हुई उसकी तरफ़ दौड़ पड़ी। तभी उसने अपना पैराशूट खोल दिया, लेकिन अचेत होने और रस्सियों से लटके रह जाने के पहले, उसने अपनी आंखों की कोरों से देखा कि पूंछ से विहीन 'जंकर्स' का सिगार के आकार का ढांचा उसके नज़दीक से गुज़र रहा है और शरद की हवाओं में उड़ती फिरनेवाली मेपिल वृक्ष की पत्तियों की तरह चक्कर काट रहा है। पैराशूट की रस्सियों से असहाय भाव से लटकते हुए स्लुच्कोव किसी मकान की छत से टकरा गया और मास्को के बाहरी क्षेत्र में उत्सवमग्न सड़क पर अचेतावस्था में आ गिरा, जहां के निवासी उसकी ज़ोरदार मेढ़ा-टक्कर को ज़मीन से देख रहे थे। उन्होंने उसको उठाया और निकटतम

घर में ले गये। अड़ोस-पड़ोस की सड़कों पर इतनी भीड़ जमा हो गयी कि जिस डाक्टर को बुलाया गया था, वह बड़ी कठिनाई से मकान में जा सका। छत से टकराने के कारण स्तुच्कोव के घुटने टूट गये थे।

स्तुच्कोव के वीरतापूर्ण कौशल का समाचार फ़ौरन रेडियो से "ताज़ी ख़बरें" के विशेष कार्यक्रम में प्रसारित कर दिया गया। मास्को सोवियत के अध्यक्ष उसे राजधानी के सर्वोत्तम अस्पताल के लिए ले जाने के वास्ते स्वयं आये। और जब स्तुच्कोव को वार्ड में लाया गया तो उसके पीछे-पीछे तमाम परिचारक फूलों के गुलदस्ते, फलों की डलियां और चाकलेटों के डिब्बे लेकर आये – ये सभी चीज़ें मास्को के कृतज्ञ निवासियों ने उपहार-स्वरूप भेजी थीं।

वह हंसमुख और मिलनसार व्यक्ति सिद्ध हुआ। वार्ड की दहलीज़ पार करते ही उसने अन्य मरीज़ों से पूछा कि यहां "रातिब" कैसा मिलता है, नियम सख़्त तो नहीं हैं, और यहां नर्सें सुन्दर भी हैं या नहीं। और जब उसके घुटनों पर पट्टियां बांधी जा रही थीं तो क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना को उसने कैन्टीन की चर्चा के अनन्त विषय के बारे में एक मनोरंजक क़िस्सा भी सुना दिया और उसके सुन्दर मुख-मण्डल की किंचित साहसपूर्ण सराहना भी कर दी। जब नर्स वार्ड छोड़कर चली गयी तो उसने उसकी तरफ़ आंख मारी और बोला :

"बढ़िया लड़की है। सख़्त है क्या? मेरा ख़्याल है, तुम लोगों को वह भगवान का डर दिखाती होगी, एह? मत डरना। तुम लोगों को चालें नहीं सिखायी गयीं क्या? औरतें क़िलों से अधिक दुर्भेद्य नहीं होतीं, और ऐसा कोई क़िला नहीं, जो फ़तह न किया जा सके," और इतना कहकर वह ज़ोरदार हंसी में फूट पड़ा।

वह यहां पुराने निवासी की तरह व्यवहार कर रहा था, मानो वह पूरे एक साल से इस अस्पताल में हो। वह फ़ौरन हर एक को "तुम" से सम्बोधन करने लगा। जब उसे नाक साफ़ करने की ज़रूरत पड़ी उसने बेतकल्लुफ़ी से मेरेस्येव की अलमारी से पैराशूट की सिल्क के रूमालों में से एक उठा लिया जिस पर "मौसमी सार्जेन्ट" ने बड़ी लगन के साथ कढ़ाई की थी और अपने तकिये के नीचे रख लिया।

"तुम्हारी प्रेमिका ने भेजे हैं?" अलेक्सेई की ओर आंख मारकर उसने पूछा। "तुम्हारे पास बहुत हैं, और न भी होते तो क्या, तुम्हारी प्रेमिका को तुम्हारे लिए एक और बनाकर भेजने में आनन्द ही मिलेगा।"

यद्यपि उसके कपोलों पर अभी भी गुलाबी आभा फूट रही थी, फिर भी अब वह जवान न था। आंखों से कनपटी तक, कौए के पंजे की तरह, गहरी झुर्रियां चमक रही थीं और उसकी एक-एक बात यह सिद्ध कर रही थी कि वह पुराना सिपाही है जो हर उस जगह को जहां उसका झोला रख दिया जाये और जहां भी हाथ-मुंह धोने की तिपाई पर उसका साबुन और दंतब्रुश रख दिया जाये, उसको अपना घर समझने लगता है। वह अपने साथ वार्ड में काफ़ी शोरगुल और हंसी-ख़ुशी लेकर आया और वह इस तरह व्यवहार करता कि किसी को कुछ बुरा न मालूम होता और हर व्यक्ति को उसने महसूस करा दिया कि मानो वे उससे वर्षों से परिचित हैं। हर व्यक्ति नवागत व्यक्ति को पसंद करने लगा—सिवाय इसके कि मेरेस्येव कुछ विरक्त हुआ औरतों के प्रति उसकी कुछ दुर्बलता देखकर, जिसको साधारणतया वह छिपाने की कोई कोशिश न करता था, और थोड़ा-सा भी बहाना मिलने पर उसकी चर्चा छेड़ देता था।

अगले दिन कमिसार की शव-यात्रा हुई।

मेरेस्येव, कुकूश्किन और ग्वोज्देव अहाते की तरफ़ की खिड़की की दहलीज़ पर बैठ गये और उन्होंने भारी तोप-गाड़ी को तोप-सेना के घोड़ों के दल द्वारा खींचे जाते देखा, बैंड को पांत बांधते देखा जिनके बाजे धूप में चमक रहे थे और फ़ौज की एक टुकड़ी को मार्च करते देखा। वार्ड में क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना ने प्रवेश किया और उसने मरीज़ों को खिड़की से उतर जाने की आज्ञा दी। वह हमेशा की तरह शान्त और फुर्तीली थी, मगर मेरेस्येव ने देखा कि बोलने में उसकी आवाज कांप रही थी। वह नये मरीज़ का टेम्परेचर लेने आयी थी, लेकिन जब वह यह करने जा ही रही थी, तभी शव-यात्रा का बैंड बज उठा। नर्स पीली पड़ गयी, थर्मामीटर उसके हाथ से छूट गया और लकड़ी के फ़र्श पर पारे की नन्ही-नन्ही, चमकीली बूंदें लुढ़क गयीं। क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना अपने हाथों में चेहरा छिपाकर वार्ड के बाहर भाग गयी।

"इसको क्या हो गया है? क्या वह उसका प्रेमी था?" स्तुच्कोव ने पूछा और सिर हिलाकर खिड़की की ओर इशारा किया जहां से शोकपूर्ण संगीत आ रहा था।

किसी ने उसे उत्तर नहीं दिया।

खिड़की से बाहर झुककर वे सब तोप-गाड़ी पर रखे लाल कफ़न की ओर देखते रहे—ज्यों ही वह दरवाज़े से निकलकर बाहर सड़क पर आया। पुष्पमालाओं और फूलों के ढेर के बीच कमिसार का शव लेटा हुआ था। तोप-गाड़ी के पीछे लोग मख़मल की गद्दी पर लगाये गये उसके पदकों को लिये चल रहे थे—एक, दो... पांच... आठ। पीछे सिर झुकाये हुए जनरल चले जा रहे थे। उन्हीं में वसीली वसील्येविच भी जनरल का कोट पहने हुए चल रहे थे, मगर किसी कारण नंगे सिर थे। और तभी सब लोगों से कुछ दूर पर, मार्च करते हुए सिपाहियों के आगे, क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना भी नंगे सिर और सफ़ेद पोशाक पहने दिखाई दी—वह ठोकर खाती चल रही थी और स्पष्ट था कि सामने क्या है, इसको वह देख नहीं पा रही थी। दरवाज़े पर किसी ने उसके कंधे पर कोट डाल दिया, लेकिन जैसे वह आगे बढ़ी, वह कोट ज़मीन पर गिर गया और उसके पीछे आनेवाले सिपाहियों को अपनी पांतें चौड़ी करनी पड़ीं ताकि कोट कुचला न जाये।

"किसकी शव-यात्रा है, मित्रो?" मेजर ने पूछा।

वह भी अपने को खिड़की तक उठाना चाहता था, मगर उसके पैर खपच्चियों से बंधे थे और इसलिए वह न उठ सका।

शव-यात्रा अगोचर हो गयी। गम्भीर संगीत के शोकपूर्ण स्वर अब नदी की ओर से कहीं दूर से और मंद-मंद आ रहे थे और आहिस्ते से मकानों की दीवारों से प्रतिध्वनित हो उठते थे। लंगड़ी द्वारपालिका लोहे के द्वार बंद करने आ गयी थी, लेकिन वार्ड नम्बर बयालीस के निवासी अभी भी खिड़की पर खड़े कमिसार की अंतिम यात्रा देख रहे थे।

"यह किसकी शव-यात्रा थी? तुम सब तो काठ के पुतले बन गये हो!" मेजर ने अधीरतापूर्वक अभी भी अपने को खिड़की तक उठाने का प्रयत्न करते हुए कहा।

आख़िरकार कुकूश्किन ने रूखी, भर्राई आवाज़ में कहा:

"यह एक असली इनसान की शव-यात्रा थी... एक बोल्शेविक की।"

"असली इनसान" शब्द मेरेस्येव के दिमाग़ में पैठ गया। कमिसार के इससे बेहतर वर्णन की कल्पना नहीं की जा सकती। और अलेक्सेई में यह आकांक्षा उमड़ उठी कि वह भी असली इनसान बने, उसी प्रकार जिस प्रकार के व्यक्ति ने अभी अंतिम यात्रा की है।

१२

कमिसार की मृत्यु के बाद वार्ड नम्बर बयालीस की ज़िंदगी बिल्कुल बदल गयी।

अब कोई न रहा जो एक स्नेहपूर्ण बोल से उस मनहूस ख़ामोशी को तोड़ देता जो अस्पताल के वार्ड में कभी-कभी छा जाती है, जब यकायक हर व्यक्ति अपने वेदना-विह्वल विचारों में खो जाता है और हर एक का मन भारी हो जाता है। हंसमुख छेड़छाड़ से ग्वोज़्देव को उसकी उदासी से उबारनेवाला कोई न रहा, मेरेस्येव को सलाह देनेवाला कोई न रहा और कुकूश्किन के चिड़चिड़ेपन को पुरमज़ाक़, मगर ठेस न पहुंचानेवाले व्यंग्य के ज़रिए शान्त कर देनेवाला कोई न रहा। वह चुम्बक न रहा जो इन भिन्न-भिन्न प्रकृति के व्यक्तियों को एक दूसरे के समीप खींच लाया था और एक सूत्र में बांध गया था।

लेकिन उसकी अब उतनी आवश्यकता भी न रह गयी थी। चिकित्सा और काल-चक्र ने अपना काम कर दिखाया था। सभी मरीज़ तेज़ी से स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे और अस्पताल से उनके छूटने के दिन जितने ही क़रीब आते जा रहे थे, उतने ही वे अपने रोगों के विषय में बातें भी कम करने लगे थे। वे सभी सपना देखते कि अस्पताल के बाहर उनका भाग्य कैसा होगा, जब वे वापस लौट जायेंगे तो उनकी अपनी-अपनी टुकड़ियां उनका अभिनन्दन किस प्रकार करेंगी, और आगे कौनसे कार्य करने होंगे। वे सभी फ़ौजी जीवन की कामना करते, जिसके वे अभ्यस्त हो चुके थे और आनेवाले तूफ़ान की भांति जिस प्रत्याक्रमण का अहसास सारे वायुमण्डल में व्याप्त था, यकायक सभी मोर्चों पर छा जानेवाली शान्ति को देखकर जिसे भांपा जा सकता था, उस प्रत्याक्रमण में भाग लेने के लिए वक़्त से

अस्पताल के बाहर होने की आतुर आकांक्षावश उनकी हथेलियां खुजला रही थीं।

अस्पताल से सक्रिय मोर्चे पर लौट जाना किसी सिपाही के लिए कोई अनहोनी बात नहीं है, मगर मेरेस्येव के लिए वह समस्या बन गयी: पैरों की कमी क्या कुशलता और अभ्यास से पूरी हो जायेगी, क्या लड़ाकू-विमान के काकपिट में अपनी गद्दी पर वह पुनः बैठ पायेगा? वह निरंतर बढ़ते हुए उत्साह और संकल्प के साथ अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था। अभ्यास-काल धीरे-धीरे बढ़ाते हुए अब वह टांगों को अभ्यस्त करने की कसरतें और आम जिमनास्टिकें दो दो घंटे सुबह-शाम करने लगा। लेकिन उसे यह भी काफ़ी नहीं लगता था। वह दोपहर में भी कसरतें करने लगा। अपनी आंखों में हंसी और व्यंग्यपूर्ण चमक भरकर कनखियों से उसकी ओर देखते हुए स्त्रुच्कोव बाज़ीगर की भांति ऐलान करता:

"और अब, दोस्तो, आप प्रकृति का करिश्मा देखिये, अजीबोग़रीब जादूगर, अलेक्सेई मेरेस्येव, साइबेरिया के जंगलों में भी जिसका सानी नहीं मिलेगा, उसकी कलाबाज़ियां देखिये।"

वह जितने उन्मत्त उत्साह के साथ कसरतें करता था, उनमें कुछ ऐसी बात थी कि अलेक्सेई जादूगर से मिलता-जुलता लगने लगता था। शरीर को आगे-पीछे, अग़ल-बग़ल झुकाने की अनन्त क्रियाएं और गर्दन तथा भुजाओं की कसरतें, जिन्हें वह ऐसी दृढ़ता और घड़ी के पेंडुलम जैसी नियमितता से करता था, देखना इतना कष्टदायक था कि जब तक वह उनमें जुटा रहता तब तक उसके वार्ड के साथी, जो चल-फिर सकते थे, फ़ौरन कमरे से बाहर गलियारे में टहलने चले जाते; और चारपाई से लगा स्त्रुच्कोव अपने सिर पर कम्बल खींच लेता और सोने की कोशिश करता। सचमुच, वार्ड में किसी को यह विश्वास न था कि बिना पैरोंवाले व्यक्ति के लिए कभी उड़ पाना भी सम्भव हो सकता है, लेकिन उसकी लगन ने उनका सम्मान प्राप्त कर लिया था और शायद उनकी श्रद्धा भी, जिसे वे लोग अपने हंसी-मज़ाक़ के पीछे छिपाते थे।

स्त्रुच्कोव के घुटनों की हड्डियों का टूटना, शुरू में जितना समझा गया था, उससे भी अधिक गम्भीर सिद्ध हुआ। वे धीरे-धीरे ठीक हो रही थीं, पैर अभी भी खपच्चियों से बंधे थे और यद्यपि उसमें कोई सन्देह नहीं था

कि वे ठीक हो जायेंगी, फिर भी मेजर अपने "अभागे जोड़ों" को कोसने से बाज़ न आता, जो उसे इतना कष्ट दे रहे थे। उसका गुर्राना-बड़बड़ाना धीरे-धीरे गुस्से के रूप में बदल गया; वह किसी छोटी-सी बात पर ही पागल हो उठता और हर चीज़ और हर व्यक्ति को कोसने और गाली देने लगता। ऐसे क्षणों में यह मालूम होता कि अगर कोई उसे समझाने की कोशिश करेगा तो वह मार बैठेगा। ऐसे दौरे आने पर उसके साथी आपसी सहमति से उसे बिल्कुल अकेला छोड़ देते—उसे "अपना सारा गोला-बारूद इस्तेमाल कर लेने दो," जैसा कि वे कहा करते, और इस क्षण का इंतज़ार करते जब युद्ध से ध्वस्त उसकी स्नायुओं पर उसका स्वाभाविक हंसोड़ मन फिर हावी हो जाता।

अपनी बढ़ती हुई बदतमीज़ी का कारण स्त्रुच्कोव स्वयं ही यह बताता कि वह टट्टी में जाकर सिगरेट नहीं पी पाता और यह भी बताता कि आपरेशन कक्ष की उस लाल केशों वाली नर्स से मिलने के लिए वह गलियारे में नहीं जा पाता, कि जिससे—जैसा कि वह कहा करता—उसकी आंखें उस समय चार हो चुकी थीं, जब वह अपने पैरों पर फिर से पट्टी बंधवा रहा था, इसमें किसी हद तक सच्चाई हो सकती है, लेकिन मेरेस्येव यह ग़ौर कर चुका था कि चिढ़चिढ़ेपन के ये दौरे तभी आते थे जब मेजर अस्पताल के ऊपर किसी हवाई जहाज़ को उड़ते देख लेता था, या जब रेडियो या अख़बार किसी दिलचस्प आकाश-युद्ध की या उसके किसी परिचित विमान-चालक की सफलता की रिपोर्ट देते थे। इससे मेरेस्येव भी चिड़चिड़ेपन की बेसब्री का शिकार हो उठता था, मगर वह इसका कोई चिन्ह प्रगट न होने देता था और इस प्रकार स्त्रुच्कोव के साथ अपनी तुलना कर वह विजय की भावना को अनुभव करने लगता था। उसे लगने लगा कि "असली इनसान" के जिस आदर्श को उसने चुना था, कम से कम उसके कुछ नज़दीक वह पहुंच रहा है।

मेजर स्त्रुच्कोव अपनी प्रकृति के अनुरूप ही बना रहा: वह ख़ूब खाता, छोटी-सी बात पर भी जी भर कर हंसता और औरतों के बारे में बातें करने का बड़ा शौक़ीन था—औरतों से प्रेम करनेवाला बनता और साथ ही औरतों से घृणा करनेवाला भी। किसी कारण वह युद्ध-मोर्चे के पीछे रहनेवाली औरतों की आलोचना करने में विशेष रूप से सख़्त था।

स्तुच्कोव जिन बातों में मशगूल रहता, उनसे मेरेस्येव को नफ़रत थी। उसकी बातें सुनते हुए उसकी आंखों के सामने हमेशा ओल्गा की तस्वीर आ जाती या मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की उस नन्ही-सी मनोरंजक लड़की की आकृति आ जाती, जिसके बारे में रेजीमेंट में मशहूर था कि उसने हवाई अड्डे के सर्विस बटालियन के एक बहुत अधिक साहसी सार्जेन्ट मेजर को बंदूक़ के कुन्दे से अपनी झोंपड़ी के बाहर खदेड़ दिया था और लगभग गोली ही मार दी थी, और अलेक्सेई को लगता कि स्तुच्कोव इन्हीं नारियों पर कलंक मढ़ रहा था। एक दिन मेजर स्तुच्कोव की कहानियों में से एक को क्रोधपूर्वक सुनकर, जिसके अंत में टिप्पणी थी कि "सब एक-सी होती हैं" और "दो चुटकियों" में तुम उनमें से किसी को भी पा सकते हो, मेरेस्येव अपने को संयमित न रख सका और इतने ज़ोर से दांत भींजकर कि उसके कपोलों की हड्डियां पीली पड़ गयीं, उसने पूछा:

"किसी को भी?"

"हां, किसी को भी," मेजर ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

इसी क्षण क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना ने वार्ड में प्रवेश किया और मरीज़ों के चेहरों पर तनाव के भाव देखकर हैरान रह गयी।

"क्या बात है?" अनायास भंगिमा से बालों को संभालते हुए उसने पूछा।

"हम लोग ज़िंदगी पर बहस कर रहे हैं, नर्स। हम लोग अब झक्की बूढ़ों की तरह हो गये हैं। बात करने के अलावा और कोई काम नहीं," मेजर ने प्रफुल्ल मुसकान के साथ जवाब दिया।

"इसी को भी?" जब नर्स चली गयी मेरेस्येव ने ग़ुस्से भरी आवाज़ में पूछा।

"इसमें क्या विशेषता है?"

"क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना को मत छुओ!" ग्वोज़्देव ने सख़्ती से कहा, "इधर एक आदमी उसे 'सोवियत देवी' कहा करता था।"

"कौन बाज़ी लगाना चाहता है?"

"बाज़ी?" अपनी काली आंखों में चिनगारियां दिखाते हुए मेरेस्येव चिल्ला उठा, "किस चीज़ की बाज़ी लगाते हो?"

"पिस्तौल की गोली की, जैसा कि पुराने ज़माने में अफ़सर किया करते थे। तुम जीत जाओ, तो मैं निशाना बनूंगा और अगर मैं जीत जाऊं, तो तुम मेरा निशाना बनोगे," हंसते हुए और सब कुछ को मज़ाक़ का रूप देने की कोशिश करते हुए स्त्रुच्कोव बोला।

"बाज़ी? और ऐसी? क्या तुम भूल गये हो कि तुम सोवियत कमांडर हो? यदि तुम्हारी बात सही सिद्ध हो, तो मेरे मुंह पर थूक सकते हो," स्त्रुच्कोव की ओर कनखियों से घूरकर अलेक्सेई ने कह दिया, "पर सम्हालो, कहीं मुझी को तुम्हारे मुंह पर थूकना न पड़े।"

"अगर बाज़ी लगाना नहीं चाहते, तो न लगाओ। मैं बिना बाज़ी किये यह सिद्ध करूंगा कि हमें इसके लिए लड़ने की कोई आवश्यकता नहीं।"

उस दिन के बाद से स्त्रुच्कोव ने उत्साहपूर्वक क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना की तरफ़ ध्यान देना शुरू कर दिया: वह हास्य कथाएं कहकर उसका मनोरंजन करता, जिनके कहने में वह विशेष पटु था; इस अलिखित नियम का उल्लंघन कर कि विमान-चालक को किसी अजनबी के सामने अपने युद्ध सम्बन्धी साहसिक कार्यों का वर्णन करने में सावधान होना चाहिए, वह उसको अपने अनेक अनुभव सुनाता जो सचमुच महान और दिलचस्प होते; भारी सांस लेकर वह अपने अभागे पारिवारिक जीवन की तरफ़ इशारा करता और अपने कटु एकाकीपन की शिकायत करता, हालांकि वार्ड में सभी जानते थे कि वह अविवाहित है और उसको कोई विशेष पारिवारिक कठिनाई नहीं है।

क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना उसके प्रति अन्य सब की अपेक्षा अधिक पक्षपात दिखाती, यद्यपि बहुत अधिक नहीं, यह सच है; वह उसकी चारपाई के किनारे बैठ जाती और उसकी उड़ानों की साहसिक घटनाओं की कथाएं सुनती रहती, और वह, अनजाने ही, उसका हाथ अपने हाथ में ले लेता और वह उसे वापस न लेती। मेरेस्येव के दिल में क्रोध उमड़ने लगा, सारा वार्ड स्त्रुच्कोव के ख़िलाफ़ पागल हो उठा, क्योंकि वह इस तरह व्यवहार कर रहा था मानो वार्ड के अपने साथियों के सामने यह सिद्ध करना चाहता है कि क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना उन सब औरतों से भिन्न नहीं है, जिन्हें वह अब तक जानता रहा है। इस गंदे खेल को ख़त्म करने के लिए उसे चेतावनी दी गयी और वार्ड इस मामले में दृढ़तापूर्वक हस्तक्षेप

करने की तैयारी कर ही रहा था कि सारे मामले ने एक बिल्कुल भिन्न मोड़ ले लिया।

एक शाम, अपनी ड्यूटी की पारी में, क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना वार्ड में किसी मरीज़ की देखभाल करने नहीं, सिर्फ़ गपशप करने आयी—यही गुण था जिसके कारण उसे मरीज़ लोग विशेष रूप से पसंद करते थे। मेजर अपनी कहानियों में से एक का बखान करने लगा और वह उसकी चारपाई के पास बैठ गयी। यकायक वह उछल पड़ी और हर व्यक्ति ने घूमकर देखा। ग़ुस्से में लाल कपोलों और चढ़ी भौंहों से नर्स ने स्त्रुच्कोव की ओर घूरा—जो शर्मिन्दा और भयभीत दिखाई दे रहा था—और बोली :

"कामरेड मेजर, अगर तुम मरीज़ न होते और मैं नर्स न होती, तो मैं तुम्हारे चेहरे पर थप्पड़ जमा देती।"

"ओह, क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना, मैं सौगंध खाता हूं, मेरा मतलब यह नहीं था कि... और फिर इसमें क्या था?.."

"ओह, इसमें क्या था?" उसने इस बार स्त्रुच्कोव की तरफ़ ग़ुस्से से नहीं, नफ़रत से देखा, "अच्छा, अब कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। सुनते हो? और अब मैं आपसे आपके साथियों के सामने कहती हूं कि सिवाय इसके कि जब आपको डाक्टरी देखभाल की ज़रूरत हो, और किसी वक़्त मुझसे कोई बात न करें। शुभ रात्रि, साथियो।"

और वह इतने भारी क़दमों से वार्ड के बाहर चली गयी जो उसके लिए अस्वाभाविक थे, और स्पष्ट ही, वह शान्त दिखाई देने का प्रयत्न कर रही थी।

एक क्षण वार्ड में मौन छाया रहा। तभी अलेक्सेई का क्रूर विजयी अट्टहास सुनाई दिया और हर आदमी मेजर पर टूट पड़ा :

"सो तुम्हें ठीक सबक़ मिल गया!"

उसकी ओर घूरते हुए मेरेस्येव ने व्यंग्यात्मक विनम्रता से पूछा :

"कामरेड मेजर, कहिये, मुझे आपके मुंह पर अभी थूकना चाहिए कि बाद में?"

स्त्रुच्कोव कुछ सकुचाया-सा नज़र तो आया, मगर वह पराजय स्वीकार करने को तैयार नहीं था। उसने कहा, हां बहुत विश्वास के साथ नहीं :

"हां। हमला खदेड़ दिया गया। कोई परवाह नहीं, हम फिर कोशिश करेंगे।"

आहिस्ते से सीटी बजाते हुए वह आधी रात तक ख़ामोशी से पड़ा रहा और कभी-कभी कुछ बड़बड़ा उठता था, मानो अपने विचारों के जवाब में कह रहा हो: "हां।"

इस घटना के कुछ ही दिन बाद कोन्स्तंतीन कुकूश्किन अस्पताल से फ़ारिग़ हो गया। जाते समय उसने कोई भावुकता नहीं दिखायी और वार्ड के साथियों से विदा लेते समय उसने सिर्फ़ यही टीका की कि वह अस्पताल की ज़िंदगी से ऊब गया है। उसने लापरवाही के साथ सभी को "सलाम" कहा, मगर मेरेस्येव और नर्स से प्रार्थना करता गया कि अगर उसकी मां के पास से कोई पत्र आये तो उसका ख़्याल रखें और उसकी रेजीमेंट के पते पर उसके पास भेज दें।

"लिखना और हमें बताना कि कैसी कट रही है और साथी लोग तुम्हारा स्वागत कैसा करते हैं," विदाई के समय मेरेस्येव के यही शब्द थे।

"मैं तुमको क्यों लिखूं? तुम मेरी क्या चिन्ता करते हो? मैं नहीं लिखूंगा, यह महज़ काग़ज़ बरबाद करना होगा। तुम भी तो कभी जवाब न दोगे!"

"अच्छा, तुम्हारी मर्ज़ी!"

स्पष्ट था कि कुकूश्किन आख़िरी जुमला नहीं सुन सका था; वह पीठ पीछे फिर देखे बिना ही वार्ड से बाहर चला गया। और विदाई की नजर पीछे डाले बिना ही वह अस्पताल के दरवाज़े से बाहर चला गया, नदी के किनारे-किनारे चलता रहा और मोड़ पर मुड़ गया, हालांकि वह बख़ूबी जानता था कि रिवाज के अनुसार उसके सभी भूतपूर्व साथी खिड़कियों पर खड़े हुए, अपने साथी को जाते देख रहे होंगे।

फिर भी उसने अलेक्सेई को पत्र लिखा और काफ़ी जल्दी लिखा। यह बड़ी ही रूखी और यथातथ्य शैली में लिखा था। अपने बारे में उसने सिर्फ़ इतना लिखा था कि उसे वापस लौटा देखकर रेजीमेंट प्रसन्न ही मालूम होती थी, मगर साथ ही जोड़ दिया था कि हाल की लड़ाइयों में रेजीमेंट को भारी क्षति उठानी पड़ी थी, और निश्चय ही उन्हें ख़ुशी होगी अगर कोई तजुर्बेकार आदमी वापस आ जाये। उसने मारे गये और घायल हुए

साथियों के नाम गिनाये थे और लिखा था कि मेरेस्येव को रेजीमेंट में अभी भी याद किया जाता है और यह कि रेजीमेंटल कमांडर ने, जिसको अब लेफ़्टीनेंट-कर्नल के ओहदे पर तरक़्क़ी मिल गयी है, मेरेस्येव के जिमनास्टिक करतबों और वायुसेना में फिर लौट आने के संकल्प के बारे में सुनकर कहा था: "मेरेस्येव लौट आयेगा। एक बार अगर उसने इसका संकल्प कर लिया है, तो करके ही रहेगा।" और इसके जवाब में चीफ़ आफ़ स्टाफ़ ने कहा था कि असम्भव को कर दिखाना असम्भव है, और इसके प्रत्युत्तर में रेजीमेंटल कमांडर ने जवाब दिया था कि मेरेस्येव जैसे लोगों के लिए कोई काम असम्भव नहीं है। अलेक्सेई चकित रह गया कि उसमें कुछ पंक्तियां "मौसमी सार्जेन्ट" तक के बारे में भी थीं। कुकूश्किन ने लिखा था कि इस सार्जेन्ट ने उसके ऊपर प्रश्नों की ऐसी झड़ी लगा दी थी कि वह उसे यह हुक्म देने के लिए विवश हो गया: "पीछे घूमो! मार्च!" कुकूश्किन ने पत्र का अंत यह कहकर किया था कि रेजीमेंट में वापस आते ही पहले दिन उसने दो उड़ानें की थीं; उसकी टांगें अब बिल्कुल अच्छी हो गयी हैं, और अगले कुछ ही दिनों में रेजीमेंट को नये 'ला-५' क़िस्म के लड़ाकू हवाई जहाज़ मिलनेवाले हैं, जिनके बारे में अन्द्रेई देगत्यरेन्को कहता है—वह उन्हें चलाकर देख चुका है—कि उनके मुक़ाबले में सभी तरह के जर्मन हवाई जहाज़ सिर्फ़ लोहा-लक्कड़ से भरे संदूक़ मात्र हैं।

१३

ग्रीष्म ऋतु तनिक जल्दी ही शुरू हो गयी। वार्ड नम्बर बयालीस में वह उसी पोपलर वृक्ष से झांकने लगी, जिसकी पत्तियां सख़्त और चमकीली हो गयी थीं। वे बेसब्री के साथ मर्मर कर उठतीं, मानो एक दूसरे से कानाफूसी कर रही हों और शाम तक सड़क से उड़नेवाली धूल से ढंक जाने के कारण उनकी चमक ख़त्म हो जाती थी। सुन्दर केटकिन्स बहुत दिनों पहले ही निर्मल हरे ब्रशों के रूप में बदल गये थे, जो अब फूट पड़े थे और उनसे हल्के रोएं उड़ने लगे थे। दिन के सबसे गर्म भाग दोपहर में पोपलर के ये उष्ण रोएं मास्को भर में उड़ते फिरते थे, अस्पताल की खुली खिड़कियों में से अन्दर उड़ आते थे और दरवाज़ों के किनारे और कमरे

के कोनों में — जहां उन्हें उष्ण हवाएं उड़ाकर ले आती थीं — फुसफुसे, गुलाबी-से ढेरों के रूप में जमा हो जाते थे।

ग्रीष्म की एक शीतल, उज्ज्वल सुनहली सुबह को क्लावदिया मिखाइलोव्ना वार्ड में बड़ा गम्भीर रूप धारण किये हुए आयी — उसके साथ एक बुज़ुर्ग आदमी था जो लोहे के फ़्रेम का चश्मा डोरे से बांधे हुए था और नया, सख़्त कलफ़ किया हुआ सफ़ेद लबादा पहने था, मगर इस सबसे यह बात छिप नहीं पायी थी कि वह एक पुराना दस्तकार है। वह सफ़ेद कपड़े में लपेटे हुए कोई चीज़ लिए था। उसने मेरेस्येव की चारपाई के पास फ़र्श पर अपना बंडल रख दिया और जादूगर की भांति उसे धीरे-धीरे, गम्भीरतापूर्वक खोलने लगा। चमड़े की चर्राहट सुनाई दे रही थी और सारे वार्ड में उसकी सुखद, कड़वी और तीखी गंध छा गयी।

जब कपड़ा हटा दिया गया तो नये, पीले रंग के, चर्र बोलते हुए, कृत्रिम पैरों का एक जोड़ा दृष्टिगोचर हुआ, जो बड़ी कुशलता से और नाप के हिसाब से बनाये गये थे। इन कृत्रिम पैरों में नये, भूरे रंग के फ़ौजी बूट पहनाये गये थे; और वे इतनी ख़ूबी से फ़िट थे कि ऐसा लगता था मानो वे बूट पहने हुए सजीव पैर हैं।

"बस अब आपको ज़रूरत होगी सिर्फ़ एक जोड़ा बरसाती जूते की और उन्हें पहनकर तो आप शौक़ से अपनी शादी के लिए जा सकते हैं," दस्तकार ने चश्मे के ऊपर से अपनी हस्तकला को सराहना की दृष्टि से देखते हुए कहा। "वसीली वसील्येविच ने स्वयं इनका आर्डर दिया था। वे बोले, 'ज़ूयेव, पैरों का ऐसा जोड़ा बनाओ कि उनके आगे असली भी मात खायें।' और लो ये आ गये! इन्हें ज़ूयेव ने बनाया है। बादशाह को भी शोभा देंगे।"

कृत्रिम पैरों को देखकर मेरेस्येव का दिल बैठ गया; दिल बैठ गया, पथरा गया, मगर उनको पहनकर, उनके बल चलकर, बिना सहायता के चलकर देखने की उत्सुकतावश वह भावना शीघ्र ही विलीन हो गयी। कम्बल के नीचे से उसने अपनी टांगों के ठूंठ बाहर फेंके और शीघ्रतापूर्वक उन्हें पहना देने के लिए दस्तकार से अनुरोध कर बैठा। लेकिन उस बूढ़े आदमी को, जो यह दावा कर रहा था कि क्रान्ति से पहले उसने एक "बड़े भारी राजकुमार" के लिए कृत्रिम पैर बनाये थे, जिसने दौर में अपनी टांग तोड़

ली थी, यह जल्दबाज़ी अच्छी न लगी। उसे अपनी कृति पर बड़ा नाज़ था और अपने ग्राहक को माल देने का आनन्द वह तनिक देर तक उठाना चाहता था।

उसने उन पैरों को अपनी आस्तीन से पोंछकर चमकाया, उंगली के नाखून से खरोंचकर एक के ऊपर से कोई धब्बा मिटाया, उस जगह मुंह से थोड़ी भाप छोड़ी और अपने बर्फ़ जैसे सफ़ेद लबादे से पोंछ दिया, फिर वे पैर फ़र्श पर खड़े कर दिये, वे जिस कपड़े में लिपटे थे, उसे आहिस्ते से तह कर जेब में रख लिया।

"आओ भी बुढ़ऊ, ज़रा पहनकर देखें," मेरेस्येव ने चारपाई के किनारे बैठते हुए अधीरता से कहा।

किसी अजनबी जैसी आंखों से उसने अपनी टांगों के नंगे ठूंठों को देखा और उन्हें देखकर प्रसन्न हुआ। वे पुष्ट और सुगढ़ मालूम होते थे, और उनपर उस तरह चरबी नहीं चढ़ी थी जैसी कि लगातार निश्चलता से अक्सर चढ़ जाया करती है, बल्कि पुष्ट मांसपेशियां थीं, जो सांवली खाल के नीचे इस प्रकार सरकती दिखाई देती थीं मानो वे किसी ठूंठ की मांसपेशियां नहीं, किसी ऐसे व्यक्ति के स्वस्थ अवयवों के पुट्ठे हैं जिसने तेज़ चाल से काफ़ी घुमाई की हो।

"क्या रट लगायी है 'आओ, आओ?' कुछ जादू है कि कहा, और हो गया," बूढ़ा बड़बड़ाया, "वसीली वसील्येविच मुझसे कहा था, 'ज़ूयेव इतना बढ़िया जोड़ा बनाना जैसा ज़िंदगी में कभी न बनाया हो। यह लेफ़्टीनेंट बिना पैरों के उड़ना चाहता है,' सो मैंने बना दिये। ये धरे हैं। इन जैसे पैरों से तुम न सिर्फ़ चल-फिर सकोगे, बल्कि साइकिल पर चढ़ लोगे, और सुन्दरियों के साथ पोल्का नाच सकोगे... बढ़िया काम है, मैं बताये देता हूं।"

उसने अलेक्सेई का दायां ठूंठ कृत्रिम पैर के नर्म, ऊनी छेद में डाल दिया, उसमें लगे हुए तस्मों को कसकर बांध दिया और फिर दूर जाकर खड़ा हो गया और सराहना के भाव से जबान तालू पर मार दी।

"बढ़िया बूट है! कहो फ़िट है? ज़रा भी नहीं काटेगा, कि काट रहा है कहीं? कैसे काटेगा! ज़ूयेव से बेहतर दस्तकार मास्को भर में नहीं मिलेगा।"

कुशलतापूर्वक उसने दूसरा पैर भी चढ़ा दिया, लेकिन उसने तस्मे बांध भी नहीं पाये थे कि मेरेस्येव यकायक झटका खाकर चारपाई से उछलकर फ़र्श पर आ गया। हलका-सा धमाका हुआ। मेरेस्येव ने दर्द से चीख़ मारी और चारपाई की बग़ल में फ़र्श पर लम्बे लुढ़क गया।

बूढ़ा दस्तकार इतना विस्मित हुआ कि उसका चश्मा माथे पर चढ़ गया। वह अपने ग्राहक को इतना अधीर न समझता था। मेरेस्येव फ़र्श पर किंकर्त्तव्यविमूढ़ और असहाय-सा पड़ा था, उसके बूट चढ़े कृत्रिम पैर फैले हुए थे। उसकी आंखों में परेशानी, पीड़ा और भय का भाव था। तो क्या अब तक वह अपने को धोखा देता रहा है?

आश्चर्यवश अपने हाथ से हाथ जोड़कर क्लावदिया मिखाइलोव्ना उसकी ओर दौड़ी। बूढ़े दस्तकार की सहायता से उसने अलेक्सेई को उठाया और चारपाई पर बैठा दिया। शिथिल और हताश भाव से वह बैठा था, निराशा की मूर्त्ति बना।

"ए-एह, भले आदमी! तुम्हें यह नहीं करना चाहिये!" बूढ़े दस्तकार ने हिदायत दी, "तुम तो ऐसे उछल पड़े मानो वह असली, सजीव पैर हों। लेकिन तुम्हें दिल छोटा नहीं करना चाहिए। तुम्हें चलना सीखना पड़ेगा, बिल्कुल शुरू से। इस समय भूल जाओ कि तुम सिपाही हो। समझ लो कि नन्हे बच्चे हो, और तुम्हें क़दम-ब-क़दम चलना सीखना होगा, पहले बैसाखी के ज़रिए, फिर दीवार पकड़कर और उसके बाद छड़ी लेकर। तुम एकदम ही सब नहीं कर सकते; तुम्हें धीरे-धीरे सीखना होगा। लेकिन तुम हो कि इस तरह उतावले हो उठे! ये बढ़िया पैर हैं, लेकिन तुम्हारे अपने नहीं। तुम्हारे लिए वैसे पैर कोई नहीं बना सकता, जैसे तुम्हारे मां-बाप ने दिये थे।"

इस दुर्भाग्यपूर्ण उछाल के बाद अलेक्सेई की टांगें बुरी तरह दुखती रहीं, लेकिन इस सबके बावजूद वह इन कृत्रिम पैरों को फ़ौरन परखने के लिए आतुर था। वे उसके लिए अलुमीनम की बनी हल्की बैसाखी ले आये। उसने बैसाखी की नोकें फ़र्श पर रखीं, उसकी गद्दियों को बग़ल में दबाया और आहिस्ते से, इस बार सावधानी से वह चारपाई से उठा और पैरों पर खड़ा हो गया। और सचमुच, इस तरह क़दम रखे मानो वह बच्चा हो जो अभी-अभी चलना सीखने के लिए खड़ा हुआ हो, और सहज प्रवृत्तिवश

यह भांप रहा हो कि वह चल सकता है, मगर दीवार के जीवनरक्षक सहारे के छूट जाने के भय से आशंकित हो। मां या दादी की तरह, जो बच्चे के वक्ष पर तौलिया लपेटकर उसे पहली बार चलने के लिए ले जाती हैं, क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने सावधानी से उसको एक तरफ़ सहारा दिया और दूसरी तरफ़ बूढ़े दस्तकार ने। उस जगह पर, जहां कृत्रिम पैर टांग से बंधे हुए थे, सख़्त दर्द महसूस करते हुए वह एक क्षण तो खड़ा रहा। फिर हिचकते हुए उसने बैसाखी की एक टांग आगे बढ़ायी और फिर दूसरी भी, और उनपर अपने शरीर का बोझ टिकाकर एक पैर आगे बढ़ाया और फिर दूसरा। चमड़े के चर्राने की आवाज़ सुनाई दी और साथ में फ़र्श पर पैरों के गिरने की दो ज़ोरदार थापें।

"मुबारक हो। मुबारक हो!" बूढ़े दस्तकार ने आहिस्ते से कहा।

मेरेस्येव ने सावधानी से कुछ डग और भरे, लेकिन कृत्रिम पैरों के ये प्रारम्भिक क़दम इतने महंगे पड़े कि जब दरवाज़े तक जाकर वह चारपाई पर वापस लौटा तो उसे महसूस हुआ मानो कोई पियानो लादकर वह चार मंज़िल ऊपर चढ़कर रख आया हो। वह बिस्तर पर औंधा लेट गया—पसीना बुरी तरह छूट रहा था, और इतना कमज़ोर महसूस कर रहा था कि करवट लेकर पीठ के बल लेटना कठिन था।

"कहो, तुम्हें कैसे लगे ये? भगवान को धन्यवाद दो कि दुनिया में ज़ूयेव सरीखा आदमी मौजूद है," बूढ़े ने शेख़ी बघारते हुए कहा और तस्मे खोलकर अलेक्सेई की टांगें मुक्त कर दीं जो अनभ्यस्त दबाव के कारण हल्की-सी सूज आयी थीं, "इनके सहारे तुम न सिर्फ़ मामूली तौर से उड़ान कर सकोगे, बल्कि ख़ुद भगवान के यहां तक पहुंच सकोगे। बढ़िया काम है, बताये देता हूं।"

"धन्यवाद। धन्यवाद, बुढ़ऊ। बढ़िया काम है," अलेक्सेई बुदबुदाया।

दस्तकार कुछ अकुलाहट में थोड़ी देर खड़ा रहा, मानो वह कोई सवाल पूछना चाहता है और हिम्मत नहीं कर पा रहा है, या शायद, किसी सवाल के पूछे जाने की आशा कर रहा है। आख़िरकार मायूसी की सांस भरकर, उसने धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए कहा:

"अच्छा तो सलाम! इनके इस्तेमाल में तुम्हारी कामयाबी चाहता हूं।"

लेकिन उसके दरवाज़े तक पहुंचने के पहले स्तुच्कोव ने पुकारा :

"ऐ बुढ़ऊ ! यह लेते जाओ और बादशाहों के क़ाबिल पैरों के बनाने की कुछ पी-पिला लेना !" इतना कहकर उसने रूबलों के नोटों की एक गड्डी उसे थमा दी।

"धन्यवाद ! तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद ! यह मौक़ा सचमुच पीने-पिलाने योग्य है।" बूढ़े ने जवाब दिया और लबादे के अग्रभाग को इस तरह मोड़ते हुए, मानो वह किसी दस्तकार का चोग़ा हो, उसने गर्व से सिर तानकर नोटों को कमर की जेब में खिसका दिया, "धन्यवाद। मैं ज़रूर ख़ुशी मनाऊंगा। और जहां तक इन पैरों का सवाल है, मैं बताये देता हूं, इनके बनाने में मैंने जान लड़ा दी है। वसीली वसील्येविच ने मुझसे कहा था, 'ज़ूयेव, यह एक ख़ास केस है। इसमें कोई ग़फ़लत न होने पाये,' लेकिन क्या ज़ूयेव कभी ग़फ़लत करता है? अगर वसीली वसील्येविच से तुम्हारी भेंट हो, तो बता देना कि इस काम से तुम ख़ुश हो।"

इतना कहकर सिर झुकाता और अपने आप बड़बड़ाता हुआ बूढ़ा वार्ड से बाहर हो गया। चारपाई के पास फ़र्श पर खड़े अपने नये पैरों को निहारते हुए मेरेस्येव लेटा था, और जितनी ही अधिक देर तक वह उन्हें देखता रहा, उतना ही अधिक उनका कलापूर्ण डिज़ायन, उनके रूपरंग की सुगढ़ता और उनका हलकापन उसे भाता गया। "साइकिल पर चढ़ो, पोल्का नाचो, हवाई जहाज़ उड़ाओ, सीधे भगवान के यहां सातवें आसमान तक। हां, मैं करूंगा, मैं यह सब करूंगा," वह सोच रहा था।

उस दिन उसने ओल्गा को एक लम्बा और प्रसन्नतापूर्ण पत्र भेजा जिसमें उसने सूचना दी कि नये वायुयान मिलने के उसके काम की घड़ी अब क़रीब आ गयी है, और उसे आशा है कि शरद में या कम से कम जाड़ों तक, उसके उच्चाधिकारी उसे मोर्चे के पीछे के इस नीरस काम से छुटकारा देने की प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे, जिससे अब वह बिल्कुल ऊब गया है, और मोर्चे पर उसकी अपनी ही रेजीमेंट में भेज देंगे, जहां के साथियों ने उसे भुलाया नहीं है–वास्तव में वे उसके वापस लौटने का इंतज़ार कर रहे हैं। दुर्घटना के शिकार होने के बाद यह पहला प्रसन्नतापूर्ण पत्र था, अपनी प्रेमिका के नाम पहला पत्र कि जिसमें उसने प्रगट किया था कि वह हमेशा ही उसको याद किया करता है, उसके लिए व्याकुल

रहा करता है। किंचित कातरता से, युद्ध के बाद दोनों के पुनर्मिलन के विषय में अपने चिर संचित स्वप्न को और अगर ओल्गा ने अपना विचार न बदल दिया हो तो साथ मिलकर अपने घर की दुनिया बनाने की साध को भी उसने व्यक्त कर दिया था। उसने यह पत्र कई बार पढ़ा और अंत में भारी सांस लेकर उसने अंतिम पंक्तियां काट दीं।

दूसरी तरफ़, इस महान दिन का उत्साहपूर्ण वर्णन करते हुए उसने 'मौसमी सार्जेन्ट' के नाम पत्र लिखा जिसके एक एक शब्द से उल्लास और उमंग फूटी पड़ती थी। उसने इन कृत्रिम पैरों का, जिस प्रकार के किसी शहंशाह ने भी नहीं पहने, एक रेखाचित्र भी बना दिया, यह वर्णन कर दिया कि उन्हें पहनकर उसने प्रारंभिक क़दम किस प्रकार रखे थे, और उस बकवादी दस्तकार के बारे में तथा उसकी इस भविष्यवाणी के बारे में कि इन्हें पहनकर वह, अलेक्सेई, साइकिल पर सवार हो सकेगा, पोल्का नाच सकेगा और सातवें आसमान तक उड़कर जा सकेगा, उसने उसे सब कुछ लिख दिया। "और इसलिए तुम रेजीमेंट में मेरे फिर आने की आशा कर सकती हो, कमांडेन्ट से कह देना कि नये अड्डे में वह मेरे लिए भी जगह रखे," उसने फ़र्श की तरफ़ कनखियों से नज़र डालते हुए लिख डाला। उधर वे पैर इस तरह पड़े हुए थे मानो कोई व्यक्ति पैर फैलाये हुए चारपाई के नीचे छिपा हुआ है और उसके नये भूरे जूते चारपाई के बाहर झांक रहे हों। अलेक्सेई ने चारों तरफ़ नज़र डाली कि कोई उसकी तरफ़ देख तो नहीं रहा और फिर उनके ऊपर झुककर बड़े प्यार से ठंडे, चर्र बोलते हुए चमड़े को थपथपाने लगा।

एक और भी स्थान था, जहां वार्ड बयालीस में "बादशाह के योग्य कृत्रिम पैरों" के जोड़े के प्रगट होने की घटना पर उत्सुकतापूर्वक बहस हो रही थी, और वह थी मास्को विश्वविद्यालय के चिकित्सा विभाग के तृतीय वर्ष की कक्षा। इस कक्षा की सभी लड़कियां, और इन दिनों उन्हीं की संख्या सबसे ज्यादा थी, वार्ड बयालीस की एक एक घटना से पूरी तरह परिचित रहती थीं। अन्यूता को अपने पत्र-व्यवहार पर बड़ा गर्व था और अफ़सोस कि लेफ्टीनेंट ग्वोज़देव के पत्र, जो सार्वजनिक सूचना के लिए नहीं लिखे जाते थे, वहां ज़ोर ज़ोर से पढ़कर सुनाये जाते थे–आंशिक रूप से या पूरी तरह–सिर्फ़ आत्मीयतापूर्ण स्थल छोड़ दिये जाते थे, और संयोग

से, जैसे-जैसे पत्र-व्यवहार आगे चला, इस तरह के स्थल अधिकाधिक प्रगट होने लगे।

चिकित्सा विज्ञान के तृतीय वर्ष के सभी छात्र वीर ग्वोज़देव से प्रेम करने लगे थे, रूखे कुकूश्किन को नापसंद करते थे, मेरेस्येव के अदम्य उत्साह की प्रशंसा करते थे और कमिसार की मृत्यु से तो उन्हें अपने आत्मीय का विछोह महसूस हुआ, क्योंकि उसके विषय में ग्वोज़देव का कवित्वपूर्ण वर्णन पढ़कर वे सभी उसकी यथायोग्य सराहना और उससे प्रेम करने लगे थे। जब उन्होंने सुना कि उस विशाल हृदय, उत्साहपूर्ण व्यक्तित्व की इहलीला समाप्त हो गयी तो उनमें से अनेक अपने आंसू न रोक सके थे।

अस्पताल और विश्वविद्यालय के बीच पत्रों का आदान-प्रदान अधिकाधिक बढ़ता गया। वे युवक-युवतियां साधारण डाक से संतुष्ट न होते थे, क्योंकि वह उन दिनों बड़ी धीमी थी। एक पत्र में ग्वोज़देव ने कमिसार की यह उक्ति लिखी थी कि आज चिट्ठियां अपने स्थान पर इस तरह पहुंचती हैं जैसे सुदूर तारिकाओं की रोशनी। पत्र-लेखक की ज़िंदगी की रोशनी बुझ भी जायेगी, मगर उसका पत्र मंद गति से ही जायेगा और अंततः प्राप्तकर्त्ता के पास पहुंचकर व्यक्ति के बारे में बतायेगा जो बहुत दिनों पहले मर चुका होगा। व्यावहारिक और चतुर अन्यूता ने पत्र-व्यवहार का और भी विश्वस्त उपाय खोजने का प्रयत्न किया और एक बुज़ुर्ग नर्स को ढूंढ निकाला जो विश्वविद्यालय के चिकित्सालय और वसीली वसील्येविच के अस्पताल में, दोनों ही जगह काम करती थी।

इसके बाद से तो विश्वविद्यालय को वार्ड बयालीस की घटनाओं की जानकारी दूसरे ही दिन और बहुत देर हुई तो तीसरे दिन तक होने लगी, और शीघ्र ही जवाब भी दिया जाने लगा। भोजनशाला में "बादशाह के योग्य कृत्रिम पैरों" के सिलसिले में विवाद यह पैदा हुआ कि मेरेस्येव हवाई जहाज़ चला सकेगा या नहीं। यह विवाद जवानी के जोश से भरपूर था, जिसमें दोनों ही पक्ष मेरेस्येव से सहानुभूति रखते थे। लड़ाकू विमान चलाने के काम की जटिलता को दृष्टिगत करके निराशावादी दावा करते थे कि वह कभी नहीं उड़ सकेगा। किन्तु आशावादी यह तर्क देते थे कि जो व्यक्ति शत्रु से बच निकलने के लिए हाथ-पैर चारों के बल एक पखवारे तक घने जंगल में रेंग सकता है – भगवान जाने कितने किलोमीटर तक – उसके लिए

कोई बात असम्भव नहीं है। और अपने तर्क के समर्थन में आशावादी इतिहास और उपन्यासों से उदाहरण उपस्थित करते थे।

इस विवाद में अन्यूता ने कोई भाग नहीं लिया। एक अपरिचित हवाबाज़ के कृत्रिम पैरों के विषय में उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। अवकाश के अत्यन्त अल्प क्षणों में वह ग्वोज़्देव के प्रति अपनी मनोभावनाओं के विषय में विचार करती जो–उसे ऐसा अनुभव होता था–अधिकाधिक जटिल होती जा रही थीं। प्रारम्भ में इस वीर कमांडर के विषय में सुनकर, जिसका जीवन इतना दुखद था, उसके संताप को हरने की निस्वार्थ आकांक्षा से उसने पत्र लिखा था। लेकिन पत्र-व्यवहार के दौर में, जैसे-जैसे उनका परिचय बढ़ता गया, देशभक्तिपूर्ण युद्ध के एक वीर की अस्पष्ट आकृति के स्थान पर उसके मस्तिष्क में एक वास्तविक, सजीव युवक का चित्र उभरने लगा, और इस युवक में उसकी दिलचस्पी अधिकाधिक बढ़ने लगी। उसने अनुभव किया कि उसके पास से जब कोई पत्र नहीं आता है तो वह चिन्तित और उदास हो उठती है। यह एक नयी बात थी और इससे वह आनन्दित हुई और भयभीत भी। क्या यह प्रेम था? एक ऐसे व्यक्ति को, जिसको कभी देखा नहीं, जिसकी आवाज़ कभी सुनी नहीं, जिसको तुम सिर्फ़ पत्रों से जानते हो, उसको प्यार करना क्या सम्भव है? टैंक-चालक के पत्रों में अधिकाधिक ऐसे स्थल आने लगे जिन्हें वह साथिन छात्राओं को पढ़कर न सुना पाती थी। ग्वोज़्देव ने जब अपने एक पत्र में यह स्वीकार किया कि वह "पत्र-व्यवहार के द्वारा प्रेम में पड़ गया है"–उसने इसी तरह अभिव्यक्त किया था–तो उसके बाद अन्यूता को भी अहसास हुआ कि वह भी प्रेम करने लगी है–स्कूली लड़कियों जैसा प्रेम नहीं, वास्तविक प्रेम। उसने महसूस किया कि अगर उसे वे पत्र प्राप्त होना बंद हो गये, जिनकी अब वह इतनी अधीरता से प्रतीक्षा करती है, तो उसके लिए जीवन की सार्थकता समाप्त हो जायेगी।

और इसलिए उन दोनों ने, कभी मिले बिना ही, एक दूसरे से प्रेम स्वीकार कर लिया, किन्तु इसके बाद ग्वोज़्देव के साथ ज़रूर कोई विचित्र बात घट गयी होगी। उसके पत्र भीरु, अशान्त और अस्पष्ट हो उठे। बाद में उसने अन्यूता को यह लिखने का साहस कर ही लिया कि बिना मिले ही एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम स्वीकार कर उन्होंने ग़लती की, शायद अन्यूता

को यह पता नहीं कि उसका चेहरा कितने भयंकर रूप से विकृत हो गया है और आज वह उस पुराने फ़ोटोग्राफ़ जैसा बिल्कुल नहीं है, जो उसने भेज दिया था। उसने लिखा था कि वह उसको धोखा नहीं देना चाहता और इसलिये यह अनुरोध किया था कि उसके प्रति अपनी भावनाओं को प्रगट करना तब तक बंद रखे, जब तक वह स्वयं अपनी आंखों से न देख ले कि वह कौन है जिसे वह प्यार कर रही है।

यह पढ़कर अन्यूता को पहले तो क्रोध आया और फिर भय भी अनुभव हुआ। उसने जेब से वह फ़ोटोग्राफ़ निकाला। उसमें से एक दुबला-पतला, युवा मुखमण्डल झांक उठा, जिसपर दृढ़ता के भाव थे–सुन्दर, सीधी नाक, छोटी-छोटी मूंछें और सुगढ़ मुख। "और अब? अब तुम कैसे लगते हो, मेरे प्यारे प्रियतम?" वह उस फ़ोटोग्राफ़ की तरफ़ निहारती हुई बुदबुदायी। चिकित्सा-विज्ञान की छात्रा की हैसियत से वह जानती थी कि जलने के घाव बुरी तरह भरते हैं और गहरे, अमिट निशान छोड़ जाते हैं। किसी कारण उसकी आंखों के सामने शरीर विज्ञान के संग्रहालय में देखे उस आदमी के चेहरे का मॉडल घूम गया, जिसे एक चर्म रोग था: नीले-नीले चकत्तों और फुँसियों से भरा चेहरा, ऊबड़खाबड़, सूखे होंठ, भौंहों के छोटे-छोटे लोंदे और बरौनियों से रहित लाल पलकें। कहीं वह भी ऐसा ही न हो? यह विचार आते ही उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया, लेकिन उसने फ़ौरन अपने को झिड़क दिया। अच्छा, मान लो, वह ऐसा ही है? ज्वालाओं से लहकता टैंक लेकर वह हमारे शत्रुओं से लड़ा और अन्यूता की स्वतंत्रता, उसकी शिक्षा के अधिकार, उसकी इज्ज़त, उसकी जिंदगी, सभी की रक्षा की। वह वीर पुरुष है। उसने अपना जीवन कितनी बार ख़तरे में डाला है और आज भी वह मोर्चे पर पुनः लौट जाने के लिए, पुनः लड़ने और अपने जीवन को ख़तरे में डालने के लिए उत्कण्ठित है। और अन्यूता ने स्वयं युद्ध में क्या किया है? उसने भी खाइयां खोदीं, हवाई हमले से रक्षा की ड्यूटियां दी हैं और फ़ौजी अस्पताल में काम कर रही है। लेकिन ग्वोज्देव के काम की तुलना में उसका यह काम क्या है? "इन संदेहों के कारण ही मैं उसके अयोग्य सिद्ध हो जाती हूं।" उसने अपने पर लानत भेजी और इस प्रकार उस विकृत चेहरे के भयानक दृश्य को छिन्न-भिन्न करने का प्रयत्न किया जो उसकी आंखों के सामने उठ आया था।

उसने ग्वोज़्देव को एक पत्र लिखा—अब तक के सम्पूर्ण पत्र-व्यवहार में सबसे लम्बा और सबसे कोमल। उसके हृदय में जिन संदेहों ने द्वंद्व मचाया था, उनके विषय में, स्वभावतः, ग्वोज़्देव को कुछ नहीं पता चला। उसने तो उत्सुकतापूर्ण पत्र लिखा था, उसके उत्तर में इतना शानदार जवाब मिला तो वह उसे बार-बार पढ़े बिना न रह सका। उसने स्वुच्कोव तक को इसके बारे में बता दिया, जिसने यह सब सुनने के बाद बड़ा रस लेते हुए कहा :

"अपनी हिम्मत दिखाओ, टैंक-चालक। तुम यह कहावत जानते हो 'सुन्दर तन, पर मन के पाहन। साधारण तन, मन के कंचन।' यह बात आज और भी सच है, जब आदमी मिलने इतने कठिन हो गये हैं।"

ज़ाहिर है, इस दिलजोई से भी ग्वोज़्देव को सांत्वना न मिल सकी। अस्पताल से छूटने का दिन जितना नज़दीक आता, उतना ही अधिक बार-बार वह शीशे में कभी दूर खड़े होकर आंखें दौड़ाते हुए सरसरी नज़र डालता और कभी अपना चेहरा शीशे से बिल्कुल सटा लेता; वह दाग़ों की मालिश करता और घंटों तक चेहरे को थपथपाता रहता।

उसकी प्रार्थना पर क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना उसके लिए मुंह का पाउडर और क्रीम ख़रीद लायी। शीघ्र ही उसे विश्वास हो गया कि चेहरे के दोष को कोई प्रसाधन सामग्री ठीक नहीं कर सकती। फिर भी रात को जब सारे लोग सो जाते, तो वह चुपके से टट्टी में घुस जाता और बड़ी देर तक दाग़ों की मालिश करता, उनपर पाउडर लगाता रहता और फिर मालिश करता और फिर बड़ी आशाएं संजोकर शीशे में देखता। दूर से वह रोबदार व्यक्ति लगता था : हृष्ट-पुष्ट आकृति, चौड़े कंधे और सीधी, पुष्ट टांगों पर पतली-सी कमर। लेकिन नज़दीक से! कपोलों और ठोड़ी पर लाल-लाल दाग़ और तनी हुई, सिकुड़नदार खाल देखकर वह निराशा में डूब जाता। "इसे वह देखेगी तो क्या सोचेगी?" वह अपने मन से पूछता। वह डर जायेगी। वह उसपर नज़र डालेगी, मुंह फेर लेगी और अपने कंधे उचकाकर वापस चली जायेगी। या—जो और भी बुरा होगा—वह सौजन्यवश एक-आध घंटे बात करेगी और फिर कोई रस्मी और रूखी बात कह बैठेगी—और फिर अलविदा। वह क्रोध से इस तरह पीला पड़ जाता, मानो यह बात अभी ही उसके साथ घट गयी हो।

तभी वह अपने लबादे की जेब से एक फ़ोटोग्राफ़ निकाल लेता और उस गोल चेहरेवाली लड़की के नखशिख को आलोचनात्मक दृष्टि से परखने लगता—नर्म और बारीक, मगर घनी केशराशि ऊंचे मस्तक पर पीछे की ओर कढ़ी हुई, मोटी-सी, ऊपर की ओर कुछ मुड़ी हुई, वास्तविक रूप में रूसी नाक; और कोमल, शिशुसुलभ अधर। ऊपर के होंठ पर एक तिल मुश्किल से ही दिखाई देता था। वह निश्छल, मधुर मुखमण्डल, एक जोड़ा भूरी या शायद नीली आंखें जो किंचित उभरी हुई थीं, उसकी ओर बड़ी हार्दिकता और स्पष्टता से ताक रही थीं।

"मुझे बताओ। तुम कैसी हो? तुम डर तो नहीं जाओगी? तुम भाग तो नहीं जाओगी? क्या तुम्हारे पास यह देख सकने का कलेजा है कि मैं कितना दानवाकार हूं?" इस फ़ोटोग्राफ़ की तरफ़ टकटकी बांधकर देखते हुए वह पूछता।

तभी बैसाखी खटपटाते हुए और चमड़ा चर्राते हुए सीनियर लेफ़्टीनेंट मेरेस्येव उसके पास से गुज़रता, गलियारे में इधर से उधर और उधर से इधर तक अथक रूप से फुदकते हुए—एक बार, दो बार, दस बर, बीस बार। अपने लिए उसने जो कार्यक्रम बनाया था, उसके अनुसार यह चहलक़दमी सुबह शाम बराबर करता और हर दिन अपने अभ्यास की अवधि बढ़ाता जाता।

"यह बड़ा बढ़िया आदमी है!" ग्वोज़्देव ने उसके बारे में अपने आप से कहा। "सच्ची जीवट का। असम्भव शब्द तो उसके लिए है ही नहीं। हफ़्ते भर में ही बैसाखी के बल चलना सीख लिया। कुछ लोगों को इसमें महीनों लगते हैं। कल उसने स्ट्रेचर से भी इनकार कर दिया और अपनी चिकित्सा के लिए सीढ़ियों से उतरकर नीचे पहुंचा और फिर ऊपर चढ़ आया। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी, मगर वह चलता ही रहा—उस अर्दली पर चीख़ तक उठा जो उसकी मदद करना चाहती थी। और जब वह किसी सहायता बिना ऊपर पहुंच गया तब क्या वह मुसकुरा न उठा था! मानो वह एल्बरस पर्वत की चोटी पर चढ़ गया हो!"

ग्वोज़्देव ने शीशे से नज़र हटायी और मेरेस्येव को बैसाखी के बल फुदकते देखने लगा। "इसे देखो। सचमुच दौड़ रहा है! और इसका मुखड़ा कितना सुन्दर और सुगढ़ है। भौंहों पर एक छोटा-सा दाग़ जरूर है, मगर

उससे उसकी आकृति कुछ बिगड़ती नहीं, उलटे कुछ सुधर ही गयी है।" ऐसा चेहरा, काश, उसका – ग्वोदेज़्व का – भी होता। पैरों का क्या? पैर कोई नहीं देखता। और फिर वह तो चलना-फिरना सीख लेगा, और हवाई जहाज़ चलाना भी। लेकिन ऐसी भोंड़ी सूरत को कोई कैसे छिपायेगा, जिसे देखने से ऐसा लगता है, मानो नशे में धुत्त शैतानों ने उसपर रात भर मटर की दायं चलायी हो।

...अलेक्सेई मेरेस्येव अपनी दोपहर की कसरत के दौर में गलियारे का तेईसवां चक्कर लगा रहा था। उसे अपने सारे शरीर पर, सूजी हुई जंघाओं की जलन और बैसाखी की गद्दियों के ऊपर कंधों का दर्द महसूस हो रहा था। वह फुदकता जा रहा था और कनखियों से शीशे के सामने खड़े टैंक-चालक को भी देखता जा रहा था। "विचित्र व्यक्ति है!" उसने मन में विचार किया। "अपनी सूरत के बारे में उसे इतनी फ़िक्र क्यों है? कोई सिनेमा अभिनेता तो उसे बनना नहीं है। रहेगा टैंक-चालक ही। इससे उसे कौन रोक सकता है? जब तक दिमाग़, भुजाएं और टांगें सही-सलामत हैं, तब तक चेहरे से क्या बनता-बिगड़ता है। हां टांगें हों, असली टांगें, इस तरह के ठूंठ नहीं, जिनमें इस तरह दर्द और जलन होती है, मानो कृत्रिम पैर चमड़े के नहीं सुर्ख़ गरम लोहे के बने हों।"

टप-टप। चर्र-चर्र। टप-टप। चर्र-चर्र।

होंठ काटते हुए और आंसू रोकते हुए, जो अपने पर क़ाबू करने के बावजूद, दर्द के कारण आंखों तक उमड़ आये थे, सीनियर लेफ़्टीनेंट मेरेस्येव ने बड़ी कठिनाई से गलियारे का उन्तीसवां चक्कर पूरा किया और आज की कसरत ख़त्म की।

१४

ग्रिगोरी ग्वोज़्देव ने जून के मध्य में अस्पताल छोड़ दिया।

जाने से एक दो दिन पहले उसने अलेक्सेई से अच्छी, लम्बी बातचीत की। इस बात से कि विपत्ति में वे एक दूसरे के साथी रहे और उनकी व्यक्तिगत समस्याएं समान रूप से जटिल थीं, वे एक दूसरे के नज़दीक खिंच आये थे और जैसा कि ऐसे मामलों में होता है, उन्होंने एक दूसरे

के सामने अपने दिल खोलकर रख दिये थे, भविष्य के प्रति अपनी-अपनी आशंकाओं के विषय में एक दूसरे को साफ़-साफ़ बता दिया था और वह सब भार उतार दिया था, जिसे बरदाश्त करना उन दोनों के लिए दूना कठिन था, क्योंकि स्वाभिमानवश वे अपनी-अपनी विपत्ति को दूसरों से बंटा नहीं पाते थे। दोनों ने एक दूसरे को अपनी मित्र लड़कियों के चित्र दिखाये।

अलेक्सेई के पास ओल्गा का किंचित घिसा हुआ और धुंधला फ़ोटोग्राफ़ था जो उसने जून के उस निर्मल-उज्ज्वल दिन स्वयं खींचा था जब उन्होंने वोल्गा के दूसरे तट पर फूलों से भरे स्तेपी मैदान में घास पर दौड़ लगायी थी। छरहरी लड़की, चटकीली सूती छींट की फ़्राक पहने हुए, पैर समेटे बैठी थी और जंगली फूल उसकी गोद में उन्मुक्त रूप से खेल रहे थे। पूर्ण रूप से विकसित बाबूने के पुष्पों के बीच घास पर बैठी हुई वह स्वयं प्रातःकालीन ओस से भीगे बाबूने की भांति सफ़ेद और निर्मल लग रही थी। विचारलीन-सी वह अपना सिर एक ओर झुकाये हुए थी और उसकी आंखें विस्फारित और आनन्द-विह्वल थीं, मानो वह इस ऐश्वर्यपूर्ण संसार को जीवन में पहली बार देख रही है।

इस फ़ोटो की ओर देखने के बाद टैंक-चालक ने कहा कि इस प्रकार की लड़की किसी को विपत्तिकाल में नहीं त्याग सकती, लेकिन अगर वह त्याग दे—तो वह जहन्नुम में जाये—इससे यही साबित होगा कि उसका रूप-रंग फ़रेबी है, और ऐसी सूरत में यही बेहतर है कि वह उसे छोड़ ही जाये, क्योंकि वह बुरी है, और ऐसी लड़की के साथ जीवन भर अपने को बांधने से कोई लाभ नहीं, क्यों?

अलेक्सेई को भी अन्यूता का मुखड़ा पसंद आया और, अनजाने ही, वह ग्वोज़्देव से उसी तरह के विचार प्रगट कर गया—मगर अपने ही ढंग से—जो विचार अभी ग्वोज़्देव ने व्यक्त किये थे। उनकी बातों में कोई गहनता नहीं थी, और उनसे उनकी अपनी समस्याओं को हल करने में ज़रा भी सहायता न मिली, मगर दोनों को राहत महसूस हुई, मानो कोई बड़ा और पुराना फोड़ा फूट गया हो।

उन्होंने निश्चित किया कि जब ग्वोज़्देव अस्पताल से चला जायेगा, तब वह और अन्यूता—जिसने आने और उससे मिलने का वायदा किया

था – वार्ड की खिड़की के तले से गुज़रेंगे और उसके बाद अलेक्सेई ग्वोज़्देव को पत्र लिखकर बतायेगा कि उस लड़की ने उसपर क्या प्रभाव डाला। उधर ग्वोज़्देव ने अलेक्सेई को पत्र लिखने और यह बताने का वायदा किया कि अन्यूता उससे किस प्रकार मिली, उसका विकृत चेहरा देखकर उसके मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई और उन दोनों में कैसी निभ रही है। इसपर अलेक्सेई ने निश्चय कर लिया अगर ग्रिगोरी के साथ अच्छी बीती तो वह फ़ौरन ओल्गा को लिख देगा और अपने बारे में उसे सब कुछ बता देगा, लेकिन यह अनुरोध कर लेगा कि मां को इसकी ख़बर न दी जाये, क्योंकि वह अभी भी बहुत बीमार है और चारपाई मुश्किल से छोड़ पाती है।

इसी से पता चल जाता है कि टैंक-चालक के मुक्त होने की पूर्वाशा के कारण वे दोनों क्यों इतने उत्तेजित थे। वे इतने उत्तेजित थे कि दोनों ही न सो सके, और रात को दोनों के दोनों चुपके से गलियारे में खिसक गये – ग्वोज़्देव शीशे के सामने एक बार फिर अपने मुंह के दाग़ों की मालिश करने के लिए और मेरेस्येव बैसाखी के छोरों पर गद्दियां लगाकर उनकी खटपट शान्त करके अपनी चलने-फिरने की कसरत का एक और अतिरिक्त क्रम पूरा कर डालने के लिए।

दस बजे क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना वार्ड में आयी और रहस्यपूर्ण मुस-कुराहट के साथ ग्वोज़्देव से बोली कि उससे कोई मिलने आया है। ग्वोज़्देव बिस्तर से इस प्रकार उछल पड़ा मानो वह हवा के झोंके से उड़ गया हो। इतनी बुरी तरह लजाते हुए कि उसके चेहरे के निशान पहले से भी अधिक प्रत्यक्ष रूप में उभर आये, वह जल्दी-जल्दी अपनी चीज़ें समेटने लगा।

"वह बड़ी भली लड़की है, और इतनी गम्भीर दिखाई देती है," नर्स ने ग्वोज़्देव को जल्दी-जल्दी अपने जाने की तैयारी करते देखकर मुसकुराते हुए कहा।

ग्वोज़्देव का चेहरा आनन्द से दमक रहा था।

"क्या कह रही हो? तुम्हें वह पसन्द है? वह भली लड़की है, क्या नहीं?" उसने पूछा, और उत्तेजनावश, दुआ-सलाम करना भूलकर वह वार्ड के बाहर भाग गया।

"बच्चा है! इसी तरह के लोग जाल में फंस जाते हैं," मेजर स्त्रुच्कोव बड़बड़ाया।

इस उन्मत्त व्यक्ति को पिछले कुछ दिनों में न जाने क्या हो गया था। वह चिड़चिड़ा हो गया था, अक्सर बिना बात क्रोध में भड़क जाता था, और आजकल चूंकि बिस्तर पर बैठने योग्य हो गया था, इसलिए वह अपनी मुट्ठी पर कपोल टिकाये दिन भर खिड़की के बाहर ताकता रहता था और कोई बोले तो जवाब तक नहीं देता था।

सारा वार्ड–उदास मेजर, मेरेस्येव और दो नये मरीज़–अपने वार्ड के भूतपूर्व साथी के सड़क पर प्रगट होते देखने के लिए खिड़कियों के बाहिर झांक रहा था। दिन तनिक गर्म था। दीप्तमान, सुनहरी कोरों से सजे, हल्के-हल्के तरंगित बादल आसमान में तेज़ी से तिर रहे थे और रूप बदल रहे थे। उसी समय एक छोटी-सी, स्याह फूली-फूली घटा तेज़ी से नदी के ऊपर से गुज़र रही थी और बूंदें बिखेर रही थी जो धूप में चमक उठती थीं। इससे किनारे की पथरीली दीवारें इस प्रकार चमक उठी थीं, मानो उन पर पालिश कर दी गयी हो; कोलतार की सड़क पर काले, संगमरमर जैसे चकत्ते पड़ गये थे, और उससे ऐसी बढ़िया नम भाप उड़ रही थी कि वर्षा की इन आनन्ददायक बूंदों को पकड़ने के लिए सिर खिड़की से बाहर निकालने को जी चाहता था।

"वह आ रहा है," मेरेस्येव फुसफुसाया।

प्रवेश द्वार के भारी, बलूत की लकड़ी के दरवाज़े धीरे-धीरे खुले और उनसे दो व्यक्ति प्रगट हुए; एक तो किंचित स्थूलकाय महिला, नंगे सिर, अपने बालों को माथे से पीछे की ओर काढ़े हुए, सफ़ेद ब्लाउज़ और काला साया पहने, और एक युवा सिपाही, जिसे अलेक्सेई पहली नज़र में भी न पहचान पाया कि वह टैंक-चालक है। एक हाथ में वह अपना सूटकेस लिए था और दूसरे हाथ पर ग्रेटकोट डाले था, और वह ऐसी लचकदार चाल से चल रहा था कि उसकी ओर निहारते रहना बड़ा सुखद था। स्पष्ट था, वह अपनी शक्ति की परीक्षा कर रहा था और इस प्रकार उन्मुक्त घूमने-फिरने के योग्य हो जाने के कारण वह इतना आनन्दमग्न था कि वह प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर से दौड़ता नहीं, फिसलता-सा लग रहा था। उसने अपनी संगिनी की बांह थाम ली और वर्षा की

भारी सुनहली बूंदों के छींटों समेत वह उस लड़की के साथ नदी के किनारे-किनारे चल पड़ा—वार्ड की खिड़की की तरफ़।

अलेक्सेई ने उन्हें देखा तो उसका हृदय आनन्द से भर गया : तो सभी कुछ सकुशल हो गया। कोई आश्चर्य नहीं, उसका मुखड़ा इतना बेलाग, मधुर और सादा है। ऐसी लड़की कभी मुख नहीं मोड़ेगी। नहीं! इस तरह की लड़कियां आपत्तिकाल में आदमी का साथ नहीं छोड़तीं।

वे खिड़की के पास आ गये, रुक गये और ऊपर देखने लगे। यह युवा जोड़ा नदी तट के वर्षा से धुले बाड़ के सामने खड़ा था जिस पर आहिस्ते से बरसते हुए पानी ने तिरछी और उज्ज्वल रेखाओं की पृष्ठभूमि अंकित कर दी थी। और तभी अलेक्सेई का ध्यान गया कि टैंक-चालक व्यग्र और चिन्तित दिखाई दे रहा है, और अन्यूता भी, जो उतनी ही सुन्दर थी जैसी फ़ोटोग्राफ़ में दिखाई देती थी, व्यग्र और चिन्तित दिखाई दे रही थी, उसकी बांह शिथिलतापूर्वक टैंक-चालक की बांह में पड़ी हुई थी और कुल मिलाकर वह उत्तेजित और डगमग दृष्टिगोचर हो रही थी, मानो वह बांह खींचने और भाग जानेवाली है।

उन्होंने हाथ हिलाये, जबर्दस्ती की मुसकान मुसकुराये, नदी के किनारे और आगे बढ़े और मोड़ पर ग़ायब हो गये। ख़ामोशी के साथ सभी मरीज़ अपने-अपने बिस्तरों पर लौट आये।

"बेचारे ग्वोज्देव से बात बनी नहीं," मेजर ने राय प्रगट की, लेकिन गलियारे में क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना की एड़ियों की टप-टप सुनकर वह चौंक गया और यकायक खिड़की की तरफ़ मुंह मोड़ लिया।

अलेक्सेई शेष दिन बेचैन रहा। उसने अपनी शाम की कसरत तक छोड़ दी और सभी के पहले लेट गया; मगर उसकी चारपाई की स्प्रिंगें शेष सभी मरीजों के सो जाने के बहुत देर बाद तक चरमर बोलती रहीं।

अगले दिन सुबह नर्स कमरे में घुस भी न पायी थी कि उसने पूछा कि उसके लिए कोई चिट्ठी तो नहीं आयी है। कोई चिट्ठी न आयी थी। उसने बड़ी उदासीनता के साथ हाथ-मुंह धोया और अनिच्छा से नाश्ता किया, लेकिन उसने टहलने की कसरत रोज के मुक़ाबले अधिक देर तक की; पिछली शाम उसने जो कमजोरी दिखाई थी, उसके लिए अपने को दण्ड देने के लिए उसने पंद्रह चक्कर अधिक लगाये ताकि जो कसरत उसने नहीं की थी,

अपना पता भेज दूंगा। अगर तुम अपना इरादा न बदलो तो मुझे लिखना।' और मैंने उससे यह भी कहा, 'अपने को किसी ऐसी बात के लिए मजबूर न करना जिसे तुम्हारा जी न चाहता हो। मैं आज जीवित हूं, मगर कल मर भी सकता हूं—हम लोग लड़ाई के मैदान में हैं।' और सच, वह कहती ही रही, 'ओह, नहीं-नहीं।' और रोती रही। इसी वक़्त कम्बख़्त ख़तरे का भोंपू चीख़ने लगा, 'अलर्ट!' वह बाहर चली गयी और मैं इस हलचल का लाभ उठाकर खिसक आया और सीधा अफ़सरों के हेडक्वार्टर गया। उन्होंने मुझे फ़ौरन तैनाती दे दी। अब सब ठीक हो गया है। मैं रेल-टिकट ले चुका हूं और शीघ्र ही रवाना हो जाऊंगा। मगर मैं तुमसे कहूंगा, अलेक्सेई, मैं उससे पहले से भी अधिक प्यार करने लगा हूं और उसके बिना मैं कैसे ज़िंदा रहूंगा, मैं नहीं कह सकता।"

अपने मित्र का पत्र पढ़कर अलेक्सेई को लगा कि वह स्वयं अपने भविष्य की ओर निहार रहा है। निस्संदेह यही उसके साथ भी बीतेगी। ओल्गा उसे अस्वीकार नहीं करेगी, उससे मुंह नहीं मोड़ेगी, वह भी इसी प्रकार गौरवपूर्ण त्याग करना चाहेगी, वह उसके प्रति उदारता बरतेगी, आंसुओं के बीच मुसकुरायेगी और अपने घृणाभाव को दबाने का प्रयत्न करेगी।

"नहीं! नहीं! मैं यह नहीं चाहता," वह बोल उठा जो साफ़ सुना जा सकता था।

वह लंगड़ाता हुआ वार्ड में वापस लौट आया, मेज के पास बैठ गया और सीधे-सीधे ओल्गा को पत्र लिखने लगा—संक्षिप्त, रूखा, यथातथ्य। वह सत्य प्रगट करने का साहस न कर सका। क्यों लिखे? उसकी मां बीमार है और उसके दुख को वह और क्यों बढ़ाये? उसने ओल्गा को लिखा कि अपने आपसी सम्बन्धों के बारे में उसने काफ़ी विचार किया और इस परिणाम पर पहुंचा कि ओल्गा के लिए प्रतीक्षा करना बड़ा कठिन होगा। कोई नहीं जानता युद्ध कितने समय और चलेगा, मगर वक़्त और जवानी बीते जा रहे हैं। युद्ध ऐसी चीज़ है कि इंतजार करना व्यर्थ भी हो सकता है। वह मारा जा सकता है और वह बिना उसकी पत्नी बने विधवा बनी रह जायेगी, या यह और भी बुरा होगा कि वह पंगु हो जाये और उसे एक लंगड़े-लूले आदमी से विवाह करना पड़े। उससे क्या लाभ

होगा? इसलिए वह अपना यौवन बरबाद न करे और जितना शीघ्र हो सके उसे भूल जाये। इस पत्र का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं, अगर वह उत्तर न देगी तो उसे कुछ बुरा नहीं लगेगा। वह उसकी स्थिति समझता है—यद्यपि यह सब मान लेना उसके लिए कोई आसान नहीं है। लेकिन अच्छा यही होगा।

पत्र से मानो उसके हाथ जल रहे थे। उसे फिर पढ़े बिना ही उसने लिफ़ाफ़े में बन्द कर दिया और जल्दी ही उस नीली पत्र-पेटिका में डाल आया जो जल-तापक के पीछे टंगा हुआ था।

वह वार्ड में लौट आया और फिर मेज़ के किनारे बैठ गया। अपना दुख वह किससे बांटे? अपनी मां से नहीं। ग्वोज़्देव से? वह, सचमुच, उसका दुख समझ सकेगा, मगर वह कहां होगा? युद्ध मोर्चे की ओर जानेवाली सड़कों की भूलभुलैयां में वह उसका पता कैसे पा सकेगा? क्या उसकी सेना के नाम लिखा जाये? लेकिन उन सौभाग्यशाली व्यक्तियों को अपनी दैनिक युद्ध-व्यस्तता के बीच क्या उसकी चिन्ता करने का समय मिलता होगा? "मौसमी सार्जेन्ट" को? हां, एक वह अवश्य है! वह फ़ौरन लिखने बैठ गया और शब्द बड़ी स्वतंत्रतापूर्वक उमड़ने लगे, उतने ही उन्मुक्त भाव से जिस प्रकार किसी मित्र के आलिंगन में आंसू उमड़ पड़ते हैं। यकायक वह एक वाक्य के बीच में रुक गया, एक क्षण कुछ सोचा और काग़ज़ को मसलकर, फाड़कर फेंक दिया।

"रचना के जन्म की पीर से बड़ी कोई पीर नहीं होती," स्तुच्कोव ने अपनी आदत के अनुसार व्यंग्यात्मक स्वर में कहा।

वह अपने बिस्तर पर ग्वोज़्देव का पत्र लिए बैठा था जिसे उसने बेतकल्लुफ़ी के साथ अलेक्सेई की अलमारी से उठा लिया था और पढ़ रहा था।

"आजकल आदमियों को क्या हो गया है?.. और ग्वोज़्देव भी! वाह रे गधे! किसी लड़की ने ज़रा नाक सिकोड़ी और वह आंसुओं में सराबोर हो गया। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण... यह पत्र पढ़ लेने के कारण तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो, क्यों? हम मोर्चे के सिपाहियों के बीच कोई राज़ की बात क्या हो सकती है?"

अलेक्सेई नाराज़ नहीं था। वह सोच रहा था, "कल डाकिया पेटी

साफ़ करने आयेगा, तो मुझे शायद उसका इंतज़ार करना चाहिए और चिट्ठी वापस ले लेनी चाहिए?"

उस रात अलेक्सेई को अच्छी तरह नींद नहीं आयी। पहले उसने स्वप्न देखा कि वह एक बर्फ़ से ढंके हवाई अड्डे में है, जहां एक "ला-५" क़िस्म का लड़ाकू हवाई जहाज़ बड़े ही विचित्र आकार-प्रकार का है; उतार के पहियों की जगह उसके चिड़ियों जैसे पैर हैं। मेकेनिक यूरा काकपिट की गद्दी पर चढ़ गया और बोला, "अलेक्सेई के दिन बीत गये," और अब उसकी ही बारी है। फिर उसने सपना देखा कि वह पुआल के बिस्तर पर लेटा हुआ है और मिख़ाईल नाना सफ़ेद क़मीज़ और भीगी पैंट पहने अलेक्सेई के शरीर को भाप दे रहे हैं और हंसते हुए कह रहे हैं, "विवाह के पहले तुम्हें आवश्यक है तो भाप-स्नान।" और भोर से कुछ पहले उसने ओल्गा को सपने में देखा। वह अपनी बलिष्ठ, धूप से भूरी टांगें पानी में लटकाये एक उलटी नाव पर बैठी है–हल्की-फुलकी, छरहरी, और उद्दीप्त। वह एक हाथ से आंखों के ऊपर धूप से छाया किये हुए है और हंस रही है, और दूसरे हाथ के इशारे से उसे बुला रही है। वह उसकी तरफ़ तैरने लगा, लेकिन धारा बड़ी तेज़ और तूफ़ानी थी और वह उसे तट से और लड़की से दूर बहा ले गयी। उसने अपनी बाहों, टांगों और अपने शरीर के प्रत्येक पुट्ठे से तीव्र से तीव्रतर परिश्रम किया और उसके निकटतर पहुंच गया; उसकी हवा में उड़ती हुई केश-राशि और धूप से भूरी टांगों पर पानी की चमकती हुई बूंदें उसे साफ़ दिखाई देने लगी थीं...

इतने ही में वह स्फूर्त्ति और सुख अनुभव करता हुआ जाग गया। वह बड़ी देर तक आंखें बन्द किये लेटा रहा और उस सुखद स्वप्न को पुनः देखने की आशा में वह फिर सोने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन यह तो सिर्फ़ बचपन ही में होता है। स्वप्न में उस कृशकाय, धूप से भूरी लड़की की मूर्ति मानो हर वस्तु को आलोकित कर गयी थी। उसे चिन्ता करने, उद्विग्न होने की कोई आवश्यकता नहीं, बल्कि उसे ओल्गा की ओर तैरकर बढ़ना चाहिए, धारा के विरुद्ध लड़ना चाहिए, हर क़ीमत पर आगे तैरना चाहिए, एक एक रत्ती शक्ति लगा देना चाहिए और उस युवती के पास पहुंच जाना चाहिए! लेकिन पत्र का क्या हो? वह चाहने लगा कि पत्र-पेटिका के पास जाकर बैठे और डाकिये का इंतज़ार करे, लेकिन उसने

अपना इरादा बदल दिया और हाथ झुलाकर अपने आप से बोला, "जाने भी दो। सच्चा प्रेम उससे भड़क नहीं सकता।" और अब जब वह आश्वस्त हो गया कि प्रेम सच्चा है, और वह चाहे किसी भी परिस्थिति में हो—सुखी या दुखी, स्वस्थ या रोगी—वह प्रेम उसकी प्रतीक्षा करेगा, तो उसे अपने में नयी शक्ति का संचार अनुभव होने लगा।

उस सुबह उसने बैसाखी के बिना टहलने का प्रयत्न किया। वह सावधानी के साथ बिस्तर से उठा और टांगें फैलाकर खड़ा हो गया और असहाय भाव से फैली हुई बाहों से संतुलन क़ायम करने का प्रयत्न करने लगा। दीवार के सहारे उसने एक डग बढ़ाया। कृत्रिम पैरों का चमड़ा चर्रा उठा। उसका शरीर डगमगाया, लेकिन उसने अपनी बाहें फैलाकर संतुलन क़ायम करते हुए अपने को संभाल लिया। अभी भी दीवार का सहारा लिए उसने एक और क़दम बढ़ाया। उसने कभी स्वप्न में भी ख़्याल न किया था कि चलना-फिरना इतना कठिन काम होता है। जब वह बालक था तो उसने बांसों के बल चलना सीखा था; वह उन पर चढ़कर दीवार से अलग हो जाता और एक क़दम बढ़ाता, फिर दूसरा और फिर तीसरा डग भरता—मगर उसका शरीर एक तरफ़ झुक जाता, और तब वह कूदकर बांसों से अलग हो जाता और उधर घास पर जो शहर के बाहर की सड़क पर बुरी तरह उग आयी थी, बांस के डंडे पड़े रह जाते। इन बांसों के बल चलना सीखना इतना बुरा नहीं था, क्योंकि उन पर से कूदकर अलग हुआ जा सकता है, मगर इन कृत्रिम पैरों पर से कूदकर अलग तो नहीं हुआ जा सकता। और जब उसने तीसरा डग भरने की कोशिश की तो उसका शरीर झूलने लगा, पांव जवाब दे गये और वह फ़र्श पर औंधे मुंह गिर पड़ा।

अपने अभ्यास के लिए उसने ऐसा समय चुना था जब अन्य सभी मरीज़ अपनी विभिन्न चिकित्साओं के लिए चले जाते थे और वार्ड में कोई न रहता था। उसने सहायता की पुकार न की। वह दीवार तक रेंगकर गया और उसका सहारा लेकर धीरे-धीरे पैरों पर उठ खड़ा हुआ, उसने उस बग़ल मला जिस तरफ़ गिरने के कारण उसे चोट लग गयी थी; अपनी कुहनियों की ख़राश देखी जो नीली पड़ चली थी और दांत भींचकर दीवार का सहारा लिए बिना, उसने एक क़दम और आगे बढ़ाया। उसने महसूस

किया कि उसने रहस्य जान लिया है। कृत्रिम और साधारण पैरों के बीच भेद यह था कि कृत्रिम पैरों में लोच की कमी थी। इनकी विशिष्टता से अभी तक वह अपरिचित था, और अभी तक ऐसी प्रवृत्ति और विचार-क्रिया नहीं बना पाया था कि चलने के अनुक्रम में पैरों की स्थिति बदल सके, क़दम उठाने में शरीर का बोझ एड़ी से बदलकर आगे उंगलियों पर और अगला डग भरने में उंगलियों से बदलकर एड़ी पर डाल सके और पैरों को एक दूसरे के समानान्तर न रखकर, पैरों के पंजे बाहर की तरफ़ किये हुए ऐसे कोण पर रखे कि चलते-फिरते समय शरीर को अधिक स्थिरता प्राप्त हो सके।

आदमी जब बचपन में मां की देख-रेख में अपने नन्हें-नन्हें, कमजोर पैरों के बल पहले ऊबड़-खाबड़ क़दम उठाता है, तो वह ये सभी बातें सीख लेता है। वह ये आदतें शेष जीवन भर के लिए प्राप्त कर लेता है और ये उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति बन जाती है। लेकिन जब मनुष्य कृत्रिम अंग धारण करने के लिए विवश हो जाता है और शरीर का प्राकृतिक संतुलन भंग हो जाता है, तो बचपन में अवगत ये प्रवृत्तियां, सहायता करने के बजाय, उसकी गति में बाधक बन जाती हैं। नयी आदतें सीखने में उसे पुरानी प्रवृत्तियों से संघर्ष करना पड़ता है। अनेक व्यक्ति, जो अपने पैर खो बैठे हैं, अगर उनमें इच्छा-शक्ति का अभाव है, तो वे चलने-फिरने की वही कला फिर कभी नहीं सीख सकेंगे, जिसे बचपन में हम इतनी आसानी से सीख लेते हैं।

लेकिन मेरेस्येव सख़्त धातु का बना था। एक बार कोई लक्ष्य बना लिया तो फिर उसे वह प्राप्त करके ही रहता था। अपनी पहली कोशिश की ग़लतियां समझकर उसने फिर प्रयत्न किया। इस बार उसने अपने कृत्रिम पैर का अग्रभाग बाहर की तरफ़ मोड़ लिया, एड़ी पर बोझ टिकाया और फिर पैर के अग्रभाग पर शरीर का बोझ डाल दिया। चमड़ा बुरी तरह चर्रा उठा। जिस क्षण बोझ पैर के अग्रभाग पर डाला गया तभी अलेक्सेई ने दूसरा पैर फ़र्श से उठाया और उसे आगे फेंक दिया। एड़ी एक जोर की थप के साथ फ़र्श से लगी। अब वह बाहें फैलाकर अपने शरीर को संतुलित करते हुए दीवार से अलग हो गया, मगर अगला डग भरने का साहस न कर पा रहा था। और वहीं वह खड़ा रह गया, शरीर

डगमगा रहा था, वह संतुलन क़ायम रखने का प्रयत्न कर रहा था और नाक पर ठंडा पसीना छूटता महसूस कर रहा था।

वह इस मुद्रा में था कि उस पर वसीली वसील्येविच की नजर पड़ गयी। वे एक क्षण तक उसे देखते दरवाज़े पर खड़े रहे, फिर उसकी तरफ़ आगे बढ़े और बग़लें पकड़कर उसे सहारा देते हुए बोले:

"शाबाश, घसीटे! लेकिन यह क्या तुम अकेले हो, बिना किसी नर्स या अर्दली के? गर्वित हो, मेरा ख़्याल है... लेकिन कोई परवाह नहीं। जैसा कि हर मामले में होता है, पहला क़दम ही महत्त्वपूर्ण होता है, और तुमने सबसे कठिन भाग पार कर लिया है।"

इसके कुछ ही दिन पहले वसीली वसील्येविच को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण चिकित्सा संस्था का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया गया था। वह भारी काम था और बड़ा वक़्त ले लेता था। अस्पताल का काम छोड़ देने के लिए वे विवश हो गये थे, मगर यह बूढ़ा योद्धा अभी भी अधिकृत रूप से इसका प्रधान था, और यद्यपि अब दूसरे लोग इसका कार्य-संचालन करने लगे थे, फिर भी वे हर रोज अस्पताल आते और अब उनके पास वक़्त होता तो वार्डों का चक्कर भी लगा देते और सलाहें देते। लेकिन पुत्र हानि के बाद वे भिन्न व्यक्ति हो गये थे। उनकी पुरानी उत्कट प्रफुल्लता विलीन हो गयी थी, अब वे डांटते-झिड़कते न थे और जो लोग उन्हें जानते थे, वे इसे उनकी वृद्धावस्था के आगमन का चिह्न समझते थे।

"आओ, मेरेस्येव, हम लोग इसे मिलकर सीखें," उन्होंने प्रस्ताव किया। अपने सहकारियों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "तुम जा सकते हो, यह सर्कस नहीं है; यहां देखने की कोई चीज नहीं है। मेरे बिना ही वार्ड का चक्कर लगा आओ।" और फिर मेरेस्येव से बोले, "अच्छा तो, लड़के... एक! पकड़े रहो, मुझे पकड़े रहो! शर्म न करो। मैं जनरल हूं और तुम्हें मेरा हुक्म मानना पड़ेगा। अब, दो! बस ठीक है। अब दाहिना पांव बढ़ाओ। ठीक। बायीं तरफ़! बहुत बढ़िया!"

इस प्रसिद्ध सर्जन ने प्रसन्नतापूर्वक हाथ मले, मानो एक आदमी को चलना मात्र सिखाकर, भगवान जाने, वे कौनसा महत्वपूर्ण प्रयोग कर रहे हैं। लेकिन उनकी प्रकृति ही ऐसी थी कि वह जो कुछ भी करते, उससे उत्साहित हो उठते और उसमें अपनी सम्पूर्ण महान आत्मा लीन कर देते

थे। उन्होंने मेरेस्येव को पूरे वार्ड की लम्बाई पार कराया, और जब अलेक्सेई पूरी तरह चूर-चूर होकर एक कुर्सी पर गिर पड़ा, तो उन्होंने भी दूसरी कुर्सी खींच ली, उसके पास बैठ गये और बोले :

"बोलो, हम लोग उड़ान कर सकेंगे? मैं कहूंगा, जरूर! जिन लोगों की एक बांह अलग हो गयी है, मेरे भाई, ऐसे लोग आक्रमणों में फ़ौजी टुकड़ियों की रहनुमाई कर रहे हैं, घातक रूप से घायल लोग मशीनगनें चलाते हैं; शत्रु की मशीनगनों के मुंह लोग अपने शरीर से बन्द कर देते हैं... सिर्फ़ मृतक व्यक्ति नहीं लड़ रहे हैं।" बूढ़े के चेहरे पर एक छाया आयी और चली गयी और वह सांस भर कर बोले, "मगर मृतक व्यक्ति भी लड़ रहे हैं... अपने गौरव से। हां... अब, नौजवान। उठो, अब फिर शुरू करें।"

जब मेरेस्येव वार्ड का दूसरा चक्कर लगाकर आराम करने के लिए रुका, तब प्रोफ़ेसर ने उस चारपाई की ओर इशारा किया, जिस पर ग्वोज़्देव का अधिकार था और पूछा :

"टैंक-चालक को क्या हुआ? क्या वह अच्छा हो गया और चला गया?"

मेरेस्येव ने बताया कि टैंक-चालक अच्छा हो गया और मोर्चे पर चला गया। उसके साथ मुसीबत सिर्फ़ इतनी थी कि जलने के कारण उसका चेहरा, विशेषकर नीचे का भाग, बुरी तरह विकृत हो गया था।

"अच्छा तो, तुम्हें उसने पत्र भी लिख दिया है? क्या यह लिखा है कि उसका दिल टूट गया है क्योंकि लड़कियां उससे प्रेम नहीं करतीं? उसे सलाह दो कि वह दाढ़ी और मूंछें बढ़ा ले। मैं गम्भीरता से कह रहा हूं। वे बड़ी स्वाभाविक नज़र आयेंगी, और लड़कियां उस पर मुग्ध हो जायंगी।"

एक नर्स हांफती हुई वार्ड में आयी और वसीली वसील्येविच से बोली कि मंत्रालय से उनके लिए टेलीफ़ोन आया है। प्रोफ़ेसर बोझिल गति से कुर्सी से उठे, और उठने में जिस तरह अपनी गुदाज, खाल उतरी हथेलियों को घुटनों पर टेका और पीठ झुकायी, उससे स्पष्ट हो जाता था कि पिछले कुछ हफ़्तों में वे कितने बूढ़े हो गये हैं। जब वे दरवाज़े तक पहुंचे, तो पीछे मुड़े और प्रसन्नतापूर्वक बोले :

"लिखना न भूलना उसे... क्या नाम है उसका... तुम्हारे मित्र का, मेरा मतलब है... और उसको बता देना कि मैं उसको दाढ़ी रखने की सलाह देता हूं। यह आज़माई हुई दवा है... और महिलाओं में अत्यन्त लोकप्रिय है!"

उस शाम अस्पताल का एक बूढ़ा अनुचर मेरेस्येव के लिए एक छड़ी ले आया—बढ़िया, पुराने आबनूस की छड़ी जिसमें हाथी के दांत की बड़ी आरामदेह मूठ लगी थी और उस पर नाम खोदा हुआ था।

"प्रोफ़ेसर ने आपके लिए भेजी है," अनुचर ने कहा, "वसीली वसील्येविच ने। यह उनकी अपनी है। आपको भेंटस्वरूप भेजी है। उन्होंने कहा है कि आप छड़ी के सहारे चला करें।"

ग्रीष्म की वह सांझ अस्पताल में बड़ी नीरस थी और दायें, बायें और ऊपर की मंज़िल तक के मरीज़ प्रोफ़ेसर के उपहार को देखने के लिए वार्ड नम्बर बयालीस तक टहलने चले आये। सचमुच बड़ी सुन्दर छड़ी थी।

१५

तूफ़ान के पहले की ख़ामोशी लम्बी खिंच गयी। विज्ञप्तियों में स्थानीय महत्व के संघर्षों और गश्ती दलों के बीच मुठभेड़ों के समाचार होते थे। अस्पताल में अब पहले से थोड़े मरीज़ थे, और इसलिए प्रधान ने हुक्म दिया कि वार्ड बयालीस की ख़ाली चारपाइयां हटा दी जायें। इस प्रकार पूरा वार्ड मेरेस्येव और मेजर स्त्रुचकोव के हवाले रह गया था; मेरेस्येव की चारपाई दायीं तरफ़ और मेजर की चारपाई बायीं तरफ़ नदी तट की ओर वाली खिड़की के पास लगी थी।

गश्ती दलों के बीच मुठभेड़ें! मेरेस्येव और स्त्रुच्कोव अनुभवी सिपाही थे और वे जानते थे कि यह शान्ति जितनी ही देर रहेगी, जितनी ही देर यह तनातनी की ख़ामोशी क़ायम रहेगी, उतना ही भयंकर होगा वह तूफ़ान, जो उसके बाद आयेगा।

एक दिन विज्ञप्ति में "सोवियत संघ के वीर" पद से विभूषित स्तेपान ईवुश्किन का हवाला आया, जिसने कहीं दक्षिणी मोर्चे पर पच्चीस जर्मनों का सफ़ाया कर दिया था और इस प्रकार शत्रु के मारने की अपनी

संख्या दो सौ तक पहुंचा दी थी। ग्वोज़्देव का एक पत्र आया। उसने यह तो नहीं बताया कि वह कहां है या क्या कर रहा है, मगर इतना बताया था कि वह अपने भूतपूर्व कमांडर, पावेल अलेक्सेयेविच रोतमिस्त्रोव, के स्थान पर पहुंच गया है और वहां के जीवन से संतुष्ट है, यहां चेरी के वृक्ष बहुत हैं और वह स्वयं तथा अन्य छोकरे उनको खा-खाकर अपच किये ले रहे हैं; और उसने अलेक्सेई से अनुरोध किया था कि अगर यह पत्र मिल जाये तो एक पंक्ति अन्यूता को लिख दे। ग्वोज़्देव ने लिखा था कि उसने अन्यूता को भी पत्र लिखा है, मगर पता नहीं उसके पत्र अन्यूता तक पहुंच रहे हैं या नहीं क्योंकि वह हमेशा मार्च पर रहता है और उसका पता अस्थायी है।

किसी फ़ौजी को यह बताने के लिए ये दो सूचनाएं काफ़ी थीं कि तूफ़ान कहीं दक्षिण में फूटनेवाला है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अलेक्सेई ने अन्यूता को लिख दिया था और ग्वोज़्देव को दाढ़ी बढ़ाने के विषय में प्रोफ़ेसर की सलाह भेज दी थी; लेकिन अलेक्सेई जानता था कि ग्वोज़्देव किसी युद्ध की आशा से उत्तेजित अवस्था में होगा जिससे हर सिपाही को कितनी वेदना होती है और फिर भी कितना आनन्द होता है, और इसलिए उसे दाढ़ी के बारे में सोचने या शायद, अन्यूता तक के विषय में सोचने का अवकाश भी न होगा।

वार्ड बयालीस में एक और सुखद घटना घटी। मेजर पावेल इवानोविच स्त्रुच्कोव को "सोवियत संघ के वीर" की उपाधि से विभूषित करने का समाचार प्रकाशित हुआ, लेकिन इस आनन्दपूर्ण समाचार से भी मेजर बहुत दिनों तक प्रफुल्लित नहीं हुआ। वह फिर उद्विग्नता का शिकार हो गया और अपने "मनहूस जोड़ों" को कोसने लगा, जिनके कारण वह इन सरगर्म दिनों में भी चारपाई से बंधा था। उसकी उद्विग्नता का एक और कारण भी था, जिसे वह छिपाता था, मगर जिसको अलेक्सेई ने अप्रत्याशित ढंग से जान लिया।

अपना मस्तिष्क सिर्फ़ एक बात -- चलना सीखने -- पर पूरी तरह केन्द्रित कर देने के कारण मेरेस्येव अब कठिनाई से ही यह ग़ौर कर पाता था कि आसपास क्या हो रहा है। उसने अपने लिए जो दैनिक कार्यक्रम बनाया था, उसके अनुसार वह बड़ी सख़्ती से रहता था: हर रोज तीन

घंटे—एक घंटा सुबह, एक घंटा दोपहर और एक घंटा शाम को—वह गलियारे में कृत्रिम पैरों के बल चलने का अभ्यास करता था। शुरू में दूसरे वार्डों के मरीज़ों को अपने खुले दरवाज़ों के सामने से एक नीली वर्दीवाली आकृति को पेन्डुलम जैसी नियमितता से बार बार गुज़रते और चमड़े के पांवों की चरमिहट से पूरे गलियारे को गुंजाते देखकर बड़ी चिढ़ होती थी; मगर बाद में वे इसके इतने अभ्यस्त हो गये कि दिन के किन्हीं भागों में अगर यह आकृति उनके दरवाज़ों से न गुज़रती, तो उन्हें अजब मालूम होता। और सचमुच, यहां तक हुआ कि एक दिन जब मेरेस्येव 'फ़्लू' का शिकार होकर लेट गया तो यह पता लेने के लिए कि पैर-विहीन लेफ़्टीनेंट को क्या हो गया, अन्य वार्डों से दूत भेजे गये।

अलेक्सेई प्रातःकाल अपने शारीरिक व्यायाम करता और फिर एक कुर्सी पर बैठकर वह अपने पैरों को उस तरह की क्रियाओं के लिए प्रशिक्षित करने का प्रयत्न करता कि जिनकी हवाई जहाज़ चलाने में आवश्यकता होती है। कभी-कभी वह इतनी देर अभ्यास करता कि उसका सिर घूमने लगता, कानों में छन-छन सुनाई देने लगता और पैरों के तले से फ़र्श खिसकता नजर आता। जब यह हालत हो जाती तो वह हाथ-मुंह धोने चला जाता, सिर पर ठंडा पानी ढालता और थोड़ी देर लेटा रहता ताकि फ़ौरन स्वस्थ हो जाये और टहलने तथा जिमनास्टिक करने की घड़ी न निकल जाये।

इस ख़ास मौक़े पर इतना टहलने के बाद कि उसका सिर चक्कर खाने लगा वह अपने सामने कुछ न देख पाने के कारण रास्ता टटोलता वार्ड में गया और चारपाई पर लुढ़क गया। थोड़ा स्वस्थ होने पर उसे वार्ड में कुछ आवाज़ें सुनने की चेतना हुई: क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना का शान्त और किंचित व्यंग्यपूर्ण स्वर तथा स्त्रुच्कोव का उत्तेजित और विनयपूर्ण स्वर। वे दोनों अपनी बातचीत में इतने मशगूल थे कि मेरेस्येव का वार्ड में आना देखने में असमर्थ रहे।

"मुझपर विश्वास करो, मैं गम्भीरतापूर्वक कह रहा हूं। इतना भी नहीं समझ सकतीं? तुम औरत हो या नहीं?"

"हां, मैं औरत तो जरूर हूं, मगर मैं समझ नहीं पाती, और तुम

इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक बात भी नहीं कर सकते। इसके अलावा, मुझे तुम्हारी गम्भीरता की ज़रूरत भी नहीं है।"

इस पर स्त्रुच्कोव आपे से बाहर हो गया और झिड़कते हुए स्वर में चिल्लाया :

"जहन्नुम में जाये, मैं तुम्हें प्यार करता हूं। तुम औरत नहीं हो, तुम हो लकड़ी की मूरत, जो समझ नहीं पायीं। अब समझ गयीं तुम?" इतना कहकर उसने मुंह फेर लिया और खिड़की के दरवाज़े पर उंगलियों से ताल देने लगा।

नर्सों जैसे अभ्यस्त कोमल, सावधान पग धरती हुई क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना दरवाज़े की ओर बढ़ी।

"तुम किधर चल दीं? तुम्हारा क्या जवाब है?"

"इस पर बात करने की न तो यह जगह है और न वक़्त है। मैं ड्यूटी पर हूं।"

"तुम साफ़-साफ़ बात क्यों नहीं कहतीं? तुम मुझे यातना क्यों दे रही हो? जवाब दो," मेजर की आवाज़ में वेदना की ध्वनि थी।

क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना दरवाज़े पर रुक गयी, उसकी छरहरी, सुगढ़ आकृति अंधेरे गलियारे की पृष्ठभूमि में उभर उठी। मेरेस्येव ने कभी अनुमान भी नहीं किया था कि यह शांत नर्स, जो अब जवान नहीं रह गयी थी, इतने स्त्रैण रूप में दृढ़ और आकर्षक हो सकती है। वह दरवाज़े पर अपनी गर्दन पीछे मोड़े खड़ी थी और मेजर की ओर इस तरह देख रही थी मानो कोई मूर्त्ति हो।

"अच्छा," उसने कहा, "मैं तुम्हें जवाब देती हूं। मैं तुमसे प्रेम नहीं करती और शायद तुम्हें कभी भी प्यार न कर सकूंगी।"

वह चली गयी। मेजर बिस्तर पर लुढ़क गया और तकिये में सिर गाड़ दिया। मेरेस्येव अब समझ गया कि पिछले कुछ दिनों से मेजर के विचित्र व्यवहार करने का कारण क्या था, वार्ड में नर्स के आने पर वह चिड़चिड़ा और व्यग्र क्यों हो जाता था और यकायक प्रफुल्लता से बदलकर उग्र क्रोध में क्यों फूट पड़ता था।

वह वास्तविक यंत्रणा सह रहा होगा। अलेक्सेई उसके लिए दुखी हो

उठा, मगर साथ ही प्रसन्न भी। जब मेजर चारपाई से उठा तो अलेक्सेई उसे चिढ़ाने का मज़ा लेने से बाज़ न आया।

"कहो, कामरेड मेजर, क्या मैं तुम्हारे मुंह पर थूक सकता हूं?"

अगर उसे यह पता होता कि मेजर पर इसका क्या असर होगा तो वह यह बात मज़ाक़ में भी नहीं करता। स्त्रुच्कोव अलेक्सेई की चारपाई की ओर दौड़ा और हताश स्वर में चिल्ला उठा:

"हंसते हो? अच्छा, हंसे जाओ। तुम्हीं ठीक कहते हो। मैं इसी के क़ाबिल हूं। लेकिन अब मैं क्या करूं? तुम्हीं बताओ। मैं क्या करूं, सिखा दो न। तुमने हमारी बातें सुनीं, क्यों?.."

वह चारपाई पर बैठ गया और हाथों में सिर पकड़कर अपने शरीर को इधर-उधर झुलाता बैठा रहा।

"शायद तुम सोचते हो, मैं मज़े लेना चाहता था? लेकिन यह बात नहीं थी। मैं गम्भीर था। उस पगली के सामने मैंने गम्भीरता से प्रस्ताव रखा था।"

शाम को अपने नित्य कार्य के सम्बन्ध में क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना वार्ड में आयी। सदा की तरह वह शान्त, करुणामयी और धैर्यवती थी। उससे आनन्दमयी किरणें उद्भासित प्रतीत होती थीं। वह मेरेस्येव की ओर देखकर मुसकुरायी और मेजर की ओर देखकर भी, मगर उसकी ओर उलझन और किंचित भय से देखा। स्त्रुच्कोव नाख़ून काटता खिड़की के पास बैठा था और जब क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना की पदचाप गलियारे में विलीन होती गयी, तब उसने उस दिशा में क्रोध और सराहना के मिश्रित भाव से देखा।

"सोवियत देवी," वह बुदबुदाया, "किस बेवक़ूफ़ ने इसे यह नाम दे दिया? वह तो नर्स के भेष में राक्षसी है!"

आफ़िसवाली नर्स, दुबली-पतली, प्रौढ़ महिला वार्ड में आयी और पूछने लगी:

"मेरेस्येव अलेक्सेई, क्या यह रोगी चल फिर सकता है?"

"नहीं, वह तो दौड़नेवाला रोगी है," स्त्रुच्कोव गुर्राया।

"मैं यहां मज़ाक़ करने नहीं आयी," नर्स ने सख़्ती से टीका की, "मेरेस्येव अलेक्सेई, सीनियर लेफ़्टीनेंट को फ़ोन पर बुलाया जा रहा है।"

"कोई युवती है?" स्लुच्कोव ने प्रफुल्ल होते हुए पूछा और कुपित नर्स की ओर आंख मार दी।

"मैंने उसका प्रमाणपत्र नहीं देखा है," नर्स फुफकारी और शान से सिर तानकर वार्ड के बाहर हो गयी।

मेरेस्येव बिस्तर से उछल पड़ा। प्रफुल्लतापूर्वक अपनी छड़ी टेकते हुए वह नर्स से आगे निकल गया और सचमुच सीढ़ियों पर दौड़ पड़ा। कोई एक महीने से वह ओल्गा के उत्तर की आशा कर रहा था और उसके दिमाग़ में यह विचार कौंध गया: शायद यह वही है? लेकिन यह कैसे सम्भव है? इस जमाने में वह स्तालिनग्राद के पास से मास्को तक कैसे सफ़र कर सकती है! इसके अलावा उसे इस अस्पताल का पता कैसे चल सकता है, क्योंकि उसने तो उसे यही बताया था कि वह मोर्चे के पीछे के प्रशासन में काम कर रहा है, और स्वयं मास्को में भी नहीं, कहीं उपनगर में? लेकिन इस क्षण मेरेस्येव ने चमत्कारों में विश्वास कर लिया और यद्यपि इस बात को वह स्वयं भी देखने में असमर्थ था, मगर वह दौड़ रहा था, अपने कृत्रिम पैरों से पहली बार दौड़ रहा था, लुढ़कती हुई गति से, कभी ही कभी छड़ी का सहारा लेते हुए, और उसके बूट चर्रा रहे थे: चर्र, चर्र, चर्र...

उसने रिसीवर उठाया और एक सुखद, आकण्ठ मगर पूरी तरह अपरिचित स्वर सुना। उससे पूछा गया कि क्या वह वार्ड बयालीस का सीनियर लेफ़्टीनेंट अलेक्सेई पेत्रोविच मेरेस्येव है? तेज़ और क्रुद्ध स्वर में मानो उस प्रश्न में कोई अपमानजनक बात थी, मेरेस्येव चीखा:

"हां!"

एक क्षण मौन छाया रहा, और फिर वह आवाज़, अब उत्साहरहित और संयमित भाव से उसे कष्ट देने के लिए क्षमा मांगने लगी। ज़ाहिर था कि सूखे जवाब से उसे बुरा लगा था, और फिर स्पष्टतया प्रयत्नपूर्वक बोली:

"आन्ना ग्रीबोवा बोल रही है, तुम्हारे मित्र लेफ़्टीनेंट ग्वोज्देव की परिचिता। आप मुझे नहीं जानते।"

मेरेस्येव ने दोनों हाथों से रिसीवर थाम लिया और अपनी आवाज़ का पूरा जोर लगाकर चिल्लाया:

"तुम अन्यूता हो? अन्यूता? मैं तुम्हें ख़ूब जानता हूं। ग्रिगोरी ने मुझे बताया था तुम्हारे..."

"वह कहां है? उसका क्या हुआ? वह ऐसे यकायक चला गया। जब 'अलर्ट' का भोंपू बजा तो मैं कमरे से बाहर चली गयी थी। आप जानते ही हैं मैं फ़र्स्ट-एड के दल में हूं। जब मैं लौटकर आयी, तो वह कमरे में नहीं था और वह कोई पत्र या पता नहीं छोड़ गया... अलेक्सेई, प्रिय... यह नाम लेने के लिए मुझे क्षमा करना... मैं भी तुम्हें जानती हूं... मैं उसके बारे में बहुत चिन्तित हूं। मैं जानना चाहूंगी कि वह कहां है और वह इतने यकायक क्यों चला गया..."

अलेक्सेई को अपने हृदय में एक मधुर भावना उमड़ती अनुभव हुई। वह अपने मित्र की कल्पना कर बड़ा प्रसन्न हो उठा। तो वह मूर्ख छोकरा भ्रम में था, बड़ा छुईमुई है। और सच्ची लड़कियां सिपाही के पंगु हो जाने से नहीं भयभीत होतीं। और इसका मतलब है कि वह स्वयं यह विश्वास कर सकता है कि कोई उसके लिए भी इसी प्रकार चिन्तित होगा। और उसे इसी तरह खोज रहा होगा। ये विचार उसके दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गये और वह उत्तेजनावश जल्दी-जल्दी बोलते हुए रिसीवर में चिल्लाने लगा :

"अन्यूता! सब ठीक है। वह अफ़सोसनाक ग़लतफ़हमी थी। वह बिल्कुल सकुशल है और फिर मोर्चे पर जम गया है। हां, उसका पता है फ़ील्ड पोस्ट आफ़िस ४२५३१-ब। वह दाढ़ी बढ़ा रहा है। मेरी क़सम, अन्यूता। बढ़िया दाढ़ी... जैसी... अरे... जैसी... अरे, जैसी छापेमार बढ़ा लेते हैं। उसमें वह बड़ा जंचता है।"

अन्यूता ने दाढ़ी का समर्थन नहीं किया। उसका ख़्याल था कि वह व्यर्थ का जंजाल है। इस बात को सुनकर मेरेस्येव और भी ख़ुश हुआ और बोला कि अगर यह बात है तो ग्रिगोरी दाढ़ी साफ़ करा लेगा, हालांकि सभी की राय है कि दाढ़ी से उसका चेहरा-मुहरा बहुत भला लगता है।

अंत में दोनों ने गहरी मित्रता के साथ अपने रिसीवर रख दिये और यह तै कर लिया कि अस्पताल छोड़ने से पहले मेरेस्येव उसे फ़ोन कर देगा। वार्ड में लौटते समय अलेक्सेई को याद पड़ा कि वह टेलीफ़ोन तक दौड़ता

गया था, और इसलिए उसने फिर दौड़ने की कोशिश की, मगर कुछ न बना। कृत्रिम पैरों के सख़्त दबाव से सारे शरीर में दर्द की लहर-सी दौड़ने लगी। लेकिन कोई परवाह नहीं। अगर वह आज नहीं दौड़ पाता है तो कल दौड़ेगा, और कल नहीं दौड़ पायेगा तो परसों और परसों नहीं तो उसके बाद के दिन, लेकिन वह ज़रूर दौड़ेगा। सब ठीक हो जायेगा। उसे अब कोई संदेह नहीं था, वह दौड़ सकेगा और उड़ भी सकेगा, और लड़ भी सकेगा, और प्रतिज्ञाएं करने का शौक़ होने के कारण उसने प्रतिज्ञा की कि पहले आकाश-युद्ध के बाद, पहले जर्मन हवाई जहाज़ को मार गिराने के बाद वह ओल्गा को पत्र लिखेगा और सब कुछ बता देगा, चाहे जो कुछ हो जाये।

तृतीय खण्ड

१

१९४२ की ग्रीष्म के शिखर काल में विमान सेना की बाक़ायदा वर्दी पहने एक किंचित स्थूल युवक, मज़बूत ग्राबनूसी छड़ी टेकता मास्को के फ़ौजी अस्पताल के भारी-भरकम, बलूत के फाटक से प्रकट हुआ। उसके साथ सफ़ेद पोशाक पहने एक महिला थी। पिछले महायुद्ध में नर्सें जिस प्रकार लाल क्रास-चिह्न अंकित रूमाल ओढ़ती थीं, उसी प्रकार का रूमाल ओढ़े होने के कारण उस महिला के सदय और सुन्दर मुखड़े पर पवित्र भावभंगिमा प्रगट हो आयी थी। वे पोर्च में आकर रुक गये। विमान-चालक ने अपनी गुजली हुई, उड़े हुए रंग की टोपी उतारी और भोंड़े ढंग से नर्स का हाथ होठों तक उठाया और नर्स ने उसका मस्तक चूम लिया। इसके बाद विमान-चालक किंचित लुढ़कती हुई चाल से जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से उतरा और पीछे घूमकर देखे बिना अस्पताल की लम्बी इमारत के पास से, नदी के बांध के किनारे-किनारे चल पड़ा।

नीले, पीले और भूरे पैजामे पहने हुए मरीज़ लोग खिड़कियों के पास खड़े थे और अपने हाथ, छड़ियां या बैसाखियां हिला रहे थे तथा चिल्लाकर उसे अपनी अपनी आख़िरी सलाह दे रहे थे। विमान-चालक ने उत्तर में अपना हाथ हिलाया, किन्तु यह स्पष्ट था कि वह इस बड़ी भारी धूल-धूसरित इमारत से यथासम्भव शीघ्र भागने के लिए आतुर था, और उन खिड़कियों के पास खड़े लोगों से अपनी उत्तेजना छिपाने के लिए उसने अपना सिर मोड़ लिया था। वह विचित्र, स्प्रिंगदार चाल से अपनी छड़ी का किंचित सहारा लेते हुए जल्दी-जल्दी चला जा रहा था। उसके प्रत्येक पग के साथ अगर हल्की-सी चर्राहट न हो रही होती तो कोई यह ख़्याल भी नहीं कर सकता था कि इस सुगढ़, बलिष्ठ लगनेवाले स्फूर्त्तिवान के पैर हैं ही नहीं।

अस्पताल से मुक्त होने के बाद अलेक्सेई मेरेस्येव को स्वास्थ्य-लाभ के लिए मास्को के निकटवर्ती विमान सेना स्वास्थ्य-गृह में भेज दिया गया। मेजर स्त्रुच्कोव को भी इसी जगह भेजा गया था। उन्हें स्वास्थ्य-गृह ले जाने के लिए कार भेजी गयी थी, लेकिन मेरेस्येव ने अस्पताल के अधिकारियों को बताया कि मास्को में उसके कुछ रिश्तेदार हैं और उनसे मिले बिना वह वहां नहीं जा सकता। उसने अपना सामान स्त्रुच्कोव के साथ भेज दिया था और अब अस्पताल से पैदल रवाना हो गया था, उसने वायदा किया था कि शाम को स्थानीय बिजली रेलगाड़ी के द्वारा वह स्वास्थ्य-गृह पहुंच जायेगा।

मास्को में उसका कोई रिश्तेदार नहीं था, लेकिन उसे राजधानी को घूमकर देखने की बड़ी आकांक्षा थी, वह बिना सहायता चल-फिरकर अपनी ताक़त आजमाने के लिए उत्सुक था, और उस कोलाहलपूर्ण भीड़ में मिल जाना चाहता था जिसे उसके बारे में कोई चिन्ता न थी। उसने अन्यूता को फ़ोन कर दिया था और पूछा था कि वह बारह बजे के क़रीब उससे मिल सकेगी या नहीं। कहां? अच्छा, मान लो पुश्किन स्मारक के क़रीब... और अब वह ग्रेनाइट पत्थर के तट से बंधी हुई शानदार नदी के किनारे-किनारे चला जा रहा था जिसका उद्वेलित धरातल धूप में चम-चम हो रहा था। ग्रीष्म के उष्ण वायुमण्डल में, जो सुपरिचित, सुगन्ध से पूरित था, वह लम्बी सांसें भरता चला जा रहा था।

चारों ओर वातावरण कितना मनोहर था!

उसके पास से जितनी भी महिलाएं गुज़रतीं, वे सभी उसे सुन्दर दिखाई दे रही थीं और हरे-भरे वृक्ष आश्चर्यजनक रूप से उज्ज्वल प्रतीत हो रहे थे। पवन इतना मदमाता था कि उसका सिर इस तरह उन्मत्त हो उठा मानो कोई आसव पी डाला हो और वायुमण्डल इतना साफ़ था कि उसे दूर-अदूर के अन्तर की संवेदना न रही और उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि क्रेमलिन की कंगूरेदार दीवारों को, जिन्हें उसने तस्वीरों के अलावा और कभी न देखा था, और इवान महान के घण्टाघर के गुम्बद को तथा नदी के ऊपर टंगे पुल की विशालकाय नीची मेहराब को छूने के लिए सिर्फ़ हाथ बढ़ाने की आवश्यकता है। नगर पर जो मधुर, मस्त बनानेवाली सुगंध मंडरा रही थी, उससे उसको अपने बचपन की याद हो आयी। वह

कहां से आया है? उसका हृदय इतनी तेज़ी से क्यों धड़क रहा है और उसे अपनी मां की—आज की झुर्रीदार बूढ़ी महिला की नहीं, बल्कि सुन्दर केशोंवाली ऊंचे क़द की युवती की—याद क्यों आ रही है? उसके साथ वह मास्को कभी नहीं आया था।

अब तक मेरेस्येव ने राजधानी का परिचय पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों की चित्रावलियों से, पुस्तकों से और मास्को से लौटनेवालों के मुंह से, सुषुप्त संसार के ऊपर अर्द्धरात्रि में घण्टे बजानेवाले प्राचीन घड़ियाल से तथा उत्सव-प्रदर्शनों के समय रेडियो में गूंज उठनेवाले मिश्रित स्वरों से ही प्राप्त किया था और अब वही मास्को था, सामने फैला हुआ, उष्ण ग्रीष्म प्रकाश में सुन्दरतापूर्वक आलोकित।

वह क्रेमलिन की दीवार के साथ वीरान नदी के किनारे-किनारे चला गया, ग्रेनाइट की ठंडी तटीय दीवार से टेककर विश्राम करने के लिए रुक गया और ग्रेनाइट की दीवार के चरणों पर रुपहले पानी को ताकता रहा और फिर धीरे-धीरे रेड स्क्वायर की ओर जानेवाले मार्ग पर बढ़ गया। अलकतरे की सड़कों और चौराहों पर लगे लाइम वृक्ष फूल रहे थे और उनके कटे-छंटे शीश पर सीधे-सादे, मधुर से पूरित पुष्पों पर मधुमखियों के दल, गुज़रती हुई मोटरों के भोंपुओं की आवाज़ें, ट्रामों की टन-टन और खड़-खड़, और गरम अलकतरे से उठनेवाली पेट्रोल की गंध से भरी भाप की उपेक्षा करते हुए व्यस्ततापूर्वक गुंजार कर रहे थे।

तो यह है मास्को।

चार महीने अस्पताल में रहने के बाद, अलेक्सेई ग्रीष्म के ऐश्वर्य से इतना चकित रह गया था कि प्रारम्भ में वह यह न देख पाया कि राजधानी युद्ध का वेष धारण किये हुए थी और जैसा कि वायु सेना में कहा जाता है "अव्वल नम्बर की तत्परता" की स्थिति में थी, यानी वह किसी भी क्षण शत्रु का मुक़ाबला करने के लिए तैयार थी। पुल के पास चौड़ी सड़क एक बड़े भारी, भौंड़े वर्गाकार लट्ठों के बैरीकेड से बंद थी, जो रेत से भरा था, मानो किसी बच्चे ने मेज़ पर खिलौनों के घनाकार खण्ड छोड़ दिये हों, इस प्रकार पुल के कोनों पर कंक्रीट के वर्गाकार गोली-बार स्थल खड़े हुए थे जिनमें चार चार छेद थे। रेड स्क्वायर की चिकनी, धूसर सड़क पर मकान, घास के मैदान और छायादार रास्ते भिन्न-भिन्न

रंगों से रंगे हुए थे। गोर्की स्ट्रीट की दूकानों की खिड़कियों पर तख़्तियां जड़ी थीं और वे रेत के बोरों से सुरक्षित थीं, और बग़ल की सड़कों पर लोहे की छड़ों से बनी, ज़ंग खायी, टैंक-रोधक रुकावटें खड़ी थीं, जो ऐसी लगती थीं, मानो राह में खेलनेवाले बच्चे अपना खेल का सामान छोड़ गये हों। मोर्चे से आये हुए सिपाही के लिए, ख़ास तौर से ऐसे सिपाही के लिए जो इससे पहले मास्को कभी न आया हो, इस सब में कोई असाधारण बात शायद न दिखाई दी हो। उसे अगर कोई बात देखकर आश्चर्य हुआ होगा तो "तास" समाचार एजेंसी द्वारा दीवारों और दूकानों की खिड़कियों पर बनायी गयी तस्वीरों को देखकर और कुछ मकानों के सामनेवाले हिस्सों को ऐसे विचित्र ढंग से रंगे हुए देखकर, जिनसे भविष्यवादी चित्रकारों द्वारा अंकित किसी ऊटपटांग चित्र की याद आ जाती थी।

मेरेस्येव जो इस समय तक काफ़ी थक गया था, बूट चरर्राते हुए और अपनी छड़ी पर और भी बोझिल ढंग से सहारा लेते हुए गोर्की स्ट्रीट में घुस गया और चारों ओर बमों के गड्ढों, टूटी-फूटी इमारतों, मुंह बाये हुए ख़ाली जगहों और चकनाचूर खिड़कियों को तलाश करने लगा और उन्हें न पाकर चकित रह गया। चूंकि वह सबसे पश्चिम के हवाई अड्डों में से एक पर काम करता रहा था, इसलिए वह लगभग हर रात अपनी खोहों के ऊपर उड़कर पूर्व की ओर जानेवाले जर्मन बममार जहाज़ों की टुकड़ियों पर टुकड़ियों की आवाज़ सुनने का आदी था। एक लहर की गूंज दूर पर ख़त्म भी न हो पाती थी कि दूसरी आवाज़ उमड़ती चली आती थी, और कभी-कभी तो सारी रात आसमान गरजता रहता था। हवाबाज़ जानते थे कि ये फ़ासिस्ट मास्को की तरफ़ जा रहे हैं, और इसलिए वे अपने मन में चित्र बनाया करते थे कि मास्को में नारकीय ज्वाला धधक रही होगी।

और अब युद्धकालीन मास्को में घूमते-फिरते हुए मेरेस्येव हवाई हमले के चिह्न खोज रहा था, मगर उसे कोई न मिल रहा था। अलकतरे की सड़कें चिकनी थीं, इमारतों की अटूट पांतें वैसी की वैसी खड़ी थीं। खिड़कियां भी, जिन पर काग़ज़ की आड़ी-तिरछी पट्टियां चिपकी थीं, कुछ अपवादों को छोड़कर, सभी सुरक्षित थीं। लेकिन मोर्चे की पांत निकट

ही थी, और इस बात को यहां के निवासियों के चिन्ताग्रस्त चेहरे देखकर समझा जा सकता था, जिनमें से आधे लोग सिपाही थे, जो धूल भरे बूट पहने रहते थे, जिनकी वर्दियां पसीने से कंधों पर चिपक जाती थीं और जिनकी पीठ पर सामान के थैले लदे नज़र आते थे। धूल से सनी मोटर-ट्रकों का एक लम्बा दस्ता, जिनके मडगार्ड टूटे-फूटे थे और सामने के शीशे चकनाचूर हो चुके थे, यकायक एक बग़ल की सड़क से धूप से आलोकित मुख्य सड़क पर प्रगट हुआ। इन जर्जर ट्रकों के सिपाही, जिनके बरसाती लबादे हवा में उड़ रहे थे, चारों ओर कौतूहलतापूर्वक देख रहे थे। दस्ता आगे बढ़ता गया और ट्रालीबसों, कारों और ट्रामों को पछाड़ गया—यह सजीव स्मरण-चिह्न था कि शत्रु बहुत दूर नहीं है। लालसापूर्ण दृष्टि से मेरेस्येव उस दस्ते को देखता रहा और सोचता रहा: अगर इन धूल सनी ट्रकों में से किसी एक पर वह उछलकर चढ़ जाये तो वह शाम तक मोर्चे पर अपने हवाई अड्डे पर पहुंच जायेगा। उसने मन ही मन उस खोह की कल्पना की, जहां वह देगत्यरेन्को के साथ रहता था: देवदार के लट्ठों के ढांचों से बनी चारपाइयां, कोलतार, चीढ़ और गोले के खोल को चपटाकर बनाये गये आदिमकालीन लैम्प में जलनेवाले पेट्रोल की तीखी गंध; इंजनों की धड़धड़ाहट जो हर सुबह ज़ोर पकड़ लेती थी, और सिर के ऊपर चीड़ वृक्षों के झूमने की गूंज, जो रात हो या दिन, कभी बंद न होती थी। वह खोह उसे वास्तविक, शान्तिपूर्ण, आरामदेह घर जैसी लगने लगी। काश, वह शीघ्र ही वहां पहुंच सकता, उस दलदली स्थल पर पुनः पहुंच सकता जिसकी नमी को, फिसलनी ज़मीन को और मच्छड़ों की लगातार भनभनाहट को सारे हवाबाज़ कोसा करते थे।

वह बड़ी कठिनाई से पैर घसीटता पुश्किन स्मारक तक पहुंचा। रास्ते में वह कई बार अपनी छड़ी पर दोनों हाथ टेककर खड़े हो करके और दूकानों की खिड़कियों पर प्रदर्शित मामूली चीज़ों की जांच करने का बहाना करके आराम करने के लिए रुका। स्मारक के पास हरी, सूरज से तपी हुई बेंच पर वह कितनी राहत के साथ बैठ गया या गिर पड़ा और पैर फैला लिये, जिनमें कृत्रिम पैरों से ऊपर दर्द और जलन मच रही थी। यद्यपि वह थका था, उल्लास की भावना ने उसका साथ न छोड़ा। वह निर्मल, खुला हुआ दिन कितना सुन्दर था। नुक्कड़ पर की इमारत की

छत पर खड़ी महिला मूर्त्ति के ऊपर जो आसमान फैला हुआ था, वह अनन्त प्रतीत होता था। सड़क के किनारे लगे लाइम वृक्षों की ताजी, मधुर गंध लेकर हवा का एक झोंका आया। ट्रामगाड़ियों की धड़धड़ाहट प्यारी लग रही थी और उन बच्चों की हंसी भी उल्लासपूर्ण थी, जो पीले और दुबले-पतले थे, स्मारक के नीचे उष्ण, सूखी बालू में घरौंदे बनाने में व्यस्त थे। उधर सड़क पर और आगे, रस्सियों के बैरियर के पीछे, जहां गुलाबी कपोलोंवाली दो लड़कियां चुस्त फ़ौजी वर्दियां पहने चौकसी कर रही थीं, एक सिगार जैसा रुपहले ढांचे का गुब्बारा नजर आ रहा था और मेरेस्येव को यह युद्ध-साधन मास्को के आसमान में स्थित रात्रिकालीन पहरू जैसा नहीं, एक विशालकाय, सुप्रकृति के पशु की भांति लगा जो मानो किसी चिड़ियाघर से निकल भागा हो और अब पेड़ों की ठंडी छांह में ऊंघ रहा हो।

मेरेस्येव ने आंखें बंद कर लीं और अपना मुसकुराता हुआ चेहरा सूरज की ओर मोड़ लिया।

शुरू में बच्चों ने हवाबाज़ की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्हें देखकर मेरेस्येव को वार्ड नम्बर बयालीस की खिड़की की पटिया पर आ जुटनेवाली गौरैयों का स्मरण हो आया और उनकी चहक की गूंज के बीच वह सूरज की उष्णता तथा सड़क के शोरगुल को अपने अंग-अंग में सोख लेने में व्यस्त हो गया। लेकिन एक छोटा-सा छोकरा, अपने साथियों से अलग भाग कर अलेक्सेई के फैले हुए पैरों से टकरा गया और रेत में पछाड़ खाकर गिर पड़ा।

उस नन्हे छोकरे का चेहरा एक क्षण तो आंसू भरी पीड़ा से विकृत हो उठा, मगर दूसरे ही क्षण उसपर हैरानी का भाव आ गया और फिर भय-ग्रस्तता छा गयी। डर के मारे बालक चीख़ उठा और भाग खड़ा हुआ। बच्चों का झुण्ड उसके चारों तरफ़ जमा हो गया और कुछ देर तक हवाबाज़ की कनखियों से नजरें डालते हुए घबराहट के साथ चहचहाता-बहकता रहा। फिर वे धीरे-धीरे, चोरी-चोरी उसकी ओर बढ़ने लगे।

अपने विचारों में लीन रहने के कारण मेरेस्येव यह दृश्य न देख सका। उसने आंखें खोलीं और छोकरों को अपनी ओर आश्चर्य और भय से ताकते देखा, तभी उसे होश आया कि ये बालक क्या कह रहे हैं।

"तू झूठ बोल रहा है, विटैमिन! वह असली हवाबाज़ है, सीनियर लेफ़्टीनेंट," एक दस वर्ष के पीले-दुबले लड़के ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"मैं झूठ नहीं कह रहा हूं," विटैमिन ने विरोध किया। "मैं मर जाऊं, अगर झूठ बोलूं। सच मानो, वे लकड़ी के हैं! असली नहीं, लकड़ी के हैं, मैं कहे देता हूं।"

मेरेस्येव के कलेजे में तीर-सा लगा और दिन की उज्ज्वलता यकायक उसके लिए मंद पड़ गयी। उसने आंखें उठायीं और उसकी नज़र पड़ते ही, बालक अभी भी उसके पैरों की ओर देखते हुए पीछे हट गये।

अपने साथी के अविश्वास से क्रुद्ध होकर विटैमिन ने उसे चुनौती देते हुए कहा :

"तुम चाहो तो मैं उसी से पूछ लूं। क्या समझते हो, मैं डरता हूं? आओ, शर्त्त बद लो!"

इतना कहकर उसने अपने को बाक़ी लड़कों से अलहदा कर लिया और धीरे-धीरे, सावधानी से, अस्पताल की खिड़की की दहलीज़ पर फुदकनेवाले "टामी गनर" की भांति, पलक मारते ही रफ़ूचक्कर होने के लिए तैयार-सा, वह मेरेस्येव की तरफ़ बढ़ा। अंत में, दौड़ के लिए तैयार खिलाड़ी की भांति कमर झुकाकर, तत्परतापूर्वक खड़े होकर उसने पूछने का साहस किया :

"चाचा, आपके पैर कैसे हैं, सच्चे हैं या लकड़ी के? क्या आप पंगु हैं?"

गौरैया जैसे छोकरे ने हवाबाज़ की आंखों में आंसू भर आते देखे। अगर मेरेस्येव उछल पड़ता, उसपर चीख़ पड़ता और अपनी विचित्र छड़ी लेकर उसके ऊपर झपट पड़ता, तो उस बालक को कोई आश्चर्य न होता, लेकिन विमान सेना का एक लेफ़्टीनेंट रोता है। उसने समझा तो नहीं, मगर अपने नन्हें-से दिल में वह दर्द महसूस किया जो उसने "पंगु" कहकर हवाबाज़ को चोट पहुंचाकर पैदा किया था। वह बच्चों के झुण्ड में ख़ामोशी से वापस लौट गया, और झुण्ड भी ग़ायब हो गया मानो वह उष्ण पवन में घुल गया हो जिसमें शहद और तप्त अलकतरे की गंध आ रही थी।

अलेक्सेई ने अपना नाम पुकारे जाते सुना। वह उछलकर खड़ा हो गया। सामने अन्यूता खड़ी थी। वह उसे फ़ौरन पहचान गया—यद्यपि वह

उतनी सुन्दर नहीं थी, जितनी कि फ़ोटो में दिखाई देती थी। उसका चेहरा पीला और थका हुआ दिखाई दे रहा था, और अर्ध-फ़ौजी पोशाक पहने थी – सिपाहियों जैसी छोटी क़मीज़ तथा घुटने तक के जूते पहने और एक पुरानी, रंग उड़ी टोपी सिर पर जमाये हुए। लेकिन उसकी हरी-सी किंचित उभड़ी हुई आंखें मेरेस्येव की ओर इस निर्मलता और सादगी से देख रही थीं, उनमें से ऐसा मैत्रीभाव आलोकित हो रहा था, कि वह लड़की जो उसके लिए अजनबी थी, उसे पुरानी परिचित जान पड़ी मानो बचपन में वे दोनों साथ-साथ इसी अहाते में खेलते रहे हों।

एक क्षण उन्होंने मौन भाव से एक दूसरे की परीक्षा की। अंत में वह बोली :

"मैंने आपकी कल्पना बिल्कुल भिन्न रूप में की थी।"

"कैसी कल्पना की थी?" मेरेस्येव ने पूछा और अपने चेहरे पर उमड़ आयी मुसकान को, जो उसे कुछ उपयुक्त नहीं महसूस हो रही थी, बहुत कोशिश करने पर भी दूर नहीं कर सका।

"मैं क्या बताऊं? समझ लीजिए, वीरों जैसा, ऊंचे क़द का, हृष्ट-पुष्ट। हां, ऐसा ही कुछ था, और भारी जबड़ा, इस तरह का, और सचमुच, मुंह में एक पाइप... ग्रिगोरी ने आपके बारे में इतना कुछ लिखा था।"

"तुम्हारा ग्रिगोरी, वह तो है हीरो!" अलेक्सेई ने बीच में ही उसकी बात काट दी और यह देखकर कि इस बात से लड़की खिल गयी है, उसने इसी तर्ज़ से बात जारी रखते हुए और "तुम्हारे" शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा: "तुम्हारा ग्रिगोरी तो असली इनसान है। मैं क्या हूं? लेकिन तुम्हारा ग्रिगोरी... मेरा ख़्याल है, उसने अपने बारे में तुम्हें कुछ नहीं बताया..."

"अच्छा, अलेक्सेई? मैं अलेक्सेई कहूंगी, इजाज़त होगी? उसके पत्रों से मैं इस नाम की अभ्यस्त हो चुकी हूं। मास्को में तुम्हें और कोई काम नहीं है, क्या? तो मेरे घर चलो। मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर चुकी हूं और इसलिए अब सारा दिन फ़ुर्सत में रहूंगी। आओ न! मेरे घर कुछ वोदका भी है। तुम्हें वोदका पसंद है? मैं तुम्हें कुछ पिलाऊंगी।"

तत्क्षण, स्मृति के गर्भ से, अलेक्सेई की आंखों के सामने मेजर स्लुच्कोव का चालाकी भरा चेहरा कौंध गया और उसे लगा कि वह शेख़ी

बघारता हुआ कह रहा है : "लो, देख लो! देखते हो, यह कैसी है? अकेली रहती है। वोदका! आहा!" लेकिन स्त्रुच्कोव नज़र से इतना गिर चुका था कि वह उसकी बातों पर अब किसी क़ीमत पर यक़ीन नहीं कर सकता। शाम होने को अभी बड़ी देर थी, इसलिए वे पेड़ों की छांहों तले सड़क के किनारे-किनारे पुराने मित्रों की तरह बातें करते टहलते रहे। उसे यह देखकर आनन्द प्राप्त हो रहा था कि जब उसने बताया कि युद्ध शुरू होने पर ग्वोज़्देव किस दुर्भाग्य का शिकार हो गया था तो अपने आंसू रोकने के लिए उसने अपने होंठ काट लिये। जब उसने मोर्चे पर ग्वोज़्देव के साहसी कामों का वर्णन किया तो उसकी हरी-सी आंखें चमकने लगीं। वह उसपर कितना गर्व करती है! और अधिक विस्तृत विवरण पाने के लिए वह किस बारीकी से सवाल पूछ रही थी। और उस समय वह कितनी रुष्ट हो उठी जब उसने स्वयं बताया कि ग्वोज़्देव ने अकारण ही उसके पास अपनी तनख़्वाह का काग़ज़ भेज दिया था। और वह यकायक क्यों भाग गया था? न कोई चेतावनी, न कोई संदेश और न कोई पता ही छोड़ा? क्या वह भी कोई फ़ौजी गुप्त बात थी? कोई आदमी अगर बिना विदा लिये चला जाये और फिर कभी एक शब्द भी न लिखे तो इसमें कौनसा फ़ौजी रहस्य है?

"अच्छा, ज़रा यह भी बताओ, जब तुम मुझसे टेलीफ़ोन पर बातें कर रहे थे, तब तुमने इस बात पर इतना अधिक ज़ोर क्यों दिया था कि वह दाढ़ी बढ़ा रहा है?" अन्यूता ने उसकी ओर जिज्ञासापूर्वक देखते हुए पूछा।

"ओह, वैसे ही बक गया। उसमें कोई ख़ास बात नहीं थी," मेरेस्येव ने बात टालते हुए जवाब दिया।

"नहीं, नहीं, मुझे बता दो! जब तक तुम बताओगे नहीं, मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं। यह भी फ़ौजी रहस्य है क्या?"

"बिल्कुल नहीं। सीधी बात यह कि हमारे प्रोफ़ेसर वसीली वसील्येविच, समझीं... उन्होंने दाढ़ी बढ़ाने की हिदायत दी थी... ताकि लड़कियां... मेरा मतलब है, ताकि कोई लड़की, उसे अधिक चाहने लगे।"

"ओह, यह बात है? अब मैं सब कुछ समझ गयी!"

यकायक अन्यूता की हरी-सी आंखों में रोशनी गुल हो गयी और वह

ज़रा ज़्यादा ढली हुई दिखाई देने लगी। उसके चेहरे का पीलापन ज़रा और उभर आया, और नन्हीं-नन्हीं झुर्रियां, इतनी बारीक कि सुई से काढ़ी गयी जान पड़ती थीं, उसके माथे पर, आंखों के कोने पर प्रगट हो गयीं, और कुल मिलाकर, अपनी पुरानी, उड़े हुए रंग की वर्दी और अखरोटी रंग के बालों के ऊपर उड़े हुए रंग की पाइलट टोपी पहने हुए वह थकित और जर्जर मालूम होने लगी। केवल उसका नन्हा-सा, रसीला गुलाबी मुख देखकर, जिसमें ऊपर के होंठ पर एक छोटा-सा तिल था, यह प्रगट होता था कि वह अभी भी युवती है, और मुश्किल से बीस वर्ष की आयु तक पहुंची होगी।

मास्को में ऐसा भी होता है कि अगर आप शानदार अट्टालिकाओं की छांह में चौड़ी सड़क पर चलते जायें और यकायक कहीं उस सड़क से मुड़ पड़े तो एक-आध दर्जन क़दम ही चल पायेंगे कि आपको कोई छोटा-सा नाटा मकान मिल जायेगा, जिसकी नन्ही-सी खिड़कियां पुरानेपन के कारण धुंधली पड़ गयी होंगी। ऐसे ही एक मकान में अन्यूता रहती थी। वे लोग एक तंग ज़ीना चढ़कर, जहां बिल्लियों और मिट्टी के तेल की गंध आ रही थी, ऊपर की मंज़िल पर पहुंचे। लड़की ने कुंजी लगाकर दरवाज़ा खोला। तंग रास्ते में पड़े हुए सामान भरे थैलों, टीन के कुछ तसलों और कनस्तरों को लांघते हुए वे एक अंधेरे और वीरान रसोईघर में पहुंचे, फिर एक छोटा-सा गलियारा पार किया और एक नाटे दरवाज़े तक पहुंचे। एक नाटी, दुबली-पतली वृद्धा ने सामने के दरवाज़े से अपना सिर निकाला।

"आन्ना दनीलोव्ना, तुम्हारे लिए एक चिट्ठी है," उसने कहा और फिर उन युवा व्यक्तियों को जिज्ञासापूर्वक तब तक देखती रही, जब तक वे कमरे में घुस न गये और फिर ग़ायब हो गयी।

अन्यूता के पिता एक संस्थान में प्राध्यापक थे। जब संस्थान यहां से अन्यत्र ले जाया गया तो अन्यूता के माता-पिता भी साथ ही चले गये और किसी पुरानी वस्तुओं के भण्डार की भांति कपड़े से ढंके-मुंदे फ़र्नीचर से भरे ये दो छोटे-से कमरे इस लड़की की देखभाल में छोड़ गये। सारे फ़र्नीचर, दरवाज़े और खिड़कियों के पुराने परदों, दीवारों की तस्वीरों और पियानो पर रखी हुई मूर्त्तियों और गुलदस्तों से सड़ांध और वीरानगी की गंध आ रही थी।

"इस जगह की यह हालत देखकर क्षमा करना। मैं सैनिक की भांति रहती हूं और अस्पताल से सीधे विश्वविद्यालय चली जाती हूं। इस जगह तो मैं कभी-कभी आती हूं," अन्यूता ने लजाते हुए कहा और कूड़ा करकट समेत मेज़पोश को जल्दी से मेज़ से हटा दिया।

वह कमरे से बाहर चली गयी और लौटकर उसने मेज़पोश को मेज़ पर फिर से बिछा दिया और सावधानी से उसके किनारे ठीक कर दिये।

"और जब कभी घर आने का मौक़ा भी मिलता है, तो मैं इतनी थकी हुई होती हूं कि अपने को मुश्किल से कोच तक घसीटकर ले जाती हूं और कपड़े उतारे बिना ही सो जाती हूं। इसलिए सफ़ाई के लिए कोई वक़्त नहीं मिलता!"

कुछ क्षण बाद बिजली की केतली गुनगुनाने लगी; चीनी के पुराने प्याले, जिनके किनारे घिसे थे, मेज़ पर चमक रहे थे; एक तश्तरी पर राई की पावरोटी के पतले टुकड़े रखे हुए थे, और शक्कर के कटोरे के तल में चीनी के छोटे-छोटे टुकड़े रखे थे। फुंदनादार टीकोज़ी—यह भी पिछली सदी की चीज़ थी—के नीचे रखे हुए टीपाट से कमरे में ऐसी सुगंध भर गयी थी कि युद्ध के पहले का ज़माना याद आ जाता था, और मेज़ के बीचोंबीच नीले-से रंग की अनखुली बोतल रखी थी, जिसके दोनों ओर एक एक जाम मानो उसकी रक्षा कर रहे थे।

मेरेस्येव एक गहरी, मख़मल से मढ़ी आरामकुर्सी पर बैठा हुआ था। हरे मख़मल के खोल में से भराव इतना अधिक झांक रहा था कि कढ़े हुए ऊनी क़ालीन से, जिसे बड़ी सावधानी से कुर्सी की पीठ से सीट तक लगाया गया था, वह छिप नहीं पाया था। लेकिन कुर्सी इतनी आरामदेह थी, उसने बैठनेवाले को इतनी उदारता और सुखमय ढंग से अपने आलिंगन में भर लिया था कि अलेक्सेई फ़ौरन उसकी पीठ से टिक गया और बड़े ऐश के साथ अपने थके और दर्द करते पैरों को फैला लिया।

अन्यूता उसके निकट एक छोटी-सी बेंच पर बैठ गयी और छोटे बच्चे की तरह उसके चेहरे की ओर ताकती हुई, फिर ग्वोज़्देव के बारे में उससे सवाल पूछने लगी। यकायक मेज़बान की हैसियत से अपना कर्त्तव्य स्मरण करके वह अपने आपको कोसती हुई उठ बैठी और अलेक्सेई को मेज़ तक खींच लायी।

"तुम्हें एक गिलास दूं? ग्रिगोरी ने मुझे बताया था कि टैंक-चालक और हवाबाज़ भी..."

उसने एक गिलास भरकर उसकी ओर बढ़ा दिया। सूरज की उज्ज्वल किरणें कमरे में तिरछी पड़ रही थीं और उनकी रोशनी में वोदका का नीला-सा रंग दमक उठा। मद्यसार की गंध से अलेक्सेई को सुदूर जंगल में बने उस हवाई अड्डे की, अफ़सरों के भोजनालय की, और दोपहर का खाना खाते समय जब 'ईंधन का राशन' बांटा जाता था, तो उसके साथ उमड़ पड़नेवाले उत्फुल्ल गुंजन की यकायक याद आ गयी। यह देखकर कि दूसरा गिलास ख़ाली ही है, अलेक्सेई ने पूछा:

"और तुम?"

"मैं नहीं पीती," अन्यूता ने सहज भाव से उत्तर दिया।

"मगर मान लो, हम उसके, ग्रिगोरी के स्वास्थ्य के वास्ते पियें तो?"

लड़की मुसकरायी, ख़ामोशी के साथ उसने अपना गिलास भर लिया, उसका पतला-सा तना पकड़कर उठाया और अपनी आंखों में गम्भीर चिन्ता का भाव भरकर अपने गिलास को अलेक्सेई के गिलास से खड़काया और कहा:

"उसके लिए शुभकामनाएं!"

यह कहकर उसने बड़ी अदा से अपना गिलास उठाया, एक ही घूंट में ख़ाली कर दिया और फ़ौरन खांसने लगी। उसका चेहरा सुर्ख़ पड़ गया; वह बड़ी कठिनाई से सांस ले पा रही थी।

वोदका बहुत दिनों से न चखी थी, इसलिए मेरेस्येव को नशा चढ़ता महसूस हुआ और अपने शरीर में उष्ण सिहरन उमड़ती जान पड़ी। उसने पुनः गिलास भर दिये, लेकिन अन्यूता ने दृढ़तापूर्वक सिर हिलाकर मना कर दिया।

"नहीं, नहीं! मैं नहीं पीती। तुमने देख तो लिया कि मुझे क्या हो जाता है।"

"लेकिन क्या तुम मेरे शुभ के लिए नहीं पियोगी?" अलेक्सेई ने अनुरोध किया, "काश, तुम्हें मालूम होता, अन्यूता कि मुझे शुभकामनाओं की कितनी आवश्यकता है!"

लड़की ने उसकी ओर बड़ी गम्भीरतापूर्वक देखा, अपना गिलास उठाया और मुसकुराकर उसकी ओर सिर हिलाकर शुभकामना प्रगट की और आहिस्ते से उसकी कुहनी दबाकर फिर गिलास ख़ाली कर गयी, मगर इस बार फिर खांसी आयी।

"मैं कर क्या रही हूं?" आख़िरकार जब उसकी सांस फूलना बंद हुई तो वह बोली, "और वह भी चौबीस घंटे ड्यूटी करने के बाद। मैं सिर्फ़ तुम्हारे वास्ते इतना कर रही हूं, अलेक्सेई! तुम हो... ग्रिगोरी ने तुम्हारे बारे में मुझे बहुत कुछ लिखा था... मैं तुम्हारे लिए भी शुभकामना करती हूं, मेरी हृदय से बहुत-बहुत शुभकामना है। और मुझे विश्वास है, तुम्हारी कामनाएं भी पूरी होंगी। सुन रहे हो, मैं क्या कह रही हूं, मुझे विश्वास है," और आनन्दपूर्ण खिलखिलाहट के साथ हंस पड़ी, "लेकिन तुम खा नहीं रहे हो! कुछ पावरोटी खा लो। तकल्लुफ़ न करो। मेरे पास अभी और है। यह तो कल की है। आज का राशन तो मुझे अभी मिला नहीं है।" उसने चीनी की वह प्लेट जिसमें काग़ज़ की पर्त्त सरीखी बारीक कटी पावरोटी रखी थी, उसकी ओर खिसका दी, "खाओ, खा भी लो, नादान न बनो, वरना तुम्हें नशा चढ़ जायेगा, तो फिर मैं क्या करूंगी?"

अलेक्सेई ने तश्तरी अलग खिसका दी और अन्यूता की हरी-सी आंखों में सीधे-सीधे आंखें डालकर और फिर उसके नन्हे-नन्हे भरे हुए, सुर्ख़ होठों पर नजर डालकर उसने मंद स्वर में कहा:

"अगर मैं तुम्हें चूम लूं, तो तुम क्या करोगी?"

उसने घबरायी हुई नजर से उसकी ओर देखा, फिर फ़ौरन ही संभल गयी। उसकी आंखों में गुस्सा नहीं था, लेकिन जिज्ञासा और निराशा ज़रूर थी, मानो किसी ऐसी चीज़ की ओर देख रही हो, जो एक क्षण पहले दूर से अनमोल रत्न की भांति दिखाई दे रही थी, मगर अब कांच का एक टुकड़ा निकला।

"तो मैं शायद तुम्हें खदेड़कर भगा दूंगी और फिर ग्रिगोरी को लिख दूंगी और उसे बता दूंगी कि उसे लोगों की पहचान नहीं है," उसने फिर ज़ोर देते हुए कहा, "कुछ खा लो, तुम्हें नशा चढ़ आया है!"

मेरेस्येव का चेहरा खिल उठा:

"और तुम बिल्कुल सही ही करोगी! धन्यवाद, तुम्हारे दिमाग़ के सब पुर्जे सही जगह पर हैं। कोई भी देख-समझ सकता है। मैं तुम्हें सारी लाल फ़ौज की ओर से धन्यवाद देता हूं। और मैं ग्रिगोरी को लिखूंगा और उसे बता दूंगा कि उसे लोगों की परख बहुत अच्छी है।"

वे लगभग तीन बजे तक गप लड़ाते रहे,—जो धूल-भरी किरणें कमरे में तिरछी पड़ रही थीं, वे अब दीवार पर चढ़ने लगी थीं। अलेक्सेई के लिए ट्रेन पकड़ने का वक़्त हो चला था। दुखी और अनिच्छा रूप से वह हरी मख़मल की कुर्सी से उठा तो कुर्सी के अंदर भरी हुई रूई आदि के कुछ अंश उसके कोट के ऊपर चिपके हुए चले आये। अन्यूता उसे विदा करने स्टेशन तक आयी। वे हाथ में हाथ लिये चले जा रहे थे और चूंकि अलेक्सेई आराम कर चुका था, इसलिए इतने विश्वास के साथ क़दम रख रहा था कि अन्यूता ने अपने आप से पूछा, "ग्रिगोरी ने जब लिखा था कि उसके मित्र के पांव नहीं हैं, तो वह मज़ाक़ तो नहीं कर रहा था?" उसने अलेक्सेई को फ़ौजी अस्पताल के बारे में बताया जहां वह और अन्य डाक्टरी छात्राएं आजकल काम करती थीं, घायलों की सेवा-सुश्रूषा करती थीं। उसने बताया कि आजकल काम कितना कठिन है, क्योंकि दक्षिण से हर दिन अनेक ट्रेनें घायलों को लेकर आती हैं। और ये घायल भी कितने शानदार आदमी हैं और कितनी बहादुरी से वे अपनी यातनाओं को सहन करते हैं! यकायक एक-आधे वाक्य के बाद उसने अपनी ही बात काटकर यह पूछा:

"तुमने जब कहा था कि ग्रिगोरी दाढ़ी बढ़ा रहा है, तो क्या तुम सचमुच गम्भीर थे?" वह कुछ देर ख़ामोश और चिन्तनलीन रही और फिर आगे बोली, "मैं अब सब कुछ समझ गयी हूं। मैं तुम्हें ईमानदारी से बताये देती हूं, जैसे मैंने अपने पिता जी को बता दिया था: पहले तो उसके चेहरे पर घाव के चिह्नों को देखना भर भी मैं बर्दाश्त नहीं कर सकी। नहीं, बर्दाश्त नहीं, यह सही शब्द नहीं होगा। मेरा मतलब है—मैं घबरा गयी। नहीं! यह भी सही शब्द नहीं है। मैं कैसे बताऊं, समझ में नहीं आता। तुम मेरी बात समझ गये? शायद मेरा यह व्यवहार सही नहीं था, लेकिन इसमें कोई कर ही क्या सकता है? लेकिन मेरे पास से उसका भाग जाना! मूर्ख लड़का! हे भगवान, कितना मूर्ख लड़का है! अगर तुम

उसे पत्र लिखो, तो उसे बता देना कि मुझे उसके व्यवहार से ठेस लगी है, बहुत ठेस लगी है।"

विशाल स्टेशन लगभग पूरी तरह सिपाहियों से भरा था, कुछ लोग सुनिश्चित कार्यवश भाग-दौड़ कर रहे थे और कुछ लोग भौंहें चढ़ाये हुए, चिन्ताग्रस्त चेहरे तनाये दीवारों के किनारे बेंचों पर, या अपने सामान के थैलों पर या फ़र्श पर आसन जमाये ख़ामोशी से बैठे थे और ऐसा लगता था कि उनका दिमाग़ किसी एक ही बात पर केन्द्रित है। किसी समय यह लाइन पश्चिमी यूरोप से मुख्य सम्बन्ध स्थापित करती थी, शत्रु ने अब मास्को से पश्चिम में लगभग ८० किलोमीटर की दूरी पर रेलवे लाइन काट दी थी। बाक़ी लाइन पर अब सिर्फ़ फ़ौजी ट्रेनें ही दौड़ती थीं, और राजधानी से सफ़र कर, दो ही घंटे में अब सिपाही लोग सीधे अपनी-अपनी डिवीजनों के पिछले हिस्सों तक पहुंच जाते थे, जो यहां रक्षा-पांत संभाले हुए थीं। और हर आधे घंटे पर कोई बिजली ट्रेन प्लेटफ़ार्म पर मज़दूरों की भारी भीड़ को, जो बाहरी क्षेत्रों में रहते हैं, और दूध, फल, और साग-सब्जियां लानेवाली किसान औरतों को उतार जाती थी। एक क्षण मानवता के इस कोलाहलपूर्ण समूह से स्टेशन पर बाढ़ आ जाती थी, लेकिन शीघ्र ही वे सड़कों पर बह जाते थे, और एक बार फिर स्टेशन को एकमात्र फ़ौजियों के अधिकार में छोड़ जाते थे।

मुख्य हाल में सोवियत-जर्मन मोर्चे का एक बड़ा भारी, फ़र्श से ठीक छत तक ऊंचा नक़्शा टंगा था। एक मोटी-सी, गुलाबी कपोलों वाली फ़ौजी वर्दीधारी लड़की एक अख़बार थामे, जिसमें सोवियत सूचना-विभाग की ताज़ी विज्ञप्ति थी, नक़्शे पर सीढ़ी लगाये, खड़ी थी और पिनों में लगे हुए डोरे को खिसकाकर युद्ध की पांत को अंकित कर रही थी।

नक़्शे के निचले हिस्से में डोरा दाहिनी तरफ़ बड़े भारी कोण पर मुड़ा हुआ था। जर्मन दक्षिण में हमला कर रहे थे। उनकी छठवीं फ़ौज ने देश की छाती में गहरा घाव बना दिया था और वे अब दोन नदी की नीली शिराओं की तरफ़ बढ़ रहे थे। लड़की ने डोरे को दोन की रेखा पर लगा दिया। उसके पास ही वोलगा की मोटी-सी शिरा टेढ़ी-मेढ़ी फैली हुई थी, जहां एक बड़े गोल चिह्न से स्तालिनग्राद और उसके ऊपर एक छोटे-से बिंदु

से कमीशिन अंकित था। स्पष्ट था कि शत्रु की जिस घुसपैठ ने दोन पर चोट की है, वह अब मुख्य शिरा की ओर बढ़ रही है और उसके पास तथा ऐतिहासिक नगर के पास पहुंच भी गयी है। भयानक ख़ामोशी के साथ काफ़ी बड़ी भीड़, जिसके कंधों से ऊपर वह लड़की सीढ़ी के डंडे पर खड़ी थी, उस लड़की के स्थूल हाथों को पिनों की स्थिति बदलते देख रही थी। एक युवक सिपाही जिसके चेहरे पर पसीना झलक आया था, और जो एक नया, अब तक लोहा न किया गया कड़ा-सा ग्रेटकोट पहने हुए था, शोकपूर्वक उच्च स्वर में सोचते हुए बोला:

"हरामी लोग ज़ोरों से बढ़ रहे हैं... देखो किस तरह बढ़ते जा रहे हैं ये!"

खिचड़ी मूंछोंवाले एक ऊंचे और दुबले-पतले रेलवे-कर्मचारी ने, जो ग्रीज़ से सनी रेलवेई टोपी पहने था, सिपाही की ओर भौंह चढ़ाकर देखा और बड़बड़ाया:

"वे बढ़ रहे हैं, क्या सचमुच? लेकिन तुम लोग उन्हें बढ़ने क्यों दे रहे हो? अगर तुम लोग उन्हें पीठ दिखा दोगे तो वे ज़रूर बढ़ेंगे। क्या योद्धा हो तुम लोग! देखो कहां तक आ गये हैं! बिल्कुल वोल्गा तक।" उसके स्वर से दर्द और दुख टपक रहा था, मानो कोई पिता अपने बेटे को कोई गम्भीर और अक्षम्य अपराध करने के कारण झिड़क रहा हो।

सिपाही ने अपराधी की भांति चारों तरफ़ देखा और अपने बिल्कुल नये ग्रेटकोट को संभालने के लिए कंधे उचकाये और भीड़ से बाहर जाने के लिए धक्का मारकर रास्ता बनाने लगा।

"ठीक कहते हो। हम काफ़ी हार चुके हैं," एक और व्यक्ति ने आह भरी और कटुतापूर्वक सिर हिलाते हुए बोला, "ओह!"

तभी जीन का लबादा पहने हुए एक बूढ़े ने, जो एक ग्रामीण अध्यापक या शायद देहाती डाक्टर था, सिपाही की हिमायत में कहा:

"उसे क्यों दोष देते हो? यह कोई उसकी ग़लती है? उनमें से कितने लोग अभी ही मारे जा चुके हैं? ज़रा उस ताक़त को तो देखो जो हमारे ख़िलाफ़ टूट पड़ी है। लगभग सारा यूरोप और वह भी टैंकों

पर सवार... उस सब को तुम एकदम कैसे रोक सकते हो? सच तो यह है कि हम लोग घुटने टेककर उस लड़के को धन्यवाद दें कि हम ज़िन्दा हैं और मास्को में आज़ादी से घूम-फिर रहे हैं। देखो तो फ़ासिस्टों ने हफ़्तों भर में अपने टैंकों से कितने देशों को रौंद डाला था। लेकिन हम लोग एक साल से भी अधिक से लड़ रहे हैं और अभी भी उन पर चोट कर रहे हैं—और हमने कितनों ही को मौत के घाट उतार दिया है। सारी दुनिया को उस लड़के के सामने घुटने टेककर उसका सम्मान करना चाहिए। लेकिन तुम लोग हो जो 'पीठ दिखाने' की बात किये जाते हो।"

"मैं जानता हूं, ख़ूब जानता हूं, भगवान के लिए मेरे ऊपर प्रचार न चलाओ। मेरा दिमाग़ इसे जानता है, मगर मेरा दिल ऐसे दुखता है, मानो फट ही जायेगा," रेलवे-कर्मचारी ने उदास भाव से जवाब दिया, "यह हमारी ही धरती है जिसे जर्मन रौंद रहे हैं, ये हमारे ही घर हैं जिन्हें वे बरबाद कर रहे हैं।"

"क्या वह भी वहीं है?" अन्यूता ने नक़्शे के दक्षिणी भाग की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"हां। और वह लड़की भी वहीं है," अलेक्सेई ने उत्तर दिया।

वोलगा की नीली रेखा पर, स्तालिनग्राद के ऊपर उसने एक बिन्दु देखा जिस पर लिखा था "कमीशिन"। उसके लिए वह नक़्शे के एक बिन्दु से अधिक था। उसकी आंखों के सामने वह दृश्य साकार हो उठा: एक छोटा-सा हरा-भरा क़स्बा, घास भरी उपनगरीय सड़कें, खड़खड़ाती हुई चमकीली और धूल-धूसरित पत्तियों वाले पोपलर वृक्ष, बग़ीचों के बाड़ों के पीछे से आती हुई सोआ, अजवाइन और धूल की गंध, धारीदार तरबूज़ मानो खेतों की सूखी पत्तियों के ऊपर किसी ने उन्हें बिखेर दिया हो, चिरायते की तीखी गंध से पूरित स्तेपी हवाएं, नदी का अवर्णनीय चमकीला प्रसार, एक सौन्दर्यपूर्ण, भूरी आंखोंवाली, ताम्रवर्ण लड़की और सफ़ेद बालोंवाली असहाय-सी फुरतीली उसकी मां...

"और वे दोनों वहीं हैं," उसने दोहराया।

२

बिजली ट्रेन आनन्दपूर्वक अपने पहिये खड़खड़ाती हुई और अपना भोंपू बजाती हुई मास्को के बाहरी क्षेत्रों से भागी जा रही थी। मेरेस्येव खिड़की के नज़दीक बैठा था और एक दाढ़ी-मूंछ सफ़ाचट बूढ़े व्यक्ति के कारण, जो चौड़ा-सा मक्सिम गोर्की शैली का टोप लगाये था और काली डोर से बंधा सुनहरी कमानी का चश्मा नाक पर रखे, वह बिल्कुल दीवार से सटने के लिए मजबूर हो गया था। वह बूढ़ा सावधानी से काग़ज़ में लिपटी हुई और सुतली से बंधी हुई एक कुदाली, एक खुरपी और एक तंगली घुटनों के बीच रखे था।

उन भयानक दिनों में अन्य लोगों की भांति यह बूढ़ा भी युद्ध के अलावा और कोई बात नहीं सोच रहा था। उसने बड़े ज़ोर से अपना दुबला-पतला हाथ मेरेस्येव की नाक के सामने हिलाया और बड़े महत्वपूर्ण ढंग से उसके कान में बुदबुदाया :

"तुम यह न सोचना कि चूंकि मैं साधारण नागरिक हूं, इसलिए मैं अपनी योजना नहीं समझता। मैं इसे पूरी तरह समझता हूं। यह सब शत्रु को वोल्गा के स्तेपी क्षेत्र तक लुभाकर ले आने के लिए हो रहा है, हां, ताकि वह अपने आवागमन की पांत फैला ले, और जैसा कि आजकल कहा जाता है, वह अपने बुनियादी फ़ौजी अड्डों से सम्बन्ध खो बैठे, और तब यहां पर पश्चिम और उत्तर से उसके रास्ते काट दिये जायें और उसे चकनाचूर कर दिया जाये। हां। और यह बड़ी चालाकी की योजना है। हमारे ख़िलाफ़ हिटलर ही नहीं है। वह सारे यूरोप को हमारे ख़िलाफ़ जुटा रहा है। हम अकेले दम छे देशों से लड़ रहे हैं। अकेले दम। और नहीं तो, हमें उनके हमले की ताक़त को काफ़ी बड़े क्षेत्रों में फैलाकर कम कर देना है। हां। यही वाजिब रास्ता है। क्योंकि हमारे मित्र राष्ट्र तो हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, क्या नहीं? तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"मेरा ख़्याल है, तुम दिल-बहलाव की बातें कर रहे हो। हमारी मातृभूमि इतनी अमूल्य है कि उसे ढाल की तरह इस्तेमाल नहीं किया जा सकता," मेरेस्येव ने अमैत्रीपूर्ण स्वर में उत्तर दिया और उसे यकायक वह वीरान, जला हुआ गांव याद आ गया जहां से वह शीतकाल में रेंगते हुए गुज़रा था।

लेकिन वह बूढ़ा, मेरेस्येव के चेहरे पर तम्बाकू और जौ की काफ़ी की गंध से भरी सांस छोड़ता और कानों में भुनभुनाता ही चला गया।

अलेक्सेई खिड़की के बाहर झुक गया और उष्ण, धूल भरी हवा को अपने चेहरे पर थपकियां जमाने देने लगा, वह उत्सुकतापूर्वक हर आनेवाले स्टेशनों को ताकता, जिनकी हरी चहारदीवारियों का रंग फीका पड़ गया था और ख़ुशनुमा रंगों से पुते स्टालों को, जिनकी खिड़की-दरवाज़ों पर तख़्ते जड़ दिये गये थे; वह हरे भरे जंगलों से झांकते हुए बंगलों, छोटी-सी सूखी हुई नदियों के पन्ने जैसे रंगों के किनारों, चीड़ वृक्षों के मोमबत्तीनुमा तनों को जो डूबते हुए सूर्य की रोशनी में सुनहरे कहरुबों की भांति चमक रहे थे, और गोधूलि बेला में जंगलों के पार नीले विस्तृत प्रसार को निहार रहा था।

"...नहीं, मगर तुम तो फ़ौजी आदमी हो, मुझे बताओ, यह बात ठीक है? एक वर्ष से ऊपर से हम फ़ासिज़्म के खिलाफ़ अकेले दम लड़ते आ रहे हैं। इसके बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है? और हमारे मित्र राष्ट्र कहां हैं? और कहां है उनका दूसरा मोर्चा? ज़रा तुम अपने दिमाग़ में यह तस्वीर खींचो: डाकू लोग एक ऐसे आदमी पर हमला कर देते हैं, जो निःशंक भाव से अपना पसीना बहाता हुआ काम-काज में लगा हुआ था। लेकिन यह आदमी बुद्धि नहीं खोता। वह उन डाकुओं से भिड़ जाता है और बराबर लड़ता रहता है। वह घावों से लहू-लुहान हो जाता है, मगर फिर भी जो भी हथियार हाथ लगता है, उससे लड़ता रहता है। अनेक के ख़िलाफ़ एक, वे लोग हथियारबंद हैं और बहुत दिनों से उसकी घात में बैठे थे। हां। और उस आदमी के पड़ोसी इस लड़ाई का तमाशा देखते रह जाते हैं। वे अपने दरवाज़े पर आ खड़े होते हैं: 'शाबाश भाई! उन्हें सबक़ सिखा दो! उन्हें ख़ूब मज़ा चखा दो!' और उसकी सहायता के लिए जाने के बजाय वे उसे लाठियां और पत्थर देते हैं और कहते हैं: 'लो ये ले लो! इससे उनकी मरम्मत करो! अच्छी तरह मरम्मत कर देना!' लेकिन इस लड़ाई से वे ख़ुद अपने को अलग रखते हैं। हां हमारे मित्र राष्ट्र इसी तरह व्यवहार कर रहे हैं। मुसाफ़िर... ये सब भी इसी तरह के हैं..."

मेरेस्येव मुड़ा और बूढ़े की तरफ़ उसने दिलचस्पी से देखा। भीड़

भरे डिब्बे में अन्य यात्री भी उन्हीं की तरफ़ देख रहे थे, और हर तरफ़ से ये आवाजें आयीं:

"हां, वह ठीक कह कहा है! हम अकेले दम लड़ रहे हैं। दूसरा मोर्चा कहां है?"

"कोई परवाह नहीं! हम निपट लेंगे और शत्रु को ख़ुद ही मार भगायेंगे। इसमें शक नहीं, जब सब कुछ ख़त्म हो जायेगा, तो वे लोग भी अपना दूसरा मोर्चा लेकर आ जायेंगे।"

ट्रेन उपनगर के स्टेशन पर रुकी। पायजामा पहने अनेक घायल व्यक्ति डिब्बे में चढ़ गये, जिनमें से कुछ लोग बैसाखियों के बल चल रहे थे और कुछ छड़ियों के बल, और सभी के हाथ में काग़ज़ के थैले थे जिनमें सूरज-मुखी के बीज और बेर भरे थे। वे लोग किसी फ़ौजी सेनेटोरियम से यहां के बाज़ार के लिए आये होंगे। सुनहरी कमानी के चश्मे वाला बूढ़ा फ़ौरन उछल पड़ा और एक लाल बालोंवाले लड़के को, जो बैसाखी के बल खड़ा था और जिसकी एक टांग पट्टी से बंधी थी, उसने लगभग ज़बर्दस्ती अपनी सीट पर धकेल दिया:

"यहां बैठ, बेटे, यहां बैठ!" वह बोला, "मेरी फ़िक्र मत करो। मैं तो जल्दी ही उतर जाऊंगा।"

और यह सिद्ध करने के लिए कि वह ठीक कह रहा है, उसने अपने बाग़वानी के औज़ार उठाये और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया। घायल आदमियों के लिए जगह करने के लिए दूधवालियां ज़रा सिकुड़ गयीं। अलेक्सेई ने अपने पीछे किसी नारी को शिकायत के स्वर में कहते सुना: "उसे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिये, एक घायल आदमी तो उसके बग़ल में खड़ा है और इसने अपनी सीट उसके लिए ख़ाली तक नहीं की! बेचारा लड़का कुचला जा रहा है, लेकिन वह ज़रा भी परवाह नहीं करता! यहां बैठा है, ख़ुद तो हट्टा-कट्टा है, मानो इसे कभी गोली छुयेगी नहीं। वायुसेना में कमांडर भी है!"

इस अनुचित फटकार पर अलेक्सेई क्रोध से लाल हो गया। उसके नथुने कांपने लगे... लेकिन यकायक वह मुसकुराता हुआ उठ बैठा और बोला:

"इस सीट पर बैठो, प्यारे।"

घायल व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर चौंक गया और बोला:

"नहीं। धन्यवाद, कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट। कष्ट न कीजिये। मैं खड़ा ही ठीक हूं। दूर नहीं जाना है। सिर्फ़ दो ही स्टेशन जाना है।"

"बैठ जाग्रो, मैं कहता हूं!" अलेक्सेई ने आनन्द-मौज का अनुभव करते हुए स्नेहपूर्वक सख़्ती से कहा।

वह डिब्बे की बग़ल की तरफ़ बढ़ गया, दीवाल से सट गया, छड़ी पर दोनों हाथ टेककर अपने को सहारा दिया और मुसकुराता खड़ा हो गया। स्पष्ट था कि चौखानेदार रूमाल ओढ़े जिस बूढ़ी ने उसे फटकार बतायी थी, वह अपनी ग़लती समझ गयी थी, क्योंकि उसकी फिर शिकायत भरी आवाज़ सुनाई दी:

"ये लोग भी क्या आदमी हैं! ए उधर टोपवाली! बैठी ऐसे है, जैसे कोई राजकुमारी जी हैं! युद्ध आता, फिर भी लगता उसे सगी माता! छड़ीवाले कमांडर को सीट तो दे दो! यहां आ जाओ कामरेड कमांडर, तुम मेरी सीट पर बैठ जाओ। भगवान के लिए, ज़रा रास्ता तो छोड़ो और कमांडर को इधर निकल आने दो!"

अलेक्सेई ने अनसुनी कर दी। जो मनोरंजन उसने महसूस किया था, वह भी विलीन हो गया। इसी क्षण कंडक्टर ने उस स्टेशन का नाम पुकारा जिस पर अलेक्सेई को उतरना था और ट्रेन धीरे-धीरे खड़ी हो गयी। वह भीड़ चीरता हुआ दरवाज़े की ओर बढ़ रहा था कि उसे वह चश्मा पहने बूढ़ा मिल गया। बूढ़े ने सिर हिलाकर इस तरह अभिवादन किया मानो वे पुराने परिचित हों और फिर कानाफूसी के स्वर में पूछा:

"कहो, तुम्हारा क्या ख़्याल है, शायद आख़िरकार वे लोग दूसरा मोर्चा खोल ही देंगे?"

"अगर वे नहीं खोलते तब भी हम अपना काम ख़ुद पूरा कर लेंगे," अलेक्सेई ने लकड़ी के प्लेटफ़ार्म पर पैर रखते हुए जवाब दिया।

पहिये घड़घड़ाती और ज़ोर से सीटी बजाती हुई, बारीक-सा गुबार छोड़कर ट्रेन मोड़ पर ग़ायब हो गयी। प्लेटफ़ार्म जिस पर थोड़े-से यात्री रह गये थे, शीघ्र ही सुहावनी सांझ की शान्ति से आच्छादित हो गया। युद्ध के पहले यह सुन्दर, आरामदेह स्थान रहा होगा। स्टेशन को घेरे सटे खड़े हुए चीड़ के वन में वृक्षों के शिखर शान्तिदायक ताल के साथ मर्मर ध्वनि कर रहे थे। निस्संदेह दो वर्ष पहले इसी प्रकार की सुन्दर संध्याओं

में लोगों की भीड़ें–ग्रीष्मकालीन हल्की-सी ठाठदार फ़ाकें पहने महिलाएं, शोर मचाते हुए ग्रानन्द-विह्वल बच्चे ग्रौर सामान के पार्सल तथा शराब की बोतलें दबाये हुए शहर से लौटते हुए मर्द स्टेशन से उमड़ पड़ते होंगे ग्रौर, गलियों ग्रौर पगडंडियों के द्वारा छायादार जंगलों को पार करते हुए ग्रपने बंगले लौट जाते होंगे। ग्राज की ट्रेन से जो थोड़े-से यात्री उतरे थे, वे ग्रपनी कुदालियां, तंगलियां ग्रौर खुरपियां तथा बाग़वानी का दूसरा सामान लिए हुए शीघ्र ही प्लेटफ़ार्म से विदा हो गये ग्रौर ग्रपनी ग्रपनी चिन्ताग्रों में खोये हुए गम्भीरतापूर्वक वनप्रदेश में घुस गये। ग्रकेला मेरेस्येव ग्रपनी छड़ी लिये–वह छुट्टियां काटनेवाले की भांति दिखाई दे रहा था–ग्रीष्म की सांझ के सौंदर्य की सराहना करने के लिए रुक गया, उसने सुगंधित हवा से फेफड़े भर लिये, ग्रौर चेहरे पर चीड़ वृक्षों को चीरकर ग्रानेवाली किरणों का उष्ण स्पर्श ग्रनुभव कर ग्रांखे भींच लीं।

मास्को में उसे बताया गया था कि स्वास्थ्य-गृह कैसे जाना चाहिए ग्रौर उसे जो थोड़े बहुत चिह्न बताये गये थे, उनके सहारे उसने शीघ्र ही, सच्चे सिपाही की भांति, उस जगह का रास्ता खोज लिया। स्टेशन से कोई दस मिनट का रास्ता था–छोटी-सी, शान्तिपूर्ण झील के किनारे तक। क्रान्ति से पहले कभी किसी रूसी करोड़पति ने यहां बेजोड़ ग्रीष्म-भवन बनाने का निश्चय किया था। उसने ग्रपने शिल्पकार से कहा था कि वह किसी बिलकुल मौलिक चीज़ का निर्माण करे, पैसे की कोई परवाह न करे। ग्रौर इसलिए, ग्रपने प्रतिपालक की रुचि के ग्रनुसार, शिल्पकार ने इस झील के किनारे ईंटों का विशाल भवन तैयार किया जिसमें बारीक जाली की खिड़कियां, कंगूरे ग्रौर मीनारें बनायीं, ऊंचे-ऊंचे स्तम्भ खड़े किये ग्रौर भूलभुलैयांदार रास्तों का निर्माण किया। यह ऊलजलूल ढांचा विशिष्ट रूसी प्राकृतिक दृश्य में, सरकंडों से भरपूर झील के ऊपर एक भौंडा-सा धब्बा लगता था। वैसे यहां बड़ा सुन्दर दृश्य था! शान्त मौसम में शीशे की तरह निर्मल रहनेवाले पानी के किनारे नये एस्प वृक्षों की पत्तियां थिरक रही थीं, यहां-वहां हरे कुंजों से ऊपर सिर उठाये भोज वृक्षों के चितकबरे तने खड़े थे, ग्रौर ख़ुद झील भी प्राचीनतम वन की विस्तृत दांतेदार, नीली-सी ग्रंगूठी में जड़ी-सी दिखाई देती थी। ग्रौर यह सारा दृश्य पानी की शीतल, शान्त नील सतह में उलटा प्रतिबिम्बित दिखाई देता था।

इस स्थान पर, जिसका स्वामी सारे रूस में अपने आतिथ्य के लिए प्रसिद्ध था, अनेक विख्यात चित्रकार आकर दीर्घकाल तक रहते रहे, और यह दृश्यस्थली रूसी प्राकृतिक दृश्य के प्रभावशाली और मार्मिक सौंदर्य के रूप में, सर्वांग या आंशिक रूप से आगामी पीढ़ियों के लिए अंकित की जाती रही।

यही स्थान अब सोवियत वायुसेना के लिए स्वास्थ्य-गृह की भांति उपयोग में आ रहा था। शान्ति-काल में विमान-चालक यहां अपनी पत्नी और बच्चों तक को लेकर आते थे। युद्ध-काल में घायल विमान-चालकों को स्वास्थ्य-लाभ के लिए अस्पताल से यहां भेजा जाता। अलेक्सेई यहां चक्करदार, भोज वृक्ष की पांतों से सुसज्जित, अलकतरे की चौड़ी सड़क से नहीं, जंगल से गुज़रनेवाली पगडंडी से आया था, जो स्टेशन से सीधी झील की तरफ़ जाती है। यानी वह पीछे से आया और अनदेखे ही भारी, कोलाहलपूर्ण भीड़ में मिल गया जो मुख्य द्वार पर खड़ी हुई दो ठसाठस मोटरबसों को घेरे जमा थी।

बातचीत, विदाई की दुआ-सलाम और शुभकामनाओं की चर्चा से अलेक्सेई समझ गया कि वे लोग विमान-चालकों को विदा कर रहे हैं जो स्वास्थ्य-गृह से सीधे मोर्चे पर जा रहे थे। जानेवाले विमान-चालक प्रफुल्ल और उत्तेजित थे मानो वे ऐसी जगह नहीं जा रहे हैं जहां हर बादल के पीछे मौत घात लगाये बैठी रहती है, बल्कि अपने शान्तिकालीन फ़ौजी केन्द्रों को जा रहे हैं। जो लोग उन्हें विदा कर रहे थे, उनके चेहरे उदासी और अधीरता का भाव अभिव्यक्त कर रहे थे। अलेक्सेई उनकी भावना को समझ गया। जबर्दस्त संग्राम के आरम्भ से ही, जो दक्षिण में छिड़ा हुआ था, अलेक्सेई स्वयं भी उसी प्रकार का अदम्य आकर्षण अनुभव कर रहा था, और जैसे-जैसे मोर्चे पर स्थिति अधिकाधिक गम्भीर होती गयी तैसे ही वह आकर्षण और भी शक्तिशाली होता जा रहा था। और जब फ़ौजी क्षेत्रों में "स्तालिनग्राद" के शब्द का उल्लेख – अभी चुपके-चुपके और सावधानी से – होने लगा तो इस भावना ने अनन्त आतुरता का रूप धारण कर लिया और अस्पताल की अनुशासित अकर्मण्यता उसे असह्य हो उठी थी।

चुस्त मोटरबसों की खिड़कियों के बाहर धूप खाये हुए ताम्रवर्ण,

उत्तेजित चेहरे ताक रहे थे। स्वास्थ्य-गृह में आनेवाले हर दल में जिस प्रकार विनोदी व्यक्ति और स्वेच्छित विदूषक साधारणतया होते हैं, उसी चाल-ढाल का, एक नाटा-सा, लंगड़ा अर्मीनियाई, जो धारीदार पोशाक पहने था और जिसके सिर पर गंजेपन का थिगड़ा-सा था, बसों के चारों ओर फुदक रहा था, अपनी छड़ी हिलाते हुए चिल्लपों मचा रहा था और अपनी ओर से विदाई की शुभकामनाएं देता फिर रहा था:

"फ़ेद्या! फ़ासिस्टों को आसमान में मेरी ओर से भी सलाम कर लेना! तुम्हें उन लोगों ने चांदनी स्नान की चिकित्सा पूरी नहीं करने दी, इसके लिए उन्हें मज़ा चखा देना! फ़ेद्या! फ़ेद्या! उन्हें होश करा देना कि सोवियत विमान-चालकों को चांदनी स्नान से रोकना बड़ी बदतमीज़ी है!"

ताम्रवर्ण और गोल सिर वाला लड़का, फ़ेद्या, जिसके ऊंचे माथे पर एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तक घाव का लम्बा चिह्न था, खिड़की से बाहर झुका और चिल्लाकर बोला कि चांद कमेटी को विश्वास रहे कि वह अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा।

भीड़ और बसों में हंसी फूट पड़ी और इस हंसी के बीच बसें चल दीं और धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ चलीं।

"यात्रा शुभ हो!" शुभकामनाएं भीड़ की ओर से प्रगट की जा रही थीं।

"फ़ेद्या! फ़ेद्या! जितनी जल्दी हो सके, अपने पोस्ट आफ़िस का नम्बर भेज देना! ज़ीनोच्का रजिस्ट्री डाक से तुम्हारा दिल पार्सल कर भेज देगी..."

सड़क के मोड़ के पीछे बसें ग़ायब हो गयीं। डूबते हुए सूरज के प्रकाश में जो धूल सुनहरी चमक रही थी, वह भी उतर आयी। धारीदार कपड़े या लबादे पहने स्वास्थ्य-गृह के निवासी तितर-बितर हो गये और पार्क में टहलने लगे। मेरेस्येव ने प्रवेशकक्ष में घुसा, जहां हुकों पर विमान-चालकों की नीली पट्टियों वाली टोपियां टंगी थीं और स्किटिल, गेंदें, क्रोकेट खेल के बल्ले, टेनिस के रैकेट फ़र्श पर पड़े थे। लंगड़ा अर्मीनियाई उसे कार्यालय तक ले गया। नजदीक से जांचने से पता चला कि उसका चेहरा गम्भीर तथा चतुरतापूर्ण और आंखें सुन्दर, बड़ी बड़ी और वेदनापूर्ण। रास्ते में उसने मजाक़ में अपने को चांद कमेटी का अध्यक्ष कहकर अपना

परिचय दिया और सिद्ध करने लगा कि हर प्रकार के घावों को अच्छा करने का सर्वोत्तम उपाय है चांदनी-स्नान, जैसे कि चिकित्सा-विज्ञान ने सिद्ध कर दिया, और चांदनी-स्नान के इलाज में वह सख़्त नियम-पालन और अनुशासन पर ज़ोर देता है तथा चांदनी में टहलने की व्यवस्था वह व्यक्तिगत रूप से स्वयं करता है। वह बड़े सहज भाव से मज़ाक़ करता महसूस होता था, मगर मज़ाक़ करते समय उसकी आंखों में गम्भीरता का भाव बना ही रहता था और वह बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि से, जिज्ञासापूर्वक अपने श्रोता के चेहरे की ओर ताकता रहता था।

कार्यालय में एक श्वेत वस्त्रधारी लड़की ने मेरेस्येव का स्वागत किया जिसके बाल इतने लाल थे कि उसका सिर लपटों से भरा प्रतीत होता था।

"मेरेस्येव?" लड़की ने किताब अलग रखते हुए, जिसे वह पढ़ रही थी, सख़्ती से पूछा। "मेरेस्येव अलेक्सेई पेत्रोविच?" उसने रजिस्टर देखा और फिर विमान-चालक पर आलोचनात्मक दृष्टि डालकर कहा: "मुझसे कोई चालबाज़ी चलने की कोशिश न करो! मेरे पास तुम्हारा परिचय यों लिखा है: 'मेरेस्येव, सीनियर लेफ़्टीनेंट, अस्पताल से, पैर कटे हुए!'... लेकिन तुम..."

तभी अलेक्सेई को उसका गोल सफ़ेद चेहरा, जैसा कि लाल केशोंवाली लड़कियों का होता है, दिखाई दे पाया, जो ज्वालाओं सदृश केशों के बीच छिपा हुआ था। उसकी कोमल त्वचा पर निर्मल लालिमा फैली हुई थी। उसने अपनी उज्ज्वल, गोल, धृष्ट आंखों से अलेक्सेई की ओर विस्मय से देखा।

"फिर भी, मैं ही अलेक्सेई मेरेस्येव हूं। ये मेरे काग़ज़ात हैं... तुम क्या ल्योल्या हो?"

"नहीं! यह तुम्हें कहां से पता चला? मैं ज़ीनोच्का हूं।" उसने संदिग्ध दृष्टि से अलेक्सेई के पैरों की ओर देखा और आगे कहा: "क्या तुम्हें इतने बढ़िया कृत्रिम पैर मिल गये हैं या और कोई बात है?"

"हां, कृत्रिम पैर हैं। तो तुम वही ज़ीनोच्का हो जिस पर फ़्रेद्या ने दिल निसार कर दिया था?"

"अच्छा, मेजर बरनाज़ियन ने तुम्हें भी यह बता देने का मौक़ा निकाल लिया। ओह, उससे मुझे कितनी नफ़रत है! वह हर व्यक्ति का

मज़ाक़ बनाता है। मैंने फ़ेद्या को नाचना सिखाया। इसमें कोई ख़ास बात नहीं थी, कि है?"

"और अब तुम मुझे नाचना सिखाओगी, ठीक? बरनाज़ियन ने चांदनी-स्नान के लिए मेरा नाम भी लिख लेने का वायदा किया है।"

लड़की ने अलेक्सेई की ओर देखा और आश्चर्य से पूछा :

"क्या मतलब है, नाच? बिना पांवों के? वाहियात बात! मेरा ख़्याल है, तुम भी सब का मज़ाक़ बनाना पसंद करते हो!"

तभी मेजर स्त्रुच्कोव कमरे में दौड़ता हुआ आया और उसने अलेक्सेई को भुजाओं में भर लिया।

"ज़ीनोच्का!" उसने लड़की से कहा, "तय रहा, क्या नहीं? सीनियर लेफ़्टीनेंट मेरे कमरे में रहेगा।"

अस्पताल में जो लोग बहुत दिनों तक साथ रहते हैं, वे बाद में भाई की तरह मिलते हैं। मेजर को देखकर अलेक्सेई इतना आनन्दित था, कि कोई यह समझ बैठता कि वह वर्षों से उससे नहीं मिला है। स्त्रुच्कोव ने अपना सामान स्वास्थ्य-गृह में जमा लिया था और काफ़ी चैन महसूस कर रहा था। वह सबको जानने लगा था और सब उसे जानने लगे थे। एक ही दिन में उसने किन्हीं को दोस्त बना लिया था और किन्हीं से झगड़ बैठा था।

जिस छोटे-से कमरे पर उन दोनों ने अधिकार जमाया, उसकी खिड़कियां पार्क की तरफ़ थीं, जिसमें ऊंचे-ऊंचे, सीधे चीड़ वृक्ष, हरी-भरी बिलबेरी की झाड़ियां और एश का एक नाज़ुक पेड़ खड़ा था जिससे कुछ ख़ूबसूरत पत्तियां इस प्रकार लटकी थीं, मानो ताड़ वृक्ष हो, और उसपर केवल एक मगर भारी पीली बेरियों का गुच्छा लटका हुआ था। भोजन के बाद तत्काल अलेक्सेई बिस्तर पर ठंडी चादरों के बीच पैर फैलाकर लेट गया और फ़ौरन सो गया।

उस रात उसने विचित्र, चिन्तनीय स्वप्न देखे। नीली-सी बर्फ़, चांदनी रात। जंगल ने उसे रोयेंदार जाल की तरह घेर लिया। उसने इस जाल से मुक्त होने का प्रयत्न किया, मगर बर्फ़ में उसके पांव धंस गये। वह, यह सोचकर कि कोई भयानक विपत्ति आनेवाली है, बहुत छटपटाया, मगर उसके पांव बर्फ़ में जम गये थे और उन्हें निकाल पाने की शक्ति

उसमें न रह गयी थी। वह कराहा, ऐंठा और करवट बदलता और अब वह जंगल में न रहा, बल्कि एक हवाई अड्डे पर पहुंच गया। दुबला-पतला मेकेनिक यूरा एक विचित्र, हल्के-से, पंखहीन हवाई जहाज़ के कॉकपिट में बैठा था। उसने हाथ हिलाया, हंस दिया और सीधा आसमान में उठ गया। मिखाईल नाना ने अलेक्सेई को इस प्रकार भुजाओं में उठा लिया मानो वह बच्चा हो और सान्त्वना देते हुए कहा: "कोई परवाह नहीं, उसे जाने दो! हम लोग भाप-स्नान करेंगे। बड़ा मज़ा रहेगा, क्यों छोकरे?" लेकिन उसे उष्ण स्नान के लिए लेटाने के बजाय मिखाईल नाना ने उसे ठंडी बर्फ़ पर लेटा दिया। अलेक्सेई ने उठने का प्रयत्न किया लेकिन बर्फ़ उसे बुरी तरह जकड़े थी। नहीं, वह बर्फ़ नहीं थी, उसके ऊपर एक भालू का उष्ण शरीर पड़ा हुआ था—खुर्राटे भरता, बोझ से चकनाचूर करता और उसका दम घोटता हुआ। बसों में भरे हुए विमान-चालक वहां से गुज़रे, वे आनन्दपूर्वक खिड़कियों से झांक रहे थे, मगर उन्होंने उसे नहीं देखा। अलेक्सेई उन्हें अपनी सहायता के लिए बुलाना चाहता था, उनकी तरफ़ दौड़ना चाहता था, कम से कम हाथ उठाकर उनको इशारा करना चाहता था, मगर वह कुछ न कर सका। उसने मुंह खोला, मगर उससे सिर्फ़ रुंधी हुई फुसफुसाहट ही निकल सकी। उसका दम घुटने लगा और उसे लगा कि उसके दिल की धड़कन बन्द हो रही है, उसने एक आख़िरी प्रयत्न किया और न जाने क्यों उसके सामने, ज्वालाओं जैसे केशों के समूह के बीच ज़ीनोच्का का हंसता हुआ चेहरा और धृष्ट, जिज्ञासापूर्ण नेत्र कौंध गये।

अलेक्सेई अवर्णनीय घबराहट की भावनाओं से ओत-प्रोत होकर जाग उठा। ख़ामोशी का राज्य था, मेजर सो रहा था, आहिस्ते से खुर्राटे भर रहा था। प्रेत की भांति चांदनी की एक किरण कमरे में घुस आयी थी और फ़र्श पर आ टिकी थी। वे भयानक क्षण आज क्यों फिर लौट आये? उनको तो वह याद भी भूल गया था, और जब कभी वह उन्हें याद करने की कोशिश भी करता था, तो वह कोई कपोल-कल्पित कहानी मालूम होती थी। रात के ठंडे और सुगंधित पवन के साथ एक हल्की-सी उनींदी तालमयी ध्वनि उज्ज्वल चांदनी से आलोकित खुली हुई खिड़की से उमड़ी चली आ रही थी, कभी वह उत्तेजित ऊंची उठ जाती, कभी कहीं दूर पर हो जाती

श्रौर कभी ऐसे ऊंचे स्वर पर स्थिर रह जाती मानो किसी ख़तरे के कारण रुकी रह गयी है। यह बनप्रान्तर का स्वर था।

विमान-चालक बिस्तर पर बैठ गया श्रौर बड़ी देर तक चीड़ वृक्षों की रहस्यात्मक मर्मर ध्वनि सुनता रहा। उसने जोर से सिर हिलाया मानो वह किसी जादू को दूर कर रहा हो, श्रौर पुनः प्रफुल्ल शक्ति से भर गया। स्वास्थ्य-गृह में उसे श्रट्ठाईस दिन तक रहना था, श्रौर उसके बाद यह तै होना था कि उसे विमान चलाना, लड़ना, जिंदा रहना है, या हमेशा के लिए लोगों की हमदर्दी भरी नज़रों का श्रौर बसों में एक सीट दिये जाने का मुहताज रहना है। इसलिए उसे इन लम्बे, मगर थोड़े से श्रट्ठाईस दिनों का एक एक क्षण श्रसली इनसान बनने के लिए संघर्ष में लगा देना होगा।

मेजर के खर्राटों के बीच नीलगूं-सी चांदनी में बिस्तर पर बैठे-बैठे श्रलेक्सेई ने श्रपने दिमाग़ में कसरतों की योजना बनायी। इसमें सुबह-शाम जिमनास्टिक करना, टहलना, दौड़ना, पैरों की विशेष कुशलता विकसित करना शामिल था, श्रौर जिस बात ने उसे सबसे श्रधिक श्राकर्षित किया श्रौर जिससे उसे श्रपने पैरों के सर्वतोमुखी विकास की सम्भावना दिखाई दी, वह विचार उसके दिमाग़ में उस समय श्राया जब वह ज़ीनोच्का से बातें कर रहा था।

उसने नृत्य सीखने का निश्चय किया।

३

एक दिन श्रगस्त की निर्मल, शान्त दोपहर में, जब प्रकृति की हर वस्तु दमक श्रौर चमक रही थी, मगर किसी कारणवश श्रभी से ही श्रपरिलक्षित, उष्ण पवन में शरदागमन का दुखद स्पर्श श्रनुभव होने लगा था, कई विमान-चालक झाड़ियों में से टेढ़े-मेढ़े बहते श्रौर कल-कल करते हुए एक छोटे-से झरने के रेतीले किनारे पर लेटे हुए धूप खा रहे थे।

गर्मी के कारण श्रलसाये हुए वे ऊंघ रहे थे श्रौर श्रथक बरनाज़ियन तक चुप था, वह श्रपनी टूटी हुई टांग को, जो बुरी तरह जुड़ी थी, उष्ण

रेत में दबाये था। वे हेज़ेल झाड़ी की धूसरित पत्तियों के कारण आंखों से ओझल थे, लेकिन उन्हें ख़ुद वह पगडंडी साफ़ दिखाई दे रही थी, जो जलधारा के ऊपरी किनारे पर हरी घास के रौंदे जाने से बन गयी थी। अपनी टांग से उलझे हुए होने के साथ ही बरनाज़ियन की नज़र ऊपर उठ गयी और उसकी आंखों को एक विचित्र दृश्य देखने को मिला।

एक दिन पहले ही जो नया अतिथि आया था, वह धारीदार पायजामानुमा पतलून और बूट पहने हुए, मगर कमर से ऊपर नंगे रूप में, जंगल से प्रगट हुआ। उसने चारों ओर देखा और आसपास किसी को न देखकर दोनों बाज़ू कुहनियां दबाकर विचित्र गति से कूदफांद करता दौड़ने लगा। लगभग दो सौ मीटर दौड़ने के बाद वह बुरी तरह हांफता और पसीने से तर-बतर टहलने की चाल पर उतर आया। सांस फिर जम जाने के बाद वह फिर दौड़ने लगा। उसका शरीर घोड़े के पुट्ठों की भांति चमक रहा था। बरनाज़ियन ने ख़ामोशी के साथ अपने साथियों का ध्यान दौड़नेवाले की तरफ़ आकृष्ट किया और वे सब उसे झाड़ी के पीछे से ताकने लगे। नवागत व्यक्ति इन साधारण-सी कसरतों से भी हांफ रहा था, जब-तब दर्द से चिहुंक उठता था, कभी-कभी कराह उठता था, मगर फिर दौड़ता ही रहा, दौड़ता ही रहा।

बरनाज़ियन अब अपने को और अधिक रोक न सका और आवाज़ लगा उठा:

"ऐ, छोकरे! क्या तुम ज़्नामेन्स्की बन्धुओं को पछाड़ने के लिए अभ्यास कर रहे हो?"

नवागत व्यक्ति झटके के साथ रुक गया। उसके चेहरे से थकान और दर्द के भाव ग़ायब हो गये। उसने शान्तिपूर्वक झाड़ी की दिशा में देखा और बिना एक शब्द कहे, विचित्र लुढ़कती हुई चाल से जंगल में चला गया।

"क्या है यह आदमी, सरकस का खिलाड़ी है या पागल है?" बरनाज़ियन ने आश्चर्य से पूछा।

मेजर स्त्रुच्कोव ने, जो इस समय तक अपनी ऊंघ से जाग गया था, उन्हें समझाया:

"उसके पैर नहीं हैं। वह कृत्रिम पैरों से अभ्यास कर रहा है। वह फिर लड़ाकू कमान में वापस जाना चाहता है।"

इन अलसाये हुए व्यक्तियों पर इन शब्दों ने ठंडे पानी की फुहार जैसा काम किया। फ़ौरन वे सब बातें करने लगे। सभी को आश्चर्य हो रहा था कि जिस लड़के में उन्होंने कभी कोई अनोखी बात नहीं देखी थी, सिवाय इसके कि वह कुछ विचित्र चाल से चलता था, उसके पांव ही नहीं हैं। और यद्यपि उसके पैर नहीं हैं, फिर भी उसका लड़ाकू विमान उड़ाने का इरादा उन्हें निराधार, अविश्वसनीय और पाखण्ड तक मालूम हुआ। उन्होंने स्मरण किया कि बीसियों आदमी मामूली-सी बातों—दो अंगुलियां कट जाने, स्नायुओं की कमज़ोरी होने और पैरों में जड़ता तक के लक्षण प्रगट होने—पर वायुसेना से अलहदा किये जा रहे हैं। हमेशा ही युद्ध-काल तक में, सभी विमान-चालकों से जिस शारीरिक क्षमता के स्तर की मांग की जाती है, वह फ़ौज के अन्य सभी विभागों की अपेक्षा उच्चतर होती है। और अंतिम बात यह कि उनकी राय में किसी कृत्रिम पैरवाले व्यक्ति के लिए यह नितान्त असम्भव है कि वह लड़ाकू विमान जैसी जटिल और संवेदनशील मशीन को चला सके।

निश्चय ही, वे सभी सहमत थे कि मेरेस्येव का विचार एक झक है, फिर भी उसने उनका मन मोह लिया।

"तुम्हारा दोस्त या तो जड़ मूर्ख है या महान व्यक्ति—और कुछ नहीं," बरनाज़ियन इस नतीजे पर पहुंचा।

यह समाचार कि स्वास्थ्य-गृह में एक पैरहीन व्यक्ति है, जो लड़ाकू विमान उड़ाने का सपना देख रहा है, क्षण भर में बिजली की तरह सभी वार्डों में फैल गया। दोपहर के खाने के समय तक अलेक्सेई सबके मनोयोग का विषय बन गया—यद्यपि उसे स्वयं इसका भान नहीं हो पाया था। और वे सभी जो उसे ग़ौर से देख रहे थे, जो उसे मेज़ के चारों ओर बैठे हुए पड़ोसियों के साथ हार्दिक रूप से हंसते हुए, और सुन्दर परिचारिकाओं की परम्परागत प्रशंसा करते हुए खुली भूख के साथ खाते देख और सुन रहे थे, जो उसे साथियों के साथ पार्क में टहलते, क्रिकेट का खेल खेलते और वालीबाल तक पर हाथ दिखाते देखते थे, उन्हें अलेक्सेई में कोई भी असाधारण बात नहीं दृष्टिगोचर होती थी, सिवाय इसके कि वह जिस

तरह चलता था, वह चाल धीमी और स्प्रिंगदार थी। वास्तव में वह बिल्कुल ही साधारण व्यक्ति था। हर व्यक्ति शीघ्र ही उसका अभ्यस्त हो गया और सभी ने उसकी तरफ़ कोई ख़ास ध्यान देना बन्द कर दिया।

अपने आगमन के एक दिन बाद दोपहर चढ़े, अलेक्सेई कार्यालय में ज़ीनोच्का से मिलने गया। उसने अपने भोजन से एक पेस्ट्री बचा ली थी और उसे एक पत्ते में लपेटकर ले गया था। उसने आदरपूर्वक ज़ीनोच्का को वह पेस्ट्री पेश की, फिर बेतकल्लुफ़ी से डेस्क पर बैठ गया और लड़की से पूछा कि वह अपना वायदा कब पूरा करने जा रही है।

"कौनसा वायदा?" ज़ीनोच्का ने पेंसिल से संवारी गयी, धनुषाकार भौंहें उठाकर पूछा।

"तुमने मुझे नाचना सिखाने का वायदा किया था न, ज़ीनोच्का।"

"लेकिन..." लड़की ने विरोध करने का प्रयत्न किया।

"मुझे बताया गया है कि तुम इतनी अच्छी शिक्षिका हो कि पंगु भी नाचना सीख जाते हैं और साधारण आदमी तो न सिर्फ़ पैरों को, बल्कि दिमाग़ को भी खो बैठते हैं जैसा फ़ेद्या के साथ हुआ। हमें कब शुरू करना होगा? हमें अमूल्य समय नहीं खोना चाहिए।"

हां, उसे निश्चय ही नवागत व्यक्ति अच्छा लगा था। उसके पैर नहीं हैं, फिर भी वह नृत्य सीखना चाहता है। और क्यों नहीं? वह भला आदमी है, ताम्रवर्ण, और उसके कपोलों की ताम्रवर्ण त्वचा पर लालिमा समतल उभरी हुई है, और बाल बढ़िया, घुंघराले हैं, वह साधारण व्यक्ति की तरह चलता है और आंखें बड़ी सजीव हैं, हंसती हुई, मगर फिर भी थोड़ी-सी वेदनापूर्ण। ज़ीनोच्का के जीवन में नृत्य का कोई थोड़ा स्थान न था। वह नृत्य-कला से प्रेम करती है, और वास्तव में अच्छी नर्त्तकी है... और मेरेस्येव? वह भी सचमुच बड़ा बढ़िया आदमी है।

लम्बी कथा को थोड़े में कहा जाये तो यह कि वह राज़ी हो गयी। उसने अलेक्सेई को बताया कि उसे नृत्य करना बोब गोरोख़ोव ने सिखाया था जो सोकोल्निकी मनोरंजन पार्क भर में प्रसिद्ध था और गोरोख़ोव स्वयं उन पाल सुदाकोव्स्की का सर्वश्रेष्ठ शिष्य और अनुयायी है जो मास्को भर में प्रसिद्ध हैं और फ़ौजी अकादमियों तथा विदेश मंत्रालय के क्लब में नृत्य सिखाते हैं; उसने इन सम्मानित नृत्यकारों से बालरूम नृत्य की

सर्वोत्तम परम्पराओं को ग्रहण किया है और उसे नाचना सिखायेगी, यद्यपि उसको इसमें संदेह है कि असली पैरों के बिना कोई व्यक्ति नाच भी सकता है। जिन शर्तों पर उसने नृत्य सिखाना स्वीकार किया वे बड़ी सख्त थीं: उसे आज्ञाकारी और परिश्रमी बनना होगा, उसके साथ प्रेम में पड़ने की कोशिश न करनी होगी, क्योंकि इससे सबक़ में बाधा पड़ती है, और मुख्य बात यह कि जब उसे दूसरे पार्टनर अपने साथ नृत्य करने के लिए आमंत्रित करें, तो अलेक्सेई कोई ईर्ष्या न करे, क्योंकि अगर वह एक ही पार्टनर के साथ नाचती रहेगी तो उसकी नृत्य-कुशलता ख़त्म हो जायेगी और इसके अलावा, एक ही पार्टनर के साथ नाचने में कोई मज़ा नहीं है।

मेरेस्येव ने निरपवाद सारी शर्तें स्वीकार कर लीं। ज़ीनोच्का ने अपने लपटों जैसे केश हिलाए और फिर उसी समय, उसी स्थान पर उसने कुशलतापूर्वक अपने सुन्दर पैरों की गति से प्रथम पद-निक्षेप का प्रदर्शन किया। एक ज़माने में मेरेस्येव ने 'रूस्काया' नृत्य में और कमीशिन के पार्क में फ़ायर ब्रिगेड के बैंड के साथ चलनेवाले पुराने नृत्यों में बड़ी स्फूर्ति दिखाई थी। उसको ताल और गति का सहज बोध था और इस आनन्दपूर्ण कला को वह बड़ी जल्दी सीख गया था। अब उसके सामने जो कठिनाई थी, वह यह कि उसे सजीव, लोचदार, चपल पैरों से नहीं, पिण्डुरियों से फ़ीतों के द्वारा बंधे चमड़े के जोड़ों से पद-निक्षेप की कला सीखनी थी। पिण्डुरियों के पुट्ठों के द्वारा भारी और स्थूल कृत्रिम पैरों में प्राण और गति पैदा करने के लिए अतिमानवीय प्रयत्न और इच्छा-शक्ति के तीव्रतम प्रयास की आवश्यकता थी।

मगर उसने उन्हें अपनी आज्ञा मानने के लिए विवश कर दिया। प्रत्येक नया चरण जो वह सीखता – प्रत्येक विसर्पण, पद-निक्षेप, लहर और सम – वालरूम नृत्य की जटिल कला, जिसे सम्मानित पाल सुदाकोव्स्की ने सिद्धांतबद्ध किया था और बड़ी रोबदार और कर्ण मधुर शब्दावली प्रदान की थी, वह उसे असीम आनन्द से विह्वल कर देता और बालक की भांति वह प्रफुल्ल हो उठता। अभ्यास के बाद वह अपनी ही धुरी पर चक्कर लगा उठता या अपने ऊपर विजय प्राप्त करने के उल्लास से विह्वल होकर अपनी शिक्षिका को उठाकर घुमाता और कोई भी नहीं, यहां तक कि उसकी शिक्षिका भी यह न भांप पाती कि इन विविध और जटिल

पद-निक्षेपों से उसे कितनी पीड़ा भोगनी पड़ती थी, इस कला को सीखने के लिए उसे कितनी क़ीमत अदा करनी पड़ रही थी। किसी ने नहीं देखा कि जब वह लापरवाही के साथ अपने मुसकुराते हुए चेहरे पर से पसीने की बूंदें पोंछता था तो वह अनायास उमड़े आंसुओं को भी पोंछ लेता था।

एक दिन उसने थककर बिल्कुल चूर, मगर प्रसन्न भाव से अपने कमरे में लंगड़ाते हुए प्रवेश किया :

"मैं नाचना सीख रहा हूं!" उसने विजय भाव से मेजर स्त्रुच्कोव के सामने घोषणा की जो चिन्तन में लीन खिड़की के पास खड़ा था। बाहर ग्रीष्म के दिन का शान्तिपूर्वक अन्त हो रहा था और डूबते हुए सूरज की अन्तिम किरणें पेड़ों के शिखरों के बीच सोने-सी दमकती दिखाई दे रही थीं।

मेजर ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"और मैं सफल होऊंगा!" मेरेस्येव ने दृढ़तापूर्वक आगे कहा और आराम के साथ कृत्रिम पैरों को फेंक दिया और सुन्न पड़ी टांगों को उंगलियों के नाख़ूनों से बुरी तरह खुरचने लगा।

स्त्रुच्कोव अपना मुंह खिड़की की ही ओर किये रहा, उसके कंधे उठने-गिरने लगे और वह ऐसी आवाज़ कर रहा था, मानो सुबक रहा है। ख़ामोशी के साथ अलेक्सेई कम्बल में घुस गया। मेजर के साथ कोई विचित्र बात घट रही थी। यह व्यक्ति जो अब युवा नहीं था, और अभी कुछ दिनों पहले ही जिसने औरतों के प्रति तिरस्कार प्रगट कर और सनकी रुख़ लेकर मनोविनोद किया था और सारे वार्ड को क्रुद्ध किया था, वही अब स्कूली लड़के की भांति सिर से पैर तक प्रेम में डूब गया था और ऐसा लगता था कि वह बुरी तरह प्रेम में फंस गया है। वह दिन में कई बार कार्यालय में जाकर क्लावदिया मिखाइलोव्ना को मास्को फ़ोन करता। हर जानेवाले मरीज़ के साथ वह उसके लिए फूल, फल, चाकलेट और लिखित संदेश भेजता। वह उसके नाम लम्बी चिट्ठियां लिखता और जब उसे सुपरिचित लिफ़ाफ़े दिये जाते तो वह प्रसन्न होता और मज़ाक़ करने लगता।

मगर उसकी हर विनय को वह ठुकरा देती, उसे कोई प्रोत्साहन न देती, उसके लिए दुख तक न प्रगट करती। उसने लिखा कि वह किसी और से प्रेम करती थी, जिसके लिए आज भी वह शोक मना रही है और

मैत्रीभाव से मेजर स्त्रुच्कोव को सलाह देती कि वह उसका पीछा छोड़ दे, उसे भूल जाये, उसके लिए कोई कष्ट न उठाये और उस पर बेकार समय बरबाद न करे। यही मैत्रीपूर्ण और यथातथ्य भाव, जो प्रेमालाप में सबसे अधिक अपमानजनक होता है, मेजर को इतना व्यथित कर रहा था।

अलेक्सेई उस समय कूटनीतिक भाव से चुपचाप कम्बल में पांव फैलाये पड़ा था, जब मेजर खिड़की से हटकर अलेक्सेई की चारपाई की तरफ़ झपटा, उसे कंधों से पकड़कर झकझोरने लगा और उसके ऊपर झुककर चिल्लाने लगा:

"वह क्या चाहती है? बताओ तो, आखिर मैं हूं क्या? कोई घास-फूस हूं? क्या मैं कुरूप, बूढ़ा, सिर्फ़ कूड़ाकरकट भर हूं? उसकी जगह कोई दूसरी होती तो... लेकिन क्या फ़ायदा है यह सब कहने से!"

उसने अपने को आरामकुर्सी पर लुढ़का दिया, हाथों में मस्तक थाम लिया और इतनी बुरी तरह आगे-पीछे हिलने-डुलने लगा कि आरामकुर्सी कराह उठी।

"वह औरत नहीं है? उसे कम से कम मेरे बारे में जिज्ञासा तो होनी ही चाहिए थी। मैं उससे प्रेम करता हूं और किस तरह! अलेक्सेई! तुम जानते ही हो उस व्यक्ति को... बताओ, वह मुझसे किस बात में बेहतर था? उसमें उसे क्या ख़ास बात दिखाई दी थी? क्या वह अधिक चतुर था? देखने-सुनने में अच्छा था? वह किस तरह का नायक था?"

अलेक्सेई को याद आ गया कमिसार वोरोब्योव, उसका भारी-भरकम सूजा शरीर, तकिये पर पड़ा हुआ मोम जैसा चेहरा, उसके सामने नारी-शोक की अनन्त प्रतीक-सी मूर्तिवत खड़ी हुई वह महिला, और रेगिस्तान के बीच मार्च करते हुए लाल फ़ौज के सिपाहियों की वह आश्चर्यपूर्ण गाथा।

"वह असली इनसान था, मेजर, एक बोल्शेविक था। भगवान करे, हम सब उसकी तरह हों।"

४

एक समाचार, जो बेबुनियाद लगता था, स्वास्थ्य-गृह भर में फैल गया: पैरविहीन विमान-चालक नृत्य सीख रहा है।

जब कार्यालय से ज़ीनोच्का अपनी ड्यूटी ख़त्म करके निकलती तो उसे

अपना शिष्य गलियारे में उसका इंतज़ार करता मिलता। वह उसके लिए जंगली स्ट्राबेरी का एक गुच्छा लाता था या कोई चाकलेट, या नारंगी लाता जिसे वह अपने भोजन में से बचा लेता था। ज़ीनोच्का गम्भीरतापूर्वक उसकी बांह पकड़ती और वे दोनों मनोरंजन-कक्ष की ओर चल पड़ते, जो ग्रीष्मकालीन दोपहर में ख़ाली रहता था और जहां परिश्रमी शिष्य ने पहले से ही ताश की मेज़ें और पिंग-पांग की मेज़ दीवार से सटाकर रख दी होती। ज़ीनोच्का सौंदर्यपूर्ण ढंग से उसके सामने कोई नयी मुद्रा प्रदर्शित करती। भौंहें सिकोड़कर विमान-चालक उन जटिल मुद्राओं को देखता जिन्हें वह अपने नन्हे-से सुकुमार चरणों से फ़र्श पर अंकित कर देती थी। फिर चेहरे पर गम्भीर भाव धारण कर वह लड़की अपने हाथों से तालियां बजाती और गिनने लगती:

"एक, दो, तीन – एक, दो, तीन, विसर्पण, ज़रा दायीं तरफ़... एक, दो, तीन – एक, दो, तीन, विसर्पण, बायीं तरफ़... घूमो! हां, ठीक! एक, दो, तीन... अब लहरियां! आओ, अब हम दोनों एक साथ करें!"

शायद इसलिए कि यह एक पैरविहीन व्यक्ति को नृत्य सिखाने का काम था, ऐसा काम जिसे न तो बोब गोरोख़ोव ने और न स्वयं पाल सुदाकोव्स्की ने कभी किया था, या शायद इसलिए कि इस ताम्रवर्ण, घुंघराले बाल और हंसती हुई आंखोंवाले शिष्य को वह पसन्द करने लगी थी, या शायद दोनों ही कारण होंगे – कारण कुछ भी हो, वह इस काम में अपनी फ़ुर्सत का सारा समय और अपनी पूरी शक्ति लगा रही थी।

शाम को जब नदी के रेतीले किनारे, वालीबाल का मैदान और स्किटिल खेल का मैदान वीरान होते और नृत्य ही मरीज़ों का परमप्रिय मनोरंजन बन जाता, तो अलेक्सेई आनन्द क्रीड़ाओं में निरपवाद रूप से भाग लेता। वह भली भांति नाचता, एक भी नृत्य न छोड़ता, और अनेक बार उसकी शिक्षिका को खेद होता कि उसने व्यर्थ ही उसे इतनी सख़्त शर्तों में बांध दिया है। अकार्डियन की धुन के साथ जोड़े कमरे का चक्कर लगाने लगते। लालिमा युक्त मुखड़ा और उत्तेजनावश चमकती आंखों सहित, मेरेस्येव सारे विसर्पण, पद-निक्षेप, मोड़ और सम पर नृत्य करता, और अपनी लपटों जैसे बालोंवाली मृदुल संगिनी को स्फूर्ति और विह्वल

आलिंगन के साथ, और प्रत्यक्षतः अनायास भाव से, नृत्य में अग्रसर करता। और जो लोग इस वीर नर्तक को देखते, वे यह तक न भांप पाते कि जब-तब वह कमरे से बाहर चला जाता है, तो क्या करता है।

अपने रक्ताभ मुखड़े पर मुसकान लिये वह कमरे से बाहर हो जाता–बड़ी लापरवाही के साथ अपने रूमाल से अपने ऊपर हवा करता हुआ, लेकिन जैसे ही वह दरवाज़े से बाहर निकलता और उपवन में पहुंचता, चेहरे पर मुसकान के स्थान पर पीड़ा की लकीरें खिंच जातीं। पोर्च की सीढ़ियों पर उतरते समय वह रेलिंग थामकर लड़खड़ा उठता, कराह बैठता और फिर ओस से भीगी घास पर लुढ़क जाता, अपने सारे शरीर को नम और अभी भी गर्म धरती से चिपकाकर वह थके हुए पैरों में सख़्ती से बंधे तस्मों के कारण पैदा हुए दर्द की वजह से पड़ता।

पैरों को राहत देने के लिए वह तस्मे खोल डालता। जब उसे आराम महसूस होने लगता, तो वह उन्हें फिर बांध लेता, उछलकर खड़ा हो जाता और फिर भवन को वापस लौट जाता। मनोरंजन-कक्ष में वह किसी की नज़र पड़े बिना ही फिर प्रवेश करता, जहां पसीने में तर-ब-तर अकार्डियन वादक अथक रूप में संगीत उड़ेलता जाता; वह अरुण-केशिनी ज़ीनोच्का के पास जा पहुंचता जो उस भीड़ में पहले से ही उसे अपनी आंखों से खोज रही होती; अपने सफ़ेद, सुव्यवस्थित, चीनी जैसे दांतों को प्रगट करते हुए वह चौड़ी-सी मुसकान मुसकुरा देता और चंचल, सौंदर्यपूर्ण जोड़ा फिर नृत्य-चक्र में शामिल हो जाता। उसे छोड़कर चले जाने की बात पर ज़ीनोच्का उसको झिड़क देती, वह मज़ाक़ करके उसका जवाब दे देता, और वे जिस तरह नृत्य-चक्र में नाचने लगते, वह शेष सभी नृत्यकारों से किसी भी तरह ज़रा भी भिन्न न होता।

शीघ्र ही इन कठिन नृत्य-अभ्यासों का सुपरिणाम प्रगट होने लगा। कृत्रिम पैरों में अलेक्सेई को अधिकाधिक कम बन्धन महसूस होने लगा; वे उसे अपने टांगों में उग आये से लगने लगे।

अलेक्सेई प्रसन्न था। अब उसे एक ही बात से चिन्ता थी–ओलगा के पत्रों का अभाव। ग्वोज़देव को अपनी प्रेमिका के साथ जो दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव हुआ था, उस समय उसने जो घातक पत्र भेजा था–अब तो वह उसे घातक ही समझता है; और नहीं तो नितान्त मूर्खतापूर्ण पत्र अवश्य

था—उसे गये भी एक महीने से अधिक हो गया था, मगर कोई उत्तर नहीं आया। हर सुबह, जिमनास्टिक और दौड़ की कसरतों के बाद, जिनमें वह हर रोज़ सौ क़दमों का इज़ाफ़ा करता जा रहा था, वह कार्यालय में पत्र-पेटिका देखने जाता कि उसके लिए कोई पत्र आया या नहीं। सभी ताक़ों से 'म' चिह्नित ताक़ में सबसे अधिक चिट्ठियां होतीं, मगर उनको छांटकर देखना व्यर्थ जाता।

लेकिन एक दिन, नृत्य-अभ्यास के दौर में, मनोरंजन-कक्ष की खिड़-की में से बरनाज़ियन का काला सिर प्रगट हुआ। अपने हाथ में वह एक छड़ी और एक पत्र पकड़े था। इसके पहले कि वह एक शब्द कह पाता, अलेक्सेई ने लिफ़ाफ़ा छीन लिया, जिसपर बड़े-बड़े गोल-गोल, स्कूली लड़की जैसी लिखावट में पता लिखा था, और चकित बरनाज़ियन को खिड़की पर तथा क्रुद्ध शिक्षिका को कमरे के बीच में खड़े छोड़कर वह भाग गया।

"ज़ीनोच्का, आजकल इन सभी का यही हाल है," बरनाज़ियन बातूनी चाचियों के स्वर में बुदबुदाया, "ये सभी छली हैं। इनमें से किसी पर विश्वास न करना। उनसे उसी तरह दूर भागना जैसे पवित्र जल से शैतान दूर भागता है। बेहतर हो कि तुम मुझे अपना शिष्य बना लो।" इतना कहकर उसने छड़ी कमरे में फेंकी और बुरी तरह कांखते हुए उस खिड़की में से चढ़ आया जहां ज़ीनोच्का दुखी और किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ी थी।

इधर अलेक्सेई भागकर झील पर पहुंचा; वह चिट्ठी को इस तरह कसकर पकड़े था, मानो उसे डर है कि कोई व्यक्ति उसका पीछा करने और उसका ख़ज़ाना लूट ले जानेवाला है। यहां, सरकंडे की खड़खड़ाती हुई झाड़ियों को पार करता, वह एक काई खायी चट्टान पर बैठ गया और ऊंची घास में पूरी तरह छिपकर वह अमूल्य लिफ़ाफ़े की परीक्षा करने लगा जो उसके हाथ में कांप रहा था। इसमें क्या होगा? इसमें क्या सजा घोषित की गयी होगी? लिफ़ाफ़ा मैला और कुचला हुआ था; अपने निश्चित स्थान पर पहुंचने से पहले वह काफ़ी भटकता फिरा होगा। अलेक्सेई ने सावधानी से लिफ़ाफ़े की एक पट्टी फाड़ी और उसकी नज़र पत्र की आख़िरी पंक्ति पर पड़ी: "प्यारे, मैं तुम्हें चुम्बन करती हूं। ओल्गा।" फ़ौरन उसके ऊपर राहत की भावना छा गयी। उसने अब शान्ति से कापी से फाड़े गये काग़ज़ को घुटने पर फैलाकर समतल किया—किसी कारण उनपर

मिट्टी लगी थी और मोमबत्ती की ग्रीज़ लगी थी। ओल्गा हमेशा बड़ी साफ़-सुथरी रहती थी, अब उसे क्या हो गया है? और फिर उसने संदेशा पढ़ा तो गर्व और चिन्ता दोनों ही से उसका हृदय भर गया। लगता था कि ओल्गा ने एक महीने पहले लकड़ी चीरने का कारखाना छोड़ दिया था और कमीशिन की अन्य लड़कियों और औरतों के साथ कहीं स्तेपी में रह रही है और टैंक-विरोधी खाइयां खोदने और जैसा कि उसने लिखा था, किसी ऐसे बड़े नगर के चारों ओर, जिसका नाम हम सब के लिए पवित्र है, क़िलेबन्दी जमाने का काम कर रही थी। स्तालिनग्राद का नाम कहीं भी चिट्ठी में नहीं लिखा था, लेकिन जिस प्रेम, चिन्ता और आशा के साथ उसने इस "बड़े नगर" के विषय में लिखा था, उससे स्पष्ट था कि उसका मतलब उसी नगर से है।

उसने लिखा था कि उस जैसे हज़ारों व्यक्ति, स्वयंसेवक, स्तेपी में ज़मीन खोदते, हथगाड़ियों से मिट्टी ढोते, कंक्रीट बिछाते और कवच कोठरियां बनाते, दिन रात काम कर रहे हैं। पत्र प्रसन्नता से पूर्ण था, मगर उसमें जहां-तहां किन्हीं वाक्यखंडों से यह स्पष्ट था कि स्तेपी में पड़ी हुई महिलाओं और लड़कियों को बड़े कठिन दिन भोगने पड़ रहे हैं। स्पष्ट ही जिन कामों में वह पूरी तरह डूबी हुई थी, उनके बारे में सब कुछ लिख देने के बाद ही, उसने उस प्रश्न का उत्तर दिया था जो उसने पूछा था। रोषपूर्ण शब्दों में उसने लिखा था कि उसके अंतिम पत्र से उसे गहरी चोट लगी, जो उसे यहां, खाइयों के बीच प्राप्त हुआ था, और अगर उसे यह पता न होता कि वह मोर्चे पर है, जहां आदमी के स्नायुओं को बेहद तनाव का शिकार होना पड़ता है, तो वह इस पत्र के लिए कभी उसको माफ़ न करती।

"प्रियतम," उसने लिखा था, "वह कैसा प्रेम है जो क़ुर्बानियां न दे सके? ऐसा कोई प्रेम नहीं होता, प्यारे। अगर ऐसा होता है, तो मेरी राय में वह प्रेम है ही नहीं। मैं एक हफ़्ते से नहा नहीं सकी, मैं पतलून पहन रही हूं, और जूते हैं जिनका मुंह खुल गया है। मेरा चेहरा धूप से इतना जल गया है कि खाल उधड़ने लगी है और उसके नीचे सारी त्वचा खुरदरी और नीली पड़ गयी है। अगर मैं तुम्हारे पास इस समय आऊं—थकी हुई, गंदी, दुबली-पतली, कुरूप—तो क्या तुम मुझे भगा दोगे या

मेरे प्रति कोई अरुचि प्रगट करोगे? तुम भी क्या मूर्ख लड़के हो! तुम्हें कुछ भी हो जाये, मैं तुम्हें यह जताना चाहती हूं, कि मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूं, फिर तुम चाहे जैसे भी हो... मुझे अक्सर तुम्हारी याद आती है और इन 'खाइयों' में आने से पहले, जहां हम सोने के पटरों तक पहुंचते ही सो जाते हैं और मुरदे की तरह सोते हैं, मुझे अक्सर तुम्हारे सपने आते थे। मैं तुम्हें जता देना चाहती हूं कि जब तक मैं ज़िंदा हूं, तब तक तुम्हारे लिए एक ऐसी जगह रहेगी जहां कोई तुम्हारा इंतज़ार कर रही होगी, हमेशा इंतज़ार करेगी, तुम चाहे जैसे भी हो जाओ... तुम कहते हो कि तुम्हें मोर्चे पर कुछ भी हो सकता है; मगर यदि मुझे इन "खाइयों" में कहीं कुछ हो जाये, अगर मैं किसी दुर्घटना की शिकार हो जाऊं और पंगु हो जाऊं, तो क्या तुम मुझे ठुकरा दोगे? क्या तुम्हें याद है, जब हम प्रशिक्षण विद्यालय में पढ़ते थे, तब हम बीजगणित के सवालों को प्रतिस्थापन की पद्धति से हल करते थे? तो अब तुम अपनी जगह मुझे रख लो और सोचो। अगर यह करोगे, तो तुमने जो कुछ लिखा है, उसके लिए तुम्हें ख़ुद शर्म आयेगी..."

मेरेस्येव इस पत्र के बारे में सोचता हुआ बड़ी देर तक बैठा रहा। स्याह पानी में चकाचौंध के साथ प्रतिबिम्बित सूरज आग की तरह गर्म था, सरकंडे की झाड़ियां खड़खड़ा रही थीं और नीले व्याध-पतंग दलदली घास के एक गुच्छ से दूसरे गुच्छ पर मंडराते घूम रहे थे। अपनी लम्बी-लम्बी, पतली टांगों पर पानी की मक्खियों के झुण्ड जल की सतह पर इधर-उधर दौड़ लगा रहे थे और सपाट सतह पर फ़ीते जैसी लकीर छोड़ जाते थे। नन्हीं-नन्हीं लहरें ख़ामोशी से रेतीले किनारे को चूम रही थीं।

"यह सब क्या है?" अलेक्सेई सोचने लगा, "पूर्वबोध? भविष्यवाणी की देन?" उसकी मां कहा करती थी, "दिल स्वयं एक भविष्यवक्ता है।" या क्या खाई की सख़्त ज़िंदगी ने लड़की को ज्ञान प्रदान किया है और उस बात को वह अन्तर्ज्ञान के बल पर समझ गयी है, जिसे बताने का साहस वह स्वयं न जुटा सका था? उसने एक बार फिर पत्र पढ़ डाला। नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। यह कोई अन्तर्ज्ञान नहीं है। यह तो सीधा-सादा जवाब है उन्हीं बातों का, जो उसने लिखी थीं। और कितना उपयुक्त था यह उत्तर!

अलेक्सेई ने निश्वास खींची, धीरे-धीरे कपड़े उतार डाले और पत्थर पर उनका ढेर लगा लिया। वह हमेशा इस छोटी-सी वीरान खाड़ी में नहाता था जिससे सिर्फ़ वह अकेला परिचित था और जो रेतीले किनारे से दूर, खड़खड़ाती हुई झाड़ियों की दीवार के पीछे छिपी थी। अपने कृत्रिम पैरों के तस्मे खोलकर वह आहिस्ते से चट्टान पर से खिसका और यद्यपि नंगे ठूठों के बल बालू पर चलना बड़ा पीड़ाजनक था, तब भी उसने चारों हाथ-पैरों का सहारा नहीं लिया। दर्द से चिहुंकते हुए वह झील में उतरा और ठंडे, घने पानी में लुढ़क गया। वह किनारे से कुछ दूर तक तैरता हुआ गया और पीठ के बल उलटा हो गया और चुपचाप पड़ा रहा। वह नीले, अनन्त आकाश को ताकता रहा। छोटे-छोटे बादल एक दूसरे से टकराते हुए तेजी से उसे पार करते जा रहे थे। वह फिर उलट गया और उसने देखा कि पानी की ठंडी नीली, समतल सतह पर किनारे का सच्चा प्रतिबिम्ब उलटा दिखाई दे रहा है और सफ़ेद तथा पीली कौमुदियां तैरती हुई गोल पत्तियों के बीच खड़ी हैं। यकायक उसने चट्टान पर बैठी हुई ओल्गा का प्रतिबिम्ब देखा – उसी तरह की ओल्गा, जैसी कि फूलदार फ़्राक पहने वह उसे अपने सपनों में दिखाई देती है। मगर उसके पैर सिमटे हुए नहीं थे, नीचे लटक रहे थे, हालांकि वे पानी तक नहीं पहुंच रहे थे – दो कुरूप ठूंठ सतह के ऊपर नजर आ रहे थे। इस दृश्य को छिन्न-भिन्न करने के लिए उसने पानी पर थपेड़ा मारा। नहीं, ओल्गा ने जो प्रतिस्थापन पद्धति सुझायी है, उससे उसकी समस्या हल नहीं होती।

५

दक्षिण में स्थिति अपूर्व गति से गम्भीर होती जा रही थी। समाचार-पत्रों ने दोन पर युद्ध के समाचारों को देना बहुत पहले बंद कर दिया था। एक दिन सोवियत सूचना-विभाग की विज्ञप्ति में दोन के दूसरी ओर के, वोल्गा की दिशा में, स्तालिनग्राद की ओर जानेवाले रास्ते के कज्ज़ाक ग्रामों का उल्लेख हुआ। इस क्षेत्र से जो लोग अपरिचित हैं, उनके लिए इन नामों का चाहे कोई महत्त्व न हो, मगर अलेक्सेई, जिसका जन्म और पालन-पोषण वहीं हुआ था, समझ गया था कि दोन पर निर्मित रक्षा-

पांत बेध दी गयी है और युद्ध का तूफ़ान स्तालिनग्राद की दीवारों तक पहुंच गया है।

स्तालिनग्राद! उस नाम का विज्ञप्तियों में उल्लेख होना अभी शुरू नहीं हुआ था, फिर भी वह हर ज़बान पर था। १९४२ के शरद काल में वह नाम बड़ी चिन्ता और पीड़ा के साथ लिया जाता था – वह नाम एक नगर के नाम की भांति नहीं, एक ऐसे घनिष्ठ और प्रियतम व्यक्ति के नाम की भांति लिया जाता था, जो प्राणघातक ख़तरे में फंस गया हो। यह ग्राम दुश्चिन्ता मेरेस्येव के लिए इस कारण और भी घनी हो गयी थी कि ओल्गा उसी के आसपास कहीं, नगर के बाहर स्तेपी मैदान में पड़ी हुई थी, और कौन कह सकता था कि उसे कैसी अग्नि-परीक्षा देनी पड़ेगी? वह अब उसे हर दिन चिट्ठी लिखने लगा, लेकिन किसी रण-क्षेत्रीय पोस्ट आफ़िस की मार्फ़त भेजी गयी इन चिट्ठियों का मूल्य ही क्या क्या था? वोल्गा के स्तेपी मैदानों में जो भयंकर लड़ाइयां हो रही थीं, उनके नारकीय वातावरण में, पीछे हटते जाने की गड़बड़ियों के बीच क्या वे चिट्ठियां उस तक पहुंच पायेंगी?

विमान-चालकों का स्वास्थ्य-गृह मधुमक्खी के झकझोरे गये छत्ते की भांति भनभना उठा। दैनिक मनोरंजन – चौपड़, शतरंज, वालीबाल, स्किटिल और डोमीनो के अवश्यम्भावी खेल तथा ताश के जुए का खेल जिसे रोमांच के शौक़ीन मरीज़ झील के किनारे की झाड़ियों के बीच छिपकर खेला करते थे – अब ख़त्म कर दिये गये। ऐसी बातों में अब किसी का दिल-दिमाग़ नहीं लगता था। हर व्यक्ति, जड़ आलसी लोग तक, सुबह समय से एक घंटे पहले ही उठ बैठता था, ताकि रेडियो से सात बजे की पहली युद्ध-रिपोर्ट सुनी जा सके। जब विज्ञप्तियों में हवाबाज़ों के करिश्मों की चर्चा होती, तो हर व्यक्ति चिड़चिड़ा बना घूमता, नर्सों में मीन-मेख निकालता और भोजन तथा नियमों को कोसता, मानो इस बात के लिए स्वास्थ्य-गृह के कर्मचारी ही दोषी हैं कि ये लोग यहां धूप में, शान्त जंगलों में और शीशे की तरह झील के किनारे चहलक़दमी करते घूम रहे हैं और वहां, स्तालिनग्राद के नज़दीक स्तेपी मैदानों में नहीं लड़ रहे हैं। आख़िरकार स्वास्थ्य-गृह के वासियों ने घोषित कर दिया कि वे स्वास्थ्याकांक्षी रोगी के जीवन से ऊब गये हैं और मांग की कि उन्हें

यहां से मुक्त कर दिया जाये ताकि वे अपनी-अपनी टुकड़ियों में लौटकर जा सकें।

एक दिन दोपहर चढ़े, वायुसेना के नियुक्ति-विभाग का एक कमीशन आ पहुंचा। धूल से सनी कार से कई अफ़सर उतरे जो चिकित्सा सेवाओं के पदवी-चिह्न लगाये हुए थे। सामने की सीट से, सीट की पीठ पर बोझ डालकर झुकता हुआ, एक लम्बा और हृष्ट-पुष्ट अफ़सर उतरा। यह प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की थे, जो विमान सेना में सुविख्यात थे और जिस पितृ-भाव से वे विमान-चालकों से सद्व्यवहार करते थे, उसके कारण विमान-चालक उन्हें बड़ा प्यार करते थे। रात के भोजन-काल में यह घोषित किया गया कि कमीशन स्वास्थ्य-लाभ करनेवालों में से ऐसे स्वयंसेवकों को चुनेगा जो अपनी बीमारी की छुट्टी कम कराना चाहते हों और फ़ौरन अपनी-अपनी टुकड़ियों को जाना चाहते हों।

अगली सुबह मेरेस्येव दिन फूटते ही उठ बैठा और नित्य की कसरतें किये बिना जंगल की ओर रवाना हो गया और नाश्ते के समय तक वहीं रहा। नाश्ते में उसने कुछ नहीं खाया: सारा खाना बिना छुए छोड़ देने पर जब परिचारिका ने झिड़की दी तो उसके साथ उसने उद्दंड व्यवहार किया और जब स्त्रुच्कोव ने टीका की कि चूंकि वह लड़की उसके प्रति दया का व्यवहार करना चाहती थी इसलिए उसके साथ उद्दंडता से पेश आने का उसे कोई अधिकार नहीं है, तो वह उछल पड़ा और भोजन-कक्ष से बाहर चला गया। गलियारे में ज़ीनोच्का सोवियत सूचना-विभाग की विज्ञप्ति पढ़ रही थी, जो दीवाल पर लगा दी गयी थी। अलेक्सेई उसके पास से अभिवादन किये बिना ही निकल गया। ज़ीनोच्का ने भी उसे न देख पाने का अभिनय किया और कटुतापूर्वक सिर्फ़ कंधे उचका दिये। लेकिन जब अलेक्सेई उसके पास से, सचमुच ही बिना उसे देखे, गुज़र गया, तो उसने ठेस महसूस की और लगभग आंसू भरकर वह उसे पुकार उठी। अलेक्सेई अपने कंधों के ऊपर से देखता हुआ क्रोधपूर्वक भड़क उठा:

"अच्छा, तो तुम क्या चाहती हो?"

"कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट, तुम क्यों..." लड़की ने आहिस्ते से

कहा और इस बुरी तरह लजा उठी कि उसके कपोलों का रंग उसके बालों से मेल खाने लगा।

अलेक्सेई ने फ़ौरन अपना गुस्सा संभाला और यकायक उसे अपना सारा शरीर डूबता महसूस होने लगा।

"मेरे भाग्य का फ़ैसला आज होनेवाला है," उसने मंद स्वर में कहा, "हाथ मिलाओ और मेरे लिए शुभकामनाएं करो..."

हमेशा से अधिक लंगड़ाते हुए वह कमरे में घुस गया और अपने को अन्दर से बंद कर लिया।

कमीशन मनोरंजन-कक्ष में बैठा, जहां उसका सारा साज़-सामान—श्वास मापक यंत्र, हाथ की शक्ति मापक यंत्र और आंखों की ज्योति की परीक्षा करने के पट आदि—जमा दिया गया था। स्वास्थ्य-गृह के समस्त निवासी कमरे के बाहर जमा हो गये और जो लोग अपनी बीमारी की छुट्टी कटवाना चाहते थे, यानी लगभग सभी, वे एक लम्बी पांत में खड़े हो गये। मगर ज़ीनोच्का आयी और सभी को एक पुर्ज़ा थमा गयी जिसमें प्रत्येक के लिए वह घंटा और मिनट अंकित था जब उन्हें बुलाया जायेगा और वह उनसे चले जाने को कह गयी। शुरू के लोग जब कमीशन के सामने हो आये तो अफ़वाह फैल गयी कि कमीशन बहुत सख़्त नहीं है। और जब भयंकर युद्ध वोल्गा के किनारे छिड़ा हुआ हो और अधिकाधिक प्रयत्नों की आवश्यकता हो, तो कमीशन सख़्त हो भी तो कैसे सकता है? अलेक्सेई पोर्च के सामने ईंट की नीची-सी दीवाल पर पैर लटकाये बैठा था और जब कोई आदमी अंदर से बाहर आता तो बड़ी उदासीनतापूर्वक, मानो उसे कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है, वह पूछता:

"कहो, तुम्हारे साथ कैसी बीती?"

"मैं पास हो गया हूं!" वह व्यक्ति अपने कोट का बटन लगाते हुए या पेटी कसते हुए प्रसन्नतापूर्वक जवाब देता।

मेरेस्येव के पहले बरनाज़ियन गया। वह अपनी छड़ी बाहर, दरवाज़े पर छोड़ता गया और अपने शरीर को लहराने और छोटी टांग के कारण लंगड़ाने से रोकने का प्रयत्न करता कमरे में घुस गया। उसे बड़ी देर तक अंदर रखा गया। अंत में, खुली खिड़कियों से क्रोधपूर्ण आवाज़ें अलेक्सेई के कानों तक आयीं, दरवाज़ा खुला और बरनाज़ियन बड़ा गरम दिखता

बाहर झपटा। उसने अलेक्सेई पर क्रुद्ध दृष्टि डाली और फिर सामने देखता और वह चिल्लाता हुआ पार्क में घुस गया:

"नौकरशाह! मक्खन-रोटी उड़ानेवाले! ये क्या जाने विमान-कला को? क्या समझते हैं कि यह कोई बैले नृत्य है?.. छोटी टांग है!.. नाश हों ये एनीमा और सुइयां, उन्हें तो यही आता है!"

अलेक्सेई ने महसूस किया कि उसके पेट के अंदर कहीं ठंड घर कर गयी है। फिर भी वह कमरे में तेज़ी से क़दम रखता, प्रसन्न भाव से मुस-कुराता हुआ घुसा। कमीशन एक लम्बी मेज़ पर बैठा था। बीच में गोश्त के एक पहाड़ की भांति ऊंचे से प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की थे। बग़ल की मेज़ पर चिकित्सा सम्बन्धी कार्डों के ढेर के सामने ज़ीनोच्का गुड़िया की तरह सफ़ेद, कलफ़दार पोशाक पहने बैठी थी। उसके सिर पर बंधे जालीदार रूमाल से लाल केशों की एक लट बड़े नाज़ से झांक रही थी। उसने अलेक्सेई को उसका कार्ड दिया और देने के साथ-साथ हल्के से उसका हाथ दबा दिया।

"हां, नौजवान, कमर तक कपड़े उतार डालो," सर्जन ने अपनी आंखें घुमाते हुए कहा।

मेरेस्येव ने अपनी कसरतें व्यर्थ ही नहीं की थीं। सर्जन उसके सुन्दर, सुविकसित शरीर की सराहना किये बिना न रह सका जिसका एक एक पुट्ठा ताम्रवर्ण त्वचा में से उभर रहा था।

"तुम तो डेविड की मूर्त्ति बनाने के लिए माडल का काम दे सकते हो," कमीशन के एक सदस्य ने ज्ञान बघारते हुए कहा।

मेरेस्येव सभी परीक्षाओं में पास हो गया। उसके हाथों की पकड़ साधारण स्तर से पचास फ़ीसदी अधिक थी, और श्वास-शक्ति की परीक्षा में उसने फूंक मारकर यंत्र को उच्चतम सीमा तक पहुंचा दिया। उसके ख़ून का दबाव स्वाभाविक था, उसके स्नायु तंतुओं की अवस्था उत्तम थी। अंत में उसने शक्तिमापक यंत्र की लोहे की मूठ इतने ज़ोर से दबायी कि उसकी स्प्रिंग ही टूट गयी।

"विमान-चालक है?" सर्जन ने प्रसन्नचित्त दिखाई देते हुए पूछा और अपनी सीट पर ज़रा आराम से बैठते हुए वह "सीनियर लेफ़्टीनेंट मेरेस्येव, अ० पी०" केस कार्ड के ऊपरी कोने पर अपना फ़ैसला लिखने लगा।

"हां।"

"लड़ाकू विमान का?"

"हां।"

"अच्छा, जाओ और लड़ो! उन्हें वहां तुम जैसे व्यक्तियों की जरूरत है, बुरी तरह जरूरत है! .. खैर, तुम्हें हो क्या गया था?"

अलेक्सेई का चेहरा उतर गया। उसे लगा कि अब सारा महल ढहनेवाला है। डाक्टर ने उसके केस कार्ड की परीक्षा की और उसके चेहरे पर आश्चर्य का भाव फैल गया।

"कटे हुए पैर... यह क्या लिखा है? फ़िज़ूल बात! यह जरूर ग़लती है, एह? तुम जवाब क्यों नहीं देते?"

"नहीं, यह ग़लती नहीं है," अलेक्सेई ने आहिस्ते से कहा और बहुत ही धीरे-धीरे, मानो वह फांसी के तख़्ते पर चढ़ रहा हो।

डाक्टर तथा कमीशन के अन्य सदस्यों ने इस हृष्ट-पुष्ट, सुगढ़ और फुरतीले युवक की ओर संदेह की दृष्टि से घूरा और यह न समझ सके कि क्या मामला है।

"अपनी पतलून ऊपर उठाओ!" डाक्टर ने अधीर स्वर में आदेश दिया।

अलेक्सेई पीला पड़ गया, ज़ीनोच्का की ओर असहाय दृष्टि डाली, धीरे-धीरे पतलून के घेरे चढ़ाने लगा और अपने चमड़े के पैर प्रदर्शित करते हुए हताश भाव से खड़ा हो गया।

"तुम हमारा मज़ाक़ बनाने का प्रयत्न कर रहे थे क्या? ज़रा देखो तुमने कितना वक़्त बरबाद कर दिया! निश्चय ही, तुम्हारा यह ख़्याल तो नहीं होगा कि पैरों के बिना तुम वायुसेना में फिर वापस चले जाओगे, कि ऐसा ही ख़्याल है?" डाक्टर ने आख़िरकार पूछ ही लिया।

"मैं समझता हूं—मैं जाऊंगा!" अलेक्सेई ने मंद स्वर में उत्तर दिया, उसकी काली आंखें हठपूर्वक उद्दंडता से कौंध रही थीं।

"बिना पैरों के? तुम पागल हो!"

"हां, मैं बिना पैरों के उड़ने जा रहा हूं," अलेक्सेई ने जवाब दिया, इस बार उद्दंड भाव से नहीं, शान्तिपूर्वक। उसने कोट की जेब में हाथ डाला और उसमें से पत्रिका से काटी गई एक बक़िया तहशुदा कतरन

निकाल ली। "देखिए," उसने डाक्टर को वह कतरन दिखाते हुए कहा, "वह एक पैर होने के बावजूद उड़ लेता था। मैं पैरों के बिना क्यों नहीं उड़ पाऊंगा?"

डाक्टर ने कतरन पढ़ी और फिर अलेक्सेई की तरफ़ आश्चर्य और आदर की दृष्टि से देखा।

"हां, मगर उसके लिए तुम्हें अभ्यास में आकाश-पाताल एक करना होगा। इस व्यक्ति ने दस साल तक अभ्यास किया था। तुम्हें अपने कृत्रिम पैरों को इस तरह इस्तेमाल करना सीखना होगा, मानो वे असली हों," उसने नरम स्वर में कहा।

इस स्थल पर अलेक्सेई को अप्रत्याशित सहायता प्राप्त हुई। ज़ीनोच्का अपनी मेज़ पर से उठ पड़ी, हाथ बांधकर इस तरह खड़ी हो गयी, मानो प्रार्थना कर रही हो, और इतनी बुरी तरह शरमाते हुए कि उसकी कनपटियों पर पसीने के मोती झलकने लगे, वह चहक उठी:

"कामरेड डाक्टर, आप इन्हें नृत्य करते देखें। दो पैरों वाले से भी बेहतर! मैं क़सम खाकर कहती हूं!"

"नृत्य!? क्या कहती हो?" डाक्टर ने आश्चर्यपूर्वक कमीशन के सारे सदस्यों पर नजर दौड़ाकर विस्मय से कहा।

अलेक्सेई ने प्रसन्नतापूर्वक ज़ीनोच्का द्वारा सुझायी गयी बात को पकड़ लिया।

"अभी फ़ैसला न कीजिये," उसने कहा, "आज रात को आप हमारे नृत्य में आइए और देखिए कि मैं क्या कर सकता हूं।"

दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते हुए अलेक्सेई ने शीशे के प्रतिबिम्ब में कमीशन के सदस्यों को एक दूसरे से उत्साहपूर्वक बातचीत करते देखा।

भोजन के पहले ज़ीनोच्का ने अलेक्सेई को पार्क के एक सुनसान कोने में बैठे पाया। उसने अलेक्सेई को बताया कि कमीशन ने उसके विषय में देर तक बातचीत जारी रखी, और डाक्टर ने कहा था कि मेरेस्येव विलक्षण लड़का है और कौन जानता है कि शायद वह सचमुच उड़ान कर सके। रूसी क्या नहीं कर सकता! इस पर कमीशन के एक सदस्य ने जवाब दिया था कि उड्डयनकला के इतिहास में अब तक कोई ऐसा उदाहरण नहीं है, और डाक्टर ने इसके प्रत्युत्तर में कहा था कि उड्डयन के इतिहास में बहुत-

सी बातें कभी नहीं हुई थीं और इस युद्ध में सोवियत विमान-चालकों ने बहुत-सी ऐसी देन दी है जो बिल्कुल नयी है।

स्वयंसेवकों के—जिनकी संख्या लगभग दो सौ निकली—फ़ौजी जीवन में पुनः वापिस लौटने की ख़ुशी में एक विदाई नृत्य-समारोह किया गया और वह बड़ा शानदार उत्सव था। मास्को से एक फ़ौजी बैंड निमंत्रित किया गया था और उसने जो संगीत गुंजाया वह इस महल के हॉलों और बरामदों में बादलों की गरजना की तरह प्रतिध्वनित हो उठा और उससे जालीदार खिड़कियां कांपने लगीं। पसीने से लथपथ विमान-चालक अनन्त गति से नाचते रहे और उनमें सबसे आनन्ददायक, चपलतम और फुरतीला था मेरेस्येव, जो अपनी रक्ताभ केशिनी नायिका के साथ नाच रहा था। बेजोड़ जोड़ा था!

फ़ौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की अपने सामने ठंडी बीयर का गिलास रखे खुली खिड़की के पास बैठे थे और वह मेरेस्येव तथा उसकी ज्वालाओं जैसे केशोंवाली पार्टनर की तरफ़ से आंखें हटा नहीं पा रहे थे। वह डाक्टर थे और वह भी फ़ौजी डाक्टर, इसलिए कृत्रिम और असली पैरों का फ़र्क़ समझते थे।

और इस समय ताम्रवर्ण, सुगढ़ विमान-चालक को अपने नन्हे-से सौंदर्यपूर्ण पार्टनर के साथ नृत्य करते देखकर वह अपने को इस विचार से मुक्त नहीं कर सके कि इसके पीछे कोई चाल अवश्य है। अंततः सराहना करनेवाले प्रशंसकों के घेरे में उछलते और कूदते-फांदते, अपनी जांघों और कपोलों पर थप्पड़ जमाते हुए, जब अलेक्सेई ने 'बारिन्या' नृत्य भी समाप्त कर दिया तो पसीने से तर और उत्तेजित रूप में मिरोवोल्स्की के पास पहुंचा। मौन सराहना के भाव से डाक्टर ने उससे हाथ मिलाया। अलेक्सेई ने कुछ नहीं कहा, मगर उसकी आंखें सीधे सर्जन की आंखों में झांक रही थीं, प्रार्थना करतीं, उत्तर मांगतीं।

"और तुम तो समझते ही हो," आख़िरकार डाक्टर ने कहा, "मुझे कोई अधिकार नहीं है कि मैं किसी यूनिट में तुम्हें नियुक्त करूं, मगर मैं तुम्हें नियुक्ति-विभाग के लिए एक प्रमाण पत्र दूंगा। मैं प्रमाणित करूंगा कि उचित प्रशिक्षण के बाद तुम हवाई जहाज़ चलाने के योग्य हो जाओगे। हर सूरत में तुम मेरे वोट का भरोसा कर सकते हो।"

स्वास्थ्य-गृह के प्रधान की बांह में बांह डाले मिरोवोल्स्की कमरे से बाहर चले गये—स्वास्थ्य-गृह का प्रधान भी काफ़ी अनुभवी सर्जन था। दोनों ही आश्चर्य और सराहना कर रहे थे। सोने से पहले वे बड़ी देर तक बैठे रहे, धूम्रपान करते रहे और बात करते रहे कि सोवियत नागरिक जब सचमुच कमर कस लेते हैं तो क्या कर दिखाते हैं...

इस बीच, जब संगीत अभी भी गूंज रहा था और खुली खिड़कियों से आनेवाली रोशनी में नर्तकों की छायाएं अभी भी धरती पर आ-जा रही थीं, तब अलेक्सेई मेरेस्येव ऊपर की मंज़िल के स्नानागार में बंद था, ठंडे पानी में उसकी टांगें डूबी हुई थीं और वह होंठ इतने ज़ोर से दबाये था कि उनसे ख़ून बह उठा था। दर्द से लगभग बेहोश-सी हालत में वह नीले ख़ूनी घट्टों को और कृत्रिम पैरों की भयंकर रगड़ से उत्पन्न चौड़े घावों को पानी से नहला रहा था।

एक घंटे बाद, जब मेजर स्त्रुच्कोव ने कमरे में प्रवेश किया, तब मेरेस्येव नहा-धोकर तरो-ताज़ा शीशे के सामने बैठा था और अपने गीले, घुंघराले बालों को काढ़ रहा था।

"ज़ीनोच्का तुम्हें खोज रही है। तुम्हें उसे बिदाई के पहले आख़िरी बार टहलाने ले जाना चाहिए था। इस लड़की पर मुझे तो तरस आता है।"

"चलो, हम साथ चलें!" मेरेस्येव ने उत्सुकतापूर्वक जवाब दिया, "ज़रूर चलो, पावेल इवानोविच, तुम्हारा इसमें क्या जायेगा?" उसने विनती की।

उस भली नन्ही-सी लड़की के साथ, जिसने उसे नृत्य सिखाने में इतना कष्ट उठाया था, अकेले रहने के विचार मात्र से उसे बेचैनी महसूस हो रही थी; ओल्गा का पत्र आ जाने के बाद से उसकी उपस्थिति में उसे बड़ी व्यग्रता अनुभव होने लगती थी। इसलिए वह साथ चलने के लिए स्त्रुच्कोव से बराबर अनुरोध करता रहा कि आख़िर में हारकर स्त्रुच्कोव ने बड़बड़ाते हुए टोपी उठा ली।

फूलों को नोचती हुई ज़ीनोच्का बरामदे में इंतज़ार कर रही थी; उसके नन्हे-से पैरों के पास फ़र्श पर फूलों के डंठल और पंखुरियां छिटकी

पड़ी थीं। अलेक्सेई की पदचाप सुनकर वह आतुरता से आगे बढ़ी, मगर यह देखकर कि वह अकेला नहीं है, वह यकायक मुरझा गयी।

"चलो चलें, हम लोग जंगल से विदाई की अंतिम बातें करने के लिए निकलें," अलेक्सेई ने उदासीनता के स्वर में प्रस्ताव रखा।

उन्होंने बांह में बांह डाली और लाइम वृक्षों के सायादार रास्ते पर ख़ामोशी के साथ बढ़ने लगे। उनके पैरों तले, चांदनी से आलोकित धरती पर कोयले जैसी काली छायाएं उनके पीछे-पीछे चलने लगीं, और जहां-तहां शरद की पहली पत्तियां बिखरे हुए सिक्कों की भांति चमक रही थीं। वे पार्क के अंत तक गये, उससे निकल गये और रुपहली, नम घास पर टहलते हुए झील की तरफ़ बढ़े। झील के शून्य के ऊपर रोएंदार कुहरे का कम्बल पड़ा हुआ था जो भेड़ की सफ़ेद खाल जैसा लग रहा था। कुहरा धरती से चिपका हुआ था, और उन लोगों की कमर छूता हुआ, संचरण कर रहा था और ठंडी चांदनी में रहस्यपूर्ण ढंग से चमक रहा था। हवा नम थी और शरद की संतोषप्रद सुगंध से परिपूर्ण थी। वातावरण ठंडा था और किसी क्षण बहुत सर्दी मालूम होती तो दूसरे क्षण कुछ उष्णता और सघनता महसूस होती, मानो इस कुहरे की झील में अपनी ही उष्ण और शीत धाराएं हैं।

"ऐसा लगता है मानो हम दैत्य हों और बादलों के ऊपर चल रहे हों, क्यों?" अलेक्सेई ने बेचैनी से लड़की की नन्हीं-सी पुष्ट बांह को अपनी कुहनी से मजबूती से सटी महसूस कर व्यग्रता से कहा।

"दैत्य नहीं, मूर्ख। हम अपने पैर भिगो लेंगे और यात्रा के लिए सर्दी पकड़ लेंगे," स्त्रुच्कोव गुर्राया जो अपने ही शोकपूर्ण विचारों में लीन जान पड़ता था।

"इस मामले में मुझे तुम्हारे मुक़ाबले फ़ायदा है। मेरे पैर ही नहीं हैं, जो भीगें, और इसलिए मैं सर्दी नहीं पकड़ सकता," अलेक्सेई ने हंसते हुए कहा।

"आओ, चले आओ! उधर इस समय बड़ा सुन्दर दृश्य होगा," ज़ीनोच्का ने उन्हें कुहरे से आच्छादित झील की ओर खींचते हुए अनुरोध किया।

वे लोग भ्रमित होकर लगभग पानी में पहुंच गये और जब ठीक अपने

पैरों के नीचे उन्हें कुहरे के पार यकायक उसकी कालो-सी झलक दिखाई दी तो आश्चर्यवश वे पीछे हट गये। पास में एक छोटा-सा घाट था और उससे आगे एक डोंगी की काली छायाकृति दिखाई दे रही थी। ज़ीनोच्का कुहरे में विलीन हो गयी और पतवारों का जोड़ा लेकर लौटी। उन्होंने डांडे का कांटा लगाया, अलेक्सेई ने पतवारें संभाल लीं और ज़ीनोच्का तथा मेजर डोंगी के पिछले हिस्से में बैठ गये। डोंगी धीरे-धीरे निश्चल जल पर फिसलने लगी, कभी वह कुहरे में डूब जाती और खुले पानी में प्रगट हो जाती, जिसकी काली-सी पालिशदार सतह पर चांदनी ने उदारतापूर्वक कलई कर दी थी। कोई नहीं बोला, सभी अपने-अपने विचारों में लीन थे। रात शान्त थी, पतवारों से पानी पारे की बूंदों की तरह टपक रहा था और वैसा ही बोझिल मालूम होता था। पतवारों के कांटे हल्के से खटक रहे थे, कहीं कोई पक्षी कर्कश स्वर में गा रहा था और दूर से पानी के विस्तार को पार करते हुए उल्लू का वेदनापूर्ण स्वर आ रहा था, जो कठिनाई से ही कर्णगोचर था।

"यह मुश्किल से ही विश्वास किया जा सकता है कि कहीं पारा ही में घमासान युद्ध छिड़ा हुआ है," ज़ीनोच्का ने आहिस्ते से कहा। "क्यों, साथियो, तुम लोग मुझे चिट्ठियां लिखा करोगे, क्यों, अलेक्सेई पेत्रोविच, तुम लिखोगे या नहीं? छोटा-सा संदेश ही सही। मैं तुम्हें साथ ले जाने के लिए कुछ पते लिखे कार्ड दे दूंगी, क्या दे दूं? तुम लोग लिख देना: 'ज़िंदा और सकुशल हूं। अभिवादन,' और डाक के किसी डिब्बे में डाल देना, ठीक? .."

"मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि जाते हुए मुझे कितना आनंद हो रहा है। काफ़ी झख मार ली। काम पर चलो! काम पर चलो!" स्त्रुच्कोव चिल्ला उठा।

वे फिर ख़ामोश पड़ गये। नन्ही-सी लहरें हल्के से और हौले से नाव के किनारे थपेड़े मार रही थीं, उसकी पेंदी का पानी उनींदा-सा गल-गल कर रहा था और नाव के पिछले हिस्से से टकराकर चमकदार कोण बनाता फैल जाता था। कुहरा छिन्न-भिन्न हो गया और एक उद्विग्न, नीली-सी चंद्र-किरण किनारे से पानी के आर-पार फैल गयी और कुमुदिनी की पत्तियों के चकत्तों को आलोक से भर गयी।

"आओ, हम लोग गायें," ज़ीनोच्का ने सुझाव दिया और जवाब का इंतज़ार किये बिना उसने एश वृक्ष सम्बन्धी गीत शुरू कर दिया।

उसने पहला बंद शोकार्त्त स्वर में अकेले ही गाया, मगर अगली पंक्ति को मेजर स्त्रुच्कोव ने मनहर, गहरे स्वर में पकड़ लिया। इसके पहले उसने कभी न गाया था और अलेक्सेई ने कभी यह न सोचा था कि उसका स्वर इतना सुन्दर और मधुर है। इस गीत की वेदना और भावावेगपूर्ण लहरियां समतल जल के ऊपर घुमड़ने लगीं; दो ताज़े स्वर, एक नर और दूसरा नारी का, अपनी उत्कंठाओं को व्यक्त करने में एक दूसरे का साथ देने लगे। अलेक्सेई को अपने कमरे की खिड़की के बाहर खड़े हुए, बेरी के एक मात्र गुच्छे समेत कृशकाय एश वृक्ष और भूमिगत ग्राम की बड़ी-बड़ी आंखोंवाली वारवारा की याद आ गयी। फिर हर वस्तु विलीन हो गयी–झील, मनहर चांदनी, नाव और गायक–और रुपहले कुहरे में उसने कमीशिन की लड़की देखी, मगर वह ओल्गा नहीं जो बाबूना पल्लवित मैदान में फ़ोटो में बैठी थी, एक दूसरी ही अपरिचित लड़की देखी जो थकी हुई दिखाई दे रही थी, जिसके धूप से तप्त कपोलों पर स्याह धब्बे थे, होंठ फटे हुए थे, फ़ौजी वर्दी पर पसीने के दाग़ थे और स्तालिनग्राद के पास स्तेपी में कहीं फावड़ा चला रही थी।

उसने पतवारें छोड़ दीं और गीत का आख़िरी बंद उन तीनों ने मिलकर गाया।

६

अगले दिन बड़े भोर ही स्वास्थ्य-गृह के द्वार से मोटर-बसों की एक लम्बी पांत गुज़रने लगी। वे लोग जब पोर्च के पास ही थे, तभी मेजर स्त्रुच्कोव ने, जो एक बस के फ़ुटबोर्ड पर बैठा था, एश वृक्ष के विषय में अपने परमप्रिय गीत की लहरी छेड़ दी थी। अन्य बसों में बैठे लोगों ने गीत की कड़ियां पकड़ ली थीं और विदाई के समय के अभिवादन, मंगलकामनाएं, बरनाज़ियन के हंसी-मज़ाक़, बस की खिड़की में से ज़ीनोच्का अलेक्सेई को विदाई के समय जो सलाहें दे रही थी, वे सब बातें इस पुराने गीत के सीधे-सादे मगर अर्थपूर्ण शब्दों में डूब गयीं। उसे बहुत दिनों पहले भुला

दिया गया था, मगर अब फिर उसका पुनरुद्धार हो गया था और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के काल में वह लोकप्रिय हो गया था।

इस तरह बसें अपने साथ इस मधुर स्वर की गहरी, सुरीली लहरियां लेकर दरवाज़े से गुज़र गयीं। जब गीत समाप्त हो गया तो गायक मौन हो गये और जब तक नगर के बाहरी क्षेत्र में स्थित फ़ैक्टरियां और श्रमिक बस्तियां खिड़कियों के बाहर न दिखाई देने लगीं, तब तक कोई एक शब्द भी न बोला।

मेजर स्त्रुच्कोव अभी भी अपनी बस के फ़ुटबोर्ड पर अपने कोट के बटन खोले हुए बैठा था और मुसकुराता हुआ दृश्य को सराह रहा था। वह सबसे अधिक प्रसन्नचित्त था। यह चिरातन यायावर सिपाही फिर चल पड़ा था, एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते हुए, और उसे अपनी सजीवता का बोध होने लगा था। वह वायुसेना की किसी टुकड़ी में भेजा जा रहा था, इसका अभी पता नहीं था कि किसमें, लेकिन कोई भी हो, उसके लिए वह घर की ही तरह होगा। मेरेस्येव मौन और उद्विग्न बैठा था। वह महसूस कर रहा था कि अभी आगे उसे और भी विकटतम कठिनाइयों का सामना करना होगा; और कौन कह सकता है कि वह उन बाधाओं को पार कर पायेगा या नहीं?

बस से सीधे ही, कहीं और गये बिना, रात के रहने तक के लिए कोई ठिकाना बनाने का कष्ट दिये बग़ैर, वह मिरोवोल्स्की से भेंट करने चला गया। यहां उसे अपने दुर्भाग्य की पहली चोट का सामना करना पड़ा। उसका शुभचिन्तक, जिसे वह इतनी कठिनाई से जीत सका था, कहीं बाहर गया हुआ था, वह किसी फ़ौरी सरकारी कार्य में विमान-यात्रा पर चला गया था और कुछ दिनों न आनेवाला था। जिस अफ़सर से अलेक्सेई की बातचीत हुई, उसने उससे बाज़ाब्ता दरख़ास्त देने को कहा। वह वहीं खिड़की की दहलीज़ के पास बैठ गया, एक दरख़ास्त लिख डाली और कृशकाय, नाटे-से, थकी आंखोंवाले अफ़सर के हाथ में थमा दी। अफ़सर ने वायदा किया कि वह जितना भी कर सकता है, उतना ज़रूर करेगा और अलेक्सेई को दो दिन के अन्दर फिर आने की सलाह दी। अलेक्सेई ने तर्क किया, प्रार्थना की, धमकी तक दी, मगर सब निष्फल हुआ। अफ़सर ने अपनी छोटी-सी हड्डीदार मुट्ठी अपने वक्ष से दबाते हुए

कहा कि नियम ही ऐसे हैं और उनका उल्लंघन करने का उसे कोई अधिकार नहीं है। बहुत सम्भव है कि इस मामले पर शीघ्र कार्रवाई करने का उसे कोई अधिकार न हो। मेरेस्येव असंतोष प्रगट करता चला गया।

और इस प्रकार उसका एक सैनिक विभाग से दूसरे विभाग तक भटकना शुरू हुआ। उसकी कठिनाई इस बात से और भी बढ़ गयी कि जिस जल्दी में उसे अस्पताल लाया गया था, उसके कारण उसे वर्दी, राशन और भत्ते के काग़ज़ात नहीं दिलाये गये थे और इन्हें प्राप्त करने के लिए अब तक उसने कोई कष्ट भी नहीं किया था। उसके पास छुट्टी तक का प्रमाणपत्र नहीं था यद्यपि इस विभाग के कृपालु और अनुग्रही अफ़सर ने उसके रेजीमेंट हेडक्वार्टर को फ़ोन करने का और उनसे आवश्यक काग़ज़ात फ़ौरन भेजने का अनुरोध करने का वायदा किया था, फिर भी मेरेस्येव जानता था कि हर बात कितने धीरे होती है और समझ गया कि कुछ समय उसे रुपये-पैसे बिना, निवास-स्थान बिना, और राशन बिना, इस युद्धग्रस्त मास्को में रहना पड़ेगा जहां रोटी का हर किलोग्राम और शक्कर का हर ग्राम अत्यन्त बहुमूल्य था।

उसने अन्यूता को उस अस्पताल में फ़ोन किया जहां वह काम करती थी। उसके स्वर से स्पष्ट था कि वह किसी बात से चिन्तित या व्यस्त थी, मगर वह बड़ी प्रसन्न थी कि वह आ गया है और ज़ोर देने लगी कि इन चंद दिनों तक अलेक्सेई उसी के यहां ठहरे इसलिए और भी कि उसे अस्पताल में फ़ौजी स्थिति पर होना पड़ता है और उसका मकान अलेक्सेई स्वयं अपने उपयोग में रख सकता है।

स्वास्थ्य-गृह से जानेवाले प्रत्येक मरीज़ को यात्रा के लिए पांच दिन का सूखा राशन दिया गया था, और इसलिए दोबारा सोचे बिना अलेक्सेई उस सुपरिचित टूटे-फूटे छोटे-से घर की ओर रवाना हो गया जो ऊंची-ऊंची नयी इमारतों के पिछवाड़ों के पीछे एक बाड़े के बीच में स्थित था। सिर पर छप्पर हो गया था और खाने को कुछ भोजन भी था, इसलिए अब वह प्रतीक्षा कर सकता था। वह सुपरिचित अंधकारपूर्ण घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ गया जहां अभी भी बिल्लियों, मिट्टी के तेल और कपड़े धोने की नमी की गंध आ रही थी, उसने अंधेरे में दरवाज़ा टटोला और ज़ोर से दस्तक दी।

दरवाज़ा खुला मगर दो मज़बूत ज़ंजीरें पड़ी होने के कारण वह अधखुला रह गया। नाटी-सी बुढ़िया ने तंग दरार में से कृशकाय चेहरा निकाला, अलेक्सेई की ओर संदेह की दृष्टि से, सूक्ष्म भाव से देखा और पूछा कि वह कौन है, किसे चाहता है और उसका नाम क्या है। इतने होने के बाद कहीं ज़ंजीरें खड़कीं और दरवाज़ा पूरी तरह खुल गया।

"अन्यूता घर पर नहीं हैं, लेकिन उन्होंने आपके बारे में फ़ोन कर दिया था। अन्दर आइये और मैं आपको उनका कमरा बता दूंगी," बुढ़िया ने उसका चेहरा, उसकी वर्दी और विशेषकर उसके सामान के बैग की अपनी मंद और धुंधली आंखों से परीक्षा करते हुए कहा। "शायद आपको गर्म पानी की ज़रूरत होगी? रसोईघर में अन्यूता का मिट्टी के तेलवाला स्टोव रखा है, मैं उबाले देती हूं..."

अलेक्सेई ने बिना किसी हिचक के इस सुपरिचित कमरे में प्रवेश किया। स्पष्ट था कि कहीं भी घर जैसा आराम महसूस करने की सिपाहियाना क्षमता, जो मेजर स्त्रुच्कोव में विशेष सीमा तक थी, उसमें भी प्रगट होने लगी थी। सुपरिचित-सी पुरानी लकड़ी, धूल और नेफ़थलीन की गंध से, इन सभी चीज़ों की गंध से जिन चीज़ों ने इधर दशाब्दियों तक बख़ूबी काम दिया था, उसमें भावावेग तक उत्पन्न हो गया, मानो कई वर्ष भटकने के बाद अब वह अपने ही घर लौट आया हो।

बुढ़िया उसके पीछे-पीछे घूमती रही और बराबर बतियाती रही, उसने नानबाई की दूकान पर लम्बी पांतों की चर्चा की, जहां अगर क़िस्मत बुलंद हो, तो राशन कार्ड पर राई की पावरोटी के बजाय सफ़ेद रोल्स मिल जाती हैं, उसने एक बड़े फ़ौजी अफ़सर का ज़िक्र किया जिसको उसने ट्रामगाड़ी में कहते सुना था कि जर्मनों को स्तालिनग्राद में लोहे के चने चबाने पड़ रहे हैं और इस पर हिटलर इतना पागल हो उठा कि उसे पागलख़ाने में रख देना पड़ा और आजकल तो उसका जुड़वां है जो जर्मनी पर हुकूमत कर रहा है, उसने अपनी पड़ोसिन अलेव्तीना अरकादियेव्ना के बारे में बताया जिसे दरअसल मज़दूरों का राशन कार्ड पाने का अधिकार नहीं था, और उसने बढ़िया मीनाकारी किया हुआ दूधदान मांग लिया था और आज तक नहीं लौटाया, अन्यूता के माता-पिता के बारे में भी उसने बताया, जो बड़े सज्जन व्यक्ति थे और विस्थापितों के साथ चले

गये थे, और स्वयं अन्यूता की भी चर्चा की कि वह बड़ी सुशील, शान्त और सच्चरित्र लड़की है, दूसरी लड़कियों की तरह नहीं जो, भगवान जाने, चाहे जिस-तिस के साथ मौज से डोलती-फिरती हैं, और वह किसी भी ग़ैर आदमी को घर नहीं लाती। अंत में उसने पूछा:

"क्या तुम उसके वही नौजवान, टैंकची हो, सोवियत संघ के वीर?"

"नहीं, मैं तो साधारण हवाबाज हूं," मेरेस्येव ने जवाब दिया और जब उसने बूढ़ी के अभिव्यंजनाशील चेहरे पर विस्मय, पीड़ा, अविश्वास और क्रोध के भाव आते-जाते देखे, जो एक साथ ही अभिव्यक्त हो उठे थे, तो वह अपनी मुसकान न दबा सका।

उसने होंठ भींच लिये, क्रुद्ध गति से दरवाज़ा बंद किया और बाहर गलियारे में जाकर कहा – पहले जिस तरह स्निग्ध स्वर में बोली थी, अब यह स्वर नहीं था:

"अच्छा, अगर आपको गर्म पानी की ज़रूरत हो तो मिट्टी के तेलवाले नीले स्टोव पर आप ख़ुद उबाल लीजियेगा।"

अन्यूता अस्पताल में बहुत व्यस्त रहा करती होगी। शरद के इस मनहूस दिन को मकान बिल्कुल उपेक्षित दिख रहा था। हर चीज़ पर धूल की मोटी तह थी और खिड़की की दहलीज़ पर और तिपाइयों पर रखे ग़मलों के फूल पीले पड़ गये थे और मुरझा गये थे, मानो उनमें बहुत दिनों से पानी दिया ही न गया हो। मेज़ पर रोटी के टुकड़े पड़े थे जो अभी सड़े हरे दिखाई देते थे और केतली कभी हटायी ही न गयी थी। पियानो भी धूल की नर्म, रुपहली तह से ढंका था और एक बड़ी-सी मक्खी, मानो दुर्गंधित हवा में उसका दम घुट रहा हो, निराश स्वर में भनभना रही थी और एक खिड़की के पीले से धुंधले शीशे से अपने को बार बार टकरा रही थी।

मेरेस्येव ने खिड़कियां खोल दीं, जहां से एक ढलवां बाग़ीचा दिखाई देता था जिसे अब साग-सब्ज़ी का खेत बना दिया गया था। कमरे में ताज़ी हवा के झोंके ने प्रवेश किया और एकत्र धूल को इतनी ज़ोर से उड़ा गया कि कुहरा-सा छा गया। इस समय अलेक्सेई के दिमाग़ में एक ख़ुशनुमा ख़याल पैदा हुआ... कमरे को साफ़ कर दिया जाये और अगर अन्यूता अस्पताल से किसी तरह छुट्टी पाकर शाम को उससे मिलने चली

आये, तो उसे आनन्द और विस्मय से विभोर कर दिया जाये। उस बूढ़ी से बाल्टी, चिथड़ा और झाड़ू मांग ली और वह काम में जुट गया जिसे आदमी सदियों से हिक़ारत की नज़र से देखता रहा है। कोई डेढ़ घंटे तक वह रगड़ता-खरोंचता रहा और धूल साफ़ करता रहा मगर इस काम में पूरी तरह आनन्द लेता रहा।

शाम को वह उस पुल तक गया, जहां इस घर की ओर आते समय उसने लड़कियों को बड़े-बड़े, खिले हुए शरदकालीन गेंदे के रंगबिरंगे फूल बेचते देखा था। उसने एक गुच्छा ख़रीदा और पियानो तथा मेज़ पर रखे गुलदानों में उन्हें सजा दिया और हरी आरामकुर्सी में आराम से बैठ गया। सारे शरीर में मीठी थकान की अनुभूतिवश वह भोजन की गंध को लालसापूर्वक सूंघने लगा जिसे रसोईघर में बुढ़िया उसके द्वारा लाये गये सामान से पका रही थी।

लेकिन अन्यूता इतनी थकी हुई आयी कि मुश्किल से नमस्कार भर करके वह कोच पर लुढ़क गयी और यह भी ध्यान नहीं दे सकी कि कमरा कितना बढ़िया और साफ़-सुथरा है। जब वह थोड़ी देर आराम कर चुकी और कुछ पानी पी डाला, तब जाकर उस आश्चर्य से चारों तरफ़ नज़र डाली और समझ पायी कि क्या हो गया है। थकी-सी मुस्कान लाकर और कृतज्ञतापूर्वक मेरेस्येव की कुहनी दबाते हुए वह बोली :

"कोई ताज्जुब नहीं कि ग्रिगोरी तुम्हें इतना प्यार करता है कि मुझे ईर्ष्या होने लगती है। क्या यह तुमने किया है, अलेक्सेई, ख़ुद तुमने? तुम बड़े बढ़िया आदमी हो। ग्रिगोरी का कोई समाचार मिला तुम्हें? अभी कुछ दिन पहले मुझे एक चिट्ठी मिली थी, छोटी-सी, दो चार पंक्ति की। वह स्तालिनग्राद में है और जानते हो, यह मूर्खानंद क्या कर रहा है? दाढ़ी बढ़ा रहा है! ऐसे ज़माने में क्या बढ़िया काम संभाला है! वहां बड़ा ख़तरा है, क्या नहीं? बताओ, अलेक्सेई, ख़तरा तो नहीं है? स्तालिनग्राद के बारे में लोग ऐसी भयानक बातें करते हैं।"

"वहां ज़बर्दस्त लड़ाई चल रही है।"

अलेक्सेई ने भौंहें चढ़ायीं और आह भरी। उसे उन सबसे ईर्ष्या थी, जो वहां, वोल्गा पर हैं, जहां ऐसा घमासान संग्राम छिड़ा हुआ है, जिसकी चर्चा हर कोई कर रहा है।

वे सारी शाम बातें करते रहे। डिब्बाबंद गोश्त के भोजन का उन्होंने पूरी तरह आनन्द लिया, और चूंकि दूसरा कमरा बंद था, इसलिए वे साथियों की तरह एक ही कमरे में लेट रहे—अन्यूता चारपाई पर और अलेक्सेई कोच पर—और फ़ौरन जवानी की गहरी नींद में खो गये।

जब अलेक्सेई जागा और उठकर कोच पर बैठ गया तब तक कमरे में सूरज की धूल भरी किरणें तिरछी पड़ने लगी थीं। अन्यूता चली गयी थी। उसने अपने कोच की पीठ पर एक पुर्जा लगा देखी: "अस्पताल के लिए जल्दी ही रवाना हो रही हूं। मेज पर चाय है और अलमारी में पावरोटी, मेरे पास शक्कर नहीं है। शनिवार से पहले छुट्टी न पा सकूंगी। अ०।"

इन दिनों अलेक्सेई घर से कभी ही बाहर निकला होगा। काम कुछ न होने के कारण उसने बुढ़िया का प्राइमस स्टोव, मिट्टी के तेल का स्टोव, कढ़ाई और बिजली की स्विचें ठीक कर दीं, और उसकी प्रार्थना पर उसने उस दुष्ट अलेव्तीना अरकादियेव्ना का कॉफ़ी पीसने का यंत्र भी ठीक कर दिया, जिसने मीनाकारी का दूधदान अब तक नहीं लौटाया था। इस प्रकार वह उस बुढ़िया की नजरों में भला बन गया और उसके पति ने भी भला मान लिया जो इमारती ट्रस्ट में काम करता था, वह हवाई बचाव में भी सक्रिय था और कई कई रात और दिन घर से ग़ायब रहता था। बूढ़े पति-पत्नी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सचमुच टैंक-चालक तो बढ़िया आदमी होते ही हैं, मगर हवाबाज़ भी उनसे किसी क़दर कम नहीं होते और कहीं उनसे घनिष्ठता बढ़ जाये तब तो वे बड़े ही गम्भीर, घरबारप्रेमी जीव निकलते हैं, हालांकि उनका पेशा हवाई होता है।

आख़िर वह दिन आ गया जब अलेक्सेई को अपना फ़ैसला लेने नियुक्ति-विभाग जाना था। उसकी पिछली रात उसने आंखें खोले हुए कोच पर ही काट दी थी। सुबह वह उठा, दाढ़ी बनायी, हाथ-मुंह धो लिया, ठीक वक़्त पर दफ़्तर पहुंच गया और जो उसके भाग्य का फ़ैसला करनेवाला था, प्रशासन विभाग के उस मेजर के पास पहुंचनेवाला वह पहला व्यक्ति था। मेजर को देखते ही न जाने क्यों उसे घृणा हो गयी। अलेक्सेई की ओर आंखें उठाये बिना, मानो उसे आते उसने देखा ही न हो, वह मेज़ पर अपने काम में व्यस्त रहा—फ़ाइलें निकालीं और लगायीं, विभिन्न लोगों को फ़ोन किया, क्लर्कों को बड़ी देर तक समझाता रहा कि फ़ाइलों पर

नम्बर किस तरह लगाये जाते हैं, और फिर बाहर चला गया और बड़ी देर तक न आया। इस समय तक मेरेस्येव उसके लम्बे चेहरे, लम्बी नाक, सफ़ाचट गालों, दमकते हुए होंठों और ढलवां माथे से, जो अदृश्य भाव से चमकती हुई गंजी खोपड़ी से जाकर मिल गया था, पूरी तरह नफ़रत करने लगा था। अंततः मेजर वापस लौटा, बैठ गया, अपने कलेण्डर का पन्ना पलटा और तब जाकर अलेक्सेई की ओर ध्यान दिया।

"आप मुझसे मिलना चाहते हैं, कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट?" उसने रोबदार, आत्मविश्वासी, भारी आवाज़ में पूछा।

मेरेस्येव ने उसे अपना काम बता दिया। मेजर ने क्लर्क से अलेक्सेई के काग़ज़ात लाने के लिए कहा और उनका इंतज़ार करते हुए वह टांगें फैलाकर बैठ गया और बड़ी ही तल्लीनता से अपने दांतों को दांत-खोदनी से कुरेदने लगा, जिसे शालीनतावश वह अपनी हथेली से ढंके हुए था। जब काग़ज़ात आ गये तो वह मेरेस्येव के 'केस' पर ग़ौर करने लगा। यकायक उसने हाथ हिलाया और एक कुर्सी की तरफ़ इशारा करते हुए तशरीफ़ रखने का अनुरोध किया; स्पष्ट था कि वह उस हिस्से को पढ़ गया था जहां उसके पैर कटे होने की बात लिखी थी। उसने पढ़ना जारी रखा और आख़िरी पृष्ठ ख़त्म करने के बाद आंखें ऊपर उठायीं और पूछने लगा:

"तो आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"मैं किसी लड़ाकू विमान रेजीमेंट के अंदर नियुक्ति चाहता हूं।"

मेजर बोझिल ढंग से कुर्सी में पीछे झुक गया और इस हवाबाज़ को ओर आश्चर्य से देखने लगा जो अभी भी उसके सामने खड़ा था, और फिर उसके लिए ख़ुद अपने हाथ से एक कुर्सी खींच दी। उसकी घनी भौंहें उसके चिकने और चमकदार माथे पर और उंचे चढ़ गयीं। उसने कहा:

"लेकिन आप विमान नहीं चला सकते।"

"चला सकता हूं और चलाऊंगा! आप परीक्षा के लिए मुझे किसी ट्रेनिंग स्कूल में भेज दीजिये," मेरेस्येव ने लगभग चीख़ते हुए कहा और उसके स्वर से ऐसा अदम्य संकल्प व्यक्त हुआ कि कमरे में अन्य मेज़ों के अफ़सरों ने जिज्ञासापूर्वक ऊपर देखा और हैरान रह गये कि यह ताम्रवर्ण, सुन्दर लेफ़्टीनेंट किस बात को इतने हठपूर्वक पूछ रहा है।

मेजर को यक़ीन हो गया था कि सामने जो व्यक्ति खड़ा है, वह या तो हठधर्मी है या पागल। अलेक्सेई के क्रुद्ध चेहरे और कौंधती हुई "जंगली" आंखों की ओर कनखियों से नज़र डालकर उसने विनम्र स्वर में बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा:

"लेकिन देखिए! पैरों के बिना हवाई जहाज़ चलाना कैसे मुमकिन है? और आप ही सोचिये, आपको कौन इसकी इजाज़त देगा? यह बिल्कुल हास्यास्पद बात है! पहले किसी ने ऐसा नहीं किया!"

"पहले किसी ने नहीं किया। ख़ैर, तो अब कर दिखाया जायेगा," मेरेस्येव ने हठधर्मी से जवाब दिया। उसने अपनी जेब से नोटबुक निकाली, उससे पत्रिका की कतरन निकाली, उसपर चढ़ी हुई सेलाफ़ोन उतारी और उसे मेजर के सामने मेज़ पर रख दिया।

अन्य मेज़ों पर बैठे हुए अफ़सरों ने अपना काम बंद कर दिया और ध्यान से इस वार्त्तालाप को सुनने लगे। उनमें से एक अपनी जगह से उठा और मेजर के पास पहुंचा, मानो वह किसी काम के बारे में पूछने आया हो, उसने सिगरेट जलाने के लिए माचिस मांगी और मेरेस्येव के चेहरे पर नज़र डाली। मेज़र ने कतरन पर आंखें दौड़ायीं और अंत में कहा:

"हम इसे नहीं मान सकते। यह कोई सरकारी दस्तावेज़ नहीं है। हमारे पास हिदायतें हैं जिनमें वायुसेना के लिए शारीरिक क्षमता की भिन्न-भिन्न श्रेणियों की साफ़-साफ़ व्याख्या दी गयी है। दो पैरों की कौन कहे, अगर दो उंगलियां भी कम होतीं, तो मैं आपको किसी हवाई जहाज़ का चार्ज लेने की इजाज़त न देता। अपनी पत्रिका रख लीजिये, यह कोई सबूत नहीं है। मैं आपके साहस की सराहना करता हूं, पर..."

मेरेस्येव क्रोध से उबल रहा था और उसकी इच्छा हुई कि मेजर की मेज़ से कलमदान उठाये और उसकी गंजी, चमकदार खोपड़ी पर दे मारे। रूंधे हुए स्वर में वह बोला:

"और इसके बारे में आप क्या कहते हैं?"

इतना कहकर उसने अपना आख़िरी पत्ता मेज़ पर रख दिया—यह था प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की का प्रमाणपत्र। मेजर ने संदिग्ध भाव से उसे उठा लिया। वह बाज़ाब्ता था और उसपर फ़ौजी चिकित्सा विभाग की मुहर भी लगी थी, और एक ऐसे सर्जन के दस्तख़त

थे जिसका वायुसेना में बड़ा सम्मान था। मेजर ने प्रमाणपत्र पढ़ा और उसका रुख़ और भी मैत्रीपूर्ण हो गया। सामने खड़ा व्यक्ति पागल नहीं था। यह असाधारण नवयुवक गम्भीरतापूर्वक विमान चलाना चाहता है, हालांकि उसके पैर नहीं हैं। उसने एक संजीदा फ़ौजी सर्जन को, जो काफ़ी अधिकारसम्पन्न है, यह विश्वास दिलाने में सफलता प्राप्त कर ली कि वह उड़ान कर सकता है। मेजर ने निश्वास खींचकर मेरेस्येव के "केस" को उठाकर बगल में रख दिया और कहा:

"मैं कितना ही क्यों न चाहूं, मगर आपके लिए कुछ नहीं कर सकता। प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर जो जी चाहे, लिख सकते हैं, लेकिन हमारे पास स्पष्ट और निश्चित आदेश हैं, जिनका उल्लंघन नहीं होना चाहिए... अगर मैं उनका उल्लंघन करूंगा, तो उसका जवाब कौन देगा? डाक्टर?"

हृष्ट-पुष्ट, आत्मविश्वासी, शान्त और विनम्र अफ़सर की ओर, उसके चुस्त कोट के स्वच्छ कालर की ओर, उसके रोमिल हाथों की ओर और गहराई से कटे हुए बड़े-बड़े भौंड़े नाखूनों की ओर मेरेस्येव ने तीव्र घृणा से दृष्टि डाली। इसे कैसे बताया जाये? क्या वह समझ सकेगा? क्या वह जानता है कि आकाश-युद्ध क्या होता है? शायद उसने अपने जीवन में गोली दग़ने की आवाज़ भी न सुनी हो। पूरी शक्ति से अपने ऊपर क़ाबू पाते हुए उसने मंद स्वर में पूछा:

"तो फिर मैं क्या करूं?"

मेजर ने कंधे उचकाये और जवाब दिया:

"अगर आप ज़ोर देते हैं तो मैं आपको संगठन विभाग के कमीशन के पास भेज सकता हूं। लेकिन मैं पहले से ही चेताये देता हूं कि कोई फल न निकलेगा।"

"भाड़ में जाये वह भी, आप मुझे कमीशन के पास भेजिये!" मेरेस्येव ने कुर्सी में लुढ़ककर हांफते हुए कहा।

इस तरह उसका एक दफ़्तर से दूसरे दफ़्तर भटकना शुरू हुआ। गर्दन तक काम में डूबे हुए थके अफ़सर उसकी बातें सुनते, आश्चर्य और सहानुभूति प्रगट करते और असहाय भाव से कंधे झटका देते। सचमुच, वे क्या करें? उनके पास अपने लिए हिदायतें थीं, बढ़िया हिदायतें, सर्वोच्च कमान से स्वीकृत हिदायतें और फिर इस काम की चिर-प्रतिष्ठित परम्प-

राएं थीं—उसका उल्लंघन वे कैसे करते? और फिर ऐसे साफ़ मामलों में। इस अदम्य पंगु व्यक्ति के लिए, जो युद्ध मोर्चे की पांत में शामिल होने के लिए उत्सुक था, उन सबको हार्दिक अफ़सोस था, और किसी में इतना साहस न था कि उसे साफ़ मना कर देते, इसलिए वे उसे नियुक्ति विभाग से संगठन विभाग और एक मेज से दूसरी मेज़ तक भेजते और हर व्यक्ति दया करके उसे किसी कमीशन के सामने भेज देता। मेरेस्येव अब न तो इनकारों या उपदेशों से और न अपमानजनक सहानुभूति और विनम्रता प्रदर्शनों से विचलित होता था, जिनके विरुद्ध उसकी स्वाभिमानी आत्मा विद्रोह कर रही थी। उसने अपने ऊपर संयम रखना सीख लिया था, विनम्र हो गया था और यद्यपि कभी-कभी उसे एक-एक दिन में दो या तीन जगह से इनकार मिलता था, वह आशा नहीं छोड़ता था। पत्रिका की कतरन, और फ़ौजी सर्जन का प्रमाणपत्र बार-बार जेब से निकाले जाने के कारण इतने जर्जर हो गये थे कि तह की लकीरों पर वे फट गये थे और वह उन्हें तेल सनी काग़ज़ के फ़ीते से चिपकाने के लिए मजबूर हो गया था।

भटकने की मुसीबत इस बात से और गहरी हो गयी थी कि रेजीमेंट से जवाब का इंतज़ार करते हुए वह बिना किसी भत्ते के रह रहा था। स्वास्थ्य-गृह से जो कुछ सामग्री मिली थी, वह साफ़ हो गयी थी। यह ठीक है कि अन्यूता के पड़ोसी बूढ़े पति-पत्नी, जिनका वह घनिष्ठ मित्र हो गया था, जब देखते कि उसने अपने लिए कोई भोजन नहीं पकाया है, तो वे बराबर उसे अपने यहां भोजन के लिए निमंत्रित कर लिया करते, मगर वह जानता था कि खिड़की के बाहर नन्हें-से साग-सब्ज़ी के बाग़ीचे में ये बूढ़े किस तरह जी-तोड़ काम करते हैं, उनके लिए प्याज़ की हर पत्ती और हर गाजर कितनी बहुमूल्य है, और किस तरह हर सुबह वे बिरादराना, छोटे भाई-बहिन की भांति अपनी पावरोटी को आपस में बांटते हैं। इसलिए वह बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उनसे कह देता था कि पकाने की झल्लत से बचने के लिए अब वह कमांडरों के भोजनालय में खाना खाने लगा है।

शनिवार आया, जिस दिन अन्यूता को ड्यूटी से छुट्टी मिलेगी—वैसे वह हर शाम उसको फ़ोन कर बता देता था कि स्थिति असंतोषजनक है। उसने आख़िरी क़दम उठाने का फ़ैसला कर दिया। उसके सामान के बैग में अभी

भी उसके पिता का पुराना, चांदी का सिगरेट केस पड़ा था, जिसपर काले रंग की मीनाकारी से तीन दौड़ते हुए घोड़ों द्वारा खींची जानेवाली स्लेज गाड़ी अंकित थी, और अंदर आलेख था: "रजत-परिणय के अवसर पर मित्रों की ओर से।" अलेक्सेई सिगरेट नहीं पीता था, फिर भी जब वह घर छोड़कर मोर्चे पर आ रहा था, तब मां ने परिवार के इस अमूल्य स्मृति-चिह्न को अपने प्रिय पुत्र की जेब में सरका दिया था, और वह इस भारी, ऊटपटांग चीज़ को हमेशा अपने साथ लिये घूमता रहा और जब उड़ान पर जाता तो उसे "कुशल-मंगल" के लिए अपनी जेब में डाल लेता था। उसने अपने बैग से यह सिगरेट केस खोज निकाला और उसे कमीशन स्टोर ले गया।

एक दुबली-पतली स्त्री ने जिससे नेफ़थलीन की बू आ रही थी, सिगरेट केस को हाथों में उलट पलटकर देखा और अपनी सूखी हुई उंगली से सरनामे की तरफ़ इशारा किया और बोली कि सरनामेवाली चीजें बेचने के लिए नहीं ली जातीं।

"लेकिन मैं उसके लिए बहुत ज्यादा नहीं मांग रहा हूं। तुम ख़ुद बताओ क्या दे सकती हो।"

"नहीं, नहीं। इसके अलावा, कामरेड अफ़सर, जैसे कि मुझे लगा अभी तुम्हारी उमर इतनी बड़ी नहीं है कि तुम अपनी शादी की पचीसवीं वर्षगांठ पर उपहार में लेने के लायक़ हो," नेफ़थलीन की बू मारती हुई स्त्री ने अलेक्सेई को सिर से पैर तक अमित्र बेरंग आंखों से घूरते हुए तीखे स्वर में कहा।

अलेक्सेई का चेहरा लाल हो गया। उसने कौन्टर से सिगरेट केस झपट लिया और दरवाज़े की ओर चल दिया। किसी ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोक लिया और उसके कान के पास शराब में बसी हुई भारी-भारी सांस की गरमी महसूस हुई।

"बड़ी ख़ूबसूरत-सी चीज़ है यह। महंगी तो नहीं?" एक मोटे चेहरेवाले आदमी ने पूछा। उसकी दाढ़ी और मूंछें बढ़ी हुई थीं। उसकी नाक नीली थी। उसने अपना थरथराता हुआ नसदार हाथ सिगरेट केस की तरफ़ बढ़ाया। "ज़ोरदार। चूंकि तुम देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीर हो इसलिए मैं इसके लिए पांच काग़ज़ दे दूंगा।"

अलेक्सेई ने सौदा नहीं किया। उसने पांच सौ रूबल के नोट लिए और कबाड़ की इस बदबूदार दुनिया से निकलकर बाहर साफ़ हवा में आ गया और निकटतम बाज़ार का रास्ता ले लिया। इस पैसे से उसने कुछ गोश्त, बैकफ़ैट, एक पावरोटी, कुछ आलू और प्याज़ ख़रीदा और अजमोद की कुछ जड़ें ख़रीदना भी न भूला। इस तरह लदकर, रास्ते में बैकफ़ैट का एक टुकड़ा चूसते हुए वह "घर" लौटा—उसे वह "घर" कहने लगा था।

जब वह घर वापिस आया तो उसने अपनी ख़रीद का सामान रसोईघर की मेज़ पर रख दिया और बात बनाकर बुढ़िया से कहने लगा:

"मैंने अपना राशन ले डालने का और अपना भोजन ख़ुद पकाने का फ़ैसला कर लिया है। मेस में जैसा खाना मिलता है, वह तो भयंकर होता है।"

उस दिन दोपहर में अन्यूता के लिए शानदार भोजन इंतज़ार कर रहा था। गोश्त के साथ पकाये गये आलुओं का शोरबा जिसकी भूरी-सी सतह पर अजमोद के टुकड़े तैर रहे थे, प्याज़ के साथ भूंजा गया गोश्त और क्रेनबेरी की जेली तक, जिसे बुढ़िया ने आलुओं के मांड से बनाया था। लड़की थकी हुई और पीली-सी घर लौटी। उसने अपने को नहाने के लिए मजबूर किया और बड़ा ज़ोर लगाकर कपड़े बदले। पहली परोस को और फिर दूसरी परोस को जल्दी से खाकर वह पुरानी जादुई कुर्सी पर पांव फैलाकर लेट गयी, जिसने उसे अपनी गुदगुदी भुजाओं में पुराने मित्र की तरह भर लिया और उसके कानों में मधुर स्वप्न फूंकने लगी, और इस तरह वह जेली का इंतज़ार किये बिना, जो पाकशास्त्र के नियमों के अनुसार एक कटोरदान में बंद, नल के बहते पानी के नीचे ठंडी की जा रही थी, वह ऊंघ गयी।

थोड़ी-सी नींद के बाद जब उसने आंखें खोलीं तो उस नन्हें-से, अब साफ़-सुथरे कमरे में, जिसमें आरामदेह और पुराना फ़र्नीचर तमाम भरा पड़ा था, सांझ की धूमिल छायाएं उतर आयी थीं। भोजन की मेज़ पर पुराने लैम्प के साये में अलेक्सेई अपने हाथों के बीच सिर दबाये बैठा था, और उसे इतने ज़ोर से दबा रहा था, मानो वह उसका कचूमर ही निकाल डालना चाहता हो। वह उसका चेहरा न देख सकी, मगर जिस तरह वह

बैठा था, उससे यह स्पष्ट था कि वह निराशा की गहराई में तड़प रहा है, उसके हृदय में इस शक्तिशाली और हठी व्यक्ति के लिए दया का भाव उमड़ पड़ा। वह आहिस्ते से उठ बैठी, उसकी ओर बढ़ी, उसका भारी-भरकम सिर अपने हाथों में लिया और उसके सख्त बालों में अपनी उंगलियां फेरती हुई, सिर थपथपाने लगी। उसने उसका हाथ पकड़ा, उसकी हथेली चूमी, प्रसन्नचित्त मुसकुराते हुए उछल पड़ा और बोला:

"क्रेनबेरी जेली का क्या हाल है? तुम भी क्या बढ़िया हो। मैं तो उसे ठीक ताप पर लाने के लिए नल के नीचे ठंडा करने में जुटा हुआ था, और तुम हो कि गयीं और सो गयीं। रसोइया यह कैसे बरदाश्त करेगा?"

दोनों ने उस "सर्वश्रेष्ठ" जेली की एक-एक प्लेट खायी जो सिरके जैसी खट्टी हो गयी थी; वे लोग आनन्दपूर्वक इधर-उधर की बातें करते रहे, सिर्फ़ दो विषयों – ग्वोज्देव और मेरेस्येव – को छोड़कर, मानो इनपर बात न करने का आपसी समझौता कर लिया हो, और फिर अपने-अपने सोने का प्रबंध करने लग गये। अन्यूता गलियारे में चली गयी और जब फ़र्श पर अलेक्सेई द्वारा कृत्रिम पैरों के रखने की टाप सुनाई दी, तब वह अन्दर आयी, लैम्प बुझा दिया और कपड़े उतारकर लेट गयी। कमरे में अंधेरा था, वे दोनों मौन थे, मगर चादरों की सर्राहट और चारपाई की स्प्रिंगों की चूं-चूं सुनकर वह समझ गयी कि वह जाग रहा है। आख़िरकार अन्यूता ने पूछा:

"नींद नहीं आ रही, अलेक्सेई?"

"नहीं।"

"सोच-विचार कर रहे हो?"

"हां। और तुम?"

"मैं भी ऐसे ही सोच रही हूं।"

वे फिर चुप हो गये। सड़क पर कोई ट्राम-गाड़ी मोड़ पर घूमते वक्त खिच् बोली। एक क्षण उसकी ट्राली से बिजली की चिनगारी कौंध गयी और उस क्षण उन्होंने एक दूसरे का चेहरा देखा। दोनों आंखें फाड़े पड़े थे।

अलेक्सेई ने अपने निष्फल भटकाव के बारे में अन्यूता से एक शब्द भी नहीं कहा था, लेकिन वह भांप गयी थी कि उसका काम बन नहीं रहा है और शायद उसकी अदम्य आत्मा निराशा से जर्जर हो गयी है।

उसके नारी-सुलभ अन्तर्बोध ने उसे बता दिया कि यह आदमी कितनी यातना सह रहा है, लेकिन उसी सहज बोध ने उसे यह भी जता दिया कि इस क्षण यातना कितनी ही कठिन क्यों न हो, सहानुभूति के दो शब्दों से उसकी पीड़ा और बढ़ जायेगी और करुणा दिखाने से उसे ठेस लगेगी।

उधर वह अपने हाथों पर सिर टिकाये पीठ के बल लेटा हुआ था और उस सुन्दर लड़की के बारे में सोच रहा था, जो उसकी अपनी शय्या से कुछ ही क़दम दूर लेटी हुई थी—उसके मित्र की प्रेयसी और एक बढ़िया साथिन। उस तक पहुंचने के लिए उसे अंधेरे कमरे में सिर्फ़ चंद क़दम ही बढ़ाने पड़ेंगे, लेकिन दुनिया में कोई शक्ति उसे ये चंद क़दम उठाने का प्रलोभन नहीं दे सकती, मानो वह लड़की, जिसे वह बहुत थोड़ा जानता था, मगर जिसने उसे शरण दे रखी थी, उसकी अपनी बहन हो। मेजर स्त्रुच्कोव शायद उसका मज़ाक़ बनाये, और अगर उसे यह बात बतायी जाये तो शायद विश्वास भी न करे। लेकिन कौन कह सकता है? शायद, अब वह उसे सबसे अधिक अच्छी तरह समझ सकेगा... और अन्यूता कितनी बढ़िया लड़की है! बेचारी, कितनी थक जाती है, और फिर भी उस सदर अस्पताल में अपने काम के प्रति उसमें कितना अधिक उत्साह रहता है!

"अलेक्सेई!" अन्यूता ने धीमे से पुकारा।

मेरेस्येव की कोच से नियमित सांस लेने की ध्वनि आ रही थी। विमान-चालक सो गया था। लड़की चारपाई से उठी, आहिस्ते से क़दम बढ़ाती हुई उसकी चारपाई तक पहुंची, उसका तकिया सीधा किया, और इस प्रकार उसके चारों तरफ़ कम्बल ठीक से लपेट दिया मानो वह बच्चा हो।

७

मेरेस्येव को कमीशन ने सबसे पहले अन्दर बुलाया। भारी-भरकम, स्थूलकाय प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर, जो अपने कार्य से वापस लौट आये थे, फिर अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अलेक्सेई को फ़ौरन पहचान लिया और उसका स्वागत करने के लिए वे कुर्सी छोड़कर उठ तक बैठे।

"वे लोग तुम्हें स्वीकार नहीं करते, एह?" उन्होंने उदार और

सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा, "हां, तुम्हारा मामला भी कठिन है। तुम्हें क़ानून की सीमाएं पार करना है और यह कर सकना आसान नहीं होता।"

कमीशन ने अलेक्सेई की परीक्षा करने का कष्ट नहीं किया। उसकी दरख़ास्त पर फ़ौजी सर्जन ने लाल पेन्सिल से लिख दिया: "नियुक्ति-विभाग। मेरी राय में प्रार्थी को वायुसेना ट्रेनिंग रेजीमेंट में भेजा जा सकते हैं।" इस काग़ज़ को लेकर अलेक्सेई सीधा नियुक्ति-विभाग के प्रधान के पास पहुंचा। इस जनरल से उसे मिलने की इजाज़त नहीं दी गयी। अलेक्सेई क्रोध से भड़क उठनेवाला ही था, मगर जनरल के एजीटांट, एक साफ़-सुथरे नौजवान कप्तान का चेहरा, जिसपर छोटी-सी काली मूंछें थीं, इतना प्रसन्नचित्त, उदार और मैत्रीपूर्ण था कि वह उसके ही पास बैठ गया और उसको अपनी कहानी की एक-एक बात जिस तरह बता डाली, उससे वह स्वयं ही चकित रह गया। कहानी में बीच-बीच में फ़ोन से व्यवधान पड़ता था, जब तब कप्तान को उठकर अपने प्रधान के दफ़्तर तक जाना पड़ता था, मगर हर बार लौटकर वह फिर अलेक्सेई के सामने बैठ जाता और अपनी नादान, बचकानी आंखों से, जिनसे कौतुक और सराहना, दोनों ही तथा अविश्वास भी, अभिव्यक्त हो उठता था, वह अलेक्सेई की ओर निहारता शीघ्रतापूर्वक कह बैठता:

"हां, जारी रखिए, उसके बाद क्या हुआ?" या यकायक वह उसकी कहानी को विस्मयपूर्वक टोक देता: "क्या यह सच है? आप क़सम खा सकते हैं कि यह सच है? अच्छा, अच्छा!"

जब अलेक्सेई ने उसे एक दफ़्तर से दूसरे दफ़्तर भटकते फिरने की बात सुनाई तो कप्तान, जो जवान दिखने के बावजूद अफ़सरी मशीन की बारीकियों से भली भांति परिचित मालूम होता था, क्रोधपूर्वक बोला:

"सब शैतान हैं! आपको इस तरह खदेड़ने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है! आप बड़े शानदार, एक... सचमुच मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे कहूं... आप असाधारण व्यक्ति हैं!.. लेकिन, अंततः वे भी सही थे: बिना पैरों के आदमी उड़ान नहीं कर सकते।"

"लेकिन वे करते हैं। इसे देखिए..." और मेरेस्येव ने उसे पत्रिका की वही कतरन, फ़ौजी सर्जन की राय और उसे नियुक्ति-विभाग भेजने के आदेश का प्रपत्र दिखाया।

"लेकिन पैरों के बिना ग्राप उड़ान कैसे करेंगे? ग्राप भी बड़े मजाक़िया हैं। ग्राप कहावत जानते ही होंगे, 'बिना पांव का ग्रादमी नाच न पाये।'"

कोई ग्रौर कहता तो मेरेस्येव इसे ग्रपना ग्रपमान समझता ग्रौर शायद ग्राग-बबूला हो जाता ग्रौर कोई ग्रसभ्य शब्द कह बैठता, लेकिन कप्तान का चेहरा इतनी सद्भावना से ग्रालोकित हो रहा था कि ग्रलेक्सेई उछल पड़ा ग्रौर लड़कों जैसे उत्साह से बोला:

"क्या कहते हैं जनाब? ग्रच्छा, देखिये?" ग्रौर इतना कहकर वह प्रतीक्षा-कक्ष के बीच में ही तेज़ गति से नाचने लगा।

कप्तान उसे थोड़ी देर तक सराहना के भाव से निहारता रहा ग्रौर फिर उछल पड़ा ग्रौर बिना एक शब्द कहे, ग्रलेक्सेई के काग़ज़ात लेकर प्रधान के दफ़्तर के दरवाजे के पीछे ग़ायब हो गया।

वह वहां बड़ी देर तक रहा। दफ़्तर से ग्रानेवाली बातचीत के दबे स्वरों को सुनकर ग्रलेक्सेई ने ग्रपने सारे शरीर को तन जाते महसूस किया ग्रौर उसका दिल इतनी तेजी ग्रौर पीड़ा से धड़कने लगा, मानो वह किसी तीव्रगामी विमान में ग़ोता लगा रहा हो।

कप्तान दफ़्तर से मुसकुराता ग्रौर प्रसन्नचित निकला।

"हां," उसने कहा, "वास्तव में जनरल तो ग्रापके उड़ाकुग्रों में शामिल किये जाने की बात सुनने के लिए भी तैयार न थे, लेकिन उन्होंने यह लिख दिया है: 'प्रार्थी को तनख़ा या राशन में कटौती बिना ए० एस० बी० में सेवा करने के लिए नियुक्त किया जाये।' समझ गये? बिना कटौती..."

ग्रानन्द के बजाय कप्तान ने ग्रलेक्सेई के चेहरे पर रोष उमड़ते देखा।

"ए० एस० बी०! कभी नहीं!" वह चिल्लाया, "क्या ग्राप इतना भी नहीं समझते? मुझे ग्रपने लिए राशन ग्रौर तनख़ा की चिन्ता नहीं है! मैं विमान-चालक हूं! मैं उड़ान करना चाहता हूं, लड़ना चाहता हूं!.. ग्राप लोग यह क्यों नहीं समझते? इससे सीधी बात क्या हो सकती है?.."

कप्तान उलझन में फंस गया। सचमुच ही यह बड़ा विचित्र प्रार्थी था। उसकी जगह कोई दूसरा ग्रादमी होता तो ख़ुशी से नाच उठता... लेकिन यह व्यक्ति! बिल्कुल सनकी है! लेकिन इस सनकी व्यक्ति को कप्तान ग्रधिकाधिक पसंद करने लगा था। वह हृदय से उसके प्रति सहानुभूति ग्रनुभव

कर रहा था और इस विचित्र स्थिति में उसकी सहायता करना चाहता था। यकायक उसके दिमाग़ में कोई नया विचार आया। उसने मेरेस्येव को आंख मारी, उंगली से उसको संकेत किया और अपने प्रधान के दरवाज़े की ओर ताकते हुए फुसफुसाया:

"जनरल जितना कर सकते थे, उतना उन्होंने कर दिया है। इससे अधिक करने का उन्हें अधिकार नहीं। सच मेरी सौगंध पर मानो। अगर वह आपको उड़ाकुओं में नियुक्त कर देंगे तो लोग समझेंगे कि वह स्वयं पागल हैं। मैं बताता हूं कि क्या करना है। सीधे बड़े प्रधान के पास जाओ। सिर्फ़ वही आपकी सहायता कर सकते हैं।"

अलेक्सेई के नये मित्र ने उसको एक पास लाकर दे दिया और आध घंटे बाद बड़े प्रधान के दफ़्तर के प्रतीक्षा-कक्ष में कालीन से ढंके फ़र्श पर वह परेशान हाल चहलक़दमी कर रहा था। इस बात को उसने पहले ही क्यों न सोचा? सचमुच! इतना वक़्त बरबाद करने के बजाय उसे यहीं आना चाहिए था! अब वारा-न्यारा होकर ही रहेगा... कहा जाता है कि बड़े प्रधान ख़ुद अपने ज़माने में अव्वल दरजे के विमान-चालक थे। उन्हें तो सद्भावना दिखानी ही चाहिए! वह एक लड़ाकू हवाबाज़ को ए० एस० बी० में नहीं भेजेंगे!

कई जनरल और कर्नल प्रतीक्षा-कक्ष में बैठे हुए थे और मंद स्वरों में बातें कर रहे थे। कुछ लोग बुरी तरह सिगरेट पी रहे थे—स्पष्ट था कि वे उद्विग्न थे। सिर्फ़ सीनियर लेफ़्टीनेंट ही अपनी विचित्र, स्प्रिंगदार चाल से कालीन पर इधर से उधर चहलक़दमी कर रहा था। जब सब मुलाक़ाती चले गये और मेरेस्येव की बारी आयी, तो वह एक मेज़ की तरफ़ बढ़ा जिस पर एक गोल, स्पष्टभाषी जैसे चेहरेवाला जवान मेजर बैठा था।

"क्या आप स्वयं प्रधान जी से ही मिलना चाहते हैं, कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट?" मेजर ने पूछा।

"हां। मुझे एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत मामला उनके सामने पेश करना है।"

"शायद उसके बारे में आप पहले मुझे बता सकेंगे? कुर्सी लीजिये, तशरीफ़ रखिये और बता दीजिये! आप सिगरेट पीते हैं?" और उसने मेरेस्येव के सामने अपना खुला सिगरेट केस पेश कर दिया।

अलेक्सेई ने सिगरेट नहीं पी, फिर भी पता नहीं क्यों, उसने एक सिगरेट ले ली, उसे अपनी उंगलियों के बीच मसल दिया, डेस्क पर रख दिया और फ़ौरन, जैसे उसने कप्तान को बताया था, उसी तरह यहां भी अपने दुस्साहस कार्य की गाथा उगल दी। मेजर ने उसकी कहानी सुनी, मगर उतनी विनम्रता के साथ नहीं, जितनी शान्ति, सहानुभूति और ध्यान से। उसने पत्रिका की कतरन और फ़ौजी सर्जन की राय भी पढ़ ली। मेजर ने जो सहानुभूति प्रदर्शित की उससे प्रोत्साहित होकर मेरेस्येव ने यह भूलकर कि वह कहां है, एक बार फिर अपनी नृत्य की योग्यता प्रदर्शित करना चाहा और... लगभग सारा खेल ही बिगाड़ दिया, क्योंकि उसी समय दफ़्तर का दरवाजा बड़े जोर के धक्के से खुल गया और एक लम्बे क़द का, दुबला-पतला अफ़सर प्रगट हुआ जिसके कौए जैसे काले बाल थे। अलेक्सेई ने उसके जो चित्र देखे थे, उनसे मिलाकर वह उसे फ़ौरन पहचान गया। वह डग भरता हुआ अपने कोट के बटन लगाता, एक जनरल से कुछ कह रहा था जो उसके पीछे-पीछे आ रहा था। वह बड़ा चिन्तित दिखाई दे रहा था और उसने मेरेस्येव की ओर ध्यान तक नहीं दिया।

"मैं क्रेमलिन जा रहा हूं," उसने अपनी घड़ी की ओर नजर डालकर मेजर से कहा, "स्तालिनग्राद के लिए एक हवाई जहाज़ छे बजे तैयार रखने का हुक्म दे दो।" इतना कहकर वह उतनी ही शीघ्र विलीन हो गया, जैसे प्रगट हुआ था।

मेजर ने फ़ौरन हवाई जहाज़ के लिए हुक्म भेज दिया और फिर याद करके कि मेरेस्येव उसके कमरे में बैठा था, वह उसे क्षमा-याचना के भाव से बोला:

"आपकी क़िस्मत ही ख़राब है। हम जा रहे हैं। आपको फिर आना पड़ेगा। कहीं रहने का ठिकाना है?"

इस असाधारण अभ्यागत के ताम्रवर्ण मुखड़े पर, जो अभी कुछ क्षण पहले ही इतना दृढ़संकल्पी और इच्छा-शक्ति से सम्पन्न दिखाई दे रहा था, यकायक ऐसी गहरी निराशा और थकान छा गयी कि मेजर ने इरादा बदल दिया।

"ख़ैर," उसने कहा, "मैं जानता हूं कि प्रधान जी भी यही करते।"

इतना कहकर उसने कार्यालय के टिप्पणी प्रपत्र का एक पन्ना लेकर उसपर कुछ पंक्तियां लिख दीं, उसे एक लिफ़ाफ़े में रख दिया और पता लिख दिया: "प्रधान, नियुक्ति-विभाग।" यह लिफ़ाफ़ा उसने मेरेस्येव को दे दिया और उससे हाथ मिलाते हुए कहा:

"हृदय से मैं आपके लिए शुभकामना करता हूं।"

इस पत्र में लिखा गया था: "सीनियर लेफ़्टीनेंट अ० मेरेस्येव ने कमांडर से मुलाक़ात की। उनका पूरा ध्यान रखा जाये। उन्हें सक्रिय विमान-सेवा में वापस लौटने में हर सम्भव सहायता दी जाये।"

एक घंटे बाद छोटी मूंछोंवाला कप्तान मेरेस्येव को अपने प्रधान के दफ़्तर में ले गया। वृद्ध जनरल ने—हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति, भयानक मोटे रोएं की भौंहें—वह टिप्पणी पढ़ी और विमान-चालक की ओर प्रफुल्लित, नीली आंखें उठाकर हंस पड़ा और बोला:

"अच्छा तो तुम वहां भी हो आये? बड़ी जल्दी, मैं कहूंगा! तुम ही हो वह, जो नाराज़ हो गये, क्योंकि मैंने तुमको ए० एस० बी० में भेज दिया था? हा-हा-हा! बढ़िया छोकरे हो! मैं समझ गया कि तुम पक्के हवाबाज़ हो। ए० एस० बी० में नहीं जाना चाहते। बुरा मान गये, क्यों?.. क्या मज़ाक़ है!.. लेकिन मैं तुम्हें, ए जवान नर्त्तक, तुम्हें लेकर क्या करता? तुम अपनी गर्दन तोड़ बैठोगे, और फिर वे लोग तुम्हारी गर्दन के एवज़ में मेरे सिर की मरम्मत करेंगे, यह कहकर कि मैं बूढ़ा बेवक़ूफ़ था जिसने तुम्हें नियुक्त किया था। लेकिन यह कौन कहे कि तुम क्या कर सकते हो? इस लड़ाई में हमारे जवानों ने इससे भी बड़ी चीज़ें कर दिखाकर दुनिया को हैरत में डाल दिया... लाओ, यह पुर्ज़ा मुझे दो।"

इतना कहकर जनरल ने नीली पेंसिल से लापरवाही के साथ गिचपिच लिखावट में, शब्दों को मुश्किल से पूरा लिखते हुए, लिख डाला: "प्रार्थी को ट्रेनिंग स्कूल भेजा जाये।" मेरेस्येव ने कांपते हुए हाथों से काग़ज़ जल्दी से लिया; उस टिप्पणी को वहीं मेज़ के पास पढ़ डाला, फिर उतरते समय सीढ़ियों पर पढ़ा, इसके बाद जहां संतरी ने पास देखा, वहां पढ़ा, ट्राम-गाड़ी में बैठकर पढ़ा और अंत में बारिश के बीच फ़ुटपाथ पर खड़े होकर पढ़ा। और दुनिया के समस्त निवासियों में से सिर्फ़ वही एक

व्यक्ति था जो लापरवाही से घसीटे गये उन शब्दों का अर्थ और मूल्य समझता था।

उस दिन अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपनी घड़ी बेच डाली, जो डिवीजनल कमांडर ने उपहारस्वरूप दी थी, और उसके पैसे लेकर बाजार गया और तमाम तरह की खाद्य-सामग्री और शराब ख़रीदी और अन्यूता को टेलीफ़ोन करके उससे अनुरोध किया कि वह अपने अस्पताल से चंद घंटों की छुट्टी ले ले, उसने बूढ़े दम्पति को भी अन्यूता के कमरे में निमंत्रित किया और अपनी महान विजय के उत्सवस्वरूप दावत का प्रबंध किया।

८

मास्को के पास स्थित प्रशिक्षण विद्यालय में, जो छोटे-से हवाई अड्डे के निकट था, उन चिन्ताग्रस्त दिनों में बड़ा व्यस्त कार्यक्रम होता था।

स्तालिनग्राद के युद्ध में वायुसेना को बड़े पैमाने पर काम करना था। वोल्गा पर स्थित इस दुर्ग के ऊपर का आसमान, जो सदा कौंधता रहता था और आग की लपटों और विस्फोटों के धुएं से भरा रहता था, बराबर आकाशीय मुठभेड़ों का क्षेत्र बना रहता था और प्रायः ये मुठभेड़ें नियमित आकाश-युद्ध का रूप धारण कर लेती थीं। दोनों पक्षों को भारी क्षति उठानी पड़ी। युद्धरत स्तालिनग्राद बराबर विमान-चालकों और अधिक विमान-चालकों, अधिकाधिक विमान-चालकों को आवाहन करता रहता था... फलतः यह प्रशिक्षण विद्यालय, जहां अस्पतालों से मुक्त किये गये विमान-चालकों को और ऐसे हवाबाजों को, जो अब तक नागरिक यातायात के हवाई जहाज़ चलाते थे, लड़ाकू विमान संचालन की शिक्षा दी जाती थी, अपनी सम्पूर्ण शक्ति और क्षमता से कार्य कर रहा था। बड़े-बड़े व्याध-पतंगों की तरह दिखनेवाले प्रशिक्षण विमान उस छोटे-से, भीड़ भरे हवाई अड्डे पर इस तरह मंडराते थे, मानो रसोईघर की साफ़ न की गयी मेज़ पर मक्खियां टूट पड़ी हैं। और उनकी भनभनाहट सूर्योदय से सूर्यास्त तक सुनाई देती थी। पहियों के निशानों से भरे मैदान पर कभी भी नज़र डालो, कोई न कोई विमान उड़ता या उतरता दिखाई देता था।

नाटे-से, हृष्ट-पुष्ट, लाल चेहरेवाले हंसमुख व्यक्ति – स्कूल के प्रधान –

ने, जिसकी आंखें नींद के अभाव से सूजी हुई थीं, मेरेस्येव की ओर क्रुद्ध भाव से देखा, मानो कह रहा हो, "किस शैतान ने तुम्हें यहां ला पटका है? तुम्हारे बिना ही यहां मेरे ऊपर कम मुसीबत नहीं है," और उसने अलेक्सेई के हाथों से कागज़ों का पुलिंदा छीन लिया।

"वह मेरे पैरों के बारे में आपत्ति करेगा और मुझसे फ़ौरन मुंह काला करने के लिए कहेगा," मेरेस्येव ने लेफ़्टीनेंट-कर्नल की ठोड़ी पर बहुत दिनों से न बनी दाढ़ी पर चोरी-चोरी नजर डालते हुए सोचा। लेकिन तभी लेफ़्टीनेंट-कर्नल को एक साथ दो टेलीफ़ोन का जवाब देना पड़ा। उसने एक के रिसीवर को कंधे से दबाकर कानों पर लगा लिया, दूसरे में चिढ़कर कुछ गरज उठा, और साथ ही मेरेस्येव के कागज़ पर आंखें दौड़ाने लगा। स्पष्ट था कि उसने सिर्फ़ पढ़ा तो जनरल का घसीट हुक्म, क्योंकि उसने रिसीवर थामे हुए ही उसके नीचे लिख दिया: "लेफ़्टीनेंट नाऊमोव, तीसरी प्रशिक्षण यूनिट। नाम दर्ज कर लिया जाये।" फिर दोनों ही रिसीवर रखते हुए उसने थकित भाव से पूछा:

"तुम्हारे पास कपड़े हासिल करने के कागज़ात हैं? राशन के कागज़ात? नहीं? सब लोगों की यही बात है—अस्पताल, जल्दी-तेज़ी... तो मैं तुम्हें कैसे खिलाऊंगा? फ़ौरन रिपोर्ट लिखो इस बारे में। भत्ते के कागज़ात पाये बिना मैं तुम्हें नहीं रखूंगा।"

"बहुत अच्छा, लेफ़्टीनेंट-कर्नल! मैं फ़ौरन किये देता हूं!" मेरेस्येव ने फुर्ती से अटेंशन खड़े होकर सेल्यूट झाड़ते हुए ख़ुशी से कहा, "क्या मैं जा सकता हूं?"

"जा सकते हो," लेफ़्टीनेंट-कर्नल ने उदासीन भाव से अपना हाथ हिलाते हुए जवाब दिया। यकायक वह चिल्लाया, "रुको! यह क्या है?" उसने भारी छड़ी की ओर इशारा किया जिस पर स्वर्णाक्षरों में मुहर थी—वसीली वसील्येविच का उपहार। दफ़्तर छोड़ते समय, उत्तेजनावश, मेरेस्येव उसे कोने में ही छोड़े जा रहा था। "कैसे छैला हो? फेंक दो इसे! कोई समझेगा कि यह बंजारों का ख़ेमा है, फ़ौजी यूनिट नहीं। या पार्क है: छड़ियां, बेंत, चाबुक! .. अभी ही तुम अपने गले में तावीज़ लटकाना चाहोगे और हवाई जहाज़ में अपनी सीट पर काली बिल्ली रखोगे। यह मरगिल्ली चीज़ तुम अब मेरे सामने न आने देना। वाह रे बांके!"

"बहुत अच्छा, कामरेड लेफ़्टीनेंट-कर्नल!"

अलेक्सेई जानता था कि आगे बहुत-सी कठिनाइयां और बाधाएं आयेंगी: उसे भत्ते के काग़ज़ मंगाने के लिए दरख़ास्त देनी थी, और कुपित लेफ़्टीनेंट-कर्नल को यह विवरण भी देना था कि वह अपने काग़ज़ कैसे खो बैठा; स्कूल में आने-जानेवालों का तांता लगा रहने के कारण यहां मिलनेवाला भोजन नाकाफ़ी होता था, और शिक्षार्थी जहां अपना दोपहर का भोजन ख़त्म करते थे तहां शाम के भोजन के लिए व्यग्र हो उठते थे। स्कूल की भीड़ से भरी इमारत में, जो तीसरी यूनिट के रहने की अस्थायी जगह की तरह काम दे रही थी, भाप के पाइप फट गये थे, और बड़ी सर्दी थी, अलेक्सेई पहले दिन सारी रात अपने कम्बल और कमड़े के कोट के नीचे कांपता रहा—लेकिन इस सबके बावजूद, इन सारी गड़बड़ियों और तकलीफ़ों के बीच उसको ऐसा महसूस हो रहा था जैसे, शायद, किसी मछली को महसूस होता है, जिसे रेतीले किनारे पर पड़े तड़पते रहने के बाद फिर कोई लहर वापस समुद्र में ले गयी हो। उसे यहां हर चीज़ पसंद आयी; पड़ाव जैसी ज़िंदगी तक से उसे यह स्मरण हो आता था कि उसकी मंज़िल क़रीब है।

जिनका वह आदी था, वही अभ्यस्त वातावरण, वही चमड़े के कोट पहने—जो अब जर्जर और फीके पड़ गये थे—और उड़ाकुओंवाले झबरे बूट चढ़ाये प्रसन्नचित्त लोग, उनके धूप खाये चेहरे और फटी आवाज़ें, विमानों के ईंधन की मीठी-सी तीखी गंध से पूरित और गरमाते हुए इंजनों की गड़गड़ाहट की गूंज से प्रतिध्वनित तथा उड़ते हुए विमानों के एकरस, हल्के गूंजन से आच्छादित वही सुपरिचित वायुमण्डल; ग्रीज़ से सने लबादे पहने हुए थके-मांदे मेकेनिकों के वही कालिख लगे चहरे, वही चिड़चिड़े शिक्षक, जिनके चेहरे धूप से तपकर ताम्रवर्ण हो गये थे; मौसम सर्वेक्षण केन्द्र की वही गुलाबी कपोलोंवाली लड़कियां; निर्देश केन्द्र के स्टोव से उठता हुआ वर्तुलाकार नीला धुआं; विभिन्न यंत्रों की वही मंद गुनगुनाहट और चौंका देनेवाली टेलीफ़ोनों की घंटियां, भोजन-कक्ष में चम्मचों की उसी तरह कमी, विविध रंगों की पेंसिलों से हाथ से लिखा गया दीवार-पत्र, जिसमें ऐसे युवक हवाबाज़ों के बारे में अवश्यम्भावी कार्टून होते जो हवाई जहाज़ में उड़ान करते समय लड़कियों के सपने देखते;

हवाई अड्डे के मैदान की नर्म, पीली मिट्टी जिस पर हवाई जहाज़ के पहियों और स्किडों की लकीरें बन गयी थीं और हंसी-ख़ुशी से बातचीत, जिसमें इशारों और विमान-कला की अपनी शब्दावली का मिर्च-मसाला मिला हुआ होता है--अलेक्सेई के लिए यह सभी सुपरिचित था।

मेरेस्येव फ़ौरन खिल उठा। लड़ाकू विमान-सेना के लोगों में जैसा ख़ुशमिज़ाज और अक्खड़पन होता है--जो अलेक्सेई में स्थायी रूप से ख़त्म हो गया मालूम होता था--वह सब उसके अंदर फिर वापस लौट आये। उसमें फुर्ती जाग गयी, वह ख़ुशी और तेजी से अपने से छोटे ओहदेवालों के सेल्यूट का जवाब देता, ऊंचे ओहदेवालों से भेंट होने पर चुस्ती से नियमपूर्वक क़दम मारता और, नयी वर्दी मिलने पर, उसने ए० एस० बी० के उस बूढ़े क्वार्टर मास्टर सार्जेन्ट से उसे "उलटवाकर फ़िट" करा लिया, जो नागरिक जीवन में दर्ज़ी था और फ़ालतू वक़्त में चुस्त लेफ़्टीनेंटों की "हड्डियों तक फ़िट बैठाने" के लिए नयी वर्दियों को ठीक करता था।

पहले ही दिन मेरेस्येव तीसरी यूनिट के शिक्षक लेफ़्टीनेंट नाऊमोव को खोजने के लिए हवाई अड्डे के मैदान में गया, जिसके चार्ज में उसे रखा गया था। नाऊमोव--नाटा-सा, अत्यन्त फुर्तीला, बड़े सिर और लम्बी बाहोंवाला व्यक्ति--भाग-दौड़ कर रहा था और आसमान की तरफ़ देख रहा था जहां नन्हा-सा ट्रेनिंग हवाई जहाज़ उड़ रहा था। उसके चालक पर बरसते हुए वह चिल्ला रहा था:

"कूढ़ मग़ज़! कहता है कि लड़ाकू था!' मुझे बेवक़ूफ़ नहीं बना सकता!"

अपने भावी शिक्षक को अपना परिचय देने के लिए मेरेस्येव बढ़ा और फ़ौजी तरीक़े से सलाम किया, मगर उसने सिर्फ़ हाथ हिलाया, आसमान की तरफ़ इशारा किया और चीख़ उठा:

"उधर देखा? यह रहा 'लड़ाकू'! 'आकाशी आतंक'! और फड़फड़ा रहा जैसे पानी में बहती टट्टी हो!.."

अलेक्सेई को यह शिक्षक फ़ौरन भा गया। उसे इस तरह के थोड़े सनकी आदमी पसन्द थे जो अपने काम के प्रेम में पैर से सिर तक डूबे रहते हैं और जिनसे योग्य और उत्साही विमान-चालकों की फ़ौरन पट जाती है। आसमान में चालक जिस तरह उड़ रहा था, उसके विषय में

उसने कुछ व्यावहारिक टीका की। नाटे लेफ़्टीनेंट ने उसकी ओर आलोचनात्मक दृष्टि से ऊपर से नीचे तक देखा और पूछा :

"मेरी यूनिट में आये हो? क्या नाम है तुम्हारा? कैसे हवाई जहाज़ उड़ाये हैं तुमने? कभी लड़ाई में रहे हो? उड़ान किये कितने दिन हो गये?"

अलेक्सेई यह न समझ सका कि लेफ़्टीनेंट ने उसके सब जवाब सुने भी हैं या नहीं, क्योंकि वह फिर आसमान की ओर देखने लगा और धूप से बचने के लिए अपनी आंखों पर एक हाथ से छाया कर, वह दूसरे हाथ की मुट्ठी हवा में झुलाने लगा और चिल्ला उठा :

"गोबर की गाड़ी! देखा कैसे मोड़ ले रहा है! जैसे दीवानख़ाने में गैंडा!"

उसने अलेक्सेई को हुक्म दिया कि वह अगले दिन सुबह आ जाये और वायदा किया कि उसे फ़ौरन 'ट्रायल' दिया जायगा।

"जाओ और अभी आराम करो," उसने कहा। "सफ़र के बाद तुम्हें इसकी ज़रूरत होगी। कुछ दाना-पानी मिला? यहां जो भीड़-भड़क्का है, उसमें वे तुम्हें खिलाना भी भूल सकते हैं, समझे... ए जड़ मूर्ख! ठहरो, तुम्हें अभी उतारता हूं, तब तुम्हारे 'लड़ाकू' का सब मज़ा निकाल दूंगा!"

मेरेस्येव आराम करने न गया, इसलिए और भी कि सोने के लिए उसे जो क्वार्टर दिया गया था उसके मुक़ाबले हवाई अड्डा कुछ गर्म था, हवा सूखी और चुभीली थी। ए० एस० बी० में उसे एक चर्मकार भी मिल गया जिसे उसने अफ़सरोंवाली पेटी से फंदे और बकसुएदार दो तस्मे बनाने के लिए तम्बाकू का पूरे सप्ताह का अपना राशन दे डाला—इन तस्मों से वह उस हवाई जहाज़ के पैडल से अपने कृत्रिम पैरों को बांधने का इरादा कर रहा था जो उसे उड़ाने के लिए मिलेगा। काम फ़ौरी और असाधारण क़िस्म का होने के कारण चर्मकार ने तम्बाकू के अलावा आधी लिटर वोदका भी मांगी और वायदा किया कि वह बहुत बढ़िया काम तैयार करेगा। मेरेस्येव हवाई अड्डे पर लौट आया और जब तक आख़िरी हवाई जहाज़ उतरकर पांत में खड़ा न हो गया और सब यथास्थान खूंटे से न बांध दिये गये उड़ानों का इस समय तक देखता रहा वह जैसे कि वे साधारण उड़ानें नहीं, बल्कि श्रेष्ठतम विमान-चालकों के बीच प्रतियोगिता

हो। उसका मन उड़ानों में इतना नहीं लगा जितना उसे हवाई अड्डे के वायुमण्डल में सांस लेने, चहल-पहल, इंजनों की अनवरत घड़घड़ाहट, राकेटों की मंद थप की आवाज़ों और पेट्रोल तथा तेल की गंध को आत्मसात करने में आनन्द आया। उसका रोम-रोम पुलक रहा था, और यह विचार कि कल उसका विमान उसका आज्ञा मानने से इनकार कर सकता है, उसके बस से बाहर हो सकता है, और भयंकर विपत्ति के मुंह में धकेल सकता है, उसके दिमाग़ में कभी आया ही नहीं।

अगले दिन सुबह जब वह मैदान में पहुंचा तो वह अभी वीरान ही था। लाइनों पर गर्म किये जाते हुए इंजन धड़धड़ा रहे थे, गर्मानेवाले स्टोवों से बड़ी ऊंची लपटें उठ रही थीं और जो मेकेनिक हवाई जहाज़ के पंखों को चला रहे थे, वे उनसे इस तरह छिटककर दूर भाग जाते थे मानो वे सांप हों। सुपरिचित प्रातःकालीन पुकारें और उनके जवाब सुनाई दे रहे थे :

"स्टार्ट के लिए तैयार!"

"कंटेक्ट!"

"कंटेक्ट कर लिया!"

किसी ने अलेक्सेई को कोसा कि इतने सवेरे वह हवाई जहाज़ों के चारों तरफ़, भला, क्यों मंडरा रहा है। उसने एक मज़ाक़ से उसका जवाब दिया और एक टेक की तरह ये शब्द दोहराने लगा जो न जाने क्यों उसके दिमाग़ में समा गये थे : "कंटेक्ट कर लिया, कंटेक्ट कर लिया, कंटेक्ट कर लिया।" आख़िरकार हवाई जहाज़ धीरे-धीरे स्टार्ट होने की लाइन की तरफ़ फुदकते और भौंड़े ढंग से अग़ल-बग़ल लुढ़कते हुए चल दिये, उनके पंख कांप रहे थे जिन्हें मेकेनिक लोग संभाले हुए थे। इस समय तक नाऊमोव आ पहुंचा—सिगरेट का टुकड़ा पीते हुए, जो इतना छोटा था कि वह निकोटीन से रंगी उंगलियों से धुआं खींचता प्रतीत होता था।

"अच्छा तो तुम आ गये।" अलेक्सेई के बाज़ाब्ता सेल्यूट का जवाब न देते हुए उसने कहा, "ठीक है! पहले आये, सो पहले पाये। उस नम्बर नौ के पिछले कॉकपिट में बैठ जाओ। मैं वहां एक मिनट में आता हूं। हम देखेंगे कि तुम कैसे पंछी हो।"

उसने सिगरेट के "टोंटे" से चंद कश जल्दी से लिये, तब तक अलेक्सेई

हवाई जहाज़ तक भागकर पहुंच गया। शिक्षक के आने से पहले वह अपने पैरों को पैडलों से बांध लेना चाहता था। वैसे शिक्षक शिष्ट व्यक्ति मालूम होता था, लेकिन कौन कह सकता है? उसके दिमाग़ में यकायक कोई ख़ब्त सवार हो सकता है, वह शोर-गुल करने लग सकता है और ट्रायल देने से इनकार कर सकता है। कांपते हाथों से कॉकपिट का बाज़ू पकड़कर मेरेस्येव बड़ी कठिनाई से फिसलने पंखों पर होकर चढ़ पाया। उत्तेजनावश और अभ्यास की कमी के कारण वह जीतोड़ कोशिश करने पर भी अपनी टांग बाज़ू के पार नहीं फेंक सका, और प्रौढ़ मेकेनिक, जिसका चेहरा लम्बा और उदास था, आश्चर्य से ऊपर देखने लगा और अपने आपसे कह उठा: "शैतान, पिये हुए हैं!"

आख़िरकार वह अपनी एक जड़ टांग कॉकपिट में रखने में सफल हुआ, कल्पनातीत प्रयत्न के बाद वह दूसरी टांग भी अन्दर ला पाया और धम से सीट पर गिर गया। तस्मों की सहायता से उसने फ़ौरन अपनी पैर पैडल से बांध लिये। वे बड़े सुगढ़ साबित हुए, और फंदे उसके पैरों पर मज़बूती से और आरामदेह ढंग से फ़िट बैठे।

शिक्षक ने कॉकपिट में अपना सिर घुसेड़ा और पूछा:

"क्यों, तुम पिये तो नहीं हो, बताओ तो? मुझे अपना मुंह सूंघने दो।"

अलेक्सेई ने मुंह से सांस छोड़ी। शराब की सुपरिचित गंध नहीं है, इससे संतुष्ट होकर शिक्षक ने मेकेनिक की ओर धमकी की मुद्रा में अपना घूंसा हिलाया।

"स्टार्ट के लिए तैयार!"

"कंटेक्ट!"

"कंटेक्ट कर लिया!"

इंजन ने कई बार खर्राटे भरे और फिर उसके पिस्टनों की तालपूर्ण धड़कन निश्चित रूप से सुनाई देने लगी। मेरेस्येव आनन्द से उछल पड़ा और गैस खोलने के लिए अपने आप लीवर खींच बैठा, मगर उसने चोंगे में शिक्षक को गुर्राते हुए सुना:

"ठहरो, तुम्हारी बारी भी आयेगी!"

शिक्षक ने गैस स्वयं खोली। इंजन गरजा और कराहा और हवाई जहाज़ ने फुदकते और उछलते हुए दौड़ लगायी। शिक्षक ने स्वयंस्फूर्त

गति से स्टिक गिरा दी, और छोटा-सा जहाज़ और जिसका हर जगह बूढ़े-पुराने, मज़ाक़िया, मगर साथ ही तपे-तपाये और वफ़ादार साथी की भांति सम्मान किया जाता था – जिस जहाज़ पर सभी हवाबाज़ों ने उड़ना सीखा था – वह जहाज़ आसमान में सीधा ऊंचा उठ चला।

एक मुकोण पर लगे हुए शीशे में शिक्षक अपने नये शिक्षार्थी का चेहरा देख रहा था। काफ़ी अवधि के बाद अपनी पहली उड़ान करनेवाले कितने ही लोगों का चेहरा उसने देखा था। उसने कुशल चालकों जैसी विनीत मुसकान देखी थी, उत्साही लोगों की आंखों में, जो एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल भटकने से थकने के बाद अपने को एक बार फिर अपना चोला धारण किये पाते थे, उसने प्रकाश देखा था; जो लोग विमान के गिरकर चूर हो जाने की दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो जाते, वे जब पहली बार आसमान में पहुंचते तो पीले पड़ जाते, घबराहट के चिह्न प्रदर्शित करते और अपने होंठ काटते उसने देखा था, और उसने पहली बार उड़ान करनेवाले नौसिखुओं की बचकाना जिज्ञासा भी देखी थी। लेकिन इतने वर्षों में, जब से वह शिक्षक की तरह काम कर रहा था, उसके शीशे में ऐसी विचित्र भाव-भंगिमा कभी प्रतिबिम्बित नहीं हुई जैसी कि उसने इस ताम्रवर्ण, सुन्दर युवक के मुखड़े पर देखी जो स्पष्ट ही उड़ान में नौसिखुआ नहीं था।

नये शिक्षार्थी के ताम्रवर्ण चेहरे पर उत्तप्त अरुणिमा बिखर गयी। उसके होंठ पीले थे, मगर भय से नहीं, बल्कि भावोद्वेग से, जिसका कारण नाऊमोव न समझ सका। यह व्यक्ति कौन है? इसको क्या हो रहा है? मेकेनिक ने क्यों सोचा था कि यह पिये हुए है? जब हवाई जहाज़ उड़ गया और आसमान में लटकने लगा तो शिक्षक ने देखा कि शिक्षार्थी की काली-काली, हठी, बंजारों जैसी आंखों में, जो चश्मे से संरक्षित न थीं, आंसू भर आये हैं, उसने कपोलों पर से आंसू लुढ़कते और जैसे जहाज़ मुड़ा तो हवा के झोंके से दूर उड़ जाते देखे।

"इसके दिमाग़ का कोई पुर्ज़ा ज़रा ढीला है, मेरी राय में। इसके साथ मुझे सावधानी बरतनी पड़ेगी। वरना..." नाऊमोव सोच-विचार करता रहा। लेकिन उत्तेजनापूर्ण मुखड़े की भाव-भंगिमा में, जिसे शिक्षक चौकोने शीशे में प्रतिबिम्बित देख रहा था, उसे कुछ ऐसी बात दिखाई

दी जिसने उसका मन मोह लिया। उसे ख़ुद आश्चर्य हुआ कि उसका गला रुंध रहा था और सामने के औज़ार धुंधले पड़ रहे थे।

"मैं अब संचालन पूरी तरह तुम्हारे हवाले कर रहा हूं," उसने चोंगे में से कहा, मगर उसने ऐसा किया नहीं, उसने सिर्फ़ डंडों और पैडलों पर से अपना नियंत्रण ढीला कर दिया और विचित्र शिक्षार्थी अगर कमज़ोरी दिखाये तो फ़ौरन ख़ुद संभाल लेने के लिए तैयार रहा। दुहरे गीयर के ज़रिए वह महसूस कर रहा था कि हवाई जहाज़ को नये शिक्षार्थी के आत्मविश्वासी और अनुभवी हाथ चला रहे हैं, और जैसा कि स्कूल के मुख्याधिकारी, जो आकाश के पुराने शिकारी थे और गृह-युद्ध के काल के पुराने विमान-चालक थे, कहा करते थे, यह शिक्षार्थी "ख़ुदा का बनाया हवाबाज़ था"।

पहले चक्कर के बाद नाऊमोव को नये शिक्षार्थी के विषय में कोई भय न रहा। हवाई जहाज़ "सभी नियमों का पालन करता हुआ" दृढ़तापूर्वक उड़ रहा था। विचित्र बात सिर्फ़ इतनी थी कि जब-तब बार-बार शिक्षार्थी कभी दाहिने और कभी बायें, कभी ऊंचे, कभी नीचे थोड़ा-सा मुड़ता था, वह अपनी कुशलता की परीक्षा लेता मालूम होता था। नाऊमोव ने तय किया कि अगले दिन उसे अकेले ही उड़ने जाने दिया जायेगा और दो या तीन उड़ानों के बाद उसे "उत-२" नामक प्रशिक्षण विमान दे देगा, जो लड़ाकू विमान की लकड़ी की लघु अनुकृति था।

सर्दी थी। पंख पर लगे थर्मामीटर में तापमान शून्य से १२° सें० नीचे था। कॉकपिट में हवा का तीर-सा झोंका आया जिसने शिक्षक के रोएंदार उड़ान-जूतों को बेध दिया और पैरों को बर्फ़ बना दिया। उतरने का वक़्त हो रहा था।

लेकिन हर बार जब वह चोंगे में बोलकर आदेश देता: "उतरने के लिए तैयार हो जाओ!" तो वह अपने शीशे में काली-काली, जलती हुई, शिकायत करती आंखें प्रतिबिम्बित होते देखता। नहीं, वे शिकायत नहीं कर रही थीं, मांग कर रही थीं, और उसको इनकार करने का जी न हुआ। दस मिनट के बजाय वे आधे घंटे तक उड़ते रहे।

कॉकपिट से कूदकर नाऊमोव ने अपने पैर ठोंके और बांहें फड़फड़ायीं, आज की सुबह पाले ने सचमुच मार दिया था! मगर शिक्षार्थी कुछ देर

तक कॉकपिट में किसी चीज़ से उलझता रहा, फिर धीरे से उतरा—मालूम होता था कि उसका मन नहीं हो रहा था। ज़मीन पर पैर रखते ही, वह अपने होंठों पर प्रसन्नतापूर्ण, सच्ची मादक मुसकान लेकर पंख के पास बैठ गया, उसके कपोल पाले और उत्तेजना से लाल हो रहे थे।

"ठंड है, एह?" शिक्षक ने पूछा, "मेरे उड़ान के जूते तक को चीरकर उसने जकड़ लिया, मगर तुम तो साधारण जूते पहने हो। तुम्हारे पैर नहीं जमे?"

"मेरे पैर हैं ही नहीं," शिक्षार्थी ने जवाब दिया और अपने विचारों में लीन मुसकुराता रहा।

"क्या!" नाऊमोव हकलाया और उसके जबड़े विस्मय से लड़खड़ा गये।

"मेरे पैर नहीं हैं," मेरेस्येव ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"क्या मतलब है तुम्हारा, 'तुम्हारे पैर नहीं हैं'? क्या मतलब है कि उनमें कुछ ख़राबी है?"

"नहीं! मेरे पैर बिल्कुल ही नदारद हैं। ये कृत्रिम पैर हैं।"

एक क्षण नाऊमोव आश्चर्य से ज़मीन में गड़ा रह गया। उस विचित्र व्यक्ति ने जो बात कही थी, वह बिलकुल अविश्वसनीय थी। पैर ही नहीं! लेकिन अभी तो वह उड़ान कर रहा था और बड़ी ख़ूबी से...

"मुझे दिखाओ तो," उसने कहा और उसके स्वर में शंका की ध्वनि थी।

इस जिज्ञासा से अलेक्सेई न तो परेशान हुआ और न उसने ठेस महसूस की। इसके विपरीत वह इस विचित्र, प्रसन्नचित्त व्यक्ति के विस्मय को अंतिम रूप से सम्पन्न करना चाहता था। उसने इस भाव-भंगिमा से, जैसे जादूगर कोई जादू दिखानेवाला हो, अपने पतलून के पायंचे उठा दिये।

शिक्षार्थी चमड़े और अलुमीनम से बने पैरों पर खड़ा था और शिक्षक, मेकेनक तथा उन विमान-चालकों की ओर आनन्दपूर्वक ताक रहा था जो अपनी बारी आने पर उड़ान के लिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

एक कौंध में नाऊमोव को इस व्यक्ति की उत्तेजना का, उसके चेहरे की असाधारण भाव-भंगिमा का, उसकी काली आंखों में आंसू भर आने का और उस आतुरता का कारण समझ में आ गया जिससे वह अपनी उड़ान के आनन्द की घड़ियों को लम्बा करने का अनुरोध कर रहा था।

निश्चय ही इस शिक्षार्थी ने उसे विस्मय में डाल दिया। वह उसकी तरफ़ दौड़ पड़ा और पागलों की भांति उसका हाथ झटकते हुए बोला:

"अरे भाई, कैसे किया वह सब? तुम नहीं जानते, तुम बिल्कुल नहीं जानते कि तुम किस तरह के व्यक्ति हो!"

मुख्य सफलता मिल गयी थी। अलेक्सेई ने शिक्षक का हृदय जीत लिया था। वे शाम को फिर मिले और उन्होंने प्रशिक्षण का कार्यक्रम तैयार किया। वे सहमत थे कि अलेक्सेई की स्थिति कठिन है। अगर वह थोड़ी-सी भी भूल करेगा तो उसके लिए उड़ान पर सदा को पाबन्दी लग जाने का ख़तरा है और यद्यपि लड़ाकू विमान में प्रवेश कर पाने और उस जगह उड़ जाने की आकांक्षा पहले से भी अधिक प्रबल रूप में प्रज्ज्वलित हो उठी थी जहां – वोल्गा पर स्थित प्रसिद्ध नगर में – देश के सर्वोत्तम योद्धा उमड़े चले आ रहे थे, फिर भी उसने धैर्यपूर्वक सर्वतोमुखी प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए सहमति प्रगट की। वह समझता था कि आज उसकी जो स्थिति है, उसमें उसे चूकने का कोई हक नहीं है।

९

मेरेस्येव प्रशिक्षण विद्यालय में कोई पांच महीने से अधिक रहा। हवाई अड्डा बर्फ़ से ढंका हुआ था और हवाई जहाजों को स्कीइसों पर रख दिया गया था। ऊपर 'क्षेत्र' से अलेक्सेई को अब शरद के विविध निर्मल रंग नहीं, सिर्फ़ दो रंग दिखाई देते थे: सफ़ेद और काला। स्तालिनग्राद में जर्मनों के सफ़ाये, जर्मन छठी फ़ौज के पतन और फ़ील्डमार्शल पाउलस के बंदी बनाये जाने की सनसनीखेज़ ख़बरें अब अतीत की बातें हो गयी थीं। दक्षिण में अब अभूतपूर्व और अप्रतिषेधशील प्रत्याक्रमण विकसित हो रहा था। जनरल रोतमिस्त्रोव के टैंक जर्मन मोर्चा बेध चुके थे और पृष्ठप्रदेश में मृत्यु-वर्षा कर रहे थे। ऐसे समय में, जब मोर्चे पर इस तरह की घटनायें हो रही थीं, और जब मोर्चे के ऊपर आसमान में ऐसा भयंकर संग्राम छिड़ा हुआ था, अलेक्सेई को अस्पताल के गलियारे में एक छोर से दूसरे छोर तक दिन प्रतिदिन अनगिनत बार चलहक़दमी करते घूमते, या अपनी सूजी हुई, दर्द की पीड़ा से फटती-सी टांगों से नृत्य की अपेक्षा

इन नन्हें-से प्रशिक्षण हवाई जहाज़ों में साधनापूर्वक "चरचराहट" करते उड़ना बड़ा दुखदायी मालूम होता था।

लेकिन जब वह अस्पताल में था, तब उसने प्रण किया था कि लड़ाकू कमान में सक्रिय युद्ध के मोर्चे पर लौट कर रहेगा। उसने अपने लिए एक लक्ष्य बना लिया था और वह तमाम दुख, दर्द, थकान और निराशाओं के बावजूद उस लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रयत्न कर रहा था। एक दिन उसके नये पते पर एक मोटा-सा लिफ़ाफ़ा आया, जिसे क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने यहां भेजा था। इसके अन्दर कुछ पत्र और एक पत्र स्वयं क्लावदिया मिखाइलोव्ना का था जिसमें पूछा गया था कि उसका हाल-चाल क्या है, उसे कहां तक सफलता मिली है और उसका सपना सच हो गया या नहीं।

"हो गया?" उसने अपने से पूछा, लेकिन उसका उत्तर दिये बिना वह चिट्ठियां छांटने लगा। कई पत्र थे: एक मां का, दूसरा ओल्गा का, तीसरा ग्वोज्देव का और चौथे पत्र को देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसपर पता "मौसमी सार्जेन्ट" की लिखावट में लिखा हुआ था और उसके नीचे आलेख था "प्रेषक: कप्तान क० कुकूश्किन।" इसे उसने पहले पढ़ा।

कुकूश्किन ने लिखा था कि वह फिर धराशायी हो गया है: उसका हवाई जहाज़ गोली का शिकार हुआ और आग पकड़ गया। जलते हुए हवाई जहाज से वह कूदा और अपनी पांतों के अन्दर उतरने में कामयाब हो गया, लेकिन इसमें उसकी बांह उतर गयी और अब वह अपने हवाई अड्डे के दवादारू केन्द्र में पड़ा था जहां वह, उसके अपने शब्दों में, "एनीमा देनेवाले बहादुरों के बीच ऊब का शिकार होकर मरा जा रहा है।" फिर भी उसे कोई चिन्ता नहीं थी, क्योंकि उसे विश्वास था कि वह शीघ्र ही युद्ध-पांत में फिर शामिल हो जायेगा। उसने आगे लिखा था कि वह यह पत्र उसकी – अलेक्सेई की – पत्र-व्यवहारिका वेरा गव्रीलोवा से लिखा रहा है, जो उसकी ही बदौलत आज भी रेजीमेंट में "मौसमी सार्जेन्ट" कहलाती है। पत्र में यह भी लिखा था कि वेरा बहुत बढ़िया कामरेड है और इस दुर्भाग्यपूर्ण क्षण में वही मुख्य सहारा है। इसपर वेरा ने अपनी ओर से कोष्ठक में टीका कर दी थी कि वास्तव में यह कोस्त्या की अतिशयोक्ति है। इस पत्र से अलेक्सेई को पता चला कि रेजीमेंट में अभी भी लोग उसे याद करते हैं, और भोजन-कक्ष में रेजीमेंट के जिन

वीरों के चित्र टंगे हुए हैं, उनमें अलेक्सेई का चित्र जोड़ दिया गया है और गार्ड-सैनिकों ने यह आशा नहीं छोड़ी है कि वह एक दिन फिर उनके बीच लौट आयेगा। गार्ड्स! मेरेस्येव हंसा और सिर हिला उठा। कुकूश्किन और उसकी स्वयंसेविका सेक्रेटरी दोनों ही, अगर रेजीमेंट को गार्ड-सेना का सम्मान प्रदान किये जाने जैसी महत्वपूर्ण घटना की सूचना देना भूल गये हैं, तो उनके दिमाग़ किसी महत्त्वपूर्ण बातों में लीन हैं।

फिर अलेक्सेई ने मां का पत्र खोला। वह तरह का बकवादी ढंग का पत्र था जैसा कि बूढ़ी मांएं लिखा करती हैं — काम-काज कैसा चल रहा है, उसे ठंड तो नहीं लग गयी, क्या भोजन काफ़ी मिल रहा है, क्या उसे शीतकालीन कपड़े प्राप्त हुए हैं और क्या उसके लिए वह दस्तानों का जोड़ा बुनकर भेज दे? वह पांच जोड़े पहले ही बुन चुकी थी और उन्हें लाल सेना के सिपाहियों को उपहारस्वरूप भेज चुकी थी। और हर जोड़े के अंगूठे में उसने एक पंक्ति में लिख दिया था: "इन्हें पहनने के लिए मैं तुम्हारी लम्बी उम्र की कामना करती हूं।" उसने लिखा था कि उसे यह जाकर ख़ुशी होगी कि उन्हीं में से एक जोड़ा अलेक्सेई को मिल गया है! वे बहुत सुन्दर, ख़ूब गर्म दस्ताने थे, जिन्हें उसने अपने खरहों का ऊन काटकर बुना था। हां, वह पहले यह बताना तो भूल ही गयी कि यह अब खरहों के एक पूरे परिवार को — एक नर, एक मादा और सात बच्चों को — पाल रही है। इतनी सब प्यार-भरी, बूढ़ी मांओं जैसी बातों के बाद कहीं जाकर उसने सबसे महत्वपूर्ण बात लिखी थी: स्तालिनग्राद से जर्मन भगा दिये गये हैं, वहां वे भारी, बड़ी भारी तादाद में मारे गये थे, और लोग कहते हैं कि उनके बड़े सेनापतियों में से कोई एक बंदी भी बना लिया गया है। और जब वे पूरी तरह भगा दिये गये थे, तब ओल्गा पांच दिन की छुट्टी पर कमीशिन आयी थी। वह उसी के घर ठहरी थी, क्योंकि ओल्गा का मकान एक बम से गिर गया है। ओल्गा अब सैपर्स की बटालियन में है और लेफ़्टीनेंट हो गयी है। उसे कंधे में घाव लगा था, मगर अब वह अच्छी हो गयी है और उसे कोई पदक देकर सम्मानित किया गया है — यह पदक क्या था, उसके विषय में, सचमुच, बुढ़िया लिखना ही भूल गयी थी। उसने आगे लिखा था कि उसके घर में रहते समय ओल्गा सारे समय सोती रहती थी और जब जागती तो अलेक्सेई

की ही बातें करती ; और वे लोग ताश के पत्तों से क़िस्मत बताते थे तो हर बार चिड़ी के बादशाह के ऊपर पान की बेगम आती थी। इसका क्या मतलब है अलेक्सेई जानता था! जहां तक मां का सम्बन्ध है, उसने लिखा था कि वह उस पान की बेगम से बेहतर बहू की कामना नहीं कर सकती।

अलेक्सेई बूढ़ी मां की निश्छल कूटनीति पर मुसकुराया और सावधानी से वह रुपहला लिफ़ाफ़ा खोला जिसमें "पान की बेगम" का पत्र था। वह कोई लम्बा पत्र नहीं था। ओल्गा ने लिखा था कि 'खाइयां' खोदने के बाद उस श्रम-बटालियन के सर्वोत्तम सदस्यों को नियमित फ़ौज की सैपर्स यूनिट में ले लिया गया। उसका पद अब लेफ़्टीनेंट-टेक्नीशियन है। उसकी ही यूनिट थी जिसने शत्रु की गोलाबारी के वक़्त ममायेव कुरगान की क़िलेबन्दी बनायी थी, जो अब इतनी प्रसिद्ध हो गयी है, और ट्रैक्टर कारख़ाने के चारों ओर भी क़िलेबन्दी खड़ी की थी, इसके लिए उस यूनिट को "लाल झण्डे का पदक" प्राप्त हुआ है। ओल्गा ने लिखा था कि उन्हें बड़े कठिन काल का सामना करना पड़ रहा था, और हर चीज़— डिब्बाबन्द गोश्त से लेकर फावड़े तक वोल्गा की दूसरी ओर से लाना पड़ता था, जहां मशीनगनों की बौछार बराबर होती रहती थी। उसने यह भी लिखा था कि नगर में एक भी इमारत सही-सलामत नहीं बची और धरती में गड्ढे पड़ गये हैं और वे चांद के विशालाकार फ़ोटो जैसे दिखाई देते हैं।

ओल्गा ने लिखा था कि जब उसने अस्पताल छोड़ा और उसे अन्य लोगों के साथ एक कार में स्तालिनग्राद के बीच से ले जाया गया तो उसने फ़ासिस्टों की लाशों के अम्बार लगे देखे, जिन्हें गाड़ने के लिए जमा किया गया था। और अभी कितनी और लाशें सड़कों पर पड़ी हैं। "और मैं कितनी चाह करने लगी कि काश, तुम्हारा वह टैंकची दोस्त—उसका मैं नाम भूल गयी हूं, वही जिसका सारा परिवार मारा जा चुका है— यहां आ पाता और यह सब अपनी आंखों देखता। अपनी सौगंध, मेरा ख़्याल है कि इस सबकी फ़िल्म बनायी जानी चाहिए और उस जैसे लोगों को दिखाई जानी चाहिए। वे लोग देखें कि शत्रु से हमने कैसा बदला लिया है!" अंत में उसने लिखा था—अलेक्सेई ने इस दुर्बोध्य वाक्य को

कई बार पढ़ा—कि अब, स्तालिनग्राद के युद्ध के बाद वह महसूस करने लगी है कि वह अलेक्सेई के—वीरों के वीर के—योग्य हो गयी है। यह पत्र जल्दी में रेलवे स्टेशन पर लिखा गया था, जहां उसकी ट्रेन रुकी थी। ओल्गा को पता नहीं था कि वे लोग कहां ले जाये जा रहे हैं और इसलिए वह यह सूचित न कर सकी थी कि उसके पोस्ट आफ़िस का नम्बर क्या है। फलतः जब तक उसका दूसरा पत्र नहीं आया, तब तक अलेक्सेई उसे पत्र नहीं लिख सका और यह नहीं कह सका कि वह नन्हीं-सी, दुबली-पतली लड़की, जो घनघोर युद्ध के बीच इतनी लगन से मेहनत करती रही, वही—वह ओल्गा स्वयं ही—असली वीरों की वीर है। उसने लिफ़ाफ़ा फिर उलटा और प्रेषक में यह नाम स्पष्ट रूप से पढ़ा: गार्ड जूनियर लेफ़्टीनेंट-टेक्नीशियन, आदि आदि।

हर बार, जब अलेक्सेई को हवाई अड्डे पर कोई अवकाश का क्षण मिल जाता तो वह पत्र निकाल लेता और उसे फिर पढ़ता और मैदान की बेधती हुई सर्द हवा के बीच और अपने हिम-शीतल कमरे में, जो अभी भी उसका निवास-स्थान था, वह पत्र बहुत दिनों तक उसे उष्णता प्रदान करता प्रतीत होता रहा।

अंत में शिक्षक नाऊमोव ने उसकी परीक्षा-उड़ान के लिए एक दिन निश्चित किया। उसे एक "उत-२" विमान उड़ाना था और उड़ान का निरीक्षण शिक्षक को नहीं, स्कूल के मुख्याधिकारी द्वारा किया जाना था—उसी बलिष्ठ, रक्ताभ, वज्रांग लेफ़्टीनेंट-कर्नल द्वारा, जिसने अलेक्सेई के आगमन के दिन उसका उतनी उदासीनता से स्वागत किया था।

यह बात ध्यान में रखकर कि भूमि से उसको सूक्ष्म दृष्टि से ताका जा रहा है और उसकी क़िस्मत का फ़ैसला होने जा रहा है, अलेक्सेई ने उस दिन ख़ुद अपने को मात कर दिया। उस छोटे-से हल्के विमान को लेकर उसने ऐसी कलाबाज़ियां दिखायीं कि लेफ़्टीनेंट-कर्नल अपने प्रशंसात्मक उद्गारों को संयमित न रख सका। जब मेरेस्येव हवाई जहाज़ से उतरा और मुख्याधिकारी के सामने उसने अपने को पेश किया, तो नाऊमोव के चेहरे की हर झुर्री से जैसा आनन्द और उत्तेजना का भाव टपकता दिखाई दिया, उसको देखकर वह बता सकता था कि उसने मैदान मार लिया है।

"तुम्हारी शैली बड़ी शानदार है! हां... तुम हो वह व्यक्ति जिसे मैं ख़ुदा का बनाया हवाबाज़ बना मानता हूं," लेफ़्टीनेंट-कर्नल ने रोब से कहा, "सुनिये, श्रीमान, आप यहां शिक्षक के रूप में रहना पसंद करेंगे? हमें तुम जैसे आदमियों की जरूरत है।"

मेरेस्येव ने साफ़-साफ़ मना कर दिया।

"ख़ैर, तुम मूर्ख हो। लड़ तो कोई भी सकता है, लेकिन यहां तुम लोगों को विमान चलाना सिखाओगे!"

यकायक लेफ़्टीनेंट-कर्नल की नजर उस छड़ी पर पड़ गयी जिस पर मेरेस्येव झुका खड़ा था और उसका चेहरा नीला-पीला पड़ गया।

"यह चीज़ तुमने फिर हाथ में ली!" वह गरज उठा, "इधर दो! तुम क्या समझते हो कि छड़ी लेकर पिकनिक पर जा रहे हो? तुम हो कहां, किसी कुंज-मार्ग में?.. हुक्म-उदूली के अपराध में अड़तालीस घंटे की तनहाई!.. ये शूर हैं! अपने लिए तावीज़ लाते हैं। यही रहा तो कल तुम हवाई जहाज़ के ढांचे पर ईंट का इक्का पोट दोगे! अड़तालीस घंटे! सुनते हो, मैं क्या कह रहा हूं?"

लेक्टीनेंट-कर्नल ने मेरेस्येव के हाथ से छड़ी झपट ली और किसी चीज़ पर पटककर उसे तोड़ डालने के लिए चारों तरफ़ नजर दाड़ायी।

"कामरेड लेफ़्टीनेंट-कर्नल, आज्ञा हो तो कहूं कि इसके पैर नहीं हैं," शिक्षक नाऊमोव ने अपने मित्र के पक्ष में हस्तक्षेप किया।

मुख्याधिकारी का चेहरा और भी स्याह पड़ गया, उसकी आंखें निकल आयीं और वह भारी सांसें लेने लगा।

"क्या मतलब है तुम्हारा? तुम मुझे बेवक़ूफ़ बनाना चाहते हो, क्यों? यह सच है?"

मेरेस्येव ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया और कनखियों से अपनी अमूल्य छड़ी पर नजर डाली, जिसपर ख़तरा मंडरा रहा था। सचमुच, उन दिनों वह वसीली वसील्येविच के उपहार से कभी भी वंचित नहीं रहता।

लेफ़्टीनेंट-कर्नल ने मित्रों की ओर संदिग्ध दृष्टि से देखा और भुनभुनाया:

"ख़ैर... अगर बात ऐसी है... तो, ठीक है... अपने पैर दिखाओ... हूं!.."

अलेक्सेई प्रथम श्रेणी का सर्टिफ़िकेट प्राप्त कर प्रशिक्षण विद्यालय से मुक्त हुआ। वह चिड़चिड़ा लेफ़्टीनेंट-कर्नल, वह पुराना "आकाशी भेड़िया", उसकी महान सिद्धि की जितनी सराहना कर पाया, उतनी और कोई नहीं, और प्रशंसा में भी उसने शब्दों की किफ़ायत नहीं की। उसने प्रमाणित किया कि मेरेस्येव "कुशल, अनुभवी और सुदृढ़ इच्छा-शक्ति का विमान-चालक है और विमान-सेवा की किसी भी शाखा के लिए उपयुक्त है।"

१०

मेरेस्येव ने शेष शीतकाल और वसंत का प्रारम्भिक काल एक सुधार विद्यालय में बिताया। यह एक बहुत पुराना फ़ौजी उड्डयन विद्यालय था, जिसका हवाई अड्डा बहुत बढ़िया है, रहने के क्वार्टर सुन्दर हैं और थियेटर-समेत एक शानदार क्लब-भवन है जहां मास्को की थियेट्रिकल कम्पनियां कभी-कभी अपने खेल करती थीं। इस स्कूल में भी बड़ी भीड़ थी, मगर युद्ध-पूर्व के नियमों का सख़्ती से पालन होता था और शिक्षार्थियों को अपनी पोशाक की सूक्ष्म बातों तक के लिए सावधान रहना पडता था, क्योंकि अगर बूट पर पालिश नहीं है, अगर कोट का एक भी बटन ग़ायब है, या अगर जल्दी में नक़्शे का केस पेटी के ऊपर ही पहन लिया गया, तो अभियुक्त को कमांडेंट के हुक्म से दो घंटे की ड्रिल करनी पड़ती थी।

विमान-चालकों का एक बड़ा दल, जिसमें अलेक्सेई मेरेस्येव भी था, एक नये प्रकार के सोवियत लड़ाकू विमान 'ला-५' को चलाना सीख रहा था। शिक्षण सर्वांग-सम्पन्न था और उसमें विमान के इंजन तथा अन्य भागों का अध्ययन भी शामिल था। इस छोटे-से अर्से में, जिसमें अलेक्सेई फ़ौज से ग़ैरहाजिर रहा, सोवियत उड्डयन कला ने जो प्रगति कर ली, उसके बारे में जब व्याख्यानों से उसे पता चला तो वह अवाक् रह गया। युद्ध के प्रारम्भिक काल में जो बड़ा साहसपूर्ण परिवर्तन प्रतीत होता था, वही अब बुरी तरह पुराना पड़ चुका था। वे तीव्रगामी "ला" और हल्के, ऊंचे उड़नेवाले "मिग" जो युद्धारम्भ में श्रेष्ठ वैज्ञानिक कृतित्व प्रतीत होते थे, अब उपयोग से अलग किये जा रहे थे और उनकी जगह पर नयी

डिज़ाइन के हवाई जहाज़ भेजे जा रहे थे, जिनके निर्माण की पद्धति सोवियत फ़ैक्टरियों ने कल्पनातीत अल्प काल में सीख ली थी: ताज़े से ताज़ नमूने के "याक" विमान, "ला-५" के हवाई जहाज़, जिनका अब फ़ैशन चल गया था और दो सीटोंवाले "इल-२"–"उड़न टैंक" जो धरती को भूंजकर रख देते थे और शत्रु के सिर पर बमों, गोलों और गोलियों की बौछार करते थे–जर्मन फ़ौजियों ने घबराकर इनका नाम "काली मौत" रख दिया था। इन नये हवाई जहाज़ों के कारण, जिनको युद्धरत लोगों की प्रतिभा ने जन्म दिया था, आकाश-युद्ध की कला अत्यन्त जटिल हो गयी थी और उसके लिए न सिर्फ़ उस मशीन के ज्ञान की आवश्यकता थी जिसे विमान-चालक चला रहा हो और न सिर्फ़ अदम्य साहस दरकार था, बल्कि युद्ध-क्षेत्र में अपनी स्थिति का सही अनुमान कर पाने, आकाश-युद्ध को उसके अंगभूत भागों में विभाजित करने, और आदेशों की प्रतीक्षा किये बिना स्वतंत्रतापूर्वक फ़ैसले करने और उनपर अमल करने की क्षमता की भी आवश्यकता थी।

यह सब अत्यन्त दिलचस्प था। लेकिन मोर्चे पर भयंकर और अविश्रांत प्रत्याक्रमण युद्ध चल रहा था, और उस साफ़-सुथरे, ऊंचे कक्षा-कक्ष में आरामदेह, काली सतहवाली मेज़ों के सामने बैठे व्याख्यान सुनते हुए, अलेक्सेई मेरेस्येव को बड़ी टीस होती और वह मोर्चे पर पहुंच जाने के लिए आतुर हो उठता, युद्ध की पांत के वातावरण के लिए तड़प उठता। शारीरिक पीड़ा पर हावी होना वह सीख गया था, जो बातें असम्भव मालूम होती थीं, उन्हें कर डालने के लिए अपने को विवश करने की क्षमता उसने प्राप्त कर ली थी, मगर इस ज़बर्दस्ती की निष्क्रियता की ऊब से पार पाने की इच्छा-शक्ति का उसमें अभाव था, और कभी-कभी हफ़्तों तक वह खिन्न चित्त, खोया हुआ सा और चिड़चिड़े स्वभाव से विद्यालय में टहलता रहता था।

अलेक्सेई के सौभाग्य से, जिस समय वह विद्यालय में था, उसी समय मेजर स्त्रुच्कोव भी वहां था। वे पुराने मित्रों की भांति मिले। स्त्रुच्कोव वहां अलेक्सेई के आने के दो हफ़्तों के बाद आया था, मगर वह विद्यालय की विचित्र अमली ज़िंदगी में फ़ौरन डूब गया और अपने को उसके अत्यन्त सख़्त नियमों के अनुकूल बना लिया जो युद्ध-काल में बिल्कुल निरर्थक मालूम

होते थे और हर एक के साथ घुल-मिल गया। अलेक्सेई की मानसिक स्थिति का कारण वह फ़ौरन समझ गया, और रात में अपने-अपने क्वार्टरों में सोने के लिए जाने के पहले स्नानागार से निकलकर वह सीधा अलेक्सेई के पास जाता और पुरमज़ाक़ ढंग से उसे छेड़ता और कहता :

"दुख न कर, यार! अपने लिए भी बहुत लड़ाई बाक़ी रहेगी! देखो तो अभी हम लोग बर्लिन से कितनी दूर हैं! अभी मीलों, मीलों जाना है। फ़िक्र न करो, हमें भी अपना हिस्सा मिलेगा। हम भी लड़ाई से अपना जी भर सकेंगे।"

पिछले दो तीन महीनों में, जिनमें वे एक दूसरे को न देख सके थे, मेजर दुबला हो गया था और ढल गया था – वह "चूर-चूर" मालूम होता था, जैसा कि फ़ौज में कहा जाता है।

जाड़े के मध्य में उस दल ने जिसमें मेरेस्येव और स्त्रुच्कोव रखे गये थे, उड़ान का अभ्यास शुरू किया। इस समय तक अलेक्सेई छोटे-से, नन्हें पंखोंवाले "ला-५" विमान से पूरी तरह परिचित हो गया था, जिसकी शकल देखकर उसे उड़न-मछली की याद हो जाती थी। अक्सर, मध्यान्तर काल में वह हवाई अड्डे में जाता और इन विमानों को थोड़ी-सी दौड़ के बाद सीधे आसमान में उठ जाते देखता और जब वे मोड़ लेते तो उनके नीले-से बाज़ुओं के नीचे के हिस्से को धूप में चमकते निहारता रहता। किसी विमान के पास वह आ जाता, उसकी परीक्षा करता, उसके पंखों को ठोंक-बजाता, मानो वह कोई मशीन नहीं, सुन्दर, बढ़िया नस्ल का, भली भांति खिलाया-पिलाया गया घोड़ा हो। आख़िरकार सारे दल को स्टार्ट की रेखा पर पांतबन्द कर दिया गया। हर व्यक्ति अपनी कुशलता को परखने के लिए उत्सुक था और उनमें संयमित कलह शुरू हो गया कि पहले कौन जायेगा। शिक्षक ने पहले जिसका नाम पुकारा वह स्त्रुच्कोव था। मेजर की आंखें चमक उठीं, वह जानबूझकर मुसकुराया और अपना पैराशूट बांधते समय वह उत्तेजनापूर्वक एक धुन गुनगुनाने लगा और कॉकपिट का ढक्कन बन्द कर लिया।

इंजन गरज उठा, हवाई जहाज़ छूटा और मैदान में दौड़ पड़ा, वह अपने पीछे बर्फ़ के चूरे की लकीर छोड़ गया जो धूप में इंद्रधनुष की भांति

चमक उठी और क्षण भर में ही वह आसमान में पहुंच गया, उसके पंख धूप में दमकने लगे। स्त्रुच्कोव ने हवाई अड्डे के ऊपर अपने जहाज़ से पतली-सी वक्र रेखा खींच दी, कई बार सुन्दर चक्कर लगाये, होशियारी और ख़ूबसूरती से पंखों के बल लुढ़का, निश्चित किये गये करतब दिखाये और आंखों से ओझल हो गया, यकायक स्कूल की छत के ऊपर फिर प्रगट हो गया और इंजन धड़धड़ाते हुए हवाई अड्डे को इस तरह पूरे वेग से पार कर गया कि उन शिक्षार्थियों के सिर से टोपियां लगभग उड़ गयीं जो अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे, और फिर ग़ायब हो गया। लेकिन वह शीघ्र ही वापस लौट आया और अब गम्भीरतापूर्वक नीचे आते हुए उसने अपने हवाई जहाज़ को होशियारी से तीनों पहियों के बल उतार दिया। वह उत्तेजित, गर्वित और आनन्द से उन्मत्त भाव से कॉकपिट से कूद आया, ऐसे लड़के की भांति, जो कोई विनोदपूर्ण चाल खेलने में सफल हो गया हो।

"यह मशीन नहीं है यह तो वायलिन है, भगवान की क़सम!" शिक्षक की बात काटकर, जो उसे इतनी असावधानी से उड़ान करने पर झिड़क रहा था, वह हांफता हुआ बोला। "इसपर तो तुम चाइकोव्स्की की धुनें निकाल सकते हो, कह देता हूं!" मेरेस्येव के चारों ओर अपनी बलिष्ठ भुजाएं लपेटते हुए वह बोला: "सब ठीक है, अलेक्सेई!"

सचमुच मशीन अच्छी थी। इसपर हर आदमी सहमत था। मेरेस्येव की बारी आयी। पेडलों से अपने पांव बांधने के बाद वह आसमान में उठा और यकायक उसने महसूस किया कि उस जैसे पैरविहीन सवार के लिए उसका घोड़ा काफ़ी जबर्दस्त है और संभालने के लिए कुछ विशेष सावधानी की आवश्यकता पड़ेगी। फुदककर उड़ते समय वह मशीन का वैसा सम्पूर्ण सम्पर्क न अनुभव कर सका जो उड़ान में आनन्द पैदा कर देता है। वह बड़े बढ़िया ढंग से बनी मशीन थी। वह न सिर्फ़ प्रत्येक निर्देश का पालन करती थी, बल्कि स्टीयरिंग गीयर पर रखे हाथों की हर कंपकंपी तक का इशारा मानती थी और फ़ौरन उसके अनुकूल करतब दिखाने लगती थी। निर्देश-पालन में वह सचमुच स्वरबद्ध वायलिन की भांति थी। यहीं अलेक्सेई को अपनी असाध्य क्षति, अपने पैर की असंवेदनशीलता का सबसे जबर्दस्त अहसास हुआ और वह समझ गया कि इस तरह के हवाई

जहाज़ में सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम पैर भी, श्रेष्ठतम प्रशिक्षण के बावजूद, सजीव संवेदनशील लचीले पैरों का वैकल्पिक काम नहीं दे सकते।

हवाई जहाज़ बड़े सहज भाव से और लचीली गति से हवा को चीरता बढ़ रहा था और स्टीयरिंग गीयर के प्रत्येक इशारे का पालन कर रहा था, लेकिन अलेक्सेई को उससे डर लग रहा था। उसने गौर किया कि एकदम मोड़ लेते समय उसके पैर देर कर देते थे, और तारतम्य स्थापित नहीं कर पाते थे जो हर विमान-चालक विचार जैसी गति की भांति साध लेता है। इस देरी से हवाई जहाज़ चक्कर खा सकता है और घातक सिद्ध हो सकता है। अलेक्सेई ने उस घोड़े जैसा महसूस किया, जिसके पैर बंधे हुए थे। वह कोई कायर नहीं था, वह मारे जाने से भी नहीं डरता था; वह तो यह देखे बिना ही कि उसका पैराशूट ठीक है या नहीं, उड़ान पर चल दिया था, मगर उसे डर था कि ज़रा-सी ग़लती से वह लड़ाकू कमान से बहिष्कृत किया जा सकता है और उसके परमप्रिय पेशे के दरवाज़े हमेशा के लिए बंद हो सकते हैं। वह और भी सावधान था और बिल्कुल परेशान हालत में उसने हवाई जहाज़ उतारा। ऐसा करने में अपने पैरों की गतिहीनता के कारण वह इतनी बुरी तरह "उछला" कि हवाई जहाज़ बर्फ़ पर कई बार भौंड़े ढंग से फुदका।

अलेक्सेई ख़ामोशी के साथ और भौंहें सिकोड़े कॉकपिट से उतरा। उसके साथी और शिक्षक तक ने अपनी उलझन छिपाकर उसकी सराहना की और बधाई दी, मगर इस उदारता से उसे ठेस ही लगी। उसने उन्हें एक तरफ़ हटा दिया और बर्फ़ पर लुढ़कती हुई चाल से, अपने पैर घसीटते हुए वह विद्यालय की मटमैली इमारत की तरफ़ लंगड़ाता चल पड़ा। लड़ाकू विमान में उड़ लेने के बाद अब असफलता। मार्च की उस सुबह के बाद, जब उसका ध्वस्त हवाई जहाज़ चीड़ों के शिखरों से जा टकराया था, वह पहली बार आज इस दुर्भाग्य का शिकार हुआ। उसने दोपहर का भोजन नहीं किया और रात को भी भोजन करने न गया। विद्यालय के नियमों का उल्लंघन करके, जिनके अनुसार दिन में शिक्षार्थी के शयनागार में रहने पर सख़्त पाबन्दी थी, वह चारपाई पर जूते समेत पैर रखे और अपने सिर के नीचे हाथ रखे पड़ा हुआ था, और जो लोग भी उसकी वेदना से परिचित थे—वहां से गुज़रनेवाले अर्दली से लेकर अफ़सर तक, किसी

ने भी उसे इसपर नहीं झिड़का। स्त्रुच्कोव ने झांका और उससे बात करने की कोशिश की, मगर कोई जवाब न पाकर, करुणापूर्वक सिर हिलाते हुए वापस लौट गया।

स्त्रुच्कोव के कमरे से निकलते ही, लगभग फ़ौरन, ट्रेनिंग स्कूल के राजनीतिक अधिकारी लेफ़्टीनेंट-कर्नल कपूस्तिन ने प्रवेश किया। वह नाटा-सा, मोटे शीशे का चश्मा पहननेवाला, कुरूप-सा व्यक्ति था, और फ़िट न होनेवाली वर्दी इस तरह पहने रहता था, मानो कोई बोरा टंगा हो। शिक्षार्थी अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर उसका व्याख्यान बड़े चाव से सुनते थे और उस समय वह ऊबड़-खाबड़ दिखाई देनेवाला व्यक्ति उन्हें यह गर्व महसूस करा देता था कि इस महान युद्ध में वे भी योग दे रहे हैं। लेकिन अफ़सर की हैसियत से वे उसका कोई विशेष मान नहीं करते थे, वे उसे कोरा ग़ैर-फ़ौजी मानते थे, जो इत्तफ़ाक़ से वायुयान सेना में आ गया है और उड्डयन कला के विषय में कुछ नहीं जानता है। मेरेस्येव की ओर कोई ध्यान न देकर कपूस्तिन ने कमरे में चारों तरफ़ देखा, हवा सूंघी और यकायक क्रोध से चिल्ला उठा:

"कौन मूर्ख यहां सिगरेट पी रहा था? सिगरेट पीने के लिए अलग धूम्रपान कक्ष है, या नहीं? कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट, इसका क्या मतलब है?"

"मैं सिगरेट नहीं पीता," अलेक्सेई ने चारपाई पर लेटे-लेटे ही उपेक्षा से जवाब दिया।

"तुम यहां क्यों पड़े हो? तुम्हें नियम नहीं मालूम? और जब तुमसे बड़े पद का अफ़सर प्रवेश करता है, तो तुम उठते क्यों नहीं? उठ बैठो।"

यह कोई आदेश नहीं था। इसके विपरीत ग़ैर-फ़ौजी रीति से बड़ी विनम्रता के साथ वे शब्द बोले गये थे, लेकिन मेरेस्येव ने आज्ञा पालन की, शायद उदासीनता के साथ, और चारपाई के बग़ल में अटेंशन खड़ा हो गया।

"ठीक है, कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट," कपूस्तिन ने प्रोत्साहित करते हुए कहा, "और अब बैठ जाओ। आओ कुछ सलाह-मशविरा करें।"

"किसके बारे में?"

"तुम्हारे बारे में क्या किया जाना चाहिए। चलो, बाहर चलें। मैं सिगरेट पीना चाहता हूं और उसकी यहां इजाज़त नहीं है।"

वे धुंधले प्रकाश से आलोकित गलियारे में बाहर चले गये—ब्लैक आउट के लिए बिजली के बल्ब नीले रंग दिये गये थे—और खिड़की के पास खड़े हो गये। कपूस्तिन ने पाइप से धुआं छोड़ना शुरू कर दिया और हर कश से उसका चौड़ा, चिन्तनलीन मुखड़ा एक चमक से आलोकित हो उठता था।

"मैं तुम्हारे शिक्षक को आज डांट पिलाना चाहता था," उसने कहा।

"किस वास्ते?"

"कि उसने अपने ऊंचे अफ़सरों से इजाजत लिये बिना तुम्हें आकाश क्षेत्र में क्यों जाने दिया... तुम इस तरह मेरी तरफ़ क्यों घूर रहे हो? दरअसल, डांट का हक़दार तो मैं ख़ुद भी हूं कि मैंने तुमसे पहले बात क्यों न कर ली। लेकिन मुझे कभी वक़्त ही नहीं मिलता, हमेशा व्यस्त रहना पड़ता है। मैं चाहता हूं, लेकिन... ख़ैर, उसे जाने दो। देखो, मेरेस्येव, उड़ान करना तुम्हारे लिए इतना आसान नहीं है, और यही वजह है कि मैं तुम्हारे शिक्षक की ख़बर लेना चाहता हूं।"

अलेक्सेई ने कुछ न कहा। वह हैरान था कि उसके सामने खड़ा हुआ जो आदमी कश पर कश लगाये चला जा रहा है, वह कैसा व्यक्ति है। क्या नौकरशाह है, जो इसलिए खफ़ा है कि किसी ने विद्यालय के जीवन में एक असाधारण घटना के घटने की ख़बर उसको न देकर उसकी सत्ता की उपेक्षा की है? कोई तंगदिल अफ़सर है जिसे उड़ानकर्ताओं के बारे में कोई ऐसा नियम हाथ लग गया है जिसमें शारीरिक रूप से पंगु व्यक्तियों को उड़ान पर भेजने के बारे में पाबन्दी लगायी गयी है? या झक्की आदमी है जो मौक़ा लगते ही अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहता है? यह क्या चाहता है? यह आया ही क्यों, जबकि उसके बिना भी मेरेस्येव के दिल में मतली भर गयी और फांसी लगा लेने को जी हो रहा था।

मेरेस्येव का सारा अस्तित्व आग में जैसे पड़ा। बड़ी कठिनाई से ही वह अपने पर क़ाबू रख पाया। महीनों की यंत्रणा ने उसे जल्दबाज़ी में कोई नतीजा न निकालना सिखा दिया था और इस भद्दे कपूस्तिन में भी

कोई ऐसी बात थी जो उसे कमिसार वोरोब्योव की हल्की-सी याद दिला जाती थी जिसे मन में अलेक्सेई असली इनसान पुकारा करता था। कपूस्तिन के पाइप की आग दमक उठती और बुझ जाती और उसकी चौड़ी, मांसल नाक और चतुर तथा पैनी आंखें नीले अंधेरे में कभी उभर उठतीं और कभी ग़ायब हो जातीं। कपूस्तिन आगे कहता गया :

"सुनो, मेरेस्येव, मैं तुम्हारी तारीफ़ नहीं करना चाहता, मगर कहो तुम कुछ भी, दुनिया में एक तुम्हीं पैरहीन आदमी हो जो लड़ाकू विमान को संभाल रहे हो। एक मात्र!" उसने अपने पाइप की नली खोल डाली और उलझन के भाव से सिर हिलाया, "युद्धरत सेनाओं में वापस लौट जाने की तुम्हारी आकांक्षा के बारे में कुछ नहीं कहता। वह सचमुच प्रशंसनीय है, लेकिन उसमें कोई ख़ास बात भी नहीं है। ऐसे ज़माने में जीत हासिल करने के लिए हर आदमी अपनी शक्ति भर काम करना चाहता है... इस सड़ियल पाइप को हो क्या गया है?"

वह नली को साफ़ करने में फिर लग गया और उस काम में बिल्कुल लीन-सा लगने लगा; लेकिन एक अस्पष्ट आशंका से घबराया हुआ अलेक्सेई अब तनाव महसूस कर रहा था—यह सुनने को उत्सुक था कि वह क्या कहने जा रहा है। अपने पाइप से उलझना जारी रखते हुए कपूस्तिन बोलता ही चला गया—ऊपर से यही मालूम होता था कि उसके शब्दों का क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसकी उसे परवाह नहीं थी :

"यह सिर्फ़ सीनियर लेफ़्टीनेंट अलेक्सेई मेरेस्येव का व्यक्तिगत मामला नहीं है। मूल बात यह है कि तुम जैसे पैरहीन व्यक्ति ने एक ऐसी कला हासिल कर ली जिसके विषय में अब तक सारी दुनिया यह मानती थी कि सिर्फ़ शारीरिक रूप से सर्वांग सम्पूर्ण व्यक्ति द्वारा ही वह सिद्ध हो सकती है और वह भी सौ में एक आदमी द्वारा। तुम सिर्फ़ नागरिक मेरेस्येव नहीं हो, तुम महान प्रयोगकर्त्ता हो... आह!.. मैंने इसे ठीक कर ही लिया आख़िर! इसमें कोई चीज़ अड़ गयी होगी!.. और इसलिए मैं कहता हूं, हम तुम्हारे साथ साधारण विमान-चालक जैसा व्यवहार नहीं कर सकते, हमें कोई हक़ नहीं है—समझते हो, कोई हक़ नहीं है। तुमने एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग शुरू किया है, और यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम जिस तरह भी हो सके, हर तरह तुम्हारी सहायता करें। लेकिन किस तरह?

यह तुम्हें बताना चाहिए। बताओ, तुम्हारी मदद हम कैसे कर सकते हैं?"

कपूस्तिन ने फिर पाइप भर लिया, उसे फिर जलाया और फिर कभी प्रकट होती और कभी ग़ायब होती हुई लाल-लाल दमक उसके चौड़े चेहरे और मांसल नाक को अंधेरे से उबार लेती और फिर समर्पण कर देती।

उसने वायदा किया कि विद्यालय के प्रधान के साथ बात करके वह मेरेस्येव के लिए कुछ अतिरिक्त उड़ानों की व्यवस्था करा देगा और अलेक्सेई को सुझाव दिया कि अपने अभ्यास के लिए वह स्वयं ही एक कार्यक्रम बनाये।

"लेकिन देखिये कितना ज्यादा पेट्रोल ख़र्च होगा," अलेक्सेई ने खेद प्रगट करते हुए कहा और जिस सहज भाव से इस नाटे-से, भद्दे व्यक्ति ने उसके सारे सन्देह हिरन कर दिये, उसपर हैरान रह गया।

"पेट्रोल सचमुच महत्त्व की चीज़ है, और वह भी आजकल। उसे हम चुल्लू से नापते हैं। लेकिन बहुत-सी चीजें पेट्रोल से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं," कपूस्तिन ने जवाब दिया और इतना कहकर उसने अपनी एड़ी से पाइप ठोंककर सावधानी से उसकी गर्म राख झाड़ दी।

अगले दिन मेरेस्येव ने अकेले अभ्यास शुरू किया, और वह उसने सिर्फ़ उतने धीरज से ही न किया जो उसने चलना-फिरना, दौड़ना और नाचना सीखने में दिखाया था, बल्कि आत्मप्रेरित व्यक्ति की भांति किया। उसने उड़ान की टेकनीक का विश्लेषण करने का, एक एक अंगांग का अध्ययन करने का, सूक्ष्मतम स्पन्दनों के रूप में उसका वर्गीकरण करने का प्रयत्न किया और हर बात को अलग से सीखने का प्रयास किया। जो बातें अपने यौवन काल में उसने सहज वृत्तिवश सीख ली थीं, उनका अब वह अध्ययन कर रहा था – हां अध्ययन! अतीत में जो ज्ञान उसने अभ्यास और आदत के द्वारा प्राप्त कर लिया था, उसे अब उसने बौद्धिक रूप से प्राप्त किया। विमान-संचालन की क्रिया को उसके आंगिक भागों में विभाजित करके उसने प्रत्येक अंग की विशेष कुशलता सीखी और पैरों की सारी क्रियाशीलता सम्बन्धी संवेदनाओं को अपनी पिण्डुरियों में पैदा किया।

यह बड़ा सख़्त और परिश्रम का काम था, और परिणाम इतना कम होता था कि वह कठिनाई ही से दिखाई देता था। फिर भी, हर बार जब अलेक्सेई आसमान में उड़ जाता, तो वह महसूस करता कि वायुयान

अधिकाधिक उसके शरीर का अंग बनता जा रहा है और वह अधिकाधिक उसकी आज्ञा का पालन करने लगा है।

"कहिये, श्रीमान, कैसा चल रहा है?" जब कभी कपूस्तिन मिल जाता, वह पूछ बैठता।

जवाब में मेरेस्येव कहता, "शाबाश!" वह अतिशयोक्ति नहीं कर रहा था। वह प्रगति कर रहा था, शायद धीमी, मगर सुनिश्चित, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि हवाई जहाज में उसे यह महसूस होना बन्द हो गया कि वह किसी द्रुतगामी, तेजस्वी घोड़े पर सवार है। अपनी कुशलता में उसका आत्मविश्वास फिर लौट आया और यह चीज़ वायुयान में भी संचरित हो उठी और वह सजीव वस्तु की भांति – जैसे घोड़ा महसूस करता है कि उसकी पीठ पर कुशल सवार बैठा है – अधिक आज्ञाकारी बन गया और धीरे-धीरे अलेक्सेई के सामने अपनी उड़ान सम्बन्धी सारी कुशलता प्रदर्शित करने लगा।

११

बहुत दिनों पहले, बचपन में, अलेक्सेई शुरू-शुरू की चिकनी, पारदर्शक बर्फ़ पर, जो वोलगा में उस जगह जहां वह रहता था, छोटी-सी खाड़ी में जम जाती थी, स्केटिंग की कला सीखने निकला था। वास्तव में स्केटिंग के विशेष जूते उसके पास न थे; उसकी मां उनको ख़रीदने की हैसियत में न थी। लुहार ने, जिसके यहां मां कपड़े धोया करती थी, उसकी प्रार्थना पर लकड़ी के छोटे-से लट्ठे बना दिये थे जिनमें तार की पटरियां थीं और बगल में छेद थे।

डोरों और लकड़ी की छोटी-छोटी छड़ियों की मदद से मेरेस्येव ने इन लट्ठों को अपने पुराने, थिगड़ेदार नमदे के जूतों में लगा दिया था। इनके बल पर वह नदी की पतली-सी, लचकदार, सुरीले स्वर में चरमरानेवाली बर्फ़ पर दुस्साहस करने चल पड़ा था। कमीशिन के अड़ोस-पड़ोस के सभी छोकरे आनन्द से चीख़ते-चिल्लाते, नन्हें शैतानों की भांति झपट्टा मारते, एक दूसरे के पीछे दौड़ते और अपने बर्फ़ के जूतों के बल फुदकते और नाचते इधर-उधर फिसल रहे थे। उनकी चुहल मजेदार लग रही थी,

मगर जैसे ही अलेक्सेई ने बर्फ़ पर पैर रखा, वह उसके पैरों तले से खिसकती जान पड़ी और वह पीठ के बल बुरी तरह गिर पड़ा।

वह फ़ौरन उछलकर खड़ा हो गया, इस भय से कि कहीं उसके साथी यह न समझ लें कि उसने अपने को चोट पहुंचा ली है। उसने फिर चलने का प्रयत्न किया और पीठ के बल गिरने से बचने के लिए अपने शरीर को आगे झुकाया, मगर इस बार वह नाक के बल गिर पड़ा। वह फिर उछलकर खड़ा हो गया और अपने कांपते हुए पैरों पर क्षण भर खड़े रहकर यह समझने का प्रयत्न करने लगा कि उसे क्या हो गया है और दूसरे लड़कों को देखने लगा कि वे कैसे फिसल रहे हैं। वह समझ गया कि उसे अपना शरीर न तो बहुत आगे झुकाना चाहिए और न बहुत पीछे। अपने शरीर को सीधे ताने रखने का प्रयत्न करते हुए उसने अग़ल-बग़ल कई क़दम रखे और फिर बग़ल की तरफ़ लुढ़क गया, और इस प्रकार वह गिरा और उठा और फिर गिरा और फिर उठा – यहां तक कि सांझ हो गयी। मां परेशानी में पड़ गयी जब वह ऊपर से नीचे तक बर्फ़ से सना हुआ लौटा और थकान के कारण उसके पैर कांप रहे थे।

लेकिन अगले दिन वह फिर बर्फ़ पर पहुंच गया। वह अब पहले से अधिक विश्वास के साथ चल रहा था, इतने जल्दी-जल्दी गिरता नहीं था और दौड़ लगाकर कई मीटर तक स्केटिंग भी कर लेता था, लेकिन लाख कोशिश करने पर वह और अधिक प्रगति न कर सका – हालांकि वह बर्फ़ पर सांझ तक जमा रहा।

लेकिन एक दिन – और अलेक्सेई उस ठंडे तूफ़ानी दिन को कभी नहीं भूल सका, जब पालिशदार बर्फ़ पर हवा हिम-पात का चूरा उड़ाती फिर रही थी – उसने क़िस्मत पलट दी। वह स्वयं चकित रह गया कि वह अधिकाधिक तेज़ी के साथ, और हर चक्कर के बाद और अधिक विश्वास के साथ बराबर फिसलता रहा। हर बार गिरने और चोट खाने और बार-बार फिर प्रयत्न करने के साथ उसने अलक्षित रूप में जो अनुभव प्राप्त किया था, जो थोड़ी-थोड़ी तरक़ीबें और आदतें हासिल की थीं, वे यकायक घुल-मिलकर एक रूप में ढल गयीं, और अब जब वह अपनी टांगों और पैरों को गतिशील करता, तो यह महसूस करता कि उसका सारा शरीर, उसका सम्पूर्ण बाल-सुलभ, विनोदप्रिय, हठी व्यक्तित्व

प्रफुल्लित और आनन्ददायक आत्म-विश्वास की भावना से पूरित हो रहा है"।

वही बात अब उसके साथ हो रही थी। वह वायुयान से अपने अस्तित्व को फिर एकात्मक करने का प्रयत्न करते हुए और अपने कृत्रिम पैरों के चमड़े और धातु के माध्यम से उसका स्पन्दन अनुभव करते हुए बड़े उद्यम के साथ अनेक बार उड़ा। कई बार उसे लगा कि वह सफल हो रहा है और इससे उसका उत्साह अत्यधिक बढ़ा। उसने एक कलाबाज़ी खाने की कोशिश की, मगर फ़ौरन महसूस कर लिया कि उसकी चेष्टाओं में विश्वास का अभाव है, हवाई जहाज़ हिचकता और हाथ से निकलने के लिए तड़पता-सा मालूम होता है। अपनी आशाओं को विलीन होते देखकर उसने अपना नीरस प्रशिक्षण कार्यक्रम फिर चालू कर दिया।

एक दिन मार्च में, जब बर्फ़ पिघलने लगी थी, जब उस सुबह हवाई अड्डे की ज़मीन यकायक स्याह हो गयी थी और झंझरीदार बर्फ़ इतनी सकुच गयी थी कि हवाई जहाज़ ने उसपर गहरी जुताई जैसी लकीरें छोड़ दी थीं, अलेक्सेई अपना लड़ाकू विमान लेकर हवा में उठा। जब वह उठा तो बग़ल से हवा का एक झोंका उसे अपनी राह से भटकाने लगा और उसे ठीक दिशा में रखने के लिए उसे बराबर करते रहने के लिए विवश होना पड़ा। विमान को अपनी राह पर लाने के लिए प्रयत्न करने में उसे यकायक महसूस हुआ कि वह उसकी आज्ञा का पालन कर रहा है और यह तथ्य वह अपने रोम-रोम से महसूस कर रहा था। यह भावना बिजली की कौंध की भांति जागृत हुई और शुरू में तो उसे विश्वास ही न होता था। वह इतनी निराशा भुगत चुका था कि अपने सौभाग्य पर यकायक विश्वास करना कठिन था।

उसने वायुयान तेज़ी से और एकदम दायीं तरफ़ घुमा दिया, मशीन आज्ञाकारी और नियमबद्ध बन गयी थी। उसने वही भावना अनुभव की जो उस लड़के ने वोल्गा की छोटी खाड़ी में स्याह और फुसफुसी बर्फ़ पर की थी। मनहूस दिन यकायक उज्ज्वल प्रतीत होने लगा। उसका दिल ख़ुशी से उछलने लगा, और भावावेगवश उसने गले में हल्की-सी गद्गद संवेदना अनुभव की।

किसी अदृश्य सीमा पर उसके प्रशिक्षण के अनवरत प्रयत्नों की परीक्षा हो गयी थी। वह सीमा उसने पार कर ली थी और अब वह कठिन श्रम

के अनगिनत दिनों के फल की मधुरता सहज भाव से, बिना किसी पीड़ा के चख रहा था। उसने अब यह मुख्य वस्तु प्राप्त कर ली जिसके लिए वह बहुत दिनों से प्रयत्न कर रहा था: वह अपने वायुयान से एकात्म हो गया था, उसे अपने शरीर के दीर्घित अंग की भांति ही अनुभव करने लगा था। इसमें असंवेदनशील, निस्पंद पैर भी अब बाधक न रह गये थे। उसको आनन्द की हिलोरें जिस प्रकार झकझोर रही थीं, उससे विभोर होकर उसने कई बार गहरे मोड़ लिये, एक दरार चक्कर लगाया और इसे मुश्किल से पूरा ही किया था कि विमान को चक्राकार घुमाने लगा। सीटी के स्वर के साथ धरती घूमने लगी, और हवाई अड्डा, विद्यालय भवन, अपने धारीदार फूले हुए थैलों समेत मौसम सर्वेक्षण केन्द्र की मीनारें, सभी अटूट वृत्त में लीन हो गयीं। बड़े विश्वास से उसने वायुयान को वृत्त से निकाला और सहजगति से फिर चक्कर खाया। अब जाकर उस सुप्रसिद्ध 'ला-५' विमान ने अपने सारे विदित और अविदित गुणों का उसके सामने उद्घाटन किया। अनुभवी हाथों में यह विमान कैसे करिश्मे दिखाता है! स्टीयरिंग गीयर के हर इशारे का वह संवेदनशीलता के साथ पालन करता है, सबसे बारीक कलाबाज़ी को भी वह बड़े सहज भाव से कर दिखाता है, और राकेट की भांति ठोस, लचीले और तीव्र रूप में ऊपर उठ जाता है।

मेरेस्येव कॉकपिट में से उतरा तो लड़खड़ाता हुआ, मानो वह नशे में धुत्त हो। उसके चेहरे पर मूर्खतापूर्ण मुसकान फैली हुई थी। उसने क्रुद्ध शिक्षक को नहीं देखा, न उसकी कुपित झिड़कियां सुनीं। बकने-झकने दो उसे! गार्डरूम? ठीक है, वह गार्डरूम की सजा भुगतने के लिए भी तैयार है। अब उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? एक बात साफ़ थी: वह एक विमान-चालक है, अच्छा विमान-चालक। अमूल्य पेट्रोल की जो अतिरिक्त मात्रा उसके प्रशिक्षण में व्यय हुई है, वह बरबाद नहीं हुई। वह इस ख़र्चे को सौ गुने रूप में वापस कर देगा, अगर वे उसे शीघ्र ही मोर्चे पर जाने दें और युद्ध में जूझ जाने दें।

उसके क्वार्टर में एक और विस्मय उसकी प्रतीक्षा कर रहा था: उसके तकिये पर ग्वोज्देव का पत्र पड़ा था। अपनी मंज़िल पर पहुंचने के पहले यह पत्र कहां-कहां, कितने दिनों और किसकी जेब में भटकता रहा था यह कहना कठिन था, क्योंकि लिफ़ाफ़े पर तहें पड़ी थीं, गंदगी लिपटी थी

श्रौर तेल के धब्बे पड़े थे। वह एक साफ़ लिफ़ाफ़े में बंद था जिस पर श्रन्यूता की लिखावट में पता लिखा था।

टैंकची ने श्रलेक्सेई को सूचित किया था कि उसके साथ एक गंदी घटना घट गयी थी। उसके सिर में चोट लग गयी थी—श्रौर वह भी कैसे? एक जर्मन जहाज़ के पंख से। श्रब वह श्रपने दस्ते के श्रस्पताल में है, हालांकि एक दो दिन में ही मुक्त होने की श्राशा कर रहा है। श्रौर यह कल्पनातीत घटना इस प्रकार घटी: स्तालिनग्राद में जर्मन छठी फ़ौज के कट जाने श्रौर घिर जाने के बाद उस टैंक दस्ते ने, जिसमें ग्वोज़्देव था, पीछे हटते हुए जर्मनों का मोर्चा बेध दिया श्रौर सारे दस्ते ने इस दरार से घुसकर स्तेपी प्रदेश में शत्रु के मोर्चे के पिछले भाग पर हमला कर दिया। इस हमले में टैंक बटालियन की कमान ग्वोज़्देव के हाथ में थी।

बड़ा प्यारा हमला था। इस इस्पाती बेड़े ने जर्मनों के पृष्ठ प्रदेशीय प्रशासन पर, क़िलेबन्द गांवों श्रौर रेलवे जंक्शनों पर हमला किया श्रौर उनपर इस तरह टूट पड़ा जैसे श्रासमान से बिजली। टैंकों ने सड़कों पर हमला बोल दिया श्रौर रास्ते में जो भी शत्रु श्राया, उसे गोली से उड़ाते श्रौर कुचलते हुए तहलका मचा दिया श्रौर जब जर्मन रक्षक सेना के शेष लोग भी भाग गये तो टैंक-चालकों ने श्रौर पैदल सेना के लोगों ने, जिन्हें वे श्रपने साथ लिये फिरते थे, शस्त्र-भण्डारों श्रौर पुलों को उड़ा दिया, रेलवे पटरियों श्रौर इंजन घुमाने के पाटों को उखाड़ दिया श्रौर इस प्रकार वे पीछे हटते हुए जर्मनों की ट्रेनों का रास्ता बंद कर रहे थे। क़ब्ज़े में श्राये शत्रु के भण्डारों से वे टैंकों के लिए पेट्रोल श्रौर रसद श्रादि हासिल कर लेते, श्रौर इसके पहले कि जर्मन श्रपने होश दुरुस्त कर सकें श्रौर प्रतिरोध करने के लिए सेना जुटा सकें या कम से कम यह पता लगा सकें कि ये टैंक श्रब किस दिशा में जायेंगे, ये टैंक रफ़ूचक्कर हो जाते।

"हमने, श्रलेक्सेई, बुद्योन्नी के घुड़सवारों की भांति स्तेपी के श्रार-पार हमले किये। श्रौर हमने जर्मनों को हवा कर दिया। तुम विश्वास न करोगे, मगर कभी-कभी हम सिर्फ़ तीन टैंकों श्रौर क़ब्ज़े में ली हुई एक जर्मन बख़्तरबंद गाड़ी लेकर पूरे गांव श्रौर भण्डार केन्द्रों पर श्रधिकार कर लेते थे। युद्ध में घबराहट बड़ी भारी चीज़ होती है। हमलावर सेना के लिए शत्रु की पांत में ख़ासी घबराहट फैलाना दो सुसज्जित डिवीजनों से

अकिध उपयोगी सिद्ध होता है। सिर्फ़ यह कि उसे होशियारी से बनाये रखना चाहिए, पड़ाव की आग की भांति; इस आग में नये-नये अप्रत्याशित हमलों के रूप में ईंधन बराबर डालते रहना चाहिए ताकि वह बुझ न सके। ऐसा जान पड़ा कि हमने जर्मन कवच बेध दिया है और देखा कि उसके नीचे सड़ांध भरे पेट के अलावा और कुछ नहीं है। हम उनके बीच इतनी आसानी से घुस-पैठ करते रहे जैसे पनीर काट रहे हों।

"... और मेरे साथ यह बेवक़ूफ़ी की घटना इस तरह घटी। प्रधान ने हम सबको बुलाया और कहा कि एक गश्ती-विमान ने यह संदेश गिराया है कि फलां-फलां जगह पर बड़ा भारी हवाई अड्डा है: लगभग तीन सौ जहाज़ और पेट्रोल, रसद आदि है। उसने अपनी नुकीली लाल मूंछें खुजलायीं और कहा, 'ग्वोज़्देव, उस हवाई अड्डे पर आज रात में ही धावा मारो! एक बार भी गोली चलाये बिना वहां इस ख़ामोशी के साथ, बढ़िया ढंग से चढ़ जाओ, मानो तुम जर्मन हो, और जब काफ़ी नज़दीक पहुंच जाओ तो उन पर हल्ला बोल दो, अपनी सारी तोपों के मुंह खोल दो, और इसके पहले कि वे यह समझ पायें कि कहां फंस गये हैं, सारी चीज़ का तख़्ता उलट दो और यह ध्यान रखना कि एक भी हरामज़ादा बचने न पाये।' यह काम मेरे लोगों को और एक दूसरे बटालियन को सौंपा गया जिसे मेरी कमान में रख दिया गया। बाक़ी सेना ने अपना अभियान रोस्तोव की तरफ़ जारी रखा।

"और हम लोग उस हवाई अड्डे में इस तरह घुस गये जैसे मुर्ग़ी के दरबे में लोमड़ी। तुम विश्वास न करोगे, यार, लेकिन हम खुली सड़क पर खड़े हुए जर्मन यातायात नियामक तक पहुंच गये। हमें किसी ने न रोका – वह धुंध भरी सुबह थी और वे लोग कुछ नहीं देख पाये, वे सिर्फ़ इंजनों की आवाज़ और रास्ते की खड़खड़ाहट ही सुन पाये। उन्होंने समझा कि हम जर्मन ही हैं। फिर हमने उनपर धावा बोल दिया और उनके ऊपर टूट पड़े। सच बताऊं, अल्योशा, बड़ा मज़ा आया! हवाई जहाज़ पांतों में खड़े थे। हमने उनपर बख़्तर-बेधक गोले बरसाये और हर गोले ने कम से कम आधे दर्जन को क्षत-विक्षत किया। लेकिन हमने देखा कि उस तरह हम काम न बना सकेंगे, क्योंकि विमान कर्मचारी इंजन स्टार्ट करने लगे थे। इसलिए हमने टैंकों के ढक्कन बन्द किये और उन्हें हवाई जहाज़ों की

पूंछों से भिड़ा दिया। वे यातायात हवाई जहाज़ थे, भारी-भरकम, हम उनके इंजनों तक नहीं पहुंच पा रहे थे इसलिए हम उनकी पूंछों पर पिल पड़े और जैसे इंजन के बिना, तैसे पूंछ के बिना भी वे उड़ न सकते थे। और यहीं मैं शिकार हुआ। मैंने अपने टैंक का ढक्कन खोला और परिस्थिति का सिंहावलोकन करने को गर्दन निकाली, तभी मेरा टैंक एक हवाई जहाज़ से टकरा गया। उसके पंख का एक टुकड़ा मेरे सिर से टकरा गया। वह तो मेरे टोप ने चोट हल्की कर दी, वरना मैं गया ही था। वह कोई गम्भीर चोट नहीं है और मैं जल्दी ही अस्पताल छोड़ दूंगा और थोड़े दिन बाद ही फिर अपने टैंकों के छोकरों के बीच पहुंच जाऊंगा। असली मुसीबत यह है कि अस्पताल में उन्होंने मेरी दाढ़ी मूंड़ दी। उसे बढ़ाने में मैंने कितनी तकलीफ़ उठायी थी—और वह बड़ी बढ़िया, भरी हुई दाढ़ी थी—और उन लोगों ने बेरहमी से उसपर उस्तरा चला दिया। ख़ैर, चूल्हे में जाये दाढ़ी। हम अब बड़ी तेज़ी से बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी भी मेरा ख़्याल है कि युद्ध ख़त्म होने से पहले मैं फिर दाढ़ी बढ़ा लूंगा और कुरूप चेहरे को छिपा लूंगा। फिर भी मैं तुमसे कहूंगा, अलेक्सेई, किसी कारण अन्यूता को मेरी दाढ़ी नापसंद है और हर पत्र में वह इसके लिए मुझे झिड़कती है।"

पत्र लम्बा था। स्पष्ट था कि ग्वोज्देव अस्पताली ज़िंदगी की ऊब मिटाने के लिए लिखता ही चला जा रहा था। इत्तफ़ाक़ से, पत्र के अंत में उसने लिखा था कि स्तालिनग्राद के पास, जब वह और उसके आदमी पैदल लड़ रहे थे—वे अपने टैंक खो बैठे थे और नये टैंकों का इंतजार कर रहे थे—तब प्रसिद्ध ममायेव कुर्गान क्षेत्र में उसकी भेंट स्तेपान इवानोविच से हो गयी थी। बूढ़े ने ट्रेनिंग पास कर ली थी और अब वह अधिकारी था—सार्जेन्ट मेजर, और उसके हाथ में टैंक-विरोधी टुकड़ी की कमान थी। लेकिन उसने स्नाइपरों जैसी छिपकर घात करने की आदत नहीं छोड़ी थी। और जैसा स्वयं उसने ग्वोज़्देव को बताया, फ़र्क़ इतना था कि अब वह बड़े शिकार की खोज में रहता था—मांद से निकलकर धूप खाते हुए लापरवाह जर्मनों की नहीं, जर्मन टैंकों जैसे मज़बूत और होशियार जानवरों की तलाश में रहता था। लेकिन इस शिकार में भी बूढ़ा अपना पुराना साइबेरियाई शिकारियों का हुनर दिखा रहा था—पत्थर जैसा धीरज,

सहनशीलता और अचूक निशाना। जब वे दोनों मिले तो उन्होंने शत्रु से छीनी हुई शराब की बोतल में साझा किया, जिससे स्तेपान इवानोविच ने सावधानी से बचा रखा था, और फिर सब मित्रों का स्मरण किया। स्तेपान ने मेरेस्येव को अपनी याद दिलाने के लिए कहा था और निमंत्रण दिया कि युद्ध के ख़ात्मे के बाद वे दोनों उसके सामूहिक फ़ार्म पर आयें और तब गिलहरियों के शिकार पर या बत्तख़ मारने निकलेंगे।

इस पत्र ने अलेक्सेई को राहत दी, मगर फिर भी कुछ खिन्न बना दिया। वार्ड बयालीस के लगभग सभी मित्र मोर्चे पर पहुंच गये थे। ग्रिगोरी ग्वोज्देव और स्तेपान इवानोविच अब कहा हैं? वे अब कैसे हैं? युद्ध की आंधी अब उन्हें कहां उड़ा ले गयी होगी? क्या वे जीवित हैं? ओल्गा कहां है?

उसे फिर याद आया कि कमिसार वोरोब्योव ने सिपाहियों के पत्रों के बारे में कहा था कि वे बुझे हुए सितारों की रोशनी की तरह होते हैं, जो हम तक पहुंचने में बड़ा वक़्त लेते हैं, इतना कि वह सितारा चाहे बहुत पहले बुझ गया होगा, मगर उसका उज्ज्वल, आनन्ददायक प्रकाश शून्य को बेधना जारी रखता है और अंततः हमारे पास उस अस्तित्वहीन प्रकाश-पुंज की निर्मल आभा लेकर आ पहुंचता है।

चतुर्थ खण्ड

१

१९४३ के तप्त ग्रीष्म काल में एक दिन एक छोटा-सा पुराना मोटर-ट्रक उस सड़क पर दौड़ता चला जा रहा था जो लाल-सी घास-पात से ढंके हुए उपेक्षित खेतों के बीच, लाल फ़ौज की आगे बढ़ती हुई डिवीजनों के सामान की गाड़ियों द्वारा रौंदे जाने के कारण बन गयी थी। गड्ढों पर उछलता हुआ, अपने ऊबड़-खाबड़ अंग-प्रत्यंगों को खड़खड़ाता हुआ वह मोर्चे की पांत की तरफ़ बढ़ता जा रहा था। उसके टूटे-फूटे और धूल से सने प्रत्येक बाज़ू पर एक सफ़ेद रंग से रंगी पट्टी मुश्किल से ही दिखाई देती थी जिस पर लिखा था: फ़ौजी डाक सेवा। मोटर-ट्रक दौड़ता जाता और अपने पीछे धूल की बड़ी भारी लकीर छोड़ता जाता जो शान्त, निश्चल हवा में धीरे-धीरे घुल जाती थी।

ट्रक पर डाक के थैले और ताज़े समाचारपत्रों के बण्डल लदे थे, और विमान-चालकों की वर्दी तथा नीली पट्टियोंवाली छज्जेदार टोपियां पहने दो सिपाही बैठे थे जो ट्रक की चाल के अनुसार उछल या झूल पड़ते थे। इन दो में से जो जवान था, उसके कंधे के बिल्कुल नये फ़ीतों को देखने से पता चल जाता कि वह विमान सेना में सार्जेन्ट-मेजर था — छरहरा, सुगढ़ और सुकेशी। उसके मुखड़े पर कौमार्य की ऐसी कोमलता थी कि ऐसा लगता था मानो सुन्दर त्वचा से रक्त दमक रहा है। वह लगभग १९ वर्ष का लगता था। वह मंजे हुए सैनिक की भांति व्यवहार करने का प्रयत्न कर रहा था — कभी दांतों के बीच से थूक देता, कर्कश स्वर में कोस बैठता, उंगली जैसी मोटी सिगरेट बनाता और हर चीज़ की तरफ़ लापरवाही का भाव दिखाता। लेकिन इस सबके बावजूद यह स्पष्ट था कि वह युद्ध मोर्चे की पांतों की ओर पहली बार जा रहा था और अधीर था। चारों ओर हर वस्तु — सड़क के किनारे पड़ी हुई क्षत तोप, जिसकी थूथनी

ज़मीन की तरफ़ थी, एक टूटा पड़ा हुआ सोवियत टैंक, जिसके ऊपर तक घास उग आयी थी, एक जर्मन टैंक के इधर-उधर बिखरे हुए टुकड़े जो स्पष्ट ही हवाई जहाज़ के बम की सीधी चोट का शिकार हुआ था; गोलों के गड्ढे जिन पर घास ख़ूब उग आयी थी, सैपर सिपाहियों द्वारा हटायी गयी टैंक-विरोधी सुरंगों के गोल ढक्कन, जो नये उतारे के पास सड़क के किनारे ढेरों ढेर लगाये गये थे; और जर्मन सिपाहियों के क़ब्रिस्तान में लगे हुए भोज वृक्ष के क्रास जो दूर से ही दिखाई देते थे—ये सभी उस युद्ध के चिह्न थे जो यहां छिड़ा हुआ था और जिसकी ओर युद्ध में मंजे हुए सिपाही कोई ध्यान नहीं देते, मगर ये दृश्य उस लड़के को चकित और विस्मित कर रहे थे, उसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और अतीव दिलचस्प प्रतीत होते थे।

दूसरी ओर यह स्पष्ट देखा जा सकता था कि उसका साथी—एक सीनियर लेफ़्टीनेंट—सचमुच मंजा हुआ सिपाही था। पहली नज़र में आप कहेंगे कि वह तेईस या चौबीस वर्ष का होगा। मगर उसका धूप तथा मौसम खाया चेहरा और उसकी आंखों और मुंह के चारों ओर तथा माथे पर बारीक झुर्रियां देखकर, और उसकी काली-काली, चिन्तनपूर्ण, थकित आंखों में झांककर शायद आप उसकी उम्र में दस वर्ष और जोड़ देंगे। आसपास के दृश्य ने उसपर कोई प्रभाव नहीं डाला। युद्ध यंत्रों के ज़ंग खाये ध्वंसावशेषों को देखकर, जो विस्फोटों से टेढ़े-मेढ़े हो गये थे और इधर-उधर पड़े थे, या जले हुए गांवों की वीरान सड़कों को देखकर, जिनसे ट्रक गुज़र रहा था, उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, यहां तक कि एक चकनाचूर सोवियत हवाई जहाज़ का दृश्य देखकर, जो टेढ़े-मेढ़े अलुमीनम के ढेर की भांति पड़ा था, और उससे थोड़ी दूर पर उसका चकनाचूर इंजन तथा नम्बर और लाल सितारे से अंकित पूंछ पड़ी थी—जिस पर नज़र पड़ते ही वह कम उम्र सिपाही सुर्ख़ पड़ गया था और कांपने लगा था—वह तनिक भी विचलित न हुआ।

अख़बारों के बंडलों से अपने लिए आरामकुर्सी बनाकर, वह अफ़सर आबनूस की विचित्र-सी भारी छड़ी पर—जिस पर कोई सुनहरा आलेख अंकित था—अपनी ठुड्डी टिकाये ऊंघ रहा था। कभी ही कभी वह चौंककर अपनी आंखें खोल लेता और मुसकुराकर इस भांति चारों ओर देखता

मानो अपनी ऊंघ भगा रहा हो, और उष्ण तथा सुगंधित वायु से गहरी सांस भर लेता। सड़क से दूर, लाल-सी घास के लहराये हुए सागर के ऊपर उसने दो बिंदु देखे, जिनकी सावधानी से परीक्षा करने के बाद वह समझ गया कि वे दो हवाई जहाज़ हैं, जो एक के पीछे दूसरे, पांत बनाकर आराम से आसमान में फिसलते घूम रहे हैं। तत्क्षण उसकी ऊंघ ग़ायब हो गयी, उसकी आंखें रोशन हो उठीं, नथुने फड़कने लगे और कठिनाई से दृष्टिगोचर होनेवाले उन दो बिंदुओं पर नज़र गड़ाये हुए उसने ड्राइवर की केबिन की छत को थपथपाया और ज़ोर से चिल्लाया:

"आड़ लो! सड़क से अलग मुड़ जाओ!"

वह खड़ा हो गया, उसने अनुभवी आंखों से सारा प्रदेश छान डाला और छोटी-सी नदी की धारा के निकट एक खोह ड्राइवर को दिखायी जिसके किनारे पर मटमैली घास और सुनहरी झाड़ियां घनी उगी हुई थीं।

नौजवान मज़ा लेकर मुसकुराया। हवाई जहाज़ कहीं दूर पर मज़े में मंडरा रहे थे और ऐसा लगता था कि जो एक मात्र ट्रक वीरान और मनहूस मैदान में धूल का भारी गुबार उड़ाता चला जा रहा था, उसकी तरफ़ उनका जरा भी ध्यान न था। लेकिन इसके पहले कि वह कोई विरोध प्रगट कर पाता, ड्राइवर ने सड़क छोड़ दी और अपना पंजर खड़काता हुआ ट्रक उस खोह की तरफ़ दौड़ पड़ा।

ज्यों ही वे खोह के पास पहुंचे, सीनियर लेफ़्टीनेंट उतर आया और घास पर बैठकर जागरूकता के साथ सड़क को ताकने लगा।

"तुम यह सब... क्यों कर रहे हो..." नौजवान ने शुरू किया और व्यंग्यपूर्वक अफ़सर की ओर देखा, लेकिन इसके पहले कि वह अपना वाक्य ख़त्म कर पाता, अफ़सर जमीन पर लुढ़क गया और चिल्लाया:

"लेट जाओ!"

उसी क्षण हवाई जहाजों के इंजनों की बर्बर धड़धड़ाहट सुनाई दी और दो विशालकाय छायाएं विचित्र खट-खट आवाज़ करती हुई उनके ऊपर घुमड़ती गुजर गयीं और हवा में कम्पन भर गया। नौजवान इससे भी नहीं घबराया: साधारण हवाई जहाज, निस्संदेह अपने ही हैं। उसने चारों तरफ़ नजर दौड़ायी और यकायक देखा कि सड़क के किनारे उलटे पड़े

हुए और बहुत दिनों से ध्वस्त पड़े ट्रक से धुआं उठने लगा और लपटें फूट पड़ीं।

"आह! वे लोग दाहक बाम छोड़ रहे हैं," डाक ट्रक के ड्राइवर ने मुसकुराकर कहा और ट्रक के चकनाचूर और जलते हिस्से की ओर ताकने लगा। "वे लोग ट्रकों की हमला में हैं।"

"शिकारी," सीनियर लेफ़्टीनेंट ने घास पर आराम से बैठते हुए शान्तिपूर्वक जवाब दिया, "हमें इंतज़ार करना पड़ेगा, वे फिर लौटेंगे। वे लोग सड़क का निरीक्षण कर रहे हैं। अच्छा हो कि तुम अपनी ट्रक ज़रा और पीछे ले जाओ, उधर भोज वृक्ष के नीचे।"

उसने इस प्रकार शान्तिपूर्वक और विश्वास के साथ कहा मानो जर्मन विमान-चालकों ने अभी ही उसे अपनी योजना बता दी हो। डाक के साथ एक महिला डाकिया थी—युवती, जो ड्राइवर के बग़ल में बैठी थी। वह अब घास पर लेटी थी—पीली-सी, होंठों पर हल्की-सी उलझन-भरी मुसकान लिये हुए, आसमान की ओर उत्तेजनापूर्वक निहार रही थी, जहां पर ग्रीष्म के तरंगित बादल लुढ़कते चले जा रहे थे। उसी को ध्यान में रखकर सार्जेन्ट-मेजर ने उदासीनता के साथ कहा, हालांकि उसने स्वयं बड़ी उलझन महसूस की:

"अच्छा हो, हम लोग आगे चल दें। वक़्त क्यों बरबाद किया जाये? जिसे फांसी लगना होता है, वह कभी डूबता नहीं है।"

सीनियर लेफ़्टीनेंट ने शान्त भाव से घास की पत्ती चूसते हुए अपनी सख़्त काली आंखों में अदृश्य-सी विनोदपूर्ण चमक भरकर उसकी ओर देखा और प्रत्युत्तर दिया:

"सुनो भाई! इसके पहले कि वक़्त हाथ से निकल जाये, वह बेवक़ूफ़ी की कहावत भूल जाओ। और एक बात और समझ लो, कामरेड सार्जेन्ट-मेजर, मोर्चे पर तुमसे बड़ों की आज्ञा मानने की आशा की जाती है। अगर हुक्म है: 'लेट जाओ!' तो तुम्हें लेटना ही पड़ेगा।"

उसे घास में अम्लबेंत का डंठल पड़ा मिल गया, उसने नाख़ूनों से उसका रेशेदार छिलका उतारा और कुरकुरे डंठल को बड़े स्वाद से चूसने लगा। हवाई जहाज़ के इंजनों की धड़धड़ाहट फिर सुनाई दी और वही दो हवाई जहाज़ सड़क पर नीचे उड़ते नजर आये, वे बहुत धीरे-धीरे उड़

रहे थे—और वे इतने पास से गुज़र गये कि उनके पंखों का गहरा पीला रंग, सफ़ेद-काले क्रास और उनमें से निकटतर विमान के ढांचे पर अंकित हुक्म के इक्के तक बड़े साफ़ दिखाई दे रहे थे। सीनियर लेफ़्टीनेंट ने अलस-भाव से कुछ और डंठल लिये घड़ी की ओर देखा और हुक्म दिया:

"सब साफ़! चलो, रवाना हो! जल्दी करो, प्यारे! इस जगह से जितनी दूर खिसक जायें उतना ही बेहतर होगा!"

ड्राइवर ने अपना भोंपू बजाया और युवती डाकिया खोह से दौड़ी हुई आयी। वह जंगली स्ट्राबेरी के फलों के अनेक गुच्छे लिये हुए थी। ये गुच्छे उसने सीनियर लेफ़्टीनेंट को दिये।

"ये पकने लगे हैं...हमने ग़ौर नहीं किया कि ग्रीष्म आ रहा है," वह उन्हें सूंघते हुए बोला और अपनी वर्दी की जेब के बटन-छेद में सुगंधित पुष्प-गुच्छे की भांति उन्हें खोंस लिया।

"आप यह कैसे जान गये कि वे लोग वापस नहीं आयेंगे और अब रवाना होने में कोई ख़तरा नहीं है?" युवक ने सीनियर लेफ़्टीनेंट से पूछा, जो अब फिर ख़ामोश हो गया था और गड्ढों के ऊपर उछलते हुए ट्रक के साथ-साथ झूलता हुआ बैठ गया था।

"यह समझना बड़ा आसान है। वे 'मे-१०६' लड़ाकू हवाई जहाज़ थे। उनमें सिर्फ़ ४५ मिनट उड़ने लायक़ ही पेट्रोल आता है। वे अपना भण्डार ख़त्म कर चुके हैं और फिर पेट्रोल भरने गये हैं।"

सीनियर लेफ़्टीनेंट ने यह व्याख्या इस भाव से की कि जैसे वह यह नहीं समझ पा रहा है कि इतनी सीधी-सी बात को लोग क्यों नहीं जानते। युवक ने अब पहले से भी अधिक जागरूकता के साथ आसमान की छान-बीन शुरू कर दी। शत्रु के विमानों के वापस लौटने का इशारा सबसे पहले वह ख़ुद देना चाहता था। लेकिन वायुमण्डल साफ़ रहा और वह हरी-भरी घास, धूल और तप्त धरती की गंध से इतना परिपूरित था, टिड्डे इतने विनोदपूर्वक और आनन्द-विह्वल होकर चहचहा रहे थे और घास-पात से आच्छादित भूमि के ऊपर लवा पक्षी इतने उच्च स्वर से गा रहा था कि वह जर्मन हवाई जहाज़ों और ख़तरे की बात भूल ही गया और साफ़, आनन्दप्रिय स्वर में वह गीत गाने लगा जो उन दिनों युद्ध के मोर्चे पर

लोकप्रिय था – एक खोह में अपनी प्रेमिका के लिए तरसते हुए युवक सिपाही का गीत।

"तुम्हें 'एश वृक्ष' नाम का गीत याद है?" उसके साथी ने टोकते हुए पूछा।

युवक ने स्वीकृतिसूचक गर्दन हिलायी और फ़ौरन वह पुराना गीत शुरू कर दिया। सीनियर लेफ़्टीनेंट के थके, धूल ढंके चेहरे पर उदासी का भाव छा गया।

"तुम इसे ठीक तरह से नहीं गा रहे हो, दोस्त," उसने कहा, "यह कोई मज़ाक़िया गाना नहीं है। इसमें अपना दिल उड़ेलना पड़ता है," और उसने कोमल, अत्यन्त मंद, मगर सच स्वर में उसकी धुन पकड़ ली।

ड्राइवर ने एक क्षण ब्रेक लगाया और युवती डाकिया केबिन से उतर पड़ी। वह पीछे से तख़्ते पकड़कर और हल्की-सी छलांग मारकर ट्रक के पिछले भाग में कूद गयी जहां उसे सशक्त, मैत्रीपूर्ण बांह ने संभाल लिया।

"मैंने तुम्हें गाते सुना, इसलिए तुम्हारा साथ देने की इच्छा हुई..."

और इस प्रकार ट्रक की खड़खड़ाहट और घास पर फुदकनेवाले टिड्डों की उत्साहपूर्ण चहक के साज़ पर वे तीनों गाने लगे।

युवक आत्म-विभोर हो उठा। उसने अपने सामान के थैले से मुंह का बाजा निकाला, और कभी उसे बजाने लगता, और कभी उसे डंडे की तरह पकड़कर हवा में झुलाता उन लोगों के साथ स्वर मिलाकर गाने लगता; वह संगीत-संचालक की भांति कार्य करने लगा। और धूल से आच्छादित, सर्वजयी घास-पात के बीच बिछी इस उदासीजनक और आजकल वीरान सड़क पर उस गीत के शक्तिशाली और वेदनापूर्ण स्वर गूंज उठे जो इतना ही पुराना और इतना ही नया था जितना कि ग्रीष्म के ताप से तड़पते हुए ये मैदान, उष्ण और सुगंधित घास के बीच टिड्डों की जीवन्त चहक, स्वच्छ ग्रीष्म आकाश में लवा पक्षी का संगीत और जैसे कि स्वयं यह उच्च और अनन्त आकाश है।

वे अपने संगीत में इतने डूब गये थे कि जब ड्राइवर ने यकायक ब्रेक लगा दिये तो धक्का खाकर वे लोग क़रीब-क़रीब ट्रक से बाहर ही फेंक दिये गये। ट्रक बीच सड़क में रुक गया। सड़क के बग़ल की खाई में एक तीन टनवाला ट्रक उलटा पड़ा था जिसके धूल से ढंके पहिये भर दिखाई

दे रहे थे। युवक पीला पड़ गया, मगर उसका साथी बाज़ू से उतर पड़ा और खाई की तरफ़ भागा। वह विचित्र स्प्रिंगदार, डगमगाते क़दमों से जा रहा था। एक क्षण बाद डाक ट्रक का ड्राइवर उलटे हुए ट्रक के केबिन से एक क्वार्टरमास्टर कप्तान के ख़ून-सने शरीर को निकाल रहा था। उसका चेहरा कटा हुआ था और खरोंचें पड़ी हुई थीं, जो स्पष्ट ही टूटे कांच के गड़ने से पड़ गयी थीं और चेहरे का रंग स्याह पड़ गया था। सीनियर लेफ़्टीनेंट ने उसकी पलकें उठायीं।

"यह ख़त्म हो गया," उसने अपनी टोपी उतारते हुए कहा, "कोई और तो नहीं है?"

"हां, ड्राइवर है," डाक ट्रक के ड्राइवर ने जवाब दिया।

"तुम उधर खड़े क्या कर रहे हो? आओ, मदद करो।" सीनियर लेफ़्टीनेंट ने किंकर्त्तव्यविमूढ़ युवक से कहा, "क्या तुमने इससे पहले ख़ून कभी नहीं देखा? इसके आदी हो जाओ, अब बहुत देखने को मिलेगा। देखो, यह है उन शिकारियों का शिकार।"

ड्राइवर जीवित था। वह हल्के से कराह उठा, मगर आंखें बन्द किये रहा। चोट का कोई चिह्न नहीं था, मगर स्पष्ट था कि जब बम की चोट के बाद ट्रक खाई में गिरा होगा तो उसका वक्ष बुरी तरह स्टीयरिंग पहिये से टकरा गया होगा और फिर चकनाचूर केबिन के बोझ से वह दब गया होगा। सीनियर लेफ़्टीनेंट ने उसे डाक ट्रक में लादने का हुक्म दिया। लेफ़्टीनेंट के पास एक सूती कपड़े में सावधानी से लिपटा हुआ बढ़िया, बिल्कुल नया ग्रेटकोट था, जो एक बार भी नहीं पहना गया था। चोट खाये व्यक्ति को लेटाने के लिए उसने ट्रक के फ़र्श पर उस कोट को बिछा दिया और आहत व्यक्ति के सिर को अपने घुटनों पर रख लिया।

"तुम में जितना तेज़ हो सकता है, उतनी तेज़ी से चलाओ!" उसने ड्राइवर को हुक्म दिया।

आहत व्यक्ति के सिर को आहिस्ते से सहारा देते हुए वह अपनी ही किसी दूरागत स्मृति से मुसकुरा पड़ा।

जब ट्रक एक छोटे-से गांव की सड़क पर दौड़ने लगा, जहां अनुभवी आंख फ़ौरन पहचान लेती कि इस स्थान पर किसी छोटी-सी विमान टुकड़ी की कमान का केन्द्र है, तब तक सांझ उतर आयी थी। सामने के बाग़ीचों

में खड़े चेरी और सेब के वृक्षों की धूल से आच्छादित शाखाओं से, कुओं की 'क्रेनों' से, चहारदीवारी के बांसों से तारों की कई लाइनें लटकी हुई थीं। मकानों के पास घास-फूस के दलानों में, जहां किसान अपनी गाड़ियां और खेती के औज़ार रखा करते थे, शिकन खायी कारें और जीपें रखी दिखाई दे रही थीं। यहां वहां छोटी-छोटी झोंपड़ियों की खिड़कियों के धुंधले शीशों के पार नीली पट्टीवाली टोपियां पहने सिपाही दिखाई दे जाते थे और टाइपराइटरों की खटखट सुनाई दे जाती थी, और एक घर से, जिस पर तारों का जाल आकर मिल गया था, तार भेजने का यंत्र खटखटाता सुनाई दिया।

यही गांव, जो मुख्य और छोटी सड़कों से दूर बसा था, ऐसा लगता था कि वह इस वीरान और घास-पात से आच्छादित स्थान में एक ऐसे अवशेष की भांति बच गया है, जो यह प्रदर्शित करता है कि फ़ासिस्ट आक्रमण से पहले इस क्षेत्र में रहना कितना भला था। छोटा-सा पोखर भी, जिसमें पीली-सी सेवार घनी उग आयी थी, पानी से भरा था। पुराने वृक्षों की छाया में वह एक शीतल और उज्ज्वल स्थल था, और उसमें सेवार को चीरकर अपनी राह बनाते हुए, चोंच से अपने पंख साफ़ करते और पानी उछालते हुए लाल चोंचवाले हिम से श्वेत हंस का एक जोड़ा तैर रहा था।

आहत व्यक्ति को एक झोंपड़ी तक ले जाया गया, जिसपर रेड क्रास का झण्डा फहरा रहा था। फिर ट्रक गांव को पार कर ग्रामीण स्कूल की स्वच्छ, छोटी-सी इमारत के सामने जाकर रुका। टूटी हुई खिड़की में जिस प्रकार अनगिनत तार प्रवेश कर रहे थे और टामीगन लिये एक संतरी उसकी दहलीज़ पर खड़ा था, उससे यह समझा जा सकता था कि यही सदर दफ़्तर है।

"मैं रेजीमेंटल कमांडर से मिलना चाहता हूं," सीनियर लेफ़्टीनेंट ने अर्दली से कहा जो खुली खिड़की पर बैठा हुआ "लाल सिपाही" पत्रिका की एक वर्ग पहेली हल कर रहा था।

सीनियर लेफ़्टीनेंट के पीछे-पीछे जो युवक चला आ रहा था, उसने देखा कि इमारत में प्रवेश करते समय अफ़सर ने यांत्रिक ढंग से अपने कोट के सामनेवाले हिस्से को झटक दिया, अपने अंगूठों से पेटी के नीचे पड़ी हुई सलवटों को ठीक किया और कालर के बटन लगा लिये। उसने भी

ऐसा ही किया। वह अपने इस अल्पभाषी साथी को बहुत चाहने लगा था और अब हर बात में उसका अनुकरण करने का प्रयत्न करता था।

"कर्नल काम में लगे हैं," अर्दली ने जवाब दिया।

"उन्हें जाकर बताओ कि मै विमान सेना के स्टाफ़ हेडक्वार्टर के नियुक्ति-विभाग से एक फ़ौरी संदेशा लेकर आया हूं।"

"ठहर जाइये। वह गश्ती दस्ते की रिपोर्ट सुन रहे हैं। उन्होंने कहा था कि बाधा न डाली जाये। बाहर जाइये और थोड़ी देर बगीचे में बैठिये।"

अर्दली फिर वर्ग पहेली में व्यस्त हो गया। नवागत व्यक्ति बाग़ में चले गये और फूलों की एक क्यारी की बग़ल में एक पुरानी बेंच पर बैठ गये–क्यारी के चारों ओर बड़ी सावधानी से ईंटों की दीवार बनायी गयी थी, लेकिन अब उपेक्षित थी और उसपर घनी घास-पात उग आयी थी। युद्ध के पहले इसी प्रकार की शान्त, ग्रीष्मकालीन शामों को स्कूल की बूढ़ी अध्यापिका दिन का काम ख़त्म करने के बाद यहां आराम करती रही होगी। खुली खिड़की से दो आवाज़ें आती साफ़ सुनाई दे रही थीं। एक कर्कश और उत्तेजित स्वर रिपोर्ट दे रहा था:

"इस सड़क पर और इधर काफ़ी सरगर्मी है, ट्रकों की लगातार पांतें सभी एक दिशा में जा रही हैं–मोर्चे की ओर। यहां ठीक क़ब्रिस्तान के पास एक खोह में ट्रक या टैंक हैं... मेरा ख़्याल है कि काफ़ी बड़ी यूनिट यहां केन्द्रित है।"

"ऐसा ख़्याल क्यों है?" एक ऊंची आवाज़ ने टोका।

"यहां हमें ज़बर्दस्त विमानवेधी गोलाबाज़ी का सामना करना पड़ा। हम मुश्किल से बचकर निकल पाये। कल वहां कुछ नहीं था–कुछ धुआं उगलते फ़ौजी रसोईघरों के अलावा। मैंने उनके ठीक ऊपर उड़ान की और उन्हें दहला देने के लिए कुछ गोलियां चलायी थीं। लेकिन आज! उनकी गोलाबारी भयानक थी... स्पष्ट था कि वे मोर्चे की ओर बढ़ रहे हैं।"

"और 'ज़ेट' क्षेत्र का क्या हाल है?"

"यहां भी कुछ गतिविधि है, लेकिन उतनी अधिक नहीं। यहां जंगल के पास एक बड़ा भारी टैंक दस्ता बढ़ रहा है। लगभग सौ हैं। टुकड़ियों में बंटकर क़रीब ५ किलोमीटर तक फैले हुए, वे बिना किसी आड़ के खुले-आम बढ़ रहे हैं। शायद यह धोखे की चाल है... यहां, यहां और यहां

हमें ठीक सामने की पांतों में तोपें मिलीं। और अस्त्र-शस्त्र के भण्डार भी। लकड़ी के ढेर से ढंके हुए। कल वे इस जगह नहीं थे... भारी भण्डार हैं।"

"बस?"

"बस, कामरेड कर्नल। क्या मैं रिपोर्ट लिख डालूं?"

"रिपोर्ट? नहीं! अभी रिपोर्ट के लिए वक़्त नहीं है! फ़ौजी हेडक्वार्टर फ़ौरन जाओ! समझते हो कि इसका क्या मतलब है? ऐ, अर्दली! मेरी जीप। कप्तान को हेडक्वार्टर भेज दो!"

कमांडर का दफ़्तर एक काफ़ी बड़ी कक्षा में था। नंगे लट्ठों की दीवारों से बने इस कमरे में फ़र्नीचर के नाम पर सिर्फ़ एक मेज़ थी जिस पर टेलीफ़ोनों के चमड़े के खोल, विमान-सैनिक नक़्शा और एक लाल पेंसिल रखे थे। नाटा-सा, स्फूर्तिवान, सुगठित व्यक्ति, वह कर्नल, पीठ के पीछे हाथ बांधे कमरे में चहलक़दमी कर रहा था। अपने विचारों में लीन, वह एक दो बार उन विमान-चालकों के पास से निकला, जो अटेंशन खड़े हुए थे। यकायक वह उनके सामने रुका और उनकी ओर जिज्ञासापूर्वक देखने लगा।

"सीनियर लेफ़्टीनेंट अलेक्सेई मेरेस्येव। आपकी कमान में नियुक्त," ताम्रवर्ण अफ़सर ने एड़ियां बजाते हुए और सेल्यूट करते हुए रिपोर्ट दी।

"सार्जेन्ट-मेजर अलेक्सान्द्र पेत्रोव," युवक ने अपने फ़ौजी बूटों को ज़रा ज़ोर से मारते हुए और ज़रा ज्यादा फुर्ती से सेल्यूट करते हुए रिपोर्ट दी।

"रेजीमेंटल कमांडर, कर्नल इवानोव," बड़े अफ़सर ने जवाब में कहा। "कोई संदेश?"

बड़ी नपी-तुली भाव-भंगिमा से मेरेस्येव ने अपने नक़्शे के खोल से एक पत्र निकाला और कर्नल को दे दिया। कर्नल ने शीघ्रता से उस संदेश की परीक्षा की, नवागतों पर शीघ्रतापूर्वक अन्वेषी दृष्टि डाली और कहा:

"बहुत अच्छा! आप लोग ठीक वक़्त पर आये हैं। लेकिन इतने कम लोग उन्होंने क्यों भेजे हैं?" यकायक उसके चेहरे पर विस्मय का भाव दौड़ गया, मानो उसे कोई बात याद आ गयी हो। "क्यों," उसने पूछा, "तुम मेरेस्येव हो? विमान सेना हेडक्वार्टर के प्रधान ने तुम्हारे बारे में मुझे फ़ोन किया था। उन्होंने मुझे चेतावनी दी थी कि तुम..."

"वह कोई महत्त्व की बात नहीं है, कामरेड कर्नल," अलेक्सेई ने

टोका, बहुत नम्रता से नहीं। "मुझे अपनी ड्यूटी पर जाने की आज्ञा दीजिये।"

कर्नल ने कौतुकपूर्वक अलेक्सेई की ओर देखा और सिर हिलाते हुए, स्वीकृतिसूचक मुसकान के साथ कहा :

"ठीक। अर्दली! इन व्यक्तियों को प्रधान स्टाफ़-अफ़सर के पास ले जाओ और मेरा यह हुक्म दे दो कि इनके भोजन और निवास का प्रबंध किया जाये। कहो कि इन्हें गार्ड कप्तान चेस्लोव के जत्थे में भरती किया जाये।"

पेत्रोव ने सोचा कि रेजीमेंटल कमांडर ज़रा ज़्यादा झमेलिया है। मेरेस्येव ने उसे पसंद किया। इस तरह के व्यक्ति – जो तेज़ होते हैं, हर मामले की पकड़ फ़ौरन कर लेते हैं, साफ़ चिन्तन की क्षमता रखते हैं और दृढ़तापूर्वक फ़ैसले ले सकते हैं – उसको दिल से प्यारे होते हैं। बग़ीचे में बैठे-बैठे उसने हवाई गश्त की जो रिपोर्ट सुनी थी, वह उसके दिमाग़ में समा गयी थी। अनेक ऐसे चिह्नों से जिन्हें सिपाही पढ़ लिया करते हैं: फ़ौजी हेडक्वार्टर छोड़ने के बाद वे जिन रास्तों से उछलते-कूदते आये थे, उनपर भारी भीड़ का होना; यह तथ्य कि सड़क के संतरी सख़्त ब्लैक आउट पर ज़ोर देते थे और आज्ञा का उल्लंघन करनेवालों के टायरों पर गोली चलाने की धमकी देते थे; मुख्य सड़क से अलग भोज वृक्षों के जंगलों में टैंकों और तोपों के केन्द्रित होने के कारण भीड़-भाड़ और शोरग़ुल; और यह तथ्य कि उस दिन वीरान सड़क पर उनके ऊपर जर्मन 'शिकारियों' ने हमला किया था – मेरेस्येव भांप गया कि मोर्चे की शान्ति भंग होनेवाली है, जर्मन इस क्षेत्र में नयी चोट करनेवाले हैं और यह चोट शीघ्र ही होगी, सोवियत फ़ौज की कमान इससे सुपरिचित है और उसका यथायोग्य जवाब देने के लिए तैयार है।

२

बेचैन सीनियर लेफ़्टीनेंट ने भोजन के समय पेत्रोव को तीसरे दौर का इंतज़ार ही नहीं करने दिया और उसे अपने साथ एक पेट्रोल ट्रक पर चढ़ जाने के लिए विवश किया जो गांव के बाहर एक मैदान में स्थित

हवाई अड्डे की ओर जा रहा था। यहां इन नये व्यक्तियों ने विमान टुकड़ी के कमांडर, गार्ड कप्तान चेस्लोव को अपना परिचय दिया जो ज़रा भौंहें चढ़ानेवाला और अल्पभाषी तो था, मगर वैसे अत्यन्त सहृदय स्वभाव का व्यक्ति था। अधिक कहा-सुनी बिना वह उन्हें घास से ढंके मिट्टी के बने विमान-गाह में ले गया, जिनमें दो बिल्कुल नये, उज्ज्वल वार्निश किये हुए नीले "ला-५" रखे थे, जिन पर "११" और "१२" नम्बर अंकित थे। ये विमान थे जिन्हें नवागतों को उड़ान पर ले जाना था। उन्होंने शेष दोपहरी सुगंधित भोजकुंज में – जहां इंजनों की धड़धड़ाहट में भी पक्षियों की चहक डूब नहीं पा रही थी – मशीनों की परीक्षा करते, मेकेनिकों से गप लगाते और रेजीमेंट के जीवन का परिचय प्राप्त करते हुए काट दी।

अपने दिलचस्प धंधे में वे इतने डूब गये थे कि जब वे आख़िरी ट्रक में गांव लौटे तो काफ़ी अंधेरा हो चुका था और उनको रात का भोजन न मिल सका। लेकिन इससे वे चिन्तित न हुए। उनके थैलों में अभी सूखे राशन का कुछ हिस्सा बक़ाया था जो उन्हें रास्ते के लिए दिया गया था। सोने के स्थान की कठिनाई और भी गम्भीर थी। इस छोटे-से नख़लिस्तान की आबादी दो विमान रेजीमेंटों के चालकों और कर्मचारियों के कारण हद से अधिक बढ़ गयी थी। भीड़-भाड़ से भरे हुए एक मकान से दूसरे मकान भटकते हुए और वहां रहनेवालों से – जो नवागतों के लिए जगह देने से इनकार कर देते थे – क्रोधपूर्वक कहा-सुनी करते और इस खेदपूर्वक तथ्य पर दार्शनिक चिन्तन करते हुए कि मकान रबर के बने नहीं हैं और उन्हें फैलाकर बड़ा नहीं किया जा सकता, अंत में वे लोग जिस मकान पर पहुंचे, वहीं क्वार्टर-मास्टर ने उन्हें घुसेड़ दिया और कहा:

"आज की रात यहीं सो जाओ। सुबह तुम लोगों के लिए मैं दूसरा बन्दोबस्त कर दूंगा।"

उस छोटी-सी झोंपड़ी में वे लोग पहले से ही नौ व्यक्ति थे और वे सब लौट आये थे। किसी गोले के खोल को चपटाकर बनायी गयी, धुआं उगलती, मिट्टी के तेल की ढिबरी की रोशनी से सोनेवालों की छायाकृतियों पर धुंधला प्रकाश पड़ रहा था। कुछ लोग चारपाइयों और तख़्तों पर लेटे थे और कुछ लोग फ़र्श पर पुआल बिछाकर लेटे थे। इन नौ निवासियों के अलावा झोंपड़ी में उसकी मालकिनें – एक बुढ़िया और उसकी जवान

बेटी — भी थीं, जो जगह की तंगी के कारण बड़े भारी मिट्टी के बने रूसी चूल्हे पर सोती थीं।

नवागत दहलीज़ पर ही रुक गये और हैरान रह गये कि सोते हुए लोगों को पार कर कैसे अन्दर जायें। बुढ़िया चूल्हे पर से उन पर क्रोधपूर्वक चिल्लायी :

"यहां जगह नहीं है, जगह नहीं है! दिखाई नहीं देता कि यहां बड़ी भीड़ है? तुम्हें हम लोग कहां सुलायेंगे, क्या छप्पर पर?"

पेत्रोव ने इतनी परेशानी महसूस की कि वह पीछे हटने ही वाला था, लेकिन मेरेस्येव सोनेवालों पर पैर पड़ने से बचाता हुआ मेज़ की तरफ़ बढ़ रहा था।

"हमें सिर्फ़ एक कोना चाहिए जहां बैठकर हम लोग अपना भोजन कर सकें, दादी जान। हमने दिन भर से कुछ नहीं खाया है," उसने कहा, "क्या तुम हमें एक तश्तरी और दो प्याले दे सकोगी? यहां सोकर हम तुम्हें तकलीफ़ नहीं देंगे। रात काफ़ी गर्म है, और हम बाग़ीचे में सो रहेंगे।"

चूल्हे के पटरे के छोर से चिड़चिड़ी बुढ़िया के पीछे से दो नन्हे-नन्हे नंगे पैर प्रगट हुए: एक छरहरी आकृति ख़ामोशी से चूल्हे पर से उतर आयी और सोनेवालों के बीच बड़ी होशियारी से संतुलन करते हुए दरवाज़े के पीछे ग़ायब हो गयी और शीघ्र ही कुछ तश्तरियां और भिन्न रंगों की प्यालियां अपनी नाज़ुक उंगलियों में लटकाकर वापस लौट आयी। पहले तो पेत्रोव ने सोचा कि वह बच्चा है, मगर जब वह मेज़ के पास पहुंच गयी और धुंधली पीली रोशनी ने अंधकार से उसके मुखड़े को उबार लिया, तो उसने देखा कि वह युवती है और सुन्दर भी, सिर्फ़ यह कि भूरे ब्लाउज़ और बोरे के स्कर्ट और जर्जर शाल ने, जिसे वह अपने वक्ष पर ओढ़े थी और बुढ़िया की तरह पीठ पर बांधे थी, उसके सौन्दर्य को मार दिया था।

"मरीना! मरीना! इधर आ फूहड़।" चूल्हे से बुढ़िया ने फुफकारा।

लेकिन युवती ने झपकी भी न मारी। कुशलतापूर्वक उसने मेज़ पर एक अख़बार बिछा दिया और उसपर तश्तरियां, प्याले और कांटे-छुरियां रख दीं और साथ ही कनखियों से पेत्रोव पर नज़र डाली।

"हां, करिये अपना भोजन। आशा है, आपको मजा आयेगा," उसने कहा, "शायद आप कुछ काटना या गरम करना चाहेंगे? मैं एक सेकंड में कर दूंगी। क्वार्टर-मास्टर ने सिर्फ़ यही कहा है कि हम बाहर आग न जलायें।"

"मरीना, इधर आ!" बुढ़िया ने पुकारा।

"उसकी बातों पर ध्यान न दीजिये, वह जरा होश खो बैठी है। जर्मनों ने उसे बुरी तरह डरा दिया है," युवती ने कहा, "ज्योंही वह रात को सिपाहियों की शक्लें देखती है, उसे मेरे बारे में फ़िक्र होने लगती है। उसपर क्रोध न कीजिये, वह रात को ही ऐसी हो जाती है। दिन में वह भली-चंगी रहती है।"

अपने थैले में मेरेस्येव को कुछ सौसेज, गोश्त का एक टिन, दो सूखी मछलियां, जिन पर लगा हुआ नमक चमक रहा था और एक फ़ौजी पावरोटी मिल गयी। पेत्रोव की क़िस्मत कमज़ोर निकली – उसके पास सिर्फ़ थोड़ा-सा गोश्त और सूखी रोटी के टुकड़े निकले। मरीना ने इस सब को अपने नन्हे-से कुशल हाथों से काट दिया और तश्तरियों पर इस तरह लगा दिया कि भूख बढ़ गयी। लम्बी बरौनियों में छिपी हुई उसकी आंखें पेत्रोव के चेहरे की अधिकाधिक परीक्षा करने लगीं और उधर पेत्रोव उसकी ओर लालसापूर्ण दृष्टि डाल रहा था। जब उनकी आंखें मिलीं तो दोनों लाल हो गये, दोनों ने भौंहें सिकोड़ीं और दूसरी ओर मुंह फेर लिया, और उन दोनों ने एक दूसरे के सीधे सम्बोधित किये बिना मेरेस्येव के द्वारा बातचीत की। उन्हें देखकर अलेक्सेई को बड़ा मजा आया, मजा भी और दुख भी, क्योंकि दोनों ही बड़े कम उम्र थे। उनकी तुलना में वह अपने को बूढ़ा, थका हुआ और जीवन का एक बहुत बड़ा भाग पीछे छोड़ आनेवाला महसूस करने लगा।

"अच्छा, मरीना, तुम्हारे पास, संभव है, खीरा तो होगा?" उसने पूछा।

"हां, संभव है तो," युवती ने शैतानी मुसकान के साथ जवाब दिया।

"और शायद तुम्हारे पास दो एक उबले आलू निकल आयें?"

"हां – अगर प्रार्थना करें तो शायद मिलेगा।"

वह फिर कमरे से बाहर चली गयी, सोनेवालों के शरीरों से बचती हुई, फुर्ती से और बिना आहट के, तितली की तरह।

"कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट," पेत्रोव न विरोध प्रकट किया, "जिन लड़की को आप नहीं जानते, उससे आप इतने बेतकल्लुफ़ कैसे हो सकते हैं? उससे खीरा मांग रहे हैं..."

मेरेस्येव विनोदपूर्ण हंसी में फूट पड़ा:

"वाह रे भोले, क्या समझते हो तुम कहां हो? हम मोर्चे पर नहीं हैं क्या?.. ऐ, दादी! बड़बड़ाना बंद कर। उतर आ और हम लोगों के साथ दो कौर तो खा ले।"

अपने आप बड़बड़ाती और कोसती हुई बुढ़िया चूल्हे पर से उतर आयी, मेज़ के पास आ पहुंची और फ़ौरन सौसेज पर टूट पड़ी—जैसे कि पता चला युद्ध के पहले वह इसकी बड़ी शौक़ीन रही थी।

वे चारों मेज़ के इर्दगिर्द बैठ गये और खर्राटों तथा कुछ लोगों की उनींदा बड़बड़ाहट के बीच बड़े स्वाद से खाने लगे। अलेक्सेई सारे समय बातें मारता रहा, बुढ़िया को चिढ़ाता रहा और मरीना को हंसाता रहा। आख़िरकार, अपने स्वभाव के अनुकूल डेरों की ज़िंदगी पाकर वह पूरी तरह आनन्द उपभोग कर रहा था, मानो विदेशों में भटकने के बाद वह बहुत दिनों के उपरान्त अपने घर लौट आया हो।

भोजन के अंत में जाकर मित्रों को मालूम हुआ कि यह गांव इसलिए बच गया कि वह एक जर्मन सेना का हेडक्वार्टर रहा था। जब सोवियत सेना ने अपना प्रत्याक्रमण प्रारम्भ किया तो जर्मन इतनी जल्दी में भागे कि वे इस गांव को ध्वस्त नहीं कर पाये। जब फ़ासिस्टों ने बुढ़िया की मौजूदगी में उसकी बड़ी लड़की के साथ बलात्कार किया—जो बाद में उस पोखर में डूब मरी—तो बुढ़िया पागल हो गयी। आठ महीने तक, जब तक फ़ासिस्ट इस ज़िले में रहे, मरीना पीछे आंगन में बने ख़ाली भूसा घर में छिपी रही जिसके दरवाज़े को भूसे और लंगड़-खंगड़ के ढेर लगाकर छिपा दिया गया था। इन दिनों उसने सूरज नहीं देखा। रात-रात मां खाना-पीना लाती और छोटी-सी खिड़की से अन्दर पहुंचाती। अलेक्सेई जितना ही अधिक उस लड़की से बातें करता जाता, उतने ही बार-बार वह पेत्रोव पर नज़र डाल लेती, और उसकी आंखें जो हठी थीं फिर भी

लजीली थीं, छिपाने का प्रयत्न करने पर भी सराहना का भाव अभिव्यक्त कर रही थीं।

और इस प्रकार गप-शप करते और हंसते हुए उन्होंने भोजन समाप्त किया। मरीना ने बचे हुए खाद्य पदार्थों को मेरेस्येव के थैले में रख दिया यह सोचकर कि सिपाही के साथ जो कुछ भी रहे वह काम आ जाता है। उसके बाद उसने अपनी मां से कुछ कानाफूसी की और फिर मुड़कर ज़ोर देती हुई बोली :

"सुनिये। चूंकि क्वार्टर-मास्टर आपको यहां रख गये हैं, इसलिए यहीं ठहरिये। चूल्हे पर चढ़ जाइये, और मां और मैं तलघर चले जायेंगे। सफ़र के बाद आप लोगों को आराम भी तो चाहिए। कल आपके लिए हम लोग जगह तलाश कर देंगे।"

वह सोते हुए लोगों को पार करते हुए सावधानी से क़दम धरती फिर बाहर चली गयी और भूसे का एक गट्ठर लेकर लौटी जिसे उसने उदारता के साथ चूल्हे पर बिछा दिया और कुछ कपड़ों को तकिये की तरह गोल कर दिया, और यह सब उसने बड़ी तेज़ी से, होशियारी से, बिना आहट किये, बिल्लियों जैसी कोमलता के साथ कर दिया।

"बढ़िया लड़की है, क्यों बच्चू?" मेरेस्येव ने भूसे पर लेटकर आनन्दपूर्वक कहा और हाथ-पांव फैलाकर अंगड़ाई ली कि जोड़ तड़क उठे।

"बुरी नहीं है," पेत्रोव ने बनावटी उपेक्षा से जवाब दिया।

"और तुम्हारी तरफ़ वह कैसे बराबर घूर रही थी!.."

"नहीं तो! वह तो सारे वक़्त तुम्हीं से बातें करती रही।"

क्षण भर बाद उसकी सांसों की नियमित आहट सुनाई देने लगी। लेकिन मेरेस्येव को नींद नहीं आयी। शीतल, सुगंधित भूसे पर लेटे हुए उसने देखा कि मरीना कमरे में आयी, कोई चीज़ खोजने लगी, वह बार-बार चूल्हे की तरफ़ चोरी-चोरी निगाह डाल लेती। उसने मेज़ के लैम्प को ठीक तरह से टिकाया, एक बार फिर चूल्हे की ओर निगाह डाली और फिर सोनेवालों के बीच राह बनाती हुई आहिस्ते से दरवाज़े की ओर चली गयी। किसी कारण, चिथड़े पहनी हुई इस सुन्दर, मनमोहक लड़की को देखकर अलेक्सेई की आत्मा वेदना से भर गयी। इस प्रकार सोने का

प्रबंध तो हो गया था। सुबह ही उसे पहली उड़ान करनी थी। पेत्रोव के साथ उसका जोड़ा होगा – वह, मेरेस्येव, नेता होगा। कैसी बीतेगी? वह बड़ा बढ़िया लड़का मालूम होता है – मरीना पहली ही नज़र में उसे चाहने लगी है। ख़ैर, मुझे कुछ सो लेना चाहिए।

उसने करवट बदली, भूसे को थोड़ा ठीक-ठाक किया और गहरी नींद में सो गया।

वह जागा तो ऐसी घबराहट से मानो कोई भयंकर घटना हो गयी है। फ़ौरन तो वह नहीं समझ पाया कि क्या हो गया है, मगर सिपाही के सहज स्वभाववश वह उछल पड़ा और अपनी पिस्तौल थाम ली। वह कह नहीं सकता था कि वह कहां है। तीखे धुएं के बादल से, जिससे लहसुन जैसी गंध आ रही थी, हर चीज़ ढंक गयी थी, और जब हवा उस बादल को बहा ले गयी तो उसे अपने सिर के ऊपर बड़े-बड़े विचित्र तारे चमकते नज़र आने लगे। चारों तरफ़ की चीज़ें इतनी साफ़ दिखाई देने लगी थीं, जैसे दिन के निर्मल प्रकाश में दिखाई देती हैं और माचिस की तीलियों की तरह बिखरे हुए झोंपड़ी के लट्ठे, अलग हो गया छप्पर, आड़े-तिरछे शहतीर और कुछ आकारहीन चीज़ें उसे थोड़ी दूर पर जलती हुई दिखाई दीं। उसने कराहें, हवाई जहाज़ों के इंजनों की कंपा देनेवाली धड़धड़ाहट और बम गिरने का भयानक चीत्कार सुना।

"लेट जाओ!" वह पेत्रोव पर चिल्लाया, जो विध्वंस के बीच बच रहे चूल्हे के पटरे पर घुटने के बल बैठकर पागल की भांति चारों तरफ़ देख रहा था।

वे लोग ईंटों पर सीधे लेट गये और उनसे अपने शरीर चिपकाये रहे। उसी क्षण बम का एक बड़ा-सा खण्ड चिमनी से टकराया और लाल धूल और सूखे चूने का एक फ़व्वारा उन पर बरस पड़ा।

"हिलो-डुलो मत! निश्चल लेटे रहो!" मेरेस्येव ने आदेश दिया और कूदकर भाग जाने की आकांक्षा – किसी भी तरफ़, जहां तक पांव साथ दें दौड़ते जाने की अभिलाषा, जो रात्रिकालीन हवाई हमले के दौरान में हर आदमी महसूस करता है – उसने हठात् दबा ली।

बममार दिखाई न दे रहे थे। उन्होंने जो रोशनदान राकेटों को लटकाया था, उनकी रोशनी के ऊपर अंधेरे में वे चक्कर काट रहे थे।

लेकिन उस कांपती हुई, चकाचौंध रोशनी में बम कभी-कभी प्रकाश के क्षेत्र में काले बिंदुओं की भांति घुसे दिखाई दे जाते थे और धीरे-धीरे आकार में बड़ा रूप धारण करते हुए जमीन की तरफ़ ग़ोता लगाते थे और ग्रीष्म की रात के अंधकार में लाल-लाल लपटें छोड़ देते थे। ऐसा लगता था कि धरती फटी जा रही है और "र-रं-रिक्ख! र-रं-रिक्ख!" करती गरज रही है।

विमान-चालक चूल्हे के पटरे पर समतल पड़े रहे जो हर विस्फोट के धमाके से डोल जाता था। वे अपना समूचा शरीर, कपोल और पांव पटरे से चिपकाये हुए थे और अपने को समतल करने, ईंटों से चिपकने का प्रयत्न कर रहे थे। इंजनों की धड़धड़ाहट ख़त्म हो गयी और तभी पैराशूट पर नीचे उतरे रोशनदान राकेटों की चटचट और सड़क के दूसरी ओर जलते हुए खंडहरों की गरजना सुनाई देने लगी।

"चलो, उन्होंने हमें पहला सबक़ दे दिया," मेरेस्येव ने अपने कपड़ों से भूसे और चूने को झाड़ते हुए कहा।

"सोनेवालों का क्या हुआ?" पेत्रोव ने अपने जबड़े के तनाव को और हिचकियों को, जो गले तक उमड़ आयी थीं, रोकने का प्रयत्न करते हुए चिन्ता भाव से पूछा, "और मरीना?"

वे चूल्हे से उतर आये। मेरेस्येव के पास बिजली की टार्च थी। उसके सहारे उसने फ़र्श पर बिखरे हुए तख़्तों और लट्ठों के बीच तलाश शुरू की। वहां कोई नहीं था। बाद में उन्हें पता चला कि विमान-चालकों ने 'अलर्ट' सुन लिया था और वे खाई तक भागकर पहुंचने में कामयाब हो गये थे। पेत्रोव और मेरेस्येव ने सारे खंडहर को खोज डाला, मगर उन्हें मरीना या उसकी मां का पता न चला। उन्होंने आवाज लगायी, मगर कोई जवाब न मिला। उनको क्या हो गया? क्या वे लोग भाग निकलने में सफल हो गये?

गश्ती दस्ते व्यवस्था फिर स्थापित करते हुए सड़कों पर घूम रहे थे। सैंपर्स आग बुझा रहे थे, खंडहरों को साफ़ कर रहे थे, मृतकों और घायलों को खोदकर निकाल रहे थे। विमान-चालकों के नाम पुकारते हुए अर्दली लोग सड़क पर भाग-दौड़ कर रहे थे। रेजीमेंट को शीघ्र ही दूसरी जगह ले जाया जा रहा था। हवाई अड्डे पर विमान-चालक जमा किये जा रहे थे ताकि सुबह होते ही वे अपने हवाई जहाज लेकर निकल जायें। प्रारम्भिक

गिनती से पता चला कि मृतकों की संख्या अधिक नहीं थी। एक विमान-चालक घायल हो गया था, और दो मेकेनिक और कई सन्तरी, जो हवाई हमले के समय भी ड्यूटी पर रहे थे, मारे गये थे। विश्वास किया जाता था कि कई ग्राम-निवासी भी मारे गये थे, लेकिन कितने, यह जानना कठिन था अंधेरे और गड़बड़ी की वजह से।

सुबह से पहले ही, हवाई अड्डे की तरफ़ बढ़ते हुए मेरेस्येव और पेत्रोव उस मकान के निकट रुके बिना न रह सके, जहां रात में सोये थे। लट्ठों और तख़्तों के ऊबड़-खाबड़ के बीच दो सैपर सिपाही एक स्ट्रेचर लिये जा रहे थे जिस पर ख़ून से सनी चादर से ढंका हुआ कोई ले जाया जा रहा था।

"कौन है वह?" पेत्रोव ने पूछा—कुशंकाओं से उसका चेहरा पीला और दिल भारी हो गया।

स्ट्रेचरवाहकों में से एक मूंछोंवाले बुज़ुर्ग सैपर ने, जिसे देखकर मेरेस्येव को स्तेपान इवानोविच की याद आ गयी, विस्तार से बताया:

"एक बुढ़िया और एक लड़की। हमने उन्हें एक तलघर से निकाला है। ये लोग गिरती हुई ईंटों के शिकार हो गये। दम ही निकल गया। पता नहीं कि छोटी-सी लड़की युवती है या औरत—वह इस क़दर छोटी है। देखने से लगता है कि वह सुन्दर रही होगी। एक ईंट उसके सीने पर लगी। वह ऐसी सुन्दर है जैसे छोटा बच्चा।"

...उस रात जर्मन सेनाओं ने अपना आख़िरी बड़ा प्रत्याक्रमण प्रारम्भ किया, और सोवियत क़िलेबन्दी पर उनके हमले से कूर्स्क का संग्राम आरम्भ हुआ जो उनके लिए घातक सिद्ध हुआ।

२

सूर्य अभी उदय नहीं हुआ था; संक्षिप्त ग्रीष्म रात्रि का यह सबसे अंधेरा प्रहर था, किन्तु हवाई अड्डे के मैदान में गर्म किये जानेवाले इंजन अभी से धड़धड़ाने लगे थे। ओस से भीगी घास पर फैले हुए नक़्शे पर कप्तान चेस्लोव अपनी टुकड़ी के हवाबाज़ों को नया अड्डा और उस तक का मार्ग दिखा रहा था:

"आंखें खुली रखना," वह कह रहा था। एक दूसरे को ओझल न कर बैठना। हवाई अड्डा ठीक आगे की पांतों में है।"

नया अड्डा, सचमुच, युद्ध-पांत में था, नक़्शे पर उस जगह नीली पेंसिल की रेखा खिंची थी, एक ऐसी जगह पर जिसकी नोक जर्मन सेनाओं के मोर्चे की ओर इशारा कर रही थी। वहां जाने के लिए उन्होंने पीछे नहीं, आगे उड़ान की थी। विमान-चालक प्रसन्न थे। इसके बावजूद कि शत्रु ने फिर पहल की थी, सोवियत सेना पीछे हटने की नहीं, हमला करने की तैयारी कर रही थी।

जब सूर्य की पहली किरणों ने आसमान रोशन किया, जब गुलाबी कुहरा अभी भी मैदानों पर घुमड़ रहा था, तब दूसरी टुकड़ी अपने कमांडर की देखरेख में आसमान में उठी और वे एक दूसरे को दृष्टिगत रखते हुए दक्षिण दिशा की ओर बढ़ने लगे।

अपनी पहली संयुक्त उड़ान में मेरेस्येव और पेत्रोव एक दूसरे के सन्निकट रहे और इस बीच, यद्यपि यह उड़ान संक्षिप्त थी, पेत्रोव ने अपने नेता की विश्वासपूर्ण और वास्तविक रूप में कलात्मक शैली को सराह लिया था, और मेरेस्येव ने राह में कई बार जानबूझकर तेज़ी से और अकस्मात मोड़ लेकर यह देख लिया था कि उसके साथी में जागरूकता, सूक्ष्म दृष्टि, सुदृढ़ स्नायविक शक्ति और—जिसे वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण समझता था—अभी विश्वासपूर्ण तो नहीं, किन्तु बढ़िया उड़ान शैली है।

नया अड्डा एक पैदल रेजीमेंट के पृष्ठ-प्रदेश में स्थित था। अगर जर्मन उसका पता पा लेते तो वे अपनी हल्की तोपें लेकर और अपने भारी मार्टर तक लेकर वहां पहुंच सकते थे। लेकिन उनके पास उस हवाई अड्डे की चिन्ता करने का समय ही नहीं था जो ठीक उनकी नाक के नीचे बन गया था। अभी अंधेरा ही था कि वे सारी तोपख़ाने लेकर, जिन्हें वे वसन्त भर यहां एकत्र करते रहे थे, सोवियत सेनाओं की क़िलेबन्दी पर गोलाबारी करने लगे। लाल-लाल, कांपती हुई लौ क़िलेबंद क्षेत्र के ऊपर आसमान में ऊंची उठ गयी। विस्फोटों से हर चीज़ इस तरह ओझल हो जाती मानो हर क्षण काले वृक्षों का घना जंगल उभर उठता हो। यहां तक कि जब सूरज उग

आया, तब भी अंधेरा बना रहा। उस भनभनाहट, गर्जन और अंधेरे में किसी चीज़ को पहचानना कठिन था, और सूर्य आसमान में धुंधली-सी मटमैली लाल पूरी की तरह लटक रहा था।

सोवियत हवाई जहाजों ने एक महीने पहले जर्मन स्थितियों पर जो उड़ानें की थीं, वे बेकार नहीं गयी थीं। जर्मन कमान के इरादे स्पष्ट हो गये थे, नक़्शे पर उसकी स्थितियों और केन्द्रीयकरण के स्थानों को अंकित कर लिया गया था और एक एक वर्गाकार क्षेत्र का अध्ययन किया गया था। अपनी आदत के अनुसार फ़ासिस्ट यह सोचते थे कि वे अपने प्रसुप्त और आशंकाहीन शत्रु की पीठ में अपनी पूरी शक्ति से कटार भोंक सकेंगे, लेकिन शत्रु तो सोने का बहाना मात्र कर रहा था। उसने आक्रमणकारी की बांह पकड़ ली और अपने इस्पाती, दानवी पंजे में जकड़कर उसे चकनाचूर कर दिया। इसके पहले कि उनकी तोपों की गोलाबारी, जो दसियों किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर घमासान छेड़े हुए थी, शान्त हो पाती, अपनी तोपों की गरजना से बहरे और अपनी स्थितियों पर छाये हुए बारूदी धुएं से अंधे जर्मनों को स्वयं अपनी ही खंदकों में विस्फोटों का प्रभाव महसूस होने लगा। सोवियत तोपों का निशाना अचूक था, और उनका निशाना सिर्फ़ वर्ग-क्षेत्र पर ही नहीं होता था, जैसा कि जर्मनों ने बनाया था, बल्कि वे निश्चित लक्ष्यों, बैटरियों, टैंकों और पैदल सेना के जमावों को, जो आक्रमण पांत तक आ गये थे, पुलों, भूमिगत शस्त्र-भण्डारों, फ़ौजी ओटों और निर्देश-केन्द्रों को निशाना बना रहे थे।

जर्मन तोपों की गोलाबारी भयानक तोप-द्वन्द्व के रूप में फूट पड़ी, जिसमें दोनों ओर से तरह-तरह की हज़ारों-लाखों तोपों ने हिस्सा लिया। जब कप्तान चेस्लोव की टुकड़ी के हवाई जहाज़ नये हवाई अड्डे पर उतरे तो ज़मीन कांप रही थी और विस्फोटों के धड़ाके इतने लगातार हो रहे थे कि उन्होंने एक अनवरत शक्तिशाली भड़भड़ाहट का रूप ले लिया, मानो कोई अनन्त रेलगाड़ी सीटी देती, खड़खड़ाती और धड़धड़ाती हुई रेलवे पुल पर से जा रही हो और कभी उसे पार न कर रही हो। अपार, घुमड़ते हुए धुएं से सारा क्षितिज ओझल हो गया था। छोटे-से रेजीमेंटल हवाई अड्डे पर बममारों की लहरों पर लहरें चली आ रही थीं, कभी कलहंसों की पांत में, कभी सारसों की पांत में, और कभी खुली पांत में

श्रौर तोपों की अनवरत गरजना के बीच उनके बमों के गिरने की मनहूस थड़-सी आवाज़ अलग सुनाई दे रही थी।

स्क्वाड्रनों को "तैयारी नम्बर २" की स्थिति में रहने का आदेश मिला था। उसका अर्थ था कि विमान-चालकों को कॉकपिट में अपनी गद्दियों पर बैठे रहना था, ताकि आसमान में पहले राकेट के छूटते ही वे उड़ान कर सकें। हवाई जहाज़ों को भोज वृक्षों के कुंज के किनारे ले जाया गया था और पेड़ों की शाखाओं की नक़ाब ओढ़ा दी गयी थी। कुंज की ठंडी, अधकच्ची हवा में कुछ सौंधी सी गंध थी, और मच्छड़ों ने, जिनकी भनभन युद्ध की गरजना में डूब गयी थी, विमान-चालकों के चेहरों, गर्दनों और हाथों पर बुरी तरह से हमला कर दिया था।

मेरेस्येव ने अपना शिरस्त्राण उतारा और अलस भाव से मच्छड़ भगाते हुए, जंगल की प्रातःकालीन तीखी गंध का उपभोग करता हुआ गहरे विचारों में लीन बैठा रहा। अगले विमान-गाह में उसके साथी का वायुयान खड़ा था। जब-तब, बार-बार, पेत्रोव अपने कॉकपिट की गद्दी से उठ बैठता, कभी उसपर खड़ा तक हो जाता और उस दिशा में देखने लगता जिस तरफ़ युद्ध छिड़ा हुआ था या गुज़रनेवाले बमभारों के पीछे नज़रें दौड़ाने लगता। वह अपने जीवन में पहली बार असली शत्रु से मुठभेड़ करने के वास्ते उड़ान करने के लिए तड़प रहा था, वह किसी "र-५" द्वारा लटकाये हुए ज़ीन के फूले थैलों पर नहीं, वास्तविक, सजीव, स्फूर्त्त शत्रु के हवाई जहाज़ पर गोली चलाने के लिए आतुर था, जिसमें शायद खोल के अंदर बैठे घोंघे की तरह वही व्यक्ति बैठा हुआ हो, जिसके बम ने उस छरहरी, सुन्दर लड़की को मार डाला था, जिसके विषय में उसे अब ऐसा लगता था मानो उसे किसी सुन्दर स्वप्न में देखा था।

मेरेस्येव ने अपने बेचैन अनुगामी को निहारा और अपने मन में सोचा: "हम लगभग एक ही उम्र के हैं। वह उन्नीस वर्ष का है और मैं तेईस। आदमी के लिए तीन-चार वर्ष का फ़र्क़ होता ही क्या है?" लेकिन फिर भी अपने अनुगामी की अपेक्षा वह अपने को अनुभवी, गम्भीर और थकित वयोवृद्ध व्यक्ति अनुभव कर रहा था। अभी-अभी पेत्रोव अपने कॉकपिट में उछल रहा था, खिलखिला रहा था, हथेलियां मल रहा था, गुज़रनेवाले सोवियत बमभारों की ओर कुछ चिल्ला रहा था, मगर वह, अलेक्सेई,

अपनी सीट पर टांग फैलाये आराम से बैठा था। वह शान्त था। उसके पैर नहीं थे, और उसके लिए उड़ान करना दुनिया के किसी भी विमान-चालक की अपेक्षा कहीं अधिक कठिन था, मगर इससे भी वह विचलित नहीं हुआ। उसे अपने हुनर पर पूरा विश्वास था और अपनी पंगु टांगों पर पूरा भरोसा।

"तैयारी नम्बर २" की अवस्था में वह रेजीमेंट शाम तक रही। किसी कारण उसे सुरक्षित रखा गया था। शायद वे उसकी स्थिति को समय से पहले प्रगट नहीं करना चाहते थे।

रेजीमेंट को सोने के लिए वे खोहें मिली थीं, जिन्हें जर्मनों ने इस स्थल पर अपने अधिकार काल में बनाया था। उन्हें और आरामदेह बनाने के लिए उन्होंने उनकी दीवारों को अंदर से दफ़्ती और सामान बांधने के काग़ज़ से ढंक दिया था। अभी भी दीवारों पर कामातुर चेहरोंवाली सिनेमा सुन्दरियों के चित्रों के पोस्टकार्ड और जर्मन शहरों के दृश्य लटक रहे थे।

तोपों का युद्ध जारी रहा। धरती कांप रही थी। दीवारों पर लगे काग़ज़ के ऊपर सूखी रेत बरस पड़ती थी और रेंगने जैसी खड़खड़ करती थी मानो खोह में कीड़ों का ज़ोर हो।

मेरेस्येव और पेत्रोव ने फ़ैसला किया कि वे बाहर लबादे बिछाकर खुले में सोयेंगे। हुक्म था कि वर्दी में ही सोया जाये। मेरेस्येव ने सिर्फ़ अपने पैर के तस्मे ढीले कर लिये और पीठ के बल लेटकर आसमान की तरफ़ ताकने लगा, जो विस्फोटों की लाल कौंध से कांपता-सा लगता था। पेत्रोव फ़ौरन सो गया और नींद में खर्राटे भरने, बड़बड़ाने, जबड़े चलाने, ओंठ चाटने लगा और सोते हुए बच्चों की तरह लुढ़कने लगा। मेरेस्येव ने उसे अपने ग्रेट कोट से ढंक दिया। यह देखकर कि उसे नींद आनेवाली नहीं है, वह उठ बैठा, सर्दी से कांपने लगा और अपने को गर्म करने के लिए तेज़ी से कुछ शारीरिक व्यायाम करने लगा और एक पेड़ के ठूंठ पर बैठ गया।

तोपों का तूफ़ान शान्त हो गया। यहां वहां, इक्के-दुक्के, कोई तोप अकस्मात गोला उगल देती थी। कई भटके हुए गोले उड़कर हवाई अड्डे के पास ही कहीं फट पड़े। परेशान करने के लिए की जानेवाली इस गोलाबारी से अक्सर कोई चिन्तित नहीं होता। विस्फोट का धमाका सुनकर अलेक्सेई अपनी गर्दन तक न मोड़ता था, उसकी टकटकी बंधी थी युद्ध

पांत की ओर। अंधेरे में वह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर थी। अभी भी, इतनी रात गये, गहरी, अनवरत, भारी लड़ाई चल रही थी, जो सोती हुई धरती पर विस्तृत ज्वालाओं की लाल दमक के रूप में दिखाई दे रही थी जिनसे सारा क्षितिज दहक रहा था। उसके ऊपर राकेटों की कांपती हुई ज्योति कौंध जाती थी—फ़ास्फ़ोरस की नीली-सी जर्मन राकेटों की और पीली-सी हमारे। यहां-वहां किसी लपट की लम्बी-सी जीभ निकल आती थी जो एक क्षण के लिए धरती पर से अंधेरे का फ़र्श हटा देती थी, और उसके बाद विस्फोटों की भारी कराह छूट पड़ती थी।

रात्रिकालीन बममारों की भनभनाहट सुनाई दी और सारा मोर्चा उनकी लक्ष्यबेधी बहुरंगी गोलियों के मोतियों से दमक उठा। तेज़ी से चलनेवाली विमान-भंजक तोपों के गोले लहू की बूंदों की भांति ऊपर उछलने लगे। धरती फिर कांपी, कराही और चीत्कार कर उठी। भोज वृक्षों के शिखरों पर जो भौंरे मंडरा रहे थे; वे फिर भी इससे विचलित नहीं हुए; जंगल में दूर कहीं कोई उल्लू आदमियों जैसी आवाज़ में बोल रहा था और अमंगल की भविष्यवाणी कर रहा था, किसी झाड़ी में कहीं खोखले स्थल पर अपने दिवसकालीन भय से मुक्त होकर कोई बुलबुल पहले तो कुछ हिचक के साथ, जैसे अपने कण्ठ को परख रही हो, और फिर पूरे कण्ठ से चहकने-गाने लगी मानो उसका हृदय अपने संगीत के स्वरों से फूट ही पड़ेगा। उसके गीत को अन्य स्वरों ने पकड़ लिया और शीघ्र ही यह सारा जंगल जो अब युद्ध-पांत में आ गया था, सभी दिशाओं से आनेवाले मधुर संगीत से भर गया। कोई आश्चर्य नहीं, कूर्स्क की बुलबुलें सारी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

और अब वे अपने गीत से सारे आसमान को गुंजाने लगीं। अलेक्सेई—जिसे अगले दिन निरीक्षण के लिए उड़ान करना था, किसी व्यक्ति विशेष के आदेश से नहीं, स्वयं मौत के आदेश से—बुलबुलों के इस समवेत गान के कारण सो नहीं सका। और उसके विचार न तो कल की बातों में, न भावी युद्धों में, न मारे जाने की सम्भावनाओं में डूबे थे, बल्कि उस दूरवासी बुलबुल की ओर लगे हुए थे जिसने कमीशिन के उपनगर में उनके लिए गीत गाया था, उनकी "अपनी" बुलबुल की ओर, ओल्गा की ओर, अपने जन्म के क़सबे की ओर।

पूर्वी आकाश पीला पड़ चला। धीरे-धीरे बुलबुलों का संगीत तोपों की गरजना में डूब गया। रण-क्षेत्र के ऊपर सूर्य उदय हुआ — बड़ा भारी, लाल अरुण — जो गोलाबारी और विस्फोट के धुएं को मुश्किल से बेध पा रहा था।

४

कूर्स्क का युद्ध निर्बाध रूप से छिड़ गया। जर्मनों की असली योजना यह थी कि टैंक सेनाओं के तीव्र और शक्तिशाली आघात के द्वारा कूर्स्क के उत्तर और दक्षिण में हमारी क़िलेबन्दियों को चकनाचूर कर दें, और कैंची की कार्रवाई के द्वारा सोवियत सेना के सारे कूर्स्क दल को घेर लें और वहां "जर्मन स्तालिनग्राद" संगठित कर लें। लेकिन रक्षा-पांत की सुदृढ़ता के कारण यह मंसूबा असफल रहा। कुछ दिनों बाद जर्मन कमान यह समझ गयी कि इस रक्षा-पांत को वे न तोड़ पायेंगे, और अगर इसमें सफल भी हो गये, तो इस प्रयत्न में उन्हें इतनी भारी क्षति उठानी पड़ेगी कि दुतरफ़ी कार्रवाई से घिराई के काम के लिए उनके पास काफ़ी शक्ति न बची रहेगी, मगर सारी कार्रवाई को रोकने का अब समय नहीं रहा था। हिटलर ने इस युद्ध पर बड़ी आशायें — रणनीतिक, कार्यनीतिक और राजनीतिक आशायें — लगा रखी थीं। पहाड़ पर से बर्फ़ की चट्टान छोड़ दी गयी। वह ढलान पर अधिकाधिक वेग से लुढ़की और राह में जो कुछ भी मिला उसे अपने साथ लेती और कुचलती चली गयी, जिन लोगों ने उसे छोड़ा था, अब उनमें उसे रोकने की शक्ति न थी। जर्मन अपनी प्रगति किलोमीटरों में नापते थे और उन्हें अपनी क्षति कई डिवीजनों, कोरों, सैकड़ों टैंकों तथा तोपों और हज़ारों ट्रकों के रूप में गिननी पड़ती थी। बढ़ती हुई सेनायें लहू-लुहान हो रही थीं और ताक़त खोती जा रही थीं, जर्मन हेडक्वार्टर के अधिकारी इससे परिचित थे, लेकिन घटनाओं को रोकना उनके बस की बात नहीं थी और इसलिए वे युद्ध की नाटकीय ज्वालाओं में अधिकाधिक अपनी सुरक्षित सेनाओं को झोंकने के लिए विवश हो रहे थे।

सोवियत कमान इस जर्मन आक्रमण को उन सेनाओं से रोक रही थी जो यहां रक्षा-पांत संभाले हुए थीं। फ़ासिस्टों के बढ़ते हुए प्रकोप पर नज़र

रखते हुए उसने अपनी सुरक्षित सेनाओं को सुदूर पृष्ठ-प्रदेश में उस समय तक रखा जब तक कि शत्रु के आक्रमण का वेग समाप्त न हो गया। जैसा कि मेरेस्येव को बाद में पता लगा, उसकी रेजीमेंट का काम उन फ़ौजों को आड़ देना था जो प्रतिरक्षा के लिए नहीं, प्रत्याघात के लिए केन्द्रीभूत की गयी थीं। इसी से यह स्पष्ट होता है कि जिन टैंक दलों और उनसे सम्बन्ध स्थापित हुई लड़ाकू विमानों की टुकड़ियों को कार्यवाही करना था, वे महान युद्ध के पहले दौर में महज़ दर्शक क्यों बनी रहीं। जब शत्रु की सारी सेनाओं को युद्ध में व्यस्त कर लिया गया, तो हवाई अड्डे पर "तैयारी नम्बर २" रद्द कर दी गयी। विमान कर्मचारियों को खोहों में और वर्दी तक उतारकर सोने की आज्ञा दे दी गयी। मेरेस्येव और पेत्रोव ने अपने निवास-स्थान को पुनर्व्यवस्थित किया। उन्होंने सिनेमा सुन्दरियों के चित्रों और विदेशी नगरों के दृश्यों को उतार फेंका और दीवारों पर से दफ़्ती और काग़ज़ उधेड़कर उनको देवदार और भोज वृक्ष की टहनियों से सजा दिया, उसके बाद बिखरती हुई रेत की रेंगती सरसराहट द्वारा खोह की शान्ति का भंग होना बंद हो गया।

एक सुबह, जब खोह के खुले प्रवेश-द्वार से उमड़कर सूर्य की उज्ज्वल किरणें, फ़र्श पर बिछी हुई देवदार की नुकीली पत्तियों पर पड़ने लगीं और जब कि मित्र लोग अभी भी उन तख़्तों पर पांव फैलाये लेटे हुए थे जिन्हें उन्होंने दीवाल में लगा दिया था, तब ऊपर के रास्ते पर तेज़ी से चलनेवाले क़दमों की आहट सुनाई दी और कोई व्यक्ति वह शब्द चिल्ला उठा जो मोर्चे पर जादुई शब्द होता है: "डाकिया!"

दोनों ने एक साथ अपने कम्बल फेंक दिये, मगर उधर मेरेस्येव पैरों के तस्मे कसता ही रह गया और पेत्रोव भागकर निकल गया, उसने डाकिये को पकड़ लिया और विजयी भाव से अलेक्सेई के लिए दो पत्र लेकर लौट आया—एक उसकी मां का था और दूसरा ओल्गा का। अलेक्सेई ने अपने मित्र के हाथ से पत्र छीन लिये, लेकिन उसी क्षण रेल पटरी पर तेज़ी से चोटें पड़ती सुनाई दीं, जो हवाई अड्डे से आ रही थीं और विमान-चालकों को उनके वायुयानों पर उपस्थित होने के लिए बुला रही थीं।

मेरेस्येव ने दोनों पत्रों को अपने कोट में सरका दिया और फ़ौरन उनकी सुधि भूलकर जंगल की उस पगडंडी पर पेत्रोव के पीछे-पीछे दौड़

गया, जो उस स्थल की ओर जाती थी जहां विमान खड़े थे। छड़ी टेकते हुए वह काफ़ी तेज़ दौड़ा और बहुत थोड़ा लंगड़ाता जान पड़ा। जब वह विमान के पास पहुंचा तो इंजन का ढक्कन हटाया जा चुका था और एक चेचकरू मज़ाक़-पसंद लड़का-सा मेकेनिक उसके लिए अधीरतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था।

एक इंजन गरज उठा। मेरेस्येव "नम्बर ६" को देखने लगा जिसे टुकड़ी का कमांडर स्वयं उड़ानेवाला था। कप्तान चेस्लोव अपने विमान को चलाता हुआ खुले मैदान में ले गया। उसने अपनी भुजा उठायी – उसका अर्थ था "तैयार!" अन्य इंजन भी गरज उठे। चक्रवात घास को ज़मीन तक नवाने लगा और भोज वृक्षों के हरे गुच्छों को हवा में इस तरह झकझोरने लगा कि ऐसा लगता था मानो वे टूटकर पेड़ों से अलग होने के लिए तड़प रहे हैं।

अलेक्सेई जब अपने विमान की ओर दौड़ा जा रहा था, तब एक अन्य विमान-चालक उसके पास से गुज़रा, जो चिल्लाकर उसे बताता गया कि टैंक प्रत्याक्रमण करने जा रहे हैं। इसका अर्थ था कि लड़ाकू विमानों का काम यह था कि वे शत्रु की चकनाचूर क़िलेबंदी पार करके बढ़नेवाले टैंकों को आड़ दें और आक्रमणकारी सेनाओं के लिए वायुक्षेत्र साफ़ रखें और उसकी सुरक्षा करें। वायुक्षेत्र की रक्षा करें? इसमें क्या था? इस प्रकार के भीषण युद्ध में इसका अर्थ शान्तिपूर्ण उड़ान नहीं हो सकता। उसे विश्वास था कि देर-सबेर आसमान में शत्रु से मुठभेड़ अवश्य होगी। अब परीक्षा थी। अब वह सिद्ध कर देगा कि वह किसी विमान-चालक से कम नहीं है और उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

अलेक्सेई का दिल बेचैन हो रहा था, मगर इसलिए नहीं कि वह मरने से डरता था; ख़तरे की उस भावना से भी नहीं, जो वीरतम और धीरतम पुरुष तक को प्रभावित करती है। उसे कुछ और ही चिन्ता थी: क्या शस्त्र-निरीक्षकों ने मशीनगनों और तोपों की परीक्षा कर ली है? क्या उसके नये शिरस्त्राण के कर्णयंत्र ठीक हैं जिन्हें उसने अभी तक युद्ध में नहीं पहना था? अगर शत्रु से मुठभेड़ हो गयी तो पेत्रोव पीछे तो नहीं रह जायेगा या वह बहुत जल्दबाज़ी से कार्यवाही तो न करेगा? छड़ी कहां है? वह वसीली वसील्येविच की भेंट को खोना नहीं चाहता और उसे यहां तक चिन्ता

हुई कि खोह में वह जो पुस्तक छोड़ आया है—एक उपन्यास, जिसे उसने पिछले दिन अत्यन्त मर्मस्पर्शी स्थल तक पढ़ लिया था और जिसे जल्दी में मेज़ पर छोड़ आया था—उसपर कोई हाथ न मार दे। उसे याद पड़ा कि उसने पेत्रोव से विदाई भी नहीं की है, इसलिए उसकी तरफ़ उसने अपने कॉकपिट से हाथ हिलाया। मगर पेत्रोव ने उसे देखा भी नहीं। चमड़े के शिरस्त्राण से घिरे हुए उसके चेहरे पर दाग़ों-सी लालिमा बिखरी हुई थी। वह कमांडर की उठी हुई भुजा को अधीरता से ताक रहा था। भुजा गिर गयी। कॉकपिट के ढक्कन बंद कर दिये गये।

रेखा पर तीन विमानों का दल खर्राटे भरता चल पड़ा और उड़ गया, और उसके पीछे एक और, तथा तीसरा दल भी उड़ गया। अभी पहला दल आकाश में फिसल गया। मेरेस्येव का दल भी फुदककर उड़ गया और उनके पीछे चल पड़ा—अपने नीचे समतल धरती को झूलती छोड़ते हुए। प्रथम विमानत्रयी को दृष्टि में रखते हुए मेरेस्येव ने उसके पीछे अपना दल लगा दिया और उसके पीछे तीसरा आ रहा था।

वे आगे की पांत तक पहुंच गये। गोलों से छिद्रित और ध्वस्त धरती आसमान से ऐसी दिखाई दे रही थी मानो पहली मूसलाधार वर्षा के बाद की कच्ची रेतभरी सड़क हो। ध्वस्त खाइयां, फुंसियों जैसी दिखाई देनेवाली ओटें और गोलाबारी के स्थल जो लट्ठों और ईंटों के ढेर मात्र रह गये थे। सारी ऊबड़-खाबड़ घाटी में पीली चिनगारियां उछल पड़ती थीं और बुझ जाती थीं। वे उस घनघोर युद्ध के अग्निकाण्डों से आ रही थीं, जो नीचे छिड़ा हुआ था। ऊपर से सब कुछ कितने नन्हें, खिलौने जैसे और विचित्र जान पड़ते थे! शायद ही कोई विश्वास कर पाता कि नीचे हर चीज़ जल रही है, दहाड़ रही है, उथल-पुथल मचा रही है और विकृतांग धरती पर धुएं और कालिख के बीच स्वयं मौत रेंग रही है और ज़बर्दस्त फ़सल काट रही है।

वे अगली पांत के ऊपर उड़े, शत्रु के पृष्ठ-प्रदेश पर उन्होंने अर्धवृत्ताकार चक्कर लगाया और फिर युद्ध-पांत पार कर लौट आये। किसी ने उनपर गोला न चलाया। नीचे के लोग अपने ही भयंकर लौकिक संघर्ष में इतने व्यस्त थे कि उन नौ छोटे-से वायुयानों की तरफ़ कौन ध्यान देता जो ऊपर चक्कर काट रहे थे। लेकिन टैंक-चालक कहां हैं? आहा! वे हैं! मेरेस्येव

ने उन्हें जंगल से प्रगट होकर रेंगते देखा, एक के पीछे एक, जो आसमान से मटमैले, भौंड़े गुबरैले जैसे लगते थे। शीघ्र ही उनकी बड़ी तादाद प्रगट हो गयी, लेकिन और भी अधिक टैंक झाड़ियों के पीछे से निकल आये और सड़कों तथा घाटियों को पार करते बढ़ने लगे। उनमें से पहले टैंक पहाड़ी पर चढ़ गये और गोलों से फटी धरती पर पहुंच गये। उनके छोटे धड़ों से लाल चिनगारियां छूटने लगीं। इस भयंकर टैंक-आक्रमण को जर्मन क़िलेबन्दी के अवशेषों के विरुद्ध सैकड़ों मशीनों के इस तीव्रतम धावे को अगर कोई बच्चा या हौलदिल औरत तक उस सुविधाजनक स्थान से देखती, जहां से मेरेस्येव देख रहा था, तो उसे तनिक भी डर न लगता। इसी क्षण अपने शिरस्त्राण के कर्णयंत्र की खट्-खट् और भन्-भन् के बीच उसने कप्तान चेस्लोव की फटी आवाज़ सुनी जो इस समय भी मंद-सी थी :

"सावधान! मैं हूं चीता संख्या तीन। मैं हूं चीता संख्या तीन। दाहिनी ओर – 'जंकर्स', 'जंकर्स'!

अलेक्सेई ने कहीं अपने सामने छोटी-सी आड़ी रेखा देखी। वह कमांडर का विमान था। वह विमान हिल-डुल रहा था। इसका अर्थ था: "जैसा मैं करूं, वैसा करो!"

मेरेस्येव ने अपने दल के लिए उस आदेश को दुहराया। उसने चारों ओर देखा: उसका अनुयायी बग़ल में ही लटका था, लगभग उसके समानान्तर। बढ़िया छोकरा है।

"कसकर संभालना, बुढ़ऊ!" उसने चिल्लाकर उससे कहा।

"संभला हूं," ऊबड़-खाबड़ कड़-कड़ और भन्-भन् के बीच उत्तर मिला।

उसने फिर पुकार सुनी :

"मैं हूं चीता संख्या तीन, चीता संख्या तीन!" और फिर हुक्म मिला, "मेरा पीछा करो!"

शत्रु पास ही था। उनके नीचे दोहरी कलहंस जैसी पांत में जिसे जर्मन पसन्द करते थे, "जंकर्स-८७" नाम के एक इंजनवाले ग़ोताखोर बमबारों की एक टुकड़ी थी। उनके पहिये छिपाये नहीं थे और उड़ते समय पेट के नीचे ऐसे लटके रहे जो फैलाये हुए पैरों की तरह लगते थे। इन कुख्यात ग़ोताखोर बमबारों ने पोलैंड, फ्रांस, हालैंड, डेनमार्क, बेल्जियम, और यूगोस्लाविया के युद्धों में डाकुओं जैसी कुप्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी; इस

नये फ़ासिस्ट अस्त्र के बारे में युद्ध के आरम्भ में सारे संसार के समाचारपत्र भयानक कथाओं का वर्णन किया करते, मगर सोवियत संघ में शीघ्र ही ये पुराने पड़ गये। असंख्य मुठभेड़ों में सोवियत विमान-चालकों ने उनकी कमज़ोरियां खोज ली थीं और हमारे सोवियत हवाबाज़ इन जंकर्सों को छोटे दर्जे का शिकार समझने लगे मानो वे जंगली मुर्ग़ पक्षी या ख़रगोश हों जिनके शिकार में शिकारी के असली हुनर की आवश्यकता नहीं होती।

कप्तान चेस्लोव ने अपनी टुकड़ी को दुश्मन से सीधा न भिड़ाया, बल्कि एक चक्कर खिलाया। मेरेस्येव ने सोचा कि सचेत कप्तान "सूरज को पीठ पीछे" कर देना चाहता है और फिर सूरज की चकाचौंध किरणों की नक़ाब ओढ़कर, अदृश्य भाव से शत्रु के पास पहुंच जाना चाहता है और हमला कर देना चाहता है। अलेक्सेई मन ही मन मुसकुराया और सोचने लगा, "यह उलझी हुई चाल चलकर वह इन 'जंकर्सों' को बड़ी इज्ज़त बख़्श रहा है। फिर भी सावधान रहने में कोई हानि नहीं होगी।" उसने फिर चारों ओर देखा। पेत्रोव उसके पीछे था। वह उसे एक सफ़ेद बादल की पृष्ठभूमि में स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

अब जर्मन के बममार उनकी दायीं ओर थे। वे बड़ी सुन्दर पांत में, पूर्ण सामंजस्य के साथ उड़ रहे थे, मानो किसी अदृश्य डोरे से बंधे हों। उनके ऊपर जो सूर्य-रश्मियां गिर रही थीं, उनसे उनके पंख चकाचौंध हो रहे थे।

अलेक्सेई ने कमांडर के हुक्म के आख़िरी शब्द सुने:

"...चीता संख्या तीन। हमला करो!"

उसने देखा – चेस्लोव और उसके अनुगामी बाज की तरह शत्रु की पांत पर टूट पड़े। अन्वेषक गोलियों की एक डोरी-सी निकटतम "जंकर्स" से जा टकरायी, "जंकर्स" गिर गया और चेस्लोव, उसका अनुगामी और उसके दल का तीसरा विमान जर्मन पांत की दरार में घुस गये। जर्मनों ने फिर अपनी पांत बांध ली और पूर्णतया पांतबद्ध "जंकर्स" अपनी राह चलते रहे।

अलेक्सेई ने अपनी पुकार का सिगनल कर दिया और चिल्लाना चाहता था, "हमला कर दो!" लेकिन वह इतना उत्तेजित था कि सिर्फ़ कह सका, "हा-आ-आ!" लेकिन उसने जर्मनों की साफ़-सुथरी उड़ान-पांत के अलावा

श्रौर कुछ न देखते हुए स्वयं ही धावा बोल दिया था। उसने श्रपना निशाना उस हवाई जहाज़ को चुना था जिसने चेस्लोव द्वारा गिराये गये विमान का स्थान ले लिया था। उसने श्रपने कान में एक गूंज सुनी श्रौर उसका हृदय इतने उग्र रूप से धड़कने लगा कि उसकी सांस रुकने-सी लगी। जो निशाना उसने चुना था, उसपर उसने नज़र बांध ली श्रौर दोनों श्रंगूठे घोड़ों पर जमाये हुए वह उसकी श्रोर टूट पड़ा। मटमैली, रोयेंदार डोरों की रेखाएं उसके पास से गुज़र गयीं। श्राहा! वे लोग गोलियां चला रहे हैं। चूक गये। फिर सही। इस बार नज़दीक से। कोई क्षति नहीं। पेत्रोव का क्या हाल है? उसे भी चोट नहीं लगी। वह बायीं तरफ़ है। खूब चरका दिया है उन्हें! होशियार है छोकरा! जर्मन विमान की मटमैली बाज़ू उसकी दृष्टि में बड़ी होने लगी। उसके श्रंगूठों ने श्रलुमीनम के घोड़ों की ठंडक महसूस की। थोड़ा श्रौर क़रीब पहुंच जाश्रो...

यह क्षण था जब श्रलेक्सेई ने महसूस किया कि वह श्रपने विमान से पूरी तरह एकाकार हो गया है। वह इंजन का प्रकम्पन इस तरह श्रनुभव करने लगा मानो वह उसके वक्ष की ही धड़कन हो, पंखों श्रौर पीछे के रडरों की संवेदना वह रोम-रोम में महसूस कर रहा था, श्रौर उसे ऐसा लगने लगा मानो ऊबड़-खाबड़, कृत्रिम पैरों में संवेदनशीलता पैदा हो गयी हो श्रौर वे भयंकर तीव्र गति से चलते हुए विमान से श्रपने को एकाकार करने में बाधक नहीं बन रहे थे। फ़ासिस्ट विमान का भारी चमकीला ढांचा उसकी नज़र से श्रोझल हो गया, मगर उसने उसे फिर पकड़ लिया। वह सीधा उसपर झपटा श्रौर घोड़ा दबा दिया। उसने गोली दग़ने की श्रावाज़ नहीं सुनी, श्रन्वेषी गोलियों के तार तक को वह नहीं देख सका, लेकिन वह जान गया था कि उसका निशाना बैठ गया है श्रौर इस विश्वास के साथ कि उसका शिकार गिर गया है श्रौर उसका विमान श्रब उससे नहीं टकरा सकता, वह श्रपना विमान सीधी दिशा में उड़ाये चला गया। श्रपनी दिशा से नज़रें हटाकर देखने पर उसे पहले बममार के क़रीब ही दूसरा बममार भी गिरता नज़र श्राया। क्या उसने दो बममारों को शिकार बनाया है? नहीं। यह पेत्रोव की कारगुज़ारी थी। वह दाहिनी तरफ़ था। नये लड़के के लिए यह शानदार कामयाबी है! उसे श्रपने युवक मित्र की सफलता पर श्रपनी सफलता से श्रधिक श्रानन्द मिला।

जर्मन पांतबन्दी की दरार के बीच से दूसरा दल भी गुज़र गया। और तभी मज़ेदार घटना घटी। जर्मन विमानों की दूसरी लहर ने, स्पष्ट ही जिसे कम अनुभवी विमान-चालक चला रहे थे, अपनी पांत तोड़ दी। चेस्लोव दल के विमान इन बिखरे हुए "जंकर्सों" के बीच घुस गये, उनका पीछा करने लगे और उन्हें इस बात के लिए विवश कर दिया कि वे अपनी ही पांतों पर अपने बम छोड़ दें। अपनी चाल निर्धारित करते समय कप्तान चेस्लोव ने यही हिसाब-किताब लगाया था कि शत्रु को अपनी ही क़िलेबन्दी पर बम गिराने के लिए मजबूर किया जाये। सूरज को पीठ पीछे करना ही उसका मुख्य उद्देश्य नहीं था।

फिर भी जर्मन विमानों की पहली पांत ने अपनी पांतबंदी फिर कर ली और "जंकर्स" उस स्थल की तरफ़ बढ़ते गये जहां टैंकों ने मोर्चा बेध दिया था। तीसरे दल का हमला असफल रहा। जर्मनों ने एक भी विमान नहीं खोया, उलटे एक लड़ाकू विमान ग़ायब हो गया जो जर्मन तोपची द्वारा निशाना बना लिया गया था। वे लोग इस स्थान के निकट पहुंचते जा रहे थे जहां टैंकों को अपना हमला करना था, और अपने विमानों को ऊंचाई पर ले जाने का समय नहीं था। चेस्लोव ने नीचे ही से हमला करके ख़तरा मोल लेने का फ़ैसला किया। अलेक्सेई ने मन ही मन इसका समर्थन किया। वह स्वयं इस बात के लिए उत्सुक था कि शत्रु के पेट में "चोट" करने के लिए खड़ी गति से हमला कर सकने की जो क्षमता "ला-५" विमानों में है, उसका लाभ उठाया जाये। पहला दल ऊपर की तरफ़ धावा कर रहा था और फ़व्वारे की भांति गोलियां छोड़ रहा था। फ़ौरन दो जर्मन विमान पांत से गिर गये। उनमें से एक के दो खण्ड अवश्य हो गये होंगे, क्योंकि वह यकायक फट गया और उसकी पूंछ मेरेस्येव के इंजन से टकराते बाल-बाल बची।

"पीछे आओ!" मेरेस्येव चिल्लाया और पेत्रोव के विमान की छायाकृति पर कनखियों से नज़र डालकर उसने अपने विमान के डंडे अपनी ओर खींच लिये।

धरती उलट गयी। अलेक्सेई अपने आसन पर इस तरह गिर पड़ा मानो उसपर भारी चोट की गयी हो। उसने अपने मुंह और होंठों पर ख़ून का स्वाद महसूस किया, उसकी आंखों के सामने लाल धुंध छा गयी। उसका

विमान लगभग सीधे खड़ी दिशा में तेज़ी से झपटा। अपने आसन पर पीठ से टिके बैठे बैठे उसकी आंखों के सामने एक "जंकर्स" का धारीदार पेट, उसके मोटे-मोटे पहियों के विचित्र-से ढक्कन और उनपर चिपके हुए हवाई अड्डे की मिट्टी के लौंदे तक कौंध गये।

उसने घोड़े दबा दिये। उसने शत्रु के विमान में कहां निशाना मारा—पेट्रोल की टंकी में, इंजन में या बम रखने के स्थल पर—यह वह न जान सका, मगर शत्रु का हवाई जहाज़ विस्फोट के भूरे धुएं में तत्क्षण विलीन हो गया।

विस्फोट के झोंके से मेरेस्येव का विमान एक तरफ़ फेंका गया और वह एक अग्नि-पुंज के पास से गुज़र गया। वह अपने विमान को सतह पर ले आया और आसमान की छानबीन करने लगा। उसका अनुगामी दायीं तरफ़ था—अनन्त नीलिमा में सफ़ेद बादलों के सागर पर तैरता हुआ, और ये बादल साबुन के बुलबुलों-बगूलों जैसे लग रहे थे। आसमान वीरान था, सिर्फ़ क्षितिज पर, सुदूर बादलों की पृष्ठभूमि में छोटे-छोटे बिंदु दृष्टिगोचर हो रहे थे—वे "जंकर्स" विमान थे जो विभिन्न दिशाओं में बिखर गये थे। अलेक्सेई ने घड़ी देखी और चकित रह गया। उसे ऐसा लग रहा था कि युद्ध कम से कम आधे घंटे चला होगा और उसका पेट्रोल कम हो गया होगा, लेकिन घड़ी से पता चला कि वह सिर्फ़ साढ़े तीन मिनट चला था।

"ज़िन्दा हो?" उसने अपने अनुगामी की ओर देखकर पूछा, जो "रेंगकर" आगे निकल आया था और अब उसके समानान्तर चल रहा था।

अपने कर्णयंत्र में अनेक ऊबड़-खाबड़ स्वरों के बीच उसने दूरागत, हर्षित स्वर सुना:

"ज़िन्दा हूं... नीचे... नीचे देखो..."

नीचे एक ध्वस्त, फटी-फटी पहाड़ी घाटी में कई स्थानों पर पेट्रोल की टंकियां जल रही थीं और शान्त हवा में घने धुएं के बादल खम्भों की भांति ऊंचे उठ रहे थे। लेकिन अलेक्सेई ने शत्रु के विमानों के अवशेषों को जलते हुए न देखा। उसकी आंखें मटमैले हरे गुबरैलों पर जमी हुई थीं जो बड़ी तादाद में मैदान पार करते भागे चले जा रहे थे। वे दो घाटियों के किनारे-किनारे रेंगते शत्रु की स्थितियों तक पहुंच गये थे और उनमें से आगे के टैंक अब खाइयां पार करने लगे थे। अपने छोटे-छोटे सूंडों से लाल

चिनगारियां उगलते हुए वे शत्रु की क़िलेबन्दी की पांत को तोड़कर घुस गये और अधिकाधिक आगे बढ़ते गये – हालांकि उनके पीछे के क्षेत्र में अभी भी गोले कौंध जाते थे और जर्मन तोपों से निकलता हुआ धुआं दिखाई दे रहा था।

मेरेस्येव जानता था कि शत्रु की चकनाचूर स्थितियों की गहराई में इन सैकड़ों गुबरैलों के पहुंच जाने का क्या मतलब है।

वह ऐसा दृश्य देख रहा था जिसके बारे में अगले दिन सोवियत जनता ने और सभी स्वतंत्रताप्रेमी देशों की जनता ने बड़े आनन्द और गर्व से पढ़ा। कूर्स्क क्षेत्र के एक भाग में सेना ने दो घंटे के भयंकर तोप-युद्ध के बाद शत्रु की प्रतिरक्षा-पांत को बेध दिया था, और अपनी सारी फ़ौजें लेकर उस दरार में घुस पड़ी थी, और उन सोवियत सेनाओं के लिए मार्ग साफ़ कर दिया था जो अब प्रत्याक्रमण कर रही थीं।

कप्तान चेस्लोव के नौ विमानों के स्क्वाड्रन में से दो जहाज़ अपने अड्डे नहीं लौट सके। नौ "जंकर्स" मार गिराये गये। जहां तक विमान गिनने का सवाल है, नौ के मुक़ाबले दो का अनुपात निश्चय ही बहुत बढ़िया जीत है। किन्तु दो साथियों की क्षति से विजय का आनन्द मारा गया। अपने विमानों से उतरने के बाद विमान-चालकों ने कोई हर्ष नहीं प्रगट किया और न युद्ध की घटनाओं पर गहरा विवाद करते हुए चिल्लाये या शोरगुल किया, और उन ख़तरों के साक्षात अनुभव से फिर नहीं ओतप्रोत हुए जिनसे वे गुज़रे थे – जैसा कि हर सफल मुठभेड़ के बाद वे किया करते थे। उदास भाव से वे प्रधान के सामने पहुंचे, सूखे, संक्षिप्त वाक्यों में परिणामों का ब्यौरा दिया और एक दूसरे की तरफ़ देखे बिना ही विदा हो गये।

अलेक्सेई रेजीमेंट में नया व्यक्ति था। जो दो व्यक्ति मारे गये उन्हें वह नहीं जानता था। मगर वह भी विद्यमान वातावरण से प्रभावित हो गया। उसके जीवन की सबसे बड़ी और सबसे महत्त्वपूर्ण घटना घट चुकी थी – वह घटना, जिसके लिए वह अपने शरीर और मस्तिष्क की पूरी शक्ति से प्रयत्न कर रहा था और जिस पर उसके जीवन का भविष्य, स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियों की पांत में उसका लौटना निर्भर करता था। इसके बारे में वह कितनी बार स्वप्न देख चुका था – अस्पताल की

शय्या पर और बाद में चलना-फिरना और नृत्य करना सीखने के दौर में, और घोर प्रशिक्षण के द्वारा विमान-चालक के रूप में अपना हुनर पुनः प्राप्त करने के काल में! और जब चिरप्रत्याशित दिन आ गया था, जब वह दो जर्मन विमानों को मार गिरा चुका था और जब विमान-चालकों के परिवार में वह एक समान सदस्य का स्थान पा चुका था, तब वह भी अन्य सब की तरह प्रधान के सामने खड़ा हो गया, अपनी कार्यवाही का ब्यौरा दिया, परिस्थितियों का विवरण दिया और अपने अनुगामी की प्रशंसा की, और फिर एक भोज वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गया तथा उन लोगों के विषय में सोचने लगा जो उस दिन वापस नहीं लौटे थे।

सिर्फ़ पेत्रोव ही ऐसा व्यक्ति था जो नंगे सिर, हवा के झोंकों में अपने सुन्दर केश लहराते हुए सारे हवाई अड्डे पर दौड़ लगाता घूम रहा था, और जो भी मिल जाते, उनकी आस्तीन पकड़कर उन्हें सुनाने लगता:

"...ठीक मेरी ही बग़ल में वे थे, बस एक हाथ की दूरी होगी... तो, सुनो... मैंने सीनियर लेफ़्टीनेंट को आगेवाले पर निशाना साधते देखा। उसके बग़लवाले पर मेरी नज़र पड़ी। बस, बैंग!"

वह दौड़कर मेरेस्येव के पास पहुंचा, उसके पैरों के पास नर्म, मख़मली घास पर लुढ़क गया और लेट गया, लेकिन इस आरामदेह स्थिति में भी वह पड़ा न रह सका; वह उछल पड़ा और बोला:

"तुमने तो आज कमाल की कलाबाजियां दिखायीं! शानदार! मेरा तो दम रुक गया था... पता है, मैंने उस को कैसे मार गिराया था? सुनो तो... मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलता गया और उसे ठीक अपनी बग़ल में देखा, इतने ही पास जैसे कि अभी तुम बैठे हो..."

"एक मिनट ठहरो, बुढ़ऊ," अलेक्सेई ने टोका और जेबें टटोलीं, "वह चिट्ठियां! उन चिट्ठियों का मैंने क्या किया?"

उसे उन पत्रों की याद हो आयी जो उसी दिन प्राप्त हुए थे और जिन्हें पढ़ने का समय न मिला था। जब उन पत्रों को वह जेबों में भी न पा सका तो उसका सारा शरीर ठंडे पसीने से नहा गया। उसने अपना हाथ कोट के अन्दर डाला, लिफ़ाफ़ों के खड़खड़ाने की ध्वनि सुनी और चैन की सांस ली। उसने ओल्गा का पत्र निकाला और अपने उत्साही युवक मित्र की कथा की उपेक्षा करके लिफ़ाफ़े को एक तरफ़ से फाड़ डाला।

तभी एक राकेट उछला। आसमान में लाल ज्वाला का सांप लहराने लगा, हवाई अड्डे पर उसने चक्कर लगाया और एक स्याह, धीरे-धीरे घुलती हुई रेखा छोड़कर ग़ायब हो गया। विमान-चालक कमर कसकर खड़े हो गये। अलेक्सेई ने पत्र का एक शब्द भी पढ़े बिना उसे अपने कोट में खिसका दिया। लिफ़ाफ़ा खोलते समय उसने काग़ज़ के अलावा कोई सख़्त चीज़ भी रखी महसूस की थी। अब सुपरिचित दिशा में अपने दल के आगे-आगे उड़ते हुए, उसने कई बार लिफ़ाफ़े को छुआ और कल्पना करने लगा कि वह क्या है।

जिस दिन टैंक सेना ने शत्रु की पांतों को तोड़ा, उस दिन से गार्ड लड़ाकू विमान रजीमेंट के लिए – जिसमें अलेक्सेई काम कर रहा था – अत्यन्त व्यस्त काल प्रारम्भ हुआ। दरार के क्षेत्र के ऊपर टुकड़ी के बाद टुकड़ी जाती थी। युद्ध से लौटने के बाद एक उतरी कि दूसरी आसमान में पहुंच गयी, और पेट्रोल के ट्रक उन विमानों की तरफ़ दौड़ पड़ते थे, जो अभी ही लौटे थे। ख़ाली टंकियों में पेट्रोल बड़ी उदारता से उड़ेला जाता था। गर्म इंजनों के ऊपर ऐसी कांपती हुई भाप नज़र आती थी जैसे तप्त ग्रीष्म की वर्षा के बाद खेतों से उठती है। विमान-चालक भोजन तक के लिए अपने कॉकपिट से बाहर नहीं आते थे। अलुमीनम के कटोरदानों में भोजन वहीं ले आया जाता था। लेकिन खाने में किसी को रुचि न थी, खाना उनके गले में अटकने लगता था।

जब कप्तान चेस्लोव की टुकड़ी फिर उतरी और जंगल तक ले जाये जाने के बाद विमानों में फिर पेट्रोल भरा जाने लगा तो मेरेस्येव एक आनन्ददायक, टीस-सी पैदा करनेवाली थकान को अनुभव करता, अपने कॉकपिट में मुसकुराता हुआ बैठा रहा; वह अधीरता से आसमान की ओर देखता जाता और पेट्रोल भरनेवालों को जल्दी करने के लिए कहता जाता। वह फिर आसमान में पहुंच जाने और अपनी परीक्षा करने के लिए व्याकुल था। वह बार-बार अपना हाथ कोट के अन्दर डाल लेता और खड़खड़ाते लिफ़ाफ़ों को टटोल लेता, मगर इस स्थिति में उसका पढ़ने को जी न हुआ।

शाम से पहले तक, जब तक दिन ढलने न लगा, तब तक विमान-चालकों को अवकाश न दिया गया। मेरेस्येव अपने निवास-स्थल तक जंगल की उस छोटी-सी पगडंडी से न रवाना हुआ, जिससे वह अक्सर जाता

था, बल्कि उसने घास-पात से ढंके मैदान में होकर लम्बा रास्ता पकड़ा। अनन्त प्रतीत होनेवाले दिन के क्षण-क्षण परिवर्तित इतने अनुभवों के बाद, इतने कोलाहल और खींचतान के बाद अब वह अपने विचारों को संजोना चाहता था।

बड़ी स्वच्छ शाम थी—सौरभपूर्ण और इतनी शान्त कि सुदूर गोलाबारी की गड़गड़ाहट अब किसी युद्ध की आवाज़ नहीं, किसी तूफ़ान के गुज़रने की गरजना जैसी लग रही थी। यह रास्ता एक ऐसे मैदान से जाता था जो पहले राई का खेत रहा होगा। उदास-सी घास-पात जो साधारण मानवीय संसार में किसी अहाते के कोने में या खेत के किनारे पत्थरों के ढेर पर चोरी-चोरी अपने नाज़ुक डंठलों को ऊंचा उठाती है—ऐसी जगहों पर जहां उसके स्वामी की नज़रें मुश्किल से पहुंच पाती हैं—वही एक ठोस दीवार की भांति, भारी-भरकम, उछंड और शक्तिशाली रूप में यहां खड़ी थी और उस धरती पर हावी हो गयी थी जिसे मेहनतकशों की पीढ़ियों ने अपना ख़ून-पसीना एक कर उर्वरा बनाया था। सिर्फ़ यहां-वहां जंगली राई की पतली-सी बालें दिखाई दे रही थीं। घास-पात ने मिट्टी का सारा तत्व पचा लिया था, सूर्य की सारी किरणों को सोख लिया था, राई को प्रकाश और जीवन-शक्ति से वंचित कर दिया था और इसलिए राई की चंद बालें भी फूलने से पहले ही मुरझा गयी थीं और उनमें अनाज कभी नहीं आया।

और मेरेस्येव सोचने लगा: फ़ासिस्ट भी इसी तरह हमारे खेतों में जड़ें जमाना चाहते थे, हमारी मिट्टी का सारा तत्व पचा जाना चाहते थे, हमारी समृद्धि को लूट लेना चाहते थे और इसी भयंकर तथा उछंड भाव से सूरज की रोशनी से हमें वंचित कर देना चाहते थे और हमारी महान, श्रमप्रिय, शक्तिशाली जनता को उसके खेतों और बाग़ीचों से भगा देना चाहते थे, उन्हें सर्वस्व से वंचित कर देना चाहते थे और उनपर इसी तरह छा जाना और कुचल देना चाहते थे जिस तरह घास-पात ने इन नन्ही बालों को कुचल दिया है जिनमें शक्तिदायक और सुन्दर अनाज की बाहरी समानता भी शेष नहीं रह गयी है। बाल-सुलभ उत्साह से प्रेरित होकर उसने अपनी आबनूसी छड़ी घुमायी और लाल-लाल, परों जैसी घास-पात पर फटकार दी और जब उनके अहंकारी शीशों की पांत की पांत नीचे झुक गयी तो उसमें उल्लास भर गया। उसके चेहरे से पसीना चूने लगा, लेकिन वह उस

घास-पात पर छड़ी फटकारता ही रहा जिसने राई का गला रौंद दिया था। और उसके थकित शरीर में संघर्ष और क्रियाशीलता की जो संवेदना पैदा हो गयी, उससे वह आनन्दित हो उठा।

नितान्त अप्रत्याशित रूप में एक जीप उसके पीछे आकर खर्र-खर्र करने लगी और चीं बोलते हुए ब्रेकों के बल सड़क पर रुक गयी। मुड़कर देखे बिना मेरेस्येव भांप गया कि रेजीमेंटल कमाण्डर उस तक पहुंच गया है और उसको यह बचकाना काम करते पकड़ लिया है। उसके कानों तक लज्जा की लालिमा दौड़ गयी और यह बहाना करते हुए कि उसने कार के आगमन की आवाज़ सुनी ही नहीं है, वह अपनी छड़ी से ज़मीन खोदने लगा। लेकिन उसने कर्नल को कहते सुना :

"इन्हें काट रहे हो? वाह क्या बढ़िया काम है... सुनिये जनाब, मैं तुम्हारे लिए कोना-कोना छानता घूम रहा हूं। हर आदमी से पूछ रहा हूं : हमारा वीर-नायक कहां गया? और वह है कि यहां घास-पात से लड़ रहा है।"

कर्नल जीप से उछलकर उतर आया। मोटर चलाना उसे पसन्द था, फ़ुर्सत के वक़्त वह अपनी कार लिये उसी तरह घूमता-फिरता था जैसे वह कठिन अभ्यासों में अपनी रेजीमेंट का नेतृत्व करना पसंद करता था, और शाम को मेकेनिकों के साथ तेल सने इंजनों से खिलवाड़ करता था। वह आम तौर पर नीली पोशाक पहनता था और सिर्फ़ उसके रोबदार चेहरे और वायुसेना की उसकी चुस्त, नयी टोपी से ही उसमें और उन कामकाजी तेल सने मिस्त्रियों में भेद किया जा सकता था।

मेरेस्येव अभी भी छड़ी से ज़मीन कुरेदता किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा था। कर्नल ने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा :

"ज़रा देखें तो तुम्हारा चेहरा। हुंह लानत है शैतान पर! कोई ख़ास बात नहीं! मैं अब इक़बाल करता हूं : जब तुम हमारे यहां आये थे, तब तुम्हारे बारे में सेना के हेडक्वार्टर पर जो कुछ कहा-सुना जा रहा था, उस सबके बावजूद मैंने यक़ीन नहीं किया था कि तुम लड़ाई के क़ाबिल भी हो। फिर भी तुम ख़ूब निकले! और कैसे! .. यह है हमारी माता रूस! बधाई! मैं तुम्हें बधाई देता हूं और सराहना करता हूं। 'बांबीपुरी' की तरफ़ जा रहे हो? चढ़ चलो, मैं तुम्हें पहुंचा दूंगा।"

जीप लपकी और मैदान की सड़क पर पूरी रफ़्तार से चल पड़ी—मोड़ पर पागलों की तरह लड़खड़ाती हुई।

"मुझे बताना, शायद तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो या किसी तरह की तकलीफ़ हो? मदद लेने में न हिचकना, तुम इसके हक़दार हो," कर्नल ने मार्ग-विहीन झाड़ियों के बीच और 'बांबियों' के बीच—अपने क्वार्टरों को विमान-चालकों ने यही नाम दे रखा था—होशियारी से कार चलाते हुए कहा।

"मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, कामरेड कर्नल। मैं दूसरों से किसी भांति भिन्न नहीं हूं। अच्छा हो, अगर लोग यह भूल जायें कि मेरे पैर नहीं हैं," मेरेस्येव ने जवाब दिया।

"हां, तुम ठीक कहते हो। तुम कहां रहते हो? इसमें?"

कर्नल ने खोह के द्वार पर यकायक गाड़ी रोक दी और मेरेस्येव उतर ही पाया था कि जीप भोज और बलूत वृक्षों के बीच सर्पाकार चाल से जंगल पार करती उड़ गयी।

अलेक्सेई खोह में न गया, बल्कि एक भोज वृक्ष के तले मख़मली, कुकुरमुत्ते की गंध से सुवासित काई पर बैठ गया और सावधानी से लिफ़ाफ़े के अन्दर से ओल्गा का पत्र निकाला। एक फ़ोटो-चित्र उससे खिसककर घास पर गिर पड़ा। अलेक्सेई ने उसे शीघ्रतापूर्वक उठा लिया, उसका दिल तेज़ी से और टीस के साथ धड़कने लगा।

फ़ोटो से एक सुपरिचित और फिर भी लगभग अनपहचाना मुखड़ा उसकी ओर झांक उठा। वह ओल्गा थी फ़ौजी वर्दी में: कोट, पेटी, परतला, लाल झण्डे का पदक और गार्ड बैज तक—और यह सब उसपर कितना फब रहा था। वह अफ़सरों की पोशाक में एक दुबले-पतले, सुन्दर लड़के की भांति दिखाई दे रही थी। सिर्फ़ यह कि इस लड़के का चेहरा थका हुआ था और उसकी बड़ी-बड़ी गोल, चमकदार आंखों में यौवनहीन मर्मबेधक भाव था।

अलेक्सेई उन आंखों की ओर बड़ी देर तक टकटकी बांधे देखता रहा। उसके हृदय में वही अवर्णनीय मधुर वेदना भर गयी थी जो सांझ को किसी परमप्रिय गीत की दूरागत स्वर-लहरी सुनकर उत्पन्न हो जाती है। अपनी जेब में उसे ओल्गा का पुराना फ़ोटो भी मिल गया जो सफ़ेद, तारों जैसे

बाबूनों के बीच पुष्पाच्छादित कुंज की पृष्ठ-भूमि में सूती छींट की फ़्राक पहने हुए लिया गया था। यह बात विचित्र ही है कि यह वर्दीधारी थकी हुई लड़की, जिसे उसने कभी नहीं देखा था, उसको उस लड़की से अधिक प्रिय प्रतीत हुई जिससे वह परिचित था। नये फ़ोटो के पीछे यह आलेख था: "भुलाना नहीं।"

पत्र संक्षिप्त और उल्लासपूर्ण था। यह लड़की अब सैपर सैनिकों की प्लैटून की कमांडर थी – सिर्फ़ यह कि यह प्लैटून युद्ध में नहीं, शान्तिपूर्ण कार्य में लगी हुई थी, वह स्तालिनग्राद के पुनर्निर्माण में सहायता कर रही थी। उसने स्वयं अपने विषय में बहुत कम लिखा था, लेकिन उस महान नगर के विषय में, उसकी पुनर्निर्मित इमारतों के विषय में, उस नगर का निर्माण करने के लिए देश के विभिन्न भागों से जो महिलाएं, युवतियां और युवक आये थे और तहख़ानों में, लड़ाई के बाद वीरान पड़े हुए रक्षा-स्थलों पर, ओटों और रेलवे के डिब्बों, लकड़ी की फूहड़ झोंपड़ियों और खोहों में रह रहे थे, उनके बारे में लिखते हुए वह फूली नहीं समा रही थी। उसने लिखा था, लोग कह रहे हैं कि जो भी निर्माण-कार्य अच्छा करेगा, उसे इस पुनर्निर्मित नगर में रहने के लिए स्थान दिया जायेगा। अगर यह सच निकला तो अलेक्सेई यह विश्वास रखे कि युद्ध के बाद उसे एक विश्राम-स्थल अवश्य प्राप्त होगा।

सांझ की रोशनी थोड़ी ही देर रही, जैसा कि ग्रीष्म काल में होता है। अलेक्सेई ने पत्र की आख़िरी पंक्तियां अपनी टार्च की रोशनी में पढ़ीं। जब वह पढ़ चुका तो उसने रोशनी की एक किरण उस फ़ोटो पर डाली। सिपाही लड़के की दृष्टि में निष्कपटा और गम्भीरता थी। "प्रिये, तुम्हें कितने कठिन दिन देखने पड़ रहे हैं... युद्ध ने तुम्हें भी नहीं छोड़ा, लेकिन उसने तुम्हें टूक-टूक नहीं किया। क्या तुम इंतज़ार कर रही हो? इंतज़ार करना, इंतज़ार करती रहना, मैं आऊंगा। तुम मुझे प्यार करती हो। तुम प्यार किये जाना प्रिये!" और यकायक अलेक्सेई को बड़ी शर्मिन्दगी महसूस हुई कि उसने पूरे अठारह महीने तक उससे, एक स्तालिनग्रादी वीरांगना से उस विपत्ति को छिपाया जो उसपर टूट पड़ी थी। उसने यह प्रेरणा अनुभव की कि वह तुरंत खोह में जाये और फ़ौरन बड़ी ईमानदारी से और दिल खोलकर सब बातें लिख दे – ताकि वह शीघ्र ही दो टूक फ़ैसला कर

ले, जितना जल्दी हो उतना ही अच्छा। यदि हर बात निश्चित हो जाये, तो दोनों को ही राहत मिलेगी।

उस दिन की सफलता के बाद वह उससे समानता के स्तर पर बात कर सकता था। वह अब न सिर्फ़ उड़ान कर रहा था, बल्कि लड़ रहा था। क्या उसने यही संकल्प नहीं किया था कि वह उसे सब बातें तभी बतायेगा जब या तो उसकी आशाएं धूल में मिल जायेंगी या वह युद्ध-क्षेत्र में सबके समान स्थान प्राप्त कर लेगा? अब उसका प्रण पूरा हो गया है। जिन दो वायुयानों को उसने मार गिराया था, वे झाड़ियों में गिरे थे और सबकी आंखों के सामने जलते रहे थे। अर्दली अफ़सर ने उसे रेजीमेंट के रोज़नामचे में दर्ज कर लिया था और उसकी रिपोर्ट डिवीजन के और फ़ौजी हेडक्वार्टर के कार्यालयों तथा मास्को को भेजी गयी थी।

यह सब सच था। उसका प्रण पूरा हो गया था और अब वह इसके बारे में लिख सकता है। लेकिन सोचो तो, लड़ाकू विमान से मोर्चा लेने में "जंकर्स" जैसे विमान क्या बराबरी कर सकते हैं? असली बढ़िया शिकारी क्या इसी को अपने हुनर का सबूत मानेगा कि उसने एक ख़रगोश मार लिया है?

नम रात जंगल में और भी अंधेरी हो गयी। अब चूंकि युद्ध की गरजना दक्षिण की ओर हट गयी थी, वृक्षों की शाखाओं में से दूर के अग्निकाण्ड अब मुश्किल से ही दृष्टिगोचर होते थे, इसलिए ग्रीष्म के सुगन्धित, शानदार जंगल के समस्त निशा स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगे थे: वन के किनारे झींगुरों की तीव्र झनकार, पास के दलदल में सैकड़ों मेंढकों की आकण्ठ टर्र-टर्र, किसी पक्षी की तीखी चीख़ और इन सबके ऊपर किसी बुलबुल का संगीत जो नम अर्ध-अंधकार के ऊपर छा गया था।

अलेक्सेई अभी भोज वृक्ष के तले नर्म और अब ओस से भीग आयी काई पर बैठा हुआ था और काली छायाओं के बीच बिखरी हुई चांदनी घास पर सरककर उसके पांवों के पास आ गयी थी। उसने फिर अपनी जेब से फ़ोटो निकाला, उसे अपने घुटनों पर रखा और चांद के प्रकाश में उसे निहारते हुए विचारों में खो गया। एक के बाद एक रात्रिकालीन बममारों के छोटे-छोटे काले छायाचित्र साफ़, गहरे नीले आसमान में सिर के ऊपर से गुज़रकर दक्षिण की तरफ़ जाते दिखाई दिये। उनके इंजन मंद,

मद्धिम स्वर में भनभना रहे थे, मगर युद्ध का यह स्वर भी चांदनी से रोशन जंगल में, जहां बुलबुलों के गीत गूंज रहे थे, गुबरैलों के शान्तिपूर्ण गुंजार की भांति लगता था। अलेक्सेई ने सांस खींची, कोट की जेब में वह फ़ोटो रख लिया और उछलकर खड़े होते हुए उसने उस रात के जादू को दूर करने के लिए अपने को झकझोर डाला। धरती पर पड़ी सूखी टहनियों को खड़खड़ाता वह खोह में घुस गया जहां तंग-सी सिपाहियाना सेज पर फैले हुए पेत्रोव गहरी नींद में रहा था और तेजी से खर्राटे भर रहा था।

५

विमान-चालकों को सुबह से पहले ही उठा दिया गया। फ़ौजी हेडक्वार्टर को यह सूचना मिली थी कि पिछले दिन जर्मन विमानों की एक बड़ी टुकड़ी उस क्षेत्र में आ पहुंची थी जहां सोवियत टैंक घुस गये थे। भूमिवर्त्ती पर्यवेक्षणों और ख़ुफ़िया रिपोर्टों से इस अनुमान की पुष्टि होती थी कि कूर्स्क क्षेत्र के केन्द्र पर ही सोवियत टैंकों की घुस-पैठ के ख़तरे को जर्मन कमान ने पूरी तरह समझ लिया था और उन्होंने "रिख़्तगोफ़न" विमान डिवीजन बुला ली थी जिसका संचालन जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ विमान-चालक कर रहे थे। इस डिवीजन का सफ़ाया इससे पहले स्तालिनग्राद के पास किया जा चुका था, मगर जर्मनी में कहीं पर इसे पुनर्गठित कर लिया गया था। रेजीमेंट को चेतावनी दे दी गयी थी कि सम्भावित शत्रु संख्या में बलशाली है, अत्यन्त आधुनिकतम लड़ाकू विमानों – "फ़ोक्के-वोल्फ़-१९०" – से लैस हैं और युद्ध में अत्यन्त अनुभवी हैं। सतर्क रहने का और उन गतिमान सेनाओं के दस्तों को सुदृढ़ छत्रछाया देने का आदेश मिला था जिन्होंने उस रात दरार में होकर टैंकों के पीछे बढ़ना शुरू कर दिया था।

"रिख़्तगोफ़ेन!" अनुभवी विमान-चालक इस नाम से भली भांति परिचित थे और जानते थे कि इसे जर्मन वायुसेना मन्त्री गोयरिंग का विशेष संरक्षण प्राप्त था। जहां कहीं भी जर्मनों की सेनाएं दबने लगती थीं, वे इन विमानों को ले आते थे। इस डिवीजन के हवाबाज़, जिनमें से कुछ ने स्पेन में डाकेज़नी जैसी कार्रवाइयों का संचालन किया था, बड़े भयंकर और होशियार लड़ाकू माने जाते थे और ख़तरनाक शत्रु के रूप में विख्यात थे।

"लोग कह रहे हैं कि हमारे ख़िलाफ़ कोई 'रिख़्तगोफ़ेन' भेजे जा रहे हैं। खी-खी! उम्मीद है, उनसे जल्दी मुठभेड़ होगी! हम उनको, 'रिख़्तगोफ़ेन' को मज़ा चखा देंगे!" पेत्रोव ने भोजन-कक्ष में जल्दी-जल्दी भोजन निगलते हुए कहा और खुली खिड़की की तरफ़ नज़र डालता रहा, जहां परिचारिका राया मैदानी फूलों से गुच्छे जमा कर रही थी और उन्हें गोलों के ढांचों में सजा रही थी, जिन पर खड़िया से इतनी पालिश की गयी थी कि वे चमकने लगे थे।

कहने की आवश्यकता नहीं कि "रिख़्तगोफ़ेनों" के ख़िलाफ़ यह तिरस्कार का भाव अलेक्सेई के लाभ के लिए नहीं प्रगट किया गया था, जो इस समय कॉफ़ी ख़त्म कर रहा था, बल्कि इसका निशाना थी वह लड़की जो फूलों में व्यस्त थी और जब तब इस ख़ूबसूरत, गुलाबी गालोंवाले पेत्रोव की ओर कनखियों से ताकती जा रही थी। मेरेस्येव उन्हें दयाभाव से मुसकुराता हुआ देखता रहा, लेकिन जब कोई गम्भीर बात हो तो उसके विषय में हंसी-मज़ाक़ की बातें उसे पसन्द नहीं थीं।

"'रिख़्तगोफ़ेन'–'कोई' नहीं," वह बोला, "और 'रिख़्तगोफ़ेन' का अर्थ है: अगर तुम आज घास-पात के बीच जलते पड़े रहने से बचना चाहते हो तो आंख खुली रखो। उसका अर्थ है: अपने कान साफ़ खुले रखो और संपर्क बनाये रखो। मेरे लाड़ले, 'रिख़्तगोफ़ेन' ऐसे जंगली जानवर हैं जो इसके पहले, तुम जान पाओ कि तुम कहां हो, तुम्हारे मांस में दांत गड़ा देंगे।"

भोर होते ही पहला दस्ता स्वयं कर्नल के नेतृत्व में उड़ा। वह अभी व्यस्त ही था कि इधर बारह लड़ाकू-विमानों का एक दूसरा दल तैयार हो गया। इसकी कमान सोवियत संघ के वीर की उपाधि से सम्मानित गार्ड मेजर फ़ेदोतोव संभालनेवाले थे। विमान तैयार थे, चालक अपने कॉकपिटों में पहुंच चुके थे, इंजन नीचे गीयर पर शान्तिपूर्वक चल रहे थे, और जंगल के किनारे पर इस तरह हवा के झोंके उड़ा रहे थे जैसे उस समय, जब प्यासी धरती पर वर्षा की पहली-पहली, बड़ी-बड़ी बूंदें आसमान से टपकने लगती हैं, तब तूफ़ान के पहले हवाएं ज़मीन को बुहार देती हैं और पेड़ों को झकझोर देती हैं।

अपने कॉकपिट से अलेक्सेई ने पहले दल के विमानों को इस प्रकार

सीधे उतरते देखा मानो वे आसमान से टपक रहे हों। बिना किसी इरादे के उसने उन्हें गिन डाला और जब दो विमानों के उतरने में कुछ देर लगी तो उसका दिल चिंता से धड़कने लगा। अंत में आखिरी विमान भी उतर आया। सभी वापस लौट आये थे। अलेक्सेई ने चैन की सांस ली।

आखिरी विमान उतरकर अपनी जगह की तरफ़ दौड़ा ही था कि मेजर फ़ेदोतोव का "नम्बर एक" धरती छोड़कर उड़ा और उसके पीछे जोड़ों में अन्य लड़ाकू-विमान रवाना हो गये। जंगल पार कर वे पांतबद्ध हो गये। अपने विमान को थरथराते हुए फ़ेदोतोव ने अपनी दिशा प्रगट की। वह नीची सतह पर उड़ रहे थे और अपने को इस क्षेत्र में रख रहे थे जहां पिछले दिन सेनाओं ने दरार डाली थी। अब अलेक्सेई को अपने नीचे ज़मीन दौड़ती नज़र आयी – बहुत ऊंचाई से नहीं, दूर के दृश्यावलोकन के रूप में नहीं, कि जिससे हर चीज़ खिलौने जैसी दिखाई देने लगती है, बल्कि पास से उसने देखा। पिछले दिन उसे ऊपर से जो चीज़ एक खेल जैसी लग रही थी, वह अब उसके सामने सुविस्तृत और अनन्त युद्ध-क्षेत्र के रूप में प्रगट हो गयी थी। मैदान, कुंज और झाड़ियां – जो गोलों और बमों से क्षत-विक्षत पड़ी थीं और जिन पर खाइयों के घाव बने थे – उसके पंखों के नीचे तीव्र गति से दौड़ने लगीं। लाशें मैदान भर में बिखरी पड़ी थीं, परित्यक्त तोपें, कहीं इक्की-दुक्की और कहीं पूरी बैटरी की बैटरी, चकनाचूर टैंक, जहां तोपखाने किसी टुकड़ी पर टूट पड़े थे वहां टेढ़े-मेढ़े लोहे और चकनाचूर लकड़ी के अम्बार; भारी जंगल प्रदेश ज़मीन पर बिछा हुआ, जो ऊपर से ऐसा लगता था मानो उसे किसी बड़े भारी पशुदल ने रौंद दिया हो – सभी उसके सामने इस तरह से गुज़र गये मानो वे फ़िल्म के दृश्य हों और इस फ़िल्म का अन्त ही न हो।

वे सब उस घमासान युद्ध का, जो यहां छिड़ा था, उसकी भारी क्षति का और यहां प्राप्त विजय के गौरव का प्रमाण दे रहे थे।

इस समस्त विस्तृत प्रसार में टैंकों के पथ-चिह्न के रूप में अनगिनत दोहरी और आड़ी-तिरछी गहरी रेखाएं शेष रह गयी थीं जो शत्रु की पांतबन्दी में दूर-दूर तक, बिल्कुल क्षितिज तक चली गयी थीं मानो किसी विचित्र पशु का एक बड़ा भारी गिरोह मैदानों को पार करता, राह में आनेवाली हर चीज़ को रौंदता-कुचलता दक्षिण की ओर चला गया था।

और बढ़ चुके टैंकों के पीछे दूर पर दृष्टिगोचर धूल की मटमैली पूंछें अपने पीछे छोड़ते हुए मोटर-तोपें, पेट्रोल की टंकियां, ट्रैक्टरों द्वारा खींचे जानेवाले बड़े-बड़े मरम्मत वर्कशाप, तिरपाल से ढंके हुए ट्रकों की अनन्त पांतें बहुत धीरे-धीरे चली जा रही थीं—और जब लड़ाकू विमान आसमान में और ऊंचे उठे तो यह सब ऐसा लगने लगा मानो वसंतकाल में वन-मार्ग पर चींटियां चली जा रही हों।

धूल की इन्हीं पूंछों में, जो शान्त हवा में ऊंची उठ रही थीं, इस तरह ग़ोता लगाकर जैसे वे बादलों के बीच ग़ोता लगा रहे हों, वे लड़ाकू विमान पांत के ऊपर उड़ते-उड़ते उन आगेवाली जीपों के ऊपर पहुंच गये, जिन पर, स्पष्टतया, टैंक सेना के कमांडर सवार थे। इस पांत के ऊपर आसमान शत्रु से शून्य था, और दूर पर, धुंधले क्षितिज पर युद्ध के धुएं के ऊबड़-खाबड़ बादल उठते दृष्टिगोचर होने लगे थे। पतंग की भांति चक्कर लगाते हुए वह दल लौट पड़ा। उसी क्षण अलेक्सेई ने ठीक क्षितिज पर पहले एक और फिर टिड्डी दल की भांति अनेक स्याह धब्बे धरती पर तैरते देखे। जर्मन! वे भी ज़मीन का आलिंगन करते उड़ते थे—स्पष्टतया उनका उद्देश्य था कि लाल-से, घास-पात ढंके मैदानों पर दृष्टिगोचर धूल की पूंछों पर हमला करना। अलेक्सेई ने सहज वृत्तिवश पीछे की ओर दृष्टिपात किया। उसका अनुगामी पीछे था और अपने को इतने नज़दीक रख रहा था जितना संभव था।

उसने कानों पर जोर लगाया और दूरागत स्वर सुना:

"मैं हूं सी गल संख्या दो, फ़ेदोतोव; मैं हूं सी गल संख्या दो, फ़ेदोतोव। सावधान! मेरे पीछे आओ!"

आकाश में, जहां विमान-चालक के स्नायु-मण्डल पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, अनुशासन ऐसा होता है कि कभी-कभी इसके पहले कि कमांडर अपना आदेश पूरा कर पाये, वह उसके इरादे को पूरा कर देता है। खर्र-खर्र और भन्-भन् के बीच दूसरा आदेश सुनाई देने के पहले सारा दल जोड़ों में बंटकर मगर घनिष्ठ रूप से पांतबद्ध रहकर जर्मनों को राह में रोकने के लिए मुड़ पड़ा। दृष्टि, श्रवण-शक्ति और मस्तिष्क को अधिकतम सचेत किया गया। अलेक्सेई को शत्रुओं के विमानों के अलावा, जो बड़ी तेज़ी से उसकी आंखों के सामने बड़ा रूप धारण करते जा रहे थे, और कुछ

नहीं दिखाई दे रहा था, अपने कर्णयंत्रों की कड़-कड़ और भन्-भन् के अलावा, जिनसे उसे अगला आदेश सुनना था, उसे और कुछ नहीं सुनाई दे रहा था। लेकिन उस आदेश के बजाय उसे बहुत स्पष्ट रूप में कोई उत्तेजित स्वर विदेशी भाषा चिल्लाते सुनाई दिया :

"आख़तुंग! आख़तुंग! 'ला-फ़ुन्फ़!' आख़तुंग!"

वह भूमिवर्ती जर्मन पर्यवेक्षक का स्वर रहा होगा जो अपने विमानों को ख़तरे से सावधान कर रहा होगा।

अपनी रीति के अनुसार इस प्रसिद्ध जर्मन विमान डिवीजन ने बड़ी सावधानी से सारे रणक्षेत्र में सूचनादाताओं और भूमिवर्त्ती पर्यवेक्षकों का जाल बिछा दिया था, जिन्हें रेडियो संवाद-प्रेषण यंत्रों से लैस कर सम्भावित आकाश-युद्ध के क्षेत्र में पिछली रात पैराशूट से उतार दिया था।

तभी, कुछ कम स्पष्ट रूप में एक और स्वर सुनाई दिया, कर्कश और क्रोधपूर्ण, जर्मन में चीख़ता हुआ :

"दोन्नरवेतर। लिन्क्स 'ला-फ़ुन्फ़!' लिन्क्स 'ला-फ़ुन्फ़!'"

परेशानी के अलावा उस स्वर में घबराहट की ध्वनि थी।

"'रिख़्तगोफ़ेन', तुम जानते हो, हमारे "ला-५" तुम्हारे विमानों से श्रेष्ठ हैं, और तुम डर रहे हो," मेरेस्येव क्रोधपूर्ण स्वर में बड़बड़ाया और शत्रु की पांतों को निकट आते ताकता रहा और उसके खिंचे हुए शरीर भर में उल्लास की सिहरन इस तरह फैल गयी कि उसके सिर के बाल खड़े हो गये।

उसने शत्रु की सूक्ष्म परीक्षा की। वे आक्रमणकारी विमान थे– "फ़ोक्के-वोल्फ़-१६०"–शक्तिशाली, तीव्रगामी विमान जो हाल में ही उपयोग में लाये गये थे।

फ़ेदोतोव के दल से उनकी संख्या एक के मुक़ाबले दो थी। वे ऐसी कड़ी पांत से उड़ रहे थे, जो "रिख़्तगोफ़ेन" डिवीजन की ही विशेषता होती है–जोड़ों में, सीढ़ियों जैसे ढंग से, इस प्रकार कि हर जोड़ा आगेवाले जोड़े के पिछले हिस्से की रक्षा कर रहा था। अपने दल के अधिक ऊंचाई पर होने का लाभ उठाते हुए फ़ेदोतोव ने हमला शुरू किया। अलेक्सेई ने अपना निशाना पहले ही चुन लिया था और शेष विमानों पर भी दृष्टि रखते हुए उसने अपने निशाने पर नज़र रखकर उसपर हमला कर दिया। लेकिन कोई

इस मामले में फ़ेदोतोव दस्ते के पहले आया। दूसरी ओर से "याक" लड़ाकू विमानों का एक दस्ता आ झपटा और उसने ऊपर से जर्मनों पर हमला कर दिया, और वह भी इतनी सफलता से कि उससे जर्मनों की पांत फ़ौरन टूट गयी। वायु-युद्ध में अराजकता फैल गयी। दोनों पक्ष दो-दो और चार-चार के दल में भिड़ गये। लड़ाकू विमानों ने शत्रु को गोलियों की धाराओं से रोकने, उसके पीछे की ओर और अग़ल-बग़ल पहुंच जाने का प्रयत्न किया।

जोड़े चक्कर काटने लगे, एक दूसरे का पीछा करने लगे और आकाश में वृत्त-नृत्य जैसा क्रम आरम्भ हो गया।

सिर्फ़ अनुभवी आंखें ही यह बता सकती थीं कि इस गड़बड़ी की स्थिति में क्या हो रहा है, जिस तरह अनुभवी कान ही उन तमाम तरह की आवाज़ों का अर्थ समझ सकते हैं जो विमान-चालक को अपने कर्णयंत्र में सुनाई देती हैं। उस क्षण आकाश-मण्डल में कौनसी ध्वनि सुनाई नहीं देती – आक्रमणकारियों की कर्कश और भौंड़ी गालियां, शिकार हुए लोगों की भयानक चीख़ें, विजयी लोगों का उन्मत्त सिंहनाद, घायलों की कराहें, तेज़ी से मोड़ लेते समय विमान-चालक का दांत पीसना और भारी सांसों की आहट। कोई व्यक्ति युद्धोन्माद में विदेशी भाषा में गीत गा रहा था, कोई आह भर रहा था और चिल्ला रहा था "ओ मां!", कोई व्यक्ति, स्पष्टतया, विमान-तोपों का घोड़ा दबाते हुए कह रहा था: "यह लो! यह लो!"

मेरेस्येव ने जो निशाना चुना था, वह दृष्टि से ओझल हो गया। उसकी जगह उसने ऊपर एक "याक" विमान देखा, जिसकी पूंछ की तरफ़ सिगार जैसी शक्ल का, सीधे पंखोंवाला "फ़ोक्के" लटक रहा था और अपने पंखों से "याक" के ऊपर गोलियों की दो समानान्तर धाराएं छोड़ रहा था। ये धाराएं "याक" की पूंछ तक पहुंच रही थीं। मेरेस्येव फ़ौरन उसे बचाने दौड़ा। एक सेकंड के भी अंश मात्र तक में एक छाया उसके ऊपर कौंध गयी और इस छाया में उसने अपने सभी हथियारों से लम्बी धारा मार कर दी। उस "फ़ोक्के" को क्या हुआ, यह वह नहीं देख सका – उसे सिर्फ़ यही दिखाई दिया कि क्षत-विक्षत पूंछ लिये वही "याक" विमान अब अकेला उड़ रहा है। मेरेस्येव ने मुड़कर देखा कि इस गड़बड़ी में कहीं उसने

अपना अनुगामी तो नहीं खो दिया। नहीं! वह लगभग उसके समानान्तर उड़ रहा था।

"पीछे न रह जाना, बुद्धू," अलेक्सेई ने दांत भींचे हुए कहा।

उसके कान भनभनाहट और कड़कड़ाहट से, गाने से, दो भाषाओं में विजय और भयभीत अवस्था की चीखों-चिल्लाहटों से, घड़घड़ाते गलों की आवाज़, दांत पीसने, कोसने और भारी सांस लेने के स्वरों से गूंजने लगे। इन आवाज़ों से तो ऐसा लगता था कि धरती से बहुत ऊंचाई पर कोई लड़ाकू-विमान एक दूसरे से टक्कर नहीं ले रहे हैं, बल्कि शत्रु हैं, जो धरती पर घातक गुत्थमगुत्थी में एक दूसरे को पकड़े हुए हैं, लुढ़क रहे हैं, हाथापाई कर रहे हैं, और हर स्नायु और मांसपेशी का ज़ोर लगा रहे हैं।

मेरेस्येव ने कोई और निशाना पाने के लिए चारों तरफ़ दृष्टि डाली और यकायक उसकी रीढ़ में एक ठंडी कंपकंपी दौड़ गयी और उसे लगा कि उसके रोएं खड़े हो गये हैं। ठीक अपने नीचे उसने देखा कि एक "फ़ोक्के" "ला-५" विमान पर हमला कर रहा है। वह सोवियत विमान का नम्बर तो नहीं देख सका, लेकिन अन्तर्बोधवश भांप गया कि वह पेत्रोव का विमान है। "फ़ोक्के-वोल्फ़" उस पर अपने तमाम हथियारों से गोलियां उगलता हमला कर रहा था। पेत्रोव एक सेकंड के अल्पांश का ही मेहमान था। योद्धा एक दूसरे से इतने निकट थे कि हवाई हमले की आम चालों के जरिए अपने मित्र की सहायता के लिए पहुंचने के वास्ते अलेक्सेई के पास न तो समय था और न उन चालों को इस्तेमाल करने की गुंजाइश थी। लेकिन उसके साथी का जीवन दांव पर लगा था और उसने एक असाधारण चाल का ख़तरा मोल लेने का फ़ैसला किया। उसने अपने विमान को सीधे खड़े करके नीचे फेंका और गैस बढ़ा दी। अपने ही भार से नीचे खिंचते हुए, और उसके इंजन की पूरी ताक़त के कारण कई गुना बढ़ गया था, और असाधारण रूप से थरथराते हुए वह विमान एक पत्थर की भांति – नहीं, नहीं, एक गोले की भांति – "फ़ोक्के" के छोटे पंखोंवाले ढांचे के ऊपर गिर पड़ा और उसे गोलियों के जाल में लपेट दिया। यह अनुभव करते हुए कि इस भयंकर वेग और तीव्र उतार से वह चेतनता खो रहा है, मेरेस्येव अपनी धुंधली हुई आंखों से बड़ी मुश्किल से यह देख पाया कि ठीक उसके पंखे के सामने "फ़ोक्के" एक विस्फोट के धुएं में लिपट

गया। लेकिन पेत्रोव कहां है? वह विलीन हो गया था। वह कहां गया? उसका विमान क्या गिर गया? क्या वह कूद गया? क्या बच निकला?

आसमान वीरान हो गया था। अब अगोचर विमान से एक दूरागत स्वर शान्त आकाश को चीरता आया:

"मैं हूं सी गल संख्या दो, फ़ेदोतोव। मैं हूं सी गल संख्या दो, फ़ेदोतोव। मेरे पीछे पांत बनाओ, पांत बनाओ। घर लौटो। मैं हूं सी गल संख्या दो..."

स्पष्ट था कि फ़ेदोतोव अपने दल को वापस ले जा रहा है।

"फ़ोक्के-वोल्फ़" से निपटने के बाद अपना विमान सीधा करके अलेक्सेई हांफता हुआ बैठा उस शान्ति का आनन्द लूट रहा था, जो क़ायम हो गयी थी। वह ख़तरा गुज़र जाने के, विजय प्राप्त करने के उल्लास को अनुभव कर रहा था। वापस लौटने की दिशा देखने के लिए उसने अपने कम्पास पर नज़र डाली और फिर पेट्रोल मापक सूई पर दृष्टि डाली। उसकी भौंहें चढ़ गयीं, जब उसने देखा कि पेट्रोल कम रह गया है और अड्डे तक वापस लौटने के लिए वह मुश्किल ही से काफ़ी होगा। लेकिन अगले क्षण उसने पेट्रोल की सूई शून्य पर देखने की अपेक्षा और भी भयानक दृश्य देखा—एक रूई जैसे बादल के पीछे से, भगवान जाने कहां से, एक "फ़ोक्के-वोल्फ़-१९०" सीधा उसकी ओर हमला करता हुआ आ रहा था। उसके पास सोच-विचार का समय नहीं था, बच निकलने का भी अवसर न था।

शत्रुओं ने एक दूसरे पर भयंकर वेग से आक्रमण कर दिया।

६

जिस सड़क से आक्रमणकारी सेना के पश्च दस्तों की धारा बढ़ी जा रही थी, उसके ऊपर जो आकाश-युद्ध लड़ा जा रहा था, उसका शोर सिर्फ़ युद्धरत विमानों के कॉकपिटों में बैठे हुए विमान-चालकों ने ही नहीं सुना।

वह हवाई अड्डे के शक्तिशाली रेडियो यंत्र पर गार्ड लड़ाकू विमान रेजीमेंट के कमांडर कर्नल इवानोव ने भी सुना। वह स्वयं श्रेष्ठ विमान-

चालक थे, इसलिए जो आवाज़ें आ रही थीं, उन्हें सुनकर वह बता सकते थे कि युद्ध घनघोर है और शत्रु शक्तिशाली तथा हठी है और आत्मसमर्पण करना उसे स्वीकार नहीं। यह समाचार कि फ़ेदोतोव सड़कों के ऊपर असमान युद्ध में जूझा हुआ है, शीघ्र ही सारे हवाई अड्डे में फैल गया। वे सभी जो फ़ारिग़ हो सकते थे, जंगल से मैदान में निकल आये और चिन्ता से दक्षिण की ओर देखने लगे, जहां से विमानों के लौटने की आशा थी।

सफ़ेद पोशाकें पहने हुए डाक्टर भोजन-कक्ष से बाहर दौड़े--दौड़ते जाते थे और कौर चबाते जाते थे। एम्बुलेंस कारें, जिनकी छतों पर बड़े-बड़े रेड क्रास चिह्न बने थे, झाड़ियों से बाहर निकल आयीं और इंजन चालू किये काम के लिए तैयार खड़ी थीं।

वृक्षों के शिखरों के ऊपर से उड़ता हुआ पहला जोड़ा आ पहुंचा और हवाई अड्डे पर चक्कर लगाये बिना सीधा उतर गया और लम्बे-चौड़े मैदान में दौड़ने लगा। इसमें "नम्बर १" था जिसके चालक थे सोवियत संघ के वीर फ़ेदोतोव और "नम्बर २" था जिसका चालक उनका अनुगामी था। और ठीक उनके पीछे दूसरा जोड़ा भी आ पहुंचा। लौटते हुए विमानों की धड़धड़ाहट से जंगल के ऊपर वायुमण्डल प्रतिध्वनित हो उठा।

"सातवां, आठवां, नौवां, दसवां," हवाई अड्डे के दर्शकों ने आकाश को अधिकाधिक सूक्ष्मता से जांचते हुए गिनना शुरू किया।

जो विमान उतरे, वे मैदान छोड़कर चले गये और अपने विश्राम-स्थलों में घुस गये, शान्ति छा गयी। लेकिन दो विमान अभी भी ग़ायब थे।

प्रतीक्षातुर भीड़ में आशापूर्ण शान्ति छा गयी। कई मिनट बड़ी पीड़ाजनक मंद गति से गुज़र गये।

"मेरेस्येव और पेत्रोव," किसी ने धीमे से कहा।

यकायक आनन्दविह्वल एक नारी-स्वर मैदान में गूंज उठा:

"लो एक यह आ गया!"

एक विमान के इंजन की धड़धड़ाहट सुनाई दी। भोज वृक्षों के शिखरों के ऊपर से, उन पर अपने फैले हुए पंजे मारता "नम्बर १२" भी आ पहुंचा। विमान क्षतिग्रस्त था, उसकी पूंछ का एक टुकड़ा ग़ायब था, उसके बायें पंख की नोक कट गयी थी और वह टुकड़ी किसी तार से लटका था।

उतरने पर विमान विचित्र गति से फुदका, वह ऊंचे उछला, फिर नीचे गिरा और फिर उछला और फिर गिरा और इस तरह फुदकता हुआ वह हवाई अड्डे के छोर तक पहुंच गया और पूंछ उठाकर खड़ा हो गया। सर्जनों को लिये एम्बुलेंस कारें, कई जीपें और सारी भीड़ उस विमान की ओर दौड़ पड़ी। कॉकपिट से कोई बाहर न निकला।

उन्होंने उसका ढक्कन उठाया। ख़ून में डूबा हुआ पेत्रोव सीट में लुढ़का पड़ा था। उसका सिर वक्ष पर असहाय-सा लटका था। गीले, सुन्दर केशों की लटें चेहरे पर घिर आयी थीं। सर्जनों और नर्सों ने तस्मे खोले, पैराशूट का ख़ून सना थैला हटाया जिसमें एक गोले के टुकड़े ने छेद कर दिया था, सावधानी से गतिहीन शरीर को उठाया और धरती पर लेटा दिया। विमान-चालक की टांगों और भुजा में घाव लगे थे। उसकी नीली पोशाक पर शीघ्र ही काले धब्बे फैल गये।

पेत्रोव की प्राथमिक चिकित्सा की गयी और स्ट्रेचर पर लादा गया। जब उसे उठाकर एम्बुलेंस कार पर लादा जा रहा था तब उसने आंखें खोलीं। वह कुछ बुदबुदाया, लेकिन इतने धीमे से कि जो कुछ कहा, वह सुना नहीं जा सका। कर्नल उसपर झुक आया।

"मेरेस्येव कहां है?" घायल ने पूछा।

"अभी उतरा नहीं।"

स्ट्रेचर फिर उठाया गया, लेकिन घायल ने बड़े ज़ोर से अपना सिर हिलाया-डुलाया और उतर भागने तक की कोशिश की।

"ठहरो!" उसने कहा, "मुझे यहां से ले जाने की जुर्रत न करना। मैं नहीं जाना चाहता। मैं मेरेस्येव का इंतज़ार करूंगा। उसने मेरे प्राण बचाये हैं।"

विमान-चालक ने इतने ज़ोर से विरोध किया था, अपनी पट्टियां फाड़ डालने की धमकी दी थी कि कर्नल ने अपना हाथ हिलाया और अपना सिर मोड़कर दांत मींजकर बोला:

"अच्छा! रख दो उसे ज़मीन पर। मरेगा नहीं। मेरेस्येव के पास सिर्फ़ एक मिनट के लायक़ और पेट्रोल होगा।"

कर्नल ने अपनी आंखें घड़ी पर टिका लीं और उसकी लाल-लाल सेकंड-सूचक सूई को अपना चक्कर पूरा करते देखा। अन्य सभी लोग मटमैले जंगल

के ऊपर ताक रहे थे जिस पर से अंतिम विमान के लौट आने की आशा थी। कानों पर अत्यधिक ज़ोर लगाया गया, मगर तोपों की दूरागत गर्जन और निकट ही कठफोड़वे की गूंजती हुई ठक्-ठक् के अलावा और कोई स्वर नहीं सुन पड़ा।

एक मिनट कभी-कभी कितना लम्बा खिंच जाता है!

७

शत्रुओं ने एक दूसरे पर पूरी रफ़्तार से हमला किया।

"ला-५" और "फ़ोक्के-वोल्फ़-१६०" तीव्रगामी विमान होते हैं। शत्रुओं ने एक दूसरे पर भयंकर वेग से धावा किया।

अलेक्सेई मेरेस्येव और प्रसिद्ध "रिख़्तगोफ़ेन" डिवीजन का अज्ञात जर्मन विमान-चालक एक दूसरे से सीधे भिड़ गये। विमानों की सीधी मुठभेड़ क्षण भर की होती है। लेकिन वह क्षण इतना स्नायुविक तनाव पैदा करता है, विमान-चालक के सारे मानसिक संतुलन की ऐसी परीक्षा लेता है, जैसी कि भूमि-युद्ध में सारे दिन के संग्राम में भी नहीं होती।

इन दो अंतिम विमानों में से, जो एक दूसरे पर पूरी रफ़्तार से हमला कर रहे थे, किसी एक में बैठे होने की कल्पना कीजिये। शत्रु का विमान आपकी आंखों के सामने आकार में बड़ा हो रहा है। यकायक उसका अंग-प्रत्यंग आपके मुक़ाबले आ जाता है: पंख, चक्कर खाते हुए पंखे का चमकदार चक्र, काले बिंदु जो उसकी तोपें हैं। दूसरे ही क्षण हवाई जहाज़ टकरा जायेंगे और इस तरह खण्ड-खण्ड होकर चकनाचूर हो जायेंगे कि मशीन के ध्वंसावशेष में विमान-चालक के अवशेष खोज पाना कठिन हो जायेगा। न सिर्फ़ विमान-चालक की इच्छा-शक्ति बल्कि उसके नैतिक तन्तुओं की भी उस क्षण परीक्षा हो जाती है। कमज़ोर स्नायुविक प्रकृति का व्यक्ति वह तनाव सहन नहीं कर सकेगा। विजय-प्राप्ति के लिए जो प्राणों की बाज़ी लगाने के लिए तैयार नहीं है, वह सहज वृत्तिवश वायुयान का रुख़ ऊपर को कर देगा ताकि इस घातक तूफ़ान से बचने के लिए, जो उसकी ओर बढ़ा आ रहा है, वह कूद जाये, और अगले क्षण उसका विमान पेट में दरार पाकर या टूटे हुए पंख लेकर ज़मीन पर आ रहेगा। अनुभवी विमान-

चालक इसे भली भांति समझते हैं और केवल वीरतम योद्धा ही इस सीधी भिड़न्त का ख़तरा मोल लेते हैं।

शत्रुओं ने एक दूसरे पर भयंकर रफ़्तार से हमला किया।

अलेक्सेई जानता था कि उसके ख़िलाफ़ जो व्यक्ति आ रहा है, वह गोयरिंग की तथाकथित भरती का कोई नौसिखुआ नहीं है जिसे पूर्वी मोर्चे पर हुई भारी क्षति की पूर्ति के लिए जल्दबाजी से प्रशिक्षित कर भेज दिया गया हो। वह "रिख़्तगोफ़ेन" डिवीजन का श्रेष्ठ विमान-चालक है, ऐसे वायुयान में जिस पर दोनों बाज़ुओं पर अनेक विमानों की छायाकृतियां बनी हुई थीं जो निस्संदेह ही उसकी अनेक विजयों को अंकित कर रही थीं। वह डिगेगा नहीं, हिचकिचायेगा नहीं, युद्ध को टालेगा नहीं।

"संभलो, रिख़्तगोफ़ेन!" अलेक्सेई दांत भींजे हुए बुदबुदाया। होंठ काटते हुए इस तरह कि उनसे ख़ून बह उठा और अपनी मांसपेशियों को तानते हुए उसने अपने निशाने पर आंखें गड़ा दीं और शत्रु के विमान के मुक़ाबले, जो उसपर झपट रहा था, अपनी आंखें बन्द होने से रोकने के लिए उसने अपनी सारी इच्छा-शक्ति समेट ली।

उसने अपनी आंखों पर इतना ज़ोर डाला कि अनुभव किया कि चक्कर काटते हुए पंखे की धुंध में से वह शत्रु के कॉकपिट के पारदर्शी परदे को देख रहा है और उसके पार दो मानवीय आंखें उसकी ओर टकटकी बांधे देख रही हैं, और वे आंखें उन्मत्त घृणा से जल रही हैं। यह दृश्य-बोध स्नायुविक तनाव के कारण ही हो रहा था, मगर अलेक्सेई को विश्वास हो रहा था कि वह सचमुच उसे देख रहा है। "अंत आ गया," उसने सोचा और उसकी सभी मांसपेशियां तन गयीं, "अंत आ ही गया।" आगे देखते हुए वह तेज़ी से आकार में बढ़ते हुए वातचक्र की ओर उड़ रहा था। नहीं, वह जर्मन भी मुंह नहीं मोड़ेगा। बस, अंत आ गया!

वह तत्काल मृत्यु के लिए तैयार हो गया। यकायक, जब उसे लगा कि वह जर्मन विमान से हाथ भर ही दूर रह गया है, तब जर्मन चालक का साहस टूट गया और वह ऊपर की ओर उछला; जर्मन विमान का नीला-सा सूर्यालोकित निचला भाग उसकी आंखों के सामने बिजली की तरह कौंध गया। उसी क्षण अलेक्सेई ने अपने सारे घोड़े दबा दिये, जर्मन को गोलियों की तीन डोरों से सिल दिया और फ़ौरन चक्कर घुमा दिया, और

ज़मीन जब उसको अपने सिर के ऊपर घूमती दिखाई दी तभी उसकी स्याह पृष्ठभूमि में उसे एक विमान असहाय-सा फड़फड़ाता हुआ दिखाई दिया।

"ओल्गा!" वह उन्मत्त विजय भाव से चीख़ा और सब कुछ भूलकर छोटे-छोटे घेरों में चक्कर लगाते हुए, जर्मन विमान की आख़िरी यात्रा में उसका साथ देते हुए, लाल-लाल घास-पात से ढंकी धरती के ठीक ऊपर तक पहुंच गया। शत्रु का विमान धरती से जा टकराया और काले धुएं का सीधा खम्भा खड़ा हो गया।

तभी उसके तने हुए स्नायु और कसी हुई मांसपेशियां ढीली पड़ गयीं और उसके ऊपर गहनतम थकान का भाव हो गया। उसने पेट्रोल मापक सूई की ओर देखा। सूई लगभग शून्य पर कांप रही थी।

पेट्रोल सिर्फ़ तीन मिनट या बहुत हुआ तो चार मिनट की उड़ान लायक़ ही बाक़ी रह गया था। हवाई अड्डे तक वापस लौटने के लिए कम से कम दस मिनट लगेंगे, और वह भी तब कि उसे ऊंचाई बढ़ाने में समय न लगे। काश वह क्षतिग्रस्त "फ़ोक्के" के साथ नीचे न उतरता। "तुम भी बच्चे ही हो!" उसने अपने आपको झिड़कते हुए कहा।

ख़तरे के क्षणों में, जैसा कि वीर और धीर व्यक्तियों के साथ होता है, उसका दिमाग़ साफ़ था और घड़ी की तरह काम कर रहा था। पहली चीज़ जो करनी थी, वह थी ऊंचाई पर पहुंचना, लेकिन घुमावदार ढंग से नहीं, हवाई अड्डे की दिशा में तिरछे उड़कर। ठीक!

उसने अपने विमान को उचित दिशा में लगाया और अपने नीचे धरती को दूर जाते तथा क्षितिज में एक धुंध-सा छा जाते देखता हुआ, वह धैर्यपूर्वक अपना हिसाब-किताब लगाता रहा। पेट्रोल पर भरोसा करने से कोई लाभ न था। अगर मापक यंत्र थोड़ा ख़राब भी हो, तब भी वह काफ़ी न होगा। क्या अड्डे पर पहुंचने से पहले कहीं विमान उतार दे? लेकिन कहां? मानसिक रूप से उसने छोटे-से मार्ग पर पूरी तरह नज़र डाल ली। स्थायी क़िलेबन्दी के क्षेत्र में जंगल, झाड़ियों भरा दलदल और ऊबड़-खाबड़ मैदान थे, जिन पर आड़े-तिरछे गड्ढों की रेखाएं थीं, बमों और गोलों से गड़हे बन गये थे और कंटीले तारों की भरमार थी।

"नहीं! उतरने का मतलब है मौत!"

कूद पड़ा जाये? यह किया जा सकता है। बस अभी। ढक्कन खोल दो, थोड़ा मोड़ो, डंडे खींच दो, ज़रा उछलो—और बस सब काम हो जायेगा। लेकिन विमान का—इस शानदार, तीव्रगामी, स्फूर्त पंछी का—क्या होगा? उसके लड़ाकू गुणों ने उस दिन तीन बार उसकी जान बचायी थी! इसे त्याग दिया जाये, चकनाचूर होने दिया जाये, टेढ़ी-मेढ़ी धातु का ढेर बन जाने दिया जाये? यह बात नहीं कि उसे इसकी जवाबदेही करनी पड़ेगी। इससे वह नहीं डरता। वास्तव में इस तरह की स्थिति में उसे कूद पड़ने का अधिकार भी था। उस क्षण वह विमान उसे एक शक्तिशाली, वफ़ादार और सजीव वस्तु जान पड़ने लगा, उसे छोड़ना सरासर ग़द्दारी होगा। और फिर—पहली ही मुठभेड़ के बाद बिना विमान के लौटना, दूसरा प्राप्त होने तक ख़ाली मंडराते फिरना, और एक ऐसे समय में जब मोर्चे पर हमारी महान विजय आरम्भ हो रही है, तब हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना, ऐसे मौक़े पर बिना काम-धंधा निठल्ले घूमते फिरना।

"नहीं, नहीं, मैं कभी ऐसा न होने दूंगा!" अलेक्सेई ने ज़ोर से कहा मानो किसी ने उसके सामने यह प्रस्ताव रखा था।

उस समय तक उड़ो जब तक इंजन बंद न हो जाये। और फिर? तब देख लेंगे। और वह उड़ चला, पहले तीन हज़ार मीटर की और फिर चार हज़ार मीटर की ऊंचाई से, कोई छोटा-सा समतल मैदान पाने के लिए वह स्थानीय क्षेत्र की सूक्ष्म दृष्टि से परीक्षा करता जा रहा था। जिस जंगल के पीछे हवाई अड्डा था, वह क्षिजित पर दिखाई देने लगा था; वह लगभग पंद्रह किलोमीटर दूर था। पेट्रोल मापक सूई अब कांप नहीं रही थी, वह सीमान्त पेच पर दृढ़तापूर्वक स्थिर हो गयी थी। लेकिन इंजन अभी भी काम कर रहा था! क्या चीज़ उसे बल दे रही है? ऊंचे, और अधिक ऊंचे... ठीक!

यकायक उस निर्बोध गुंजार का स्वर दूसरा हो गया जिस पर विमान-चालक उसी तरह ध्यान नहीं देते जिस प्रकार स्वस्थ व्यक्ति अपने दिल की धड़कन पर ध्यान नहीं देते। अलेक्सेई ने यह परिवर्तन फ़ौरन पकड़ लिया। जंगल स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था, वह लगभग सात किलोमीटर दूर था, और लगभग तीन या चार किलोमीटर चौड़ा था। कोई अधिक नहीं था।

अगर इंजन की धड़कन में यह मनहूस परिवर्तन हो गया था। विमान-चालक इस परिवर्तन को अपने रोम-रोम से अनुभव कर लेता है, मानो वह इंजन नहीं, वह स्वयं है जो सांस लेने के लिए तड़प रहा है। यकायक वही अशुभ "चक, चक, चक" शुरू हो गयी, जो भयानक पीड़ाजनक रूप से उसके सारे शरीर में फैल गयी।

"नहीं! सब ठीक है। वह फिर दृढ़तापूर्वक चलने लगा है। वह चल रहा है! हुर्रा! लो, जंगल भी आ गया।" भोज वृक्षों की चोटियां उसे हरे सागर की भांति धूप में लहराती दिखाई दे रही थीं। अब हवाई अड्डे के सिवाय और कहीं विमान उतारना असम्भव था। अब तो सिर्फ़ एक ही काम था: बढ़े चलो, बढ़े चलो!

"चक, चक, चक!.."

इंजन फिर भनभनाने लगा। कितनी देर के लिए? वह जंगल के ऊपर था। उसके बीच दौड़ता हुआ रेतीला मार्ग उसे इस तरह दिखाई दे रहा था जैसे रेजीमेंटल कमांडर के सिर पर बालों के बीच मांग। हवाई अड्डा अब तीन किलोमीटर दूर था: वह उस दांतेदार हद के उस पार था और अलेक्सेई को यह मालूम हो रहा था मानो अब उसे वह दिखाई देने लगा है।

"चक, चक, चक!"

यकायक ऐसी शान्ति छा गयी कि उसे हवा में विमान के हिस्सों की गुंजार सुनाई देने लगी। क्या अंत आ गया? मेरेस्येव की रीढ़ में एक कंपकंपी दौड़ गयी। कूद पड़े क्या? नहीं। थोड़ा आगे और बढ़ा जाये। उसने वायुयान को ढलवां उतार की तरह मोड़ दिया और फिसल पड़ा, जितना सम्भव हो सकता था उतना वह विमान को समतल रखने का प्रयत्न करने लगा और साथ ही चक्कर खाने से बचाने की कोशिश करने लगा।

आकाश में यह पूर्ण शान्ति कितनी भयंकर थी! वह इतनी तीव्र थी कि ठंडे होते हुए इंजन का तड़कना, और तेज़ उतार के कारण अपनी कनपटियों का धड़कना और कानों में शोर मचना उसे साफ़ सुनाई दे रहा था। और धरती उससे मिलने के लिए इतनी तेज़ी से बढ़ रही थी, मानो कोई भारी चुम्बक उसे हवाई जहाज़ की तरफ़ खींच रहा हो।

जंगल का किनारा और उसके पार हवाई अड्डे का पत्ते जैसा हरा चकत्ता उसे दिखाई दे रहा था। क्या वक़्त हाथ से गया? पंखा आधा चक्कर खाकर अटक गया। उसे आकाश में गतिहीन देखना कितना भयानक था। जंगल बिल्कुल पास आ गया था। क्या यही अंत होगा? क्या वह कभी नहीं जान सकेगी कि उसके साथ क्या बीती, पिछले अठारह महीनों में उसने कैसे अतिमानवीय प्रयत्न किये और इस सबके बाद जब उसने अपनी मंज़िल प्राप्त कर ली और एक असली, हां, असली इनसान बन गया, तो प्राप्त करते ही वह इतने बेहूदे ढंग से मर गया?

कूद पड़े क्या? उसका मौक़ा भी गया। उसके नीचे से जंगल तेज़ी से गुज़र रहा था और इस तूफ़ानी दौड़ में वृक्षों के शिखर घुल-मिलकर एक अनवरत हरी पट्टी जैसे जान पड़ रहे थे। इस तरह का दृश्य वह पहले भी देख चुका है। कब? क्यों, ठीक तो है! उस वसंत-काल में, उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के समय। तब हरी-हरी पट्टी इसी तरह उसके नीचे से गुज़र गयी थी। आख़िरी कोशिश, खींच लो डंड को...

८

ख़ून अधिक निकल जाने के कारण पेत्रोव को अपने कानों में घंटियां-सी बजती जान पड़ने लगीं। हर वस्तु – हवाई अड्डा, सुपरिचित चेहरे और तीसरे पहर के सुनहरे बादल यकायक झूमने लगे, धीरे-धीरे चक्कर खाने लगे और फिर धूमिल होकर विलीन हो गये। उसने अपनी आहत टांग हिलायी और उससे जो तीव्र पीड़ा उत्पन्न हुई, उससे चेतना कुछ वापस आ गयी।

"वह अभी आया नहीं?" उसने पूछा।

"अभी नहीं। बातें मत करो," जवाब दिया गया।

क्या यह सम्भव है कि मेरेस्येव, जो उस दिन पंखधारी देवता की भांति न जाने कहां से जर्मन विमान के सामने ठीक उसी समय प्रगट हो गया था जब पेत्रोव सोच रहा था कि उसका अंत निकट आ गया है, और अब बममारी से ध्वस्त और ऊबड़-खाबड़ धरती पर किसी जगह जले हुए मांस की आकृतिहीन लोथ के अलावा उसका कोई निशान बाक़ी नहीं बचेगा?

ग्रौर क्या सार्जेन्ट-मेजर पेत्रोव को ग्रपने नेता की काली-सी, दयालु, हंसती ग्रांखें ग्रब कभी देखने को नहीं मिलेंगी? कभी नहीं?..

रेजीमेंटल कमांडर ने ग्रपनी ग्रास्तीनें नीची कर लीं। ग्रब उसे ग्रपनी घड़ी की ग्रावश्यकता न रही थी। ग्रपने दोनों हाथों से भली भांति संवारे गये बालों को थपथपाते हुए वह उदास स्वर में बोला:

"सब ख़त्म हुग्रा।"

"क्या ग्रब कोई उम्मीद नहीं?" किसी ने पूछा।

"बस, सब ख़त्म हुग्रा। पेट्रोल ख़त्म हो गया। शायद वह कहीं उतर गया होगा या कूद पड़ा होगा... यह स्ट्रेचर उठा ले जाग्रो!"

कमांडर मुंह फेरकर चल दिया ग्रौर किसी धुन पर सीटी बजाने लगा – सब बिल्कुल बेसुर। पेत्रोव को फिर ग्रपने गले में कांटा-सा उठता महसूस हुग्रा, इतना गर्म-सा ग्रौर बड़ा-सा कि उसका गला लगभग घुटने लगा। खांसने जैसी विचित्र ग्रावाज़ सुनाई दी। हवाई ग्रड्डे के बीच ख़ामोश खड़े हुए लोगों ने मुड़कर देखा ग्रौर फ़ौरन मुंह फेर लिया। स्ट्रेचर पर पड़ा घायल विमान-चालक सुबक रहा था।

"इसे ले जाग्रो! क्या मुसीबत है!" कमांडर ने रुंधे हुए स्वर में कहा ग्रौर भीड़ की तरफ़ से मुंह फेरकर ग्रौर ग्रांखें इस तरह मिचमिचाकर मानो उन्हें हवा से बचा रहा हो, वह जल्दी से चल दिया।

लोग मैदान से छंटने लगे, लेकिन उसी क्षण एक हवाई जहाज़ जंगल के किनारे से इस प्रकार ख़ामोशी से फिसलता ग्राया जैसे किसी की छाया हो, उसके पहिए वृक्ष-शिखरों को छूते जा रहे थे। प्रेत-छाया की भांति वह लोगों के सिरों के ऊपर से निकल गया ग्रौर तीन पहियों से घास पर ग्रा गया। एक हल्का-सा धमाका, कंकड़ों की कड़-कड़ ग्रौर घास की सरसराहट सुनाई दी, जो ग्रसामान्य था, क्योंकि विमान जब उतरते हैं तो उनके इंजनों की धड़धड़ाहट के कारण विमान-चालकों को ये स्वर कभी नहीं सुनाई देते। वह सब इतना यकायक हुग्रा कि कोई यह नहीं समझ सका कि क्या हो गया, हालांकि यह ग्रत्यन्त साधारण बात थी: एक हवाई जहाज़ उतरा था ग्रौर वह "नम्बर ११" था – वही जिसकी वे सब लोग इतनी ग्रातुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

"यह तो वह है!" कोई व्यक्ति उन्मादपूर्ण और अस्वाभाविक स्वर में चिल्ला उठा और फ़ौरन सब लोग जड़ता से उबर आये।

हवाई जहाज़ ने अपनी दौड़ ख़त्म की और अड्डे के छोर पर ही तरुण, घुंघराले, सफ़ेद छालवाले भोज वृक्षों के झुंड के सामने रुक गया, जो अस्ताचलगामी सूर्य की नारंगी किरणों से आलोकित था।

इस बार फिर कॉकपिट से कोई न उठा। लोग अपनी पूरी शक्ति से विमान की ओर दौड़ पड़े, हांफते हुए, अपशकुन की भावनाओं से चिन्तित। उन सबके आगे रेजीमेंटल कमाण्डर था; वह उसके पंख पर उछलकर चढ़ गया, उसके ढक्कन को हटाकर उसने कॉकपिट में देखा। मेरेस्येव नंगे सिर बैठा था, उसका चेहरा सफ़ेद था और रक्तहीन, हरे-से होंठों पर मुसकान खेल रही थी। उसकी ठोड़ी पर रक्त की दो धाराएं थीं, जो कटे हुए होंठों से बहकर आयी थीं।

"ज़िन्दा हो? तुम्हें कोई चोट लगी है?"

मेरेस्येव निर्बलतापूर्वक मुसकुराया और बुरी तरह थकी हुई आंखों से कर्नल की ओर देखकर उसने जवाब दिया:

"मैं ठीक हूं। मैं सिर्फ़ घबरा गया था... कोई छै किलोमीटर तक मेरे पास पेट्रोल की एक बूंद भी नहीं थी।"

सभी हवाबाज़ उसके विमान के चारों ओर एकत्र हो गये और कोलाहलपूर्वक अलेक्सेई को बधाई देने लगे और उससे हाथ मिलाने लगे।

"धीरज धरो दोस्तो, तुम लोग तो इसका पंख तोड़े डाल रहे हो। यह मत करो! मुझे निकलने तो दो।" अलेक्सेई ने मुसकुराकर उन्हें झिड़का।

उसके ऊपर मंडरानेवाले सिरों की भीड़ के नीचे से उसी क्षण उसे एक परिचित स्वर सुनाई दिया, लेकिन वह इतना क्षीण था कि दूर से आता मालूम होता था:

"अलेक्सेई, प्यारे!"

मेरेस्येव में उसी क्षण शक्ति वापस आ गयी। वह उछला और बांहों के सहारे अपने को ऊपर खींचते हुए उसने कॉकपिट के बाहर अपनी वज़नी टांगें फेंक दीं; इस क्रिया में किसी को उसकी लात लग गयी, और वह ज़मीन पर कूद पड़ा।

पेत्रोव का चेहरा उस तकिये से बिल्कुल घुलमिल गया मालूम हो रहा था, जिस पर वह सिर रखे हुए था। उसकी आंखों के गहरे, स्याह गह्वरों में दो बड़े-बड़े आंसू थे।

"कहो बुढ़ऊ! तुम जिन्दा हो? तुम... अरे पुराने पापी शैतान!" उसके स्ट्रेचर के बग़ल में घुटनों के बल गिरते हुए अलेक्सेई चीख़ उठा। उसने अपने साथी के असहाय से पड़े हुए सिर को अपने हाथों में उठाया और उसकी वेदनापूर्ण परंतु आनन्दपूर्वक चमकती हुई आंखों में देखकर कहा :

"तुम ज़िंदा हो?"

"धन्यवाद, अलेक्सेई, तुमने मुझे बचा लिया। तुम हो... अलेक्सेई, तुम हो..."

"धिक्कार है तुम लोगों को! इस घायल को यहां से ले जाओ! यहां मूर्खों की तरह मुंह फाड़े खड़े हुए हैं!" कर्नल की गरजती हुई आवाज़ आयी।

रेजीमेंटल कमांडर पास ही खड़ा था, नाटा-सा, फुरतीला, अपनी हृष्ट-पुष्ट टांगों पर झूलता-सा, और उसकी नीली वर्दी की पतलून के नीचे से उसके कसे हुए, अत्यधिक पालिशदार बूट झांक रहे थे।

"सीनियर लेफ़्टीनेंट मेरेस्येव, अपनी उड़ान की रिपोर्ट दो। क्या तुमने कोई मार गिराया?" उसने अफ़सरी स्वर में पूछा।

"हां, कामरेड कर्नल। दो 'फ़ोक्के-वोल्फ़ों' को।"

"किन परिस्थितियों में?"

"एक को सीधे खड़े होकर हमला करके। वह पेत्रोव के जहाज़ की दुम के पीछे पड़ा हुआ था। दूसरे को आम युद्ध के क्षेत्र से उत्तर की ओर तीन किलोमीटर दूर पर, सीधी टक्कर से।"

"मुझे मालूम है। भूमिवर्ती पर्यवेक्षक ने अभी ही रिपोर्ट दी थी... धन्यवाद।"

"मैं..." अलेक्सेई ने फ़ौजी क़ायदे के अनुसार उत्तर देना शुरू किया, मगर कर्नल ने, जो वैसे क़ायदों के बारे में बड़ा सख़्त था, उसे बीच में ही रोक दिया, और बेतकल्लुफ़ी से कहा :

"बहुत अच्छा। कल तुम कमान संभालना... स्क्वाड्रन नम्बर तीन का कमांडर अड्डे पर वापस नहीं आया।"

वे कमान केन्द्र तक साथ-साथ आये। चूंकि आज की उड़ान का कार्यक्रम ख़त्म हो गया था, इसलिए सारी भीड़ उनके पीछे-पीछे चल पड़ी। वे लोग कमान केन्द्र के हरितांचल के निकट पहुंच ही रहे थे, तभी अर्दली अफ़सर उनकी ओर भागा-भागा आया। वह कमांडर के सामने आकर यकायक खड़ा हो गया, नंगे सिर और बहुत आनन्दित और उत्तेजित दिखाई पड़ रहा था, उसने कुछ कहने के लिए मुंह खोला, मगर कर्नल ने उसे सूखी और सख़्त आवाज़ में टोक दिया :

"तुम नंगे सिर क्यों हो? क्या हो तुम, छुट्टी के वक़्त स्कूली लड़के?"

"कामरेड कर्नल, मुझे निवेदन करने की आज्ञा दीजिये," उत्तेजित लेफ़्टीनेंट ने अटेंशन खड़े होते हुए और कठिनाई से सांस भरते हुए बड़बड़ा दिया।

"कहो!"

"हमारे पड़ोसी, 'याक' विमानों के रेजीमेंटल कमांडर आपसे टेलीफ़ोस पर बात करना चाहते हैं।"

"हमारे पड़ोसी? वह क्या चाहते हैं?.."

कर्नल तेज़ी से अपनी खोह में घुस गये।

"यह तुम्हारे बारे में है..." अर्दली अफ़सर ने अलेक्सेई को बताना शुरू किया, मगर तभी नीचे से कर्नल की आवाज़ आयी :

"मेरेस्येव को मेरे पास भेजो!"

जब मेरेस्येव दायें-बायें बाज़ू चिपकाकर उसके सामने सीधा तनकर चुपचाप खड़ा हो गया, तो कर्नल ने टेलीफ़ोन रिसीवर पर हथेली रख ली और उसकी तरफ़ क्रोधपूर्वक गुर्राया :

"तुम मुझे ग़लत सूचना क्यों देते हो? हमारे पड़ोसी ने अभी फ़ोन किया था और वह जानना चाहता था कि 'नम्बर ११' कौन उड़ा रहा था। मैंने जवाब दिया 'मेरेस्येव, सीनियर लेफ़्टीनेंट।' तो उसने पूछा, 'उसके नाम पर तुमने कितने विमान लिखे हैं?' मैं ने जवाब दिया : 'दो।' वह बोला, 'एक और उसके नाम के आगे लिख लो। उसने मेरे विमान की पूंछ पर लपकनेवाले 'फ़ोक्के-वोलफ़' को मार गिराया था। मैंने अपनी आंखों से उसे गिरते देखा।' ख़ैर, तो तुम्हें अपनी सफ़ाई में क्या कहना है?" कर्नल ने अलेक्सेई की ओर भौंहें चढ़ाकर देखा और यह कहना कठिन

था कि वह मज़ाक़ कर रहा था या गम्भीर था, "क्या यह सच है? लो, अब तुम्हीं बात कर लो उससे... हल्लो! तुम हो अभी? सीनियर लेफ़्टीनेंट मेरेस्येव है फ़ोन पर। मैं उसे रिसीवर दे रहा हूं।"

एक अपरिचित कर्कश, मंद स्वर फ़ोन पर सुनाई दिया:

"धन्यवाद सीनियर लेफ़्टीनेंट! वह तो कमाल का हाथ था आपका! मैं सराहना करता हूं। आपने मुझे बचा लिया। हां। मैंने उसका ज़मीन तक पीछा किया और उसे चकनाचूर होते देखा... तुम पीते हो? कभी मेरे कमान केन्द्र पर आओ, मैं तो एक लिटर शराब का देनदार रहूंगा। अच्छा, फिर धन्यवाद। बढ़े चलो।"

मेरेस्येव ने रिसीवर रख दिया। उसपर जो कुछ बीता था, उसके बाद वह इतना थक गया था कि उसके लिए खड़े रहना भी कठिन हो रहा था। उसको एक ही धुन थी कि किसी भांति जितनी जल्दी सम्भव हो सके, अपनी "बांबीपुरी" पहुंच जाये, अपनी खोह में घुस जाये, ये कृत्रिम पैर उतार फेंके और तख़्ते पर पांव फैलाकर लेटे रहे। एक क्षण भौंड़े ढंग से टेलीफ़ोन के पास चहलक़दमी करके वह धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ा।

"तुम कहां चले?" रेजीमेंटल कमांडर ने उसे रोकते हुए कहा। उसने मेरेस्येव का हाथ पकड़ा और अपने नन्हे-से पुष्ट हाथों से इतने ज़ोर से दबा दिया कि वह दुखने लगा। "ख़ैर, मैं तुमसे क्या कहूं? बहुत अच्छे लड़के हो। अपनी रेजीमेंट में तुम जैसे आदमी होने पर मुझे गर्व है... ख़ैर, और क्या? धन्यवाद... हां, और वह तुम्हारा मित्र, पेत्रोव से मेरा मतलब है। वह क्या भला लड़का नहीं है? और दूसरे लोग भी... मैं बताता हूं कि इस तरह के आदमियों के होते हुए हम युद्ध कभी नहीं हार सकते!"

और फिर उसने मेरेस्येव का हाथ इतना दबाया कि वह दुखने लगा।

खोह तक पहुंचते-पहुंचते रात हो गयी थी, लेकिन वह सो नहीं सका। उसने करवट बदली, एक हज़ार तक गिनती गिनी और उलटी गिनती शुरू की, उसने "आ" से शुरू होनेवाले अपने सभी परिचितों के नाम गिन डाले, और फिर "ब" से गिने और इसी तरह बराबर गिनता रहा; फिर मिट्टी के तेल के लैम्प की हल्की रोशनी की तरफ़ अपलक देखता रहा— मगर नींद बुलाने के ये सभी परीक्षित उपाय इस बार काम के न साबित हुए। वह ज्यों ही आंखें बंद करता, त्योंही उसके सामने परिचित चित्र

उभरने लगते, अंधकार में कभी साफ़ दिखाई देने लगते तो कभी मुश्किल से पहचाने जाते: रुपहली लटों के नीचे से उसकी ओर ताकती हुई मिख़ाईल नाना की चिन्ताग्रस्त आंखें, "गाय जैसी पलकें" झपकाता हुआ अन्द्रेई देगत्यरेन्को, अपने खिचड़ी बाल हिलाते हुए और किसी को डांटते हुए वसीली वसील्येविच, वह बूढ़ा स्नाइपर जिसके सिपाहियाना चेहरे पर मुसकुराहट की झुर्री पड़ी रहती थी, तकिये की सफ़ेद पृष्ठभूमि में उसे कमिसार वोरोब्योव का मोम जैसा चेहरा दिखाई दिया जो अपनी चतुर, मर्मवेधी, विहंसती और सर्वज्ञ आंखों से उसकी ओर देखने लगता था; ज़ीनोच्का के ज्वालाओं सदृश केश हवा में लहराते हुए उसके सामने कौंध गये, छोटा-सा, फुर्तीला शिक्षक नाऊमोव उसकी ओर सहानुभूति और सद्भावना से मुसकुरा उठा। अंधकार में से कितने गौरवशाली, मैत्रीपूर्ण चेहरे उसकी ओर देखने और मुसकुराने लगे, पुरानी स्मृतियां जगाने लगे तथा उसके लबालब हृदय में और अधिक हार्दिकता उड़ेलने लगे। लेकिन इन सभी मैत्रीपूर्ण चेहरों के बीच से और फ़ौरन उन सबको हटाते हुए ओल्गा का मुखड़ा उभर उठा – अफ़सर की वर्दी पहने हुए एक लड़के का दुबला-पतला चेहरा और बड़ी-बड़ी, थकी हुई आंखें। उसने उसे इतने स्पष्ट रूप में और इतने साफ़ रूप में देखा मानो वह साक्षात उसके सामने खड़ी हो और इस रूप में, जिसमें उसने वास्तविक जीवन में उसे कभी नहीं देखा। यह आभास इतना स्पष्ट था कि वह बिस्तर पर सचमुच चौंक पड़ा।

सोने की कोशिश करने से लाभ ही क्या था! हर्षातिरेक से सचेत होकर वह अपने तख़्ते पर उठकर बैठ गया, ढिबरी का गुल झाड़कर उसकी ज्योति बढ़ायी, कापी से एक पन्ना फाड़ लिया, पेंसिल की नोक तेज़ की और लिखने बैठ गया:

"प्रियतमे," अस्पष्ट लिखावट में उसने लिखा और जो विचार उसके दिमाग़ में दौड़ रहे थे, उनका साथ वह मुश्किल से दे पा रहा था, "आज मैंने तीन जर्मनों को मार गिराया। लेकिन मुख्य बात यह नहीं है। मेरे कुछ साथी तो रोज़ ही यह कर दिखाते हैं। इसके बारे में मैं तुमसे शेख़ी न बघारूंगा। प्रियतमे, मेरी दूरवासिनी प्रेमिके! मैं आज तुमसे कहना चाहता हूं, और मुझे तुमसे यह कहने का अधिकार है कि आज से अठारह महीने पहले मेरे साथ क्या दुर्घटना घटी थी और जिस बात को मैं तुमसे

बराबर छिपाता रहा। माफ़ कर देना, कृपा कर, माफ़ कर देना। लेकिन, आख़िरकार आज मैंने तय कर लिया है कि..."

अलेक्सेई विचारों में खो गया। खोह में जो तख़्ते जड़े हुए थे, उनके पीछे चूहे चीं-चीं करने लगे और सूखी रेत के झरने की आवाज़ सुनाई दी। भोज वृक्षों और पुष्पाच्छादित घास की ताज़ी और नम सुगंध के साथ, जो खुले हुए दरवाज़े से हवा पर तैरती चली आ रही थी, बुलबुल की किंचित दबी हुई, किन्तु अनवरत स्वर-लहरी आ गयी। कहीं दूर पर, नाले के पार, शायद अफ़सरों के भोजन-कक्ष के बाहर, कुछ नर-नारी बड़े सामंजस्यपूर्ण और वेदनापूर्ण स्वरों में 'एश' वृक्ष विषयक गीत गा रहे थे। दूरी से नर्म पड़ जाने के कारण रात में इस धुन ने और भी अधिक सुकोमल सौंदर्य धारण कर लिया और हृदय को मधुर वेदना से, सम्भावना की वेदना से, आशा की वेदना से भर दिया।

और कहीं दूर पर गोलाबारी की दबी हुई गरजना इसी हवाई अड्डे पर लगभग अकर्णगोचर थी, जो अब हमारी आगे बढ़ती हुई सेनाओं के पश्च प्रदेश में बहुत पीछे रह गया था, न तो उस गीत की स्वर-लहरी को, न बुलबुल के संगीत को और न रात्रिकालीन जंगल की हल्की-सी, स्वप्निल मर्मर ध्वनि को डुबो पा रही थी।

अनुलेख

जिस काल में ओर्योल के युद्ध का विजयी अंत निकट आ रहा था और जो अग्र रेजीमेंटें उत्तर से बढ़ रही थीं, वे रिपोर्ट भेज रही थीं कि उन्हें नगर जलता हुआ दिखाई दे रहा है, तभी एक दिन ब्रियान्स्क मोर्चे के हेडक्वार्टर पर यह रिपोर्ट आयी कि पिछले नौ दिनों में गार्ड लड़ाकू विमान रेजीमेंट के चालकों ने, जो उसी क्षेत्र में काम कर रही थी, शत्रु के सैंतालीस हवाई जहाज मार गिराये। उनके केवल पांच विमानों और तीन आदमियों की क्षति हुई, क्योंकि दो अन्य विमानों के चालक पैराशूट से कूद पड़े थे और पैदल अपने अड्डे पर वापस लौट आये थे। उन दिनों सोवियत सेना तेजी से बढ़ रही थी, तब के लिए भी यह विजय असामान्य थी। मैंने एक संपर्क विमान में अपने लिए एक सीट प्राप्त कर ली, जो उस रेजीमेंट के अड्डे तक जा रहा था, इरादा यह था कि वहां जाऊं और इन गार्ड विमान-चालकों की सफलताओं के विषय में "प्राव्दा" के वास्ते एक लेख के लिए मसाला जमा कर लूं।

इस रेजीमेंट का हवाई अड्डा एक साधारण चरागाह पर स्थित था जिसके टीलों और वल्मीकों को बेढंगी रीति से साफ़ कर दिया गया था। जवान भोज वृक्षों के जंगल के किनारे हवाई जहाज़ जंगली मुर्गी के नन्हे बच्चों की भांति छिपे खड़े थे। संक्षेप में, वह उसी भांति का फ़ौजी हवाई अड्डा था जैसे युद्ध के सरगर्म दिनों में आम तौर पर बनाये जाते थे।

हम दोपहर बाद पहुंचे जब कि रेजीमेंट का कठिन और व्यस्त दिन समाप्त होने जा रहा था। ओर्योल के क्षेत्र के आकाश में जर्मन विशेष रूप से सक्रिय थे और उस दिन प्रत्येक लड़ाकू-विमान ने सात-सात बार मुठभेड़ें की थीं। सूर्यास्त के समय आख़िरी दल अपनी आठवीं उड़ान से लौट रहा था। नाटे-से, कसकर पेटी बांधे हुए, स्फूर्तिवान व्यक्ति, रेजीमेंटल कमांडर

ने, जिसका चेहरा ताम्रवर्ण था, बाल सावधानी से कढ़े हुए थे, और जो नयी नीली पोशाक पहने था, यह खुलकर स्वीकार किया कि वह उस दिन की तारतम्यपूर्ण कहानी न सुना सकेगा, क्योंकि वह सुबह छै बजे से ही हवाई अड्डे पर जुटा हुआ था, तीन बार वह स्वयं आकाश पर जा चुका और इतना थक गया था कि खड़े रहना मुश्किल था। कोई और कमांडर भी इस मनःस्थिति में न था कि वह शाम समाचारपत्र के लिए भेंट कर सके। मैं समझ गया कि मुझे अगले दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, और फिर देर भी इतनी हो गयी थी कि लौटा ही क्या जाता। सूरज भोज वृक्षों के शिखरों को छूने लगा था और उनपर सोना लुटा रहा था।

आख़िरी विमान भी उतर आये और इंजन धड़धड़ाते हुए वे सीधे जंगल की ओर चले गये। मेकेनिक लोग उनका चक्कर लगाने लगे। पीले-से, थके हुए हवाबाज़ अपने कॉकपिटों से तभी उतरे जब उनके विमान हरे-भरे, टहनियों से ढंके विश्राम-स्थलों में सुरक्षित हो गये।

बिल्कुल आख़िरी विमान तीन नम्बर के स्क्वाड्रन के कमांडर का था। कॉकपिट का पारदर्शी ढक्कन हटा दिया गया। पहले एक बड़ी-सी आबनूसी छड़ी, जिस पर सुनहरे अक्षरों में कुछ लेख खुदा हुआ था, उससे उड़ती हुई बाहर आयी और घास पर जा गिरी। फिर एक ताम्रवर्ण, चौड़े चेहरेवाले, श्यामकेशी व्यक्ति ने अपनी शक्तिशाली बाहों के बल अपने को खींचा, फुर्ती से अपने शरीर को एक तरफ़ उछाला, अपने को पंख पर डाल दिया और भारी धमाके से ज़मीन पर आ गया। किसी ने मुझे बताया कि इस रेजीमेंट का सर्वश्रेष्ठ विमान-चालक यही है। शाम बरबाद न हो जाये, इसलिए मैंने उससे बातें करने का निश्चय किया। मुझे साफ़ याद है कि उसने मेरी ओर अपनी विनोदपूर्ण, प्रफुल्ल, काली आंखों से देखा था, जिनमें अनबुझ, बालसुलभ उद्दंडता के साथ ऐसे व्यक्ति की विश्रांत बुद्धिमत्ता का सम्मिश्रण था जिसने जीवन में काफ़ी भोगा हो। मुसकुराकर वह मुझसे कहने लगा था:

"मैं बुरी तरह थका हुआ हूं। खाना खाया? नहीं? तो भोजन-कक्ष की तरफ़ मेरे साथ चले चलो, हम लोग साथ ही खाना खा लेंगे। एक विमान गिराने पर वे हमें दो सौ ग्राम वोदका देते हैं। आज की रात मुझे छै सौ ग्राम पाने का हक़ है। दो जनों के लिए काफ़ी होगा। चल रहे हो?

कोई कहानी पाने के लिए जब ग्राप इतने अधीर हैं तो चलो, खाना खाते हुए बात कर लेंगे।"

मैं राज़ी हो गया। मुझे यह निश्छल और प्रफुल्ल व्यक्ति पसंद आया। हम उस रास्ते से गये जो विमान-चालकों ने सीधे जंगल के बीच बना लिया था। मेरा नवपरिचित व्यक्ति तेज़ी से चल रहा था और जब तब वह बिलबेरी और गुलाबी व्होरटिल-बेरी का गुच्छा चुनने के लिए झुक जाता था और उसे तत्काल मुंह में डाल लेता था। वह बहुत थका हुआ होगा, क्योंकि उसके क़दम भारी पड़ रहे थे, लेकिन वह अपनी विचित्र छड़ी का सहारा नहीं ले रहा था। वह उसकी बांह पर टंगी हुई थी और कभी ही कभी वह उसे हाथ में लेकर किसी कुकुरमुत्ते या झाड़ी पर चोट कर देता था। जब हम लोग एक नाले को पार कर फिसलनी मिट्टी की ढलान पर चढ़ने लगे, तो विमान-चालक को चढ़ने में कठिनाई महसूस हुई और वह झाड़ियां पकड़कर अपने को ऊपर घसीटने लगा, मगर उसने छड़ी का सहारा न लिया।

भोजन-कक्ष में उसकी थकान फ़ौरन ग़ायब हो गयी। उसने खिड़की के पास एक मेज़ चुनी जिसके बाहर हमें सूर्यास्त की शीतल, लाल आभा दिखाई दे रही थी, जिसे विमान-चालक अगले दिन तेज़ हवा होने की भविष्यवाणी समझते हैं, उसने एक बड़ा मग भरकर आतुरतापूर्वक पानी पी डाला और सुन्दर, घुंघराले बालोंवाली परिचारिका से अस्पताल में पड़े हुए उसके एक मित्र के विषय में मज़ाक़ करने लगा जिसकी वजह से—विमान-चालक ने बताया—वह मांगे गये शोरबे में ज़रूरत से ज्यादा लोन डाल देती। उसने बड़े स्वाद से खाया। अगली मेज़ के साथियों से उसने मज़ाक़ किये, मुझसे कहा कि मैं मास्को की ताज़ी ख़बरें सुनाऊं, ताज़ी किताबों और नाटकों की चर्चा करूं और खेद प्रगट किया कि उसने मास्को का थियेटर कभी नहीं देखा। जब हमने तीसरा दौर ख़त्म कर लिया—बिलबेरी की जेली, जिसे यहां के विमान-चालक "गर्जन मेघ" कहते हैं—तो उसने मुझसे पूछा:

"तुमने रात में रहने का ठिकाना कर लिया है क्या?.. तो चलो, मेरी खोह में ठहरना," उसने कहा। उसने एक क्षण भौंहें चढ़ाकर देखा और मंद स्वर में आगे कहा: "मेरे कमरे का साथी आज वापस न लौट

सका... इसलिए एक तख़्ता ख़ाली है। मैं कोई नयी तोशक वग़ैर: खोज लाऊंगा। तो चलो।"

स्पष्ट ही, वह उन लोगों में से था जो हर नवागत से बातें करने के शौक़ीन होते हैं और उससे सारी जानकारी निकाल लेना चाहते हैं। मैं राज़ी हो गया। हम नाले में उतरे जिसकी दोनों ढलानों पर जंगली रसभरी, लंगवर्त और सरपत की झाड़ियों और सड़ती हुई पत्तियों और कुकुरमुत्तों की कच्ची गंध के बीच खोहें बनी हुई थीं। जब ढिबरी जलायी गयी और खोह के अंदर रोशनी हो गयी, तो खोह काफ़ी लम्बी-चौड़ी और आरामदेह साबित हुई, और ऐसी लगी मानो बहुत दिनों से आबाद हो। मिट्टी की दीवालों में खोदकर दो तख़्ते लगा दिये गये थे जिन पर लबादे के खोल के अन्दर ताज़ी, सौगंध घास भरकर बनाये गये साफ़-सुथरे गद्दे बिछे थे। भोज वृक्ष की कुछ टहनियां, जिनकी पत्तियां अभी भी ताज़ी थीं, कोने में खोंस दी गयीं—"सुगंधित धूपबत्ती की भांति," विमान-चालक ने बताया। तख़्तों के ऊपर सीधे आले दीवार काटकर बनाये गये थे जिनमें अख़बार बिछे थे, किताबों की पांत लगी थी, दाढ़ी बनाने और नहाने-धोने का सामान रखा था। एक तख़्ते के सिरे पर दो फ़ोटो, हाथ से बनाये गये प्लास्टिक शीशे के फ़्रेम में जड़े हुए लगे थे—ये फ़्रेम उसी तरह के थे जैसे रेजीमेंट के दस्तकार शत्रुओं के विध्वस्त वायुयानों से सामग्री जुटाकर, अक्सर ख़ाली वक़्त में अपना समय काटने के लिए बना लिया करते हैं। मेज़ पर एक सिपाहियाना बर्तन रखा था जिसमें पत्ते के ढाक से ढंकी हुई सुगंधित जंगली रसभरियां भरी थीं। रसभरियां, भोज वृक्ष की टहनियां, घास और देवदार की टहनियां जिनसे फ़र्श पर क़ालीन बिछाया गया था,—इन सब की ऐसी मधुर, तीखी गंध आ रही थी, खोह इतनी ठंडी थी और नाले में टिड्डियों की झनकार इतनी शान्तिदायक थी कि हमारे ऊपर मादकता हावी हो गयी और हमने अपनी बातचीत करने और रसभरियां खाने की योजना सुबह के लिए टाल दी।

विमान-चालक बाहर गया। मैंने उसे बड़े ज़ोर-शोर से दांत साफ़ करते और अपने ऊपर ठंडे पानी के छींटे मारते सुना कि जिसकी आहट और सर्राटे से सारा जंगल गूंज गया। वह अंदर आया तो ताज़ा और प्रफुल्लचित्त होकर; उसके बालों और भौंहों से पानी की बूंदें अभी भी चमक रही थीं,

उसने लैम्प की बत्ती कम की और कपड़े उतारने लगा। कोई भारी चीज़ फ़र्श पर खड़खड़ायी। मैंने उधर देखा और आंखों पर विश्वास न कर सका। उसके पैर फ़र्श पर गिरे पड़े थे। पैरविहीन विमान-चालक! और लड़ाकू विमान का चालक! इस चालक ने आज सात उड़ानें की थीं और शत्रु के तीन विमान गिराये थे। यह बिल्कुल अविश्वसनीय था।

लेकिन तथ्य यही था कि उसके पैर, सचमुच कृत्रिम पैर, जिनमें फ़ौजी बूट भली भांति फ़िट थे, फ़र्श पर रखे हुए थे। उनके नीचे के हिस्से तख़्ते के नीचे से दिखाई देते थे और ऐसा जान पड़ता था मानो वहां कोई आदमी छिपा हुआ है जिसकी टांगें बाहर झांक रही हैं। स्पष्ट था कि मैं जो आश्चर्य अनुभव कर रहा था, वह मेरे चेहरे पर अभिव्यक्त हो उठा था, क्योंकि मेरे मेज़बान ने मेरी तरफ़ देखा और प्रसन्नतापूर्वक, विनोदी मुसकान के साथ पूछा :

"तुमने पहले नहीं ग़ौर किया क्या?"

"मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था..."

"यह सुनकर मुझे ख़ुशी हुई! धन्यवाद! लेकिन मुझे ताज्जुब है कि तुम्हें किसी ने नहीं बताया। यहां जितने अव्वल दर्जे के लोग हैं, उतने झक्की लोग भी। कैसी बात है कि वे किसी नये आदमी को चूक गये और वह भी 'प्राव्दा' के संवाददाता को, और उसे अपनी यहां की करामात के बारे में नहीं बताया।"

"लेकिन यह तो असाधारण बात है, यह तो तुम मानोगे। बिना पैरों के, लड़ाकू विमान में लड़ना! इसके लिए पौरुष की आवश्यकता है। उड्डयन कला के इतिहास में ऐसी मिसाल कोई नहीं है।"

विमान-चालक ने आनन्दपूर्वक सीटी बजायी और कहा :

"उड्डयन कला का इतिहास... उसमें बहुत-सी बातें नहीं थीं, लेकिन इस युद्ध में सोवियत विमान-चालकों ने उन बातों को लिख दिया है। लेकिन इसमें ख़ुशी की क्या बात है? विश्वास करो, मैं इन पैरों के बजाय असली पैरों से उड़ना ही पसंद करता। मगर क्या किया जाये। यही होना था," विमान-चालक ने सांस खींची और आगे कहा, "और ठीक बात तो यह है कि उड्डयन के इतिहास में ऐसी घटनाएं हैं।"

उसने अपने नक़्शे के केस में खोज डाला और उसमें से किसी पत्रिका

की कतरन निकाल ली जो फटी हुई और जर्जर थी और सेलोफ़ेन के टुकड़े पर चिपकी हुई थी। इसमें एक विमान-चालक की चर्चा थी जिसने एक पैर खो दिया था और फिर भी विमान चलाया था।

"लेकिन उसके एक पैर तो था। और इसके अलावा, उसने लड़ाकू विमान नहीं, पुरानी चाल-ढाल का 'फ़रमान' चलाया था," मैंने कहा।

"लेकिन मैं सोवियत हवाबाज़ हूं," उत्तर मिला, "यह मत समझना कि मैं शेखी बघार रहा हूं। ये मेरे शब्द नहीं हैं। ये शब्द मुझसे एक बहुत बढ़िया आदमी, एक असली इनसान ने कहे थे," उसने "असली" शब्द पर विशेष ज़ोर दिया, "वह मर चुका है।"

विमान-चालक के चौड़े, उत्साहपूर्ण चेहरे पर मधुर, कोमल दुख की छाया दौड़ गयी, उसकी आंखें करुण, निर्मल प्रकाश से आलोकित हो उठीं, उसका चेहरा कम से कम दस वर्ष कम आयु का, लगभग जवान, दिखने लगा और मैं यह देखकर चकित रह गया कि एक क्षण पहले जिस व्यक्ति को मैं प्रौढ़ समझा था, वह मुश्किल से तेईस वर्ष का है।

"मुझे इससे बड़ी चिढ़ होती है जब लोग पूछते हैं कि यह कहां, कैसे और कब हुआ... लेकिन इस समय वह सब मेरी आंखों के सामने घूमने लगा है... तुम मेरे लिए अजनबी हो। कल हम दोनों अलविदा कहेंगे और शायद फिर कभी न मिलें... अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हें अपने पैरों की कथा बता सकता हूं।"

वह तख़्ते पर उठकर बैठ गया, उसने अपना कम्बल ठोड़ी तक खींच लिया और अपनी कहानी शुरू की। वह जैसे गहरी सोच में डूबकर मुझे बिल्कुल भूल गया था, मगर उसने कहानी बड़ी अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से बतायी। स्पष्ट था कि उसकी बुद्धि तीव्र, स्मृति पैनी और हृदय विशाल है। फ़ौरन समझकर कि कोई महत्त्वपूर्ण और अभूतपर्व बात सुनने को मिल रही है, जिसे शायद मैं और कभी न सुन सकूंगा, मैंने मेज़ से स्कूली कापी उठा ली जिस पर लिखा था "तीसरे स्क्वाड्रन की उड़ानों का रोज़नामचा" और वह जो कुछ कहता जा रहा था, उसे लिखना शुरू कर दिया।

रात अनदेखे ही जंगल के ऊपर से सरक गयी। मेज़ का लैम्प भभक और सिसकारियां भर रहा था, और अनेक असावधान पतंगे, जिन्होंने

उसकी लौ में पंख जला लिये थे, उसके चहुरों ओर बिखरे पड़े थे। पहले तो झोंके के द्वारा अकार्डियन की स्वर-लहरी हमारे कानों को छू गयी। अकार्डियन का क्रंदन शान्त हो गया और जंगल के रात्रिकालीन स्वर, पक्षी का तीखा चीत्कार, उल्लू की दूरागत कूक, पास के दलदल में मेंढकों का टर्राना, और टिड्डियों की झनकार मंद और उदास स्वर की तालपूर्ण धुन के साथ सुनाई देने लगी।

इस व्यक्ति ने जो आश्चर्यजनक कथा सुनाई, वह इतनी रोमांचकारी थी कि मैंने उसे जितने भी पूर्ण ढंग से सम्भव हो सका उसे लिख डालने का प्रयत्न किया। मैंने वह कापी भर डाली, ताक पर रखी हुई दूसरी कापी मिल गयी तो उसे भी भर दिया और यह न देख सका कि खोह के तंग दरवाज़े से आसमान का जो भाग दिखाई देता था, वह पीला पड़ने लगा था। अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपनी कहानी उस दिन तक सुना डाली जिस दिन उसने "रिख़्तगोफ़ेन" डिवीजन के तीन विमान मार गिराने के बाद यह महसूस किया था कि अब वह अन्य विमान-चालकों की भांति पूर्ण सक्षम विमान-चालक हो गया है।

"हम बातें ही करते रह गये और रात ढल गयी और मुझे सुबह आकाश पर जाना है," उसने अपनी कथा रोकते हुए कहा, "मैंने तुम्हें थका डाला होगा। चलो, थोड़ा सो लें।"

"लेकिन ओलगा का क्या हुआ? उसका क्या जवाब था?" मैंने पूछा और फिर अपने पर लगाम लगाकर बोला, "मुझे खेद है! शायद यह बेहूदा सवाल है। इसका जवाब न दो अगर वह..."

"अरे नहीं, क्यों?" उसने हंसते हुए कहा, "हम सनकी हैं, दोनों ही जने। पता यह चला कि वह सब कुछ जानती थी। मेरे दोस्त अन्द्रेई देगत्यरेन्को ने उसे फ़ौरन सब कुछ लिख दिया था—पहले मेरे जहाज़ के चकनाचूर हो जाने के बारे में और फिर यह कि मेरे पैर काट दिये गये हैं। लेकिन उसने, यह देखकर कि मैं यह बात उससे छिपा रहा हूं, यह समझ लिया कि उसको यह सब बताने में मुझे झिझक हो रही है और इसलिए वह बहाना करने लगी कि जैसे उसे कुछ नहीं मालूम है। हम दोनों एक दूसरे को छल रहे थे, भगवान जाने क्यों! क्या तुम उसे देखना चाहोगे?"

उसने लौ बढ़ायी और तख़्ते के ऊपर दीवार पर टंगी हुई प्लास्टिक शीशे के फ़्रेम में जड़ी तस्वीरों के पास लैम्प ले गया। एक शौक़िया फ़ोटो था, जो बिल्कुल धुंधला और जर्जर हो गया था और मैदान में फूलों के बीच बैठी हुई मुसकुराती, अल्हड़ लड़की के नखशिख कठिनाई से ही समझ में आते थे। दूसरे चित्र में वही लड़की जूनियर लेफ़्टीनेंट टेक्नीशियन की वर्दी पहने दिखाई दे रही थी – उसके मुखड़े पर कठोरता और चतुराई के भाव थे और आंखों में एक पैनी-सी अभिव्यक्ति। वह इतनी छोटी-सी थी कि अपनी वर्दी में वह सुन्दर लड़के के समान दिखाई देती थी, लेकिन इस लड़के की आंखें थकी हुई, बाल-सुलभ भाव से विहिन और मर्मवेधी थीं।

"तुम्हें पसंद आयी?"

"बहुत," मैंने हृदय से कहा।

"मुझे भी बहुत पसंद है," उसने आनन्दपूर्वक मुसकुराकर कहा।

"और स्लुच्कोव, वह कहां है?"

"मुझे पता नहीं। उसका आख़िरी पत्र मुझे मिला था शीतकाल में।"

"और टैंकची, क्या नाम है उसका?"

"तुम्हारा मतलब है ग्रिगोरी ग्वोज्देव से? वह अब मेजर हो गया है। उसने प्रोख़ोरोवका के प्रसिद्ध युद्ध में और बाद में कूर्स्क के टैंक आक्रमण में भाग लिया था। हम दोनों एक ही क्षेत्र में लड़ रहे थे, मगर भेंट न कर सके। वह एक टैंक रेजीमेंट का कमांडर है। इधर कुछ दिनों से उसका कोई पत्र नहीं मिला है, पता नहीं क्यों। लेकिन कोई फ़िक्र नहीं। ज़िंदा रहें, तो हम दोनों एक दूसरे को खोज निकालेंगे। और क्यों नहीं... ख़ैर, अब हम लोगों को कुछ सो लेना चाहिए। रात बीत गयी है।"

उसने रोशनी बुझा दी।

"मैं तुम्हारे बारे में 'प्राव्दा' में लिखना चाहूंगा," मैंने कहा।

"चाहो तो लिखो," विमान-चालक ने बिना विशेष उत्साह से कहा। और फिर बहुत उनींदे भाव से आगे कहा, "लेकिन शायद बेहतर हो, न लिखो। गोयबल्स इस कहानी को हथिया लेगा और सारी दुनिया में ढोल पीटता फिरेगा कि रूसी लोग पैरविहीन लोगों को लड़ने के लिए मजबूर

कर रहे हैं और इस तरह की बात... तुम जानते ही हो, ये फ़ासिस्ट कैसे हैं।"

एक क्षण बाद वह ज़ोरदार खर्राटे भरने लगा। लेकिन मैं नहीं सो सका। इस बयान की सादगी और महत्ता ने मुझे इतना रोमांचित कर दिया था। अगर इस कथा का नायक ठीक मेरे सामने न सोया हुआ होता और उसके कृत्रिम पैर ज़मीन पर रखे हुए नमी से चमक न रहे होते और भोर की मटमैली रोशनी में साफ़ दिखाई न दे रहे होते, तो शायद यह सब कुछ सुन्दर लोक-कथा मालूम होती।

...मैं तब से अलेक्सेई मरेस्येव से न मिल सका, लेकिन युद्ध की धारा मुझे जहां भी बहा ले गयी, वहां वे दो स्कूली कापियां मेरे साथ ही रहीं, जिनमें मैंने ओर्योल के निकट उस विमान-चालक के गौरवशाली महाकाव्य को अंकित किया था। युद्ध-काल में, युद्ध के बीच ख़ामोशी में और उसके बाद मुक्त यूरोप के देशों में भ्रमण करते हुए न जाने कितनी बार मैंने उसके बारे में कहानी लिखना आरम्भ किया, लेकिन हर बार उसे अलग रख देता था, क्योंकि मैं जो कुछ लिखने में सफल होता था, वह उसके असली जीवन की रक्तहीन छाया मात्र मालूम होता था!

लेकिन मैं न्यूरेनबर्ग में अंतर्राष्ट्रीय फ़ौजी अदालत की बैठक में उपस्थित था। वह दिन था जब गोयरिंग की जिरह ख़त्म हो रही थी। दस्तावेज़ी सबूत की रूह से कांपकर और सोवियत अभियोक्ता के सवालों से मजबूर होकर "जर्मन नाज़ी नम्बर २" ने अनिच्छापूर्वक, दांत मींजकर अदालत को बताया कि कैसे फ़ासिज़्म की विशाल और अब तक अजेय सेना मेरे देश के विस्तृत प्रसार में लड़े गये युद्धों में सोवियत सेना के आघातों से ढह गयी और ग़ायब हो गयी। अपने को उचित ठहराते हुए गोयरिंग ने आसमान की ओर अपनी आंखें उठायीं और कहा: "सर्वशक्तिमान की यही इच्छा थी।"

"क्या तुम यह मंजूर करते हो कि सोवियत संघ पर विश्वासघातक ढंग से हमला करके, जिससे जर्मनी का सफ़ाया हो गया, तुमने अत्यन्त घृणित अपराध किया था?" सोवियत अभियोक्ता रोमान रूदेन्को ने गोयरिंग से पूछा।

"वह अपराध नहीं, घातक ग़लती थी," मंद स्वर में गोयरिंग ने

त्योरियां चढ़ाकर और आंखें नीची करते हुए उत्तर दिया था, "मैं इतना ही मंजूर कर सकता हूं कि हमने अंधाधुंध कार्रवाई की, क्योंकि जैसा युद्ध के दौरान में साबित होता गया, हमें बहुत-सी चीज़ों का ज्ञान न था और कई चीज़ों के बारे में तो हमें अनुमान भी नहीं हो सकता था। मुख्य चीज़ जो हम नहीं जानते या समझते थे, वह था सोवियत रूस के वासियों का चरित्र। वे एक पहेली थे और आज भी हैं। दुनिया का सर्वोत्तम जासूसी विभाग यह नहीं पता लगा सकता है कि सोवियत की असली युद्ध-क्षमता कितनी है। मेरा मतलब तोपों, हवाई जहाज़ों और टैंकों की संख्या से नहीं है। उसका हमें क़रीब-क़रीब अंदाज़ था। और न मेरे दिमाग़ में उनके उद्योगों की क्षमता और क्रियाशीलता का प्रश्न है। मेरा मतलब है उनकी जनता से। रूसी लोग विदेशियों के लिए हमेशा पहेली रहे हैं। नेपोलियन भी उन्हें समझने में असमर्थ रहा। हमने सिर्फ़ नेपोलियन की ही ग़लती दोहरायी।"

"रूसियों की पहेली" और हमारे देश की "अज्ञात युद्ध-क्षमता" के बारे में इस जबरिया इक़बाल से हमारे अन्दर गर्व का भाव भर गया।

हम भली भांति विश्वास कर सकते हैं कि सोवियत जनता, उसकी क्षमता, प्रतिभा, साहस और आत्म-त्याग, जिनसे युद्ध-काल में संसार इतना विस्मित हो गया, इन सभी गोयरिंगों के लिए घातक पहेली थे और रहेंगे। सचमुच, जर्मनों के मनहूस "नस्ल सिद्धान्त" का आविष्कार करनेवाले लोग समाजवादी देश में पली-पुसी जनता की आत्मा और शक्ति को कैसे समझ सकते हैं? और मुझे यकायक अलेक्सेई मरेस्येव का स्मरण हो आया। उसकी अर्धविस्मृत आकृति स्पष्ट और घनिष्ठ रूप में वही गम्भीर, बलूत-जड़ित भवन में मेरे सामने खड़ी हो गयी। और ठीक वहीं, न्यूरेनबर्ग में, फ़ासिज़्म के जन्म-स्थल में मेरे अंदर यह उत्कंठा जागृत हो गयी कि जिस साधारण सोवियत जनता ने कैटल की फ़ौजों और गोयरिंग के विमान-बेड़े को चकनाचूर कर दिया, रोयडर के समुद्री जहाज़ों को डुबा दिया और अपने शक्तिशाली आघातों से हिटलर के लुटेरे राज्य को ख़त्म कर दिया, उसी जनता के एक व्यक्ति की कहानी कह डालूं।

न्यूरेनबर्ग में वही कापियां मेरे साथ ही थीं, जिनमें से एक पर मरेस्येव के हाथ की लिखावट में लिखा था: "तीसरे स्क्वाड्रन की उड़ानों का

रोज़नामचा।" अदालत की बैठक से अपने निवास-स्थान पर लौटकर मैंने पुरानी टिप्पणियों को फिर पढ़ा और फिर लिखने बैठ गया, और अलेक्सेई मरेस्येव ने जो कुछ मुझे बताया था, उससे मुझे जितनी जानकारी थी, वह सारा विवरण सच्चाई के साथ पेश करने बैठ गया।

उसने मुझे जो कुछ बताया था, उसका बहुत भाग मैं लिख नहीं पाया था और इन वर्षों में बहुत-सी बातें मेरी स्मृति से उतर गयी थीं। विनम्रतावश, अलेक्सेई मरेस्येव ने अपने बारे में बहुत कुछ छोड़ दिया था और मुझे इस अभाव को अपनी कल्पना से भरना पड़ा। उस रात उसने अपने मित्रों का चित्रांकन जितने स्पष्ट रूप में और हार्दिकता के साथ किया था, वह मेरी स्मृति में धुंधला पड़ गया था और मुझे उनमें फिर रंग भरना पड़ा। तथ्यों का पूर्णतया पालन न कर पाने के कारण मैंने नायक के नाम में थोड़ा-सा परिवर्तन कर दिया और उसके उन साथियों और सहायकों के नाम भी बदल दिये जिन्होंने दुस्साध्य और वीरतापूर्ण मार्ग में उसकी सहायता की थी। मुझे आशा है कि इस कथा में अगर वे अपना चित्र पहचान लेंगे तो मुझे क्षमा कर देंगे।

इस पुस्तक का शीर्षक मैंने रखा है: "असली इनसान" क्योंकि अलेक्सेई मरेस्येव असली सोवियत मानव है, जिस तरह के लोगों को गोर्यारिंग अपनी मृत्युपर्यंत नहीं समझ सका और आज भी वे लोग नहीं समझ पा रहे हैं जो इतिहास के सबक़ भुला रहे हैं और जिनकी आज भी गुप्त आकांक्षा है कि वे नेपोलियन और हिटलर का रास्ता ले सकें।

"असली इनसान" इसी प्रकार लिखी गयी थी। प्रकाशन के लिए पांडुलिपि तैयार हो जाने के बाद मैं चाहता था कि प्रकाशित होने से पहले इसका नायक इसे पढ़ ले, मगर युद्ध की उथल-पुथल में उसका पता मैं खो चुका था।

कहानी एक पत्रिका में प्रकाशित होना शुरू हो गयी थी और रेडियो पर पढ़ी जा रही थी, तभी एक सुबह मेरे टेलीफ़ोन की घंटी बजी। मैंने रिसीवर उठाया और किंचित फटी-सी, पौरुष्य और धुंधली-सी परिचित आवाज़ सुनाई दी।

"मैं आपसे मिलना चाहूंगा।"

"कौन बोल रहा है?"

"गार्ड मेजर अलेक्सेई मरेस्येव।"

कुछ घंटों बाद अपनी भालू जैसी, किंचित लुढ़कती चाल से उसने मेरे कमरे में प्रवेश किया – वह उसी तरह फुर्तीला और प्रसन्नचित्त दिखाई दे रहा था। युद्ध के चार वर्षों ने उसमें मुश्किल ही से कोई परिवर्तन किया था।

बहुत दिनों तक एक दूसरे से न मिल पाने के बाद जब दो सिपाही मिलते हैं, तो जैसा होता है, हमने भी फिर अपने युद्धों के बारे में, उन अफ़सरों के बारे में बातें कीं जिनसे हम दोनों परिचित थे और उन लोगों की स्मृति संजोयी जो हमारी विजय के दिन तक जीवित न रहे। पहले की भांति, अलेक्सेई पेत्रोविच अपने विषय में बात करने से झिझक रहा था, फिर भी मैंने कुरेद लिया कि हमारे मिलन के बाद उसने कई सफल युद्धों में भाग लिया। अपनी गार्ड रेजीमेंट के साथ उसने १९४३ – १९४५ के संग्रामों में भाग लिया।

ओर्योल के पास, मेरे लौट आने के बाद, उसने शत्रु के तीन विमान और मार गिराये और बाद में बाल्टिक समुद्र तट के लिए युद्ध में उसने दो और गिराये। संक्षेप में यह कि उसने अपने पैरों के नुक़सान के लिए शत्रु से कसकर बदला चुकाया। सरकार ने उसे "सोवियत संघ के वीर" की उपाधि से विभूषित किया।

अलेक्सेई पेत्रोविच ने अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में भी बताया और इस विषय में भी मुझे हर्ष है कि मैं अपनी कहानी का अंत सुखद बना सकूंगा। युद्ध के बाद उसने उस लड़की से विवाह कर लिया जिससे वह प्रेम करता था, और अब उनके एक बेटा है, वीक्तोर। मरेस्येव की बूढ़ी मां कमीशिन से आ गयी है और उनके साथ रह रही है – वह अपने बच्चों के सुख को देखकर आनन्दित है और नन्हे मरेस्येव की देखभाल करती है।

आज मेरी कहानी के प्रधान नायक का नाम अक्सर समाचारपत्रों में आता है। वही सोवियत अफ़सर जिसने हमारी पवित्र सोवियत भूमि पर चढ़ आनेवाले शत्रुओं के विरुद्ध साहस और धैर्य का आश्चर्यजनक उदाहरण उपस्थित किया था, अब विश्व-शान्ति का लगनशील योद्धा है। बुदापेस्ट और प्राग, पेरिस और लंदन, बर्लिन और वारसा की मेहनतकश जनता ने उसे अनेक बार सम्मेलनों और सार्वजनिक सभाओं में देखा है। इस

सोवियत योद्धा की विस्मयकारी कहानी उसके अपने देश की सीमा के पार दूर-दूर तक फैल गयी है, और एक ऐसे व्यक्ति के मुख से, जिसने युद्ध की भयंकरतम अग्निपरीक्षा का साहस के साथ सामना किया था, शान्ति की गौरवपूर्ण मांग उठती है तो वह निरपवाद रूप से विवेक-संगत प्रतीत होती है।

अपनी शक्तिशाली और स्वतंत्रताप्रेमी जनता के सपूत की हैसियत से अलेक्सेई मरेस्येव शान्ति के लिए उसी लगन, संकल्प और विजय में विश्वास के साथ लड़ रहा है, जिस प्रकार वह युद्ध-काल में शत्रु के विरुद्ध लड़ा था और उसे खदेड़कर बाहर कर दिया था।

और इस प्रकार, अलेक्सेई मरेस्येव की – एक असली, सोवियत इनसान की – कहानी का अगला हिस्सा स्वयं जीवन लिख रहा है।

मास्को, २८ नवम्बर, १९५०

लेखक का परिचय

प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार बोरीस पोलेवोई चालीस से अधिक सालों से सोवियत साहित्य की सेवा कर रहे हैं। वे "असली इनसान की कहानी" के लिए राजकीय पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं और उन्होंने अब तक चार बड़े उपन्यासों तथा कहानियों, शब्द-चित्र और दस्तावेज़ी लघु-उपन्यासों के रूप में उन्नीस ग्रन्थ पुस्तकें रची हैं।

बोरीस पोलेवोई का १९०८ में मास्को में जन्म हुआ और उन्होंने अपना बचपन तथा तरुणावस्था त्वेर (जिसे अब कालीनिन कहते हैं) में बितायी। यहीं बारह साल की उम्र में उन्होंने स्थानीय समाचारपत्र में अपनी पहली छोटी-सी रचना छपवाई।

"तभी से मैं नियमित रूप से लिखने लगा और धीरे-धीरे पत्रकार के प्रशंसनीय व्यवसाय की ओर खिंचने लगा। इस पेशे को मैं सभी साहित्यिक विधाओं में सब से अधिक दिलचस्प और आकर्षक मानता हूं," पोलेवोई ने अपनी जीवनी में लिखा है।

१९२७ में पोलेवोई के शब्द-चित्रों का पहला संग्रह निकला। मक्सिम गोर्की ने उसकी प्रशंसा की। पोलेवोई उस समय कपड़ा मिल में काम करते थे। गोर्की की प्रेरणा पर ही उन्होंने लेखन-कार्य के साथ स्थायी सम्बन्ध जोड़ा।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के आरम्भ से ही वे "प्राव्दा" के सैनिक संवाददाता हो गये और इसी पत्र के सम्पादकीय विभाग में काम करते हुए साहित्यकार के रूप में उन्होंने बहुत कुछ जाना-सीखा।

बोरीस पोलेवोई ने सोवियत सेनाओं के साथ वोल्गा से बर्लिन तक का कठिन मार्ग तय किया। उन वर्षों (१९४१–१९४५) के उनके संवादों, शब्द-चित्रों और कहानियों में वे दुःखद दिन भी सजीव हुए हैं, जब सोवियत

सेनायें पीछे हट रही थीं, उनमें विजयी लड़ाइयों की ख़ुशी की गूंज भी है और सोवियत सैनिकों के कठिन श्रम तथा वीरतापूर्ण कारनामों को भी अभिव्यक्ति मिली है।

बोरीस पोलेवोई की सर्वश्रेष्ठ रचनायें महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के बारे में ही हैं। इनमें शामिल हैं – "असली इनसान", कहानी-संग्रह – "हम सोवियत लोग" और उपन्यास – "सोना", "दूर चंडावल में" तथा "डाक्टर वेरा"।

पिछले कुछ सालों की रचनाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं – शब्द-चित्र संग्रह – "समकालीन" और "चौराहों पर मुलाक़ातें", न्यूरेनबर्ग मुक़दमे पर आधारित दस्तावेज़ी लघु-उपन्यास "आख़िर तो" और सुदूर साइबेरिया में नये नगर और बड़े पनबिजलीघर के निर्माताओं के बारे में उपन्यास "सुनसान तट पर"।

बोरीस पोलेवोई इस समय युवाजन की पत्रिका "यूनोस्त" (जवानी) के मुख्य सम्पादक हैं। इसके अलावा वे सोवियत शान्ति-रक्षा-समिति के सदस्य के नाते महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य भी कर रहे हैं।

БОРИС ПОЛЕВОЙ
Повесть о настоящем человеке

На языке хинди

Перевод сделан по книге:
Б. Полевой, Повесть о настоящем человеке,
Гослитиздат, М., 1962 г.